केवल भाषा में

तर्जुमा

पवित्र कुरान

अनुवादक

श्री अतीक़ अहमद कामिल

एवं

श्री ओ० पी० शर्मा

प्रकाशक

ज्योतसना प्रकाशन

रामजस रोड, नई देहली-५

प्रकाशक
ज्योत्सना प्रकाशन
रामजस रोड, न्यू दिल्ली

प्रथम संस्करण
मूल्य आठ रुपया

मुद्रक
दीपक प्रिंटिंग प्रैस,
दिल्ली।

पवित्र कुरान

तुम्हारा किया तुम्हारे काम आएगा और हमारा किया हमारे काम एक का काम दूसरे की मदद नहीं कर सकता॥

कुरान की यह शिक्षा न सिर्फ मुसलमानों के लिए बल्कि पूरी इन्सानियत के लिए फायदे मन्द है। खुशी की बात है कि इस ईश्वरीय ज्ञान को आज राष्ट्रभाषा हिन्दी में प्रस्तुत किया जा रहा है ताकि आम लोग इससे फायदा उठा सकें।

आज से करीब चौदह सौ साल पहले यानी ६१७ विक्रमी संवत अर्थात ५६० ईस्वी में इस्लाम के पैगम्बर हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ।

उस वक्त अरब की हालत बहुत खराब थी। हर तरफ अधर्म का बोल बोला था। अरब की जनता स्वार्थी शासकों और मठाधीशों के शिकंजे में जकड़ी हुई थी। ईसाई और यहूदी अपने प्राचीन शुद्ध धार्मिक संस्कारों को छोड़ कर अपने स्वार्थ के वशीभूत थे। मूर्ति पूजा का बोलबाला था। शराब आम फहम थी। सूदखोरी बढ़ रही थी। स्त्रीयों से पशुवत व्यवहार किया जाता था। सन्तानों में भेदभाव किया जाता था, आम तौर से लड़कियाँ पैदा होते ही कत्ल कर दी जाती थीं।

यह थी अरब देश की स्थिती जब हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ।

मक्का के कुरेश वंश के प्रसिद्ध हाशिम परिवार में हजरत मुहम्मद साहब का जन्म हुआ। माता का नाम आम्ना और पिता का नाम

अब्दुल्ला था। ईश्वर इच्छा से जब हजरत गर्भ में थे पिता जन्नत नशीन हुए। जब हजरत पाँच वर्ष के हुए तो माँ भी जन्नत नशीन हुई। आठ वर्ष की अवस्था में उनके एकमात्र संरक्षक बाबा जान भी दुनिया में नहीं रहे। चचा अबूतालिब के पशु चराते हुए हजरत बड़े हुए।

समाज में जो अनैतिकता फैली हुई थी हजरत ने उसके खिलाफ दृढ़ता से आवाज उठानी शुरू की, लेकिन शुरू में उस आवाज को उनके खानदान वालों तक ने न सुना और बहुत से तो उनके कट्टर दुश्मन बन बैठे।

खुदा ताला की मेहरबानी से जब हजरत चालीस वर्ष के हुए तो उन्हें जिब्राइल फरिश्ते के दर्शन हुए और हजरत कुरान की आयतों का ज्ञान प्राप्त होना प्रारम्भ हो गया। हजरत ने सरेआम उन आयतों को सुनाना शुरू कर दिया। फलस्वरूप जहां अबूबकर जो इस्लाम के पहले खलीफा कहलाए हजरत अली जो मुहम्मद साहब के दामाद भी थे अरब के अनेकों प्रतिष्ठित व्यक्ति सहित हजरत के अनुयायी हो गए। परन्तु दूसरी ओर बलशाली कुरैश सरदारों ने मुहम्मद साहब का विरोध करना आरम्भ कर दिया। जबानी विरोध नहीं बल्कि हजरत और उनके अनुयायीओं पर तरह तरहके जुल्म ढाए जाने लगे। इस जुल्म से बचने के लिए हजरत की आज्ञा से उनके बहुत से अनुयायी अफ्रीका के हबश प्रदेश में जा बसे। कुरैश सरदारों का और साहस बढ़ा उन्होंने हजरत की हत्या का षड़यंत्र किया, परन्तु खुदा की मेहरबानी से हजरत को एक दिन पहले ही इस षड़यंत्र का पता लग गया फलस्वरूप उन्होंने मक्का से मदीना के लिए ५३ वर्ष की अवस्था में हिजरत की।

यूं बाद में हजरत के अनुयायिओं ने मक्का विजय कर लिया। परन्तु वो शेष जीवन मदीना में ही रहे और ६३ वर्ष की आयु में नश्वर संसार से बिदा ली।

कुरान वास्तव में अति पवित्र ईश्वरीय ज्ञान है। जो जिब्राइल फरिश्ते से साक्षात के बाद हजरत पर अवतरित हुआ। जब हजरत मुहम्मद साहब की आयु चालीस वर्ष की थी तब रमजान के अति पवित्र मास में कुरान का अभ्युदय हुआ और उनके अन्तिम समय तक अवतरित होता रहा।

कुरान में तीस पारे अथवा खण्ड हैं। एक सौ चौदह सूरतें अथवा अध्याय है। अध्याय विरामों में विभक्त हैं जिन्हें रकूअ कहा जाता है। प्रत्येक रकूअ में अनेकों ज्ञान वाक्य हैं जिन्हें आयत कहा जाता है। मुहम्मद साहब के बाद इस्लाम के खलीफाओं के सहयोग से सहाबा और अन्सार विद्वानों ने कुरान की आयतों का इसी प्रकार वर्गीकरण किया। चूंकि कुरान का अवतरण अरबों के उद्धार के लिए हुआ इस लिए इसकी भाषा अरबी है।

कुरान की शिक्षा है एक खुदा ही सृष्टि को पैदा करने और संहार करने वाला है और वो निराकार है उसका कोई आकार नहीं है। पैगम्बर के विषय में भी कुरान में स्पष्ट संकेत है कि पैगम्बर भी आम इन्सानों की तरह ही होता है। आम इन्सानों की तरह ही उसे जींना और मरना है। खुदा की मेहरबानी से पैगम्बर खुदा के आलौकिक ज्ञान का संसार में प्रकाश करता है और भूले भटके मनुष्यों को जीवन का सच्चा मार्ग बताता है। ऐसा मार्ग बताता है जिससे जीवन में मनुष्य धर्माचरण करके मृत्यु पश्चात ईश्वर के साम्राज्य स्वर्ग में सुख भोगे।

कुरान में स्त्रिओं के लिए भी महत्व आदेश हैं, संक्षेप में कुरान बुराईओं के खिलाफ ईश्वरीय आदेश है। पर स्त्री अथवा पर पुरुष यदि आपस में सम्बन्ध रक्खें अथवा व्यभिचार करें तो कुरान का आज्ञा है कि —

स्त्री और पुरुष जो भी व्यभिचार का दोषी हो उसे सरे आम सौ कौड़ों की सजा देनी चाहिए। इस सजा पर लोगों को तरस नहीं खाना चाहिए। सजा सरे आम होनी चाहिए ताकि दूसरों के लिए नसीहत हो।

मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा का कुरान विरोधी है। मूर्ति पूजा अथवा व्यक्ति पूजा को कुरान में कुफ्र अथवा नास्तिकता माना गया है। दो प्रकार के काफिर माने गये हैं, एक तो वो जो शिर्क करते हैं यानी ईश्वर को एक और निराकार न मानकर अन्य और विभिन्न रूपों ईश्वर की पूजा करते हैं, दूसरे काफिर वो माने जाते हैं जो कुछ भी न मानकर ईस्लाम के अनुयायीओं के साथ युद्ध और अत्याचार करते हैं। जो ईश्वर को किसी और रूप में मानते हैं वो काफिर कुरान की शिक्षा के अनुसार सह्य है, परन्तु दूसरे प्रकार के काफिरों के लिए कुरान का आदेश है उस समय तक उनका नाश करो जब तक कि इस्लाम की पूर्ण रूप से स्थापना न हो जाए।

कुरान में दूसरे धर्मों के प्रति आदर भाव भी है। कुरान का आदेश है कि—

पृथ्वी के प्रत्येक भाग में ईश्वर इच्छा से सदैव महापुरुष आकर ईश्वर का मार्ग दिखाते हैं। वे सभी मन्य और आदरणीय हैं।

अपराधों के विषय में कुरान के बहुत सख्त नियम हैं। कुरान में चोरी के अपराध के बदले हाथ काट देने का आदेश है। प्राण के बदले प्राण, आँख के बदले आँख अर्थात अर्थात जो अपराधी किसी कोई अंग भंग करे तो उसे सजा वैसी ही दी जाए अर्थात उसका वो ही अंग भंग कर दिया जाए।

साथ ही भले कर्मों वालों के लिए कुरान में स्वर्ग और बुरे कर्म वालों को नरक में जाने का भी आदेश है। आदेश है कि जब कयामत

होगी तब हर एक के भले बुरे कर्मों का लेखा जोखा होगा और कोई सिफारिश काम न देगी किसी प्रकार की दया न होगी।

संक्षेप में कुरान सभी के लिए मार्ग दर्शक है, सभी इन्सान इससे शिक्षा ग्रहण कर सकते हैं। बुराईयों को छोड़कर इन्सान भलाइयों की ओर मुड़े इसी इच्छा के साथ कुरान का राष्ट्रभाषा में अनुवाद प्रस्तुत किया जारहा है। ताकि इन्सान शैतान के फरेब से बचें और प्रमुख ईश्वरीय आज्ञाओं का जैसे रोजा अर्थात व्रत उपवास, नमाज अर्थात प्रार्थना, हज्ज उम्रा अर्थात तीर्थ यात्रा का महत्व समझें। कुरान के पाठ से दुनियादारी में भटका इन्सान जान सकता है कि दान पुण्य की महत्ता क्या है, और दूसरों की भलाई में कितना बड़ा पुण्य है।

कुरान की शिक्षा है। ईश्वर एक है, भले ही उसे अलग-अलग नामों से याद किया जाए।

आशा है हिन्दी भाषी पाठक कुरान शरीफ के हिन्दी अनुवाद का लाभ उठाएंगे।

प्रकाशक

निवेदन

इस पवित्र ग्रंथ का हिन्दी अनुवाद करने में हमने बहुत सावधानी एवं कुशलतापूर्वक का प्रयत्न किया है। फिर भी यदि आपको कहीं कोई अशुद्धी मिल जाये तो उसे प्रकाशक को सूचित करदें ताकि अगले संस्करण में उसका शुद्धीकरण कर दिया जाये आपके इस पवित्र कार्य में सहयोग देने के अनुवादक एवं प्रकाशक अत्यन्त आभारी होंगे।

प्रकाशक

पवित्र कुरान

सूरे फातिहा

यह अध्याय मक्के में अवतरित हुआ। इसमें ७ आयतें १ रुकू है। (आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान कृपालु है। प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही की हैं जो सारे संसार का पालनहार है। (१) अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। (२) महाप्रलय के दिन का स्वामी है। (३) हे ईश्वर हम तेरी ही प्रार्थना करते हैं और तुझ ही से सहायता माँगते हैं। (४) हमें सीधा मार्ग दिखला (५) उन मनुष्यों का मार्ग जिन पर तूने दया की (६) उनका मार्ग नाही जिन पर तू क्रोधित हुआ और नाहीं उनका जो भटक गये (७) (रुकू १)

प्रथम पारा

सूरे बकर का अवतरण मदीने में हुआ। इसमें २८६ ज्ञान-वाक्य (आयतें) और ४० रुकू हैं।

(आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु हैं। अलिफ-लाम-मीम (१) यह वह पुस्तक है जिसके ईश्वरीय वाणी होने में कुछ भी सन्देह नहीं। यह संयमी का मार्ग बताती है। (२) जो आदृष्ट पर विश्वास करते हैं, नमाज पढ़ते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दे रखा है उसमें स (ईश्वर की भक्ति में भी) व्यय करते हैं (३) और हे मोहम्मद जो पुस्तक तुम पर अवतरित हुई और जो तुमसे

पहले अवतरित हुई, उनको जो मानते हैं और महाप्रलय पर भी विश्वास करते हैं (४) यही मनुष्य अपने पालनहार के सीधे मार्ग पर है और ये ही इच्छित फल प्राप्त करेंगे। (५) और जिन मनुष्यों ने नहीं माना उनको तुम डराओ या न डराओ, वह नहीं मानेंगे। (६) उनके हृदय पर और उनके कानों पर अल्लाह ने मुहर लगादी है और उनकी आँखों पर पर्दा है और महाप्रलय में उनके लिए कठिन दण्ड है। (७) (रुकू १)

मनुष्यों में कुछ ऐसे भी हैं जो कह देते हैं कि हम अल्लाह पर और महाप्रलय पर विश्वास करते हैं, यद्यपि वे विश्वास नहीं करते। (८) वह अल्लाह को और उन मनुष्यों को जो विश्वास कर चुके हैं, धोखा देते हैं, परन्तु वह नहीं जानते कि वह अपने आप से छल करते हैं। (९) उनके हृदय में अविश्वास का रोग था—अब अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया है और उनको झूठ बोलने के अपराध में कष्ट-प्रद दण्ड मिलना है। (१०) और जब उनसे कहा जाता है कि देश में उत्पात मत फैलाओ तो कहते हैं कि हम तो मेल-जोल कराने वाले हैं। (११) और सुनो यही लोग उत्पाती हैं परन्तु समझते नहीं हैं। (१२) और जब उनसे कहा जाता है कि जिस प्रकार और मनुष्यों ने विश्वास किया है उसी प्रकार तुम भी विश्वास करो तो कहते हैं क्या हम भी विश्वास कर लें जिस प्रकार मूर्खों ने किया है ? सुनो! यही मनुष्य मूर्ख हैं परन्तु समझते नहीं हैं। (१३) और जब उन मनुष्यों से मिलते हैं जो विश्वास कर चुके हैं तो कहते हैं—हमने विश्वास कर लिया है और जब एकान्त में अपने उद्दण्ड साथियों से मिलते हैं तो कहते हैं—हम तुम्हारे साथ हैं। हम तो केवल (मुसलमानों से) हँसी करते हैं। (१४) अल्लाह उनसे हँसी करता है और उनको ढील देता है। वह इसमें भटकते रहेंगे। (१५) यही है वह मनुष्य जिन्होंने शिक्षा के बदले भटकना मोल लिया है, अतः न तो इनके स्वार्थ की ही सिद्धी हुई न ये सच्चे मार्ग पर ही स्थिर रहे। (१६) इनका

दृष्टान्त उस मनुष्य का सा जिसने अग्नि प्रज्वलित की, और जब उसके आस पास की वस्तुएँ जगमगा उठीं तो अल्लाह ने उसकी नेत्र ज्योति छीन ली और उसको अंधेरे में छोड़ दिया । अब उनको कुछ नहीं सूझता । (१७) बहरे, गूंगे, अंधे की तरह वह सच्चे मार्ग पर नहीं आ सकते । (१८) या उनका उदाहरण वैसा ही है जैसे कि नभ से जल बरसे उसमें अंधेरा, गरजन और विद्युत हो और इस समय कोई मरने के भय से कड़क के मारे अंगुलियाँ कानों में ठूंस लेता हो । अल्लाह अविश्वासियों को घेरे हुए है । (१९) निकट है कि विद्युत उनकी दृष्टि को ही झपका दे क्योंकि वे इतने असमर्थ हैं कि जब उनके आगे बिद्युत का प्रकाश हुआ तो उसमें वे कुछ चल दिए अन्यथा जब उन पर अंधेरा छा गया तो खड़े रह गये, यदि अल्लाह चाहे तो उनके सुनने और देखने की शक्तियाँ छीन ले । निस्सन्देह अल्लाह सर्व शक्तिमान है । (२०) (रुकू २) ।

मनुष्यो ! अपने पालनहार की भक्ति करो । जिसने तुम्हें और तुम्हारे पूर्वजों को उत्पन्न किया है । क्या आश्चर्य यदि तुम भी नास्तिक बन जाओ । (२१) जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी का फर्श बनाया और नभ की छत । नभ से पानी बरसा कर उससे तुम्हारे खाने के फल उपजाये, बस किसी को अल्लाह के समान मत समझो और तुम तो जानते हो । (२२) कि हमने अपने भक्त (मोहम्मद) पर कुरान अवतरित की है । यदि तुम्हें इसमें सन्देह हो, तो तुम उसके समान एक अध्याय बना लाओ और सच्चे हो तो अल्लाह के अतिरिक्त अपना कोई और सहायक बुला लाओ । (२३) बस, और यदि इतनी बात भी न कर सको और खूब परिश्रम करने पर भी न कर सको तो नरक की अग्नि से डरो, जिसके ईंधन मनुष्य और पत्थर होंगे और वह अविश्वासियों के लिए तैयार है । (२४) और जिन मनुष्यों ने विश्वास किया और अच्छे कार्य किए उन्हें यह शुभ-संवाद सुना दो कि उनके लिए स्वर्गीय उद्यान हैं, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जब उनको

उनमें का कोई मेवा खाने को दिया जायेगा तो कहेंगे, यह तो हमें पहले ही मिल चुका है और उनको एक ही प्रकार के मेवे मिला करेंगे और वहाँ उनके लिए पत्नियाँ पवित्र साफ होगीं और वह उनमें सदैव रहेंगे। (२५) अल्लाह किसी उदाहरण देने में नहीं झेंपता । वह उदाहरण मच्छर का हो या उससे भी अधिक तुच्छ हो । अतः जो मनुष्य विश्वास कर चुके हैं वह तो विश्वास रखते हैं कि यह उनके पालनहार की ओर से ठीक है पर जो अविश्वासी हैं वह कहते हैं कि इस उदाहरण के प्रस्तुत करने की ईश्वर को क्या आवश्यकता थी । ऐसे ही उदाहरण से ईश्वर बहुतेरों को भटकाता है और बहुतेरों को शिक्षा देता है, परन्तु भटकाता है वह केवल पापियों को ही । (२६) जो वचन देकर ईश्वर का प्रण तोड़ देते हैं और जिन सम्बन्धों को जोड़े रखने को ईश्वर ने कहा है उनको काटते हैं तथा देश में उत्पात फैलाते हैं यही मनुष्य हानि उठायेंगे । (२७) मनुष्यो ! तुम किस प्रकार ईश्वर की महिमा को मना कर सकते हो क्योंकि जब तुम निर्जीव थे तब उसने तुम्हें जीवन दिया, फिर वही तुम्हें मारता है वही तुम्हें जीवन देता है, और अन्त में उसी की ओर तुम्हें लोटाया जायेगा (२८) वही है जिसने तुम्हारे लिए पृथ्वी की वस्तुएँ उत्पन्न कीं फिर नभ को ओर ध्यान दिया तो सात नभ समतल बना दिए और वह प्रत्येक वस्तु से जानकार हैं । (२९) (रुकू ३) ।

जब तुम्हारे पालनकर्ता ने देवताओं (फरिश्तों) से कहा—"मैं पृथ्वी पर अपना उत्तराधिकारी (सहायक) बनाना चाहता हूं" तो देवता बोले—क्या तू पृथ्वी पर ऐसे को उत्तराधिकारी (सहायक) बनाता है जो वहाँ उत्पात फलाये और खून बहाये । हम स्तुति तथा वन्दना के साथ तेरी महिमा का वर्णन करते हैं । बनाता है तो उत्तराधिकारी (सहायक) हमें बना । ईश्वर ने कहा—जो मैं जानता हूं वो तुम नहीं जानते । (३०) और आदम को सब वस्तुओं के नाम बता दिए । फिर उन वस्तुओं को देवताओं के सामने प्रस्तुत करके कहा कि

यदि तुम सच्चे हो तो हमें इन वस्तुओं के नाम बताओ। (३१) देवता बोले—तू पावन है, जो तूने हमें बता दिया है उसके अतिरिक्त हमें कुछ पता नहीं। सचमुच तू ही जानने वाला है। (३२) तब ईश्वर ने आज्ञा दी कि रे आदम! तुम देवताओं को इनके नाम बता दो; फिर जब आदम ने देवताओं को उन वस्तुओं के नाम बता दिये तो ईश्वर ने देवताओं से कहा—"क्या हमने तुमसे नहीं कहा था कि नभ की और पृथ्वी की सब छिपी वस्तुओं का हमें पता है और जो कुछ भी तुम हमें बताते हो या हमसे छुपाते हो उसकी हमें जानकारी है। (३३) और जब मैंने देवताओं से कहा कि आदम के आगे झुको तो राक्षस को छोड़कर सारे देवता झुक गये। उसने न माना और दम्भ किया तथा आज्ञा की अवहेलना की। (३४) और मैंने कहा रे आदम तुम और तुम्हारी पत्नी स्वर्ग में बसो और उसमें जहाँ कहीं से तुम्हारी जो इच्छा हो निडर होकर खाओ परन्तु इस गेहूं के पेड़ के पास मत फटकना और यदि ऐसा करोगे तो अपराधी हो जाओगे। (३५) बस राक्षस ने उनको बहकाया और उनको निकलवाकर छोड़ा। मैंने आज्ञा दी कि तुम जाओ। तुम एक के शत्रु एक और पृथ्वी में तुम्हारे लिए एक समय तक ठिकाना और जीवन व्यतीत करने का आवश्यक सामान हो। (३६) फिर आदम ने अपने पालनकर्ता से कुछ बातें सीखलीं और ईश्वर ने उसकी प्रार्थना मान ली। निस्सन्देह वह बड़ा ही क्षम्य तथा कृपालु है। (३७) जब मैंने आज्ञा दी कि तुम सब यहाँ से उतर जाओ और हमारी ओर से तुम लोगों के पास कोई सूचना पहुँचेगी तो जो हमारी सूचना का संरक्षण करेंगे उनको न तो कोई भय होगा और न वो दुःखी होंगे। (३८) जो मनुष्य नास्तिक होंगे और हमारे ज्ञान वाक्यों (आयतों) को झुठलायेंगे वही नरक के भोगी होंगे और सदैव नरक में रहेंगे। (३९) (रुकू ४)।

रे याकूब की संतान (रे बनी इस्राईल) मेरी कृपाओं का स्मरण करो जो हम तुम पर कर चुके हैं और तुम इस प्रतिज्ञा को पूरा करो

जो मुझसे की है और मैं उस प्रतिज्ञा को पूरा करूँगा जो तुमसे की है और मुझसे डरते रहो। (४०) और कुरान, जिसका हमने अवतरण किया है उस पर विश्वास करो और वह उस पुस्तक (तौरात) को प्रमाणित करता है जो तुम्हारे पास है और सबसे पहले इस पर अविश्वास मत करो और मेरे ज्ञान वाक्यों (आयतों) के बदले में थोड़ा मूल्य (साँसारिक लाभों के रूप में) प्राप्त मत करो और हम ही से डरते रहो। (४१) सत्य को असत्य के साथ मत मिलाओ जान बूझ कर सत्य को मत छिपाओ। (४२) नमाज पढ़ा करो और दान किया करो और जो झुकते हैं उनके साथ तुम भी झुका करो। (४३) तुम मनुष्यों से भलाई करने को कहते हो और अपनी ओर ध्यान भी नहीं देते यद्यपि तुम पुस्तक पढ़ते रहते हो। क्या तुम इतना नहीं समझते? (४४) सन्तोष और नमाज का सहारा पकड़ो। निस्सन्देह नमाज कठिन कार्य है परन्तु उनके लिए नहीं जो मुझसे डरते हैं। (४५) और यह धारणा रखते हैं कि वह अपने पालनकर्ता से मिलने वाले और उसकी ओर लौट कर जाने वाले हैं। (४६) (रुकू ५)

ऐ याकूब के पुत्रो! मेरी उन कृपाओं का स्मरण करो जो मैंने तुम पर की हैं और इस बात का भी स्मरण करो कि मैंने तुम्हें संसार के मनुष्यों पर प्रधानता दी थी (४७) उस दिन का भय करो जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम न आयेगा न उसकी ओर से किसी की मानी जायेगी, न उसके बदले में कुछ लिया जायेगा और न मनुष्यों को कुछ सहायता पहुँचेगी। (४८) जब हमने तुम्हें फिरऔन के मनुष्यों से बचाया जो तुम पर अत्याचार करते थे। वे तम्हारे पुत्रों को मृत्यु प्रदान करते और तुम्हारी स्त्रियों को अपनी सेवा के लिये जीवित रहने देते इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी परीक्षा थी। (४९) स्मरण करो जब मैंने तुम्हारे कारण नदी को फाड़ दिया। तत्पश्चात तुम्हें बचाया और फरऔन के मनुष्यों को तुम्हारे देखते-देखते डुबो दिया। (५०) और स्मरण करो जब मैंने मूसा से (तोरात देने के लिए) चालीस रातों की

प्रतिज्ञा की फिर तुमने उनके पीछे पूजन के लिए बछड़ा बना लिया और तुम अत्याचार कर रहे थे। (५१) फिर इसके पश्चात भी मैंने तुम्हें क्षमा किया। सम्भवत तुम कृपा मानो। (५२) और स्मरण करो जब मैंने मूसा को पुस्तक (तौरात) और कानून कसल अर्थात शरीयत दी जिससे तुम शिक्षा ग्रहण करो। (५३) वह समय भी स्मरण करो जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि तुमने बछड़े की पूजा करने से अपने ऊपर अत्याचार किया तो अपने सृष्टिकर्त्ता के सामने क्षमा प्रार्थना करो कि भविष्य में ऐसा नहीं करेंगे और अपने आपको मार डालो तुम्हारे उत्पन्न करने के समक्ष तुम्हारे लिए यही उत्तम है। फिर ईश्वर ने तुम्हारी प्रार्थना मान ली। निस्सन्देह वह बड़ा क्षमा प्रार्थना मानने वाला कृपालु है। (५४) उस समय का स्मरण करो। जब तुमने कहा था कि ऐ मूसा जब तक हम ईश्वर को सामने न देख लें हम तो किसी प्रकार तुम्हारा विश्वास नही करने वाले। इसपर तुमको विद्युत ने आ दबोचा और तुम देखते रहे (५५) फिर तुम्हारे मरने के पश्चात मैंने तुम्हें जीवित कर दिया कि सम्भवत तुम धन्यवाद दो (५६) मैंने तुम पर बादल कीं छाया की और तुम्हारे किया मन* और सलवा** भी बनाया और हमने जो तुम्हें पवित्र भोजन दिए हैं खाओ। उन मनुष्यों ने मेरा तो कुछ अनिष्ट नहीं किया परन्तु अपना ही खोते रहें। (५७) और उस समय का स्मरण करो जब मैंने तुम्हें आज्ञा दी कि इस गाँव में जाओ और जहाँ चाहो निश्चिन्त होकर खाओ। द्वार में शीश झकाते हुए प्रविष्ट होना और मुख से "हितमुन" हम क्षमा प्रार्थी हैं कहते जाना तो हम तुम्हारे अपराध क्षमा करेंगे और जो हमारी आज्ञा का भली भाँति पालन करेंगे, उनको ऊपर से पुण्य देंगे (५८) इस पर जो मनुष्य अन्यायी थे वे प्रार्थनाओं को जो उनको बताई गई थी उनको बदलकर दूसरी बोलने

---

*मीठी वस्तु जो रात को पत्तों पर जम जाती है।

**बटेर जैसी चिड़िया का माँस।

लगे तो हमने उन उद्दण्डों को उनके आज्ञोलंघन के अपराध के दण्ड नभ से भेजे। (५६) (रुकू ६)

वह घटना भी स्मरण करो जब मूसा ने अपनी जाति के लिए पानी की प्रार्थना की तो मैंने कहा ऐ मूसा अपनी लाठी पत्थर पर मारो, लाठी मारने पर पत्थर से द्वादस जल प्रपात फट निकले। सब मनुष्यों ने अपना घाट ढूंढ लिया और आज्ञा हुई कि अल्लाह की आजीविका खाओ और पिओ और देश में उत्पात न फैलाते फिरो। (६०) उस समय का भी स्मरण करो जब तुमने कहा कि ऐ मूसा हमसे तो एक भोजन पर नहीं रहा जाता तो आप हमारे लिए अपने पालनकर्ता से प्रार्थना कीजिए कि पृथ्वी से जो वस्तुएँ उपजती हैं अर्थात् शाक, ककड़ी गेहूं, मसूर, और प्याज हमारे लिए उत्पन्न करे। मूसा ने कहा कि जो वस्तु उत्तम है क्या तुम उसके बदले में वह वस्तु लेना चाहते हो जो घटिया हैं? किसी नगर में उतर पड़ो और जो तुम माँगते हो तुमको मिलेगा। और उन पर कष्ट और निर्धनता डाल दी गई और वे ईश्वर के प्रकोप में आ गये यह इस कारण कि वह अल्लाह की आज्ञाओं को नहीं मानते थे और पैगम्बरों को व्यर्थ मार डाला करते थे। इसलिए कि वे आज्ञा के न मानने वाले अहंकारी थे। (६१) (रुकू ७)

निस्सन्देह मुसलमान, यहूदी, ईसाई और साईबी इनमें से जिन मनुष्यों ने अल्लाह पर और महाप्रलय पर विश्वास किया और अच्छे काम करते रहे तो उनको इसका फल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा और उन पर न भय होगा न वह उदास होंगे। (६२) ऐ याकूब के पुत्रो! स्मरण करो जब मैंने तुमसे स्वीकृति ली और पर्वत (तूर) को उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और कहा कि जो पुस्तक हमने तुमको दी है इसको दृढ़ता से पकड़े रहो और जो इसमें है याद रखो जिससे तुम संयमी बन जाओ। (६३) फिर इसके पश्चात् तुम पलट गये तो यदि तुम पर ईश्वर की कृपा और दया न होगी तो तुम घाटे में आ गये होते। (६४) उन मनुष्यों की जो तुमको जान चुके हों

तुम में से जिन्होंने सप्ताह के दिन में तुम्हें कष्ट दिया तो हमने उनसे कहा बन्दर बन जाओ, दुतकारे जाओ। (६५) मैंने इस घटना को उन मनुष्यों के लिए जो इस समय उपस्थित थे और उन मनुष्यों के लिए जो इसके पश्चात् आने वाले थे उनके लिए भय और संयमी के लिए शिक्षा बनाई। (६६) जब मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह तुम्हें आज्ञा देता है कि एक गाय का बध करो वह कहने लगे क्या तुम हमसे हंसी करते हो ? मूसा ने कहा ईश्वर मुझे अपनी सुरक्षा में रखे कि मैं ऐसा ना समझ न बनूँ। (६७) वह बोले अपने पालनकर्ता से हमारे लिए प्रार्थना करो कि हमें भलीभांति समझा दे कि वह कैसी हो। मूसा ने कहा, ईश्वर कहता है कि वह गाय न बूढी हो न बछिया दोनों के मध्य की रास, बस तुमको जो आज्ञा दी है उसे पूरा करो। (६८) वह बोले अपने पालनकर्ता से हमारे लिए प्रार्थना करो कि वह हमको भली प्रकार समझा दे कि उसका रंग कैसा हो। मूसा ने कहा ईश्वर कहता है कि उस गाय का रंग खूब गहरा पीला हो कि देखने वालों को भली लगे। (६९) वह बोले कि अपने पालनकर्ता से हमारे लिए पूछो कि हमको अच्छी प्रकार समझा दे कि उसमें क्या गुण हो हमको तो गायें एक ही प्रकार की दिखाई देती हैं और ईश्वर ने चाहा तो हम अवश्य ठीक पता कर लेंगे। (७०) मूसा ने कहा कि ईश्वर कहता है कि वह न तो कमेरी हो जो भूमि जोतती हो और न खेतों को पानी देती हो, अँग पूरी हो, उसमें किसी प्रकार का दाग न हो वह बोले अब तुम ठीक पता लाये अर्थ कि उन्होंने गाय का बध किया। उनसे आशा न थी कि करेंगे। (७१) (रुकू ८)।

जब तुमने एक मनुष्य को मार डाला और झगड़ने लगे तो जो तुम छुपाते थे अल्लाह को उसी का भेद खोलना मान्य था। (७२) हमने कहा कि गाय का कोई टुकड़ा मृतक से छुआ दो, इसी प्रकार अल्लाह मृतक को जीवित करेगा। वह तुम्हें अपना चमत्कार दिखाता है जिससे तुम समझो। (७३) तब इसके पश्चत् तुम्हारे हृदय कठोर

हो गये मानों वह पाषाण ही हो बल्कि उनमें भी कठोर । पाषाणों में कुछ ऐसे भी हैं कि उनसे नहरें फूट निकलती हैं और कई पत्थर ऐसे हैं जो फट जाते हैं और उनसे पानी झरता है और कई पत्थर ऐसे भी हैं जो अल्लाह के भय से गिर पड़ते हैं। और जो कुछ तुम कर रहे हो अल्लाह सब बातों को जानता है। (७४) क्या तुम्हें आशा है कि वह तुम्हारी बात मान लेंगे उनकी दशा यह है कि उनमें कुछ मनुष्य ऐसे भी हो चुके हैं जो ईश्वर की वार्ता सुनते थे और तत्पश्चात् उसको समझने के उपरान्त देख भाल कर उसको कुछ का कुछ कर देते थे। (७५) जब धर्मियों से मिलते हैं तो कह देते हैं कि हम विश्वास कर चुके हैं। जब अकेले में एक दूसरे के पास होते हैं तो कहते हैं कि जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारे समक्ष खोली है क्या तुम मुसलमानों को उसकी सूचना दिए देते हैं कि तुम्हारे पालनहार के सामने उसी बात की सनद पकड़ कर तुम से झगड़ें। तो क्या तुम नहीं समझते । (७६) इन मनुष्यों को यह पता नहीं है कि वे जो कुछ छुपाते हैं या जो सामने करते हैं ईश्वर सब बातों को जानता है। (७७) कई उनमें अनपढ़ हैं जो बुदबुदाने के अतिरिक्त पुस्तक को नहीं समझते और वे केवल विचारों के बाण चलाया करते हैं। (७८) उन मनुष्यों पर दुःख होता है जो अपने हाथ से पुस्तक लिखें फिर कहें यह ईश्वर के यहाँ से अवतरित हुई है जिससे उसकी सहायता से थोड़ा-सा मूल्य प्राप्त करें। इसका दुःख है कि उन मनुष्यों ने अपने हाथ से लिखा और दुःख है जो वे इस प्रकार की कमाई करते हैं । (७९) वे कहते हैं कि केवल गिनती के कुछ दिनों के अतिरिक्त नरक की अग्नि हमको छूएगी नहीं। इनसे कहो क्या तुमने अल्लाह से कोई प्रतिज्ञा लेली है और अल्लाह अपनी प्रतिज्ञा के विरुद्ध नहीं करेगा या बिना समझे ही अल्लाह के नाम पर असत्य भाषण करते हो। (८०) सत्य बात तो यह है कि जिसने बुराइयाँ पल्ले बाँधी और अपने पाप के फेर में आ गए तो ऐसे ही मनुष्य नारकीय हैं और वे सदैव परलोक में ही रहेंगे । (८१)

जिन मनुष्यों ने विश्वास किया और भले कार्य किये ऐसे ही मनुष्य स्वर्गिक हैं और वे सदैव स्वर्ग में रहेंगे। (८२) (रुकू ९)।

स्मरण करो जब हमने याकूब के पुत्रों से दृढ़ प्रतिज्ञा की कि वह ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा नहीं करेंगे और माता-पिता के साथ सम्बन्धियों, अनाथों और दीन-दुखियों के साथ अच्छा बर्ताव करते रहेंगे अथा मनुष्यों से नम्रता से बात करेंगे, नमाज पढ़ेंगे और दान देते रहेंगे। परन्तु तुम में से थोड़े से मनुष्यों के अतिरिक्त सब बदल गए और तुम भी बदल जाने वाले हो। (८३) जब हमने तुमसे दृढ़ प्रतिज्ञा की कि परस्पर रक्तपात न करना और न अपने नगरों से अपने मनुष्यों को देश निकाला करना। यही प्रतिज्ञा तुमने और तुम्हारे पूर्वजों ने की। (८४) फिर वही हो कि अपनों को मारते हो और अपने में से भी कुछ मनुष्यों के विरुद्ध व्यर्थ और जबरदस्ती एक दूसरे के सहायक बन कर उनको उनके नगरों से देश निकाला देते हो और और वही मनुष्य यदि बन्दी होकर तुम्हारे निकट आवें तो तुम मूल्य देकर फ़िर उन्हें मुक्त करा देते हो। यद्यपि उनका निकाल देना ही तुम्हारे लिए उचित नहीं था। तो क्या पुस्तक की कुछ बातों को मानते हो और कुछ को नहीं मानते? तो जो मनुष्य तुम से ऐसा करें, इसके अतिरिक्त उनका और क्या फल हो सकता है कि साँसारिक जीवन में निन्दा तथा अपमान मिले और महाप्रलय के दिन कठिन दण्ड भोगने को दिया जाय। और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उससे अनभिज्ञ नहीं। (८५) यहीं हैं जिन्होंने प्रलय के बदले संसार का जीवन मोल लिया। अतः न तो महाप्रलय के दिन उनका दण्ड ही कम किया जायेगा और न उनको सहायता पहुंचेगी। (८६) (रुकू १०)।

निस्सन्देह मैंने मूसा को पुस्तक दी और फिर एक के पश्चात् एक रसूल (ईश्वरीय दूत) भेजे और मरियम के पुत्र ईसा को हमने खुले करामात दिये और पवित्र आत्मा से उनकी सहायता की। तो जब-जब तुम्हारे पास कोई रसूल तुम्हारी इच्छाओं के विरुद्ध कोई सूचना लेकर आया

तो तुमने शोखी दिखलाई। फिर बाज को तुमने झुठलाया और बाज को मार डालने लगे। (८७) कहते हैं कि हमारे हृदय पर कवच पड़ा है पर वास्तव में इनको मना करने के कारण ईश्वर ने फटकार दिया है। बस कभी ही विश्वास करते हैं। (८८) और जब ईश्वर की ओर से इनके पास पुस्तक कुरान आई जो उनकी पिछली पुस्तक को प्रमाणित करती है और इससे पहले जिसका नाम लेकर काफिरों के विरुद्ध अपनी विजय की प्रार्थना किया करते थे। तो वही वस्तु जिसको जाने पहचाने हुए थे, आ उपस्थित हुई तो उसको न मानने लगे। इन नास्तिकों पर ईश्वर की फटकार। (८९) क्या ही बुरी वस्तु है। जिसके बदले इन मनुष्यों ने अपनी जानों को क्रय कर लिया, ईश्वर ने अपने भक्तों में से जिस पर चाहा अपनी कृपा से कुरान भेजा। अहंकारी ईश्वर की उतारी हुई पुस्तक से मना करने लगे। इसलिए कोप पर कोप पड़े और नास्तिकों के जिए जिल्लत का दण्ड है। (९०) और जब इनसे कहा जाता है कि कुरान जिसका ईश्वर ने अवतरण किया है उसे मानो, तो कहते है कि हम उसी को मानते हैं जो हम पर पहले अवतरित हुई और उसके अतिरिक्त दूसरी पुस्तक को नहीं मानते यद्यपि यह कुरान सत्य है और जो पुस्तक उनके पास है उसे प्रमाणित भी करता है। ऐ पैगम्बर इनसे यह तो पूछो कि भला यदि तुम आस्तिक होते तो पहले ईश्वर के पैगम्बरों को क्यों मार डाला करते थे। (९१) और तुम्हारे पास मूसा खुले चिन्ह लेकर आया इस पर भी तुमने उनके पीछे बछड़े को ले बैठे और उसकी उपासना करके तुम अपनी हानि कर रहे थे। (९२) जब मैंने तुमसे दृढ़ प्रतिज्ञा की और तूर पर्वत उठाकर तुम्हारे ऊपर ला लटकाया और आज्ञा दी कि यह पुस्तक तौरात जो हमने तुमको दी है इसे दृढ़ता से पकड़े रहो, सुनो और पल्ले बाँधो। उत्तर में उन मनुष्यों ने कहा कि हमने सुना तो सही परन्तु मानते नहीं और उनके मना करने के कारण बछड़ा उनके हृदय में समाया हुआ था। इनसे कहो कि यदि तुम आस्तिक

हो तो तुम्हारा धर्म तुमको बुरी बात सिखला रहा है। (९३) कहो कि यदि ईश्वर के यहाँ स्वर्ग विशेषकर तुम्हारे ही लिए है दूसरे मनुष्यों के लिए नहीं यदि यह सत्य है तो मृत्यु को मांगो और देखो। (९४) और वे अपने कुकर्मों के कारण मृत्यु की प्रार्थना कभी नहीं कर सकते और ईश्वर अन्याइयों को खूब जानता है। (९५) तू उन्हें अन्य सब मनुष्यों से संसारी जीवन के लिए अधिक लालची पायेगा और मुशरकीन* में से भी प्रत्येक हजार वर्ष का जीवन चाहता है और इतना जीना उसे दण्ड से नहीं बचायेगा। जो कुछ वे करते हैं ईश्वर उसे देखता है। (९६) (रुकू ११)।

जो मनुष्य जिब्रील देवदूत का शत्रु हो उनसे कहो कि यह कुरान उसी ने ईश्वर की आज्ञा से तुम्हारे हृदय में डाला है जो उन पुस्तकों को भी प्रमाणित करता है जो इससे पहले से उपस्थित हैं और धर्मियों के लिए आदेश और शुभ-संवाद है। (९७) जो मनुष्य ईश्वर का, उसके दूतों का, उसके रसूलों का, जिब्रील का और मीकाईल का शत्रु हो तो ईश्वर भी ऐसे काफिरों का शत्रु है। (९८) हमने तुम्हारे पास सुलझी आयतें भेजी हैं और आज्ञा न मानने वालों के अतिरिक्त कोई इनसे मना नहीं करेगा। (९९) जब कोई प्रतिज्ञा कर लेते हैं तो इनमें का कोई न कोई गुट उस निश्चय को फेंक देता है। प्रायः इनमें से धर्म पर नहीं रहते। (१००) और जब उनके पास ईश्वर की ओर से रसूल आये जो उस पुस्तक को जो उनके पास है प्रमाणित भी करता है तो पुस्तकों वालों में से एक गुट ने ईश्वर की पुस्तक को पीठ पीछे फेंका मानों वे कुछ जानते न थे। (१०१) और उन ढकोसलों के पीछे लग गये जिनको सुलेमान के राज्यकाल में शैतान पढ़ा करते थे यद्यपि सुलेमान तो काफिर नहीं था अपितु वे काफिर थे जो

***ईश्वर में, उसकी जाति में, उसके गुणों में, उसकी प्रार्थना में दूसरे को सम्मिलित करने वाले मुशरीक कहलाते हैं।**

मनुष्यों को जादू सिखाया करते थे जो बाबिल नगर में हारूत और मारूत देवदूतों पर अवतरित हुआ था। वह किसी को न सिखाते थे जब तक उससे न कह देते थे कि हम तो जाँचते हैं कि तू काफिर न हो। इस पर भी उनसे ऐसी बातें सीखते जिनके कारण से स्त्री पुरुष में जुदाई पड़ जाये। यद्यपि ईश्वर की आज्ञा के विना वे अपनी इन बातों से किसी को हानि नहीं पहुंचा सकते थे। अर्थ कि यह मनुष्य ऐसी बातें सीखते जिनसे इन्हें हानि है लाभ नहीं। जबकि जान चुके थे कि जो मनुष्य इन बातों को अपनाता था वह अन्त में अभागा हुआ है और निस्सन्देह बुरा है जिनके बदले इन्होंने जानों को बेचा। दुःख है इनको यदि समझ होती। (१०२) और यदि यह विश्वास करते और संयमी बनते तो ईश्वर से अच्छा फल मिलता। (१०३) (रुकू १२)।

ऐ मुसलमानों! पैगम्बर के साथ राइना* कहकर सम्बोधन न किया करो अपितु उन्जुर्ना कहा करो और सुनते रहा करो, मुन्किरों के लिए दुःखदाई दण्ड है। (१०४) पुस्तक वालो और मुशरकीन में से जो मनुष्य न मानने वाले हैं वे इस बात से प्रसन्न नहीं हैं कि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर भलाई की जाय। अल्लाह जिसको चाहता है अपनी दया के लिए निश्चित कर लेता है और अल्लाह बड़ा

---

*'राइना' के अर्थ है—हमारी ओर ध्यान दें। रसूलुल्लाह, सल्लल्लाहु अलेहिवआलिही व सल्लम की राज्यसभा में यहूही आकर बैठते और हुजूर का कोई शब्द समझ में नहीं आता तो राइना के स्थान पर 'राइना' का शब्द शरारत से प्रयुक्त करते। 'राईना' के अर्थ हैं 'हमारा ग्वाला'। इसलिए मुसलमान भी यहूदियों की इस शरारत में भटक न जाये उन्हें हिदायत की गई कि वे 'उन्जुर्ना' कहा करे उसके भी अर्थ हैं। 'दुबारा कहें' इस प्रकार राइना और राईना की भूल से बच जायें।

दयावान है। (१०५) ऐ पैगम्बर हम कोई आयत बनादें या बुद्धि से उसको अवतरित कर दें तो उससे अच्छी या वैसी ही पहुंचा देते हैं क्या तुम्हें प्रतीत नहीं कि अल्लाह हर वस्तु से शक्तिशाली हैं। (१०६) क्या तुम्हें पता नहीं कि नभ और पृथ्वी का राज्य उसी अल्लाह का है और अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई सहायक मित्र नहीं है। (१०७) क्या तुम यह चाहते हो कि जिस प्रकार प्रथम मूसा से प्रश्न किये गये थे उसी प्रकार तुम भी अपने रसूल से प्रश्न करो। जो विश्वास के बदले अविश्वास करे तो वह सीधे मार्ग से भटक गया है। (१०८) प्रायः पुस्तक के मानने वाले सत्य प्रकट होने पर भी अपने हृदय की ईर्ष्या के कारण चाहते है कि तुम्हारे विश्वास कर लेने के पश्चात् पुनः तुम्हें काफिर बना दें तो क्षमा करो।

यहाँ तक कि ईश्वर अपनी आज्ञा दे दे। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु से शक्तिशाली है। (१०९) नमाज पढ़ते और दान देते रहो और जो कुछ भलाई अपने लिए पहले से भेज दोगे उसको ईश्वर के पास पाओगे निस्सन्देह अल्लाह जो कुछ भी तुम करते हो देख रहा है। (११०) वे कहते हैं कि यहूदी और नसरानी के अतिरिक्त स्वर्ग में कोई नहीं जाने पायेगा यह उनकी स्वप्निक बातें हैं। कहो यदि सच्चे हो तो अपना प्रमाण प्रस्तुत करो। (१११) अपितु सत्य बात तो यह है कि जिसने ईश्वर के समक्ष शीश झुकाया और अच्छे कार्य किये तो उसके लिए उसे फल उसके पालनकर्ता से मिलेगा और ऐसे मनुष्यों को ना कोई भय होगा ना वे उदास होंगे। (११२) (रुकू १३)।

यहूदी कहते हैं ईसाइयों का धर्म कुछ नहीं और ईसाई कहते हैं यहूदियों का धर्म कुछ नहीं यद्यपि वे तौरात और इंजील के पढ़ने व.ले हैं इसी प्रकार इन्ही जैसी बातें वह मुशरकीन अरब भी कहा करते हैं जो नहीं जानते। तो जिस बात पर ये मनुष्य झगड़ रहे हैं महाप्रलय के दिन अल्लाह इनमें उसका निर्णय कर देगा। (११३) उससे अधिक अत्याचारी और कौन है ? जो अल्लाह की मसजिदों में ईश्वर का

नाम लिया जाने को मना करे और मसजिदों के उजाड़ने का प्रयत्न करे। ये मनुष्य स्वयं इस योग्य नहीं कि मसजिदों में आने पायें परन्तु डरते हुए आते हैं। इनके लिए संसार में अपमान तथा महाप्रलय में बड़ा दण्ड है। (११४) अल्लाह ही का पूर्व और पश्चिम है तो जहाँ कहीं मुंह करलो उधर ही अल्लाह का सामना है। निस्सन्देह अल्लाह गुंजाइश वाला है। (११५) कहते हैं कि ईश्वर संतान रखता है यद्यपि वह पावन है अपितु जो कुछ नभ और पृथ्वी में है उसी का है और सब उसके आधीन हैं। (११६) वह नभ और पृथ्वी का बनाने वाला है और जब किसी कार्य को करना ठान लेता है तो बस उसके लिए कह देता है कि 'हो' और वह हो जाता है। (११७) जो नहीं जानते वह कहते हैं कि ईश्वर हमसे बात क्यों नहीं करता या हमारे पास कोई पहिचान क्यों नहीं आती इसी प्रकार जो मनुष्य इससे पहले हो गये हैं इन्हीं जैसी बातें वे भी कहा करते थे। इन सबके हृदय एक ही प्रकार के हैं। जो मनुष्य विश्वास रखते हैं उनको तो हम चिन्ह स्पष्ट तथा दिखा चुके। (११८) ऐ पैगम्बर हमने तुमको सत्य बात देकर मंगल समाचार देने वाला और पाप के भय से डराने वाला बनाकर भेजा है और तुम से नरकवासियों के विषय में कुछ पूछ-ताछ नहीं होगी। (११९) ऐ पैगम्बर न तो यहूदी ही तुमसे कभी सहमत होंगे न ईसाई ही जब तक कि तुम उन्हीं के धर्म का समर्थन न करो। ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि ईश्वर का निषेध ही निषेध है और ऐ पैगम्बर यदि तुम्हारे पास विद्या ज्ञान आने के पश्चात् भी उनकी इच्छाओं पर चलो तो तुमको ईश्वर के कोप से बचाने वाला न कोई मित्र होगा न सहायक। (१२०) जिन मनुष्यों को हमने कुरान दिया है वह उसको पढ़ते रहते हैं। जिन्हें उसे पढ़ने का अधिकार है वही उस पर विश्वास करते हैं और जो इससे मना करते हैं वही भटक जाते हैं। (१२१) (रुकू १४)।

ये याकूब के पुत्रो! हमारी उन कृपाओं का स्मरण करो जो हमने तुम पर की है और यह कि हमने तुमको सारे संसार के मनुष्यों

पर प्रधानता दी है। (१२२) उस दिन से डरो कि जब कोई मनुष्य किसी मनुष्य के कुछ काम नहीं आयेगा और न उसकी ओर से कोई बदला स्वीकार किया जायेगा और न सिफारिश लाभ पहुंचायेगी और न मनुष्यों को सहायता पहुंचायेगी। (१२३) याकूब के पुत्रों को वह समय याद दिलाओ जब इब्राहीम की उसके पालनकर्ता ने कुछ बातों का परीक्षण किया। उन्होंने उनको पूरा कर दिखाया तब ईश्वर ने सन्तुष्ट होकर कहा था कि हमने तुमको मनुप्यों का इमाम बताया है। इब्राहीम ने प्रार्थना की थी मेरी सन्तान में से भी किसी को इमाम बनाओ तो ईश्वर ने कहा 'हो' परन्तु हमारी स्वीकृति में वे सम्मिलित नहीं जो सत्यता पर न होंगे। (१२४) ऐ पैगम्बर याकूब के पुत्रों को वह समय भी स्मरण कराओ जब हमने काबे के घर को मनुष्यों को एकत्रित होने और शान्ति के स्थान पर बनाया। और कहो कि इब्राहीम के स्थान को ही नमाज का स्थान बनाओ और हमने इब्राहीम और इस्माइल से कहा कि हमारे घर को परिक्रमा करने वालों और मुजाविरों, रुकू और सिजदा करने वालों के लिए स्वच्छ रखो। (१२५) जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! हमको शान्ति का नगर बना और इसके रहने वालों में से जो अल्लाह और महाप्रलय पर विश्वास करते हैं उनको फल खाने को दे, फलाहार करवा। ये भी कहा कि जो न मानने वाला होगा उसको भी कुछ दिनों के लिए लाभ उठाने देंगे। और फिर उसे विवश करके नरक के दण्ड में ले जाकर प्रवेश करावेंगे और वह बुरा स्थान है। (१२६) ऐ पैगम्बर याकूब के पुत्रों को वह समय भी स्मरण कराओ कि जब इब्राहीम और इस्माइल काबे के घर की नीवें उठा रहे थे और प्रर्थना करते जाते थे कि ऐ हमारे पालने वाले हमारी प्रार्थना स्वीकार कर। निस्सन्देह तू ही सुनने और जानने वाला है। (१२७) और ऐ हमारे पालनकर्ता! हमें अपना आज्ञाकारी बना और हमारी जातियों से एक गुट उत्पन्न कर जो तेरा आज्ञाकारी हो और हमको हमारी पूजा की विधि बता और हमारे अपराध क्षमा कर। निस्सन्देह तू ही वड़ा क्षमा करने वाला

कृपालु है। (१२८) ऐ हमारे पालनकर्ता! इनमें इन्हीं में से एक पैगम्बर भेज, जो इनको तेरी आयतें पढ़कर सुनाएँ और इनको पुस्तक की शिक्षा दें और इनको संभालें। निस्सन्देह तू ही शक्तिशाली व ज्ञानवान है। (१२९) (रुकू १५)।

और कौन है जो इब्राहीम के नियम से मुंह फेरे। परन्तु वही जिसकी बुद्धि भ्रष्ट हो गई हो वह मुंह फेर लेगा निस्सन्देह हमने इब्राहीम को संसार में चुन लिया था और महाप्रलय के दिन भी वह भलों में होंगे। (१३०) जब उनसे पालनकर्ता ने कहा कि सेवा करो तो उत्तर में प्रार्थना की कि मैं सारे संसार के पालने वाले का सेवक (आज्ञाकारी हुआ)। (१३१) और इसके विषय में इब्राहीम अपने पुत्रों को वसीयत कर गये और याकूब ने कहा ऐ पुत्रो अल्लाह ने इस दीन को तुम्हारे लिए पसंद फ़रमाया है। तुम अन्त तक मुसलमान ही मरना। (१३२) ऐ यहूद! क्या तुम मौजूद थे जब याकूब के सामने मौत आ खड़ी हुई। उस समय उन्होंने अपने बेटों से पूछा कि मेरे पीछे किस की पूजा करोगे? उन्होंने उत्तर दिया कि आपके पूजित और आपके बड़ों अर्थात् इब्राहीम, इस्माईल और इसहाक के पूजित एक खुदा की पूजा करेंगे और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३३) ऐ यहूद यह लोग हो चुके, उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुम को और तुम से उनके काम की पूँछ-ताँछ नहीं होगी। (१३४) यहूद और ईसाई मुसलमानों से कहते हैं कि यहूदी या ईसाई बन जाओ। तो सच्चे रास्ते पर आओ ऐ पैग़म्बर तुम इन लोगों से कहो नहीं बल्कि हम इब्राहीम के तरीके पर हैं। जो एक खुदा के हो रहे थे और मुशरकीन में से न थे। (१३५) मुसलमानो! तुम यहूद ईसाई को उत्तर दो कि हम तो अल्लाह पर ईमान लाये हैं और कुरान जो हम पर उतरा और जो कि इब्राहीम और इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की संतान पर उतरे और मूसा और ईसा को जो पुस्तक मिली, उस पर और जो दूसरे पैगम्बरों को उनके

पालने वाले से मिली, उसी पर हम इन पैग़म्बरों में से किसी एक में भी किसी तरह की भिन्नता नहीं समझते और हम उसी के आज्ञाकारी हैं। (१३६) तो अगर तुम्हारी तरह यह लोग भी ईमान ले आवें, जिस तरह तुम ईमान लाये तो बस सच्चे मार्ग पर आ गये और मुँह फेर लें तो समझो बस वह हठ पर हैं तो इनकी बजाय खुदा तुम्हारे लिए काफ़ी होगा वह सुनता और जानता है। (१३७) मुसलमानों! इन लोगों से कहो कि हम तो अल्लाह के रंग में रंग गये। और अल्लाह के रंग से और किस का रंग अच्छा-होगा और हम तो उसी की पूजा करते हैं। (१३८) ऐ पैग़म्बर इन लोगों से कहो कि क्या तुम अल्लाह के बारे में हम से झगड़ते हो? हालाँकि वही हमारा पालनकर्त्ता है और तुम्हारा भी परवर्दिगार है। और हमारे काम हमारे लिए और तुम्हारे काम तुम्हारे लिए और हम सिर्फ उसी को मानते हैं। (१३६) या तुम कहते हो इब्राहीम इस्माईल और इसहाक और याकूब और याकूब की संतान (यह लोग) यहूदी थे या ईसाई थे ऐ पैग़म्बर! इनसे कहो कि तुम बड़े जानने वाले हो या खुदा और उससे बढ़कर जालिम कौन होगा, जिसके पास खुदा की तरफ से गवाही हो और वह उसको छिपाये और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे बेखबर नहीं। (१४०) यह लोग थे कि हो गुजरे। उनका किया उनको और तुम्हारा किया तुम को और जो कुछ वह कर गुजरे तुम से उसकी पूँछ-ताँछ नहीं होगी। (१४१) (रुकू १६)।

दूसरा पारा-सूरे बकर

मूर्ख मनुष्य कहेंगे कि मुसलमान जिस क़िब्ले पर पहले थे अर्थात् बैतुल मुकद्दस उससे इनके काबा के घर की ओर को मुड़ जाने का क्या कारण हुआ? ऐ पैगम्बर तुम यह उत्तर दो कि पूर्व और पश्चिम

अल्लाह ही की है। जिसको चाहता है सीधे मार्ग चलाता है (१४२) और इसी प्रकार हमने तुम को बीच की उम्मत (गिरोह जो किसी पैग़म्बर के आधीन हो) बनाया है। जिससे मनुष्यों के मुकाबले में तुम गवाह बनो और तुम्हारे मुकाबले में पैग़म्बर गवाह बने; और ऐ पैगम्बर। जिस किब्ले पर तुम थे हमने उसको इसी अभिप्राय से ठहराया था कि हमको प्रतीत हो जावे कि कौन-कौन पैगम्बर के आधीन रहेगा और कौन उल्टा फिरेगा और यह बात यद्यपि भारी है; परन्तु उन पर नहीं जिनको अल्लाह ने ज्ञान दिया और ईश्वर ऐसा नहीं कि तुम्हारा विश्वास लाना मेटेगा। ईश्वर तो मनुष्यों पर बड़ी ही कृपा रखने वाला दयालु है। (१४३) तुम्हारे मुँह का नभ में फिरना हम देख रहे हैं। तो जो किब्ले तुम चाहते हो, हम तुम को उसी की ओर फेर देंगे। पूजनीय मसजिद (काबे) की ओर अपना मुँह फेर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो, उसी की ओर अपना मुँह कर लिया करो और जिन मनुष्यों को पुस्तक दी गई है, उनको पता है कि यह किब्ला बदलना ठीक उनके पालनहार की ओर से है और जो कर रहे हैं, खुदा उससे बेसुध नही है (१४४) ऐ पेगम्बर! जिन मनुष्यों को पुस्तक दी गई है, यदि तुम सब चिन्ह उनके पास ले आये, तो भी वह तुम्हारे किब्ले की सहायता न करेगे और न तुम्हीं उनके किब्ले की सहायता करोगे और उनमें का कोई भीं दूसरे के किब्ले को नहीं मानता और तुम्हें तो ज्ञान हो चुका हैं, यदि उसके पश्चात् भी तुम इनकी इच्छाओं पर चले, तो ऐसी दशा में निस्सन्देह तुम भी अन्यायियों मे गिने जाओगे। (१४५) जिन मनुष्यों को हमने पुस्तक दीं है, वह जिस प्रकार अपने पुत्रों को पहिचानते हैं इन मोहम्मद को भी पहिचानते हैं। और उनमें से कुछ मनुष्य जानबूझ कर सत्य को छिपाते हैं। (१४६) सच यह किब्ला तुम्हारे पालन-कर्त्ता की ओर से है। तो कहीं सन्देह करने वालों में से न हो जाना। (१४७) (रुकू १७)।

प्रत्येक के लिए एक दिशा है जिधर को नमाज में वह अपना मुँह करता है, तो दिशा-भेद की चिन्ता न करते हुए भलाइयों की ओर लपको। तुम कहीं भी हो, अल्लाह तुम सबको खींच बुलायेगा। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु, पर शक्तिशाली है। (१४८) तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह माननीय मसजिद (काबा) की ओर कर लिया करो। यह तुम्हारे पालनकर्त्ता द्वारा निश्चित है। अल्लाह तुम्हारे कामों से बेसुध नहीं है। (१४९) ऐ पैगम्बर तुम कहीं से भी निकलो, अपना मुँह माननीय मसजिद की ओर कर लिया करो और जहाँ कहीं हुआ करो उसी की ओर अपना मुँह करो; जिससे दूसरों को तुम से झगड़ने का अवसर न रहे। परन्तु उनमें से जो अन्यायी हैं, तुम उनसे मत डरो और हमारा डर रक्खो। अर्थ यह है कि मैं अपनी कृपा तुम पर पूरी करूँगा। सम्भवतः तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ। (१५०) जैसा हमने तुम्हारे बीच तुम्हीं में का एक रसूल भेजा। वह हमारी आयतें तुम को पढ़ कर सुनाता है, तुम्हारा सुधार करता है, तुम को पुस्तक और समझ की बातें सिखाता और तुम को ऐसी-ऐसी बातें बताता है, जो पहले से तुम जानते न थे। (१५१) अतः तुम मेरी याद में लगे रहो और मेरा कृपा मानते रहो नाशुक्री न करो। (१५२) (रुकू १८)

ऐ ईमानदारों! संतोष और नमाज से सहायता लो। निस्सन्देह अल्लाह संतोषियों का साथी है। (१५३) और जो मनुष्य अल्लाह के मार्ग में मारे जायें, उनको मरा हुआ न कहना। वह मरे नहीं जीवित हैं; परन्तु तुम नहीं समझते। (१५४) और निस्सन्देह हम थोड़े भय से, भूख से, माल, जान, और उपज की हानि से तुम्हारी जाँच करेंगे और ऐ पैगम्बर संतोषियों को शुभसंवाद सुना दो। (१५५) यह मनुष्य जब इन पर कष्ट आता हैं, तो बोल उठते हैं कि हम तो अल्लाह के ही हैं और हम उसी की ओर लौट कर जाने वाले हैं। (१५६) यही लोग हैं, जिन पर पालनकर्ता की कृपा और दृष्टी है और यही सच्चे

मार्ग पर हैं। (१५७) पर्वत सफा, और (पर्वत) मर्वह* ईश्वर की निशानियों में से हैं। तो जो व्यक्ति काबे का हज्ज या उमरा (तीर्थ जो मक्के से तीन कोस पर है) करे उस पर इन दोनों के बीच फेरे करने में कुछ अपराध नहीं और जो प्रसन्नता से शुभ काम करे, तो ईश्वर किए को मानने वाला और जानकार है। (१५८) वह जो हमने खुली हुई आज्ञाओं और उपदेशों की बातें अवतरित कीं और पुस्तक तौरात में हमने साफ-साफ समझा दिया इसके पश्चात भी जो उनको छिपाए तो यही लोग हैं जिनको ईश्वर अपमानित करता है और अपमान करने वाले भी उनको अपमानित करते हैं। (१५९) परन्तु जिन्होंने क्षमा प्रर्थना की और अपनी दशा को संभाल लिया और जो छिपाया था साफ-साफ वर्णन कर दिया तो यही मनुष्य है, जिनकी प्रार्थना मैं मानता हूं और मैं क्षमा करनेवाला कृपालु हूं। (१६०) जो मनुष्य अस्वीकार करते रहे और अस्वीकार की ही दशा में मर गए यही हैं जिन पर ईश्वर की और फरिश्तों की और व्यक्तियों की सब की धिक्कार है। (१६१) वह सदैव इसी में रहेंगे। इनका न तो दण्ड ही कम किया जावेगा और न अवकाश ही मिलेगा। (१६२) तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, इसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं। वह बड़ा दया करनेवाला कृपालु है। (१६३) (रुकू १९)

निस्सन्देह नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करने में और रात और दिन के आने जाने में और जहाजों में जो मनुष्यों के लाभ की वस्तुएँ समुद्र

---

*सफा और मर्वह दो पर्वतों के नाम हैं। एक समय ईश्वर की आज्ञा से हजरत इब्राहीम एक बार अपनी बीवी हजरत हाजरा और दुधमुंहें बच्चे इस्माइल को छोड़कर चले गए। बच्चे को प्यासा देख हजरत हाजरा इन्हीं पर्वतों पर पानी की खोज में गईं। ईश्वर की कृपा से एक चश्मा निकल आया, जो 'जमजम' के नाम से प्रसिद्ध है। इन्हीं पर्वतों पर मुसलमान आज भी फेरे देते हैं। उन्हें यह विश्वास है कि संतोषी के दुःख को ईश्वर सदैव सुनता है।

में लेकर चलते हैं और वर्षा में जिसको अल्लाह नभ से बरसाता है, फिर उसकी सहायता से पृथ्वी को उसके उजड़े पीछे फिर लहलहाता है और हर प्रकार के जन्तुओं में जो ईश्वर ने पृथ्वी के धरातल पर फैला रखे हैं और हवाओं के फेरने में, और बादलों में जो आकाश और धरती के बीच घिरे रहते हैं। उन मनुष्यों के लिए जो समझ रखते हैं। (ईश्वर की प्रकृति की) निशानियाँ हैं। (१६४) मनुष्यों में कुछ ऐसे भी हैं, जो अल्लाह के सिवा औरों को भी पूजित ठहराते हैं। जैसा प्रेम ईश्वर से रखना चाहिए, वैसा प्रेम उनसे रखते हैं। जो धर्मी हैं, उनको सबसे बढ़कर ईश्वर का प्रेम होता है। यह बात अन्यायियों को दण्ड के देखने पर सूझ पड़ेगी। निस्सन्देह अब वह सूझ पड़ती कि हर प्रकार की शक्ति अल्लाह को ही है और यह कि अल्लाह का दण्ड भी कठोर है। (१६५) उस समय गुरू, चेले चाटियों से हाथ छुड़ा लेंगे और दण्ड देख लेंगे और उनके सम्बन्ध टूट जायेंगे। (१६६) चेले कह उठेंगे कि शोक! हमको फिर लौट कर संसार में जाना मिले, तो जैसे यह गुरू हमसे हाथ खेंच गए, उसी प्रकार हम भी उनसे सम्बन्ध तोड़ जाएँ यों अल्लाह उनके काम उनके सामने लावेगा कि उनको हसरत दिखाई देगी और वे नरक से निकल न सकेंगे। (१६७) (रुकू २०)

मनुष्यों पृथ्वी में जो वस्तुएँ भोग्य और शुद्ध हैं, उनमें से खाओ और राक्षस का पक्ष न करो, वह तो तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है। (१६८) वह तो तुम्हें कुकर्म और निर्लज्जता बतायेगा। और यह चाहेगा कि बे ना समझे-बूझे तुम ईश्वर के बारे में झूठे जंजाल गढ़ो। (१६९) जब इनसे कहा जाता है कि जो ईश्वर ने अवतरित किया है, उस पर चलो तो उत्तर देते हैं—नही जी, हम तो इसी पर चलेंगे जिस पर हमने अपने बड़ों को पाया। भला यदि उनके बड़े कुछ भी नहीं समझते थे और न सच्चे मार्ग पर चलते थे, तो भी ये उन्हीं का पक्ष किए चले जायेंगे। (१७०) और जो मनुष्य काफिर हैं उनका उदाहरण

उस व्यक्ति जैसा है, जो एक मूर्ति के पीछे पड़ा चिल्ला रहा है और वह सुनती ही नहीं। तो उसको बुलाना पुकारना निरर्थक है। बहरे गूंगे अन्धे के समान उनको भी समझ नहीं। (१७१) ऐ ईमानदारो! मैंने जो तुमको आजीविका और पवित्र वस्तुएँ दे रखी है खाओ और यदि तुम अल्लाह ही की पूजा का दम भरते हो, तो उसके कृतज्ञ बनो। (१७२) उसने तो बस मरा हुआ जन्तु खून सूअर का माँस और वह जन्तु जिसको ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के लिए भेंट किया जाय, तुम पर हराम किया है। जो भूख से बेचैन हो परन्तु अवज्ञा करनेवाला और सीमा से बढ़ जानेवाला न हो, तो उस पर पाप नहीं। निस्सदेन्ह अल्लाह क्षम्य तथा दयालु है। (१७३) जो मनुष्य उन आज्ञाओं को जो ईश्वर ने अपनी पुस्तक (तौरात) में दी, छुपाते हैं और उनके बदले थोड़ा-सा लाभ करते हैं, यह मनुष्य और कुछ नहीं परन्तु अपने पेटों में अंगारे भरते हैं और महाप्रलय के दिन ईश्वर इनसे बात भी तो नहीं करेगा और न इनको पवित्र करेगा और उनके लिए कठोर दण्ड है। (१७४) यही मनुष्य हैं जिन्होंने सच्ची राह के बदले भटकना मोल लिया है और क्षमा के बदले दण्ड। बस, नरक की अग्नि में उनको ठहरना है। (१७५) यह इसलिए कि पुस्तक तौरात को वास्तव में ईश्वर ही ने अवतरित किया और जिन मनुष्यों ने उस में भेद डाला, वह हठ में भटक गये हैं। (१७६) (रुकू २१)।

भलाई यही नहीं कि तुम अपना मुँह पूर्व वा पश्चिम की ओर कर लो, भलाई तो यह है कि अल्लाह और महाप्रलय और फरिश्तों और नभ की पुस्तकों और पैगम्बरों पर विश्वास कर और धन अल्लाह को मार्ग में संबन्धियों, अनाथों, दुखिया मनुष्यों मुसाफिरों और माँगनेवालों को दे और पराधीनता इत्यादि की कैद से मनुष्यों की गर्दनों के छुड़ाने में दे, नमाज पढ़ता और जकात देता रहे और जब बचन देदे तो अपनी प्रतिज्ञा पूरी करे और तंगी में कष्ट में और हलचल के समय दृढ़ रहे यही मनुष्य सच्चे और संयमी हैं। (१७७) ऐ ईमानवालों! जो मनुष्य मारे जावें, उनमें तुमको जान के बदले जान की आज्ञा दी जाती

है। स्वाधीन के बदले स्वाधीन, पराधीन के बदले पराधीन, स्त्री के बदले स्त्री। फिर जिस हत्यारे को बध किए हुए की हत्या के बदले में कोई अंश लेकर क्षमा कर दिया जाय, नियमानुसार हत्यारे को बध किये प्राणी के वारिसों को खून का बदला अदा कर देना चाहिए। यह तुम्हारे पालनेवाले की ओर से तुम्हारे पक्ष में आसानी और कृपा है। फिर इसके पश्चात जो जियादती करे, तो उसके लिए कठिन दण्ड है। (१७८) और बुद्धिमानो बदला चाहने में तुम्हारा जीवन है जिससे तुम खून बहाने से बचे रहो। (१७९) पुस्तकवालों तुमको आज्ञा दी जाती है कि जब तुममें से किसी के सामने मृत्यु आ पहुँचे और वह कुछ धन छोड़नेवाला हो, तो माता-पिता और सम्बन्धियों के लिए नियमानुकूल वसीयत करे, जो ईश्वर से डरते है, उन पर उनके अपनों का यह एक अधिकार है। (१८०) फिर जो वसीयत के सुने पीछे उसे बदल दें तो उसका पाप उन्हीं मनुष्यों पर है, जो वसीयत को बदलें। निस्सन्देह अल्लाह सुनता और जानता है। (१८१) जिसको वसीयत करनेवाले की ओर से किसी विशेष व्यक्ति का पक्षपात या किसी को अधिकार का सन्देह हुआ हो और वह वारिसों में मेल करा देते तो ऐसी दशा में वसीयत के बदलने का उस पर कुछ पाप नहीं। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१८२) (रुकू २२)।

ईमानवालों ! जिस प्रकार तुमसे पहिले पुस्तकवालों पर रोजह रखना कर्त्तव्य था, तुम्हारा भी कर्तव्य है जिससे तुम पापों से बचो। (१८३) वह भी गिनती के कुछ दिन हैं। इस पर भी जो व्यक्ति तुममें से बीमार है या सफर में हो, तो दूसरे दिनों से गिनती पूरा कर दे

***जीव हत्या के दो दण्ड हैं—(क) या तो हत्यारे को भी मार डाला जाय या (ख) उससे कुछ रुपया ले लिया जाए और उसकी जान न ली जाय, परन्तु रुपया उसी वक्त लिया जा सकता है, जब मरे प्राणी के सम्बन्धी उसको खुशी-खुशी स्वीकार करें।**

ग्रौर जिनको भोजन देने की शक्ति है, उन पर एक रोजे का बदला एक गरीब को भोजन देना है ग्रौर जो व्यक्ति ग्रपनी प्रसन्नता से शुभ काम करना चाहे, तो यह उसके पक्ष में ग्रधिक भलाई है ग्रौर समझो तो रोजा रखना तुम्हारे पक्ष में भलाई है। (१८४) रमजान (रोजों) का महीना जिसमें ईश्वर की ग्रोर से कुरान ग्रवतरित हुग्रा है। ग्रौर कुरान जो मनुष्यों को मार्ग दिखानेवाला है ग्रौर ज्ञान ग्रौर नियम की स्पष्ट ग्राज्ञा उसमें है, तो तुममें से जो व्यक्ति इस महीने में उपस्थित हो, तो चाहिए कि इस महीने के रोजे रखे ग्रौर जो बीमार या यात्रा में हो* तो दूसरे दिनों से गिनती पूरी कर ले ग्रल्लाह तुम्हारे साथ ग्रासानी करना चाहता है कड़ाई नहीं करना चाहता। इसलिए कि तुम रोजों की गिनती पूरी कर लो ग्रल्लाह ने जो तुमको सच्ची राह दिखा दी है उस पर चलो ग्रौर उसके कृतज्ञ बनो। (१८५) ऐ पैग़म्बर ! जब हमारे भक्त तुमसे हमारे बारे में पूँछें तो उन को समझा दो कि हम उनके पास हैं। जब कोई हमें पुकारता है, तो हम प्रत्येक पुकारने वाले की टेर को स्वीकार कर लेते हैं, ग्रतः उनको भी चाहिये कि हमारी ग्राज्ञा मानें ग्रौर हम पर विश्वास करें, जिससे वह सीधे मार्ग पर चलें। (१८६) मुसलमानों ! रोज़ों की रातों में ग्रपनी पत्नियों के पास जाना तुम्हारे लिये उचित कर दिया गया है, वह तुम्हारे वस्त्र हैं ग्रौर तुम उनके वस्त्र हो। ग्रल्लाह ने देखा तुम चोरी चोरी उनके पास जाने से ग्रपनी (धर्म) हानि करते थे, तो उसने तुम्हारा ग्रपराध क्षमा कर दिया ग्रौर तुम ग्रपराधी नहीं रहे। बस ग्रब रोजों की रात्री के समय उनके साथ सहवास करो ग्रौर जो परिणाम ईश्वर ने तुम्हारे लिए लिख रक्खा है (ग्रर्थात संतान) उसकी इच्छा करो ग्रौर खाग्रो पियो। जब तक

---

*रोजा (व्रत) रखना ग्रावश्यक है। जो ग्रपने घर पर न हों या बीमार हो, उसको चाहिए कि रमजान के बाद जितने रोजे उसने छोड़ दिये हैं उतने ही रोज रख।

कि रात्री की काली धारी से प्रातः की श्वेत धारी तुमको स्पष्ट दिखाई देने लगे, फिर रात्री तक रोजह पूरा करो और तुम मसजिद में एकान्त में बैठे हो, तो उनसे प्रसंग मत करना—यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमाऐं हैं तो उनके निकट भी न फटकना। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाओं को मनुष्यों के लिए खोल-खोलकर बताता है, जिससे वह बचें। (१८७) और आपस में निरर्थक एक दूसरे का धन प्राप्त मत करो और न धन को हाकिमों के पास रिश्वत के लिये ढूंढ़ो, जिससे मनुष्यों के धन में से कुछ जान-बूझ कर निरर्थक हजम न कर जाओ। (१८८) (रुकू २३)।

ऐ पैगम्बर! मनुष्य तुमसे चन्द्रमा के बारे में यदि पूछते हैं, तो कहो कि चन्द्रमा से मनुष्यों के हज्ज के समय का पता लगता है और यह कुछ अच्छा नहीं है कि घरों में उनके पिछवाड़े की ओर से आओ, अपितु भलाई तो उसकी है जो संयम करें और घरों में उनके द्वारों से आओ* और अल्लाह से डरते रहो जिससे तुम अपने ऐच्छितलक्ष को पहुंचो। (१८९) मुसलमानों! जो तुम से लड़ें तुम अल्लाह के नाम से उनसे लड़ो और अधिकता न करना। अल्लाह अधिकता करनेवालों को नही चाहता। (१९०) जो मनुष्य तुमसे लड़ते है उनको जहाँ पावो हत्या करो और जहाँ से उन्होंने तुमको निकाला है अर्थात मक्के से तुम भी उनको वहाँ से निकालो और झगड़े का बना रहना खून वहाने से भी बढ़ कर है और जब तक काफिर माननीय मसजिद के पास तुमसे न लड़ें, तुम भी उस स्थान पर उन से न लड़ो, परन्तु यदि वह तुमसे लड़े तो तुम भी उनकी हत्या करो, ऐसे काफिरों को यही दण्ड है। (१९१) फिर यदि मान जायं तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है।

---

*हज्ज के समय बीच में आवश्यकता पड़ने पर लोग घर के पिछले दरवाजे से जाकर फिर वापिस आजाते थे। मानो घर गये ही नहीं। इस पाखण्ड से बचने के लिये संकेत है।

(१९२) उन से इतना लड़ो कि झगड़ा शेष न रहे और एक ईश्वर की आज्ञा चले। फ़िर यदि झगड़ा छोड़ दें तो उन पर किसी प्रकार का अन्याय नहीं करना चाहिए, क्योंकि श्रद्धा तो अत्याचारियों के अतिरिक्त किसी पर उचित नहीं। (१९३) श्रद्धा* वाले महीनों का बदला श्रद्धा वाले महीने और श्रद्धा की वस्तुओं में भी बदला** तो जो तुम पर अन्याय करे, तो जैसा अन्याय उसने तुम पर किया वैसा ही तुम भी उस पर करो। और अन्याय करने में अल्लाह से डरते रहो और स्मरण रक्खो कि अल्लाह उन्हीं का साथी है जो उससे डरते हैं। (१९४) प्रभु के कार्य में व्यय करो। अपने हाथों अपने को हत्या में मत डालो और कृपा करो, कृपा करने वालों से अल्लाह प्रेम रखता है। (१९५) अल्लाह के लिए हज्ज और उमरह को पूर्ण करो। और यदि मार्ग में कहीं घिर जाओ तो बलिदान करदो जैसा कुछ होसके और जब तक बलिदान अपने ठिकाने न लगजाय अपना सिर न मुंडावो और जो तुममें रुग्ण हो व सिर की ओर से उसे दुख हो तो बाल उतरवा देने का बदला रोजे या दान या बलि है। तत्पश्चात जब तुम्हारे लिये एकत्रित हो जावे तो जो कोई उमरे को हज्ज से मिलाकर लाभ उठाना चाहे तो उस को बलिदान देना होगा और उसको बलिदान सुलभ न हो तो तीन रोज हज्ज के दिनों में रखले और जब लौटकर आओ तो सात रोजे रक्खो यह पूरे दस हुए। यह आज्ञा उसके लिए है जिसका घरबार मक्के में न हो। अल्लाह से डरो और जानते रहो कि अल्लाह का दण्ड कठिन है (१९६) (रुकू २४)।

हज्ज के कई महीनों*** का पता है तो जो व्यक्ति इन महीनों में

---

*जीकाद जिलहिज्ज मुहर्रम रजब ये चार श्रद्धा वाले महीने हैं।

**यदि झगड़ालु पवित्र मास या पवित्र वस्तुओं की चिन्ता न करके झगड़ा करें तो तुम भी उनकी चिन्ता न करो।

***शव्वाल, जीकअद और दस दिन जिलहिज्ज के !

हज्ज की ठान ले तो अहराम* बांधने से अन्त तक हज्ज के दिनों में विषय भोग और पाप व झगड़े की कोई बात न करे। और भलाई का कोई सा काम करो वह ईश्वर को प्रतीत हो जायगा और हज्ज के जाने से पहले मार्ग व्यय एकत्रित कर लो। उत्ताम मार्ग में व्यय संयम है और बुद्धिमानों! मुझ से डरते रहो। (१९७) हज्ज के समय तुम अपने पालने वाले की कृपा खोजो, तो कुछ पाप नहीं। फिर जब अरफात पर्वत से लौटो तो स्थान मुजदल्फा में ठहर कर ईश्वर की याद उस नियम से करो जैसा तुमको बताया है। इस से पहिले तुम भटके हुओं में से थे। (१९८) फिर जिस स्थान से मनुष्य चलें, तुम भी वहीं से चलो और अल्लाह से क्षमा प्रार्थना करो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१९९) फिर जब हज्ज के कामों को कर चुको तो जिस प्रकार तुम अपने पिता-पितामह की चर्चा में लग जाते थे उसी प्रकार अपितु उस से भी बढ़कर ईश्वर की याद में लग जाओ। मनुष्यो में कुछ ऐसे भी हैं जो प्रार्थना करते हैं कि ऐ हमारे पालने वाले हमको जो देना हो संसार में दे। ऐसे मनुष्यों का महाप्रलय में कुछ भाग नहीं रहता। (२००) कुछ ऐसे हैं जो प्रार्थना करते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमें संसार में भी उन्नति दे और प्रलय में भी और हमको नरक के दण्ड से बचा। (२०१) यही है जिनको उनके किये का पुन्य मिलना है और अल्लाह तो शीघ्र सबका हिसाब करने वाला है। (२०२) और गिनती के इन कुछ दिनों में ईश्वर की याद करते रहो। फिर जो व्यक्ति शीघ्रता करे और दो दिन में चल बसे उस पर भी कुछ पाप नहीं और जो देर तक ठहरा रहे उस पर भी कुछ पाप नहीं यह नम्रता उनके लिए है जो संयम करें। ईश्वर से डरते रहो और जाने रहो कि तुम

***अहराम-वह कपड़ा जो हज्ज के दिनों में पहनते हैं जब तक तीर्थ-यात्रा का कार्य समाप्त नहीं होता तब तक इसे पहने रहते हैं।**

उसी के सामने प्रस्तुत किये जाओगे। (२०३) और कोई व्यक्ति ऐसा है जिसकी बातें तुम को साँसारिक जीवन में भी भली मालूम होती हैं और वह अपने हृदय की इच्छाओं पर ईश्वर को समर्थक ठहराता है। ईश्वर की साक्षी देता है कि जो मन में है वही जिह्वा पर है यद्यपि वह अधिक झगड़ालू है। (२०४) और जब लौटकर जावें तो देश में दौड़ता फ़िरता है कि उस में विद्रोह फैलावे और खेती बारी को और जीव को नष्ट करे। अल्लाह उसे नहीं चाहता क्योंकि अल्लाह झगड़ा नहीं चाहता। (२०५) जब उससे कहा जाय कि ईश्वर से डर तो अभिमान उसको पाप पर उतारू करता है ऐसे को नरक पर्याप्त है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है। (२०६) कुछ ऐसे हैं जो ईश्वर प्रसन्नता के लिए अपनी जान दे देते हैं और अल्लाह भक्तों पर बड़ी ही दया रखता है। (२०७) ऐ धर्मावलम्बियों इस्लाम में पूरे-पूरे आ जाओ और राक्षस के पैर पर पैर न रखो। वह तुम्हारा स्पष्ट शत्रु है। (२०८) फिर जबकि तुम्हार पास स्पष्ट आज्ञा से पहुंच चुकी और इस पर भी बिचल जाओ तो स्मरण रक्खो कि अल्लाह सर्वशक्तिमानहै। (२०९) क्या यह मनुष्य इसी की बाट देखते हैं कि अल्लाह फरिस्तों के साथ बादलों का छाता लगाये उनके सामने आवे और जो कुछ होना है हो जाये। सब काम अल्लाह ही के हैं। (२१०) (रुकू २५)

ऐ पैग़म्बर याकूब के पुत्रों से पूछो कि हमने उसको कितने स्पष्ट चिन्ह दिये और जब कोई व्यक्ति ईश्वर की उस नियामत को बदल डाले, तो ईश्वर की मार बड़ी कठोर है। (२११) जो मनुष्य न मानने वाले हैं। संसार का जीवन उनको भला दिखाई देता है। और धर्मानुयायियों के साथ हंसी करते हैं, यद्यपि जो मनुष्य संयमी हैं उनके स्थान माहा-प्रलय के दिन उनसे बढ़-चढ़कर होगा। और अल्लाह जिसे चाहे असीम धन दे। (२१२) (शुरू में सव) मनुष्य एक ही धर्म रखते थे, फिर अल्लाह ने पैगम्बर भेजे जो शुभ संवाद देते और न मानने वालों को डराते और उनके द्वारा सच्ची पुस्तकें भेजीं जिससे जिन बातों में मनुष्य

भेद डाल रहे हैं उन बातों का वह पुस्तक निर्णय कर दे और जिन मनुष्यों को पुस्तक दी गई थी फिर वही अपने पास स्पष्ट आज्ञा लाये पीछे आपस की जिद से उनमें डालने लगे तो वह सच्चा मार्ग जिसमें मनुष्य भेद डाल रहे थे ईश्वर ने अपनी कृपा से धर्मानुयायियों को दिखला दिया। अल्लाह जिसको चाहे सच्चा मार्ग दिखलाये। (२१३) क्या तुम ऐसा विचार करते हो कि स्वर्ग में जाओगे ? अभी तक तो तुम्हारी उन मनुष्यों जैसी दशा नहीं हुई है, जैसी तुमसे पहलों की हो चुकी है कि उनको कठिनाइयाँ और कष्ट पहुंचे और फटकारे गये यहाँ तक कि पैगम्बर और धर्म वाले जो उनमें साथ थे चिल्ला उठे कि ईश्वर की सहायता का कोई समय भी है। ध्यान रहे ईश्बर की सहायता किकट है। (२१४) ऐ पैगम्बर यदि तुमसे पूछते हैं कि क्या वस्तु दान करें ? तो समझा दो जो धन व्यय करो वह तुम्हारे माता-पिता का, निकट के सम्बन्धियों का, अनाथों, दीन-दुखियों, बटोहियों का अधिकार है और तुम कोई भी भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (२१५) तुम पर लड़ाई की आज्ञा हुई है और वह तुमको बुरी लगीं है। सम्भवतः एक वस्तु तुमको भली लगे पर वह तुम्हारे लिये बुरी हो। इसको अल्लाह जानता है पर तुम नहीं जानते। (२१६) (रुकू २६)

ऐ पैग़म्बर! मुसलमान तुमसे श्रद्धा वाखे महीनों* में लड़ाई करने के विषय में पूछते हैं तो उनको समझा दो कि पवित्र महीनों में लड़ना बड़ा पाप है परन्तु अल्लाह के मार्ग से रोकना और ईश्वर को

*** अरब में चार महीनों में लड़ाई को बहुत बुरा समझते थे। उनके नाम यह (१) जीकअद (२) जिलहिज (३) मुहर्रम (४) रजब। काफिर इन महीनों में लड़ाई छेड़ देते। मुसलमान उन दिनों नें लड़ते रहते थे। इस पर उनको आज्ञा दी गई कि तुमसे ये लोग लडें तो तुम भी उन महीनों में जी खोलकर लड़ो।**

न मानना और मानवीय मसजिद में न जाने देना और उस मसजिद से निकाल देना, अल्लाह के निकट मार डालने बढ़कर है और वे तो सदैव तुमको लड़ते ही रहेंगे यहाँ तक कि इनका वश चले, तो तुमको तुम्हारे धर्म से फिरा दें। जो तुममें अपने धर्मों से फिरेगा और मनाई की दशा में मर जावेगा, तो ऐसे मनुष्यों का किया-कराया संसार और महाप्रलय में निरर्थक होगा और वह नारकीय हैं और वह सदैव नरक में ही रहेंगे। (२१७) जिस मनुष्यों ने विश्वास किया और उन्होंने अल्लाह के मार्ग में देश त्याग किया और लड़ाई भी की यही हैं ईश्वर की कृपा की आशा लगाये हैं और अल्लाह क्षमा करने वाला दयावान है। (२१८) तुमसे मदिरा और जुए के विषय पूछते हैं, तो कह दो कि इन दोनों में बड़ा पाप है थोड़े से लाभ भी हैं। परन्तु इनके लाभ से इनका पाप बढ़कर और तुमसे पूछते हैं कि ईश्वर के मार्ग में क्या व्यय करें, तो समझा दो कि जितना अधिक हो सके इसी प्रकार अल्लाह आज्ञा तुम से खोल-खोलकर बताया करता है कि सम्भवतः तुम ध्यान दो (२१९) यदि ये तुमसे अनाथों के बारे में पूछते हैं, तो समझा दो कि उनकी भलाई ही भलाई है और यदि उनसे मिल-जुलकर रहो तो वह तुम्हारे भाई हैं और अल्लाह बिगाड़ने वालों को तथा संभालने वालों का भेद पहचानता है और यदि ईश्वर चाहता तो तुमको कठिनाई में डाल देता। निस्सन्देह अल्लाह एक बड़ी शक्ति है। (२२०) शिर्कवाली* स्त्रियाँ जब तक विश्वास न करें उनसे विवाह न करो। मुसलमान लौंडी शिर्कवाली पत्नि से भली है, यदि तुमको पसन्द भी हो। शिर्कवाले पुरुष से विवाह न करो, जब तक विश्वास न करे और शिर्कवाला तुमको कैसा ही भला लगे, उससे मुसलमान गुलाम भला और वे शिर्कवाले नरक की ओर बुलाते हैं। अल्लाह अपनी कृपा से स्वर्ग और दान की ओर

***शिर्कवाली—खुदा की जाति में और गुण में दूसरे को देवताओं को सम्मिलित करने वाली, दूसरों को पूजने वाली।**

बुलाता है और अपनी आज्ञाएं मनुष्यों से खोल-खोलकर बताया करता है, जिससे वह सावधान रहें। (२२१) (रुकू २७)

यदि मनुष्य तुम से मासिक धर्म के विषय में पूछते हैं तो समझा दो कि वह गन्दगी है। इन दिनों स्त्रियों से प्रथक रहो और जब तक शुद्ध न हो लें उनके निकट न जाओ। फिर जब तक नहा-धो लें, तो जिधर से जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको बता दिया है, उनके समीप जाओ। निस्संदेह अल्लाह बचे रहने वालों को और सफाई रखने वालों को मित्र रखता है। (२२२) तुम्हारी पत्नियाँ मानों तुम्हारी खेतियाँ हैं। अपनी खेती में जिस प्रकार चाहो जाओ और अपने लिए भविष्य का भी प्रबन्ध रक्खो। अल्लाह से डरो और जाने रहो कि उस के सामने उपस्थित होना है। ऐ पैगम्बर धर्मानुयायिओं को शुभ सम्वाद सुना दो। (२२३) अच्छा व्यवहार करने और संयम रखने और मनुष्यों में मिलाप कराने में ईश्वर की कसम* मत खाओ। अल्लाह सुनता और जानता है। (२२४) तुम्हारी बेकार की कसमों**पर ईश्वर तुमको नहीं पकड़ेगा। लेकिन उनको पकड़ेगा, जो तुम्हारी हार्दिक इच्छाएें हों और अल्लाह क्षमा करनेवाला और सहन करने वाला है। (२२५) जो मनुष्य अपनी पत्नियों के समीप जाने की कसम खा बैठें, उनको चार महीने का अवकाश है, फिर यदि मिल जावें, तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२२६) और यदि तलाक की ठान लें तो अल्लाह सुनता जानता है। (२२७) और जिन स्त्रियों को तलाक दी गई हो वह अपने आपको तीन बार मासिक धर्म होने तक विवाह से रोके रक्खें

---

*यानी यह कसम न खाओ कि मैं ऐसे-ऐसे आदमी के साथ कोई नेकी न करूंगा। या इन-इन दो लोगों में मिलाप न कराऊंगा।

**जो अपने आप मुंह से निकल जाय जैसे कुछ लोग बात बे बात कहते हैं 'वल्लाह'। कुछ लोग कहते हैं कि यह वह कसम है जो मनुष्य क्रोध में खाता है : ऐसी कसम को तोड़ने में कुछ पाप नहीं।

और यदि अल्लाह और महाप्रलय का विश्वास रखती हैं, तो जो कुछ भी बच्चे के रूप में ईश्वर ने उनके पेट में उत्पन्न कर रक्खा है, उसका छिपाना उनको उचित नहीं और उनके पति यदि उनको अच्छी प्रकार रखना चाहें, तो वह इस बीच में उनको वापस लेने के अधिक अधिकारी हैं और जैसे पुरुषों का अधिकार स्त्रियों पर है वैसे ही नियम के अनुसार स्त्रियों का अधिकार पुरुषों पर है। हाँ, पुरुषों को स्त्रियों पर प्रधानता है और अल्लाह सर्वशक्तिमान है। (२२८) (रुकू २८)

तलाक दो बार करके दी जाय फिर नियम के अनुसार रखना या अच्छे बर्ताव के साथ विदा कर देना और जो तुमको दे चुके हो उनमें से तुमको कुछ भी वापिस लेना उचित नहीं। परन्तु यदि पति पत्नि को डर हो कि ईश्वर ने जो सीमाऐं ठहरा दी हैं, उन पर नही रह सकेंगे या स्त्री* अपना पीछा छुड़ाने के बदले कुछ दे निकले तो इस में दोनों पर कुछ पाप नहीं, यह अल्लाह की बाँधी हुई सीमाऐं हैं अतः इनसे आगे मत बढ़ो और जो अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं से आगे बढ़ जायँ तो यही मनुष्य अत्याचारी हैं। (२२९) अब यदि स्त्री को तीसरी बार तलाक**देदी तो इसके पश्चात जबतक स्त्री दूसरे पति के साथ विवाह

---

*मर्द औरत को तलाक दे सकता है और औरत मर्द से खुला ले सकती है। यानी एक दूसरे से न निभे तो अलग हो सकते हैं।

**तलाक का यह नियम है कि जब कोई मुसलमान पुरुष अपनी स्त्री को तलक देता है तो कम से कम दो मनुष्यों के सामने तलाक देता है और एक महीने के पश्चात दूसरी तलाक भी इस तरह से देता है। यहाँ तक तो पति-पत्नि में मेल हो सकता है। इसके एक महीने पश्चात तीसरी तलाक दी जाती है, इस तलाक देने के पश्चात फिर पुरुष उस स्त्री के समीप नहीं जा सकता। यह स्त्री ३ महीने १० दिन पश्चात विवाह कर सकती है। दूसरे पति के साथ विवाह हो जाने पर यदि दूसरा पति तलाक दे दे तो केवल इस रूप में कि वह दूसरे पति के साथ सम्भोग

न कर ले, उसके लिए भोग्य नहीं हो सकत। हाँ, यदि दूसरा पति उससे विषय भोग करके उसको तलाक दे दे, तो दोनों पर कुछ पाप नहीं अतः परस्पर प्रेम कर ले, शर्त यह है कि दोनों को आशा हो कि अल्लाह की बाँधी हुई सीमाओं पर दृढ़ रह सकेंगे और यह अल्लाह की सीमाएँ हैं जिनको उन मनुष्यों के लिए बताता है जो समझते हैं। (२३०) जब तुम स्त्रियों को दो बार तलाक दे दे और उनकी अवधी पूरी होने को आए तो नियम के अनुसार उनको रक्खो या उनको तलाक तीसरी देकर विदा कर दो और संतान के लिए उनको अपनी स्त्री बना के न रखना कहीं उसके पश्चात उन पर अन्याय करने लगे क्योंकि जो ऐसा करेगा, वो अपना ही खोयेगा और अल्लाह की आज्ञाओं को कुछ हँसी-खेल न समझो और अल्लाह ने जो तुम पर कृपाऐं की हैं उनको स्मरण करो और यह कि उसने तुम पर पुस्तक और बुद्धी की बातें अवतरित कीं जिस से वह तुम को समझाता है और अल्लाह से डरते रहो और जान रक्खो कि अल्लाह सबकों जानता है। (२३१) (रुकू २९)

और स्त्रियों को तीन बार तलाक दे दं और वह अपनी इद्दत की अवधी*पूर्ण कर लें और उचित रूप से किसी से उनकी इच्छा मिल जाय तो उनको दूसरे पतियों के साथ विवाह कर लेने से न रोको। यह शिक्षा उनको की जाती है, जो तुममें अल्लाह और महाप्रलय के

कर चुकी हो अपने पूर्व पति के साथ पुनः विवाह कर सकती है। परन्तु जब तक किसी दूसरे के साथ विवाह करके विषय-भोग न करले (यानी हमबिस्तर न हो ले) कदापि पूर्व पति से विवाह नहीं कर सकती।

*इद्दत उस अवधि को कहते हैं जिसके अन्दर स्त्री तलाक देने के पश्चात व उसका पति मर जाने के पश्चात विवाह नहीं कर सकती।

इद्दत की अवधि चार महीने दस दिन है। वास्तव में यह है कि इस बीच स्त्री तीन बार मासिक धर्म से पवित्र हो जाय।

दिन पर विश्वास रखता है। यह तुम्हारे लिए बड़ी पवित्रता तथा बड़ी सफाई की बात है और अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (२३२) जो व्यक्ति पत्नि को तलाक दिये पीछे अपनी संतान को पूरा अवधी तक दूध पिलवाना चाहे, तो उसके लिए मातायें अपनी संतान को पूरे दो वर्ष दूध पिलायें और जिस का वह बच्चा है उसके लिए नियमानुसार माताओं को खाना, कपड़ा देना आवश्यक है। किसीको कष्ट न दीजिये, परन्तु वहीं तक जहाँ तक उसकी सामर्थ्य हो। माता को उसके बच्चे के कारण हानि न पहुंचाई जाय और न उसको जिसका बच्चा है उसके बच्चे के कारण किसी प्रकार की हानि पहुंचाई जाय और दूध पिलाने का खाना-खुराक जैसा वास्तविक बाप पर वैसा उसके संरक्षक पर, फिर यदि समय से पहिले माता-पिता दोनों अपनी इच्छा से मिल कर दूध छुड़ाना चाहें तो उन सर कुछ पाप नहीं और यदि तुम अपनी संतान को किसी धाय से दूध पिलवाना चाहो तो तुम पर कुछ पाप नहीं। इस शर्त पर कि जो तुमने नियमानुसार उनको देना किया था उनको सोंप दो और अल्लाह से डरते रहो और जाने रहो कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३३) और तुम में जो मनुष्य मर जांय और पत्नियाँ छोड़मरें तो स्त्रियों को चाहिये कि चार महिने दस दिन अपने को रोके* रहें फिर जब अपनी इद्दत की अवधि पूर्ण करलें, तो उचित रूप में जो कुछ अपने लिये करें उसका मरे के संरक्षकों पर कुछ पाप नहीं और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह को उसकी सूचना है। (२३४) और यदि तुम किसी बात की आड़ में स्त्रियों को बिवाह का संदेशा भेजो या अपने हृदयों में छिपाये रक्खो तो इस में भी तुम पर कुछ पाप नही अल्लाह को प्रतीत है कि तुम इसका विचार करोगे,परन्तु इनसे विवाह का ठहराव**

---

*यानी इतनें दिन व्याह न करें।

**यानी इद्दत भर उनसे निकाह की बात न करो और न यह जी में ठानो कि में इनके साथ ब्याह करेगा।

तो चुपके से भी न करना, हाँ उचित रूप में बात कह दो। और जब तक निश्चित अवधि समाप्त न हो जाय विवाह के बन्धन की बात पक्की न कर बैठना और जाने रहो कि जो कुछ तुम्हारे जी में है अल्लाह जानता है तो उससे डरते रहो और जाने रहो कि अल्लाह क्षमा करने वाला और सहनशील है। (२३५) (रुकू ३०)

यदि तुमने स्त्रियों के साथ सहवास न किया हो और उनका मिहर* न ठहराया हो इससे पहिले उनको तलाक दे दो तो उसमें तुम पर कोई पाप नहीं। हाँ ऐसी स्त्रियों के साथ कुछ व्यवहार करो। सामर्थ वाले और बिना सामर्थ वाले अपनी सामर्थ्य के अनुसार उनको व्यय जैसा व्यय का नियम है। यह भले मनुष्यों के लिये आवश्यक है। (२३६) और यदि सहवास करने से पहिले और मिहर ठहरने के पश्चात औरतों को तलाक दे दो, तो जो तुमने ठहराया था उसका आधा देना चाहिए हाँ यदि स्त्रियाँ अधिकार छोड बैठें या पुरुष जिस के हाथ में विवाह की स्वीकृति है वह अपना अधिकार छोड़ दे, अर्थात् पूरा मिहर देने पर राजी हो और अपना अधिकार छोड़ दे तो यह संयम के अधिक निकट है। अपने मध्य श्रेष्ट विचार को मत भूलो। जो करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (२३७)

मुसलमानों! नमाजों की और मध्य की नमाज का पूरा ध्यान रक्खो और अल्लाह के समक्ष आदर से खड़े हुआ करो। (२३८) फिर यदि तुमको भय हो तो पैदल या सवार जैसी दशा हो नमाज पढ़ लो फिर जब तुम निश्चिंत हो जाओ तो जिस प्रकार अल्लाह ने तुमको नमाज का ढंग सिखाया जो तुम पहिले नहीं जानते थे उसी ढंग से अल्लाह को स्मरण करो। (२३९) जो मनुष्य तुममें से मर जायँ और पत्नियाँ छोड़ मरें तो अपनी पत्नियों के पक्ष में एक वर्ष तक के बर्ताव

*** मिहर उस बचन को कहते है जो विवाह के समय पति स्त्री के साथ पूंजी व नकद रुपया देने का करता है :**

भोजन आदि का प्रबन्ध। और घर से न निकालने की वसीयत कर मरें फिर यदि स्त्रियाँ स्वयं ही घर से निकल खड़ी हों तो उचित बातों में से जो कुछ अपने लिए करें उनका तुम पर कुछ पाप नहीं और अल्लाह है। (२४०) जिन स्त्रियों को तलाक दी जाय उनके साथ मिहर के अतिरिक्त भी नियमानुसार जोड़े वगैरह से कुछ व्यवहार करना संयमयों को उचित है। (२४१) इसी प्रकार अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आज्ञाओं को खोल-खोलकर बतलाता है। जससे तुम समझो। (२४२) (रुकू ३१)

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उन मनुष्यों पर दृष्टि नहीं डाली, जो अपने घरों से मृत्यु के भय से निकल खड़े हुए वह हजारों ही थे फिर ईश्वर ने उनको आज्ञा दी कि मर जाओ फिर उनको जीवित किया। निस्सन्देह अल्लाह तो मनुष्यों पर कृपालु है। परन्तु प्रायः मनुष्य कृतज्ञ नहीं होते। (२४३) ईश्वर के मार्ग में लड़ो और जाने रहो कि अल्लाह सुनता और जानता है। (२४४) कोई है जो ईश्वर को प्रसन्न चित से कर्ज* दे वह उसके कर्ज को उसके लिए कई गुना बढ़ा देगा। अल्लाह ही निर्धन और धनाढ्य बनाता है और उसी की ओर तुम को लौटकर जाना है। (२४५) क्या तुमने इसराइल के पुत्रों के सरदारों पर दृष्टि नहीं डाली। एक समय उन्होंने मूसा के पश्चात अपने पैगम्बर अशमूयील से प्रार्थना की थी कि हमारे लिए एक राजा निश्चित करो हम उसके सहारे से अल्लाह के मार्ग में युद्ध करें। पैगम्बर ने कहा यदि तुमसे युद्ध कर्तव्य द्वारा करने को दिया भी जाय तो भी सम्भव है कि तुम न लड़ो। बोले कि हम अपने घरों और बाल-बच्चों से तो निकाले जा चुके तो हमारे लिए अब कौन सी मनाइ है कि इश्वर के मार्ग में न लड़ें फिर जब उन पर युद्ध का कर्तव्य पालने करने को कहा, तो उनमें से कुछ गिने हुओं के सिवाय शेष सब फिर बैठे। अल्लाह तो अपराधियों को खूब जानता है। (२४६) उनके पैगम्बर ने उनसे कहा

*** यानी जहाद के लिए जो धन वा साधन है उनका प्रबन्ध करे।**

कि अल्लाह ने तालूत* को तुम्हारा राजा नियुक्त किया है। उस पर कहने लगे कि उसको हम पर कैसे राज्य मिल सकता है। इससे तो राज्य करने के हम ही अधिक अधिकारी हैं। उसको तो धन से भी कुछ ऐसी सम्पत्ति प्राप्त नहीं। पैगम्बर ने कहा कि अल्लाह ने तुम पर उसी को पसन्द बताया है ज्ञान और शरीर में उसको उन्नति दी है और अल्लाह बड़ा सहनशील तथा जानकार है। (२४७) उनके पैग-म्बर ने उनसे कहा कि तालूत के राजा होने की यह निशानी है कि वह सन्दूक** जिसमें तुम्हारे पालने वाले की तसल्ली अर्थात तौरात है और मूसा और हारून जो छोड़ मरे हैं, उनमें की बची-खुची वस्तुएँ हैं, तुम्हारे पास आ जायँगी फरिस्ते उनको उठा लायेंगे। यदि विश्वास रखते हो तो यही एक बात तुम्हारे लिए निशानी है। (२४८) (रुकू ३२)

फिर जब तालूत सेना सहित चला तो कहा कि मार्ग में एक नहर पड़ेगी अल्लाह उस नहर से तुम्हारी जाँच करने वाला है, तो जो अघा-कर उसका पानी पी लेगा, वह हमारा नहीं और जो उसको नहीं पियेगा, वह हमारा है, परन्तु हाँ अपने हाथ से कोई एक चिल्लू भर ले। उन में से गिने हुए कुछ के अतिरिक्त सभी ने तो उस नहर में से अघाकर पी लिया। फिर जब तालूत और धर्म वाले जो उसके साथ थे नहर के

---

*हजरत मूसा के बाद कुछ समय बनी इस्राईल का काम बना रहा। फिर उनके पापों के कारण उन पर एक काफिर बादशाह ने अपना अधिकार जमा लिया। इसने उनको अनेक कष्ट दिये तो इन्होंने अपने नबी हजरत शैमऊल से प्रार्थना की कि हमारे लिए कोई बादशाह ठहरा दीजिये जिसके आधीन हम जालूत से युद्ध कर सकें। हजरत शैमऊल ने कहा खुदा ने तालूत को तुम्हारा बादशाह नियत किया है।

**बरकत का सन्दूक तालूत के अधिकार में आ जाना उसकी बादशाह का ईश्वरीय प्रमाण है।

पार हो गये, तो जिन्होंने तालूत की आज्ञा न मानी थी कहने लगे कि हममें तो जालूत और उसकी सेना से युद्ध करने की आज शक्ति नहीं है। उस पर वह मनुष्य जिनको विश्वास था कि उनको ईश्वर के सामने उपस्थित होना है, बोल उठे—प्राय: अल्लाह की आज्ञा से थोड़ी सेना ने बड़ी सेना पर विजय पाई है। अल्लाह संतोषियों का साथी है।(२४९) वे जब जालूत और उसकी सैना की बराबरी में आये तो प्रार्थना की कि हमारे पालने वाले हमें पूरा सन्तोष दे और हमारे पांव जमाये रखे, और काफिरों की मंडली पर हमको विजय दे। (२५०) उसमें फिर उन्होंने अल्लाह की आज्ञा से शत्रुओं को भगा दिया और जालूत का दाऊद ने बध किया और उनको ईश्वर ने राज्य दिया और बुद्धी दी और जो चाहा उनको सिखा दिया। यदि अल्लाह किन्हीं मनुष्यों के द्वारा किन्हीं को न हटाता रहे, तो देश उलट-पलट जाय। परन्तु अल्लाह संसार के मनुष्यों पर दयालु है। (२५१) ऐ पैगम्बर यह अल्लाह की आयतें मैं तुमको सचाई से पढ़-पढ़कर सुनाता हूँ और निस्सन्देह तुम पैगम्बर में से हो। (२५२)

सूरे बकर—(तीसरा पारा)

तिलकर्रुसूल (यह पैगम्बर)

इन पैगम्बरों में से हमने किसी पर किसी को प्रधानता दी। इनमें से कोई तो ऐसे हैं जिनके साथ अल्लाह ने बातचीत की और किसी के पद ऊँचे किये। मरियम के पुत्र ईसा को हमने स्पष्ट चमत्कार दिये और पवित्र आत्मा जिब्रील से उनका समर्थन किया और यदि ईश्वर चाहता, तो जो मनुष्य उनके पश्चात् हुए उनके पास स्पष्ट चिन्ह आये पीछे एक दूसरे से न लड़ते, परन्तु मनुष्यों ने एक दूसरे में भेद डाला। तो इनमें से कोई वह थे जो विश्वास करते थे और कोई वह थे जो

काफिर हुए और यदि ईश्वर चाहता तो यह आपस में न लड़ते, परन्तु अल्लाह जो चाहता है करता है। (२५३) (रुकू ३३)।

ऐ धर्मवालों प्रलय के आने से पहले हमारे दिए हुए में से व्यय कर दो। जिससे क्रय-विक्रय न होगा, न मित्रता होगी और न सिफारिश होगी और जो न माननेवाले हैं, वह मनुष्य अन्यायी हैं। (२५४) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं। वह जगत का साक्षात संभालनेवाला है, न उसको झपकी आती है और न नींद। जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है उसी का है। कौन है जो उसकी आज्ञा के बिना उसके सामने सिफारिश करे। जो कुछ मनुष्यों के सामने और पीछे है उसको सब को जाने है और लोग उसके ज्ञान में से किसी का भी पता नहीं लगा सकते, अतिरिक्त उसके कि जितनी वह चाहे, उसका राज्य नभ और पृथ्वी में है और इन दोनों की रक्षा उस पर भारी नहीं और वह महान् और सर्वोपरि है। (२५५) धर्म में दबाव नहीं, भूल और सुधार स्पष्ट हो चुकी है कि जो झूठी प्रार्थना को न माने और अल्लाह पर विश्वास करे उसने दृढ़ रस्सी पकड़ रखी है जो टूटनेवाली नहीं और अल्लाह सुनना जानता है। (२५६) अल्लाह धर्मवालों का सहायक है। उनको अन्धेरे से निकलकर उजाले में लाता है और जो मनुष्य काफिर हैं, उनके साथी राक्षस हैं। उनको उजाले से निकालकर अन्धेरे में ढकेलते हैं। यही मनुष्य नरकवासी हैं। वह सदैव नरक में ही रहेंगे। (२५७) (रुकू ३४)।

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उस व्यक्ति को नहीं देखा जो केवल इस कारण से कि ईश्वर ने उसको राज्य दे रखा था इब्राहीम से उनके पालनकर्ता के विषय में विवाद करने लगा।* उस समय इब्राहीम ने

*** यह कथा बाबिल के राजा नमरूद की है। वह स्वयं अपने को पूज्य बताता था। इब्राहीम ने उसकी पूजा न की और कहा कि मैं तो उस एक की पूजा करता हूँ जो मारता और जीवित करता है अर्थात**

कहा कि मेरा पालनेवाला तो वह है जो जीवित करता और मारता है। इस पर वह कहने लगा कि मैं भी जीवित करता तथा मारता हूं, इब्राहीम ने कहा कि अल्लाह तो सूर्य को पूर्व से निकालता है आप उसको पश्चिम से निकालें, इस पर वह काफिर चुप रह गया और अल्लाह अन्यायिओं को शिक्षा नहीं देता। (२५८)या जैसे वह व्यक्ति* जो एक उजड़ी बस्ती से होकर निकला उसे देखकर अचम्भे से कहने लगा कि अल्लाह इस व्यक्ति को इसके उजड़े पीछे कैसे बसायेगा? इस पर अल्लाह ने उनको सौ वर्ष तक मृत रखा फिर उनको जीवित करके पूछा तुम इस दशा में कितनी अवधी तक रहे? उसने कहा— एक दिन रहा हूं, या एक दिन से भी कम। तब ईश्वर ने कहा तुम सौ वर्ष इसी दशा में रहे थे। अब अपने खाने और पीने की वस्तुओं को देखो कोई बुसी तक नहीं और अपने गधे की ओर भी दृष्टी करो जिस पर तुम आरूढ थे तुम्हारे इतने दिनों मृत रखने और फिर जीवित उठाने से अभिप्राय यह है कि हम तुम्हारे लिए अपनी लीला का एक उदाहरण बनावें तनिक गधे की हड्डियों की ओर दृष्टि करो कि हम कैसे उनको जोड़जोड़कर उनका पिंजर बना कर खड़ा करते हैं फिर उन पर माँस चढ़ाते हैं। फिर उन पर अल्लाह की शक्ति का यह चमत्कार प्रगट हुआ तो कहने लगे कि अब मैं विश्वास करता हूं कि अल्लाह का प्रत्येक वस्तु पर प्रभाव रहता है। (२५९) और जब

ईश्वर की। नमरूद उसकी बात का तत्व न समझा और तुरन्त दो अपराधियों को बुलवाकर एक को छोड़ दिया और दूसरे को मरवा डाला। इस पर इब्राहीम ने सूर्य को उदय और उसके अस्त करने की बात कही। नमरूद अब कुछ न बोल सका।

*यह बात हजरत उजैर की है। पहले उनकी समझ में न आता था कि ईश्वर मरनेवालों को कैसे जीवित करता है। जब वह स्वयं मरकर फिर जी उठे तो उनको विश्वास हुआ।

इब्राहीम ने निवेदन किया क हे मेरे पालनकर्ता मुझे दिखा कि तू मृतकों को कैसे जीवित करता है, तो ईश्वर ने कहा क्या तुमको इसका विश्वास नहीं। उत्तर दिया, क्यों नहीं। परन्तु मैं अपने हृदय की शाँति चाहता हूं। ईश्वर ने कहा अच्छा चार पक्षी लो और उनको अपने पास मँगाओ, फिर एक-एक पर्वत पर उनका एक-एक टुकड़ा रख दो फिर उनको बुलाओ तो वह स्वयं तुम्हारे निकट दौड़े चले आयेंगे और जाने रहो अल्लाह प्रबल औपचारिक है। (२६०) (रुकू ३५)।

जो अपना धन ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं उनको दान का उदाहरण उस दाने जैसा है, जिससे सात बालें उगती हैं और प्रत्येक बाल में सौ दाने होते हैं और अल्लाह उन्नति देता है, जिसको चाहता है और अल्लाह बड़ी सहनशक्तीवाला तथा जानकार है। (२६१) जो मनुष्य अपना धन अल्लाह को मार्ग में व्यय करते हैं फिर व्यय किए पीछे किसी प्रकार की अपनी कृपा नहीं बताते और न कष्ट देते हैं उनको उनका शुभफल उनके पालनकर्ता के यहाँ मिलेगा। न तो उन पर भय होगा और न वह उदास होंगे। (२६२) भली बात बोलना और क्षमा करना उस पुण्य से बहुत बढ़कर है जिसके पीछे दुःख हो और अल्लाह निडर और सहन करनेवाला है। (२६३) धर्मवालो ! अपने दान को कृपा बताने और हानि पहुँचाने से उस व्यक्ति के समान अकारथ मत करो जो अपना धन मनुष्यों के दिखावे के लिए व्यय करता है और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास नहीं रखता तो उसके दान का उदाहरण शिला जैसा है। उस पर मिट्टी है फिर उस पर जोर की वर्षा हुई और उसको सपाट कर गया उनको अपनी कमाई कुछ हाथ नहीं लगती और अल्लाह काफिरों को शिक्षा नहीं दिया करता है।(२६४) और जो मनुष्य ईश्वर की प्रसन्नता के लिए और अपनी दृष्टि शुद्ध रखकर अपने धन व्यय करते हैं, उनका उदाहरण एक उपवन जैसा है जो ऊँचे पर है, उस पर जोर की वर्षा पड़े, तो दूना फल लाये और यदि उस पर जोर की वर्षा न पड़े तो उसकी हलकी फुआर भी पर्याप्त है, और तुम जो कुछ भी करते हो, अल्लाह

देख रहा है। (२६५) भला तुम में से कोई भी इस बात की इच्छा करेगा कि खजूरों और अंगूरों का अपना एक उपवन हो, उसके नीचे नहरें बह रहीं हों। हर प्रकार के फल उसको वहाँ प्राप्त हों और वह बुड्ढा हो जावे और उसके छोटे-छोटे दुर्बल बच्चे हों, अब उस उपवन पर एक हवा का बवंडर चले, जिसमें अग्नि भरी हो, जो उस उपवन को जला दे। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाओं को स्पष्ट तुम से बताया करता है, जिससे तुम सोच सको। (२६६) (रुकू ३६)।

ऐ धर्मवालो अच्छी वस्तुओं में से जो तुमने आप कमाई हों या हमने तुम्हारे लिए पृथ्वी से उत्पन्न की हों व्यय करो और खराब वस्तुओं को देने का विचार भी न करना। तुम भी वस्तु न लो और अल्लाह चिन्तारहित (तथा) इच्छाओं का घर है। (२६७) राक्षस तुमको तंगी से डराता और निरलज्जता की ओर लगाता है और अल्लाह अपनी ओर से क्षमा और कृपा का तुमको बचन देता है और अल्लाह सहनशील और जानकार है। (२६८) जिसको चाहता है समझ देता है और जिसको समझ दी गई, निस्सन्देह उसने बड़ा धन पाया और शिक्षा भी वही मानते हैं जो समझदार हैं। (२६९) जो व्यय भी तुम करो या उसके नाम की कोई मन्नत* मानो, वह सब अल्लाह को प्रतीत है। ईश्वर के अतिरिक्त अन्य किसी की मन्नत मानकर ईश्वर का अधिकार मानते हैं, उनका कोई सहायक न होगा। (२७०) यदि दान सबके सामने दो, तो वह भी अच्छा** और अगर इसको छिपाकर

---

*मन्नत—काम पूरा होने के लिए दान पुण्य करने की मन में मानता मानना या संकल्प लेना।

**दान देना हर प्रकार अच्छा है चाहे छिपाकर दिया जाय चाहे सबके सामने दिया जाय परन्तु गुप्त दान अधिक सुन्दर है क्योंकि इस प्रकार जिसकी सहायता की जाती है उसे दूसरे लोगों के आगे लज्जित नहीं होना पड़ता।

और जरूरतवालों को दो, तो यह तुम्हारे हिस्से में और भी अच्छा है और ऐसा देना तुम्हारे पापों को नाश करनेवाला होगा और जो कुछ भी तुम करते हो, अल्लाह को उसका ज्ञान है। (२७१) इन मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लाना तुम्हारे वश का नहीं, अपितु अल्लाह जिसको चाहता है सीधे मार्ग पर लाता है और तुम धन में से जो कुछ भी व्यय करोगे, सो अपने लिए करोगे, और तुम तो ईश्वर ही को प्रसन्न करने केलिए व्यय करते हो और धन में से जो कुछ भी दान के रूप में व्यय करोगे, तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायेगा और तुम्हारा अधिकार न मारा जायगा। (२७२) उन गरीबों को देना चाहिए, जो अल्लाह के ध्यान में बैठे हैं। देश में किसी ओर को जा नहीं सकते। जो व्यक्ति इनकी दशा से अपरिचित है, इनके न माँगने से इनको धनवान समझता है, परन्तु तू इनके मुख से इनको स्पष्ट पहिचान लेगा कि वह लिपट कर मनुष्यों से नहीं माँगते* जो कुछ तुम धन में से दान के रूप में व्यय करोगे, अल्लाह उसको जानता है। (२७३) (रुकू ३७)।

जो मनुष्य रात और दिन छिपे और प्रकट अपना धन व्यय करते हैं, तो उनको पालनकर्ता के यहाँ से बदला मिलेगा और इनको न डर होगा और न वह उदास होंगे। (२७४) जो मनुष्य सूद खाते हैं प्रलय के दिन खड़े नहीं हो सकेंगे, परन्तु उस व्यक्ति का सा खड़ा होना जिसको राक्षस ने अपनी चपेट से पागल कर दिया हो यह उनके इस कहने का दण्ड है कि जैसा बेचने का मामला है वैसा ही कर का मामला है। यद्यपि बेचने को तो अल्लाह ने पवित्र बताया है और ब्याज को अपवित्र। तो जिसको उनके पालनकर्ता की ओर से शिक्षा पहुँची उसने ब्याज खाना छोड़ दिया। जो ब्याज पहिले ले चुका है वह उसका

***कुछ लोग रसूल से धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए उनके घर के पास बैठे रहते थे। ये किसी से कुछ मांगते न थे पर धनवान भी नहीं थे, इसलिए उनकी सहायता का आदेश दिया गया है।**

हुआ और उसका मामला ईश्वर को सौंप दिया पर जो फिर वही काम करेगा वह मनुष्य नारकीय हैं और वह सदैव नरक ही में रहेंगे। (२७५) अल्लाह ब्याज को मिटाता और दान बढ़ाता है। जितने अकृतज्ञ हैं और कहना नहीं मानते ईश्वर उनसे प्रसन्न नहीं। (२७६) जिन मनुष्यों ने विश्वास किया और नेक काम किए और नमाज पढ़ते तथा दान देते रहे उनका बदला उनके पालनकर्ता के यहाँ से मिलेगा और उन पर न भय होगा और न वह उदास होंगे। (२७७) ऐ धर्म-वालो! यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह से डरो और जो ब्याज शेष है उसे छोड़ दो। (२७८) और यदि ऐसा न करो तो अल्लाह और उसके रसूल से युद्ध के लिए तैयार हो जाओ और यदि क्षमा माँगते हो तो अपना मूलधन तुमको मिलेगा और तुम किसी की हानि न करो और न कोई तुम्हारी हानि करेगा। (२७९) और यदि कोई विवश तुम्हारा ऋणी हो तो अच्छी दशा तक की आज्ञा दो और यदि समझो तो तुम्हारे लिए यह अधिक अच्छा है कि उसको भूल ऋण भी छोड (२८०) और उस दिन से डरो जब कि तुम अल्लाह की ओर लौटाये जाओगे। फिर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और मनुष्यों पर अन्याय न होगा। (२८१) (रुकू ३८)

ऐ धर्मवालो* ! जब तुम एक निश्चित अवधि तक उधार का लेन-देन करो तो उसको लिख लिया करो और यदि तुम को लिखना न आता हो तो तुम्हारे बीच में कोई लिखने वाला न्याय से लिख दे और जिससे लिखवाओ तो उस लिखने वाले को चाहिये कि लिखने से मना न करे जिस प्रकार ईश्वर ने उसको सिखाया है उसी प्रकार उसको भी चाहिए कि लिख दे और जिसकी ओर ऋण निकलेगा अर्थ बोलता जाय और अल्लाह से डरे वही उसके काम का संभालने वाला है और अधिकार में से किसी प्रकार की काँट-छाँट न करे, जिसकी ओर ऋण निकलेगा यदि वह नासमझ हो या दुर्बल हो या स्वयं अर्थ स्पष्ट न कर सकता हो तो उसका पंच न्याय के साथ लिखे हुए का अर्थ बोलता

जाय और अपने मनुष्यों में से जिन पर तुम्हें विश्वास हो ऐसे दो पुरुषों को साक्षी कर लिया करो, फिर यदि दो पुरुष न हों तो एक पुरुष और स्त्रियों को कि उनमें से कोई एक भूल जायगी तो एक दूसरे को स्मरण करायेगी और जब साक्षी बुलाये जायँ तो मना न करें और अवधि का मामला छोटा हो या बड़ा उसके लिखने में आलस्य न करा ईश्वर के समीप बहुत ही मुन्सिफाना है और साक्षी के लिए भी यही ढंग बहुत ही ठीक है और अधिकतर सोचने के योग्य है, कि तुम शक न करो परन्तु सौदा नकद दाम से हो जिसको तुम हाथों-हाथ आपस में लिया दिया करते हो तो उसके न लिखने में तुम पर कुछ पाप नहीं और जब कि क्रय विक्रय करो तो साक्षी कर लिया करो और लिखने वाले को किसी प्रकार की हानि न पहुंचाया जाय और न साक्षी को और यदि ऐसा करोगे तो यह तुम्हारा पाप है और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह तुमको सिखाता है और अल्लाह सब कुछ जानता है। (२८२) यदि यात्रा में हो और तुमको कोई लिखने वाला न मिले तो गिरवी पर अधिकार रक्खो, बस यदि तुम में से एक का एक विश्वास करे तो जिस पर विश्वास किया गया है अर्थात ऋण को चुका दे और ईश्वर से जो उसके काम का बनाने वाला है डरे और साक्षी को न छिपाओ और जो उस को छिपायेगा तो वह हृदय का खोटा है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह को सब का ज्ञान है। (२८३) (रुकू ३९)

जो कुछ नभ में और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और जो तुम्हारे हृदय में है चाहे उनको प्रकट करो या उस को छिपाओ अल्लाह तुमसे उसका हिसाब लेगा फिर जिसको चाहे क्षमा करे या दण्ड दे और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर अधिकार रखता है। (२८४) मोहम्मद इस पुस्तक को मानते हैं जो उसके पालनकर्ता की ओर से उन पर अवतरित हुई है और पैगम्बर के साथ और मुसलमान भी सब अल्लाह और फरिश्तों और उस की पुस्तकों औरं उसके पैगम्बरों पर विश्वास

किया, हम ईश्वर के पैगम्बरों में से किसी एक को भिन्न नहीं समझते और बोल उठे हमने सुना और विश्वास किया। ऐ पालनकर्ता तेरी कृपा चाहिए और तेरे ही पास लौट कर जाना है। (२८५) अल्लाह किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से अधिक बोझ नहीं डालता। जिसने अच्छे काम किये उसका बदला उसी के लिए है जिसने बुरे काम किये उनका दण्ड भी उसीके लिए है। ऐ हमारे पालनकर्ता यदि हम अनजान में भूल जाँय या चूक जाँय तो हमको न पकड़ और ऐ हमारे पालन-कर्ता जो हमसे पहले हो गये हैं उनकी तूने परीक्षा की थी वैसी परीक्षा हमारी न ले और ऐ हमारे पालनकर्ता इतना भार जिसे कि उठाने की हममें शक्ति नहीं है उसे हमसे न उठवा और हमारे अपराधों पर ध्यान न दे और हमारे अपराधों को क्षमा कर और हम पर दया कर तू ही हमारा स्वामी हैं। हमें काफिरों के विरुद्ध सहायता दे। (२८६) (रुकू ४०)

सूरे आल इमरान

सूरे आल इमरान मदीने में अवतरित हुई उसमें २०० आयतें और २० रुकू हैं

(आरम्भ) अल्लाह के नाम से जो बहुत ही दया वाला तथा कृपालु है। अलिफ, लाम, मीम (१) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजित नहीं है। वह अविनाशी है व संसार का संभालने वाला है (२) उसीने तुम पर यह पुस्तक उचित अवतरित की जो उन पुस्तकों को प्रमाणित करती है, जो उससे पहले की हैं और उसी ने प्रथम मनुष्यों को ज्ञान के लिए तौरात और इन्जील भेजी, उसीसे और वस्तुओं को भी बनाया जिससे सत्य झूठ का भेद प्रकट होता है। (३) जो खुदा की आयतों को सुन कर नहीं मानते हैं, निस्संदेह उनको कठोर दण्ड मिलेगा और अल्लाह बहुत

बदला लेनेवाला है। (४) अल्लाह से कोई वस्तु पृथ्वी में और नभमें छिपी नहीं। (५) वही हैं जो माता के उदर में जैसा चाहता है, तुम्हारा रूप बनाता है। उसके अतिरिक्त कोई प्रार्थना के योग्य नहीं वह प्रबल औपचारिक है। (६) ऐ पैगम्बर वही है जिसने तुम पर यह पुस्तक भेजी जिसमें से कुछ आयतें पक्की हैं जिससे स्पष्ट है वह वास्तविक पुस्तक हैऔर दूसरी संदेह में डालने वाली जो कई अर्थ देने वाली हैं तो जिन मनुष्यों के हृदय में कपट है वह तो कुरान की उन्ही संदिग्ध आयतों के पीछे पड़े रहते हैं, जिससे विरोध उत्पन्न करें और उनके वास्तविक अर्थ की खोज लगावें। यद्यपि अल्लाह के अतरिक्त उनका वास्तविक अर्थ किसी को प्रतीत नहीं और जो विद्या में बड़ी पैठ रखते हैं, वह तो इतना ही कह कर रह जाते हैं कि इस पर हमारा विश्वास है। सब हमारे पालनकर्ता की ओर से है। यह बात वही समझते हैं, जिनको सूझ है। (७) हमारे पालनकर्ता हमें सीधे मार्ग पर लाये। पीछे हमारे हृदयों को डांवाडोल न कर और अपनी सरकार से हम पर कृपा कर दे, निस्संदेह तू बड़ा देने वाला है। (८) ऐ हमारे पालनकर्ता ! तू एक दिन निस्संदेह मनुष्यों को एकत्रित करेगा। अल्लाह वचन के विरुद्ध कार्य नहीं किया करता। (६) (रुकू १)

जो मनुष्य काफिर हैं, अल्लाह के यहाँ न तो उनके धन ही कुछ काम आयेंगे और न उनकी संतान ही और यही नरक के ईधन हैं।

---

*कुरान में दो प्रकार की आयतें हैं—एक मुहकम दूसरी मुतशाबिह मुहकम वह वाक्य है जिनका अर्थ स्पष्ट है और इसलिए उनका समझना सरल है, मुतशाबिह वे हैं जिन को कई पहलुओं से समझ सकते हैं या वे अक्षर हैं जिन का तात्पर्य कोई नहीं जानता जैसे अलिफ, लाम, मीम।

**मुसलमान मुहकम आयतों पर अमल करते हैं और मुतशाबिह पर यकीन रखते हैं। उनके मतलब के पीछै नहीं पड़तै।

(१०) इनकी भी फिरऔन वालों और उन से पहले वालों सी गति होनी है। जिन्होंने आयतों को झूठा किया था, तो अल्लाह ने उनको उनके अपराधों के बदले धर पकड़ा और अल्लाह की मार बड़ी कठिन है। (११) ऐ पैगम्बर जो मनुष्य नहीं मानते उनसे कह दो कि शीघ्र ही तुम हार जाओगे और नरक की ओर भेजे जाओगे। वह बुरा सामान है। (१२) उन दो गुटों में तुम्हारे लिए ईश्वरीयलीला की निशानी प्रमाणित हो चुकी है, जो एक दूसरे से बदर के युद्ध लड़ गये। एक गुट मुसलमानों का तो ईश्वर के मार्ग में लड़ता था और दूसरा काफिरों का था जिनको आँख देखते मुसलमानों का गुट अपने से दूना दिखाई दे रहा था और अल्लाह अपनी सहायता से जिसको चाहता है बल देता है। इसमें सन्देह नहीं कि जो मनुष्य सूझ रखते हैं, उनके लिए इसमें ज्ञान है। (१३) मनुष्यों की इच्छित वस्तुएँ जैसे पत्नियाँ पुत्रियाँ, सोने चाँदी के बड़े-बड़े ढेरों अच्छे-अच्छे घोड़ों चतुष्पदों (जन्तु) और खेती के साथ मन बहलावा भला प्रतीत होता है। यद्यपि यह साँसारिक जीवन के क्षणिक सामान हैं और अच्छा ठिकाना तो उसी अल्लाह के यहाँ है। (१४) ए पैगम्बर इन से कहो कि मैं तुमको इनसे बहुत अच्छी वस्तु बताऊँ, वह यह कि जिन मनुष्यों ने संयम का व्रत लिया उसके लिए उनके पालनकर्ता के यहाँ उपवन हैं। जिनके लिए नहरें बह रही हैं और वह उनमें सदैव रहेंगे और उपवन के अतिरिक्त पवित्र पत्नियाँ हैं और ईश्वर की प्रसन्नता प्राप्त होती है और अल्लाह मनुष्यों को देख रहा है। (१५) वह मनुष्य यह कहते हैं कि हमारे पालनकर्ता पर हमने विश्वास किया है, तू हमारे अपराध क्षमा कर और हमको नरक के दण्ड से बचा। (१६) जो संतोष करते हैं सत्य बोलनेवाले हैं और ईश्वर के मार्ग में व्यय करने वाले हैं और वे अन्तिम रात्रि के समय में क्षमा चाहते हैं। (१७) अल्लाह इस बात की साक्षी देता है कि उसके अतिरिक्त कोई भी पूज्य नहीं। फरिश्ते और विद्वान भी साक्षी देते हैं कि वही न्याय का संभालनेवाला है उसके अतिरिक्त कोई पूज्य नहीं। वह प्रवल शक्तिशाली है। (१८) धर्म तो ईश्वर के निकट यही

इस्लाम है। पुस्तकवालों ने तो पता होने के पश्चात आपस की हठ से भेद डाला है और जिस व्यक्ति ने ईश्वर की आयतों से मना किया, उससे अल्लाह को हिसाब लेते कुछ समय नहीं लगती। (१९) बस, ऐ पैगम्बर यदि इस पर भी तुमसे विवाद करें, तो कह दो कि मैंने और मेरे चाहनेवाले ने ईश्वर के समक्ष अपना सिर झुका दिया। ऐ पैगम्बर पुस्तकवाले और अरब के जाहिलों से कहो कि तुम भी इस्लाम मानते हो या नहीं, यदि इस्लाम मानें, तो वे सत्य मार्ग पर आ गये और यदि मुँह मोड़ें तो मोड़ें तेरा कर्तव्य मेरा आदेश*पहुँचा देना भार है और बस। अल्लाह मनुष्यों को खूब देख रहा है। (२०) (रुकू २)

जो मनुष्य अल्लाह की आयतों को मना करते हैं और निरर्थक पैगम्बरों का बध करते हैं और उनका भी बध करते हैं जो न्याय करने को कहते है तो ऐसे मनुष्यों को पीड़ाजनक दण्ड का शुभ सम्वाद सुना दो। (२१) जिनका सब करा कराया संसार और प्रलय दोनों में अकारथ है तथा कोई उनका मददगार नहीं है। (२२) ऐ पैगम्बर क्या तुमने उस पर दृष्टि नहीं डाली, जिनको पुस्तक में से एक भाग मिला था। उनको अल्लाह की पुस्तक की ओर बुलाया जाता है जिससे वह पुस्तकें उनका झगड़ा चुका दे। इस पर भी उनमें का एक गुट भूल से फिर बैठा है।** (२३) यह इसलिए है कि उनका कहना है कि हमें नरक की अग्नि छुएगी नहीं, और छुएगी भी तो बस गिनती के थोड़े ही दिन और असत्य बातें यह करते रहे हैं, उसी ने इनको इनके धर्म में धोखा दे रखा है। (२४) प्रलय के दिन जिसके आने में कुछ भी

*नबी का काम यही है कि जो आदेश या ज्ञान ईश्वर की ओर से उसको मिले, उसे दूसरों को समझाये। मानना न मानना सुननेवालों का काम है।

*आकाशी ग्रंथ तौरात के अर्थो का स्वार्थी विद्वान अनर्थ करने लगे थे। इस प्रकार अपने मान्य धर्मग्रंथ से भी विमुख थे।

सन्देह नहीं, उनकी कैसी दशा बनेगी जबकि हम उनको एकत्रित करेंगे और प्रत्येक व्यक्ति को जैसा उसने संसार में किया है, पूरा-पूरा भर दिया जायगा। मनुष्यों पर अत्याचार नहीं होगा। (२५) ऐ पैगम्बर तू कह कि ईश्वर देश का स्वामी है। जिसको चाहे राज्य दे और जिससे चाहे राज्य छीन ले। और वह जिसको चाहे मान दे और जिसे चाहे बर्बादी दे। लीला तेरे ही हाथ में है। निस्सन्देह प्रत्येक वस्तु पर सर्व-शक्तिमान है। (२६) तू ही रात को दिन में मिला दे और तू ही दिन को रात में परिवर्तित कर दे और तू जड़ से चेतन तथा चेतन से जड़ कर दे और जिसको चाहे असीम धन दे। (२७) मुसलमानों को चाहिए कि मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को अपना मित्र न बनावें और जो वैसा करेगा, तो उसका अल्लाह से कुछ सरोकार नहीं परन्तु किसी प्रकार यदि उनसे बचने का रहस्यमय प्रयत्न करें तो उचित है और अल्लाह तुमको अपने तेज से डराता है और अन्त में अल्लाह की ही ओर जाना है। (२८) ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यों से कह दो कि जो कुछ तुम्हारे हृदय में है, उसे छिपाओ चाहे उसे प्रकट करो, वह अल्लाह को पता है और जो कुछ नभ में और पृथ्वी में हैं वह सब जानता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर सशक्त है। (२९) जिस दिन प्रत्येक व्यक्ति अपनी की हुई भलाई और बुराई को सामने पावेगा तो इच्छा करेगा कि मुझमें और उसमें (कुकर्म के फल में) बड़ी दूरी होती। अल्लाह तुमको अपने से डराता है और अल्लाह भक्तों पर बड़ी कृपा रखता है। (३०) (रुकू ३)।

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कह दो कि यदि तुम अल्लाह को मित्र रखते हो, तो मेरे साथी हो। अल्लाह तुमको मित्र रखे और तुम्हारे अपराध क्षमा कर दे और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (३१) इससे कह दो कि अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा पूर्ण करो। फिर यदि न मानें, तो अल्लाह आज्ञा न माननेवालों को पसन्द नहीं करता। (३२) अल्लाह ने समस्त संसार के मनुष्यों पर आदम, नूह और

इब्राहीम के वंश और इमरान * के वंश को श्रेष्ठ चुन लिया है। (३३) इनमें एक-एक की संतान हैं। अल्लाह सब सुनता जाता है। (३४) एक समय था कि इमरान की पत्नि ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मेरे उदर में जो शिशु है उसको मैं स्वतन्त्र करके तेरी भेंट करती हूं, तू मेरी ओर से इसे स्वीकार कर। तू सुनता जानता है। (३५) फिर जब उन्होंने पुत्री को जन्म दिया, तो अल्लाह को तो खूब पता था कि उन्होंने किन गुणों की पुत्री को जन्म दिया है। अत: जब कहने लगी कि ऐ मेरे पालनकर्ता मैंने तो इस पुत्री को जन्म दिया है और बालक बालिका के समान नहीं होता और मैंने तो इसका नाम मरियम रखा है और मैं इसको और इसकी संतान को राक्षस से दूर रखकर तेरी शरण अर्थात धर्म मार्ग में देती हूं। (३६) तो उनके पालनकर्ता ने मरियम को प्रसन्नता से स्वीकार कर लिया और उसको खूब अच्छा उठाया और जकरिया को उनको रक्षक बनाया। जब-जब जकरिया मरियम के स्थान पर जाते, तो मरियम के पास खाने की वस्तु पाते, एक दिन जकरिया ने पूछा कि ऐ मरियम यह तुम्हारे पास भोजन कहाँ से आता है ? मरियम ने कहा यह ईश्वर के पास से आता है, अल्लाह जिसको चाहता हैं, असीम आजीविका देता है। (३७) उसी क्षण जकरिया ने अपने पालनकर्ता से प्रार्थना की कि ऐ पालनकर्ता अपने पास से मुझको भी भली संतान दो। तू तो सबकी प्रार्थना सुनता है। (३८) अभी जकरिया कोठे में खड़े वर माँग ही रहे थे कि उनको फरिश्तों ने आवाज दी कि ईश्वर तुमको एक पुत्र यहिया के उत्पन्न होने का शुभ सम्बाद देता है और वह ईश्वर की आज्ञा से मसीह को प्रमाणित करेंगे और पेशवा होंगे तथा स्त्रियों की संगत से रुके रहेंगे और मेरे भक्तों में से वे पैगम्बर होंगे। (३९) जकरिया ने कहा कि

*इमरान हजरत मरियम के पिता थे। हजरत मूसा के बाप का नाम भी इमरान था। यह दोनों ही अर्थ निकलते हैं।

ऐ मेरे पालनकर्ता ! मेरे कैसे बालक उत्पन्न हो सकता है क्योंकि मुझ पर वृद्धावस्था आ चुकी है, और मेरी पत्नि बाँझ है* । (अल्लाह ने) कहा कि इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है, करता है । (४०) जकरिया ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मेरी साँत्वना लिए कोई चिन्ह दे । तो ईश्वर ने कहा जो चिन्ह तुम माँगते हो, वह यह है कि तुम तीन दिन तक मनुष्यों से बात** न कर सकोगे । केवल संकेत करोगे । प्रात. और संध्या अपने पालनकर्ता की माला फेरते रहो । (४१) (रुकू ४) ।

तब फरिश्तों ने कहा ऐ मरियम ! तुमको अल्लाह ने पसन्द किया और तुमको पवित्र व शुद्ध रखा है और तुमको सारे संसार की स्त्रियों में से श्रेष्ठ माना है । (४२) ऐ मरियम ! अपने पालनकर्ता की आज्ञा को मानती रहो, और शीश नवाया करो और रुकूअ करने वालों के साथ रुकूअ में झुकती रहो । (४३) ऐ पैगम्बर यह छिपी हुई सूचनाएँ हैं जो हम तुमको संदेश के द्वारा पहुँचाते हैं । न तो तुम उनके पास उस समय थे, जब वह लोग अपनी लेखनी नदी में डाल***रहे थे कि कौन मरियम का पालनेवाला होगा ? और ना तुम उनके पास उस समय उपस्थित थे जबकि वह आपस में झगड़ रहे थे कि जिसकी लेखनी चढ़ाव की ओर बहे, वही मरियम का संरक्षक होगा । (४४) फरिश्तों

---

*हजरत जकरिया की उम्र १०० वर्ष की थी और उनकी बीबी ९८ वर्ष की थी । जब यहिया (पुत्र) का जन्म हुआ । यह जानते हैं कि इस अवस्था में आदमी लड़का या लड़की की आशा नहीं रखता ।

**जब यहिया माँ के पेट में आये, तो जकरिया की जबान फूल गई और तीन दिन वह किसी से बातचीत न कर सके ।

***मरियम को कौन पाले इस बात का निर्णय यूं हुआ कि दावेदारों ने अपने-अपने कलम बहते पानी में डाले । जकरिया का कलम उलटा बहा और वही संरक्षक बने ।

ने कहा कि ऐ मरियम ! ईश्वर तुमको अपनी उस आज्ञा का शुभसंवाद देता है । तुम्हारे पुत्र होगा उसका नाम होगा ईसामसीह मरियम का पुत्र—लोक और परलोक में मानवाला और ईश्वर के निकट भक्तों में से होगा । (४५) भूले में भी और बड़ी आयु का होकर भी एक समान मनुष्यों के साथ बातचीत करेगा और भले मनुष्यों में से होगा । (४६) वह कहने लगीं कि ऐ पालनकर्ता मेरे कैसे बालक हो सकता है, जब की मुझको किसी पुरुष ने छुआ तक भी नहीं है । अल्लाह ने कहा इसी प्रकार अल्लाह जो चाहता है उत्पन्न करता है । जब वह किसी कार्य का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो '(कुन)' और वह हो जाता है* । (४७) ईश्वर ईसा को नभ की पुस्तक और ज्ञान की बातें तौरात और इन्जील सिखा देगा । (४८) और इसराईल के वंश की ओर जायगा पैगम्बर होगा और कहेगा में तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास चिन्ह लेकर आया हूं । जैसे मैं तुम्हारे लिए मिट्टी से पक्षी का रूप बनाकर फिर उसमें फूँक मार दूँ तो वह ईश्वर का आज्ञा से उड़ने लगेगा और ईश्वर ही की आज्ञा से जन्म के अन्धे और कोढ़ियों को स्वस्थ और मृतकों को जीवित करता हूं और जो कुछ तुम खाकर आओ वह और जो कुछ तुमने अपने घरों में एकत्रित कर रखा है वह तुमको बता दूँ । यदि तुममें विश्वास है तो निस्सन्देह इन बातों में तुम्हारे लिए चिन्ह हैं** । (४९) तौरात जो मेरे समय में उपस्थित है मैं उसको प्रमाणित करता हूं और एक अभिप्राय यह भी

---

*मरियम का किसी के साथ ब्याह नहीं हुआ और वह मर्दो से दूर भी रही, फिर भी उनके लड़का हुआ, जिसका नाम ईसामसीह था । जब फरिश्तों ने इस घटना की भविष्यवाणी मरियम को पहले ही की तो उसका आश्चर्य में पड़ जाना स्वाभाविक ही था ।

**मुर्दों को जिलाना, बीमारों को अच्छा करना, और अंधों को आँखवाला बनाना । वह सब ईसा के चमत्कारों में से थे ।

है कि कुछ वस्तुएँ जो तुम्हारे लिए अनुचित है*उन्हें तुम्हारे लिए उचित ठहरा दूँ और मैं तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से कुछ चमत्कार लेकर तुम्हारे समीप आया हूं। तुम ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (५०) निस्सन्देह अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है, अतः उसी की पूजा करो, यही सीधा मार्ग है। (५१) जब ईसा ने यहूदियों का अविश्वास देखा तो पुकार उठे कि कोई है जो अल्लाह की ओर होकर मेरी सहायता करे**हवारी बोले कि हम अल्लाह के पक्षपाती हैं। हमने अल्लाह पर विश्वास किया और तू इस बात का साक्षी है कि हम माननेवाले हैं। (५२) ऐ हमारे पालनकर्ता इन्जील जो तूने भेजी है, हमने उस पर विश्वास किया और हमने पैगम्बर का साथ दिया। तू हमको साक्षियों में लिख ले। (५३) यहूद ने ईसा से छल किया। अल्लाह ने यहूद से छल किया अल्लाह छल करनेवालों में अच्छा छलिया है। (५४) (रुकू ५)।

अल्लाह ने कहा ऐ ईसा संसार में तुम्हारे रहने की अवधि पूरी करके हम तुमको अपनी ओर उठा लेंगे और काफिरों से तुमको पवित्र करेंगे और जिन लोगों ने तुम्हारा समर्थन किया है उनको प्रलय के दिन तक काफिरों पर शक्तिशाली रखेंगे, फिर तुम सबको हमारी ओर लौट कर आना है। तब जिन बातों में तुम झगड़ रहे थे हम उनमें तुम्हारे मध्य निर्णय कर देंगे। (५५) जिन्होंने तुम्हारी पैगम्बरी से मना किया, उनको तो संसार और अन्तिम रात्रि दोनों में बड़ी कठोर ताड़ना देंगे। कोई उनका साथी न होगा। (५६) जिन मनुष्यों ने विश्वास किया तथा भले कर्म किये उनको ईश्वर पूरा बदला देगा और अल्लाह अधर्मियों को पसन्द नहीं करता। (५७) ऐ पैगम्बर यह जो हम तुमको

---

*यहूदियों पर चर्बी गाय की और बकरी की हराम थी यानी अपने धर्मानुसार वह इन वस्तुओं का प्रयोग नहीं कर सकते थे।

**हवारी वह लोग कहलाते हैं जो हजरत ईसा के अनुयायी थे।

पढ़-पढ़कर सुना रहे हैं, वह ईश्वर की आयतें और संतुलित बातें हैं। (५८) अल्लाह के पास ईसा का उदाहरण आदम के समान है कि ईश्वर ने मिट्टी से आदम को बनाकर उसको*आज्ञा दी कि 'हो' और वह हो गया। (५९) ऐ पैगम्बर यह तुम्हारें पालनकर्ता की ओर से है। कहीं तम भी शंका करनेवालों में से न हो जाना। (६०) फिर जब तुमको सत्यता का पता लग गया, उसके पश्चात् भी तुमसे उनके बारे में कोई विवाद करने लगे, तो कहो कि आओ हम अपने पुत्रों को बुलावें और तुम अपने पुत्रों को बुलाओ, हम अपनी स्त्रियों को बुलायें और तुम भी अपनी स्त्रियों को बुलाओ और हम और तुम भी सम्मिलित हो जाएं फिर हम सब मिलकर ईश्वर के सामने गिड़गिड़ाएं और जो झूठे हों उनको ईश्वर अपमान दे**। (६१) ऐ पैगम्बर यही बात सत्य है अल्लाह के अतिरिक्त कोई प्रार्थना के योग्य नहीं। निस्सन्देह अल्लाह प्रबल औपचारिक है। (६२) इस पर भी यदि फिर जावें, तो अल्लाह झगड़ालुओं से खूब परिचित है। (६३) (रुकू ६)।

कहो कि ऐ पुस्तकवालों! ऐसी बात की ओर आओ जो हमारे और तुम्हारे मध्य समान है कि ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा न करें और किसी वस्तु को उसका समकक्ष न ठहरावें और अल्लाह के अतिरिक्त हममें से किसी को स्वामी न समझे। फिर यदि मुंह मोड़ें

---

*ईसा के बिन बाप के जन्म लेने से उनका खुदा का बेटा होना नहीं सिद्ध होता। देखो ईसा के केवल एक बाप ही न थे, परन्तु उनकी माता अवश्य थीं, लेकिन आदम के तो माँ-बाप दोनों ही थे। ईसाई आदम को खुदा का बेटा नहीं कहते, तो ईसा को ऐसा क्यों कहते हैं? खुदा ने जैसे आदम को बिन माँ-बाप के पैदा किया है, वैसे ही ईसा को भी बनाया है।

**ईसाइयों का विश्वास है कि ईसा ईश्वर-पुत्र हैं। इसी का खण्डन है। बिना पिता के ईसा का जन्म एक ईश्वरी चमत्कार है।

तो कह दो कि तुम इस बात के साक्षी रहो कि हम तो मानते हैं। (६४) ऐ पुस्तकवालों ! इब्राहीम के विषय में क्यों झगड़ते हो। तौरात और इञ्जील तो उनके पश्चात् अवतरित हुई। क्या तुम नहीं समझते (६५) तुमने ऐसी बातों में झगड़ा किया जिनके विषय में तुमको पता नहीं था। परन्तु जिसके विषय में तुमको ज्ञान नहीं, उसमें तुम क्यों झगड़ा करते हो। उसे अल्लाह जानता है तुम नहीं जानते। (६६) इब्राहीम न यहूदी थे और न नसरानी, अपितु हमारे एक आज्ञाकारी सेवक थे और मुशरिकों में से न थे। * (६७) इब्राहीम के अधिकारी वह मनुष्य थे, जिन्होंने उनका समर्थन किया अर्थात एक ईश्वर को माना ऐ पैगम्बर और विश्वास किया है और अल्लाह तो विश्वास करने वालों का मित्र है। (६८) पुस्तकवालों में से एक गुट तो यह चाहता है कि किसी प्रकार तुमको भटका दे, यद्यपि वे स्वयं ही भटकते हैं और नहीं समझते। (६९) ऐ पुस्तकवालो ! अल्लाह की आयतों को क्यों मना करते हो जबकि तुम मन में मानते हो। (७०) ऐ पुस्तकवालों ! क्यों सत्य में झूठ को मिलाते हो और सत्य को छिपाते हो जब तुम जानते हो। (७१) (रुकू ७)।

पुस्तक वालों में से जब एक गुट समझाता है—मुसलमानों पर जो पुस्तक अवतरित हुई है, उस पर तो विश्वास करो और तत्पश्चात उससे मना कर दिया करो। सम्भवतः मुसलमान भी भटक जायँ। (७२) जो तुम्हारे धर्म का समर्थन करे, उसके अतिरिक्त दूसरे का भरोसा न करो। कहो कि उपदेश तो वही है जो अल्लाह उपदेश देता है, जैसा

---

*हजरत इब्राहीम को सब अरब वाले अपना पेशवा मानते थे। यहूदी कहते थे—वह ईसाई थे। इसी तरह मुशरिक उनको अपने धर्म वाला जानते थे। और मुहम्मद साहब कहते थे कि न तो वह यहूदी थे, न ईसाई और न मुशरिक। वह तो एक खुदा के माननेवाले थे। इस पर ईसाई और यहूदी मुहम्मद साहब से झगड़ते थे।

तुमको दिया गया है वैसा ही किसी और को दिया जाय या दूसरे मनुष्य ईश्वर के पास तुमसे झगड़े तो कि बड़ाई तो अल्लाह ही के हाथ में है जिसको चाहे दे और अल्लाह बड़ा सहनशील और सब कुछ जानता है। (७३) जिसको चाहें अपनी कृपा के लिए उपयुक्त समझ ले और अल्लाह की दया बड़ी है। (७४) पुस्तक वालों में से कुछ ऐसे हैं कि यदि उनके पास नकद रुपये का ढेर धरोहर रखवा दो तो भी तुम्हें दे दें और उनमें से कुछ ऐसे हैं कि एक अशर्फी भी उनके पास धरोहर रखवा दो, तो वह तुम को वापिस न दें, जब तक कि हर समय उनसे माँगते न रहो, यह इस लिए है कि वह कहते हैं कि मूर्खों के अधिकार मार लेने की हमसे पूछ-ताछ नहीं है और वे जान बूझ कर अल्लाह पर झूंठ बोलते हैं। (७५) क्यों नहीं व्यक्ति अपना बचन पूरा करे और बुरे कामों से बचे, अल्लाह ऐसे बचने वालों को मित्र रखता है। (७६) जो मनुष्य ईश्वर से की गई प्रतिज्ञा और अपनी कसमों को थोड़ी के लिये त्याग देते हैं इनका प्रलय में कुछ भाग नहीं और प्रलय के दिन ईश्वर इन से बात भी नही करेगा, न इनकी ओर देखेगा, न इनको पवित्र करेगा और इनके लिए कठिन दण्ड है। (७७) इन्हीं में एक पन्थ है जो पुस्तक पढ़ते समय अपनी जिह्वा को मरोड़ते हैं जिससे तुम समझो कि वह पुस्तक का भाग है यद्यपि वह पुस्तक का भाग नहीं है और कहते हैं यह अल्लाह के पास से है यद्यपि वह अल्लाह के पास से नहीं और जान-बूझ कर अल्लाह पर झूठ बोलते हैं। (७८) किसी मनुष्य को उचित नही कि ईश्वर उसको पुस्तक बुद्धी और पैगम्बरी दे—और वह मनुष्यों से कहने लगे कि ईश्वर को छोड़ कर मुझे मानने वाले बनो तुम तो ईश्वर को मान कर चलो जिस प्रकार तुम पुस्तक पढ़ाते रहे हो और पढ़ते रहे हो। (७९) वह तुम से नहीं कहेगा कि फरिश्तों और पैगम्बरों को ईश्वर मानो—तुम तो इस्लाम मान चुके हो और वह इसके पश्चात क्या तुम्हें मना करने को कहेगा ? (८०) (रुकू ८)

अल्लाह ने पैगम्बरों को बचन दिया है कि हमने तुमको पुस्तक और बुद्धि दी है अतः यदि फिर कोई और पैगम्बर तुम्हारे पास आयेगा और जो तुम्हारे पास पुस्तकें हैं उनको प्रमाणित करेगा तो देखो अवश्य उस पर विश्वास करना और अवश्य सहायता करनेवालो क्या तुमने स्वीकार कर लिया ? और इन बातों पर मेरा दायित्व लिया ? सब पैगम्बर बोले हम स्वीकार करते हैं। कहा अच्छा तो साक्षी रहो और साक्षियों में मैं भी तुम्हारे साथ हूं।(८१) तो इससे पीछे जो कोई फिर जावे तो वही मनुष्य आज्ञा को टालने वाले हैं। (८२) यह मनुष्य अल्लाह के धर्म के अतिरिक्त किसी और धर्म की खोज में हैं यद्यपि जो मनुष्य नभ और पृथ्वी पर हैं। प्रसन्नता या विवशता से उसकी ओर सबको लौटकर जाना है। (८३) कहो हमने अल्लाह पर विश्वास किया और जो पुस्तक हम पर अवतरित है उस पर और जो पुस्तक इब्राहीम, इस्माईल, इसहाक, याकूब की संतान पर उतरी उन पर और मूसा और ईसा और पैगम्बरों को जो पुस्तकें उनके पालनकर्ता की ओर से मिली हम उनमें से किसी को भिन्न नहीं समझते और हम उसी को मानते हैं। (८४) जो व्यक्ति इस्लाम के अतिरिक्त किसी और धर्म की खोज करे तो ईश्वर को उसका वह धर्म स्वीकार नहीं और वह प्रलय में हानि पाने वालों में से होगा। (८५) ईश्वर ऐसे मनुष्यों को क्यों सूचना देने लगा जो विश्वास किये पीछे मना करने लगे और स्वीकार कर चुके थे कि पैगम्बर सच्चा है और उनके पास स्पष्ट प्रमाण भी आ चुके। अल्लाह अन्यायियों को सूचना नहीं दिया करता। (८६) ऐसे मनुष्यों को दण्ड यह है कि इनको ईश्वर फरिश्तों की और मनुष्य से सब से अपमानित। (८७) और उसी में सदेव रहेंगे। न तो इनका दण्ड ही हलका किया जायेगा और न उनको छुट्टी ही दी जायगी। (८८) परन्तु जिन मनुष्यों ने तत्पश्चात क्षमा माँगी और सुधार कर लिया तो अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (८९) जो विश्वास करके पीछे फिर बैठे और उनकी अस्वीकृति बढ़ती गयी तो ऐसों की

क्षमा प्रार्थना किसी प्रकार भी स्वीकृत नहीं होगी और यही मनुष्य भटके हुए हैं। (९०) वह जो लोग काफिर हुए और अस्वीकृति की दशा में मर गये उनमें से कोई व्यक्ति पृथ्वी के समान भी सोना बदले में देना चाहे तो कभी भी स्वीकार नहीं किया जायगा। यही मनुष्य हैं जिनको कष्टप्रद दण्ड मिलेगा और उनका कोई भी सहायक नहीं होगा। (९१) (रुकू ९)

चौथा पारा (लन्तना)

जब तक तुम अपनी प्रिय वस्तुओं में से दान न करो भलाई प्राप्त नहीं करोगे। (९२) जो तुम दान करते हो अल्लाह को ज्ञात है। (९३) जो वस्तु याकूब ने अपने लिए पाप समझ लीं थी उसको छोड़ कर तौरात के अवतरण से पूर्व खाने की सब वस्तुऐं याकूब के पुत्रों के लिए थीं कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो तौरात ले आओ और उसको पढ़ो। (९४) फिर इसके पश्चात भी जो कोई अल्लाह पर झूठ लगाये वही मनुष्य अन्यायी है। (९५) कहो कि अल्लाह ने सत्य भाषण किया अतः इब्राहीम के ढंग का समर्थन करो जो एक ईश्वर को मानते थे और मुशरिकों में से न थे। (९६) मनुष्यों के लिए जो प्रथम घर ठहराया गया वह यही है जो मक्के में है। यह उन्नतिशील हैं और समस्त संसार के मनुष्यों के लिए एक पाठ है। (९७) इसमें बहुत से स्पष्ट चिन्ह हैं। इब्राहीम के खड़े होने के स्थान पर और इस घर में जो आ उपस्थित हुआ, उसे सुख प्राप्त होगा। मनुष्यों का कर्त्तव्य है कि ईश्वर के लिए काबे के घर की हज्ज करें जिसमें उस तक पहुंचने की शक्ति हो और जो अकृतज्ञता करे तो अल्लाह उन मनुष्यों का ध्यान नहीं रखता (९८) कहो कि ऐ पुस्तकवालों ! ईश्वर के भाषण को भी क्यों अस्वीकार करते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको

देखता है। (९९) कहो कि ऐ पुस्तकवालो ! जान-बूझ कर अल्लाह के मार्ग में कमी निकाल निकालकर विश्वास करनेवालों को उससे क्यों रोकते हो और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उससे अज्ञान नहीं हैं। (१००) मुसल्मानों ! यदि तुम पुस्तकवालों के किसी गुट का भी कहा मानोगे तो वह तुम्हारे विश्वास किये पश्चात् तुम को फिर काफिर बना छोड़ेगा। (१०१) तुम किस प्रकार मना करने लगोगे जबकि अल्लाह की आयतें तुमको पढ़-पढ़कर सुनाई जाती हैं और उसके रसूल तुममें उपस्थित हैं और जो व्यक्ति अल्लाह को दृढ़ता से मानते रहे, तो वह सीधे मार्ग पर आगया। (१०२) (रुकू १०)

ऐ धर्म वालो ! अल्लाह से डरो जैसा उससे डरने का हक है और तुम इस्लाम पर ही मरना। (१०३) और तुम सब दृढ़ता से अल्लाह की रस्सी पकड़े रहो और आपस में फूट न डालो और अल्लाह की वह कृपा स्मरण करो जब तुम आपस में मक्के-मदीने वाले शत्रु थे फिर अल्लाह ने तुम्हारे हृदय में प्रेम उत्पन्न किया और तुम उसकी कृपा से एक दूसरे के भाई हो गये और तुम आगे नरक के किनारे थे फिर उसने तुमको उससे बचा लिया। इसी प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञाएँ तुमसे स्पष्ट रूप से कहा करता है जिससे तुम सच्चे मार्ग पर आ जाओ। (१०४) तुम में से एक ऐसा गुट भी होना चाहिए जो शुभ कामों की ओर बुलाये और अच्छे काम करने को कहे और बुरे कामों से मना करें और ऐसे ही लोग अपनी कामना को पहुंचेंगे। (१०५) और उन जैसे न बनो जो बिछुड़ गये और अपने पास स्पष्ट आज्ञाएें लाए पश्चात आपस में भेद डालने लगे और यही है जिनको अन्ततः बड़ा दण्ड मिलेगा। (१०६) जिस दिन कुछ के मुँह उज्जवल और कुछ के कलुषित होंगे तो जिनके मुंह कलुषित होंगे उनसे कहा जायगा कि तुम विश्वास करने के पश्चात का फिर गये थे तो अपने मना करने के अपराध में नरक भोगो। (१०७) और जिनके मुंह उज्जवल होंगे वह अल्लाह की कृपा के पात्र होंगे वह स्वर्ग में ही सदैव

रहेंगे। (१०८) यह सचमुच अल्लाह की आयतें हैं जो हम तुमको पढ़-पढ़कर सुनाते हैं और अल्लाह सारे संसार के मनुष्यों पर अत्याचार करना नहीं चाहता। (१०९) जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब अल्लाह ही का है और सब कामों की पहुंच ईश्वर ही तक है। (११०) (रुकू ११)

तुम सब समाजों में से जो मनुष्यों में उत्पन्न हुए हैं भले हो क्योंकि तुम भली बात की आज्ञा करते हो और बुरी बात से मना करते हो और अल्लाह पर विश्वास रखते हो और यदि यहूदी विश्वास कर लेते तो उनके पक्ष में भला था। उनमें से थोड़ों ने विश्वास किया और उनमें से अधिकतर प्रायः फिरे हुए हैं। (१११) दुःख देने के अतिरिक्त वह कभी भी तुमको किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकेंगे और यदि तुमसे लड़ेंगे तो उनको तुमसे पीठ फेरते ही बन पड़ेगी और उनको कहीं से सहायता नहीं मिलेगी। (११२) जहाँ देखो कोप छाया हुआ है। परन्तु अल्लाह के द्वारा, तथा और ईश्वर के कोप से वे पीड़ित हैं और निराश्रितता उनके पीछे पड़ी है। यही उसका दण्ड है कि वह अल्लाह की आयतों से मना करते थे और पैगम्बरों को व्यर्थ मार डालते थे और यह दण्ड न मानने और सीमा से बढ़ जाने के कारण था। (११३) पुस्तक वाले सब समान नहीं हैं कुछ ऐसे भी हैं जो रातों को खड़े रहकर ईश्वर की आयतें पढ़ते और शिर झुकाते हैं। (११४) अल्लाह और प्रलय पर भरोसा रखते हैं, अच्छे काम करने को कहते हैं, बुरे कामों से मना करते हैं। तथा अच्छे कामों में दौड़ पड़ते हैं यही भले मनुष्य हैं। (११५) भलाई किसी प्रकार की भी करें ऐसा कदापि न होगा कि उनको उस भलाई का मान नहीं किया जावे और अल्लाह संयमी से खूब परिचित हैं : (११६) जो काफिर हैं उनका धन और संतान अल्लाह के पास कदापि उनके कुछ काम न आयेगी और यही मनुष्य नारकीय हैं और यह सदैव नरक ही में रहेंगे। (११७) संसार के इस जीवन में जो कुछ भी यह मनुष्य व्यय करते हैं उसका

उदाहरण उस वायु जैसा है जिसमें कड़ी सर्दी हो वह उन मनुष्यों के खेत को जा लगे और नष्ट करे जो अपने ही लिए अत्याचार करते थे और अल्लाह ने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वह अपने ऊपर स्वयं ही अत्याचार किया करते थे। (११८) ऐ धर्म वालों! अपने मनुष्य छोड़कर किसी विरोधी को अपना भेदी मत बनाओ कि यह मनुष्य तुम्हारी बुराई में कुछ कमी नहीं रखना चाहते हैं जिससे तुमको कष्ट पहुंचे। शत्रुता तो इनकी बातों से प्रकट हो ही चुकी है और जो इनके हृदय में है वह उससे भी बढ़ कर है, हमने तुमको पते की बातें बता दी हैं यदि तुम में बुद्धि है। (११९) सुनो तुम कुछ ऐसे लोग हो कि उनसे मित्रता रखते हो और वह तुमसे प्रेम नहीं रखते और तुम ईश्वर की सब पुस्तकों को मानते हो और वे ज़ब तुमसे मिलते हैं तो कह देते हैं कि हमने भी विश्वास किया और जब अकेले होते हैं तो मारे क्रोध के तुम पर अपनी उंगलियाँ काटते हैं। उनसे कहो कि अपने क्रोध में जल मरो। जो तुम्हारे हृदय में है अल्लाह को सब ज्ञात है। (१२०) यदि तुमको कोई लाभ पहुंचे तो उनको बुरा लगता है यदि तुमको कोई हानि पहुंचे तो उससे प्रसन्न होते हैं और यदि तुम संतोष करो और पापों से बचे रहो तो उनके छल कपट से तुम्हारा कुछ भी बिगड़ने का नहीं क्योंकि जो कुछ भी यह कर रहे हैं अल्लाह के वश में हैं। (१२१) (रुकू १२)

एक समय वह भी था कि प्रातः अपने घर से चले मुसलमानों को युद्ध के अवसरों पर बैठाने लगे और अल्लाह सुनता जानता है। (१२२) उसी समय की घटना है कि तुम में से दो* गुटों ने साहस तोड़ देना

---

* इनके नाम थे ओस और खिजरज का कबीला। यह दोनों कबीले ऊहद के युद्ध में बड़ी वीरता से लड़े, लेकिन उनको बहकाने का भर-सक प्रयत्न भी मुनाफिकों की ओर से हुआ था और इनकी हिम्मत भी थोड़ी देर के लिए टूट गई थी।

चाहा परन्तु अल्लाह उनके ऊपर था और मुसलमानों को चाहिए अल्लाह पर भरोसा रक्खें। (१२३) जिस समय बदर का युद्ध था उसमें अल्लाह तुम्हारी सहायता कर ही चुका था जब तुम्हारी कुछ भी स्थिरता न थी अतः अल्लाह से डरो। आश्चर्य नहीं तुम कृपा भी मानो। (१२४) जबकि तुम मुसलमानों को समझा रहे थे कि क्या तुमको इतना पर्याप्त नहीं कि तुम्हारा पालनकर्ता तीन सहस्र फरिश्ते भेजकर तुम्हारी सहायता करे। (१२५) अपितु यदि तुम दृढ़ बने रहो बचो और शत्रु अभी इसी क्षण तुम पर चढ़ आयें तो तुम्हारा पालनकर्ता पाँच सहस्र फरिस्तों से तुम्हारी सहायता करेगा। (१२६) यह सहायता तो ईश्वर ने केवल तुम्हें प्रसन्न करने को की है और इसलिए कि तुम्हारे हृदय में इससे सन्तोष हो अन्यथा सहायता तो अल्लाह ही की ओर से है जो बड़ा शक्तिशाली* है। (१२७) यह सहायता इसलिए थी कि काफिरों को कम करे या अपमानित करे जिससे असफल होकर वापिस चले जावें। (१२८) तुम्हारा तो कुछ भी अधिकार नहीं चाहे ईश्वर उन पर दया करे या उनके अत्याचारों पर दृष्टि करके उनको दण्ड दे। (१२९) और जो कुछ नभ में तथा पृथ्वी में है सब अल्लाह ही का है जिसको चाहे क्षमा करें जिसको चाहे दण्ड दे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१३०) (रुकू १३)

ऐ धर्म वालों! दुगना चौगुना ब्याज मत खाओ और अल्लाह से डरो। इसमें आश्चर्य नहीं की तुम मनमाना फल पाओगे। (१३१) और नरक से डरते रहो जो काफिरों के लिए प्रस्तुत है। (१३२) और अल्लाह और रसूल की आज्ञा मानों इसमें आश्चर्य नहीं कि तुम पर दया की जायगी। (१३३) और अपने पालनकर्ता की देन और

*** बदर के युद्ध में आकाश से कई हजार फरिश्ते मुसलमानों की सहायता के लिए उतरे थे। यहाँ कहा गया है कि खुदा ही की सहायता से विजय होती है फरिश्तों का उतरना कुछ आवश्यक नहीं हैं।**

स्वर्ग की ओर लपको जिसका विस्तार पृथ्वी और नभ जैसा है तथा उन संयमियों के लिए प्रस्तुत है। (१३४) जो अच्छी दशा तथा दुर्दशा में दोनों दशाओं में धर्म पर व्यय करते और क्रोध को रोकते और मनुष्यों को क्षमा करते हैं ऐसे भलाई करने वालों को अल्लाह चाहता है। (१३५) और वे मनुष्य जब कोई स्पष्ट पाप कर बैठते हैं या अपनी हानि कर लेते हैं तो ईश्वर को स्मरण करके अपने पापों की क्षमा माँगने लगते हैं और ईश्वर के अतिरिक्त अपराधों को क्षमा करने वाला कौन है और जो जान-बूझकर उस पर हठ नहीं करते। (१३६) यही लोग हैं जिनका बदला उनके पालनकर्ताकी ओर से क्षमा है और वह उपवन हो जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। वे उनमें सदैव रहेंगे और शुभ कर्म करने वालों के लिए भी अच्छे फल हैं। (१३७) तुमसे पहले भी घटनाएं घटित हुई हैं अतः देश में चलो फिरो और देखो कि जिन मनुष्यों ने झुठलाया उनका कैसा परिणाम मिला। (१३८) यह मनुष्यों को समझाने का है वैसे सावधानी और शिक्षा तो उससे वही पकड़ते हैं जिनके हृदय में भय है। (१३९) साहस न त्यागो और न घबराओ यदि तुम धर्म पर हो तो तुम्हारी ही विजय होगी। (१४०) यदि तुमको यह अड़ंगा लगा तो उनको भी इसी प्रकार का अडंगा लग चुका है और यह संयोग है जो मेरे सावधान करने से दिन के फेर आया करते हैं और यह इसलिए कि ईश्वर ईमानदारों का पता लगाये और तुममें से कुछ को शहीद बनाये। अन्यथा ईश्वर अन्याय को नहीं चाहता। (१४१) यह अवश्यंभावी था कि अल्लाह मुसलमानों को शुद्ध कर दे और काफिरों की शक्ति तोड़ दे। (१४२) क्या तुम इस विचार में हो कि स्वर्ग में पहुंच जायेंगे। यद्यपि अभी तक अल्लाह ने न तो उन लोगों की परीक्षा की जो तुममें से युद्ध करने वाले हैं और न उन लोगों की परीक्षा की जो युद्ध में स्थिर रहते हैं। (१४३) और तुम तो मृत्यु के आने से पहले मरने* की प्रार्थना किया

*** मुसलमान शहदत की इच्छा रखते थे। जब ऊहद में बहुत-से**

करते थे सो अब तो तुमने उसको अपनी आँखों से देख लिया है। (१४४) (रुकू १४)

मुहम्मद तो और कुछ नहीं केवल एक पैगम्बर हैं और बस इनसे पहले भी रसूल हो गये हैं यदि मर जावें या मारे जावें-तो क्या तूम फिर लौट* जाओगे और जो अपने उल्टे पैरों कुफ्र की ओर लौट जायगा वह ईश्वर का तो कुछ भी नहीं बिगड़ सकेगा हाँ जो मनुष्य उसको धन्यवाद करते है उनका ईश्वर शीघ्र कल्याण करेगा। (१४५) और कोई भी व्यक्ति ईश्वर भी आज्ञा बिना मर नहीं सकता, जीवन लिखा हुआ है और जो व्यक्ति संसार में बदला चाहता है मैं उसका बदला यहीं दे देते हैं और जो प्रलय में बदला चाहता है मैं उस को वहीं दूंगा और जो मनुष्य धन्यवाद देते हैं मैं उन को शीघ्र बदला दूंगा। (१४६) और बहुत से पैगम्बर हो गये हैं जिनके साथी आकर ईश्वर को मानने वाले शत्रुओं से लड़े, तो जो कष्ट उन को अल्लाह के मार्ग में प्राप्त हुआ उस को कारण न तो उन्होंने हिम्मत हारी और न थके और न दबे और अल्लाह स्थिर रहनेवालों को मित्र रखता है। (१४७) और इसके अतिरिक्त उनके मुँह से एक बात भी तो नहीं निकली कि ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमारे पाप क्षमा कर और हमारे कामों में जो हमसे अधिक अत्याचार हो गये हैं उनको क्षमा कर और हमारे पैर स्थिर रख और काफिरों के समाज पर हमें विजयी करा। (१४८)

मुसलमान मारे गये तो उन्होंने अपनी आँखों से देख लिया कि शहादत के क्या अर्थ हैं।

* ऊहद के युद्ध में मुहम्मद साहब घायल होकर एक गढ़े में गिर पड़े थे और यह खबर उड़ गई थी कि उनका स्वर्गवास हो गया। इस-लिए कुछ मुसलमान मैदान छोड़कर चले गये थे। इस पर कहा गया है कि मुसलमान तो ईश्वर के लिए लड़ते हैं। नबी की मृत्यु भी हो जाय तो उनको अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए।

तो अल्लाह ने उनको संसार में बदला दिया। प्रलय में भी अच्छा बदला दिया। अल्लाह भलाई करने वालों को चाहता है। (१४९) (रुकू १५)

ऐ धर्मवालों! यदि काफिरों के कहे में आ जाओगे तो वह तुमको वापिस अपने धर्म में ले जायेंगे फिर तुम ही उल्टे हानि में आ जाओगे। (१५०) तुम्हारा सहायक अल्लाह है और उसकी सहायता सबसे बड़ी है। (१५१) हम शीघ्र तुम्हारा भय काफिरों के हृदय में डालेंगे क्योंकि उन्होंने उन वस्तुओं को ईश्वर के समान बताया है जिनका ईश्वर ने कोई भी प्रमाणपत्र भी नहीं भेजा और उन मनुष्यों का वास नरक है जो अत्याचारियों का बुरा ठिकाना है। (१५२) और जिस समय तुम ईश्वर की आज्ञा से काफिरों का खड़ग से बधकर रहे थे उस समय ईश्वर ने तुमको अपना प्रण सच्चा कर दिखाया यहाँ तक कि तुमको तुम्हारौ भलाई के लिए विजय दिला दी। इसके पश्चात तुम डरपोक हो गए और तुमने आज्ञा के विषय में आपस में झगड़ा किया और आज्ञालंघन की। कुछ तो तुममें से संसार के पीछे पड़ गये और कुछ प्रलय की चिन्ता में लगे फिर तो ईश्वर ने तुमको शत्रुओं से फेर दिया। ईश्वर को तुम्हारी परीक्षा स्वीकार थी और ईश्वर ने तुमसे पैग़म्बर के बुलाने पर और ईमानदारों पर ईश्वर की कृपा है। (१५३) जब तुम भी भागे चले जाते थे तब तुम मुड़कर किसी की ओर नहीं देखते थे। दुःख के बदले ईश्वर ने तुमको दुःख पहुंचाया जिससे जब कभीं तुम्हारा कोई स्वार्थ अपूर्ण रहे या तुम पर कोई संकट आन पड़े तो तुम उसका दुःख मत करो और तुम कुछ भी करो अल्लाह को उसका ज्ञान है। (१५४) फिर तंगी के पश्चात ईश्वर ने तुम पर आराम के लिए निशा बनाई और उसमें से कुछ को निद्रा ने आ घेरा और कुछ जिनको अपने प्राणों की पड़ी थी अल्लाह के समक्ष निरर्थक अकर्मण्यों जैसे बुरे विचार बना रहे थे कहते थे कि हमारे वश की क्या बात है—कह दो कि सब काम ईश्वर ही के वश में है—इनके हृदयों में अन्य बातें भी

छिपी हुई हैं जिनको तुम पर प्रकट नहीं करते। कहते हैं कि हमारा कुछ भी वश चलता होता तो हम यहाँ मारे ही न जाते। कह दो कि तुम अपने घरों में भी होते तो जिनके भाग्य में मारा जाना लिखा था निकलकर अपने मृत्यु के स्थान पर उपस्थित होते। ईश्वर की इच्छा थी कि तुम्हारी हार्दिक आकाँक्षाओं की परीक्षा करें और तुम्हारे हृदय के विचार को स्पष्ट करे और अल्लाह तो सबके जी की बात जानता है। (१५५) जिस दिन दो समान आपस में भिड़ गए तो तुममें से कुछ मनुष्य भाग खड़े हुए तो केवल उनके कुछ पापों के कारण शैतान ने उनके पाँब उखाड़ दिए पर ईश्वर ने उनको तब भी क्षमा किया। अल्लाह क्षमा करनेवाला तथा सहनेवाला है। (१५६) (रुकू १६)।

ऐ मुसलमानों ! उन काफिर जैसे न बनो। वे अपने भाई-बन्धुओं से जो परदेश गये हों या युद्ध करने गये हों उनसे कहा करते थे कि यदि हमारे पास होते नो न मरते और न मारे जाते। ईश्वर ने उन के ऐसे विचार इसलिए कर दिए हैं कि उनके हृदय में दुःख रहे और अल्लाह ही जीवित रखता तथा मारता है। और जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह उसको देख रहा है। (१५७) और ईश्वर के विचार से यदि तुम मारे जाओ या मर जाओ तो ईश्वर की क्षमा और कृपा उससे बढ़कर है जो तुम संसार में एकत्रित कर लेते हो। (१५८) तुम मर गए या मारे गए तो अल्लाह ही की ओर एकत्रित होंगे। (१५९) अल्लाह की बड़ी ही कृपा हुई कि तुम मुहम्मद इनको कोमल हृदय मिले हो ओर यदि तुम स्वभाव के अक्खड़ कठोर हदय के होते तो यह तुम्हारे समीप से भाग जाते। तो तुम इनके अपराध क्षमा करो और इनके अपराधों की क्षमा चाहो और समस्याओं में उनकी सलाह ले लिया करो, फिर तुम्हारे हृदय में एक बात ठन जाय तो भरोसा ईश्वर ही पर रखना, जो मनुष्य भरोसा रखते हैं ईश्वर उनको चाहता है। (१६०) यदि ईश्वर तुम्हारी सहायता पर है तो फिर कोई भी तुमको विजित करनेवाला नहीं और यदि वह तुमको छोड़ बैठे तो उसके पश्चात

कौन है जो तुम्हारी सहायता को खड़ा हो और धर्मवालों को चाहिए कि अल्लाह ही का भरोसा रखे। (१६१) पैगम्बर को उचित नहीं कि कुछ भी खयानत करे और जो कोई खयानत का अपराधी होगा वह प्रलय के दिन उसको लाकर उपस्थित करेगा फिर जिसने जैसा किया है उसको उसका पूरा-पूरा बदला दिया जायगा और किसी पर अत्याचार नहीं होगा। (१६२) भला जो व्यक्ति अल्लाह की इच्छा का हो वह उस व्यक्ति जैसा कैसे हो सकता है जो ईश्वर के क्रोध का भागी बन गया हो और उसका ठिकाना नरक है और वह बुरा ठिकाना है। (१६३) अल्लाह के यहाँ मनुष्यों के पद हैं और वह मनुष्य जो कुछ कर रहे हैं उसको देख रहा है। (१६४) अल्लाह ने धर्मवालों पर दया की कि उनमें उन्हीं में का एक पैगम्बर भेजा जो उनको ईश्वर की आयतें पढ़-पढ़कर सुनाता है, उनको सुधारता है, पुस्तक और कर्म की बात उनको सिखाता है पहले तो यह लोग स्पष्टतया भटके हुए में से थे। (१६५) जब तुम पर संकट आ पड़ा, तो यद्यपि तुम स्वयं इससे दूना संकट डाल चुके थे, तुम कहने लगे कि कहाँ से यह संकट आया? यह तुम्हारे कर्म का परिणाम है। निस्सन्देह अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१६६) जिस दिन दो समान भिड़ गए और तुमको दुःख पहुंचा तो ईश्वर की आज्ञा ही थी और उसका यह भी अभिप्रायः था कि ईश्वर धर्मवालों का पता लगाए। (१६७) और मुनाफिकों (आगे कुछ पीछे कुछ कहनेवालों) का पता करे। मुनाफिकों से कहा गया, आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो, तो कहने लगे कि यदि हम लड़ाई समझते तो अवश्य तुम्हारे साथ हो लेते। यह उस दिन विश्वास की अपेक्षा अविश्वास के निकट थे। मुंह से ऐसी बात कहते हैं जो इनके हृदय में नहीं और जिसको छिपाते हैं अल्लाह उसे खूब जानता है। (१६८) जो बैठे रहे और अपने भाइयों के सम्बन्ध में कहने लगे कि हमारा कहा मानते तो मारे नहीं जाते, उनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो अपने ऊपर से मृत्यु को हटा देना। (१६९) जो मनुष्य अल्लाह के मार्ग में मारे गए हैं उनको मरा हुआ न विचारना अपितु वे अपने

पालनकर्ता के पास जीवित है। उनको आजीविका मिलती है। (१७०) जो कुछ अल्लाह ने अपनी कृपा से इनको दे रखा है उससे प्रसन्न हैं। और जो इनके पश्चात अभी इनमें आकर सम्मिलित नही हुए वह हर्ष मनाते हैं क्योंकि इन पर न भय हैं और न यह उदासीन हैं। (१७१) अल्लाह के दिये पदार्थों का, उसकी दया का और इस बात का कि अल्लाह धर्मवालों के फल को अकारथ नहीं होने देता हर्ष मना रहे हैं। (१७२) रुकू १७)) ।

जिन मनुष्यों ने चोट खाकर भी ईश्वर और पैगम्बर की आज्ञा मानी विशेष कर ऐसे भलाई करनेवाले और संयमियों के लिए बड़ा फल है। (१७३) वह मनुष्य जिनको मनुष्यों ने समाचार दिया कि मनुष्यों ने तुम्हारे लिए बड़ी भीड़ एकत्रित की है उनसे डरते रहना तो इससे उनका विश्वास और अधिक हो गया और बोल उठे कि हमको अल्लाह प्राप्त है और वह अच्छा काम संभालनेवाल हैं। (१७४) अर्थ यह कि मनुष्य अल्लाह की वस्तुओं और कर्म से लदे हुए वापस आये और उनको कुछ हानि नहीं हुई और अल्लाह की इच्छा पर चलते रहे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (१७५) यह राक्षस है जो अपने मित्रों का भय दिखलाता है तो तुम उनसे न डरना और यदि विश्वास रखते हो तो मेरा ही भय करना। (१७६) जो मनुष्य नहीं मानते हैं तुम इन मनुष्यों के कारण उदास न होना, यह मनुष्य ईश्वर का तो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते, ईश्वर चाहता है कि प्रलय में इन को कुछ भाग न दे और इन को बड़ा दण्ड मिलता है। (१७७) जिन मनुष्यों ने विश्वास देकर अविश्वास मोल लिया है उससे ईश्वर को तो कदाचित किसी प्रकार की हानि नहीं पहुंचा सकेंगे अपितु इन्हीं को कठिन दण्ड मिलेगा। । (१७८) जो मनुष्य मना कर रहे हैं वे इस विचार में न रहें कि हम जो उनको ढील दे रहे हैं यह कुछ इनके पक्ष में भला है। हम तो इन को केवल इसलिए ढील दे रहे हैं कि और अपराध समेट लें और इनके लिए नरक का दण्ड है। (१७९) अल्लाह ऐसा

नहीं कि जिस दशा में तुम हो अच्छे बुरे की परीक्षा बिना इसी दशा में धर्मवालों को रहने दे और अल्लाह ऐसा भी नहीं कि तुमको गैब की बातें बता दे । हाँ अल्लाह अपने पैगम्बरों में से जिसको चाहता है चुन लेता हो तो अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर विश्वास करो और यदि विश्वास करोगे और बचते रहोगे तो तुमको बड़ा फल मिलेगा। (१८०) और जिन लोगों को खुदा ने अपनी कृपा से दिया है और वह उसमें कृपणता करते हैं वह इसको अपने पक्ष में भला न समझें अपितु वह उन के पक्ष में खराबी है- जिस धन की कृपणता करते हैं प्रलय के दिन के निकट उसकी हंसली बना कर उनके गले में पहिनायी जायगी और नभ व पृथ्वी का स्वामी अल्लाह ही है और जो तुम कर रहे हो अल्लाह को उसका ज्ञान है। (१८१) (रुकू १८)

जो लोग अल्लाह को निरावलम्बी और अपने को धनवान बताते हैं उनकी बकवाद अल्लाह ने सुनी। यह मनुष्य जो अकारथ पैगम्बरों का बध करते चले आये हैं उसके साथ हम इनकी इस बकवाद को भी लिखे रखते हैं और इनका उत्तर हमारी ओर से यह होगा कि नरक का दण्ड भोगा करो। (१८२) यह उन्हीं कामों का बदला है जिनको तुमने पहले से अपने हाथों लिया है अन्यथा अल्लाह तो अपने मनुष्यों पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करता। (१८३) यह जो कहते हैं कि अल्लाह ने हम से कह रक्खा है कि जब तक कोई पैगम्बर हमको ऐसी भेंट न दिखावे कि उसको अग्नि चट कर जाय तब तक हम उस पर विश्वास नहीं करते। उनसे कहो कि मुझ से पहले पैगम्बर तुम्हारे पास खुली २ निशानियाँ लाये जिसको तुम माँगते हो तो यदि तुम सच्चे होतो तुमने उनका किसलिए बध किया। (१८४) इस पर भी वह तुमको झुटलावेंगे। तुमसे पहले पैगम्बर स्पष्ट चमत्कार लाये थे और*

---

* धार्मिक छोटे-छोटे ग्रंथ सहीफे कहलाते हैं। यह भी आसमानी किताबें हैं।

छोटी पुस्तकें (सहीफे) और खुली पुस्तकें भी लाये थे फिर भी लोगों ने उनको झुठलाया था। (१८५) प्रत्येक को मरना है और पूरा-पूरा बदला तुमको प्रलय ही के दिन दिया जायगा तो जो व्यक्ति नरक से दूर हटा दिया गया और उसको बैकुण्ठ में स्थान दिया गया तो समझो उसने मनमाना फल पाया और संसार का जीवन तो केवल छल की पूंजी है। (१८६) तुम्हारे धन और तुम्हारी जानों में अवश्य तुम्हारी परीक्षा की जावेगी और जिन मनुष्यों को तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उनसे और मुशरकीन से तुम बहुत सी हानि की बातें जरूर सुनोगे और यदि संतोष किये रहे और संयम किया तो निस्संदेह ये साहस के कार्य हैं। (१८७) और ईश्वर ने पुस्तक वालों से स्वीकृति ली कि मनुष्यों से इसका अर्थ स्पष्ट कह देना और इसको छिपाना नहीं परन्तु उन्होंने उसको अपनी पीठ के पीछे फेंक दिया और उसके बदले थोड़े से दाम प्राप्त किये सो बुरा है जो यह मनुष्य ले रहे हैं। (१८८) और जो अपने किये से प्रसन्न होते हैं और जो किया नहीं उस पर अपनी प्रशंसा चाहते हैं ऐसे मनुष्यों का कदापि विचार न करना कि यह मनुष्य दण्ड से बचे रहेंगे अपितु उनके लिए दुःखदायी दण्ड है। (१८९) नभ व पृथ्वी का अधिकार अल्लाह ही को है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१९०) (रुकू १९)

नभ और पृथ्वी की आकृति और रात और दिन को बदलने से बुद्धिमानों के लिए चिन्ह हैं। (१९१) जो खड़े और बैठे और लेटे ईश्वर का स्मरण करते हैं और नभ तथा पृथ्वी की आकृति में ध्यान देते हैं—हमारे पालनकर्त्ता! तूने इनको अकारथ नहीं बनाया तेरी जाति पवित्र है हमें नरक के दण्ड से बचा। (१९२) ऐ हमारे पालन-कर्त्ता! जिसको तूने नरक में डाला उसको तू ने नीच बनाया और दण्ड प्राप्त करने वालों का कोई भी सहायक नहीं होगा। (१९३) ऐ हमारे पालनकर्त्ता! हमने विज्ञाप्ति करनेवाले मुहम्मद को सुना कि वह धर्म की विज्ञप्ति कर रहे थे कि अपने पालनकर्ता पर विश्वास करो तो

हमने विश्वास कर लिया बस ऐ हमारे पालनकर्ता! हमारे अपराध क्षमा कर और हमारे अपराधों को दूर कर और भले मनुष्यों के साथ हमको मृत्यु दे। (१९४) ऐ हमारे पालनकर्ता! तूने जैसी प्रतिज्ञा अपने पैगम्बरों के द्वारा हमसे की है उसे पूर्ण कर और प्रलय के दिन हमको बदनाम न कर। तू बचनों के प्रतिकूल तो किया ही नहीं करता। (१९५) फिर उनके पालनकर्ता ने उनकी प्रर्थना मान ली कि हम तुम में से किसी परिश्रमिक का परीश्रम निरर्थक नहीं जाने देंगे। पुरुष हो या स्त्री तुम सब एक जाति के हो तो जिन मनुष्यों ने हमारे लिए देश छोड़े और अपने घरों से निकाले गये, हम उनके अपराधों को अवश्य क्षमा कर देंगे। उनको ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी, यह अल्लाह के पास से फल मिलता है और अच्छा फल तो अल्लाह ही के पास है। (१९६) नगरों में काफिरों का चलना-फिरना तुम को कहीं धोखे में न डालदे। (१९७) तनिक सा लाभ है फिर इनका स्थान नरक में है और वह बुरा स्थान है। (१९८) परन्तु जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते रहेंगे उनके लिए उपवन है जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी और वह उन में सदैव रहेंगे यह केवल अल्लाह के पास है अतः भलाई करनेवालों के लिए भला है। (१९९) पुस्तक वालों में से कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो ईश्वर पर विश्वास रखते हैं और जो पुस्तक तुम पर अवतरित है तथा जो उन पर अवतरित हुई है उनको मानते हैं। अल्लाह के समक्ष झुके रहते हैं। अल्लाह की आयतों के बदले में कम मूल्य नहीं लेते, यही वह मनुष्य हैं जिनके बदले पालनकर्ता के पास से मिलेंगे। ऐ ईमानवालों स्थिर रहो और सामना करने में दृढ़ रहो और धर्म में लगे रहो और अल्लाह से डरो जिससे तुम मनमाने फल पाओ। (२००) (रुकू २०)

सूरे निसा

[स्त्रियों का अध्याय]

यह मदीने में अवतरित हुई इसमें १७७आयतें और २४ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयायान तथा कृपालु है।
ऐ मनुष्यों ! अपने पालनकर्ता से डरो जिसने तुमको एक व्यक्ति* से उत्पन्न किया है उससे उसकी पत्नि को उत्पन्न किया है और उन दो से बहुत पुरुष और स्त्रियाँ फैला दिए और जिस ईश्वर का लगाव दे देकर तुम अपने कितने ही काम पूर्ण कर लेते हो उसका और अपने सम्बन्धियों का लिहाज रखा, अल्लाह तुम्हारा रखवाला है। (१) अनाथों** के धन उनको दे दो और अच्छे धन के बदले पाप का धन मत लो और उनका धन अपने धन में मिलाकर खा-पी मत डालो। यह बड़ा पाप है। (२) यदि तुमको इस बात का डर हो कि अनाथों बालिकाओं में न्याय न रख सकोगे तो अपनी इच्छा के अनुकूल दे दो और तीन-तीन चार-चार स्त्रियों से विवाह कर लो परन्तु यदि तुमको इस बात की शंका हो कि उनसे समान व्यवहार न कर सकोगे तो एक ही पत्नी करना या जो तुम्हारे अधिकार में हो उस पर संतोष करना।

---

*यानी सबसे पहले हजरत आदम को पैदा किया फिर उनकी बीवी (हव्वा) को बनाया और फिर इन्हीं से आदमी की नसल चली जितने हैं, सब आदम की संतान हैं इसलिए जात-पांत का कोई प्रश्न ही नहीं उठता और न कोई ऊँच या नीच है। सब जन्म से एक समान हैं।

**जिस लड़के का बाप मर जाय उसके वारिसों को चाहिए कि उसका माल न लें। जब वह जवान हो जाय तो उसको उसके बाप का छोड़ा माल जरूर वापिस कर दें।

यह प्रयत्न उचित है। (३) स्त्रियों को उनके मिहर प्रसन्नता से दे डालो फिर यदि वह अपनी प्रसन्नता से उसमें से कुछ तुमको छोड़ दें तो उसका उपयुक्त प्रयोग करो। (४) धन जिसको ईश्वर ने तुम्हारे लिए अवलम्ब बनाया है मूर्खों को न दो पर उसमें से उनके खाने-पहनने में व्यय करो तथा उनको नम्रता से समझा दो। (५) निराश्रितों को सुधारते रहो। जब विवाह के योग्य हो जाएँ उस समय यदि उनमें बुद्धिमत्ता देखो तो उनका धन उनको दे दो और ऐसा न करना कि उनके बड़े होने के भय से शीघ्र ही उसका धन खा डालो। जो सामर्थ्य वाला हो उसे बचा रखना चाहिए और जिसे अत्यन्त आवश्यकता हो वह नियम के अनुसार खा ले। और जब उनका धन उन्हें सौंपने लगो तो उसके साक्षी कर लो अन्यथा हिसाब लेने को अल्लाह अर्याप्त है। (६) माता-पिता और सम्बन्धियों की छोड़ी हुई जायदाद में थोड़ा बहुत पुरुषों का भाग है; शेष उस में *स्त्रियों का भी भाग है और वह भाग हमारा ठहराया हुआ है। (७) जब बटवारे के समय सम्बन्धी, अनाथ बच्चे और निर्धन आ उपस्थित हों तो उसमें से उनको भी कुछ दे दिया करो और उनको नम्रता से समझा दो। (८) उन मनुष्यों को डरना चाहिए कि यदि अपने पीछे निर्बल संतान छोड़ जाते तो उन पर उनको दया आती। अतः उन्हें चाहिए कि अल्लाह से डरें और ठीक प्रकार बात करें। (९) जो मनुष्य व्यर्थ अनाथों का धन तितर-बितर करते हैं वह अपने पेट में बस अंगारे भरते हैं और अब नरक में पड़ेंगे। (१०) (रुकू १)।

तुम्हारी संतान में अल्लाह तुमसे कहता है कि लड़के को दो लड़कियों के समान भाग मिलेगा, फिर यदि लड़किमाँ दो से अधिक हों तो छोड़ी हुई जायदाद में उनका भाग दो तिहाई है और यदि अकेली हो तो उसको आधा। मृतक के माता-पिता दोनों में प्रत्येक को छोड़ी

***अरब में इस्लाम से पहले लड़कियों को अपने माँ-बाप की जायदाद में से कुछ न मिलता था।**

हुई जायदाद का छटवाँ भाग उस दशा में मिले कि मृतक की संतान हो और यदि उसके संतान न हो और उसके संरक्षक माँ-बाप हों तो उसकी माता को एक तिहाई भाग परन्तु यदि मृतक के भाई हों तो माता का छटवाँ भाग मृतक का वसीयत और कर्ज के दे देने के पश्चात मिलेगा। तुम अपने पिता और पुत्रों को नहीं जान सकते कि लाभ पहुंचने के विचार से उनमें कौन-सा तुम्हारे अधिक निकट है। भागों का अधिकारी अल्लाह का ठहराया हुआ है अल्लाह निस्सन्देह जानकार है। (११) यदि तुम्हारी पत्नियाँ मर जाये तो यदि उनकी संतान नहीं हो तो उनके छोड़े हुए धन में तुम्हारा आधा भाग है और यदि उनके संतान है तो उनके छोड़े हुए धन में तुम्हारा चौथाई भाग है उनकी वसीयत और कर्ज चुकाने के पश्चात और यदि तुम कुछ छोड़ मरो और तुम्हारे कोई संतान न हो तो पत्नियों का चौथाई भाग है और यदि तुम्हारे संतान हो तो तुम्हारी जायदाद में से पत्नियों का आठवाँ भाग है जो तुम्हारी वसीयत और कर्ज के चुकाने के पश्चात दिया जायगा और यदि किसी पुरुष या स्त्री की पूंजी में यदि उसके पिता या पुत्र न हो और उसके भाई या बहिन हो तो उनमें से प्रत्येक का छटवाँ भाग और यदि एक से अधिक हों तो एक तिहाई में सब सम्मिलित हैं मृतक की वसीयत और कर्ज के चुकाने के पश्चात यदि मृतक ने औरों को हानि न पहुंचाई हो। यह अल्लाह की आज्ञा है और वह जानता है तथा सहन करता है। (१२) यह अल्लाह की सीमाएं हैं और जो अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा पर चलेगा उसको अल्लाह ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगीं वे उनमें सदैव रहेंगे और यह बड़ी सफलता है। (१३) जिसने अल्लाह और उसके रसूल की आज्ञा न मानी और अल्लाह की सीमाओं से आगे बढ़ गया उसको नरक में प्रविष्ट करेगा वह उसमें सदैव रहेगा और उसको जिल्लत की मार दी जायगी। (१४) (रुकू २)।

---

* मरे की छोड़ी हुई जायदाद।

और तुम्हारी स्त्रियों में से जो स्त्री अनाचार की अपराधिन हों तो उन पर अपसे मनुष्यों में से चार की साक्षी लो, यदि साक्षी प्रमाणित करें तो उनको घरों में बन्द रखो यहाँ तक कि मृत्यु उनका काम समाप्त कर दे या अल्लाह उनके लिए कोई मार्ग निकाले। (१५) और जो दो व्यक्ति तुम में से अनाचार के अपराधी हों तो उनको मारो पीटो फिर यदि क्षमा मागें और अपनी दशा सुधार लें तो उनका विचार छोड़ दो क्योंकि अल्लाह बड़ा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करने वाला कृपालु है। (१६) पर अल्लाह प्रार्थना स्वीकार करता है उन्हीं की जो ना समझी से कोई बुरा कार्य कर बैठें फिर यदि वह शीघ्र क्षमा माँग ले तो अल्लाह भी ऐसों को क्षमा कर देता है, और अल्लाह औपचारिक वाला है तथा सब जानना हैं। (१७) उन मनुष्यों को क्षमा नहीं करता जो बुरे काम करते रहे यहां तक कि उनमें से जब किसी के सामने मृत्यु आ खड़ी हो तो कहने लगे कि अब मैं क्षमा माँगता हूं और उनको भी क्षमा नहीं जो काफिर ही मर जाते हैं। यही हैं जिनके लिए हमने कठोर दण्ड तैयार कर रखे हैं। (१८) ऐ धर्मवालों! तुमको उचित नहीं कि स्त्रियों को बपौती समझकर शक्ति से उन पर अधिकार कर लो जो कुछ तुमने उनको दिया है उसमें से कुछ छीन लेने की कामना से उनको बन्दी न रखो कि दूसरे से विवाह न करने पावें या उनसे कोई स्पष्ट अनाचार प्रकट हो और पत्नियों के साथ अच्छे व्यवहार से रहो सहो और तुमको पत्नी नापसन्द हो तो अचरज नहीं कि तुमको एक वस्तु नापसन्द हो और अल्लाह उसमें बहुत भलाई तथा उन्नति दे। (१९) यदि तुम्हारा विचार एक पत्नी को बदलकर उसके स्थान पर दूसरी पत्नी करने का हो तो यदि तुमने पहली पत्नी को बहुत-सा धन दे दिया हो तो उसमें से कुछ भी न लेना। क्या किसी प्रकार का पाप लगाकर स्पष्ट अनुचित बात करके अपना दिया हुआ लेते हो। (२०) दिया हुआ कैसे ले लोगे जबकि तुम एक दूसरे के साथ संगत कर चुके हो और पत्नियाँ तुमसे पक्का वादा ले चुकी हैं। (२१) जिन स्त्रियों के साथ

तुम्हारे पिता ने विवाह किया हो तुम उनके साथ विवाह न करना जो हो चुका सो हो चुका। यह बड़ी लज्जा और अनौखी बात थी और बहुत ही बुरा नियम था। (२२) (रुकू ३)।

तुम्हारी मातायें, पुत्रियाँ और तुम्हारी बहनें और तुम्हारी बूआयें और तुम्हारी मौसियाँ और भान्जियाँ, भतीजियाँ और तुम्हारी मातायें जिन्होंने तुमको दूध पिलाया और दूध में सम्मिलित बहनें और तुम्हारी सासें इनसे सम्भोग तुम्हारे लिए पाप है। जिन स्त्रियों के साथ तुम संगत कर चुके हो उनकी पूर्वपति से पैदा हुई पुत्रियाँ जो तुम्हारी गोदों में पोषित होती हैं उसके आगे भी पाप है। इन पत्नियों के साथ तुमने भोग न किया हो तो तुम पर कुछ अपराध नहीं और तुम्हारे पुत्रों की बहुयें और दो बहिनों का एक साथ पत्नि बनाकर रखना भी तुम पर पाप है। परन्तु जो हो चुका सो हो चुका। निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२३)

पांचवां पारा (वल्मुहसनात)

सूरे निसा

ऐसी स्त्रियाँ जिनका पति जीवित है उनको लेना भी पाप है परन्तु जो बन्दी होकर तुम्हारे हाथ लगी हों उनके लिए तुमको ईश्वर की आज्ञा है और इनके अतिरिक्त अन्य सब स्त्रियाँ पुण्य हैं जिनको तुम धन देकर विवाह करना चाहो नकि मस्ती निकालने को। फिर जिन स्त्रियों से तुमने आनन्द उठाया हो तो उनसे जो मिहर ठहरा था उनको सोंप दो, ठहराये पीछे आपस में प्रसन्न होकर जो और ठहरा लो तो तुम पर इस में कुछ पाप नहीं। अल्लाह ज्ञाता तथा सामर्थ्यवाला है। (२४) और तुममें से जिसको मुसलमान पत्नियों से विवाह करने की शक्ति मिहर आदि के कारण न हो तो बान्दियां

ही सही जो तुम मुसलमानों के कब्जे में आ जायें शर्त यह कि वे विश्वास रखती हों और अल्लाह तुम्हारे विश्वास को खूब जानता है। तुम आपस में एक हो पस बान्दीवालों की आज्ञा से उनके साथ विवाह कर लो और नियमानुसार उनके मिहर उनको सौंप दो। परन्तु शर्त यह है कि विवाह किया जाय, बाजारी स्त्रियों जैसा सम्बन्ध न हो और न छिपकर प्रेम रखती हों। यदि विवाह किये पीछे काम करें तो जो दण्ड पत्नि को उसकी आधी लौंडी को। लौंडी से विवाह करने की आज्ञा उसी को है जिसको तुम में से पाप में फँस जाने का डर है और यदि उसके बिना संतुष्ट रहो तो तुम्हारे पक्ष में भला है और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२५) (रुकू ४)

अल्लाह चाहता है कि जो तुमसे पहले हो गये हैं उनके नियम तुमसे खोल-खोलकर बताया करे और तुमको उन्हीं नियमों पर चलाये और तुमको क्षमा करे और सामर्थ्यवाला अल्लाह जानता है। (२६) अल्लाह चाहता है कि तुम पर ध्यान दे और जो मनुष्य विषय वासनाओं के पीछे पड़े हैं अर्थ यह वे सच्चे मार्ग से बहुत दूर हट गये हैं। (२७) अल्लाह चाहता है कि तुमसे भार हलका करे क्योंकि मनुष्य निर्बल उत्पन्न किया गया है। (२८) ऐ धर्मवालो! एक दूसरे का धन व्यर्थ मत खाओ परन्तु आपस में स्वीकृति से व्यापार करो और आपस में मार-काट मत करो। अल्लाह तुम पर कृपालु है। (२९) और जो शक्ति से ऐसा करेगा हम उसको आग में झोंक देंगे और यह अल्लाह के लिए साधारण है (३०) जिनसे तुमको मना किया जाता है यदि तुम उनमें से बड़े-बड़े पापों से बचते रहोगे तो हम तुम्हारे छोटे अपराध उतार देंगे और तुम को प्रतिष्ठा का स्थान देंगे। (३१) ईश्वर ने जो तुममें से एक को दूसरे पर उन्नति दे रक्खी है उसकी कुछ कामना मत करो। पुरुषों ने जैसे कर्म किये हों उनको उनका भाग और स्त्रियों ने जैसे कर्म किया हो उनको उनका भाग और अल्लाह से उसकी दया माँगते रहो। अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (३२) और

माता-पिता और सम्बन्धियों जो तर्का (उत्तराधिकार) छोड़कर मरे तो हमने प्रत्येक के उस धन के अधिकारी ठहरा दिये हैं और जिन मनुष्यों के साथ तुम्हारावादा है तो उनका भाग उनको दो। प्रत्येक वस्तु अल्लाह के समक्ष है। (३३) (रुकू ५)

पुरुष स्त्रियों के सिरमौर हैं, कारण यह है कि अल्लाह ने एक को एक पर प्रधानता दी है और इसलिए भी कि वे अपने धन में से भी उन पर व्यय करते हैं, तो जो भली हैं कहा मानती हैं, ईश्वर की कृपा से पीठ पीछे रक्षा रखती हैं और तुमको जिन पत्नियों की बुरी आदत से भय हो उनको समझा दो, फिर नमाते तो उनके साथ सोना छोड़ने दो और उन्हें मारो, फिर यदि तुम्हांरी बात मानने लगें तो उन पर पाप न लगाओ क्योंकि अल्लाह सर्वोपरि है। (३४) और यदि तुम पति पत्नियों में खट-पट का संदेह हो तो पुरुष की ओर से एक पंच और स्त्री की ओर से एक पंच ठहराओ, यदि पंचों का इरादा होगा तो अल्लाह दोनों में मिलाप करा देगा, अल्लाह सावधान है। (३५) अल्लाह ही की पूजा करो और उसके साथ किसी को मत मिलाओ और माता-पिता, सम्बन्धी और अनाथों और निराश्रितों और निकट पड़ोसियों और परदेशी पड़ोसियों और पास के बैठनेवालों और मुसाफिरों और जो तुम्हारे अधिकार में हों इन सबके साथ भलाई करते रहो और अल्लाह उन मनुष्यों से प्रसन्न नहीं होता जो इतरायें, बड़ाई मारते फिरे। (३६) वे जो कंजूसी करें और दूसरों को भी कंजूसी करने की सम्मति दें और अल्लाह ने जो अपनी कृपा से उन को दिया है उसको छिपायें हमने ऐसे काफिरों के लिए जिल्लत का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (३७) वे जो मनुष्यों के दिखाने को धन व्यय करते हैं और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास नहीं रखते और राक्षस जिसका साथी हो तो वह बुरा साथी है। (३८) और यदि अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाते और जो कुछ ईश्वर ने उनको दे रक्खा था उसको व्यय करते तो उनका क्या बिगड़ता था और अल्लाह तो इनसे जानकार ही है। (३९)

अल्लाह रत्ती भर अत्याचार नहीं करता अपितु भलाई हो उसको बढ़ाता है और अपने पास से बड़ा बदला दे देता है। (४०) उस समय क्या दशा होगी जब हम प्रत्येक गुट के साक्षी को बुलालेंगे और ऐ मोहम्मद तुम्हें इन पर साक्षी के रूप में बुलायेंगे। (४१) जिन मनुष्यों ने मना किया और पैगम्बर की आज्ञा न मानी उस दिन इच्छा करेंगे कि कोई उनके किये पर मिट्टी फेर दे और ईश्वर से वे कोई बात भी नहीं छिपा सकेंगे। (४२) (रुकू ६)

ऐ धर्मवालों ! जब तुम नशे* में होगे तब नमाज न पढ़ा करो। जब तक न समझो कि क्या कहते हो और यदि नहाने की आवश्यकता हो तो भी नमाज के निकट न-जाना जब तक कि स्नान न कर लो हाँ मार्ग में चले जा रहे होगे या तुम बीमार होवो या राहगीर यात्रा पर होवो या तुममें से कोई शौचसे आवे या स्त्रियों से प्रसंग करके आया हो और तुमको पानी न मिल सके तो पवित्र मिट्टी ले कर मुंह और हाथ पर मल लो। अल्लाह क्षमा करने वाला है। (४३) क्या तुमने उन मनुष्यों पर दृष्टि नहीं की जिनको पुस्तक से भाग दिया गया था, वह अब मार्ग से भटके हुए हैं और चाहते हैं कि तुम भी मार्ग छोड़ दो। (४४) अल्लाह तुम्हारे शत्रुओं को खूब जानता है। अल्लाह पर्याप्त मित्र और सहायक हैं। (४५) यहूद में कुछ ऐसे भी हैं जो बातों का उनके वास्तविक अर्थ से बदलते हैं** और कहते हैं हमने न सुना और न माना और अन्य कोई भी न सुने जिह्वा मरोड़-मरोड़ कर धर्म में लाने के लिये राइना का उदाहरण देते हैं। यदि वह कहते

***यह हुक्म उस वक्त का है, जब शराब पीना मना न था। अब शराब मना है।**

**** जो कुछ तौरात में है उस को छिपाते हैं और शब्दों को उलट-पलट कर कुछ का कुछ अर्थ कर देते हैं। इसी को तहरीफ कहते हैं।**

हमनेसुना और माना और तू सुन और हम पर दृष्टि कर तो उनके लिए भला होता और यही उचित था परन्तु ईश्वर ने उनको न मानने के कारण उन पर लान्छना की है। उनमें से कम विश्वास लाते हैं। (४६) पुस्तकवालो ! जो हमने अवतरित किया है वह उस पुस्तक को जो तुम्हारे पास है प्रमाणित करता है। उस पर इससे पूर्व कि मुख बिगाड़ कर हम उलटे उनको पीछे की ओर लगा देवें* या जिस प्रकार हमने**शनीचर वालों को ताड़ना दी थी उसी प्रकार उनको भी ताड़ना दें, विश्वास करलो और जो ईश्वर को स्वीकार है वह तो होकर ही रहेगा। (४७) ईश्वर के समान अन्य को मानने वाले को ईश्वर क्षमा नहीं करता इसके नीचे जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने ईश्वर के अतिरिक्त किसी और को पूजा उसने बड़ा पाप बाँधा है। (४८) क्या तुमने उन मनुष्यों पर दृष्टि नहीं की जो स्वयँ बड़े पवित्र बनते हैं। वास्तव में अल्लाह जिसको चाहता है पवित्र बनाता है और अत्याचार तो किसी पर रत्ती के बराबर भी न होगा। (४६) देखो यह मनुष्य अल्लाह पर कैसे झूठ बाँध रहे हैं और यही स्पष्ट अपराध पर्याप्त है। (५०) (रुकू ७)

क्या तुमने इन मनुष्यों पर दृष्टि नहीं की जिनको पुस्तक से भाग दिया गया, वह राक्षस को मानते हैं और काफिरों के विषय में कहते हैं कि मुसलमानों से तो ये ही अधिक सीधे मार्ग पर हैं। (५१) ऐ

---

*यानि इसके पहले कि खुदा का कोप आये और तुम्हारे रूप बदल जाये जैसे शनिवार के दिन मछली पकड़नेबालों की शक्लें बदल गई थीं।

**यहुदियों को शनीवार के दिन मछली का शिकार खेलने की आज्ञा न थी। उन्होंने शुक्रवार के दिन नदी के किनारे गढ़े खोदे ताकि शनिवार को उसमें मछलियां आजायें और शनिवार को उनको पकड़ कर कहें कि यह शिकार तो शुक्रवार का है।

पैगम्बर यही मनुष्य हैं जिनको अल्लाह ने फटकार दिया है और जिनको अल्लाह फटकारे उसका कोई सहायक नहीं होगा। (५२) यदि इनके पास राज्य का कोई भाग हो तो ये मनुष्यों को तिल बराबर भी न देंगे। (५३) ईश्वर ने जो मनुष्यों को अपनी कृपा से वस्तुएँ दी हैं उस पर जलते हैं अतः इब्राहीम के वंश को हमने पुस्तक कुरान और ज्ञान और बड़ा भारी राज्य दिया है। (५४) फिर मनुष्यों में से कुछ ने तो उस पर विश्वास किया और कुछ ने मुँह मोड़ा। विधर्मियों को ज्वलित नरक पर्याप्त है। (५५) जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों से मना किया हम उनको अग्नि में झोंकेंगे। जब उनकी खालें जल जावेंगी उनको दूसरी खाल बदल देंगे जिससे दण्ड भोगें। अल्लाह शक्तिशाली तथा औपचारिक है। (५६) जिन्होंने विश्वास किया और अच्छे काम किए हम उनको ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी। वे उनमें सदैव रहेंगे उनमें उनके लिए पत्नियाँ साफ सुथरी होंगी और हम उनको घनी छायों में ले जाकर रखेंगे। ((५७) अल्लाह तुमको आज्ञा देता है कि धरोहर वालों की धरोहर दे दिया करो और जब मनुष्यों के आपस के झगड़े चुकाओ तो न्याय के साथ निर्णय करो अल्लाह तुमको अच्छी शिक्षा देता है, अल्लाह सुनता तथा देखता है। (५८) ऐ धर्मवालों, अल्लाह के पैगम्बर की और जो तुममें से राज्य करने वाले हैं उनकी आज्ञा मानो फिर यदि किसी बात में तुम्हारा झगड़ा हो तो ईश्वर और पैगम्बर की ओर ले जाओ, यदि तुम अल्लाह पर और प्रलय पर विश्वास रखते हो तो यह भला है और परिणाम भी अच्छा है। (५९) (रुकू ८)।

क्या तुमने उनकी ओर नहीं देखा जो दावा करते हैं कि वह जो तुम पर अवतरित हुआ और जो तुमसे पहले अवतरित हुआ इसे मानते हैं और फिर भी चाहते हैं कि झगड़ा राक्षस* के पास ले जावें यद्यपि

*मुनाफिक जानते थे कि मुहम्मद साहब न्याय के समय किसी का पक्ष नहीं ले सकते, इसलिए अपने झगड़े को यहूदी विद्वानों के पास ले जाते थे जो घूस खाते थे।

उनको आज्ञा दी जा चुकी है कि उसकी बात न मानें और राक्षस चाहता है कि उनको भटका कर बड़ी दूर ले जावे। (६०) और जब उनसे कहा जाता है कि जो अल्लाह ने अवतरित किया है उसकी ओर और पैगम्बर की ओर आओ तो तुम इन मना करने वालों को देखते ही हो कि वह तेरी ओर आने से रुकते हैं। (६१) यह कैसी लज्जा की बात है कि जब इन्हीं कर्मों के कारण इन पर कोई विपत्ति पड़ती है तो तुम्हारे पास अल्लाह की सौगन्ध खाते हुए आते हैं कि हमारा स्वार्थ तो भलाई और मेल मिलाप*का था। (६२) यह ऐसे हैं कि जो इनके हृदय में है ईश्वर प्रतीत है अतः इनके पीछे न पड़ो और इनको समझा दो और इनके हृदय पर प्रभाव डालनेवाली बातें कहो। (६३) और जो पैग़म्बर हमने भेजा उसके भेजने से हमारा अभिप्राय यही रहा है कि अल्लाह की आज्ञा से उसका कहा माना जावे और जब इन मनुष्यों ने अपने ऊपर स्वयं अत्याचार किया था। इस समय तेरे पास आते और ईश्वर से क्षमा माँगते और पैगम्बर उनको क्षमा करवाना चाहते तो अल्लाह को बड़ा ही क्षमा देने वाला और कृपालु पाते। (६४) तुम्हारे पालनकर्ता की सौगन्ध जब तक यह मनुष्य अपने आपसी झगड़ों में तुमको न्यायाधीश न मानें और फिर तेरे न्याय से उदास न होकर मान ले तब तक विश्वास वाले न होंगे। (६५) यदि हम इनको आज्ञा

---

*एक मुनाफिक और यहूदी में झगड़ा हुआ। दोनों मुहम्मद साहब के पास आये। मुहम्मद साहब ने यहूदी के पक्ष में अपना निर्णय दिया मुनाफिक हजरत उमर के पास इस विचार से गया कि वह मुझको मुसलमान समझकर मेरी जैसी कहेंगे। उमर इस समय मदीने में जज थे। जब यहूदी ने उनको बताया कि मुहम्मद साहब उसके पक्ष में फैसला कर चुके हैं तो उमर ने मुनाफिक को कत्ल कर डाला। उसके वारिस मुहम्मद साहब के पास आये कि हम समझौते लिए उमर के पास गये थे। आपके फैसले की अपील के लिए नहीं, उसी सम्बन्ध में यह आयत उतरी।

देते कि आप अपना बध करो या घरबार छोड़ जाओ तो इनमें से थोड़े मनुष्यों के अतिरिक्त इसको न मानते। जो कुछ इनको समझाया जाता है यदि उसका पालन करते तो उनके पक्ष में भला होता और इस कारण धर्म में दृढ़ता से जमे रहते। (६६) इस सूरत में हम इनको अवश्य अपनी ओर से बड़ा प्रतिकार देते। (६७) और इनको सीधे मार्ग पर अवश्य लगा देते। (६८) जो अल्लाह और रसूल का कहना माने ऐसे ही मनुष्य उनके साथी होंगे, जिन पर अल्लाह ने कृपाएँ कीं अर्थात नबी सच्चे लोग, शहीद और भले सेवक और यह मनुष्य अच्छे साथी हैं। (६९) यह अल्लाह की कृपा है और अल्लाह का ही जानना पर्याप्त है। (७०) (रुकू ९)

ऐ धर्मवालों ! अपनी सावधानी रखो और पृथक-पृथक गुट बाँधकर निकलो या इकट्ठे निकलो। (७१) तुम में कोई ना कोई ऐसा है जो कि अवश्य पीछे हट रहेगा, फिर यदि तुम पर कष्ट आन पड़े तो कहेगा कि ईश्वर ने मुझ पर बड़ी कृपा की जो मैं इनके साथ उपस्थित न था। (७२) और यदि ईश्वर से तुम्हें कृपा मिली तो इस प्रकार कहने लगेगा मानो ईश्वर में और तुममें मित्रता न थी, "क्या अच्छा होता जो मैं भी इनके साथ होता तो बड़ी अभिलाषा पूरी करता।" (७३) सो जो मनुष्य स्वर्ग के बदले संसार का जीवन बेचते हैं उनको चाहिए कि ईश्वर के मार्ग में लड़ें और फिर मारे जायँ या जीत जायँ तो हम उनको बड़ा अच्छा परिणाम देंगे। (७४) तुमको क्या हो गया है कि अल्लाह के मार्ग में और उन बेबस मनुष्यों, स्त्रियों और बालकों के लिए शत्रुओं से नहीं लड़ते जो प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे पालनकर्ता ने इस नगरी से हमें निकाला जहाँ के रहने वाले हम पर अत्याचार कर रहे हैं और अपनी ओर से किसी को हमारा साथी बना और अपनी ओर से किसी को हमारा सहायक बना। (७५) जो विश्वास रखते हैं वह तो अल्लाह के मार्ग में लड़ते हैं और जो काफिर हैं वह राक्षस के पक्ष में लड़ते हैं सो तुम राक्षस के पक्षपातियों से लड़ो राक्षस की चालें निर्बल हैं। (७६) (रुकू १०)।

क्या तुमने उन मनुष्यों को नहीं देखा कि जिनको आज्ञा दी गई कि अपने हाथों को रोके रहो और नमाज पढ़ते रहो दान दिया करो, फिर जब इन पर धर्मयुद्ध का कर्तव्य आ पड़ा तो एक गुट उन में से मनुष्यों से डरने लगा जैसे कोई ईश्वर से डरता है अपितु उससे भी बढ़कर और शिकायत करने लगा कि ऐ हमारे पालनकर्ता तूने हम पर धर्मयुद्ध का कर्तव्य क्यों लादा, हमको थोड़े दिनों का अवकाश और. क्यों न दिया तो कहो कि संसार के लाभ थोड़े हैं और जो व्यक्ति डर रखे उसके लिए स्वर्ग भला है और तुम पर तनिक भी अत्याचार न होगा। (७७) तुम कहीं भी हो मृत्यु तुमको आकर ले लेगी चाहे पक्के गुम्मदों (मुसलमानी मकान) में हो। और इनको कुछ लाभ पहुंच जाता है तो कहने लगते हैं कि ईश्वर की ओर से है और यदि इनको कुछ हानि पहुंच जाती है तो कहने लगते हैं कि यह तुम्हारी ओर से है। सो पैगम्बर ! तुम इनसे कह दो कि सब अल्लाह की ओर से है इन मनुष्यों की क्या दशा है कि बात नहीं समझते। (७८) तुमको कोई लाभ पहुँचे तो अल्लाह की ओर से है और तुमको कोई हानि पहुंचे तो तेरी आत्मा की ओर से है और हमने तुम्हारी ओर संदेश पहुँचाने वाला भेजा है और ईश्वर को साक्षी पर्याप्त है। (७९) जिसने पैगम्बर की आज्ञा मानी उसने अल्लाह ही की आज्ञा मानी और जो बदल बैठा तो हमने तुमको कुछ इन मनुष्यों का ध्यान रखने वाला नहीं भेजा। (८०) और यह मनुष्य कह देते हैं कि हम मानते हैं परन्तु जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो इनमें से कुछ मनुष्य रात्री के समय कहे के विरुद्ध मन्त्रणा करते हैं और जैसी-जैसी मन्त्रणा रातों को करते हैं अल्लाह लिखता जाता है तो इनकी कुछ चिन्ता न करो और अल्लाह पर भरोसा रखो और अल्लाह काम संभालने वाला पर्याप्त है। (८१) तो क्या यह मनुष्य कुरान में विश्वास नहीं करते और यदि ईश्वर के अतिरिक्त किसी और के पास से आया होता तो अवश्य उसमें बहुत से भेद पाते। (८२) और जब इनके पास शान्ति या भय का कोई समाचार आता है तो उसको सब पर प्रकट कर देते हैं और यदि उस

समाचार को पैगम्बर तक और अपने अधिकारियों तक पहुँचाते तो जो मनुष्य इनमें से भेद को खोद निकालने वाले हैं उनका पता कर लेते और यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त सब राक्षस के पीछे चल दिए होते (८३) तुम अल्लाह के मार्ग में लड़ो अपने अतिरिक्त तुम पर किसी और का दायित्व नहीं हाँ, धर्म वालों को उभारो अचरज नहीं की अल्लाह काफिरों की शक्ति को रोक दे और अल्लाह की शक्ति अधिक है और उसका दण्ड अधिक कठोर है। (८४) और जो कोई भली बात में सिफारिश करे उसमें से उसको भी भाग मिलेगा और जो बुरी सिफारिश करे उसमें वह भी सम्मिलित होगा और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्ति रखने वाला है। (८५) और तुमको कोई नमस्कार (सलाम) करे तो तुम उससे बढ़कर सलाम कर दिया करो या वैसा ही उत्तर तो अल्लाह प्रत्येक वस्तु का प्रतीकार देने वाला है। (८६) अल्लाह के अतिरिक्त कोई पूजा के योग्य नहीं इसमें सन्देह नहीं कि प्रलय के दिन वह तुमको अवश्य एकत्रित करेगा और अल्लाह से बढ़कर किसकी बात सत्य है। (८७) (रुकू ११)।

तुम्हारी यह क्या दशा है कि काफिरों के लिए तुम दो पक्ष हो रहे हो यद्यपि अल्लाह ने उनके कर्मों के कारण उनको पलट दिया है, क्या तुम यह चाहते हो कि जिसको ईश्वर ने भटका दिया उसको सीधे मार्ग में ले आओ। जिसको अल्लाह भटका दे सम्भव नहीं कि तुममें से कोई उसके लिए मार्ग निकाल सके। (८८) इनकी इच्छा यह है कि जिस प्रकार स्वयं काफिर हो गये हैं उसी प्रकार तुम भी मना करने लगो जिससे तुम एक ही प्रकार के हो जाओ। तो जब तक ईश्वर के मार्ग में देश त्याग न कर आवें इनमें से मित्र न बनाना । फिर यदि मुख मोड़ें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनका वध करो, उनमें से मित्र और सहायक न बनाना। (८९) परन्तु जो ऐसी जाति से जा मिले है कि तुममें और उनमें सन्धि की प्रतिज्ञा है या तुम्हारे साथ लड़ने से

या अपनी जाति के साथ लड़ने से दुःखी होकर तुम्हारे पास आवें तो उनसे मिलने में हानि नहीं, और यदि ईश्वर चाहता और इनको तुम पर विजय देता तो यह तुमसे लड़ते। बस यदि तुमसे किनारा खींचा जावे और तुमसे न लड़ें और तुम्हारे साथ मेल करें तो ऐसे मनुष्यों पर तुम्हारे लिए अल्लाह ने कोई मार्ग नहीं दिया कि उन्हें लूटो या मारो (९०) कुछ और मनुष्य तुम ऐसे भी पाओगे जो तुमसे शान्ति में रहना चाहते हैं परन्तु जब कोई उनको लड़ाई को ले जावे उस समय में उलट जाते हैं सो यदि तुमसे किनारा खींचे रहें और न सन्धि करें और न अपने हाथ रोकें तो उनको पकड़ो और जहाँ पाओ उनका बध करो और यही वे मनुष्य हैं जिन पर हमने तुमको पूर्ण अधिकार दे दिया है। (९१) (रुकू १२)।

किसी धर्मवाले को उचित नहीं कि धर्मवाले को मार डाले परन्तु जो किसी धर्मवाले को भूल से मार डाले तो एक धर्मवाले सेवकको छोड़ दे और वधित के संरक्षकों को खून का मूल्य दे परन्तु यह तब है जबकि उसके संरक्षक क्षमा कर दें। फिर यदि वधित उन मनुष्यों में का हो जो मुसलमानों के शत्रु हैं, और वह स्वयं मुसलमान हो तो एक मुसलमान सेवक स्वतन्त्र करना होगा खून का मूल्य न देना होगा और यदि उन मनुष्यों में का हो जिनसे तुम्हारी प्रतिज्ञा है तो वधित के संरक्षकों को खून का मूल्य पहुंचावे और एक मुसलमान सेवक स्वतन्त्र करे और जिस हत्यारे को मूल्य देने की शक्ति न हो तो निरन्तर दो महीने के बृत रक्खे। क्षमा का यह ढंग अल्लाह का ठहराया हुआ है और अल्लाह जानकार और काम सम्भालनेवाला है। (९२) जो मुसलमान को जान-बूझ कर मार डाले तो उसका दण्ड नरक है जिस में वह सदैव रहेगा और उस पर ईश्वर अप्रसन्न होगा और उस पर ईश्वर की फटकार पड़ेगी और अल्लाह ने उस के लिए बड़ा कठोर दण्ड तैयार कर रखा है। (९३) ऐ धर्मवालो! जब तुम धर्मयुद्ध में बाहर निकलो तो अच्छी प्रकार खोज कर लिया करो और जो व्यक्ति तुम से सलाम करे

उससे यह न कहो कि तू मुसलमान नहीं* क्या तुम साँसारिक जीवन के लिए सामान की खोज में हो ईश्वर के यहाँ बहुत सी वस्तुएँ हैं, पहले तुम भी तो ऐसे ही थे धन बचाने के लिये तुमने भी कलमा पढ़ लिया था। फिर अल्लाह ने तुम पर अपनी कृपा की। अतः अच्छी प्रकार जाँच कर लिया करो अल्लाह तुम्हारे कामों का ज्ञाता है। (९४) जिन मुसलमानों को नहीं और वह बैठे रहे यह मनुष्य उन मनुष्यों के समान नहीं जो अपने धन और जान से ईश्वर के मार्ग में धर्मयुद्ध कर रहे हैं। अल्लाह ने धन और जान से धर्मयुद्ध करने वालों को बैठे रहने वालों पर बड़ी बड़ाई दी और ईश्वर ने सब को खूबी का बचन दिया और अल्लाह ने बड़े सवाब के कारण धर्मयुद्ध करने वालों को बैठे रहने वालों पर बड़ी प्रधानता दी है। (९५) ईश्वर के पास पद हैं और उसकी क्षमा और कृपा है और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है (९६) (रुकू १३)

जो मनुष्य अपने ऊपर स्वयं अत्याचार कर रहे हैं उनसे देवदूत उनकी जान निकालने के पश्चात पूछते हैं कि तुम क्या करते रहे तो वह उत्तर देते हैं कि हम तो वहाँ बेबस थे इस पर देवदूत उनसे कहते हैं कि क्या अल्लाह की पृथ्वी पर इतना स्थान नहीं था कि तुम कहीं देश त्याग करके चले जाते। अर्थ यह है कि वह वोही मनुष्य हैं जिनका ठिकाना नरक है और वह बुरा स्थान है। (९७) परन्तु जो पुरुष, स्त्रियाँ और बालक इतने बेबस हैं उनसे कोई बहाना करते नहीं बन पड़ता और न उनको कोई मार्ग सूझ पड़ता है। (९८) तो आशा है कि अल्लाह ऐसे मनुष्यों को क्षमा दे दे और अल्लाह क्षमा करनेवाला

* मुहम्मद साहब ने एक सेना एक देश की ओर भेजी थी। इस देश में एक मुसलमान भी था। वह अपना धन लेकर देशवालों से अलग खड़ा होगया। मुसलमान समझे इसने जान बचाने के लिए यह चाल चली है इसलिए उसको मार डाला और उसका माल लूट लिया। इस पर यह आयत उतरी।

है। (९९) और जो व्यक्ति ईश्वर के मार्ग में अपना देश त्याग करेगा उसे पृथ्वी में अधिक स्थान और संपन्नता मिलेगी और जो व्यक्ति अपने घर से अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर यात्रा करने निकले और उसकी मृत्यु हो जाये तो अल्लाह के प्रति उसका कर्तव्य सिद्ध हो चुका और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१००) (रुकू १४)

जब तुम कहीं जाओ और तुमको भय हो कि काफिर तुमसे छेड़-छाड़ करने लगेंगे तो तुम्हारा कुछ अपराध नहीं यदि नमाज में से भी कुछ घटा दिया करो। निस्संदेह काफिर तो तुम्हारे प्रकट शत्रु हैं। (१०१) जब तुम मुसलमानों साथी हो के और उनको नमाज पढ़ाने लगो तो मुसलमानों की एक मंडली तुम्हारे साथ खड़ी हो और अपने शस्त्र लिये रहें फिर जब प्रार्थना कर चुके तो पीछे हट जाय और दूसरी जमात जो नमाज में सम्मिलित नहीं हुई आकर तुम्हारे साथ नमाज में सम्मिलित हो और सावधान अपने शस्त्र लिए रहें। काफिरों की यह इच्छा है कि तुम अपने-अपने शस्त्रों और साज और सामान से अचेत हो जाओ तो एक दम तुम पर टूट पड़े और यदि तुम को वर्षा के कारण से कुछ कष्ट पहुंचे या तुम रुग्ण हो तो अपने शस्त्र उतार रखने में तुम पर कोई अपराध नहीं। अपना बचाव रक्खो अल्लाह ने काफिरों के लिए नरक का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (१०२) फिर जब तुम नमाज पूरी कर चुको तो खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह के स्मरण में लगे रहो फिर जब तुम संतुष्ट हो जाओ तो नमाज पढ़ो क्योंकि मुसलमानों के लिये नियत समय में नमाज पढ़ना कर्तव्य है। (१०३) मनुष्यों का पीछा करने में साहस न हारो यदि तुमको कष्ट पहुंचता है उनको भी कष्ट पहुंचता है और तुमको ईश्वर से वह आशाएँ हैं जो उनको नहीं और अल्लाह जाननेवाला और काम सम्भालने वाला है। (१०४) (रुकू १५)

हमने सत्य पुस्तक तुम पर अवतरित की है कि जैसा तुमको ईश्वर ने बतला दिया है उसके अनुसार मनुष्यों के आपसी झगड़े चुका दिया

करो और धोखादेने वालों के पक्षपाती मत बनो। (१०५) और अल्लाह से क्षमा चाहो क्योंकि वह क्षमा करनेवाला कृपालु है (१०६) और जो मनुष्य अपने जी में कपट रखते हैं उनकी ओर से मत झगड़ा करो क्योंकि कपटी अपराधी हैं और वे ईश्वर को पसन्द नहीं है। (१०७) मनुष्यों से बातें छिपाते हैं पर ईश्वर से नहीं छिपा सकते। यद्यपि जब रात्री को उन बातों की सलाहें करते हैं जिससे ईश्वर प्रसन्न नहीं तो ईश्वर उनके साथ होता है और जो कुछ करते हैं ईश्वर के बश में है। (१०८) सुनो तुमने साँसारिक जीवन में उनकी ओर होकर झगड़ा कर लिया तो प्रलय के दिन उनकी ओर से अल्लाह के साथ कौन झगड़ा करेगा और कौन उनका वकील होगा। (१०६) और जो कोई बुरा काम करे या आप अपनी जान पर अत्याचार करे फिर अल्लाह से क्षमा माँगे तो अल्लाह को क्षमा करने वाला कृपालु पावेगा (११०) जो व्यक्ति कोई बुराई करता है तो वह अपने ही पक्ष में बुराई करता है और अल्लाह जानकार है। (१११) और जो व्यक्ति किसी अशुद्धि व अपराध का करने वाला हो फिर वह अपने अपराध को किसी निरअपराध पर थोप दे तो उसने अपने ऊपर स्पष्ट अपराध डाला है। (११२) (रुकू १६)

यदि तुम पर अल्लाह की कृपा और उसकी दया न होती तो उनमें से एक गुट तुमको बहका देने का विचार कर ही चुका था और यह मनुष्य बस अपने ही लिए पथभ्रष्ट कर रहे हैं और तेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकते क्योंकि अल्लाह ने तुम पर पुस्तक कुरान अवतरित है और तुमको ऐसी बातें सिखा दी हैं जिनका तुमको पता न था और तुम पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (११३) इन मनुष्यों की प्रायः कानाफूसियों में* खैर नहीं परन्तु जो दान में या अच्छे काम में या

* मुनाफिक लोग मोहम्मद साहब से कान में बात करते थे ताकि दूसरे लोग यह समझें कि ये नबी के बड़े मित्र हैं। ये लोग अधिकतर दूसरे मुसलमानों की बुराई करते थे। इस पर यह आयत उतरी कि इन लोगों की सलाह अच्छी नहीं होती बल्कि धोख से भरी होती है।

मनुष्यों में मेल-मिलाप की सलाह दे और जो ईश्वर की खुशी प्राप्त करने के लिए ऐसे काम करेगा तो हम उसको बड़ा बदला देंगे। (११४) और जो व्यक्ति सीधे मार्ग के स्पष्ट हुए पीछे पैगम्बर से दूर रहे और धर्मवालों के मार्ग के अतिरिक्त किसी और मार्ग पर चले तो जो मार्ग उसने पकड़ा है हम उसको उसी मार्ग पर चलाए जायेंगे और उनको नरक में प्राप्ति करेंगे और वह बुरा स्थान है। (११५) (रुकू १७)

यह अपराध तो अल्लाह क्षमा नहीं करता कि उसके साथ कोई समकक्ष ठहराया जाये और इससे कम जिसको चाहे क्षमा करे और जिसने अल्लाह का समकक्ष ठहराया वह दूर भटक गया। (११६) ईश्वर के अतिरिक्त तो बस देवियों* ही को पुकारते हैं। और उसके अतिरिक्त अंहकारी राक्षस को पुकारते हैं। जिसको ईश्वर ने फटकार दिया। (११७) और वह कहने लगा कि मैं तेरे भक्ती से एक नियत भाग अवश्य लिया करूंगा। (११८) और उनको अवश्य ही बहकाऊंगा और उनको आशायें अवश्य दिलाऊंगा और उनको सिखाऊंगा कि पशुओं के कान अवश्य चीरा करें और उनको समझाऊंगा कि ईश्वर की बनाई हुई सूरतों को बदला करें और जो व्यक्ति ईश्वर के अतिरिक्त राक्षस को मित्र बनाये तो वह स्पष्ट है कि हानि में आ गया। (११९) उनको वचन देता और और उनको आशायें बंधवाता है और राक्षस उनसे जो प्रतिज्ञा करता है निरा धोखा है। (१२०) ऐसों का स्थान नरक है और वहाँ से कहीं भागने न पायेंगे। (१२१) और जिन मनुष्यों ने विश्वास किया और उन्होंने भले कार्य किये हम उनको ऐसे उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रहीं होंगी उनमें वे

---

* मूर्तियां स्त्रियों के रूप की होती हैं। अरब के मूर्ति पूजनेवाले उनको अपने-अपने कबीले की देवी कहते थे। और कुछ लोग कहते हैं औरतों का अर्थ यहां फरिश्तों से है जिनको काफिर खुदा की बेटियाँ समझते थे।

सदैव रहेंगे यह अल्लाह की दृढ़ प्रतिज्ञा है और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन है। (१२२) न तुम्हारी विनती पर है और न पुस्तक वालों की विनती पर जो व्यक्ति बुरा काम करेगा उसका दण्ड भोगेगा और ईश्वर के अतिरिक्त उसको कोई साथी और सहायक न मिलेगा। (१२३) जो व्यक्ति कोई भला कर्म करे पुरुष हो या स्त्री और विश्वास भी रखता हो तो ऐसे मनुष्य स्वर्ग में प्रविष्ट होंगे और जरा भी उनका भाग न मारा जायगा। (१२४) और उस व्यक्ति से जिसका धर्म बढ़कर है जिसने अल्लाह के आगे अपना सिर झुका दिया और वह भलाई करनेवाला भी है और इब्राहीम के धर्म पर चलता है। जो एक ही के हो रहे थे और इब्राहीम को अल्लाह ने अपना मित्र ठहराया है। (१२५) और जो कुछ नभ में है अल्लाह ही का है जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और सब वस्तुएँ अल्लाह ही के वश में हैं। (१२६) (रुकू १८)

तुमसे अनाथ स्त्रियों के साथ विवाह करने की आज्ञा माँगते हैं तो समझा दो अल्लाह तुमको उनके बारे में आज्ञा देता है* और कुरान में जो तुमको सुनाया जा चुका है सो उन अनाथ स्त्रियों के सम्बन्ध में है जिनको तुम उनका भाग जो उनके लिए ठहरा दिया गया है नहीं देते और उनके साथ विवाह करने की इच्छा करते हो और भी बेबस बच्चों के बारे में भी वही आज्ञा देता है और अनाथों के पक्ष में न्याय का विचार रक्खो और जो कुछ भलाई करोगे अल्लाह उसको जानता है। (१२७) यदि किसी स्त्री को अपने पति की ओर से अत्याचार या हृदय फिर जाने का संदेह हो तो दोनों पर कुछ अपराध नहीं कि आपस में मेल कर लें और मेल अच्छा है और कंजूसी तो सभी के हृदय में होती है और यदि भलाई करो और बचे रहो तो ईश्वर तुम्हारे

*** अनाथ स्त्रियों के साथ व्याह किया जा सकता है पर उनका हक उनको अवश्य देना चाहिये यानी खाना, कपड़ा।**

कामों से सावधान है। (१२८) और तुम बहुतेरा चाहो परन्तु यह तो तुम से हो नहीं सकेगा कि पत्नियों में एकसा व्यवहार कर सको तो पूर्णतः एक ही ओर मत झुक पड़ो कि दूसरी को छोड़ बैठो और यदि मेल कर लो और बचे रहो तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है (१२९) यदि दोनों अलग हो जायें तो अल्लाह अपने कोष में से दोनों को पूरा कर देगा और अल्लाह औपचारिक तथा सहनशील है। (१३०) और जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और जिन मनुष्यों को तुमसे पहले पुस्तक मिली थी उनसे और तुमसे हमने कह रक्खा है कि अल्लाह से डरते रहो और यदि सही मानोगे तो जो कुछ नभ में और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और अल्लाह निश्चित है और सर्वगुण सम्पन्न है। (१३१) अल्लाह ही का है जो कुछ नभ और पृथ्वी में हैं अल्लाह ही काम सँभालनेवाला पर्याप्त है। (१३२) यदि वह चाहे तुमको मिटा दे और दूसरों को ला बसाये और अल्लाह ऐसा करने पर शक्तिशाली है।(१३३) जिसको बदले की संसार में आवश्यकता हो तो अल्लाह के पास संसार और प्रलय के फल हैं और अल्लाह सुनता देखता है। (१३४) (रुकू १९)

ऐ धर्मवालो! दृढ़ता के साथ न्याय पर स्थित रहो और यद्यपि तुम्हारे या तुम्हारे माता-पिता और सम्बन्धियों के विरुद्ध ही हो ईश्वर मान्य साक्षी दो यदि कोई धनवान या अवलम्बित है तो अल्लाह बढ़कर उनकी रक्षा करने वाला है। तो तुम इच्छाओं के आधीन न हो जाओ कि न्याय से मुंह फेरने लगो* और यदि दबी वाणी से साक्षी दोगे या छुप जाओगे तो जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसका पता रखता है। (१३५) ऐ धर्मवालो! अल्लाह पर व पैगम्बर पर और उस पुस्तक पर जो उसने अपने रसूल पर अवतरित की है और उन पुस्तकों

*** यानी धनवानों के डर से और निर्धनों की दुर्दशा पर तरस खाकर अथवा रिश्तेदारों के प्रेम में फंसकर सच बात को न छिपाओ।**

पर जो पहिले अवतरित की है विश्वास करो और जो कोई अल्लाह को और उसके देवदूतों को और उसकी पुस्तक और पैगम्बरों को और अन्तिम दिन को मना करेगा वह दूर भटक गया। (१३६) जो मनुष्य विश्वास लाये फिर काफिर हुए फिर विश्वास लाये फिर काफिर हुए फिर अविश्वास में बढ़ते गये तो ईश्वर न तो उसको क्षमा करेगा और न उनको मार्ग ही दिखायेगा। (१३७) मुनाफिकों को शुभ संवाद सुना दो कि उनको कष्टप्रद दण्ड भोगना है। (१३८) वे जो मुसलमानों को छोड़कर काफिरों को मित्र बनाते हैं क्या काफिरों के यहाँ मान चाहते हैं सो मान तो सारा अल्लाह ही का है। (१३९) तुम पर अल्लाह पुस्तक में यह अवतरित कर चुका है कि जब तुम सुन लो कि अल्लाह की आयतों से मना किया जारहा है और उनकी हंसी उड़ाई जाती है तो ऐसे मनुष्यों के साथ मत बैठो यहाँ तक कि किसी दूसरे की बात में लग जावें अन्यथा इस दशा में तुमभी उन्हीं जैसे हो जाओगे। अल्लाह मुनाफिकों* और काफिरों सबको नरक में एकत्रित करेगा (१४०) वह अविश्वासी तुम्हें तकते हैं तो यदि अल्लाह से तुम्हारी विजय हो गयी तो कहने लगते हैं क्या हम तुम्हारे साथ न थे और यदि काफिरों को विजय प्राप्त हुई तो उनसे कहने लगते हैं कि क्या हम तुम पर नहीं विजित हो गये थे और तुमको मुसलमानों से नहीं बचाया था। अल्लाह तुममें प्रलय के दिन निर्णय कर देगा और ईश्वर काफिरों को मुसलमानों पर कभी भी विजय न देगा। (१४१) रुकू २०)

काफिर ईश्वर को धोखा देते हैं यद्यपि ईश्वर उन्हीं को धोखा दे रहा है और जब नमाज के लिए खड़े होते हैं तो आलस्य पूर्ण खड़े होते हैं। मनुष्यों को दिखाते हैं और अल्लाह को स्मरण नहीं करते परन्तु कुछ यों ही अविश्वास और विश्वास के मध्य पड़े भूल रहे हैं। (१४२) न इन की ओर, न उन की ओर, जिसको अल्लाह भटकाये

* जाहिरा कुछ और भीतरी कुछ रखने वाले।

तो उसके लिए कोई मार्ग न पावेगा। (१४३) धर्मवालो ! धर्मवालों को छोड़कर काफिरों को मित्र मत बनाओ क्या तुम ईश्वर का प्रकट अपराध अपने ऊपर लेना चाहते हो। (१४४) कुछ संदेह नहीं कि काफिर नरक के सब से नीचे स्थान में होंगे और तुम किसी को भी इनका साथी न पाओगे। (१४५) परन्तु जिन मनुष्यों ने क्षमा माँगी और अपनी दशा सुधार ली और अल्लाह का सहारा पकड़ा और अपने धर्म को ईश्वर के लिये निश्चित कर लिया तो यह मनुष्य मुसलमानों के साथ होंगे और अल्लाह मुसलमानों को बड़े फल देगा। (१४६) यदि तुम आभार प्रकट करो और विश्वास रक्खो तो ईश्वर को तुम्हें दण्ड देने से क्या लाभ होगा और ईश्वर मान देने वाला तथा जानने वाला है। (१४७)

छठवाँ पारा (लायुहिब्बुल्लाह) सूरे निसा

अल्लाह को पसन्द नहीं कि कोई मुंह फोड़कर बुरा कहे परन्तु जिस पर अत्याचार हुआ हो और वह मुंह फोड़कर अत्याचारी को बुरा कह बैठे तो विवश है और अल्लाह सुनता जानता है। (१४८) भलाई खुल्लम-खुल्ला करो या छिपा कर करो या बुराई क्षमा करो तो अल्लाह शक्तिशाली क्षमा करने वाला है। (१४९) जो मनुष्य अल्लाह और उसके पैग़म्बरों से फिरे हुए हैं और अल्लाह व उसके पैगम्बरों में भिन्नता डालना चाहते हैं और कहते हैं कि हम किसी को मानते हैं किसी को नहीं। और चाहते हैं कि अविश्वास ऐसे और विश्वास के मध्य में कोई मार्ग निकालें। (१५०) तो वे मनुष्य निस्संदेह काफिर हैं और काफिरों के लिए हमने नरक का दण्ड तैय्यार कर रक्खा है। (१५१) और

जो मनुष्य अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर विश्वास लाये और उनमें से किसी एक को दूसरे से प्रथक नहीं समझा तो ऐसे ही मनुष्य हैं जिनको अल्लाह उनके फल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला है, कृपालु है। (१५२) (रुकू २१)

पुस्तक वाले तुमसे माँगते हैं कि तुम उन पर कोई पुस्तक नभ से अवतरित करो तो इनके पूर्वज मूसा से इससे भी बड़ी वस्तु मांग चुके हैं अर्थात उन्होंने मांगा कि अल्लाह को समझ कर दिखाओ। फिर उनको उनकी उद्दण्डता के कारण से विद्युत ने आ दबोचा उसके पश्चात भी यद्यपि उनके पास निशानियां आ चुकी थीं तो भी बछड़े को ले बैठे फिर हमने वह भी क्षमा किया। और मूसा को हमने स्पष्ट शक्ति दी। (१५३) और उनसे सच्ची प्रतिज्ञा लेने के लिए हमने तूर पर्वत को उन पर ला लटकाया और हमने उनको आज्ञा दी कि द्वार में सिर झुकाते हुए प्रविष्ट होना और हमने उनको कहा था कि सप्ताह के दिन अनाचार न करना और हमने दृढ बचन कर लिया (१५४) बस उनके बचन तोड़ने और अल्लाह की आयतों को न मानने और पैगम्बरों को अकारथ बध करने के कारण और उनके इस कहने के कारण से कि हमारे हृदय पर पर्दा है। पर्दा नहीं अपितु उनकी मनाई के कारण से ईश्वर ने उन पर मुहर कर दी है बस कुछ गिने हुए के अतिरिक्त विश्वास नहीं लाते। (१५५) और उनकी मनई के कारण से और मरियम के संबंध में बड़े बुरे शब्द बकने के कारण से (१५६) और उनके इस कहने के कारण से कि हमने मरियम के बेटे ईसा मसीह को जो रसूल थे बध कर डाला और न तो उन्होंने उन को बध किया और न उनको सूली पर चढ़ाया परन्तु उनको ऐसा ही प्रतीत हुआ और वे इस विषय में मतभेद डालते हैं और संदेह में पड़े हैं। इनको इनकी सूचना तो है नहीं परन्तु केवल अनुमान के पीछे दौड़े चले जा रहे हैं और निश्चय ही ईसा का मनुष्यों ने बध नहीं किया। (१५७) अपितु उनको अल्लाह ने अपनी ओर उठा लिया और अल्लाह अपार औप-

चारिक है। (१५८) जितने पुस्तक वाले हैं अवश्य उनकी मृत्यु से पहले सब के सब उन पर विश्वास लावेंगे और प्रलय के दिन ईसा उनका साक्षी होगा। (१५९) अन्त को यहूदियो की उद्दण्डता के कारण से हमने पवित्र वस्तुऐं जो उनके लिए पथ्य थी उन पर कुपथ्य कर दी हैं और इस कारण से कि वे प्रायः ईश्वर के मार्ग से रोकते थे। (१६०) और इस कारण से कि बारम्बार उनको व्याज लेने की मनाई कर देने पर भी व्याज लेते थे और इस कारण से कि मनुष्यों के धन को अकारण नष्ट करते थे और इनमें जो मनुष्य नही मानते उनके लिए हमने कष्ट-प्रद दण्ड आयोजित कर रक्खा है। (१६१) परन्तु उन पुस्तक वालों में से जो विद्या में निपुण हैं और विश्वास वाले हैं और जो पुस्तकें तुम पर अवतरित हैं और जो तुमसे पहिले अवतरित हुई है मानते हैं और नमाज पढ़ते और दान देते और अल्लाह और प्रलय पर विश्वास रखते हैं। हम उन्हीं को बड़ा फल देंगे। (१६२) (रुकू २२)

हमने तुम्हारी ओर ऐसा सन्देशा भेजा है जैसा हमने नूर और दूसरे पैगम्बरों की ओर और जो उनके पश्चात हुए भेजा था और हमने इब्राहीम और इस्माईल, इस्हाक और याकूब और याकूब की संतान, ईसा, आयूब, यूनिस, हारू और सुलेमान की ओर ईश्वर संदेश भेजा था और हमने दाऊद को जबूर पुस्तक दी थी। (१६३) और कितने पैगम्बर हैं जिनकी दशा हम पहिले तुम से वर्णन कर चुके हैं और कितने पैगम्बर हैं जिन की दशा हमने तुम से वर्णन नहीं की और अल्लाह ने मूसा से बातें की थीं। (१६४) और कितने पैगम्बर शुभसंवाद देनेवाले और डराने वाले आ चुके हैं जिससे पैगम्बरों के पीछे ईश्वर पर लाञ्छन देने का अवसर न रहे ईश्वर विजयी और चमत्कार पूर्ण है। (१६५) परन्तु जो कुछ ईश्वर ने तुम्हारी ओर अवतरित किया है अल्लाह साक्षी देता है कि उसे समझ कर अवतरित किया है और देवदूत साक्षी देते हैं और अल्लाह की साक्षी पर्याप्त है (१६६) जो मनुष्य मना करने वाले हुए और ईश्वर के मार्ग से रुके

वह बड़ी दूर भटक गये हैं। (१६७) जो मनुष्य काफिर हुए और अत्याचार करते रहे उनको ईश्वर न तो क्षमा करेगा और न उनको मार्ग ही दिखलायेगा। (१६८) अपितु नरक का मार्ग बतायेगा जिसमें वे सदैव रहेंगे और अल्लाह के निकट यह सरल है। (१६९) ऐ मनुष्यो! पैगम्बर तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से ठीक बात लेकर आये हैं। अतः विश्वास करो तुम्हारा भला होगा और यदि न मानोगे तो जो कुछ नभ और पृथ्वी में है अल्लाह ही का है और अल्लाह चमत्कार पूर्ण तथा जानकार है। (१७०) पुस्तकवालो अपने धर्म में सीमा से बढ़ न जाओ और ईश्वर के विषय में सत्य बात निकालो। मरियम के पुत्र ईसामसीह बस अल्लाह के पैगम्बर हैं और ईश्वर की आज्ञा जो उसने मरियम की ओर कहला भेजी थी और आत्मा स्वयं अल्लाह की ओर से आई बस अल्लाह और उसके पैगम्बरों पर विश्वास करो और तीन ईश्वर * न कहो। मान जाओ तुम्हारा भला होगा अल्लाह एक है इस योग्य नहीं कि उसके कोई संतान** हो उसी का है जो कुछ नभ में और पृथ्वी में है और अल्लाह काम का सम्भालने वाला पर्याप्त है। (१७१) (रुकू २३)

मसीह को ईश्वर का भक्त होने में कदापि लज्जा नहीं और न देवदूतों को जो निकट हैं और जो ईश्वर का भक्त होने से लज्जा करे अहँकार करें तो ईश्वर शीघ्र इन सबको खींच बुलायेगा। (१७२) फिर जो मनुष्य विश्वास करे और भले काम की ईश्वर को पूरा प्रतिकार देगा और अपनी दया से अधिक भी देगा और जो लज्जा रखते और अहंकार करते हैं ईश्वर उनको कठोर दण्ड देगा। (१७३) और ईश्वर के अतिरिक्त उनको न कोई साथी मिलेगा और न सहायक

*** ईसाई ईश्वर, ईसा और मरियम तीनों को खुदा बताते थे।**

**** खुदा को आदमी जैसा न समझो। उनके लिए बेटी-बेटा रखना शोभा नहीं देता। इसलिए हजरत ईसा ईश्वर-पुत्र नहीं, पैगम्बर थे।**

(१७४) ऐ मनुष्यों! तुम्हारे पास तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से हुज्जत* आ चुकी और हमने तुम पर जगमगाता हुआ प्रकाश कुरान अवतरित करा दिया। (१७५) सो जो मनुष्य अल्लाह पर विश्वास करे और उसी का सहारा पकड़ो तो अल्लाह उनको शीघ्र अपनी कृपा और दया में ले लेगा, और उनको अपनी ओर का सीधा मार्ग दिखला देगा। (१७६) तुम से आज्ञा माँगते हैं तो कह दो कि अल्लाह कलाला (जिसके संतान व बाप-दादा न हों उसे कलाला कहते हैं) के विषय में तुमको आज्ञा देता है कि यदि कोई ऐसा पुरुष मर जावे जिसके संतान न हो और उसके बहन हो तो बहन को उसके धनका आधा और यदि बहनों के संतान न हो तो उसका संरक्षक वही भाई फिर, यदि बहनें दो हों तो उनको इसके धन में से दो तिहाई और यदि भाई-बहन मिले जुले हों तो दो स्त्रियों के भाग के समान पुरुषों का भाग होगा। तुम्हारे भटकने के विचार से अल्लाह तुमसे खोल-खोल कर वर्णन करता है और अल्लाह सब कुछ जानता हैं। (१७७) (रुकू २४)

सूरे मायदा

यह मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२० आयतें १६ रुकू हैं।

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ऐ धर्मवालो वचन पूरा करो। (१) मुसलमानों अल्लाह के नाम की वस्तुऐं लेना पुण्य न समझो और न** माननीय महीना और चढ़ाये

*** स्पष्ट निशानी ऐसी निशानी है जिससे सत्य और असत्य में भेद किया जा सके।**

****अदब वाले महीनों में लड़ाई न करो।**

के पशु जो मक्के को जायँ और न उनकी जिनके गलों में पट्टे* बाँध दिये गये हों न उनको जो मान वाले घर को अपने पालनकर्ता की दया और प्रसन्नता ढूँढ़ने जाते हों और जब अहराम**से निकलो तो आखेट करो। कुछ मनुष्यों ने तुमको पूजनीय मसजिद से रोका था। यह शत्रुता तुमको अनाचार करने का कारण न हो और भलाई तथा संयम में एक दूसरे के सहायक होवो और अपराध और अनाचार में एक दूसरे के सहायक न बनो और अल्लाह से डरो क्योंकि अल्लाह का दण्ड कठोर है। (२) मरा हुआ, लोहू और सूअर का माँस और जो ईश्वर अतिरिक्त किसी और के नाम पर चढ़ाया गया हो और जो गला घुटने से मर गया और जो चोट से मरा हो और जो ऊपर से गिर कर मरा हो और सींगों से मारा हुआ हो यह सब वस्तुऐं तुम पर कुपथ्य कर दी गईं और जिसको दाँतवालों ने खाया हो जिसको हलाल कर लो और जो पत्थरों (काबे के निकट वाले पत्थर) पर बध किया गया हो कुपथ्य है। पाँसे डाल कर बाँटना पाप है यह पाप का कार्य है। काफिर तुम्हारे धर्म की ओर से निराश हुए तो उनसे न डरो। आज हम तुम्हारे धर्म को तुम्हारे लिए पूर्ण कर चुके और हमने तुम पर अपनी कृपा पूर्ण कर दी और हमने तुम्हारे लिए इस्लाम धर्म को पसन्द किया फिर जो भूख से व्याकुल हो और अपराध की ओर उसकी इच्छा न हो तो अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। वह ऊपर कुपथ्य वस्तुऐं खा सकता है। (३) यदि तुम से पूछते हैं कि कौन-कौन सी वस्तुऐं उनके

---

*एक काफिर कुछ ऊंटचुरा लेगया था। मुसलमानों ने देखा कि वह उन के गले में पट्टे डाले हुए काबे की ओर कुर्बानी के विचार से लिए जा रहा हैं : उन्होंने उन ऊंटों को उस दगाबाज से छीन लेना चाहा। इस पर यह आयत उतारी।

**अहराम—मुसलमान हज्ज (यात्रा) प्रारम्भ से समाप्ति तक एक कपड़ा पहिनते हैं उसे अहराम कहते हैं। उनके उतार देने के बाद शिकार करना न करना तुम्हारी इच्छा पर निर्भर है।

लिए उचित की गई हैं सो तुम उनको समझा दो कि निर्बल वस्तुऐं तुम्हारे लिए उचित हैं और आखेटक पशु जो तुमने आखेट के लिए सिखला रक्खे हों उनके आखेट किये हुए पशु उचित हैं जैसा तुमको ईश्वर ने सिखला रक्खा है वैसा ही तुमने उनको सिखला दिया है तो जो तुम्हारे लिए पकड़ रक्खें तो उसको खा लो परन्तु आखेटक पशु के छोड़ते समय ईश्वर का नाम ले लिया करो और अल्लाह से डरते रहो क्योंकि ईश्वर क्षण भर में हिसाब ले लेगा। (४) आज पवित्र वस्तुऐं तुम्हारे लिए उचित कर दी गई और पुस्तकवालों का खाना तुम्हारे लिए पवित्र और तुम्हारा खाना उनके लिए पवित्र है और मुसलमान परिणीता पत्नियाँ और जिन मनुष्यों को तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उनमें की परिणीता पत्नियाँ तुम्हारे लिए उचित हैं पर शर्त यह है कि उनके मिहर उनको दे दो और तुम्हारी इच्छा विवाह न करने की हो न मस्ती निकालने और न चोरी छिपे प्रेम करने की और जो धर्म को न माने तो उसका किया अकारथ होगा। प्रलय में वह हानि उठानेवालों में होगा। (५) (रुकू १)

मुसलमानों ! जब नमाज के लिए तय्यार हो तो अपने मुँह हाथ कुहनियों तक धो लिया करो और अपने सिर को मल लिया करो पैरों को मुरवा तक धो लिया करो और यदि अपवित्र होवे तो स्नान कर लिया करो और यदि बीमार होवो या तुममें से कोई पाखाने से आया हो या तुमने स्त्रियों से सहवास किया हो और तुम को जल न मिल सके तो शुद्ध मिट्टी लेकर उससे तयम्मुम अर्थात अपने मुँह और हाथों को मल लिया करो। अल्लाह तुम पर किसी प्रकार की कठोरता करना नहीं चाहता अपितु तुमको सुन्दर रखना चाहता है और यह कि तुम अपनी कृपा का भार पूरा करो जिससे तुम धन्यवाद करो (६) और अल्लाह ने जो तुम पर कृपायें की हैं उनका स्मरण करो और उसका कर्तव्य जो तुम पर ठहराया गया है जब तुमने कहा कि हमने सुना और माना और ईश्वर से डरते रहो क्योंकि अल्लाह हृदय की

बातें जानता है। (७) मुसलमानों ईश्वर के लिए न्याय के साथ साक्षी देने को तय्यार रहो और मनुष्यों की शत्रुता से न्याय न छोड़ो, न्याय समय से अधिक निकट है और अल्लाह से डरते रहो अल्लाह तुम्हारे कार्यों से सावधान है। (८) जो विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये अल्लाह से उनका प्रण है कि उनके लिये दान और बदला है। (९) और जिन मनुष्यों ने मना किया और हमारी आयतों को झुठलाया वह नारकीय हैं। (१०) ऐ मुसलमानों! अल्लाह ने जो तुम पर कृपाएं की हैं उनको स्मरण करो कि जब कुरेश जाति ने तुम पर हाथ फेंकने की इच्छा की थी तो ईश्वर ने उनके हाथों को रोक दिया और अल्लाह से डरते रहो और मुसलमानों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (११) (रुकू २)

अल्लाह इसराईल के पुत्रों से वचन ले चुका है और हमने उन्हीं में के द्वादश सरदार उठाये और अल्लाह ने कहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं यदि तुम नमाज पढ़ो और दान दो और हमारे पैगम्बरों को मानो और उनकी सहायता करो और प्रसन्नचित से ईश्वर को कर्ज देते रहो तो हम अवश्य तुम्हारे अपराध तुम से दूर कर देंगे और अवश्य जो उपवनों में प्रविष्ट करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी इसके पश्चात जो तुममें से फिरेगा तो निस्संदेह वह सीधे मार्ग से भटक गया। (१२) बस उन्हीं मनुष्यों को उनका प्रण तोड़ने के कारण से हमने फटकार दिया और उनके हृदयों को कट्टर कर दिया कि वह बातों को उनके ठीक अर्थ से बदलते हैं और उनको जो शिक्षा दी गई थी उससे भाग लेना भूल गये और उनमें से कुछ मनुष्यों के अतिरिक्त उन सबसे छल की सूचना तुमको होती ही रहती है तो उन के अपराध क्षमा करो और बीती भुला दो क्योंकि अल्लाह भलाई वालों को चाहता है। (१३) और जो मनुष्य अपने को इसाई कहते हैं हमने उनसे वचन लिया था। तो जो कुछ उनको शिक्षा दी गई थी उससे लाभ उठाना भूल गये। फिर हमने उनमें शत्रुता और ईर्षा प्रलय के दिन तक के

लिये लगा दी और अन्ततः ईश्वर उनको बतला देगा जो कुछ करते थे। (१४) ऐ पुस्तक वालो ! तुम्हारे पास हमारा पैगम्बर आ चुका है और पुस्तक में से जो कुछ तुम छिपाते रहे हो वह उसमें से बहुत कुछ तुमसे स्पष्ट वर्णन करता है और बहुत-सी बातों को जान-बूझकर बताता है। अल्लाह की ओर से तुम्हारे पास प्रकाश और कुरान आ चुका है। (१५) जो ईश्वर की इच्छा पर चलते हैं उनको अल्लाह कुरान के द्वारा ठीक मार्ग दिखलाता है और अपनी कृपा से उनको अन्धेरे से निकालकर प्रकाश में लाता है और उनको सीधा मार्ग दिखलाता है। (१६) जो मनुष्य मरियम के पुत्र मसीह को ईश्वर कहते हैं वही काफिर हैं। ऐ पैगम्बर इन से कहो कि यदि अल्लाह मरियम के पुत्र मसीह को और उनकी माता को और जितने मनुष्य पृथ्वी में हैं सबको मार डालना चाहे तो ऐसा कौन है जो उसकी इच्छा को रोके और नभ और पृथ्वी और जो कुछ नभ और पृथ्वी के मध्य में है अल्लाह ही का है। जो चाहता उत्पन्न करता है और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१७) और यहूदी व ईसाई कहते हैं कि हम अल्लाह के पुत्र और उसके प्यारे हैं। कहो कि वह तुम्हारे अपराधों के बदले में तुमको दण्ड ही क्यों दिया करता है। अपितु ईश्वर ने जो उत्पन्न किये हैं उन्हीं में मानव तुम भी हो। ईश्वर जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे और नभ और पृथ्वी और जो कुछ नभ व पृथ्वी के मध्य में है सब अल्लाह ही के वश में है और उसी की ओर लौट कर जाना है। (१८) ऐ पुस्तक वालो ! पैगम्बरों की कमी* पड़े पीछे हमारा पैगम्बर तुम्हारे पास आया है जिससे तुम न कहो कि हमारे पास कोई शुभ संवाद सुनाने और डराने वाला नहीं आया। बस शुभसंवाद सुनाने वाला जा चुका अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१९) (रुकू ३)

*** मुहम्मद साहब के छः सौ वर्ष पहिले से कोई नबी नहीं आया था।**

जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयो अल्लाह ने जो तुम पर कृपाएं की हैं उनको स्मरण करो। उसने तुममें पैगम्बर बनाये और तुमको राजा बनाया। और तुमको वह पदार्थ दिये हैं जो समस्त संसार के मनुष्यों में से किसी को नहीं दिये। (२०) भाइयों! पवित्र पृथ्वी जो ईश्वर ने तुम्हारे भाग्य में लिख दी है उसमें प्रविष्ट हो और पीठ न फेरना* नहीं तो उलटे हानि में आ जाओगे। (२१) वह कहने लगे कि ऐ मूसा! उस देश में तो बड़े शक्तिशाली मनुष्य हैं और जब तक वह वहाँ से न निकलें हम उसमें पैगम्बर न रक्खेंगे हाँ वे उसमें से निकल जावें तो हम अवश्य प्रविष्ट होंगे। (२२) भय मानने वालों में से दो मनुष्य यूशा और कालिब थे जिन पर ईश्वर ने कृपा की। वह बोल उठे उन पर चढ़ाई करके बैतुल मुकद्दस के द्वार में घुस पड़ो और जब द्वार में घुस पड़ो तो निस्संदेह तुम्हारी विजय है और यदि तुम विश्वास रखते हो तो अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो। (२३) वह बोले ऐ मूसा जब तक उसमें शत्रु हैं हम उसमें न जावेंगे। हाँ तुम और तुम्हारे ईश्वर जाओ और उनसे युद्ध करो हम तो यहीं बैठे हैं। (२४) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता अपना जीवन और अपने भाई के अतिरिक्त कोई मेरे वश में नहीं। तू हममें और इन आज्ञाकारी मनुष्यों में भेद डाल दे। (२५) ईश्वर ने कहा कि वह देश चालीस वर्ष तक इनको न मिलेगा। वन में भटकते फिरेंगे। तू अयज्ञाकारी मनुष्यों पर दुःख न कर। (२६) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों को आदन के दो पुत्र हाबील और काबाल की सत्य दशा पढ़कर सुनाओ कि जब दोनों ने भेंट** चढ़ाई उनमें से एक अर्थात हाबील की स्वीकार हुई और दूसरे अर्थात काबील की

---

* जब काफिर से लड़ना पडे तब न भागना।

** कहते हैं यह भेंट इसलिये चढ़ाई गई थी कि जिसकी भेंट स्वीकार हो उसके साथ एक सुन्दरी का व्याह हो।

अस्वीकृत हुई। तो काबील कहने लगा मैं तुझको अवश्य मार डालूंगा। उसने उत्तर दिया अल्लाह तो केवल संयमी को स्वीकार करता है। (२७) यदि मेरे मार डालने की इच्छा से तू मुझ पर अपना हाथ चलाएगा तो मैं तुझे वध करने के लिए तुझ पर अपना हाथ न चलाऊँगा क्योंकि मैं अल्लाह से जो संसार का पालने वाला है। मैं उससे डरता हूं। (२८) मैं यह चाहता हूं कि तू मेरा और अपना पाप समेट ले और नरकवासियों में हो जावे और अत्याचारियों को यही दण्ड है। (२६) इस पर भी उसके हृदय ने उसको अपने भाई के मार डालने पर उतारू किया और अन्ततः उसको मार डाला और हानि में आ गया। (३०) इसके पीछे अल्लाह ने एक कौवा भेजा वह पृथ्वी को खोदने लगा जिससे काबील को दिखाए कि अपने भाई के अपमान को क्योंकर छिपाये अतः वह कौवे को पृथ्वी खोदते देखकर बोल उठा। हाय मैं इस कौवे के समान भी बुद्धिमान नहीं हुआ कि भाई के शव को छिपाता यह सोचकर वह पछताया (३१) इस कारण से हमने इसराईल के पुत्रों को आज्ञा दी की जो कोई किसी जान के बिना बदले या देशीय झगड़े के बिना मनुष्यों को मार डाले और जिसने मरते को बचा लिया तो मानो उसने समस्त मनुष्यों को बचा लिया और उन इसराईल के पुत्रों के पास हमारे रसूल खुली-खुली निशानियाँ लेकर आ भी चुके हैं। इसके पश्चात इनमें से बहुत से देश में अत्याचार करते फिरते हैं। (३२) जो मनुष्य अल्लाह और पैगम्बर से लड़ते और दँगा के अर्थ से देश में दौड़े फिरते हैं उनका दण्ड तो यही है कि मार डाले जायं या उनको सूली दी जाय या उनके हाथ पाँव उल्टे काट दिये जायें अर्थात सीधा हाथ काटा जाया तो बायाँ पैर काटा जावे या बायाँ हाथ तो सीधा पैर या उनको देश-निकाला दिया जाय। यह तो संसार में उनका अपमान हुआ और प्रलय में बड़ा दण्ड है। (३३) परन्तु जो मनुष्य तुम्हारे वश में आने से पहिले क्षमा माँग लें तो जाने रहो कि अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (३४) (रुकू ५)

ऐ मुसलमानों ! अल्लाह से डरो और उस तक पहुंचने के

उपाय ढूँढते रहो और उसके मार्ग में जान लड़ा दो सम्भवतः तुम्हारा भला हो। (३५) जिन मनुष्यों ने मना किया यदि उसके पास वह सब हो जो पृथ्वी में है और उतना ही उसके साथ और भी हो जिससे प्रलय के दिन दण्ड के बदले में उसको दे निकलें उनसे स्वीकार नहीं किया जाएगा और उनके लिए कठोर दण्ड है (३६) वे चाहेंगे कि अग्नि से निकल भागें परन्तु वह वहाँ से नहीं निकलने पायेंगे और उनके लिये यह सदैव का दण्ड है। (३७) यदि पुरुष चोरी करे तो या स्त्री चोरी करे तो उनके कर्म के बदले में दोनों के हाथ काट डालो। दण्ड ईश्वर से है और अल्लाह प्रबलहस्त ज्ञाता है। (३८) अपने अपराध के पीछे क्षमा माँग ले और अपने को सम्भाल ले तो अल्लाह उसकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार कर लेता है क्योंकि अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (३९) क्या तुझको पता नहीं कि नभ और पृथ्वी में अल्लाह ही का राज्य है जिसको चाहे दण्ड दे और जिसको चाहे क्षमा करे अल्लाह सर्वशक्तिवान है। (४०) ऐ पैगम्बर जो मनुष्य अविश्वास करते हैं और कुछ ऐसे हैं जो अपने मुंह से तो कह देते हैं कि विश्वास लाए और उनके हृदय विश्वास नहीं करते तो इनके कारण तू उदास न हो और कई यहूदी हैं जो झूठी बातों को ढूँढ़ते फिरते हैं और दूसरे मनुष्यों के लिए जो तुम्हारे पास नहीं आए बातों को स्वस्थान कर देते हैं और मनुष्यों से कहते हैं कि यदि तुमको यही आज्ञा दी जाय तो उसको मानना और यदि तुमको यह आज्ञा न मिले तो मानने से बचना और जनको अल्लाह विपत्ति में फंसा हुआ रखना चाहे तो उसके लिए ईश्वर पर तुम्हारा कुछ भी बस नहीं चल सकता। यह वह मनुष्य हैं कि ईश्वर भी इनके हृदय को पवित्र करना नहीं चाहता। इन मनुष्यों की संसार में बदनामी है और प्रलय में इनके लिए बड़ा कठोर दण्ड है। (४१) झूंठी बातों को ढूंढ़ते फिरते हैं, पाप का खाते हैं तो यदि यह तुम्हारे पास आवें तो तुम इनमें निर्णय करो या इनसे अलग हो और यदि तुम इनसे अलग रहोगे तो वे तुमको किसी प्रकार की भी हानि नहीं पहुंचा सकेंगे और यदि निर्णय करो तो इनमें न्याय के साथ

निर्णय करना क्योंकि अल्लाह न्याय करनेवालों को मित्र रखता है। (४२) और यह मनुष्य क्यों तुम्हारे पास झगड़े तै करने को लाते हैं जब कि स्वयं इनके पास तौरात है, उसमें ईश्वर की आज्ञा है फिर इसके पश्चात वह उससे फिर जाते हैं और वे अपनी पुस्तक पर भी विश्वास नहीं रखते। (४३) (रुकू ६)

हमने तौरात अवतरित की जिसमें ज्ञान और प्रकाश है। आज्ञा मानने वाले पैगम्बर उसी के अनुसार यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और काविल भी उसी के अनुसार यहूदियों को आज्ञा दिया करते थे और यहूदियों के पुजारी और काविल भी उसी के अनुसार आज्ञा देते थे क्योंकि वह सब अल्लाह की पुस्तक के रक्षक और साक्षी ठहराये गए थे। अतः ऐ यहूदियों तुम मनुष्यों से न डरो और हमारा ही भय मानो, हमारी आयतों के बदले में निम्न लाभ मत लो और जो ईश्वर की अवतरित की हुई पुस्तक के अनुसार आज्ञा न दें तो यही मनुष्य काफिर हैं। (४४) और हमने तौरात में यहूद को लिखित आज्ञा दी थी कि जान के बदले जान, आँख के बदले आँख नाक के बदले नाक, कान के बदले कान, दाँत के बदले दाँत और सब बातों का बदला इसी प्रकार समान है, फिर जो बदला क्षमा कर दे तो वह उसकी शाँती होगी और जो ईश्वर की अवतरित की हुई के अनुसार आज्ञा न दे तो वही मनुष्य अन्यायी हैं। (४५) इसके पश्चात इन्हीं के पैरों पर हमने मरियम के पुत्र ईसा को चलाया, वह तौरात को जो उनके पहले से थी प्रमाणित करते थे और उनको हमने ईंजील दी जिसमें ज्ञान और प्रकाश है और तौरात जो उसके पहिले से थी उसको प्रमाणित भी करती है और संयमियों के लिए नसीहत है। (४६) और इंजील वालों को चाहिए कि जो ईश्वर ने उसमें आज्ञाएं अवतरित की हैं उसी के अनुसार आज्ञा दिया करें और जो ईश्वर के अवतरित किए हुए के अनुसार आज्ञा न दे तो यही मनुष्य अवज्ञाकारी हैं। (४७) और हमने तुम्हारी ओर सच्ची पुस्तक अवतरित की कि जो पुस्तकें

इनके पहिले हैं और उनकी रक्षा करती हैं तो जो कुछ ईश्वर ने अवतरित किया है तुम उसी के अनुसार इन मनुष्यों में आज्ञा दो और जो कुछ सत्य बात तुमको पहुँची हैं उसे छोड़कर इनकी आकाँक्षाओं का समर्थन मत करो। हमने तुमसे प्रत्येक के लिए एक नीति और नियम दिया है और यदि अल्लाह चाहता है तो तुम सबको एक ही धर्म पर कर देता। परन्तु यह चाहा गया है कि जो आज्ञाएँ दी हैं उनमें तुम्हारा परीक्षण किया सो तुम भले कामों की ओर चलो तुम सबका अल्लाह ही की ओर लौट कर जाना है। तो जिन-जिन बातों में तुम लोग भेद करते रहे हो वह तुमको बता देगा (४८) ऐ पैगम्बर जो पुस्तक ईश्वर ने अवतरित की है उसी के अनुसार इन मनुष्यों को आज्ञा दो और उनकी इच्छाओं का समर्थन न करो और इन यहूदियों से डरते रहो कि जो ईश्वर ने तुम्हारी ओर अवतरित की है उसकी किसी आज्ञा से यह मनुष्य कहीं तुमको भटका न दें, फिर यदि न मानें तो ध्यान रखो कि ईश्वर ने इनके कई अपराधों के कारण इनको दण्ड पहुंचाना चाहा है और मनुष्यों में बहुत से अवज्ञाकारी हैं। (४९) क्या ये मूर्खता की आज्ञा चाहते हैं और जो विश्वास करने वाले हैं उनके लिए अल्लाह से श्रेष्ठ आज्ञा देने वाला कौन हो सकता है। (५०) (रुकू ७)

मुसलमानों ! यहूद और ईसाई को मित्र न बनाओ, यह एक दूसरे के मित्र हैं और तुममें से कोई इनको मित्र बनायेगा तो निस्सन्देह वह इन्हीं में का है क्योंकि ईश्वर अत्याचारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखलाया करता। (५१) तो जिन लोगों के हृदय में फूट का रोग है तुम उनको देखोगे कि यहूदियों में कहते फिरते हैं कि हमको तो इस बात का भय लग रहा है कि हम पर विपत्ति न आ जावे। सो कोई दिन जाता है कि अल्लाह विजय या कोई आज्ञा अपनी ओर से भेजेगा तो उस पर जो अपने हृदय में छिपाते थे चकित होंगे। (५२) और मुसलमान कहेंगे कि क्या यह वही मनुष्य हैं जो बड़े जोर से अल्लाह

की कसम खाते थे कि हम तुम्हारे साथ हैं इनका सब किया अकारथ हुआ और हानि में आ गये। (५३) मुसलमानों! तुममें से कोई अपनें धर्म से फिर जाय तो ईश्वर ऐसे मनुष्य उपस्थित करेगा जिनको वह मित्र रखना होगा और वह उसको मित्र रखते होंगे, मुसलमानों के साथ नरक, तथा काफिरों के साथ कठोर होंगे। अल्लाह के मार्ग में अपनी जानें लड़ावेंगे और किसी की रुष्ठता का भय नहीं रखेंगे। यह ईश्वर की दया है जिसको चाहे दे और बहुत जानने वाला है। (५४) बस तुम्हारे तो यही मित्र हैं अल्लाह और अल्लाह का पैगम्बर और मुसलमान जो नमाज पढ़ते तथा दान देते तथा झुके रहते हैं। (५५) और जो अल्लाह और अल्लाह के पैंगम्बर और मुसलमानों का मित्र होकर रहेगा तो अल्लाहवालों ही की विजय है। (५६) (रुकू ८)

मुसलमानों! जिन्होंने तुम्हारे धर्म को हंसी और खेल बना रखा है अर्थात जिनको तुमसे पहिले पुस्तक दी जा चुकी है उन्हें तथा काफिरों को मित्र मत बनाओ और यदि तुम विश्वास रखते हो तो ईश्वर से डरते रहो। (५७) जब तुम नमाज के लिए बाँग देकर बुलाते हो तो यह मनुष्य नमाज को हंसी और खेल बनाते हैं यह इसलिए कि वह अज्ञान हैं। (५८) कहो कि ऐ पुस्तकवालों (यहूद)! क्या तुम हमसे इसलिए शत्रुता रखते हो कि हम अल्लाह पर और जो हमारी ओर अवतरित है उस पर और जो पहले अवतरित हो चुकी है उस पर विश्वास ले आये हैं और यह है कि तुममें के प्राय अवज्ञाकारी हैं। (५९) कहो कि मैं तुमको बताऊं तो ईश्वर के निकट बुरे बदले के योग्य हैं। वह जिस पर ईश्वर ने धिक्कार दिया और उन पर अपना कोप किया और किसी को बन्दर और सूअर बना दिया था जो राक्षस को पूजने लगे तो यह मनुष्य पद में हमसे कहीं खराब ठहरे और सीधे मार्ग से बहुत भटक गए। (६०) जब नुम्हारे पास आते हैं तो कहते हैं हम विश्वास लाये यद्यपि मनाह हो को साथ लेकर आये थे और

उसी को साथ लिये गए और जा छिपाये हुए थे अल्लाह उसको खूब जानता है। (६१) और तुम इनमें से बहुतेरों को देखोगे कि अपराध की बात और अत्याचार तथा पाप का धन खाने पर गिरे पड़ते हैं। क्या ही बुरे ये काम हैं जो वे करते हैं? (६२) इनके पुजारी और पण्डित इनको झूठ बोलने और पाप का धन खाने से क्यों नहीं मना करते। ये क्या ही बुरे काम हैं जो वह कर रहे हैं। (६३) और यहूदी कहते हैं कि ईश्वर का हाथ*सीमित है। इन्हीं के हाथ सीमित हो जायं और इनके कहने पर इनको धिक्कार है। अपितु ईश्वर के दोनों हाथ फैले हुए हैं जिस प्रकार चाहता है व्यय करता है और लो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित है अवश्य उनमें से बहुतेरों की नटखटी और मनाई के अधिक होने के कारण होगा और हमने इनके मध्य आपस में शत्रुता और ईर्षा प्रलय तक डाल दी है। जब-जब युद्ध की अग्नि भड़काते हैं अल्लाह उसको शान्त कर देता है और देश में उत्पात फैलाते-फिरते हैं और अल्लाह उत्पातियों को मित्र नहीं रखता। (६४) यदि पुस्तक वाले विश्वास लाते और डरते तो हम इनसे इनके अपराध अवश्य उतार देते और इनको पदार्थों के उपवनों में भी अवश्य प्रविष्ट करते। (६५) यदि यह तौरात और इंजील और उनको जो उन पर इनके पालनकर्ता की ओर से अवतरित हैं स्थिर रखते तो अवश्य उन पर ईश्वर की कृपायें वर्षा के समान बरसतीं कि ऊपर से और पाँव के तले (जमीन पर गिरी) तक खाते। इनमें से कुछ मनुष्य सीधे हैं और इनमें से प्रायः तो बहुत ही बुरा कर रहे हैं। (६६) (रुकू ९)

***यहूदी जब धनवान होते तो खुदा को फकीर कहते थे और जब फकीर हो जाते तो कहते खुदा बड़ा कंजूस है उसने अपनी दया का हाथ इसलिए रोक लिया है। उस पर ये आयत उतरी कि खुदा के दोनों हाथ खुले हैं। वह जब चाहे और जिसको जितना चाहे उतना दे, उसको कोई रोक नहीं सकता।**

ऐ पैगम्बर ! जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से अवतरित की है उसे मनुष्य तक पहुंचा दो और यदि तुमने न किया तो तुमने ईश्वर का सन्देश नहीं पहुंचाया और अल्लाह तुमको मनुष्यों से बचायेगा क्योंकि अल्लाह उनको जो काफिर हैं मार्ग नहीं दिखायेगा । (६७) कहो कि ऐ पुस्तकवालों ! जब तक तुम तौरात और इंजील और जो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हैं उसे न मानो तब तक तुम मार्ग पर नहीं हो । और जो तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से कुरान अवतरित हुआ है उनमें से बहुतेरों के अहंकार और अविश्वास को ही बढ़ायेगा अतः तू काफिर पर खेद न कर । (६८) इसमें कुछ सन्देह नहीं जो मुसलमान हैं और यहूदी हैं और साबी और ईसाई हैं जो कोई अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाये हैं और नेक काम करे तो ऐसे मनुष्य पर न भय होगा और न वह उदासीन रहेंगे । (६९) हम याकूब के पुत्रों से पता करा चुके हैं और हमने इनकी ओर बहुत पैगम्बर भी भेजे जब कभी कोई पैगम्बर इनके पास ऐसी आज्ञा लेकर आया जिनको उनके हृदय नहीं चाहते थे तो बहुतों ने झुठलाया और कुछ ने उनका वध किया । (७०) और समझे कोई विपत्ति नहीं आएगी । परन्तु सब अंधे और बहरे हो गये फिर ईश्वर ने उनकी प्रार्थना स्वीकार कर ली फिर भी इनमें से बहुतेरे अंधे और बहरे बने रहे और जो कुछ कर रहे हैं अल्लाह देख रहा है । (७१) जो मनुष्य कहते हैं कि ईश्वर तो यही मरियम के पुत्र मसीह हैं यह मनुष्य काफिर हो गये और मसीह समझाया करते थे कि ऐ याकूब के पुत्रों अल्लाह की प्रार्थना करो क्योंकि वह मेरा और तुम्हारे पालनकर्ता है और संदेह नहीं कि जिसने अल्लाह का समकक्ष ठहराया बैकुण्ठ उस पर पाप हो चुका और उसका ठिकाना नरक है और अत्याचारियों का कोई भी सहायक नहीं । (७२) जो कहते हैं ईश्वर तो इन्हीं तीन में का एक है निस्सन्देह वे काफिर हो गये यद्यपि एक ईश्वर के अतिरिक्त और कोई पूजित नहीं और जैसी-जैसी बातें ये कहते हैं यदि उनसे नहीं आवें तो जो इनमें से काफिर हैं इन पर कठोर होंगी । (७३) वह क्या नहीं

ईश्वर के समक्ष क्षमा माँगकर अपराध क्षमा करते यद्यपि अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (७४) मरियम के पुत्र मसीह तो केवल एक पैगम्बर हैं इनसे पहले पैगम्बर हो चुके हैं और इनकी माता सच्ची थीं। दोनों खाना खाते थे देखो तो सही हम प्रमाण लें किस प्रकार खोल-खोलकर इन मनुष्यों से वर्णन करते हैं फिर भी देखो कि यह किधर उल्टे भटकते चले जा रहे हैं। (७५) कहो क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं की पूजा करते हो जो तुम्हें लाभ हानि पहुंचा सकती और अल्लाह सुनता और जानता है। (७६) कहो कि ऐ पुस्तकवालों अपने धर्म में अकारण असीमितता मत करो और न उनकी आकाँक्षाओं पर चलो जो पहले भटक चुके हैं और बहुतेरों को भटका चुके हैं और स्वयं सीधे मार्ग से भटक गये हैं। (७७) (रुकू १०)

याकूब के पुत्रों में से जिन मनुष्यों ने अविश्वास किया उन पर दाऊद और मरियम के पुत्र ईसा की ओर से फटकार पड़ी—यह इससे कि वे अपराधी थे और सीमा से बढ़ गये थे। (७८) जो बुरा काम कर बैठते थे उससे मानते न थे। वह बुरे काम थे जो वे किया करते थे। (७९) तुम उनमें से बहुतेरों को देखोगे कि काफिरों से मित्रता रखते हैं उन्होंने अपने लिए बुरी तैयारी भेजी है कि ईश्वर उनसे नाराज हुआ और यह सदैव दण्ड भोगेंगे। (८०) और यदि अल्लाह पर और पैगम्बर पर तथा जो पुस्तक उन पर अवतरित हुई उस पर विश्वास रखते तो काफिरों को मित्र न बनाते परन्तु इनमें से बहुतेरे अवज्ञाकारी हैं। (८१) मुसलमानों के साथ शत्रुता के विषय में यहूदियों को और मुशरिकीन को तुम सबसे बड़ा कठोर पाओगे और मुसलमानों के साथ शत्रुता के विषय में सब में उनको निकट पायेगा जो कहते हैं कि हम ईसाई हैं यह इस कारण से है कि इनमें पादरी और पण्डित हैं और यह मनुष्य घमण्ड नहीं करते। (८२)

सातवाँ पारा (व इजासमिऊ)

और जो कुछ पैग़म्बर पर अवतरित है उसे सुनते हैं तो तू उनकी आँखों को देखता है कि उनसे आंसू बहते हैं इसलिए कि उन्होंने सत्य बात को पहिचान लिया है। कहते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्ता हम तो विश्वास ले आये तू हमको साक्षिओं में लिख। (८३) और हमको क्या हुआ है कि हम अल्लाह को न मानें और सत्य बात जो हमारे पास आई है उस पर विश्वास न करें। हमें आशा है कि पालनकर्ता की दृष्टि में हम अच्छे समझे जायेंगे। (८४) तो इनके इस बात के बदले में ईश्वर ने इनको ऐसे उपवन दिये जिनके नीचे नहरें बह रही हैं वे उनमें सदैव रहेंगे भलाई करनेवालों का यही बदला है। (८५) और जिन मनुष्यों ने न माना और हमारी आयतों को झुठलाया यही नरक वासी हैं। (८६) (रुकू ११)

मुसलमानों! ईश्वर ने जो स्पष्ट वस्तुएं तुम्हारे लिए पुण्य कर दी हैं उनको पाप मत करो और सीमा से न बढ़ो क्योंकि अल्लाह सीमा से बढ़नेवालों को नहीं चाहता। (८७) ईश्वर ने जो तुमको सुथरी भोग्य वस्तुएँ दी हैं उनको खाओ और जिस पर तुम्हारा विश्वास है उससे डरते रहो। (८८) तुम्हारी निरर्थक कसमों पर ईश्वर नहीं पकड़ेगा हाँ पक्की कसम खा लो तो ईश्वर पकड़ेगा तो इस पाप की शान्ति के लिए दस भूखों को साधारण भोजन देना है जैसा अपने घर वालों को खिलाते हो या उनको कपड़े बना देना है या एक सेवक छोड़ देना है फिर जिसमें सामर्थ्य न हो तो तीन दिन के रोजे रखे यह तुम्हारी कसमों की शान्ति है जबकि तुम कसम खा चुके हो तो अपनी कसमों को रोके रहो। इस प्रकार अल्लाह अपनी आज्ञा तुमको सुनाता है कि सम्भवतः तुम आभार मानो। (८९) मुसलमानों! मदिरा, जुआ, मुर्तीक और पाँसे यह गन्दे राक्षसी कर्म हैं इनसे बचो सम्भवतः इनसे तुम्हारा भला है। (९०) राक्षस तो यही चाहता है कि मदिरा और जुए के

कारण तुम्हारी आपस में शत्रुता और ईर्षा डलवा दे और तुमको ईश्वर की स्मृति से और नमाज से रोके तो क्या तुम रुकना चाहते हो। (९१) और अल्लाह की और पैगम्बर की आज्ञा मानो और बचते रहो इस पर भी यदि तुम फिर बैठोगे तो जाने रहो कि हमारे पैगम्बर का कर्तव्य तो केवल स्पष्ट कह देना मात्र था। (९२) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये तो जो कुछ खा-पी चुके उसमें उन पर पाप नहीं रहा जबकि उन्होंने अपवित्र वस्तुएँ से परहेज किया और विश्वास लाये और भले काम करने लगे और अल्लाह अच्छे काम करनेवालों को चाहता है। (९३) (रुकू १२)

मुसलमानों! एक जरा से आखेट से जिस तक तुम्हारे हाथ और भाले पहुंच सकें एहराम की दशा में ईश्वर अवश्य तुम्हारी परीक्षा करेगा जिससे अल्लाह पता करे कि कौन अदृष्ट से डरता है फिर इसके पश्चात जो असीमितता करे तो उनको दुख दाई दण्ड है। (९४) मुसलमानों! जबकि तुम एहराम की दशा में होवो तो आखेट मत करो और जो कोई तुममें से जान बूझ कर मारेगा तो जैसे जीव को मारा है उसके बदले में वैसा ही पशु जो तुममें के दो न्यायी ठहरा दें देना पड़ेगा और भेंटें काबे में भेजना या उसके बदले में भूखों को खिलाना या उसके समान रोजे रखना जिससे अपने किये का फल भोगो जो हो चुका उसे ईश्वर ने क्षमा किया। यदि और करेगा तो अल्लाह उससे बदला लेनेवाला है। (९५) समुद्री आखेट और खाने की समुद्री वस्तुएँ तुम्हारे लिए भोग्य की जाती है जिससे तुमको और यात्रियों को लाभ पहुंचे और बन का आखेट जब तक एहराम में रहो तुम पर पाप है और अल्लाह से डरते रहो जिसके समीप जाना है। (९६) ईश्वर ने काबे को जो कि प्रमुख स्थान है मनुष्यों की रक्षा के लिए निर्मित किया है और पवित्र महीनों को और बली को और जो आभूषण इत्यादि उनके गले में लटक रहे हैं बनाया है यह इसलिए कि तुमको ध्यान रहे कि जो कुछ नभ और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह जानता है और यह कि

अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (९७) जाने रहो कि अल्लाह दण्ड देने में कठोर है और यह भी कि अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु हैं। (९८) पैगम्बर का कर्तव्य केवल इसे तुम तक पहुंचा देना है और जो तुम प्रकट में करते हो और जो छिपा कर करते हो अल्लाह सब कुछ जानता है। (९९) कहो कि पवित्र और अपवित्र समान नहीं हो सकतीं चाहे अपवित्र की अधिकता तुम को अच्छा लगे तो हे बुद्धिमानों ईश्वर से डरते रहो सम्भवतः तुम्हारा भला हो। (१००) (रुकू १३)

मुसलमानों। ऐसी बातें न पूछा करो कि जो यदि तुम पर प्रकट कर दी जाय तो तुमको बुरी लगें और ऐसे समय में जबकि कुरान अवतरित हो रहा है उन बातों का भेद पूछोगे तो तुम पर प्रकट भी कर दिया जायगा अल्लाह ने इन बातों को क्षमा किया और अल्लाह क्षमा करने वाला तथा सहन करने वाला है। (१०१) तुमसे पहिले भी मनुष्यों ने ऐसी ही बातें पूछी थीं फिर जानने पर पैगम्बरों से मना करने लगे। (१०२) खुदा ने न वाहीरा (कनकटी ऊंटनी) और न साइबा (ऊंटनी जो साँड की तरह छोड़ी जाती थी) और न वसीला (वह ऊँटनी जिसके पहिलौठी के दो बच्चे स्त्री जातीक हों) और न हाम (ऊँट जिसकी नस्ल से कई बच्चे हो गये हों) इनके विषय में ईश्वर ने कुछ नहीं कहा अपितु काफिरों ने ईश्वर पर बुरी बातें कहीं है और इनपें बहुतेरे अनसमझ हैं। (१०३) जब इनसे कहा जाता है जो अल्लाह ने कुरान अवतरित किया है उसकी और पैगम्बर की ओर चलो तो कहते हैं कि जिस पर हमने अपने पिता-पितामह को पाया है हमारे लिए पर्याप्त है भला यदि जो इनके पिता कुछ न जानते और सीधे मार्ग पर न हों तो भी क्या ये उन्हीं के मार्ग पर चलेंगे (१०४) मुसलमानों! तुम अपनी जानों का ध्यान रक्खो जब तुम सीधे मार्ग पर हो तो कोई भी पथभ्रष्ट तुम को हानि नहीं पहुंचा सकता तुम सब को अल्लाह की ओर लौटकर जाना है तो जो कुछ करते रहे हो तुमको वह बतायेगा। (१०५) मुसलमानों! जब

तुममें से किसी के सामने मृत्यु आ खड़ी हो तो वसीयत करते समय तुममें के दो विश्वासी साक्षी हों या यदि तुम कहीं को यात्रा करो और मृत्यु आ जाय तो विधर्मी ही के दो साक्षी हों यदि तुमको संदेह हो तो उन दोनों को नमाज के पश्चात रोक लो फिर वह दोनों अल्लाह की कसमें खायँ कि हम रिश्वत के लालच से कसम नहीं खाते चाहे वह व्यक्ति रिश्तेदार ही क्यों न हो और हम ईश्वर की साक्षी को नहीं छिपाते और यदि ऐसा करें तो हम निस्संदेह अपराधी हैं। (१०६) फिर यदि पता हो जाय कि वह दोनों सत्य को छिपा ले गये तो इनके स्थान पर दो उन मनुष्यों में से खड़े हों जिन्होंने इनको असत्य ठहराया हो उनमें से जो निकट के हों फिर वह अल्लाह की कसमें खायं कि पहिले दो साक्षियों से हमारी साक्षी अधिक सत्य है और हमने असीमितता नहीं की ऐसा किया हो तो हम निस्संदेह अत्याचारी हैं। (१०७) इस प्रकार की कसम से यह बात सोचने के योग्य है कि मनुष्य जैसी की तैसी साक्षी दें या डरें की हमारी कसम उनकी कसम के पश्चात उल्टी पड़ेगी और अल्लाह से डरते रहो और सुन लो अल्लाह आज्ञा न मानने वालों को मार्ग नहीं बतलाता। (१०८) (रुकू १४)

जब अल्लाह पैगम्बरों को एकत्रित करके पूछेगा कि तुमको क्या उत्तर मिला वह कहेंगे कि हमको कुछ पता नहीं अदृष्य बातें तो तू ही खूब जानता है। (१०९) उस दिन अल्लाह कहेगा कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा ! हमने तुम पर और तुम्हारी माता पर जो-जो कृपाएें की हैं स्मरण करो जबकि पवित्र आत्मा से तुम्हारी सहायता की, गोद में और बड़े होकर भी तुम मनुष्यों से बात चीत करते थे और जबकि हमने तुम को पुस्तक और बुद्धमानी और तौरात और इन्जील सिखलाई और जबकि तुम हमारी आज्ञा से चिड़िया का रूप मिट्टी से बनाते फिर उसमें फूँक मार देते तो वह हमारी आज्ञा से पक्षी बन जाते और जबकि तुम जन्म के अन्धे और कोढ़ी को हमारी आज्ञा से ठीक

कर देते और जबकि तुम हमारी आज्ञा से मृतकों को निकाल खड़ा करते और जबकि हमने याकूब के पुत्रों बनी इसराईल को तुम्हारे मार डालने से रोका कि जिस समय तुमने उनको निशानी दिखलाई। तो उनमें से जो तुम्हारा विश्वास नहीं करते थे कहने लगे कि यह तो केवल स्पष्ट जादू है। (११०) और जब हमने हवारियों* के हृदय में डाला कि हम पर और हमारे पैगम्बर पर विश्वास लाओ तो उन्होंने कहा हमने विश्वास किया और तू इस बात का साक्षी रह कि हम आज्ञाकारी हैं। (१११) जब हवारियों ने प्रार्थना की कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा ! क्या तुम्हारे पालनकर्ता से हो सकेगा कि हम पर नभ से एक थाल उतारे तो कहा यदि तुम विश्वास रखते हो तो ईश्वर से डरो। (११२) वह बोले हम चाहते हैं कि उसमें से कुछ खायँ और हमारे हृदय में विश्वास हो जाय और हम पता करलें कि तूने हमसे सत्य कहा और हम इसके साक्षी हैं। (११३) ईसा, मरियम के पुत्रने कहा कि ऐ अल्लाह, हमारे पालनकर्ता, हम पर नभ से एक थाल उतार, थाल हमारे लिए अर्थात हमारे अगलों और पिछलों के लिए ईद**निश्चित हो और तेरी ओर से निशानी हो और हमको आजीवका दे और तू सब आजीवका देनेवालों में से अच्छा है। (११४) अल्लाह ने कहा निस्संदेह हम वह थाल तुम लोगों पर उतारेंगे। तो जो व्यक्ति फिर भी तुममें से अविश्वास करता रहेगा तो हम उसको ऐसी कठिन दण्ड देंगे कि समस्त संसार में किसी को भी ऐसा नहीं दिया होगा (११५)) (रुकू १५)

उस दिन अल्लाह पूछेगा कि ऐ मरियम के पुत्र ईसा, क्या तुमने मनुष्यों से यह बात कही थी कि ईश्वर के अतिरिक्त मुझको और मेरी

---

* हवारी—ईसा के साथी।

**कहा जाता है कि यह थाल इतवार के दिन उतरा था। ईसाई इसीलिए इस दिन बड़ी खुशी मनाते हैं।

माता को दो ईश्वर मानो? बोला कि तेरी जात पवित्र है मुझसे क्यों कर हो सकता है कि मैं ऐसी बात कहूं जिसके कहने का मुझको कोई अधिकार नहीं यदि मैं ऐसा कहता तो मुझे अवश्य ही पता होता तू मेरे हृदय की बात नहीं जानता। अदृष्य की बातें तो तू ही खूब जानता है। (११६) तूने जो मुझको आज्ञा दी थी बस वही मैंने इनको कह सुनाई थी कि अल्लाह जो मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है उसी की पूजा करो और जब तक मैं इन मनुष्यों में रहा मैं उनका दर्शक रहा फिर जब तूने मुझको उठा लिया तो तू ही इनका दर्शक हो गया और तू सब वस्तुओं का साक्षी है। (११७) यदि तू इनको दण्ड दे तो यह तेरे भक्त हैं और यदि तू इनको क्षमा करे तो निस्संदेह तू प्रबल चमत्कार वाला है। (११८) अल्लाह ने कहा कि यह वह दिन है कि सच्चे भक्तों को उनकी सच्चाई काम आयेगी उसके लिए उपवन होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी वे उसमें सदैव रहेंगे अल्लाह उनसे प्रसन्न और वह अल्लाह से प्रसन्न यही बड़ी सफलता है। (११९) नभ और पृथ्वी तथा जो कुछ नभ और पृथ्वी में है सब पर अल्लाह ही का अधिकार है और वह सर्वशक्तिमान है। (१२०) (रुकू १६)

सूरे अनआम

यह मक्के में अवतरित हुई इसमें १६५ आयतें २० रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। हर प्रकार की बड़ाई अल्लाह ही को है जिसने नभ और पृथ्वी को बताया और अंधेरा और उजाला बनाया। इस पर भी काफिर अपने पालनकर्ता का समकक्ष औरों को ठहरते हैं। (१) वही है जिसने

तुमको मिट्टी से उत्पन्न किया फिर एक अवधि ठहरा दी और एक नियत समय उसके पास है फिर भी तुम सन्देह करते रहो। (२) और नभ में और पृथ्वी में वही अल्लाह है जो कुछ छिपा कर और जो प्रकट में करते हो उसका उसे ज्ञान है और कुछ तुम कमाते हो उसे प्रतीत है। (३) और तेरे पालनकर्ता की निशानियों में से कोई निशानी उनके पास नहीं पहुंचती। परन्तु वह उनसे मुँह फेरते हैं। (४) जब सब इनके पास आया उसको भी झुठला दिया तो यह मनुष्य जो प्रलय की हँसी उड़ा रहे हैं उसकी सत्यता इनको आगे चलकर प्रतीत हो जायगी। (५) क्या इन मनुष्यों ने दृष्टि नहीं की हमने इनसे पहिले कितने गुटों का नाश कर दिया जिनकी हमने देश में ऐसी जड़ बाँध दी थी कि तुम्हारी ऐसी जड़ नहीं बाँधी और हमने उन पर खूब वर्षा बरसायी और उसके नीचे से नहरें चालू कर दीं। फिर हमने उनके अपराधों के कारण से उनका नाश करा दिया और उनके पीछे और दूसरी संघे निकाल खड़ी की। (६) यदि हम कागज पर पुस्तक तुम पर उतारते और यह मनुष्य उसको अपने हाथों से छू भी लेते टटोलते तो भी काफिर कहेंगे कि यह स्पष्ट जादू है। (७) कहते हैं कि इस पर कोई देवदूत क्यों नहीं अवतरित हुआ और यदि देवदूत को भेजते तो झगड़ा ही समाप्त हो गया था फिर उनको अवकाश न मिलता। (८) और यदि देवदूत को पैगम्बर बनाते तो उसको भी मनुष्य के रूप में ही बनाकर भेजते। और हम उन पर वही सन्देह डालते जो सन्देह यह डाल रहे हैं। (९) और तुमसे पहिले भी पैगम्बर की हँसी उड़ाई जा चुकी है तो जिन मनुष्यों ने पैगम्बरों से हंसी की वह उल्टी उन्हीं पर पड़ी। (१०) (रुकू १)

कहो कि देश में घूमो फिर देखो झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (११) यदि कोई पूछे कि जो कुछ नभ और पृथ्वी में है किसका है तो कह दो कि अल्लाह का है इसने स्वयं ही मनुष्यों पर छुपा करने को अपने ऊपर आवश्यक कर लिया है वह प्रलय के दिन

तक जिसके आने में कोई भी सन्देह नहीं तुम को अवश्य एकत्रित करेगा जो अपनी जानों की हानि कर रहे हैं वही विश्वास नहीं लाते। (१२) और उसी का है जो कुछ रात्री और दिन में बसता है और वह सुनता और जानता है। (१३) पूछो कि ईश्वर जो नभ और पृथ्वी को उत्पन्न करने वाला है क्या उसके अतिरिक्त काम सम्भालने वाला बनाऊं और वह जीविका देता है और कोई उनको जीविका नहीं देता। कह दो मुझको तो यह आज्ञा मिली है कि सबसे पहिले मैं मुसलमान बनूं और मुशरिकों में न हूं। (१४) कहो कि यदि मैं अपने पालनकर्ता की आज्ञा न मानु तो मुझको प्रलय के दिन के कठिन दण्ड से भय लगता है। (१५) उस दिन जिससे दण्ड टल गया तो उस पर ईश्वर ने कृपा की और यह बड़ी सफलता है। (१६) यदि अल्लाह तुमको कष्ट पहुंचाये तो उसके अतिरिक्त कोई उसको दूर करने वाला नहीं और तुमको भलाई पहुंचाये तो वह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (१७) और वह अपने भक्तों पर अधिकारी है और वही चमत्कार वाला तथा सावधान है। (१८) यदि पूछो कि साक्षी किस वस्तु की बड़ी है कह दो कि ईश्वर जो मेरे और तुम्हारे मध्य साक्षी है और यह कुरान मेरी और इसीलिये ईश्वरीय सन्देश है कि इसके द्वारा तुमको और जिसे पहुँचे डराऊं क्या तुम पक्के बनकर इस बात की साक्षी देते हो अल्लाह के साथ दूसरे पूजित भी हैं। कहो कि मैं तो साक्षी नहीं देता तुम इन से कहो कि वह तो केवल अकेला पूजित है और जिन वस्तुओं को तुम ईश्वर का समकक्ष बनाते हो मैं उनको नहीं मानता। (१९) जिन मनुष्यों को हमने पुस्तक दी है यह तो जैसा अपने पुत्रों को पहिचानते हों वैसे ही इस मोहम्मद को भी पहिचानते हैं जिन्होंने अपनी जानों को संकट में डाला वही विश्वास नहीं लाते। (२०) (रुकू २)

जो व्यक्ति ईश्वर पर झूठी बुराई बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है अत्याचारियों को किसी

प्रकार नहीं होगा। (२१) और एक दिन होगा जबकि हम इन सब को एकत्रित करेंगे फिर उन मनुष्यों से जो समकक्ष ठहराते थे पूछेंगे कि कहाँ हैं तुम्हारे वह समकक्ष जिनका तुम दावा करते थे। (२२) फिर इनको कुछ उज्र न रहेगा परन्तु यों कहेंगे कि हमको ईश्वर पालनकर्ता की कसम हम मुशरिक ही न थे। (२३) देखो किस प्रकार अपने ऊपर आप झूठ बोलने लगे और इनकी झूठी बातें इनसे गई गुजरी हो गई। (२४) इनमें से ऐसे भी हैं कि तुम्हारी ओर कान लगाते हैं और उनके हृदयों पर हमने पर्दे डाल दिये इनके कानों में बोझ है जिससे तुम्हारी बात न समझ सकें और यदि यह सब कार्य भी देख लें तो भी विश्वास लाने वाले न हो यहाँ तक कि जब तुम्हारे पास तुमसे झगड़े हुए आते हैं तो काफिर बोल उठते हैं कि कुरान तो केवल अगलों की कहानियाँ हैं। (२५) यह मनुष्य कुरान से दूसरे को मना करते और उससे माँगते हैं और अपनी जानों को ही मारते हैं और नहीं समझते हैं। (२६) और जब नरकाग्नि के सामने खड़े किये जायँगे तो उसके गुण देखकर कहेंगे कि यदि ईश्वर की कृपा से हम फिर संसार में भेजे जायं तो अपने पालनकर्ता की आयतों को न झुठलाएं और धर्म वालों में से हों। (२७) अपितु जिसको पहिले छिपाते थे उनके आगे आई और यदि संसार में वापस भेज दिये जायं तो जिस वस्तु से इनको मना किया गया है उसको फिर दुबारा करेंगे और यह झूठे हैं। (२८) और कहते हैं कि जो हमारी सांसारिक जीवन है इसके अतिरिक्त और किसी प्रकार का जीवन नहीं और मेरे पीछे फिर जी उठने वाले नहीं। (२९) यदि तू देखे जबकि वह मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने लाकर खड़े किया जायंगा तो पूछेगा क्या यह सत्य न था कहेंगे अपने पालनकर्ता की कसम अवश्य सत्य था वह कहेगा कि अपने अविश्वास का दण्ड भोगो। (३०) (रुकू ३)

जिन मनुष्यों ने अल्लाह के सामने होने को झूठा जाना निस्सन्देह वह मनुष्य हानि में रहे यहाँ तक कि जब एकदम प्रलय इन पर आ उप-

स्थित होगी तो चिल्ला उठेंगे कि शोक हमने संसार में अपराध किया और अपने बोझ अपनी पीठ पर लादे होंगे देखो तो बुरा है जिसको यह मनुष्य लादे होंगे। (३१) सांसारिक जीवन तो निरा खेल और तमाशा है और कुछ सन्देह नहीं जो मनुष्य संयमी हैं उनके लिये अन्तिम रात्री परलोक का घर कहीं अच्छा है क्या तुम नहीं समझते। (३२) हम इस बात को जानते हैं कि यह जैसी-जैसी बातें कहते हैं निस्संदेह तुमको दुःख होता है पस यह तुमको नहीं झुठलाते अपितु अत्याचारी अल्लाह की आयतों को मना करते हैं। (३३) तुमसे पहले भी पैगम्बर झुठलाये जा चुके हैं तो उन्होंने मनुष्यों के झुठलाने पर और उनको हानि पहुंचाने पर सन्तोष किया यहाँ तक हमारी सहायता उनके पास आ पहुंची और कोई ईश्वर की बातों का बदलने वाला नहीं और पैगम्बरों के सन्देश तमको पहुंच चुके हैं। (३४) और यदि इनका अहंकार तुमको बुरा लगता है और तुमसे हो सके कि पृथ्वी के अन्दर सुरंग लगाओ या नभ में कोई सीढ़ी और कोई निशानी इनको लाकर दिखाओ सौर अल्लाह को स्वीकार होता तो इनको सीधे मार्ग पर प्रसन्न कर देता तो देखो तुम कहीं मूर्खों में न हो जाना। (३५) वही मानते हैं जो सुनते हैं और मृतकों को ईश्वर जीवित कर देगा फिर उसी की ओर जायंगे। (३६) कहते हैं कि इसके पालनकर्ता की ओर से कोई निशान क्यों नहीं उतरा कहो कि अल्लाह निशान के उतारने में शक्तिमान है। परन्तु इनमें के प्रायः अनसमझ हैं। (३७) क्या कोई रेंगने वाला जीव और दो परों से उड़ने वाला पक्षी पृथ्वी में नहीं है कि तुम मनुष्यों के समान अपनी संघ रखता हो। कोई वस्तु नहीं जिसे हमने पुस्तक में न लिखा हो फिर अपने पालनकर्ता के सामने जायँगे। (३८) जो हमारी आयतों को झुठलाते हैं अन्धेरे में गूंगे और बहरे हैं ईश्वर जिसे चाहे उसे भटका दे और जिसे चाहे उसे सीधे मार्ग पर लगा दे। (३९) पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड तुम्हारे सामने आ उपस्थित हो या प्रलय तुम्हारे सामने आ खड़ी

हो तो क्या ईश्वर के अतिरिक्त दूसरे को पुकारोगे यदि तुम सच्चे हो। (४०) दूसरे को तो नहीं उसी एक ईश्वर को पुकारोगे तो जिसके लिये पुकारोगे यदि उसकी इच्छा में आयेगा तो उसको दूर कर देगा और जिनको तुम समकक्ष बनाते हो भूल जाओगे। (४१) (रुकू ४)

तुमसे पहिले बहुत से समाजों की ओर पैगम्बर भेजें थे फिर हमने उनको कठिनाई और कष्ट में डाला जिससे वह हमारे सामने गि - गिड़ायें। (४२) तो जब उन पर हमारा दण्ड आया था नहीं गिड़-गिड़ाये, परन्तु उनके हृदय कठोर हो गये थे और जो काम करते थे राक्षस ने उनको भला बतलाया। (४३) फिर जो शिक्षा उनको दी गई थी उसे भूल गये तो प्रत्येक वस्तु के द्वार उन पर खोल दिये जब उनको पाकर प्रसन्न हुए एकाएक हमने उनको धर पकड़ा और वह निराश होकर रह गये। (४४) अत्याचारियों की जड़ कट गई और ईश्वर की सराहना हो जो सारे संसार का स्वामी है। (४५) पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर तुम्हारे कान और तुम्हारी आँखें छींन ले और तुम्हारे हृदय पर मुहर लगा दे तो ईश्वर के अतिरिक्त और कोई ऐसा पूजित है कि यह पदार्थ तुमको ला दे, देखो तो किस प्रकार हम प्रमाण समय-समय पर वर्णन करते हैं इस पर भी यह मुंह फेर चले जाते हैं। (४६) तो कहो देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड एकाएक या बताकर तुम पर आ उतरे तो अपराधियों के अतिरिक्त दूसरा कोई न मारा जायगा। (४७) पैगम्बरों को हम केवल इस अर्थ से भेजा करते हैं कि शुभसंवाद सुनावें और डरावें तो जो विश्वास लाया और उसने सुधार कर लिया तो ऐसे मनुष्यों पर न डर होगा और न वह उदास होंगे। (४८) जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को झुठलाया उनको आज्ञा न मानने के कारण दण्ड होगा। (४९) कहो कि मैं तुमसे नहीं कहता कि मेरे पास ईश्वर के कोष हैं और न मैं अदृश्य को जानता हूं और न मैं तुमसे कहता हूं कि मैं देवदूत हूं मैं तो

बस उसी पर चलता हूं जो मेरी ओर ईश्वर का संदेशा भेजा गया है पूछो कि कभी अन्धा और जिसको दीख पड़ता है समान हो सकते हैं क्या तुम नहीं सोचते (५०) (रुकू ५)

कुरान के द्वारा उन मनुष्यों को डराओ जो इस बात का भय रखते हैं कि अपनेपालन कर्ता के सामने लाकर उपस्थित किये जायँगे ईश्वर के अतिरिक्त न कोई उनका मित्र होगा और न सिफारिश करने वाला। सम्भवत: वे बचते रहें। (५१) जो मनुष्य प्रात: व संध्या अपने पालनकर्ता ही की ओर मुँह करके उससे दुआयें मागते हैं उनको मत निकालो। न तो उनका उत्तारदायित्व किसी प्रकार तुम्हारे ऊपर है और न तुम्हारी उत्तारदायित्व किसी प्रकार उनके ऊपर है कि उनको धक्के देने लगो तो तुम अत्याचारियों में होगे। (५२) इसी प्रकार हमने एक को एक से जाँचा जिससे वह यों कहें कि क्या हममें इन्हीं पर अल्लाह ने कृपा की है, क्या अल्लाह को सच्चे मानने वाले प्रतीत नहीं हैं। (५३) जो हमारी आयतों पर विश्वास करते हैं वे जब तुम्हारे पास आया करें तो उनको संतोष दिलाया करो और कहो कि तुम अच्छे रहो तुम्हारे पालनकर्ता ने कृपा करना अपने ऊपर ले लिया है कि जो कोई तुम में से मूर्खता के कारण कोई अपराध कर बैठे फिर किये पीछे क्षमा प्रार्थना और सुधार कह ले तो वह क्षम्य तथा कृपालु है : (५४) इसी प्रकार हम आयतों को खोल-खोल कर वर्णन करते हैं जिससे अपराधी को मार्ग दृष्टीगोचर हो जाय। (५५) (रुकू ६)

कह दो कि मुझको इस बात का निषेध है कि मैं उनकी प्रार्थना करूँ जिनको तुम ईश्वर के अतिरिक्त बुलाते हो। कहो मैं तुम्हारी आकाँक्षा पर तो चलता नहीं ऐसा करूँ तो मैं इस दशा में पथभ्रष्ट हो चुका और उन मनुष्यो में न रहा जो सीधे मार्ग पर हैं। (५६) तू कहे कि मुझे अपने पालनकर्ता की साक्षी पहुंची और तुमने उसको झुठलाया जिसकी तुम शीघ्रता मचा रहे हो वह मेरे पास तो नहीं है।

अल्लाह के अतिरिक्त और किसी का अधिकार नहीं, वह सच बात बोलता है और वह सब निर्णायकों से अच्छा है। (५७) कहो कि जिस की तुम शीघ्रता मचा रहे हो यदि मेरे पास होता तो मेरे और तुम्हारे मध्य झगड़ा मिट गया होता और अल्लाह अत्याचारियों से भली प्रकार परिचित है। (५८) उसी के पास अदृष्ट की कुञ्जियाँ हैं जिनको उसके अतिरिक्त कोई नहीं जानता और जो बन और नदी में है जानता है और कोई पत्ता तक नहीं हिलता जो उसे पता नहीं और पृथ्वी के अन्धेरे में एक दाना नाज न सूखा और न हरा जो उसकी खुली पुस्तक में न हो। (५९) और वही है जो रात्री के समय तुम्हारी आत्माओं को अधिकार में लेता है और जो कुछ तुमने दिनमें किया था जानता है फिर दिन के समय तुमको उठा खड़ा करता है जिससे अवधि निश्चित रहे जीवन पूरा हो। फिर उसी की ओर लौट जाना है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुमको बतलायेगा। (६०) (रुकू ७)

वहाँ अपने भक्तों पर आज्ञा करता है और तुम पर दर्शक भेजता है यह तक कि जब तुम में से किसी को काल आता है तो हमारे देव-दूत उसकी आत्मा निकालते हैं और वह कोताही नहीं करते। (६१) फिर ईश्वर की ओर जो उनका काम सँभालनेवाला सच्चा है वापिस बुलाये जाते हैं। सुन रखो कि उसी की आज्ञा है और वह सबसे अधिक शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (६२) पूछोकि तुमको वन और नदी के अंधेरों से कौन बचाता है वही जिसे तुम गिड़गिड़ा कर चुपके से पुकारते हो कि यदि ईश्वर हमको इस संकट से बचा ले तो हम उसके आभारी हों। (६३) ऐ पैगम्बर कहो कि इनसे और प्रत्येक प्रकार की कठोरता से ईश्वर ही तुमको बचाता है फिर भी तुम समकक्ष ठहराते हो। (६४) कहो कि वही इस पर अधिकारी है कि तुम्हारे ऊपर से या तुम्हारे पैरों के नीचे से कोई दण्ड तुम्हारे लिए निकाल खड़ा करे या तुमको विभाजित करके भिड़ा मारे और तुममें से किसी

को किसीके युद्ध का आनन्द चखाये। देखो तो सही हम आयतों को किस प्रकार फेर-फेरकर वर्णन करते हैं सम्भवतः वे समझें। (६५) और कुरान को तुम्हारी जाति नें झुठलाया यद्यपि वह सच्चा है कहो कि मैं तुम पर अधिकारी नहीं। (६६) प्रत्येक बातका एक समय निश्चित है और तुमको पता हो जायगा। (६७) और जब ऐसे मनुष्य तुम्हारी दृष्टी में आजाय जो हमारी आयतों की जो हमारी आयतों की हँसी उडा रहे हों तो उनसे हट जाओ यहाँ तक कि हमारी आयतों के अतिरिक्त दूसरी बातों में लग जाय और यदि राक्षस तुमको भुला दें तो शिक्षा के पीछे अत्याचारियों के साथ न बैठना। (६८) संयमियों पर ऐसे मनुष्यों के हिसाब का किसी प्रकार का उत्तरदायित्व नहीं परन्तु शिक्षा देना। सम्भवतः वे भय धारण कर लें। (६९) जिन्होंने अपने धर्म को खेल और तमाशा बना लिया और संसार के जीवन ने उनको धोखे में डाल रक्खा है, ऐसे मनुष्यों को छोड़ दो और कुरान के द्वारा समझाते रहो कहीं कोई व्यक्ति अपने कर्म के बदले पकड़ा न जाये कि ईश्वर के अतिरिक्त न कोई उसका साथी होगा और न सिफारिशी। और बदला यदि वह सब भी दे तो भी उससे न लिया जाय यही वह मनुष्य हैं जो अपने काम के कारण पकड़े गये इनको पीने के लिए उबलता हुआ पानी और दुःखदायी दण्ड होगा क्यों कि यह मना किया करते थे। (७०) (रुकू ८)

पूछो क्या हम ईश्वर को छोड़ कर उनको अपनी सहायता के लिए बुलावें जो न हमको लाभ पहुंचा सकते हैं और न हानि और जब अल्लाह हमको सीधा मार्ग दिखा चुका तो क्या हम उसके पश्चात भी उल्टे पैरों लौट जायं जैसे किसी व्यक्ति को भूत बहकाकर ले जाय और वन में सताता फिरे उसके कुछ साथी है वह उसको सीधे मार्ग की ओर बुला रहे हैं कि हमारे पास आ ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि अल्लाह का मार्ग ही सीधा मार्ग हैं और हमको आज्ञा मिली है कि हम समस्त संसार के पालने वाले के विश्वासपात्र होकर रहें। (७१)

और नमाज पढते और ईश्वर से डरते रहें और वही है जिसके सामने एकत्रित होंगे। (७२) और वही है जिसने नभ और पृथ्वी को अपना किया और जिस दिन फर्मायेगा कि हो* वह होजायगा। उसका कहा सच्चा है और जिस दिन नरसिंह फूका जायगा उसी का साम्राज्य होगा और वह छिपी और खुली का ज्ञाता है और वहा औपचारिक तथा सावधान है। (७३) जब इब्राहीम ने अपने पिता आज** से कहा क्या तुम मूर्तियों को पूज्य मानते हो, मैं तो तुमको और तुम्हारी कौम को स्पष्ट तथा भटके हुओं में पाता हूं। (७४) इसी प्रकार हम इब्राहीम को नभ और पृथ्वी का प्रबन्ध दिखलाने लगे जिससे यह विश्वास करने वालों में से होजावें। (७५) तो जब उन पर रात्री छा गई उनको एक तारा दीख पड़ा तो कहने लगे कि यही मेरा पालन-कर्ता है फिर जब वह छिप गया तो बोले कि अन्त हो जाने वाली वस्तुओं को तो मैं नहीं चाहता (७६) फिर जब चन्द्रमा को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे यही मेरा पालनकर्ता है फिर जब अस्त हो गया तो बोले यदि तुमको मेरा पालनकर्ता नहीं दिखलाई देगा तो निस्संदेह में भूले हुए मनुष्यों में हो जाऊँगा। (७७) फिर जब सूर्य को देखा कि बड़ा जगमगा रहा है तो कहने लगे मेरा यही पालनकर्ता सबसे बड़ा है, फिर जब वह छिप गया तो बोले भाइयों जिन वस्तुओं को तुम ईश्वर का समकक्ष मानते हो मेरा तो उनसे कुछ सम्बन्ध नहीं। (७८) मैंने तो एक ही का होकर अपना ध्यान उसी की ओर कर लिया है जिसने नभ और पृथ्वी को बनाया मैं तो

---

* अर्थात प्रलय आ जायगी।

**इब्राहीम के बाप का नाम क्या था ? कुरान में आजर बताया गया है और तौरात में तारख लिखा है। लोगों का विचार है कि उनके दो नाम थे।

मुशरिकीन में से नहीं हूं। (७६) उनके गुट के मनुष्य उनसे झगड़ने लगे कहा क्या तुम मुझसे ईश्वर के एक होने के सम्बन्ध में झगड़ते हो यद्यपि वह तो मुझको सीधा मार्ग दिखा चुका है और जिनको तुम उसका समकक्ष मानते हो मैं तो उन से कुछ डरता नहीं अतिरिक्त इसके कि ईश्वर की इच्छा हो परन्तु हाँ मेरे पालनकर्ता की विद्या में सब वस्तुएं समाई हुई हैं क्या तुम ध्यान नहीं करते । (८०) जिन वस्तुओं को तुम समकक्ष करते हो मैं उनसे क्यों डरने लगा जबकि तुम इस बात से नहीं डरते कि तुमने अल्लाह के साथ ऐसी वस्तुओं को समकक्ष ईश्वरीय बनाया जिनके प्रमाण पत्र ईश्वर ने तुम्हारे लिए नहीं उतारे तो दोनों समाजों में से कौन सा शान्ती का अधिक अधिकारी है, यदि बुद्धि रखते हो तो कहो। (८१) जो मनुष्य ईश्वर पर विश्वास लाये और उन्होंने अपने धर्म में अत्याचार नहीं मिलाया यही वे मनुष्य हैं जो शान्ति चाहने वाले हैं और ये ही सीधे मार्ग पर हैं। (८२) (रुकू ९)

यह हमारा प्रमाण था जो हमने इब्राहीम को उनकी जाति की बात के अनुकूल करने लिए बताई है । हम जिनको चाहते हैं उनका पद ऊँचा कर देते हैं। ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनेवाला चमत्कार वाला है और सब कुछ जानता है। (८३) और हमने इब्राहीम को इसहाक और याकूब दिये, उन सबको सावधान किया और पहले नूह को भी हमने सावधान कर दिया था और उन्हीं के वंश में से दाऊद, सुलेमान, ऐयूब, यूसुफ' मूसा और हारूं को सावधान किया था और हम भलों को ऐसा ही बदला देते हैं। (८४) अतः जकरिया, यहिया, ईसा और इलयास भलों में हैं। (८५) इस्माईल, इलयास, यूनिस और लूत सभी को खूब समस्त संसार के मनुष्यों पर ऊंचाई दी । (८६) इनके बड़ों और इनकी संतान और इनके भाईबन्दों में से कुछ को हमने चुना और इनको सीधा मार्ग दिखला दिया। (८७) यह अल्लाह की शिक्षा है अपने सेवकों में से जिसको चाहे इस प्रकार का उपदेश

दे और यदि वह समकक्ष मानते होते तो इनका दिया धरा इनसे निरर्थक हो जाता। (८८) यह वह मनुष्य है जिनको हमने पुस्तक और अधिकार दिया और पैगम्बरी भी दी तो यह मक्का के काफिर यदि इनका मान न करें तो हमने इन पर मनुष्य निश्चित कर दिये हैं* जो इनके न माननेवाले नहीं हैं। (८९) उन्हें अल्लाह ने शिक्षा की कि तू उनकी शिक्षा पर चल। कह दो कुरान पर तुमसे कुछ परिश्रमिक नहीं माँगता यह कुरान तो समस्त संसार के मनुष्यों के लिए उपदेश है। (९०) (रुकू १०)

उन्होंने जैसा मान अल्लाह का करना चाहिए था वैसा उसका मान न किया, कहने लगे कि ईश्वर ने किसी मनुष्य पर कोई वस्तु नहीं अवतरित की। पूछो कि वह पुस्तक किसने अवतरित की जिसे मूसा लेकर आये जो मनुष्यों के लिए प्रकाश है और उपदेश है, तुमने उसके प्रथक-प्रथक पृष्ठ बनाकर प्रकट किया और बहुतेरे पृष्ठ तुम्हारे स्वार्थ के विरुद्ध हैं उनको मनुष्यों से छिपाते हो और उसी पुस्तक के द्वारा तुमको वे बातें बताई गई हैं जिनको न तुम जानते थे और न तुम्हारे पूर्वज। कहो कि वह पुस्तक अल्लाह ने अवतरित की थी फिर उनको छोड़ दे कि अपनी संधों में खेल करें। (९१) और यह पुस्तक नभ की है जिसको हमने अवतरित किया उन्नतवाली है और जो पुस्तकें इससे पहले की हैं उनको प्रमाणित करती हैं और ऐ पैगम्वर हमने इसको इस कारण से अवतरित किया है कि तुम मक्कावालों को और जो मनुष्य उसके आस-पास रहते हैं उनको डराओ और जो व्यक्ति प्रलय का विश्वास रखते हैं वह तो इस पर विश्वास ले आते हैं और वह अपनी नमाज की खबर रखते हैं। (९२) उससे बढ़कर और अत्याचारी कौन होगा लो अल्लाह पर भूंठ बाँधे या दावा करे कि मुझ पर ईश्वर का संदेश आया है यद्यपि उसकी ओर कुछ भी ईश्वर का संदेशा न आया हो और जो कहे कि जैसे अल्लाह अवतरित करता

***जैसे मदीने के रहने वाले जो अंसार कहलाते हैं।**

है वैसे ही मैं भी अवतरित करता हूं अतः अत्याचारी जब मृत्यु की बेहोशियों में पड़े होंगे और देवदूत हाथ फैला के कहेंगे अपनी जानें निकालो अब तुमको नरक का दण्ड दिया जायेगा इसलिए कि तुम ईश्वर पर व्यर्थ झूंठ बोलते और उसकी आयतों से अकड़ा करते थे। (९३) और पहली बार जैसा हमने तुमको उत्पन्न किया था वैसे ही अकेले तुम हमारे पास एक-एक करके आओगे और जो कुछ हमने तुमको दिया था अपनी पीठ पीछे छोड़ आये और तुम्हारी सिफारिश करनेवालों को हम तुम्हारे साथ नहीं देखते जिनको तुम समझते थे कि यह तुममें सम्मिलित हैं अब तुम्हारे आपस के मेल टूट गये और जो दावे तुम किया करते थे तुमसे व्यतीत हो गये। (९४) (रुकू ११)

वह दाने और गुठली का फाड़नेवाला है और मृतक से जीवित और जीवित से मृतक निकालता है यही तुम्हारा ईश्वर है फिर तुम कहाँ भटके चले जा रहे हो। (९५) उसी के किये से प्रातःकाल पौ फटती है और उसी ने विश्राम के लिए रात्री और हिसाब के लिए सूर्य और चंद्रमा बनाये हैं यह उसी की बुद्धी के कृत्य हैं। (९६) वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाये जिससे वन और नदी के अन्धेरे में उनसे शिक्षा पाओ जो लोग समझदार हैं उनके लिए हमने निशानियाँ खूब विस्तार से वर्णन कर दी हैं। (९७) और वही है जिसने तुम सबको एक देह से उत्पन्न किया फिर कहीं तुमको ठहराव है और कहीं सौगात रहना पिता की कमर और माता का पेट जो लोग समझते हैं उनके लिए हम निशानियाँ स्पष्ट वर्णन कर चुके हैं। (९८) और वही है जिसने नभ से पानी बरसाया फिर उससे प्रत्येक प्रकार के अंकुर निकाले फिर अंकुर से हमने हरी-हरी टहनियाँ निकाल खड़ी कीं कि उनसे हम गुथे हुए दाने निकालते हैं और खजूर के गुच्छे में से झुके पड़ते हैं और अंगूर के उपवन और जैतून अनार रूप में मिलते-जुलते और स्वाद में मिलते-जुलते नहीं इनमें से प्रत्येक वस्तु जब पकती है तो उसका फल और फल का पकना देखो। निस्सन्देह जो

मनुष्य विश्वास रखते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (९९) और मुशरिकों ने भूतों को ईश्वर का समकक्ष बना खड़ा किया यद्यपि ईश्वर ही ने भूतों को उत्पन्न किया और बे जाने-बूझे ईश्वर से पुत्रियों का होना ठहराते हैं ईश्वर के विषय में जैसी जैसी बातें यह वर्णन करते हैं वह पवित्र है जो इन बातों से बहुत दूर है। (१००) (रुकू १८)

वह नभ और पृथ्वी का बनानेवाला है और उसकी संतान क्यों होने लगी उसके कोई स्त्री नहीं और उसी ने प्रत्येक वस्तु को बनाया है और यही प्रत्येक वस्तु का ज्ञाता है। (१०१) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता है उसके अतिरिक्त और कोई के योग्य नहीं और वही सब वस्तुओं का बनानेवाला है तो उसी की प्रार्थना करो और वही प्रत्येक वस्तु की रक्षा करनेवाला है। (१०२) आँखें उसको बतला नहीं सकतीं और वह आँखों को खूब जानता है और वह बड़ा बारीक देखनेवाला सावधान है। (१०३) मनुष्यों तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सूझ की बातें तुम्हारे पास आ ही चुकी हैं फिर जिसने देखा अपना भला किया और जो अंधा रहा अपने लिए बुराई की मैं तुम्हारा रक्षक नहीं हूं। (१०४) इसी प्रकार हम आयतों को वर्णन करते थे जिससे उनको कहना पड़े कि तुमने पढ़ा है और जो बुद्धी रखते हैं हम उनको कुरान अच्छी प्रकार समझा दें। (१०५) ऐ पैगम्बर ! कुरान जो तुम्हारे पालनकर्ता के यहाँ से संदेश भेजा गया है उसी पर चले जाओ ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूजित नहीं और मुशरिकीन से दूर रहो। (१०६) यदि ईश्वर चाहता तो वे समकक्ष न ठहराते और हमने तुमको इन पर दर्शक नहीं किया और न तुम इन पर वकील हो। (१०७) और ये ईश्वर के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं उनको बुरा *न कहो कि यह मूर्खता के कारण व्यर्थ ईश्वर को बुरा कह बैठें,

*कुछ मुसलमान बुतों की काफिरों के सामने गाली देने लगे थे। ऐसा करने से उन्हे रोका गया है ताकि काफिर उलट कर खुदा को बुरा न कहने लगे।

इसी प्रकार हमने प्रत्येक समाज के काम उनको अच्छे कर दिखलाये* हैं फिर इनको पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है तो जैसे-जैसे काम कर रहे थे उनको ईश्वर बतायेगा। (१०८) और मक्केवाले अल्लाह की कठिन कसम खाकर कहते हैं कि यदि कोई निशानी उनके सामने आये तो वह अवश्य विश्वास ले आयेंगे, तुम समझा दो कि निशानियाँ तो अल्लाह के ही पास हैं और तुम क्या जानो यह तो निशानी आने पर भी विश्वास नहीं लायेंगे। (१०९) और हम उनके हृदय और उनकी आँखों को उलट देंगे जैसे कुरान पर प्रथम वार विश्वास नहीं लाये थे और हम इनको छोड़ देंगे कि पड़े भटका करें। (११०) (रुकू १३)

आठवाँ पारा (वलौ अन्नना)

और यदि हम इन पर देवदूतों को भी अवतरित कर दें या स्वयं भी इनसे बातें करें और प्रत्येक वस्तु उनके सामने जीवित कर दें तब भी यह सब कभी भी विश्वास न लावेंगे परन्तु इनमें के प्रायः नहीं समझते। (१११) इस प्रकार हमने प्रत्येक पैगम्बर के लिये मनुष्य और भूतों में से राक्षस उत्पन्न किये और जो एक दूसरे को मुलम्मा-जैसी असत्य बात धोखा देने को सिखाते हैं सो उनको छोड़ दे और उनके असत्य को (११२) जिससे जो मनुष्य प्रलय का विश्वास नहीं रखते उनके हृदय उनकी बातों की ओर ध्यान दें और वह उनकी बातों से राजी हों और जो बुरे काम यह करते हैं उसका दण्ड पायें। (११३)

---

*हर एक अपनी बातों को अच्छा समझता है।

क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त कोई और पंच तलाश करूँ यद्यपि उसने तुम मनुष्यों की ओर पुस्तक भेजी जिसमें विस्तार है वह मनुष्य जिनको हमने पुस्तक दी है इस बात को जानते हैं कि कुरान वास्तविकता में पालनकर्ता की ओर अवतरित है सो तू सन्देह करने वालों में न हो जाना। (११४) और तेरे पालनकर्ता की बात सत्य और न्याय की है। कोई उसकी बात को बदल नहीं सकता और वह सुनता और सब कुछ जानता है। (११५) और बहुत से मनुष्य संसार में ऐसे हैं कि यदि उनके कहे पर चलो तो तुमको ईश्वर के मार्ग से भटका दें, यह तो केवल अपने अनुमान पर चलते और निरा अनुमान लगाते हैं। (११६) जो मनुष्य ईश्वर के मार्ग से भटके हुए हैं उन्हें तो पालनकर्ता खूब जानता है और जो सीधे मार्ग पर हैं उनको भी खूब जानता है। (११७) बस यदि तुम को उसकी आज्ञाओं का विश्वास है तो जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो उस वस्तु को खाओ। (११८) क्या कारण है कि तुम उसमें से न खाओ जिस पर अल्लाह का नाम लिया गया हो यद्यपि जो वस्तुऐं ईश्वर ने तुम पर निषिद्ध कर दी हैं वह पूर्ण रूप से तुम से वर्णन कर दी हैं। वह वस्तु कि निषेध तो है परन्तु भूख इत्यादि के कारण से तुम उस पर विवश हो जाओ तो वह भी निषेध नहीं और बहुत से तो बिना समझे अपनी इच्छाओं के अनुसार बहकाते हैं। जो सीमा से बाहर हो जाते हैं तुम्हारा पालनकर्ता उनको खूब जानता है। (११९) स्पष्ट और छिपे हुए अपराध से दूर रहो, जो अपराध करते हैं उनको अपने काम का फल मिलेगा। (१२०) जिस पर ईश्वर का नाम न लिया गया हो उसमें से मत खाओ और उसमें से खाना पाप है और राक्षस अपने मित्रों के हृदयमें डालते हैं कि तुमसे झगड़ा करें और यदि तुमने उनका कहा मान लिया तो तुम मुशरिक हो जाओगे। (१२१) (रुकू १४)

एक व्यक्ति जो मृत था हमने उसमें जीवन डाला और उसको

प्रकाश दिया*वह मनुष्यों में उसको लिए फिरता है क्या वह उस व्यक्ति जैसा हो जायगा जो अंधेरे में है। वहां से निकल नहीं सकता। इसी प्रकार काफिरों को जो कुछ भी कर रहे हैं भला दिखाई देता है। (१२२) और इसी प्रकार हमने प्रत्येक बस्ती में बड़े-बड़े अपराधी उत्पन्न किये जिससे वहाँ उत्पात करते रहें। और जो उत्पात वह करते हैं अपने ही जानों के लिए करते हैं और नहीं समझते। (१२३) और जब मक्कावालों के पास कोई आयत आती हैं तो कहते हैं कि जैसी ईश्वर के पैगम्बर को दी गई है जब तक हमको न दी जाये हम तो विश्वास लाने वाले नहीं हैं। ईश्वर जिस पर अपना सन्देश भेजता है खूब जानता है। जो अपराधी हैं उनको नरक मिलेगा और धोखा देने वालों को कठोर दण्ड होगा। (१२४) जिसको ईश्वर सीधा मार्ग दिखाना चाहता हैं उसके हृदय को इस्लाम के लिए खोल देता है और जिस व्यक्ति को भटकाना चाहता है उसके हृदय को क्षुद्र कर देता है माना शक्ति से नभ पर विश्वास से भागने के लिए चढ़ता है। जो विश्वास नहीं लाते उन पर उसी प्रकार अल्लाह की फटकार पड़ती है। (१२५) और यह तुम्हारे पालनकर्ता का सीधा मार्ग है। जो ध्यान देते हैं उनके लिए हमने आयतें विस्तार के साथ वर्णन की हैं। (१२६) उनके लिए तेरे पालनकर्ता के यहाँ शान्ति का घर है और जो उसके अनुसार कार्य करते हैं उसके बदले में वही उनकी सूचना देनेवाला होगा। (१२७) और जिस दिन ईश्वर सबको एकत्रित करेगा कहेगा ऐ भूतों के समाज ! आदम के पुत्रों में से तो तुमने अच्छा बड़ा समाज अपनी ओर कर लिया और आदम की संतान में से जो राक्षस के मित्र हैं कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्ता ! हम एक दूसरे से लाभ उठाते रहे हैं और जो समय हमारे लिए नियत किया था हम उस तक पहुंच गये। ईश्वर कहेगा कि तुम्हारा स्थान नरक है उसी में सदैव रहोगे। आगे ईश्वरेच्छा। निस्संदेह तुम्हारा पालनकर्ता चमत्कारवाला और

* अर्थात ज्ञान दिया।

ज्ञाता है। (१२८) और इसी प्रकार हम कुछ अत्याचारियों को किन्हीं के ऊपर नियुक्त कर देंगे ! यह उनकी कमाई का फल है। (१२९) (रुकू १५)

फिर हम भूतों और आदम के पुत्रों दोनों से सम्मुख होकर पूछेंगे कि क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में के पैगम्बर नहीं आये कि तुमसे हमारी आज्ञाएें वर्णन करें और प्रलय के आने से तुमको डरायें। वह कहेंगे हम अपने ऊपर आप ही साक्षी देते हैं और संसार के जीवन ने उनको धोखे में रक्खा और उन्होंने आप ही अपने ऊपर साक्षी दी कि निस्संदेह वे काफिर थे।(१३०) यह सब इस कारण से है कि तुम्हारा पालनकर्ता बस्तियों के अत्याचार से आक्रान्त करने वाला नहीं और यहाँ के रहने वाले बेसुध हों। (१३१) और जैसे-जैसे कर्म किये हैं उन्हीं के अनुसार सबके पद होंगे और जो कुछ कर रहे हैं तुम्हारा पालनकर्ता उससे असावधान नहीं। (१३२) और तेरा पालनकर्ता निश्चिन्त और दया-वाला है चाहे तुमको ले जाय और तुम्हारे पश्चात जिसको चाहे तुम्हारे स्थान पर नियुक्त करे जैसा दूसरों की संतान में से तुमको उत्पन्न कर दिया। (१३३) जो तुमको वचन दिया। अर्थात दण्ड सो आने वाला है। और तुम रोक नहीं सकते। (१३४) कहो कि भाइयों तुम अपने स्थान पर काम करो मैं अपने स्थान पर काम करता हूं। फिर आगे चल कर तुमको प्रतीत हो जायगा कि अन्त में किसका काम अच्छा है अत्याचारियों का भला न होगा। (१३५) ईश्वर की उप-जाई हुई खेती और चौपायों में अल्लाह का भी एक भाग ठहराते हैं तो अपने विचारों के अनुसार कहते हैं कि इतना तो ईश्वर का और इतना हमारे समकक्षों का अर्थात उन पूजितों का जिनको ईश्वर का समकक्ष मान रक्खा है) फिर जो भाग इनके माने हुए समकक्षों का होता है वह अल्लाह कि ओर नहीं पहुंचता और जो अल्लाह का है वह हमारे समकक्षों को पहुंच जाता है क्या बुरा न्याय करते हैं।

(१३६) इसी प्रकार प्रायः मुशरिकों की दृष्टी में उनके समकक्षों ने सन्तान अर्थात कन्याओं को मार डालना पसंद किया और उनके धर्म में संदेह डाल दिया और ईश्वर चाहता तो यह ऐसा काम न करते सो उनको छोड़ दो वे जाने और उनका झूठ जाने। (१३७) और कहते हैं कि चौपाये और खेती पाप हैं कि उनको उस व्यक्ति के अति-रिक्त जिनको हम अपने विचार के अनुसार चाहें नहीं खा सकते और कुछ चौपाये ऐसे हैं कि उनको पीठ पर सवार होना व लादना मना है और कुछ चौपाये ऐसे हैं जिनको काटने के समय उन पर अल्लाह का नाम नही लेते ईश्वर पर झूठ बाँधते हैं कि उसने ऐसा कहा है वह कटोर दण्ड देगा। (१३८) कहते है कि इन चौपायों के पेट से जो बच्चा जीवित निकले वह हमारे मनुष्यों के लिए भोग्य और हमारी स्त्रियों पर निषेध है और यदि मरा हुआ हो तो पुरुष और स्त्री उस में सम्मलित हैं ईश्वर इनको इन बातों का दण्ड देगा वह चमत्कारवाला सावधान है। (१३९) निस्संदेह वह मनुष्य हानि में हैं जिन्होंनें पागलपना और नीचता से अपने बच्चों को मार डाला और अल्लाह ने जो जीवका उनको दी थी ईश्वर पर झूठ बाँध कर उसको पाप कर लिया—यह मनुष्य भटक गये औट मार्ग पर नहीं आये। (१४०) (रुकू १६)

वही है जिसने उपवन उत्पन्न किए और खजूर के वृक्ष और खेती जिनके कई प्रकार के फल होते हैं और जैतून और अनार एक दूसरे से मिलते-जुलते और नहीं भी मिलते-जुलते हैं यह सब वस्तुएँ जब फलें इनके फल खाओ और इनके काटने के दिन अधिकार अल्लाह का अर्थात दान दे दिया करो और अपव्यय मत करो क्योंकि अपव्यय करने वालों को ईश्वर पसंद नहीं करता। (१४१) चौपाओं में बोझ उठाने वाले उत्पन्न किये जसे ऊंट और कोई पृथ्वी से लगे हुए जो नहीं लादे जाते जैसे भेड़-बकरी और ईश्वर ने जो तुमको जीविका दी है उसमें से खाओ और राक्षस का अनुकरण न करो क्योंकि वह तुम्हारा स्पष्ट

शत्रु है।(१४२) आठ पुरुष और स्त्री अर्थात चार युगल उत्पन्न किये हैं, भेड़ों में से दो और बकरियों में से दो, ऐ पैगम्बर पूछो कि ईश्वर ने दो पुरुषों को निषेध कर दिया है या दो स्त्रियों को या जो इन दो स्त्रियों के बच्चों (पेटों) में हैं, यदि तुम सच्चे हो तो मुझको प्रमाण-पत्र बतलाओ। (१४३) ऊँटों में से दो और गाय से दो ऐ पैगम्बर पूछो दो नरों को निषेध कर दिया है या दो मादीनों को या बच्चा जो मादीनों के पेट में है तुमको इन वस्तुओं के निषेध कर देने की आज्ञा दी थी उस समय तुम क्या उपस्थित थे ? तो उस व्यक्ति से बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो मनुष्यों को मार्ग से भटकने के लिए अनसमझे ईश्वर पर झूठ बाँधे। ईश्वर अत्याचारियों को मार्ग नहीं दिखाता। (१४४) (रुकू १७)

कहो कि कोई भक्षक कुछ खाय मेरी ओर जो ईश्वर का सन्देश आया है उसमें तो मैं कोई वस्तु पाप नहीं पाता परतु यह कि वह वस्तु मृत्यु हो या बहता हुआ खून या सूअर का माँस, वस्तुएँ अपवित्र हैं या अवज्ञा का कारण हो या ईश्वर के अतिरिक्त किसी दूसरे के नाम पर काटा हो उस पर भी जो व्यक्ति विवश हो तो तेरा पालनकर्ता क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१४५) यहूदियों पर हमने समस्त नाखून वाले जानवरों को पाप बताया और हमने गाय और बकरियों में से चर्बी को भी पाप बताया वह चर्बी जो उनकी पीठ पर लगी हो या अंतड़ियों पर या हड्डी से मिली हो। यह हमने उनको उनकी चंचलता का दण्ड दिया था और हम सच्चे हैं। (१४६) इस पर भी यह मनुष्य तुमको झुठलावें तो कहो कि तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा दयालु है और अपराधी से उसका दण्ड नहीं टलता। (१४७) मुशरिक कहेंगे कि यदि ईश्वर चाहता तो हम और हमारे पिता-पितामह मुशरिक न होते और न हम किसी वस्तु को पाप करते। इसी प्रकार उनके अगलों ने झुठलाया है यहाँ तक कि हमारा दण्ड का आनन्द

चखा। पूछो कि क्या तुम्हारे पास कोई प्रमाणपत्र भी है। उसको हमारे लिए निकालो। निरे भ्रम पर चलते और निरे अनुमान ही भगाते हो। (१४८) कहो अल्लाह की इज्जत पूर्ण हुई फिर यदि वह चाहता तो तुम सबको मार्ग दिखला देता। (१४९) कहो कि अपने साक्षियों को उपस्थित करो जो इस बात की साक्षी दें कि अल्लाह ने यह वस्तु इनको पाप की है बस यही साक्षी भी दे तो तुम उनके साथ उन जैसी न कहना और न उन मनुष्यों की हार्दिक आकाँक्षाओं पर चलना जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और जो प्रलय का विश्वास नहीं रखते और वह दूसरे को पालनकर्ता के समान समझते हैं। (१५०) (रुकू १८)

कहो कि आओ मैं तुमको वह वस्तुएं पढ़कर सुनाऊं जो तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम पर पाप की हैं। यह कि किसी वस्तु को ईश्वर का समकक्ष मत ठहराओ और मात-पिता के साथ भलाई करते रहो और निर्धनता के भय से अपने बच्चों को मार डालो, हम तुमको जीविका देते हैं और उनको भी निर्लज्जा की बातें जो स्पष्ट हों और छिपी हुई हों उनमें से किसी के पास भी मत फटकना और जिस जान को अल्लाह ने पाप कर दिया है उसे मार न डालना। यदि अधिकार पर, यह वह बातें हैं लिनकी आज्ञा ईश्वर ने तुमको दी है जिससे तुम समझो। (१५१) अनाथ के धन के पास मत जाना। अतिरिक्त इसके कि उसकी भलाई हो और जब तक कि वह बालिग न हो जायें। और न्याय के साथ पूरी-पूरी नाप या तोल करो। हम किसी व्यक्ति पर उसकी शक्ति से बढ़कर बोझ नहीं डालते और जब कुछ कहो तो सम्बन्धी ही क्यों न हो न्याय की कहो और अल्लाह की प्रतिज्ञा को पूरा करो यह वह बातें हैं जिनकी तुमको ईश्वर ने आज्ञा दी है सम्भतः तुम ध्यान दो। (१५२) यही हमारा सीधा मार्ग है तो इसी पर चले जाओ और दूसरे मार्ग पर न पड़ना यह तुमको ईश्वर के मार्ग से बिछुड़ेंगे यह बातें हैं जिनकी ईश्वर ने तुमको आज्ञा दी है सम्भवतः तुम बचते रहो। (१५३)

फिर हमने मूसा को पुस्तक दी जिससे भलाई करने वालों पर हमारी कृपा पूरी हुई और उसमें समस्त बातों को आज्ञाओं का वर्णन उपस्थित हैं और उपदेश और दया है और यह पुस्तक मूसा को इसलिए दी गई कि सम्भवतः वह अपने पालनकर्ता से मिलने का विश्वास लायें। (१५४) (रुकू १९)

यह पुस्तक हमने अवतरित की है उन्नतशील है तो इसी पर चलो और डरते रहो सम्भवः तुम पर दया की जाय। (१५५) और ऐ मुशरिकीन अरब! हमने यह इसलिए अवतरित की कि कहीं यह न कह बैठो कि हमसे पहले बस दो ही समाजों पर पुस्तक अवतरित हुई थी और हम तो उसके पढ़ने पढ़ाने से बिलकुल असावधान थे। (१५६) या यह कहने लगो कि यदि हम पर यह पुस्तक अवतरित हुई होती तो हम अवश्य इनको पढ़कर सच्चे मार्ग पर होते। तो अब तुम्हारे पालन-कर्ता की ओर से तुम्हारे पास प्रमाण और उपदेश और दया आ गई हैं तो उससे बढ़कर अत्याचारी कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुठलाएं और उनसे मित्रता धारण करे और जो मनुष्य हमारी आयतों से मित्रता धारण करते हैं हम शीघ्र उनकी मित्रता के बदले उनको बड़ा दुखदाई दण्ड देंगे। (१५७) यह मनुष्य इसी बात की बाट देख रहे हैं कि देवदूत इनके पास आयें या तुम्हारा पालनकर्ता इनके पास आये या तुम्हारे पालनकर्ता का कीई चमत्कार प्रकट हो। जिस दिन तुम्हारे पालनकर्ता का कोई चमत्कार स्पष्ट होगा तो जो व्यक्ति उससे पहले विश्वास नहीं लाया या अपने धर्म में उसने कुछ भलाई न की थी अब उसका विश्वास लाना उसको कुछ भी लाभकारी न होगा तो कहो कि मार्ग देखो हम भी मार्ग देखते हैं। (१५८) जिन मनुष्यों ने अपने धर्म में भेद डाला और कई समाज बन गए तुमको उनसे कोई काम नहीं उनकी समस्या ईश्वर के हाथ में है। फिर जो कुछ किया करते थे उनको बतायेगा। (१५९) जिसने भलाई की तो उसका दस-गुना उसको मिलेगा और जिसने बुराई की तो वह उसके सामने दण्ड

भुगतेगा और उन पर अत्याचार नहीं होगा। (१६०) कहो मुझको तो मेरे पालनकर्ता ने सीधा मार्ग बता दिया है कि वही इब्राहीम का उचित धर्म है कि वह एक ही के हो रहे थे और मुशरिकों में से न थे। (१६१) कहो कि मेरी नमाज और मेरी पूजा तथा मेरा जीना और मेरा मरना अल्लाह के लिए है जो सारे संसार का पालनकर्ता है (१६२) कोई उसके समान नहीं और मुझको ऐसी ही आज्ञा मिली है और मैं उसके विश्वासपात्रों में पृथक हूं। (१६३) पूछो कि क्या मैं ईश्वर के अतिरिक्त कोई और पालनकर्ता ढूंढ़ूं बस समस्त वस्तुओं का पालनकर्ता है और प्रत्येक व्यक्ति अपने कर्म का उत्तरदाई है और कोई व्यक्ति किसी दूसरे का बोझ नहीं उठायेगा फिर तुमको अपने की ओर जाना है तो जिस बात में झगड़ते थे वह तुमको बतलायेगा। (१६४) और वही है जिसने पृथ्वी में तुमको उत्तराधिकारी बनाया है और तुममें से किसी के पद किसी से ऊँचे किए जिससे जो पदार्थ तुमको दिये हैं उनमें तुम्हारी जाँच करे। तुम्हारा पालनकर्ता शीघ्र दण्ड देनेवाला है और वह क्षम्य तथा कृपालु है। (१६५) (रुकू २०)

सूरे आराफ

यह सूरत मक्के में अवतरित हुई, इसमें २०६ आयतें और २४ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम-स्वाद। (१) यह पुस्तक तेरी ओर इसलिये अवतरित हुई कि तेरा हृदय संकुचित न हो कोई सन्देह न रहे जिससे तू इसके द्वारा डरावे और धर्म वालों को शिक्षा मिले। (२) जो तुम्हारे

पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है इसी पर चले जाओ और ईश्वर के अतिरिक्त और मार्ग बताने वाले के पीछे मत चलो तुम कम ध्यान देते हो। (३) और कितनी बस्तियाँ हमने नष्ट कीं और रात्री के समय या दोपहर. दिन को सोते समय हमारा दण्ड उन पर पहुंचा। (४) जब हमारा दण्ड उन पर पहुंचा तो और कुछ न बोल सके यही कहा कि हम पापी थे। (५) तो जिन की ओर पैगम्बर भेजे गये थे हम उनसे अवश्य पूछेंगे और पैगम्बर से भी पूछेंगें। (६) फिर हम अपने ज्ञान से उनको सब हाल सुना देंगे और हम कहीं छिपे न थे। (७) और भार उस दिन ठीक होगा। तो जिनकी भार अधिक हो सो वही मनुष्य इच्छा की पूर्ती प्राप्त करेंगे। (८) जिनके कामों का भार हल्का ठहरेगा उन्होंने अपनी जानें संकट में डाली कि हमारी आयतों पर अत्याचार करते थे। (९) हमने तुमको पृथ्वी में स्थान दिया और उसी में तुम्हारे लिए जीवन की सामग्री इकट्ठी की तुम बहुत कम आभार मानते हो। (१०) (रुकू १)

हमने ही तुमको उत्पन्न किया और फिर तुम्हारा रूप बनाया और फिर हमने देवदूतों को आज्ञा दी कि आदम के आगे तो झुक गये परन्तु वह इबलीस* झुकने वालों में न हुआ। (११) पूछो कि तुमको किस वस्तु ने माथा नवाने से रोका—बोला मैं आदम से अच्छा हूं, मुझको तूने अग्नि से उत्पन्न किया और उसको मिट्टी से उत्पन्न किया। (१२) बोला तू यहाँ से चला जा क्योंकि तुझे उचित नहीं है कि घमण्ड करे सो निकल तू नीचों में है। (१३) वह बोला कि जिस दिन मनुष्य उठा खड़े किये जायँगे उस दिन तक का मुझे अवकाश दे। (१४) कहा तुझको अवकाश दिया गया। (१५) इस पर राक्षस बोला जैसा तूने मेरी मार्ग में मारा है मैं भी तेरे मार्ग पर मनुष्यों की घात में जा बैठूँगा।

***इबलीस—उसे कहते हैं जिसका जुल्म उसी पर हो आगे न बढ़े।**

(१६) फिर उन पर आगे से और पीछे से और दाहिनी और बाईं ओर से आऊँगा और तू उनमें बहुतों को आभारी नहीं पावेगा। (१७) कहा कि पापी निकाला हुआ यहाँ से निकल। आदम के पुत्रों में से जो तेरा समर्थन करेगा हम निस्सन्देह तुम सबसे नरक भर देंगे। (१८) और हमने आदम से कहा कि ऐ आदम, तुम और तुम्हारी स्त्री स्वर्ग में रहो और जहाँ से चाहो खाओ परन्तु इस वृक्ष के पास न फटकना नहीं तो तुम पापी होगे। (१९) फिर राक्षस ने पति-पत्नि दोनों को बहकाया जिससे उनकी स्मरण करने की वस्तुएं जो उनसे छिपी थीं उन्हें खोल दिखा दें और कहने लगा तुम्हारे पालनकर्ता ने जो इस वृक्ष के फल खाने से तुमको मना किया है तो इसका कारण यही है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम दोनों देवदूत बन जाओ या अमर हो जाओ। (२०) और उसने कसम खाई कि मैं तुम्हारी भलाई चाहने वाला हूं। (२१) अतः धोखे से उनको प्रसंग के लिए आकर्षित कर लिया तो ज्योंही उन्होंने वृक्ष चखा तो दोनों के पर्दे करने की वस्तुएं उनको दिखाई देने लगीं और अपने ऊपर पत्ते ढाँपने लगे, उनके पालनकर्ता ने उनका पुकारा। क्या हमने तुमको इस वृक्ष की मनाई नहीं की थी और तुमसे नहीं कह दिया था कि राक्षस तुम्हारा प्रकट शत्रु है। (२२) दोनों कहने लगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हमने अपने को आप नष्ट किया और यदि तू हमको क्षमा नहीं करेगा और हम पर दया नहीं करेगा तो हम मिट जायंगे। (२३) कहा कि तुम पति-पत्नि और राक्षस तीनों स्वर्ग से नीचे उतर जाओ, तुममें एक का एक शत्रु है और तुमको एक विशेष समय तक पृथ्वी पर रहना होगा और एक समय तक बर्तना होगा। (२४) कहा कि पृथ्वी ही में तुम सब जीवन व्यतीत करोगे और उसी में मरोगे और उसी में से निकाल खड़े किये जाओगे। (२५) (रुकू २)

ऐ आदम के पुत्रों, हमने तुम्हारे लिए वस्त्र उतारे हैं जो तुम्हारी पर्दे की वस्तुओं को छिपाये और सुन्दरता और संयम के वस्त्र भले हैं।

ये ईश्वर की निशानियाँ हैं, सम्भवतः तुम ध्यान दो। (२६) ऐ आदम के पुत्रों राक्षस तुझको भटका न दे जिस प्रकार कि उसने तुम्हारे माता-पिता को* स्वर्ग से निकलवाया कि उनसे उनके वस्त्र उतरवा दिये जिससे उनकी पर्दा करने की वस्तुएं उन पर प्रकट कर दे वह और उसकी संतान तुमको देखते हैं जिधर से तुम उनको नहीं देखते। हमने राक्षस को उन्हीं मनुष्यों का मित्र बनाया है जो विश्वास नहीं लाते। (२७) और जब किसी बुरे काम के अपराधी होते हैं तो कहते हैं कि हमने अपने बड़ों को इसी पर चलते पाया और अल्लाह ने हमको इसकी आज्ञा दी है ऐ पैगम्बर कहो कि अल्लाह तो बुरे काम की आज्ञा नहीं देता। तुम मूर्ख ईश्वर पर क्यों झूठ बोलते हो। (२८) ऐ पैगम्बर कहो कि मेरे पालनकर्ता ने न्याय की प्रत्येक मसजिद में सीधा मुंह रखने की आज्ञा है और विशुद्ध उसी की सेवा ध्यान में रखकर उसको पुकारो जिस प्रकार तुमको पहिले उत्पन्न किया था उसी तरह तुम दुबारा भी उत्पन्न होगे। (२९) उसी ने एक गुट को शिक्षा दी और एक गुट को भटका दिया। मनुष्यों ने ईश्वर को छोड़कर राक्षस को पकड़ा और समझते हैं कि वह सीधी मार्ग पर है। (३०) ऐ आदम के पुत्रो ! प्रत्येक नमाज के समय से कपड़ों सजकर आया करो और खाओ और पीयो और अपव्यय न करो क्योंकि ईश्वर अपव्यय करने वालों को नहीं चाहता। (३१) (रुकू ३)

कहो अल्लाह ने जो आसायश और खाने की साफ वस्तुएं अपने भक्तों के लिए उत्पन्न की हैं किसने पाप बताई है** समझा दो कि संसार के जीवन में जो वस्तुएं धर्म वालों के लिए हैं प्रलय के दिन यह विशेषकर उन्हीं को दी जायंगी। इसी प्रकार हम समझदारों को

*** आदम और हव्वा।**

**** मक्के वालों की धारणा थी कि कुछ प्रकार के खान-पान मना हैं। ये ऐसी चीजें थीं जैसे ऊंटनी के पेट से निकला हुआ बच्चा।**

आयतें विस्तार के साथ वर्णन करते हैं। (३२) कहो कि केवल निर्लज्जता के कामों को मना किया है उनमें जो खुले और छिपे हों और अपराध और अकारण असीमितता और इस बात को कि तुम किसी को ईश्वर का समकक्ष ठहराओ जिसको उसने कोई प्रमाणपत्र नहीं उतारा और यह कि ईश्वर पर पाप लगाने लगो जो तुम्हें प्रतीत नहीं। (३३) प्रत्येक जाति की एक अवधि है फिर जब उनकी मृत्यु आवेगी तो न एक घड़ी घटेगी और न घड़ी बढ़ेगी। (३४) ऐ आदम के पुत्रों! जब कभी तुम्हीं में से पैगम्बर तुम्हारे पास पहुंचे और हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनावें तो जो कोई डरेगा और अपनी दशा का सुधार करेगा तो उस पर न तो भय उतरेगा और न वह उदास होंगे। (३५) और जो हमारी आयतों को झुठलायेंगे और उनसे अकड़ बैठेंगे वही नरकीय होंगे कि सदैव नरक में रहेंगे। (३६) उससे बढ़कर कौन अत्याचारी होगा जो ईश्वर पर झूठे जंजाल बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाए। यही मनुष्य हैं जिनको भाग्य के लिखे हुए में से उनका भाग उनको पहुंचेगा यहाँ तक कि जब हमारे देवदूत उनकी आत्माएं निकालने के लिए उपस्थित होंगे कि अब वह कहाँ हैं जिनको तुम ईश्वर के अलावा बुलाया करते थे, तो वह कहेंगे कि वह तो हमसे छिप गये और अपने ऊपर स्वयं साक्षी देंगे कि वह काफिर थे। (३७) कहा कि भूत और मनुष्य के गुटों में जो तुमसे पहिले हो चुके हैं मिल कर नरकाग्नि में प्रविष्ट हों। जब एक गुट नरक में जायगा तो अपने साथियों पर अधिकार करेगा यहाँ तक कि जब सबके सब नरक में एकत्रित होंगे तो उनमें से पिछला गुट अपने से पहिले गुट के पक्ष में बुरी प्रार्थना करेगा कि ऐ हमारे पालनकर्ता! इन्हीं मनुष्यों ने हमको भटका दिया तू इनको नरक का दूना दण्ड दे। कहेगा कि प्रत्येक को दूना दण्ड परन्तु तुमको प्रतीत नहीं। (३८) और उनमें के पहिले मनुष्य पिछले मनुष्य से कहेंगे अब तो तुमको हम पर किसी प्रकार अत्याचार नहीं रहा तो अपने किये का दण्ड भुगतो। (३९) (रुकू ४)

निस्संदेह जिन्होंने हरारीं आयतों को झुठलाया और उनसे अकड़ बैठे न तो उनके लिये आकाश के द्वार खोले जायंगे और न स्वर्ग में प्रविष्ट होने पायेंगे जब तक ऊंट सुई के छिद्रमें से न निकले अर्थात कभी नहीं और अपराधियों को हम ऐसा दण्ड दिया करते हैं। (४०) कि उनके लिए नरकाग्नि का बिछौना होगा और उनके ऊपर से अग्नि का ही ओढ़ना और अहंकारियों को हम ऐसा ही दण्ड दिया करते हैं। (४१) जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये, हम तो किसी व्यक्ति पर उस की सामर्थ्य से अधिक बोझ नहीं डाला करते। यही मनुष्य स्वर्ग निवासी होंगे और वह उसमें सदैव रहेंगे। (४२) और जो कुछ उनके हृदय में क्षोभ होगा हम निकाल देंगे उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और बोल उठेंगे कि ईश्वर का धन्यवाद है जिसने हमको इसका मार्ग दिखलाया और यदि ईश्वर हमको उपदेश न करता तो हम मार्ग न पाते। निस्संदेह हमारे पालनकर्ता के पैगम्बर सत्यता लेकर आये थे और इन मनुष्यों से पुकारकर कह दिया जायगा कि यही स्वर्ग है जिसके स्वामी तुम अपने कार्यों के कारण बना दिये गए हो। (४३) स्वर्ग के रहनेवाले मनुष्य नारकीय मनुष्यों को पुकारेंगे कि हमारे पालनकर्ता ने जो हमसे प्रण किया था हमने तो सच्चा पाया तो क्या जो तुम्हारे पालनकर्ता ने प्रण किया था तुमने भी सच्चा पाया। वह कहेंगे हाँ, इतने में पुकारनेवाला उनमें पुकार उठेगा कि अत्याचारियों पर ईश्वर का धिक्कार। (४४) जो ईश्वर के मार्ग से रोकते और उसमें बुराई ढूँढ़ते और प्रलय से इन्कार रखते थे। (४५) स्वर्ग और नरक के मध्य में एक आड़ होगी अर्थात आराफ उसके सिरे पर कुछ मनुष्य हैं जो प्रत्येक को उनके रूपों से पहचानते हैं वैकुण्ठवासियों को पुकार कर सलामवालेकुम करेंगे। आराफवाले स्वयं वैकुण्ठ में नहीं गए परन्तु वह आशा कर रहे हैं। (४६) और जब उनकी दृष्टी नरकवासियों की ओर जा पड़ी तो उन की खराबियाँ देखकर ईश्वर से प्रार्थना करने लगेंगे कि ऐ हमारे

पालनकर्ता ! हमको अपराधी लोगों के साथ न कर। (४७) (रुकू ५)

आराफ वाले कुछ नारकीय मनुष्यों को जिन्हें उनके रूपों से पहिचानते होंगे पुकारकर कहेंगे कि तुम्हारा धन का एकत्रित करना और घमण्ड करना क्या काम आया। (४८) क्या यही मनुष्य हैं जिनके विषय में तुम कसमें खाकर कहा करते थे कि अल्लाह इन पर अपनी दया नहीं करेगा। बैकुण्ठ में चले जाओ तुम पर न डर होगा और न तुम उदास होगे। (४९) और नरकीय पुकार पर स्वर्गवालों से कहेंगे कि हम पर थोड़ा सा जल डाल दो या तुमको जो ईश्वर ने जीविका दी है उसमें से कुछ हमको दे डालो। वह कहेंगे कि ईश्वर ने यह दोनों वस्तुऐं काफिरों पर पाप कर दी हैं। (५०) कि जिन्होंने अपने धर्म को हँसी और खेल बना रक्खा है और साँसारिक जीवन इनको धोखे में डाले हुए था तो आज हम इनको भुलावेंगे जैसे यह मनुष्य अपना इस दिन को मिलना भूले और हमारी आयतों को मना करते रहे। (५१) हमने इनको कुरान पहुंचा दिया, समझ-बूझकर उसमें हर प्रकार का विस्तार भी कर दिया। धर्मवाले मनुष्यों के पक्ष में शिक्षा और दया है। (५२) क्या मक्के वाले प्रलय के घटित होने की बाट देखते हैं। जब वह दिन आयेगा तो जो लोग उसको पहले से भूले हुए थे वह स्वीकार करलेंगे कि निस्संदेह हमारे पालनकर्ता के पैगम्बर सत्य बात लेकर आये थे तो क्या हमारे कोई सिफारशी हैं कि हमारी सिफारिश करे या हमको संसार में फिर लौटा दिया जाय जो जैसे कर्म हम किया करते थे उनके विरुद्ध काम करें। निस्संदेह इन मनुष्यों ने स्वयं अपनी हानि की और जो झूठी बातें उड़ाया करते थे वह भूल गये। (५३) (रुकू ६).

तुम्हारा पालनकर्ता अल्लाह है जिसने छः दिन में पृथ्वी और नभ को उत्पन्न किया फिर सिहाँसन पर जा विराजा—वही रात्री को दिन का पर्दा बनाता है। रात दिन के पीछे चली आती है। और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा और तारों को बनाया कि यह सब ईश्वर के विश्वास-

पात्र आज्ञाकारी हैं। सुन रक्खो कि प्रत्येक वस्तु ईश्वर ही की उत्पन्न की हुई है और ईश्वर ही की आज्ञा है जो संसार का पालनेवाला और उन्नतिवाला है। (५४) अपने पालनकर्ता से गिड़गिड़ा कर और चुपके से प्रार्थना करते रहो वह सीमा से बढ़ने वालों को नहीं पसन्द करता (५५) और देश के सुधरे पीछे उसमें उत्पात मत फैलाओ और डर से और आशा से ईश्वर को पुकारो ईश्वर की कृपा भले मनुष्यों के समीप है। (५६) और वही है जो अपनी दया के आगे शुभसंवाद देने को वायु भेजा करता है यहाँ तक कि वह पानी के भरे बादल उठा लाती है तो हम किसी शुष्क बस्ती की ओर उस बादल को हाँक देते हैं फिर बादल से पानी बरसाते हैं फिर पानी से हर प्रकार के फल निकलते हैं इसी प्रकार हम प्रलय के दिन मृतकों को निकाल खड़ा करेंगे। सम्भवतः तुम ध्यान दो। (५७) जो भूमि अच्छी है उसमें ईश्वर की आज्ञा से उसकी उपज अच्छी होती है और जो पृथ्वी खराब है उसकी उपज खराब ही होती है इसी प्रकार हमउदाहरणों से उन मनुष्यों के लिए वर्णन करते हैं जो सच को मानते हैं। (५८) (रुकू ७)

निस्संदेह हमने ही नूह पैगम्बर को इनकी जाति की ओर भेजा तो उन्होंने समझाया कि भाइयों अल्लाह की प्रार्थना करो उसके अतिरिक्त कोई तुम्हारी प्रार्थना के योग्य नहीं, मुझको तुमसे बड़े दिन के दण्ड का भय है। (५९) उसकी जाति के सरदारों ने कहा कि हमारे निकट तो तुम स्पष्टतया भटके हुए हो। (६०) नूह ने कहा भाइयों मैं बहका नहीं रहा अपितु मैं तो संसार के पालनेवाले का भेजा हुआ हूं। (६१) तुमको अपने पालनकर्ता का संदेश पहुंचाता हूं और तुम्हें शिक्षा देता हूं और मैं अल्लाह से ऐसी बातें जानता हूं जिनको तुम नहीं जानते। (६२) क्या तुम इस बात से आश्चर्य करते हो कि तुममें ही से एक व्यक्ति के द्वारा तुम्हारे यालनकर्ता की आज्ञा तुमको पहुंची जिससे वह तुमको ईश्वर के दण्ड से डराये और तुम बचो और सम्भवतः तुम पर दया की जाय। (६३) जिन्होंने उसे झुठलाया तो हमने नूह को और

उन मनुष्यों को जो उसके साथ थे नौका * में बचा लिया और जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को झुठलाया था उनको डुबो दिया । वह अपना भला-बुरा न देख पाते थे अन्धे थे । (६४) (रुकू ८)

आद एक जाति का नाम था की ओर उनके भाई हूद (पैगम्बर) को भेजा उन्होंने समझाया कि भाइयों अल्लाह की प्रार्थना करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नहीं क्या तुम नहीं डरते । (६५) उस जाति के सरदार जो अविश्वासी थे कहने लगे कि हमको तू पागल प्रतीत होता है और हम तुमको झूठा समझते हैं । (६६) उसने कहा भाइयों ! मै पागल नहीं अपितु संसार के पालनकर्ता का भेजा हुआ हूं । (६७) तुमको अपने पालनकर्ता का संदेश पहुंचाता हूं । और मैं तुम्हारा सच्चा हितैशी हूं । (६८) क्या तुम इस बात से अचम्भा करते हो कि तुम्ही में से एक व्यक्ति के द्वारा तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा तुमको पहुंची जिससे तुमको डरावे और स्मर्ण करो जब उसने तुमको नूह की जाति के पश्चात सरदार बनाया और तब का विस्तार तुमको अधिक दिया । तो अल्लाह के पदार्थो को स्मरण करो, सम्भवतः तुम्हारा भला हो । (६९) उन मनुष्यों ने पूछा क्या तुम हमारे पास इसलिए आये हो कि हम केवल एक ईश्वर की पूजा करने लगें जिनको हमारे बड़े पूजते रहे उनको छोड़ बैठे । बस यदि सच्चे हो तो जिसका हमको डर दिखाते हो उसे ले जाओ । (७०) हूद ने उत्तर दिया कि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर दण्ड और कोप पड़ा क्या तुम मुझसे कई नामों में झगड़ते हो जिनको तुमने और तुम्हारे बड़ों ने गढ़ रक्खे हैं। अल्लाह ने उनका कोई प्रमाणपत्र नहीं भेजा तो तुम दण्ड की प्रतीक्षा करो । मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा कर

***नूह के समय में एक भयंकर बहिया आई थी । नूह को इसका समाचार पहले ही मिल गया था इसलिए उन्होंने एक किश्ती बना रखी थी । जो उसमें बैठे वे बचे, शेष डूब गये ।**

रहा हूं। (७१) अन्ततः हमने अपनी दया से हूद को और उन मनुष्यों को जो उनके साथ थे बचा लिया और जो मनुष्य हमारी आयतों को झुठलाते थे और न मानते थे उनकी जड़ें काट डालीं। (७२) (रुकू ६)

समुद्र की ओर उनके भाई सालेह को भेजा सालेह ने कहा कि भाइयों ईश्वर ही की पूजा करो उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नहीं। तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास एक उदाहरण स्पष्ट आ चुका कि यह ईश्वर की भेजी हुई ऊँटनी तुम्हारे लिए एक चमत्कार है तो इसे छुटी फिरने दो कि ईश्वर की पृथ्वी में से जहाँ चाहे चरे और किसी प्रकार की हानि पहुँचने की इच्छा से इसको छूना भी नहीं अन्यथा तुमको दुखदाई दण्ड होगा। (७३) स्मरण करो जब उसने तुमको आद (जाति) के पश्चात सरदार बनाया और तुमको पृथ्वी पर इस प्रकार से बसाया कि तुम मैदान में महल खड़े करते और पर्वतों को काटकर घर बनाते हो। अल्लाह की कृपाओं को स्मरण करो और देश में उत्पात मत फैलाते फिरो। (७४) सालेह की जाति में जो मनुष्य अभिमानी सरदार थे निर्धनों से जो उनमें से विश्वास ले आये थे पूछने लगे क्या तुमको खूब पता है कि सालेह ईश्वर का पैगम्बर है। उन्होंने उत्तर दिया जो उनको आज्ञा देकर हमारी ओर भेजा गया है हमारा तो उस पर विश्वास है। (७५) जिनको बड़ा घमण्ड था कहने लगे कि जिस वस्तु पर तुम विश्वास ले आये हो हम तो उसे नहीं मानते। (७६) फिर उन्होंने ऊँटनी को काट डाला और अपने पालनकर्ता की आज्ञा से अहंकार किया और कहा कि ऐ सालेह, जिसका तुम हमको दिखलाते थे यदि तुम पैगम्बर हो तो हमें लाकर दिखाओ। (७७) बस उनको भूकम्प ने घेर लिया और अपने घरों में बैठे के बैठे रह गये। (७८) सालेह उनसे यों कहता हुआ चला गया कि भाइयों मैं तो अपने पालनकर्ता का सन्देश तुमको पहुँचा चुका और तुम्हारा भला चाहा परन्तु तुम नहीं चाहते भला चाहनेवालों को। (७९) ईश्वर ने लूत को भेजा और अपनी जाति से उसने कहा समस्त संसार में तुमसे पहले

किसी ने ऐसी निर्लज्जता नहीं की । (८०) क्या तुम स्त्रियों को छोड़ कर सहवास के लिए पुरुषों पर दौड़ते हो अपितु तुम सीमा पर नहीं रहते हो । (८१) लूत की जाति का उत्तर यही था कि वह कहने लगे कि इन मनुष्यों को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो । यह ऐसे मनुष्य हैं जो पवित्र साफ बनना चाहते हैं । (८२) बस हमने लूत को और उनके घरवालों को बचाया परन्तु उसकी पत्नि रह गई वह पीछे रहनेवालों में थी । (८३) हमने इन पत्थरों की वर्षा बरसायी तो देखना कि अपराधियो का अन्त कैसा हुआ । (८४) (रुकू १०)

मदाइनवालों की ओर उनका भाई शोएब पैगम्बर भेजा गया । उसने कहा हे भाइयों ! अल्लाह की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नहीं । तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास उदाहरण स्पष्ट हो चुका है तो नाप और तौल पूरा किया करो और मनुष्यों को उनकी वस्तुएँ कम न दो और ठीक होने के पश्चात पृथ्वी में उत्पात न करो, यह तुम्हारे लिए भला है यदि तुम्हें विश्वास हो (८५) और प्रत्येक मार्ग पर डराने और रोकने को न बैठो और अल्लाह के मार्ग में दोष मत ढूँढ़ो और स्मरण करो कि तुम थोड़े थे फिर ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया और देखो कि उत्पात करनेवालों का कैसा परिणाम हुआ । (८६) यदि तुममें से एक गुट ने मेरी पैगम्बरी को माना है और एक ने नहीं माना । चाहिए कि तुम सन्तोष करो जब तक अल्लाह हमारे मध्य निर्णय करे, वह सबसे बढ़कर निर्णय करनेवाला है (८७) ।

नवाँ पारा (कालल्पलउ)

शोएब की जाति के घमण्डी सरदार बोले कि हे शोएब या तो तुम हमारे धर्म में लौट आओ नहीं तो हम तुमको और जो तेरे साथ विश्वास लाये हैं अपने नगर से निकाल देंगे । शोएब ने कहा क्या हम

उस दशा में भी लौट जावें जबकि हम उसके विरुद्ध हैं। (८८) जबकि ईश्वर तुम्हारे धर्म से हमें पृथक कर दिया फिर भी यदि उसमें लौट आवें तो हमने ईश्वर पर झूँठ बाँधा और हमारा काम नहीं कि उसमें आवें परन्तु यदि हमारा ईश्वर चाहे तो हो सकता है हमारा पालनकर्ता अपने ज्ञान से प्रत्येक वस्तु को जानता है अल्लाह पर हमने भरोसा किया। ऐ ईश्वर! हममें और हमारी जाति में तू ठीक न्याय कर क्योंकि तू सबसे अच्छा न्यायाधीश है। (८९) शोएब की जाति के सरदार जो अविश्वासी थे बोले कि यदि शोएब के मार्ग पर चलोगे तो तुम नष्ट होगे। (९०) फिर उन्हें भूचाल ने घेरा, वे अपने घरों में बैठे के बैठे रह गए। (९१) जिन मनुष्यों ने शोएब को झुठलाया मानो उन बस्तियों में कभी थे ही नहीं। जिन मनुष्यों ने शोएब को झुठलाया मानो वही नष्ट हुए। (९२) शोएब उनसे हट गया और कहा ऐ जाति मैंने ईश्वर का सन्देशा तुम्हें पहुँचाया और तुम्हारा भला चाहा, फिर जिन मनुष्यों ने न माना उन पर क्या दुःख करूं। (९३) (रुकू ११)

जिस बस्ती में हमने पैगम्बर भेजा वहाँ के रहनेवालों पर हमने कठोरता भी की और विपत्ति भी डाली जिससे यह मनुष्य गिड़गिड़ायें (९४) फिर हमने बुराई के स्थान पर भलाई को बदला यहाँ तक कि मनुष्य खूब बढ़े और कहने लगे कि इस प्रकार की कठोरता और चैन तो हमारे बड़ों को भी पहुँच चुका है तो हमने उनको अचानक धर पकड़ा जब वह असावधान थे। (९५) और यदि बस्तियोंवाले विश्वास लाते और संयम करते तो हम नभ और पृथ्वी को उन पर खोल देते परन्तु उन्होंने झुठलाया तो उन पापों के दण्ड में जो वह करते थे हमने उनको पकड़ा। (९६) तो क्या बस्तियों के रहनेवाले इससे निर्भय हैं कि उन पर हमारा दण्ड रातोरात पड़े और वह सोये हुए पड़े हों। (९७) या बस्तियों के रहनेवाले इससे निर्भय हैं कि हमारा दण्ड दिन दहाड़े उन पर पड़े जबकि वह खेल कूद रहे हों। (९८) तो क्या

अल्लाह के दाँव से निर्भय हो गये हैं सो अल्लाह के दाँव से तो वही मनुष्य निर्भय होते हैं जो नष्ट होने वाले हैं। (६६) रुकू १२)

जो वहाँ के मनुष्यों के जाने के बाद पृथ्वी के स्वामी होते हैं क्या इस बात की सूझ नहीं रखते कि यदि हम चाहें तो इनके अपराधों के बदले इन पर विपत्ति डालें और हम इनके दुख पर मुहर कर दें तो यह मनुष्य नहीं सुनते। (१००) ऐ पैगम्बर यह कुछ बस्तियाँ हैं जिनकी दशा हम तुमको सुनाते हैं और इनके पैगम्बर इन मनुष्यों के पास चमत्कार भी लेकर आये परन्तु यह ऐसी तबियत के न थे कि जिस वस्तु को पहले झुठला चुके हो उस पर विश्वास ले आवें। काफिरों के हृदय पर ईश्वर इस प्रकार मुहर लगा दिया करता है। (१०१) हमने तो इनमें से बहुत सों को वचन का पक्का न पाया और हमने इनमें से बहुतों को अवज्ञाकारी पाया। (१०२) फिर उनके पश्चात हमने मूसा को चमत्कार देकर फिरऔन और उसके सरदारों की ओर भेजा तो इन मनुष्यों ने असीमितता की। देखना कि उत्पतियों का कैसा परिणाम हुआ। (१०३) और मूसा ने कहा कि ऐ फ़िरऔन मैं संसार के पालनकर्ता का भेजा हुआ हूं। (१०४) कि सत्य के अतिरिक्त ईश्वर के विषय में दूसरी बात न कहूँ। मैं तुम्हारे के पास तुम्हारे पालनकर्ता से चमत्कार लेकर आया हूं। तू इसराईल के पुत्रों को मेरे साथ कर दे। (१०५) बोला कि यदि तू कोई चमत्कार लेकर आया है तथा सच्चा है तो लाकर दिखा। (१०६) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह स्पष्टतया एक अजगर ही गई (१०७) और अपना हाथ निकाला तो लोगों को स्वेत दिखाई देने* लगा। (१०८) (रुकू १३)

***मूसा को दो चमत्कार मिले थे— (१) उनकी लाठी अजगर बन जाती थी, (२) उनका हाथ इतना चमकता था कि उसकी ओर आंख भर के देखा नहीं जाता था।**

फिरऔन के मनुष्यों में से जो दरबारी थे कहने लगे कि यह तो बड़ा बुद्धिमान जादूगर है। (१०९) चाहता है कि तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करे तो क्या राय देते हो। (११०) सबसे मिलकर कहा कि मूसा और उसके भाई हारूँ को इस समय ढ़ील दे और गाँवों में कुछ सन्देशवाहक भेजिये। (१११) कि समस्त जानकर जादूगरों को आप के सम्मुख लाकर उपस्थित करें। (११२) निदान जादूगर फिरऔन के पास उपस्थित हुए, कहने लगे कि यदि हम विजयी हो जायें तो हमको इनाम मिलना चाहिए। (११३) कहा—हाँ! और अवश्य तुम मेरे पास रहा करोगे। (११४) जादूगरों ने कहा—ऐ मूसा, या तो तुम अपना डंडा लाकर डालो और या हम ही डालें। (११५) मूसा ने कहा तुम्हीं डालो। जब उन्होंने अपनी लाटियाँ और रस्सियाँ डाल दीं तो जादू के जोर से लोगों की नजरबन्दी कर दी कि चारों ओर साँप ही साँप दिखलाई देने लगे और इनको भय में डाल दिया और बड़ा जादू लाये। (११६) और हमने मूसा की ओर ईश्वरीय सन्देश भेजा कि तुम भी अपनी लाठी डाल दो। मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि जादूगरों ने जो झूठ-मूठ बना खड़ा किया था उसको वह लीलने लगा। (११७) बस सत्य बात प्रमाणित हो गई और जो कुछ जादूगर ने किया था झूठा हो गया। (११८) बस फिरऔन और उसके मनुष्य उस अखाड़े में हारे और जलील हो गए। (११९) जादूगर सिर नबाने में गिर पड़े। (१२०) बोल उठे कि हम तो संसार के पालनकर्ता पर विश्वास लाए। (१२१) जो मूसा और हारूँ का पालनकर्ता है। (१२२) फिरऔन बोला अभी मैंने आज्ञा ही नहीं दी और तुम विश्वास ले आए हो। न हो यह तुम्हारा धोखा है जो नगर में तुमने बाँधा है जिससे गहाँ के मनुष्यों को इस नगर से निकाल दो, सो तुमको अब प्रतीत हो जाय। (१२३) नुम्हारे हाथ और तुम्हारे पाँव उल्टे अर्थात दाहिना हाथ तो बायाँ हाथ तो दाहिना पैर कटवाऊँ फिर तुम सबको सूली पर चढ़ाऊंगा। (१२४) वह कहने लगे हमको तो अपने पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है। (१२५)

और तू हमसे इसलिए शत्रुता करता है कि हमने अपने पालनकर्ता के चमत्कार जब हमारे पास पहुंचे मान लिए हैं। ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमें सन्तोष दे और हमें मुसलमान ही मान। (१२६) (रुकू १४)

फिरऔन के मनुष्यों में से सरदारों ने कहा कि क्या मूसा और उसकी जाति को रहने दोगे कि देश में उत्पात फैलाते फिरें और वह तुझको और तेरी मूर्तियों को छोड़ दें। उसने कहा अब हम इनके पुत्रों को मारेंगे और उनकी स्त्रियों को रखेंगे और हम उन पर सवार रहेंगे। (१२७)*मूसा ने अपनी जाति से कहा अल्लाह से सहायता माँगो और सन्तोष करो देश तो सब अल्लाह ही का है, अपने सेवकों में से जिसको चाहता है उसको स्वामी बना देता है और डरने वालों का परिणाम भला होगा। (१२८) और वह कहने लगे कि तुम्हारे आने से पहले हमको दुःख मिला और तेरे आने के पश्चात भी। मूसा ने कहा कि समीप है कि पालनकर्ता तुम्हारे शत्रु को मार डाले और तुमको राजा करे फिर देखें तुम कैसे काम करते हो। (१२९) (रुकू १५)

हमने फिरऔन के मनुष्यों को अकालों और उपज की कमी में फंसाया जिससे वह मान जावें। (१३०) फिर जब उनको कोई भलाई पहुंचती तो कहते यह हमारे ही कारण से हैं और यदि उन पर कोई विपत्ति आती तो मूसा और उनके साथियों का भाग्य बुरा बताते सुनो जी उनका अभाग्य ईश्वर के यहाँ है परन्तु उनमें के बहुतेरे नहीं जानते। (१३१) फिरऔन के मनुष्यों ने मूसा से कहा तुम कोई-सी निशानी हमारे सामने लाओ कि उसके द्वारा तुम हम पर अपना जादू

---

*फिरऔन के दरबारियों ने मूसा और उसके साथियों को मार डालने की राय दी थी। फिरऔन ने उनसे कहा—"इनके मर्द मार डाले जायं और औरतें लौंडियाँ बना ली जायं ताकि दूसरे इस दुर्दशा से सबक लें।"

चलाश्रो तो हम तो तुम पर विश्वास लानेवाले नहीं हैं। (१३२) फिर हमने उन पर बवण्डर भेजा श्रौर टीड़ियाँ, जुएँ श्रौर मेंडक श्रौर खून यह सब पृथक थे इस पर भी वह अकड़े रहे श्रौर वे अपराधी थे। (१३३) श्रौर जब उन पर दण्ड पड़ा तो बोले ऐ मूसा। तुमसे जो ईश्वर ने प्रण कर रखा है उसके सहारे पर अपने पालनकर्ता से हमारे लिए पुकारो यदि तुमने हम पर से दण्ड को टाल दिया तो हम अवश्य तुम पर विश्वास ले श्रावेंगे श्रौर इसराईल के पुत्रों को भी तुम्हारे साथ भेज देंगे। (१३४) फिर जब हमने एक विशेष समय के लिए जिस समय उनको पहुँचना था दण्ड को उनसे उठा लिया तो वह तत्काल बचाव के विरुद्ध हो गये। फिर हमने उनसे बदला लिया। (१३५) श्रौर नदी में डुबो दिया*क्योंकि वह हमारी श्रायतों को झुठलाते श्रौर उनसे मुँह मोड़ा करते थे। (१३६) पृथ्वी जिसमें हमने उन्नति दी थी हमने उनको उसके पूर्व श्रौर पश्चिम का स्वामी कर दिया जो फिरश्रौन के यहाँ कमजोर हो रहे थे श्रौर इसराईल की सन्तान पर तेरे पालनकर्ता का अच्छा प्रण पूरा हो गया उनके सन्तोष के कारथ से श्रौर जो फिरश्रौन श्रौर उसके कबीले के मनुष्यों ने बनाया था हमने नष्ट कर दिये। (१३७) हमने इसराईल के पुत्रों को समुद्र पार उतार दिया तो वह ऐसे मनुष्यों के निकट पहुंचे जो अपनी मूर्तियों को पूजते थे उनको देखकर इसराईल के पुत्र मूसा से कहने लगे कि ऐ मूसा जिस प्रकार इन मनुष्यों के पास मूर्तियाँ हैं एक हमारे लिए भी बना दो, मूसा ने उत्तर दिया कि तुम मूर्ख हो। (१३८) यह मनुष्य जो

---

*मूसा ने श्रौर फिरश्रौन से ४० वर्ष लड़ाई रही। मूसा कहते थे कि बनी इसराईल को उनके साथ भेज दिया जाय लेकिन फिरश्रौन न मानता था। उनके शाप से फिरश्रौन के देश पर यह सब श्राफतें श्राईं मूसा को पकड़ने के लिए फिरश्रौन ने उनका पीछा किया। मूसा तो नदी को पार कर गये लेकिन फिरश्रौन डूब गया।

हैं नष्ट होने वाले हैं और जो काम यह कर रहे हैं झूठे हैं । (१३९) मूसा ने यह भी कहा क्या ईश्वर के अतिरिक्त कोई पूजित तुम्हारे लिए पहुंचा दूं यद्यपि उसी ने तुमको संसार के मनुष्यों पर उन्नति दी है । (१४०) और ऐ इसराईल के पुत्रों वह समय स्मरण करो जब हमने तुमको फिरऔन के मनुष्यों से बचाया था कि वह तुमको बड़े दुःख देते थे, तुम्हारे पुत्रों को मार डालते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते और इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की बड़ी कृपा थी ।(१४१) (रुकू १६)

हमने मूसा से तीस रात्रियों का प्रण किया और हमने दस रात्रियों और मिलाईं । तब मेरे पालनकर्ता की अवधि चालीस रात पूरी हुई और मूसा ने अपने भाई हारूँ से कहा कि मेरी जाति में प्रतिनिधि बने रहना और संभाल रखना और झगड़ालुओं के मार्ग न चलना । (१४२) और जब मूसा हमारे प्रण के अनुसार तूर पर्वत पर उपस्थित हुए *और उनके पालनकर्ता ने उनसे बातें कीं तो मूसा ने कहा कि ऐ हमारे पालनकर्ता ! तू मुझको दिखला कि मैं तेरी ओर एक दृष्टि देखूँ । कहा तुम हमको कभी भी न देख सकोगे, परन्तु हाँ पर्वत पर दृष्टि करो । बस यदि पर्वत अपने स्थान पर ठहरा रहे तो तू भी हमें देख सकेगा फिर जब उसका पालनकर्ता (प्रकाश) पर्वत पर प्रकट हुआ तो उसको खण्ड-खण्ड कर दिया और मूसा मूर्छा खाकर गिर पड़ा फिर जब होश में आया तो बोल उठा कि तू पवित्र है, मैं तेरे सामने क्षमायाचना करता हूं और तुझ पर विश्वास लानेवालों में प्रथम हूं । (१४३) ईश्वर ने कहा ऐ मूसा हमने तुमको अपनी पैगम्बरी और आपस की बात-चीत से मनुष्यों पर मान दिया तो जो सहीफे तौरात हमने तुमको किया है उसको लो औ आभारी बने रहो । (१४४) और

***हजरत मूसा ४० दिन तूर पहाड़ पर रहे । यह इसलिए कि तौरात का उतरना इसी बात पर निर्भर था ।**

हमने तौरात की तख्तियों में मूसा के लिए हर प्रकार की शिक्षा और हर वस्तु का ब्योरा लिख दिया था। तू इसको दृढ़ता से पकड़े रह—अपनी जाति को आज्ञा दो कि इस पुस्तक की अच्छी-अच्छी बातों को पल्ले बाँधे रहो और उनको यह भी समझाओ मैं तुम्हें अवज्ञाकारियों का घर दिखाऊँगा। (१४५) जो मनुष्य अकारण देश में अकड़ते फिरते हैं हम उनको अपनी निशानियों से फेर देंगे और उनके हृदय को ऐसा कठोर कर देंगे कि यदि खूब चमत्कार भी देखें तो भी उन पर विश्वास न लावें और यदि सीधा मार्ग देख पावें तो उसको अपना मार्ग न मानें और यदि पथभ्रष्टता का मार्ग देख पावें तो उसको मार्ग बना लें यह कमी उनमें इससे उत्पन्न हुई कि उन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया और उनसे असावधानी करते रहे। (१४६) और जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को और प्रलय के आने को नहीं माना किया-धरा सब अकारथ—यह दण्ड उनको उन्हीं कामों की दी जायगा। (१४७) (रुकू १७)

मूसा के पीछे उनकी जाति ने अपने आभूषण को गलाकर उसका एक बछड़ा बना खड़ा किया। वह शरीर था जिसकी वाणी भी गाय की-सी थी और उसकी पूजा करने लगे। उन्होंने यह न देखा कि वह न उनसे बात करता है और न मार्ग दिखा सकता है। उन्होंने उसको देवता मान लिया और वे अन्यायी थे। (१४८) जब पछताये और समझे कि हम बहके तब बोले कि हमारा पालनकर्ता हम पर दया न करे और हमारे अपराध क्षमा न करेगा तो हम हानि में आ जायेंगे। (१४९) जब मूसा अपनी जाति की ओर कुपित और दुःख में भरे हुए लौटे तो बोले तो बोले कि मेरे पीछे मेरी अनुपस्थिति में तुमने बुरा कार्य किया। क्या तुमने अपने पालनकर्ता की आज्ञा की शीघ्रता की और मूसा ने तौरत को फेंक दिया और अपने भाई के सिर को पकड़कर उनको अपनी ओर खींचने लगा। कहा ऐ मेरे सगे भाई! मनुष्यों ने मुझको नाचीज समझा और शीघ्र मुझको मारने वाले थे तो

शत्रुओं को मुझ पर हंसने का अवसर न दो और मुझको अत्याचारियों के साथ मिलाइये। (१५०) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरा और मेरे भाई का अपराध क्षमा कर और हमको अपनी दया में ले और तू सब दया करने वालों से बड़ा है (१५१) (रुकू १८)

जो मनुष्य बछड़े को ले बैठे उन पर उनके पालनकर्ता का कोप पड़ेगा और संसार के जीवन में जिल्लत और झूठ बाँधने वालों को हम इसी प्रकार दण्ड किया करते हैं। (१५२) जिन्होंने बुरे काम किये फिर इसके पश्चात् छोड़ दिया और विश्वास लाये तो तुम्हारा पालन-कर्ता क्षमा माँगने के पश्चात क्षमा करने वाला कृपालु है। (१५३) और जब मूसा का कोप जाता रहा तो उन्होंने तख्तियों को उठा लिया और तख्तियों में उन मनुष्यों के लिए जो अपने पालनकर्ता से डरते हैं शिक्षा और दया है (१५४) और मूसा ने हमारे प्रण के समय के लिए अपनी जाति में ७० मनुष्य चुने* फिर जब उनको भूचाल ने आ घेरा तो मूसा ने कहा ऐ हमारे पालनकर्ता! यदि तू चाहता तो उन्हें और मुझे पहिले ही मार डालता। क्या तू हमें कुछ मूर्खों के काम से मारे डालता है। यह सब तेरा परीक्षा करना है जिसे चाहे उसे विचलाये और जिसको चाहे मार्ग दे। तू ही हमारा काम का संभालने वाला है। तू हमारे अपराध क्षमा कर और हम पर दया कर और तू समस्त क्षमा करने वालों से अच्छा है। (१५५) और इस संसार और प्रलय की अच्छाई हमारे नाम लिख दे, हम तेरी ही ओर लग गये। ईश्वर

---

*इसराईल की संतानों ने कहा था कि मूसा अपने मन से एक पुस्तक गढ़ लाये हैं। हम तो जब इसे ख़ुदा की ओर से उतरी माने जब मूसा और खुदा से हमारे सामने बात हों। मूसा ७० आद-मियों को लेकर पहाड़ पर गये। वहाँ इन्होंने बातें सुनी तो कहने लगे "हम खुदा को देखें तो मानें।" इस पर एक बिजली ने उनको जला कर राख कर दिया।

ने कहा कि हमारा दण्ड उसी पर आता है जिसे हम दण्ड दिया चाहते हैं। और हमारी दया सब वस्तुओं पर एकसी है, तो हम उसको उन मनुष्यों के नाम लिख लेंगे जो डरते और दान देते और जो हमारी आयतों पर विश्वास लाते हैं। (१५६) जो पैगम्बर बिना पढ़े मोहम्मद का समर्थन करते हैं जिनको अपने यहाँ तौरात और इंजील में लिखा हुआ पाते हैं वह उनको अच्छे काम की आज्ञा देता है और बुरे काम से मना करता है और पवित्र वस्तुओं को उनके लिए भोग्य ठहराता और अपवित्र वस्तुओं को उन पर पाप करता है और उनसे उनके बोझ और तौक उन पर से दूर करता है। तो जो मनुष्य उन पर विश्वास लाये और उनका पक्ष लिया और उनको सहायता दी और जो ज्योति कुरान इनके साथ भेजी गई है उसको मानने लगे वही मनुष्य सफल हैं। (१५७) (रुकू १६)

कहो कि मनुष्यों में तुम सब की ओर उस ईश्वर का भेजा हुआ हूं कि नभ और पृथ्वी का राज्य उसी का है उसके अतिरिक्त और कोई पूजित नहीं। वही जीवित करता और मारता है तो अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके रसूल और पैगम्बर बिना पढ़े मोहम्मद पर कि अल्लाह और उसकी पुस्तकों पर विश्वास रखते हैं और उन्हीं का समर्थन करो जिससे तुम सीधे मार्ग पर आ जाओ। (१५८) और मूसा की जाति में से कुछ मनुष्य ऐसे हैं जो सत्य बात का उपदेश और सत्य ही के अनुसार न्याय करते हैं। (१५९) और हमने याकूब के पुत्रों को बाँट कर एक-एक दादा की संतान के बारह गुट बनाये और जब मूसासे उस की जाति ने पानी माँगा तो हमने मूसा की ओर वही ईश्वर का संदेश भेजा कि अपनी लाठी इस पाषाण पर मारो, लाठी का मारना था कि पत्थर से बारह सोते फूट निकले। प्रत्येक गुट ने अपना-अपना घाट ढ़ढ़ लिया और हमने याकूब के पुत्रों पर बादल की छाया की और उन पर मन और सलवा उतारा कि यह सुथरी जीविका है जो हमने तुमको दी है खाओ ओर उन मनुष्यों ने आज्ञोलंघन किया हमारा कुछ

नुकसान नहीं किया बल्कि अपना ही नुकसान करते रहे अर्थात उनका आना बन्द हुआ। (१६०) और जब इसराईल* के पुत्रों को आज्ञा दी गई कि इस गाँव उरीहा में बसो और इन में से जहाँ से तुम्हारा जी चाहे खाओ और हित्तुन अपराध से दूर हो कहो और द्वार में मस्तक नवाये हुए प्रविष्ट हो हम तुम्हारे अपराध क्षमा कर देंगे और भलों को अधिक भी देंगे। (१६१) तो जो मनुष्य उनमें से अत्याचारी थे वह दुआ जो उनको सिखाई गई थी बदलकर कुछ और कहने लगे तो हमने उनको चंचलता के बदले नभ से उन पर दण्ड उतारा। (१६२) (रुकू २०)

इसराईल के पुत्रों से उस गाँव की दशा पूछो जो नदी के किनारे था, जब वहाँ के मनुष्य शनीवार के दिग असीमितता करने लगे कि जब उनके शनीवार का दिन होता तो मछलियाँ उनके सामने आकर एकत्रित होतीं और जब उनके शनीवार का दिन न होता तो न आतीं। यों हमने उन्हें जाँचा इसलिए कि यह मनुष्य आज्ञा न मानने वाले थे (१६३) और जब उनमें से एक समाज ने कहा जिन मनुष्यों को ईश्वर मार डालता या उनको कठिन दण्ड में फँसाना चाहता है तुम क्यों उपदेश देते हो। उन्होंने उत्तर दिया कि तुम्हारे पालनकर्ता के सामने पाप दूर करने के लिए और सम्भवतः यह मनुष्य रुक जायं (१६४) तो जब वह शिक्षाऐं जो उनको की गई थीं भुला दिया तो जो मनुष्य बुरे काम से मना करते थे उनको हमने बचा लिया और अत्याचारियों को उसकी अवज्ञा के बदले हमने कठिन दण्ड में फसाया (१६५) फिर जिस काम से उनको मना किया जाता था जब उसमें सीमा से बढ़ गये तो हमने उनको आज्ञा दी कि फटकारे हुए बन्दर

---

*इसराईल की संतान यानी याकूब के बारह बेटे। इन बेटों की संतान अलग-अलग एक-एक गुट है।

बन जाओ। (१६६) जब तुम्हारे पालनकर्ता ने जता दिया था कि वह अवश्य उन पर प्रलय के दिन तक ऐसे अधिकारी नियुक्त रखेगा जो उनको बुरे कष्ट पहुंचाते रहेंगे। तुम्हारा पालनकर्ता शीघ्र दण्ड देता है और वह निस्संदेह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (१६७) हमने यहूद को विभाजित करके देश में पृथक-पृथक कर दिया, उनमें से कुछ भले थे और कुछ भले नहीं थे और हमने उनका सुख और दुःख से परीक्षण किया सम्भवतः वह फिरें। (१६८) फिर उनके पश्चात ऐसे अयोग्य पुस्तक के स्वामी बने कि इस नाचीज संसार की वस्तुऐं लीं और कहते हैं कि यह अपराध तो हमारा क्षमा होजायगा और यदि इसी प्रकार की कोई साँसारिक वस्तु उनके सामने आजावे तो उसे ले लेते हैं—क्या इन मनुष्यों से वह भाग जो पुस्तक तौरात में लिखी है नहीं हुई कि सच बात के अतिरिक्त दूसरी बात ईश्वर की ओर न कहेंगे—जो कुछ उसमें है उन्होंने उसको पढ़ लिया और जो मनुष्य संयमी हैं प्रलय का घर उनके पक्ष में कहीं अच्छा है ऐ याकूब के पुत्रो क्या तुम नहीं समझते। (१६९) और जो मनुष्य पुस्तक को दृढ़ता से पकड़े हुए हैं और नमाज पढ़ते हैं तो हम ऐसे अच्छे काम करने वालों के पुण्य को समाप्त नहीं होने देंगे। (१७०) और जब हमने उन पर पर्वत को इस प्रकार जा लटकाया कि मानो वह शामयाना था और वे समझे कि यह उन पर गिरेगा, तो हमने कहा जो पुस्तक तुमको दी है उसे दृढ़ता के साथ लिए रहना और जो कुछ उसमें है उसे स्मरण रखना सम्भवतः तुम संयमी बनो। (१७१) और स्मरण करो वह समय जब तुम्हारे पालनकर्ता ने आदम के पुत्रों से उनकी पीठों से उनकी संतान को निकाला था और उनके बिपक्ष में स्वयं उन्हीं को साक्षी बनाया, क्या में तुम्हारा पालनकर्ता नहीं हूं। सब बोले हाँ! यह साक्षी हमने इसलिये ली कि प्रलय के दिन न कहने लगो कि हम सब बात से असावधान ही रहे। (१७२) या कहने लगो कि ईश्वर का समकक्ष ठहराना तो हमारे बड़ों ही ने निकाला था और हम उनके पश्चात उन्हीं की संतान थे तो ऐ ईश्वर क्या तू हमको उन

मनुष्यों के अपराधों के बदले में मारे देता है जिन्होंने भूल की। (१७३) और इसी प्रकार आयतों को हम विस्तार के साथ वर्णन करते हैं सम्भवतः वह फिरें। (१७४) और ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों को उस व्यक्ति की दशा पढ़कर सुनाओ जिसको हमने अपनी आयतें तथा चमत्कार दी थीं फिर वह आयतों में से निकल गया फिर राक्षस उसके पीछे लगा और वह भूले हुओं में जा मिला। (१७५) यदि हम चाहते तो उनकी उन्नति से उसका पद ऊँचा करते परन्तु उसने नीचे में गिरना चाहा और अपनी हार्दिक आकाँक्षाओं के पीछे लग गया तो उसका दृष्टान्त कुत्ते कैसा हो गया कि यदि उसको भगा दोगे तो जीभ बाहर लटकाये रहे और यदि उसको उसी की दशा पर छोड़े रक्खो तो भी जीभ लटकाये रहे, यही दृष्टान्त उन मनुष्यों का है जिन्होंने हमारी आयतों को भुठलाया तो यह कथा वर्णन करो जिससे यह मनुष्य सोचें। (१७६) जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को भुठलाया उनकी बुरी दृष्टान्त है और वह कुछ अपना ही बिगाड़ते रहे हैं। (१७७) जिनको ईश्वर मार्ग दिखाये वही मार्ग पाते हैं और जिनको वह पथभ्रष्ट करे वही लोग हानि में हैं। (१७८) और हमने बहुत से भूत और मनुष्य नरक ही के लिए उत्पन्न किये हैं उनके हृदय तो हैं परन्तु उनसे समझने का काम नहीं लेते और उनके आँखें भी हैं परन्तु उनसे देखने का काम नहीं लेते और उनके कान भी हैं उनसे सुनने का काम नहीं लेते। साराँश यह कि यह मनुष्य पशुओं के समान हैं अपितु उनसे भी गिरे हुए हैं यही असावधान हैं। (१७९) और अल्लाह के सब नाम अच्छे हैं तो उसके नाम लेकर उसको जिस नाम से चाहो पुकारो और जो मनुष्य उसके नामों में बुराई करते हैं उनको छोड़ दो, वह अपने किये का परिणाम पावेंगे। (१८०) और हमारे संसार में ऐसे मनुष्य भी हैं जो सब बात की शिक्षा और उसी के अनुसार न्याय भी करते हैं। (१८१) (रुकू २२)

जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को भुठलाया हम उन्हें इस प्रकार कि उनको सूचना भी न हो शनैः-शनैः नरक की ओर ले जायेंगे।

(१८२) और हम उनको संसार में अवकाश देते हैं, हमारा दाँव निस्संदेह पक्का है। (१८३) क्या इन मनुष्यों ने विचार नहीं किया कि इनके साहिब को अर्थात मोहम्मद को किसी प्रकार का पागलपन तो नहीं है यह तो स्पष्ट रूप से ईश्वर के दण्ड से डरानेवाला है। (१८४) क्या इन मनुष्यों ने नभ और पृथ्वी के प्रबन्ध और ईश्वर की उत्पन्न की हुई किसी वस्तु पर भी दृष्टी नहीं की और न इस बात पर कि आश्चर्य नहीं इनको मृत्यु ने घेरा हो। तो अब इतना समझाये पीछे और कौन सी बात है जिसको सुनकर विश्वास ले आवेंगे। (१८५) जिसको ईश्वर पथभ्रष्ट करे तो फिर उसका कोई भी राह दिखाने वाला नहीं और ईश्वर ही उसको छोड़े हुए है कि अपनी चंचलता में पड़े भटका करें। (१८६) ऐ पैगम्बर मनुष्य तुमसे प्रलय के सम्बन्ध में पूछते हैं कि कहीं उसका ठिकाना भी है। तुम उत्तर दो कि उसका ज्ञान तो मेरे पालनकर्ता को है। बस वही उसको उसके समय पर लाकर दिखावेगा। वह एक बड़ी भारी घटना नभ और पृथ्वी में होगी—प्रलय की बहुत ऐसे पूछते हैं मानो तुम उसकी खोज में लगे रहे हो तो इनसे कहो कि इसका ज्ञान तो बस ईश्वर ही को है परन्तु प्रायः मनुष्य नहीं समझते। (१८७) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो मेरी अपनी स्वयं की लाभ हानि भी मेरे वश में नहीं परन्तु जो ईश्वर चाहे होकर रहता है और यदि में अदृष्ट जानता होता तो अपना बहुत सा लाभ कर लेता और मुझको किसी प्रकार का दुःख न होता मैं तो उन मनुष्यों को जो विश्वास लाना चाहते हैं नरक का भय और स्वर्ग का शुभ-संवाद खबरी सुनानेवाला हूं। (१८८) (रुकू २३)

वही है जिसने तुमको एक शरीर से उत्पन्न किया और उससे उसकी स्त्री को निकाला जिससे पुरुष स्त्री की ओर ध्यान दे, तो जब पुरुष का स्त्री से सहवास हुआ तो स्त्री के एक हल्का सा गर्भ रह गया फिर वह उस गर्भ को लिए-लिए फिरती थी फिर जब गर्भ के कारण अधिक बोझ हो गया तो पति-पत्नि दोनों मिलकर ईश्वर से प्रार्थना

करने लगे कि ऐ ईश्वर यदि तू हमको पूरा बच्चा देगा तो हम तेरी बड़ी कृपा मानेंगे। (१८९) फिर जब उनको पूरा बच्चा दिया तो उस संतान में जो ईश्वर ने उनको दी थी ईश्वर के लिए समकक्ष ठहराया सो ईश्वर के बनावटी साभी से ईश्वर की प्रतिष्ठा बहुत ऊँची है। (१९०) क्या वह ऐसे को ईश्वर का समकक्ष बनाते हैं जो किसी वस्तु को उत्पन्न नहीं कर सकते और वह स्वयं उत्पन्न किये हुए हैं। (१९१) वह न इनकी सहायता करने की शक्ति रखते हैं और न आप अपनी सहायता कर सकते हैं। (१९२) यदि तुम उनको सच्चे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारी शिक्षा पर न चल सकें चाहे तुम उनको बुलाओ या चुप रहो दोनों बातें तुम्हारे लिए समान हैं। (१९३) ऐ मुशरिकों तुम ईश्वर के अतिरिक्त जिन मनुष्यों को बुलाते हो वह भी तुम जैसे सेवक हैं यदि तुम सच्चे हो तो उन्हें उस दशा में पुकारो जब वह तुम्हें उत्तर दे सकें। (१९४) क्या उनके ऐसे पांव हैं जिनसे चलते हैं या उनके ऐसे हाथ हैं जिनसे पकड़ते हैं उनकी ऐसी आँखें हैं जिनसे दिखते हैं या उनके ऐसे कान हैं जिनसे सुनते हैं ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि अपने ठहराये हुए देवताओं को बुलालो फिर सब मिलकर मुझ पर अपना दाँव कर चलो और मुझको तनिक भी अवकाश मत दो। (१९५) अल्लाह जिसने इस पुस्तक को अवतरित किया है वही मेरा काम सम्भालनेवाला है और वही अच्छे भक्तों का पक्ष करता है। (१९६) और उसके अतिरिक्त जिनको तुम बुलाते हो न वह तुम्हारी सहायता कर सकते हैं न अपनी सहायता कर सकते हैं। (१९७) यदि तुम उनको सीधे मार्ग की ओर बुलाओ तो तुम्हारी एक न सुनें और वह तुझको ऐसे दिखलाई देते कि मानों वह तेरी ओर देख रहे हैं यद्यपि वह देखते नहीं। (१९८) ऐ पैगम्बर क्षमा को पकड़ो और मनुष्यों से भले काम करने को कहो और मूर्खों से पृथक रहो। (१९९) और यदि राक्षस के गुदगुदाने से गुदगुदी तुम्हारे हृदय में उत्पन्न हो तो ईश्वर से शरण माँगो वह सुनता और जानता है। (२००) जो संयमी हैं जब कभी राक्षस की ओर का कोई विचार

उनको छू भी जाता है तो जान जाते हैं और वह उसी क्षण देखने लगते हैं। (२०१) इनके भाई इनको पथभ्रष्ट में घसीटते हैं फिर कोताही नहीं करते। (२०२) और जब तुम इन मनुष्यों के पास कोई आयत नहीं लाते तो कहते हैं कि क्यों कोई आयत नहीं बनाई। (२०३) तुम कहो कि मैं तो जो कुछ मेरे पालनकर्ता के यहाँ से मेरी ओर वही ईश्वरीय संवाद आया है उसी पर चलता हूं यह शिक्षा और दया और सोच-समझ की बातें धर्मवालों के लिए तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से हैं और जब कुरान पढ़ा जाया करे तो उसको कान लगा कर सुनो। और चुप रहो सम्भवतः तुम पर कृपा की जाय। (२०४) और अपने हृदय में गिड़गिड़ा कर और डर डर कर और धीमी बाणी से प्रातः सायं अपने पालनकर्ता को स्मरण करते रहो और भूले न रहो। (२०५) जो तुम्हारे पालनकर्ता के निकट के हैं उसकी पूजा से मुंह नहीं फेरते और उसकी पवित्रता की माला फेरते हैं और उसी के सामने सिर नवाते हैं। (२०६) (रुकू २४)

सूरे अन्फाल

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ७५ आयतें, १० रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ऐ पैगम्बर मुसलमान सैनिक तुमसे लूट के धन*की आज्ञा पूछते हैं, कह दो कि लूट का धन तो अल्लाह और पैगम्बर का है, तुम ईश्वरसे डरो और आपस में मेल करो। यदि तुम मुसलमान हो तो अल्लाह और

*वह माल जो मुसलमानों को लड़े पीछे हाथ आए।

उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो। (१) मुसलमान वही हैं कि जब ईश्वर का नाम लिया जाता है तो उनके हृदय धड़क जाते हैं और जब ईश्वर की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती हैं तो वह उनके विश्वास को अधिक कर देती हैं और वह अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते हैं। (२) जो नमाज पढ़ते और हमने जो उनको जीविका दी है उसमें से व्यय करते हैं। (३) यही सच्चे मुसलमान हैं, इनके लिए इनके पालनकर्ता के यहाँ पद हैं और क्षमा और मान की जीविका। (४) जैसे तुमको तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम्हारे घर से निकाला और मुसलमानों का गुट प्रसन्न न था। (५) कि वह मनुष्य प्रकट हुए पीछे तुम्हारे साथ सच बात में झगड़ा करने लगे। मानो उनको मृत्यु की ओर ढकेला जाता है और वह मृत्यु को आँखों से देख रहे हैं। (६) जब ईश्वर तुम मुसलमानों से प्रतिज्ञा करता था कि दो समाजों * में से कोई-सा एक तुम्हारे हाथ आ जायगा और तुम चाहते थे कि जिसमें काँटा न लगे वह तुम्हारे हाथ आ जाय और अल्लाह की इच्छा यह थी कि अपनी आज्ञा से अधिकार को स्थिर करे और काफिरों की जड़ काट डाले। (७) जिससे सच को सच झूठ को झूठ कर दिखावे। चाहे काफिरों को भले ही बुरा लगे। (८) यह वह समय था कि तुम अपने पालनकर्ता के आगे विनती करते थे तो उसने तुम्हारी सुन ली कि हम निरन्तर सहस्त्र देवदूतों से तुम्हारी सहायता करेंगे। (९) और यह देवदूतों की सहायता जो ईश्वर ने की केवल प्रसन्न करने को और इसलिए कि तुम्हारे हृदय उसके कारण सन्तुष्ट हो जायं अन्यथा जीत तो अल्लाह की ही ओर से है। निस्सन्देह अल्लाह प्रबन्ध अधिकारी है। (१०) (रुकू १)

***अबूजहल या अबुसुफियान के समाज, जिनकी मक्के में धाक बैठी थी। उनमें से एक तुम्हारे साथ आ जायेगा। अतः आबूसुफियान बाद में मुसलमानों के साथ आ गए।**

यह वह समय था कि ईश्वर अपनी ओर से सन्तोष के लिए ओंघ को तुम पर उतार रहा था और नभ से तुम पर पानी बरसाया जिससे उसके द्वारा तुमको पवित्र करे और राक्षसी मलीनता को तुमसे दूर कर दे और जिससे तुम्हारे हृदयों का साहस बंधावे और उसी के द्वारा तुम्हारे पाँव जमाये रखे। (११) ऐ पैगम्बर यह वह समय था कि तुम्हारा पालनकर्ता देवदूतों को आज्ञा दे रहा था कि हम तुम्हारे साथ हैं तुम मुसलमानों को स्थिर रखो हम शीघ्र काफिरों के हृदय में भय डाल देंगे बस तुम इनकी गरदनें मारो और इनके टुकड़े-टुकड़े कर डालो। (१२) यह इस बात का दण्ड है कि उन्होंने अल्लाह और उनके पैगम्बर का सामना किया और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विरोध करेगा तो अल्लाह की मार बड़ी कठिन है। * (१३) यह तुम भुगत लो और जान लो कि काफिरों को नरक का दण्ड है। (१४) ऐ मुसलमानों! जब काफिरों से तुम्हारे लश्कर की मुठभेड़ हो जाय तो उनको पीठ न दिखाना। (१५) और जो व्यक्ति ऐसे अवसर पर काफिरों को अपनी पीठ दिखायेगा वह ईश्वर के कोप में आ गया और उसका ठिकाना नरक है और वह बहुत ही बुरा स्थान है परन्तु यह कि कला-कौशल करता हो दु:ख या सेना में जा मिलता हो। (१६) बस काफिरों को तुमने वध नहीं किया अपितु उनको अल्लाह ने वध किया और जब तुमने तीर चलाये तो तुमने तीर नहीं चलाये अपितु अल्लाह ने तीर चलाये और वह मुसलमानों पर कृपा किया चाहता था निस्सन्देह अल्लाह सुनता और जानता है। (१७) वह बात जान लो कि ईश्वर को काफिरों के प्रयत्नों के असफल कर देना स्वीकार है। (१८) तुम जो विजय माँगते थे वह विजय तुम्हारे सामने आ गई और यदि बचे रहोगे तो यह तुम्हारे पक्ष में भला होगा और यदि तुम फिर कर आओगे तो हम भी फिरकर आवेंगे और तुम्हारा जत्था कितना ही बहुत हो कुछ भी तुम्हारे काम नहीं आयेगा और जानो कि अल्लाह मुसलमानों के साथ है। (१९) (रुकू २)

मुसलमानों ! अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा मानो और उससे सिर न उठाओ और तुम सुन ही रहे हो । (२०) और उन मनुष्यों जैसे न बनो जिन्होंने कह दिया कि हमने सुना यद्यपि वह सुनते नहीं । (२१) अल्लाह के निकट सब जीवों में निकृष्ट बहरे गूँगे हैं जो नहीं समझते । (२२) यदि अल्लाह इनमें भलाई पाता तो इनको सुनने की योग्यता भी अवश्य देता परन्तु यदि ईश्वर इनको सुनने की योग्यता दे तो भी यह मुंह फेरकर उल्टे भागें । (२३) मुसलमानों ! जब पैगम्बर तुमको ऐसे धर्म की ओर बुलाते हैं जो तुममें नई आत्मा फूंकता है तो तुम अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा मानो और जाने रहो कि मनुष्य और उसके हृदय के मध्य ईश्वर आ जाता है और यह कि तुम उसी के सामने प्रस्तुत किए जाओगे । (२४) और उस विपत्ति से डरते रहो जो विशेषकर उन्हीं पर नहीं आयेगी जिन्होंने तुममें से सिर उठाया है और जाने रहो कि अल्लाह की मार बड़ी कठोर है । (२५) और स्मरण करो जब तुम पृथ्वी में, मक्का में थोड़े-से थे निर्बल समझे जाते थे, इस बात से डरते थे कि मनुष्य तुमको शक्ती से पकड़कर न उड़ा ले जायं, फिर ईश्वर ने तुमको स्थान दिया और अपनी सहायता से तुम्हारी सहायता की और अच्छी-अच्छी वस्तुएं तुम्हें खाने को दीं इसलिए कि तुम धन्यवाद दो । (२६) मुसलमानों ! अल्लाह और रसूल की धरोहर मत मारो न आपस की धरोहर मारो और तुम तो जानते हो । (२७) जाने रहो कि तुम्हारे धन और तुम्हारी दौलत बखेड़े हैं और और अल्लाह के यहाँ बड़ा परिणाम है । (२८) (रुकू ३)

मुसलमानों ! यदि तुम ईश्वर से डरते रहोगे तो वह तुम्हारे लिए निर्णय कर देगा और तुम्हारे पाप तुमसे दूर कर देगा और तुमको क्षमा करेगा और अल्लाह बड़ा दयालु है । (२९) जब काफिर तुम पर धोखा करते थे कि तुमको पकड़कर रखें या तुमको मार डालें या तुमको देश-निकाला कर दें और काफिर चाल करते थे और अल्लाह भी चाल करता था और ईश्वर सब चाल चलने वालों से अच्छी चाल चलनेवाला

है । (३०) जब हमारी आयतें इन काफिरों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं हमने सुन लिया यदि हम चाहें तो हम भी इसी प्रकार की बातें कह लें, यह तो आगे के मनुष्यों की कहानियाँ हैं । (३१) जब काफिर कहने लगे कि ऐ अल्लाह यदि तेरी ओर से यही सच है तो हम पर नभ से पत्थर बरसा या हम पर कड़ा दण्ड डाल । (३२) ईश्वर ऐसा नहीं है कि तुम इनमें रहो और वह इनको दण्ड दे और अल्लाह ऐसा नहीं है कि मनुष्य क्षमा माँगें और वह इनको दण्ड दे। (३३) क्योंकर अल्लाह उन्हें दण्ड न देगा जबकि वह मसजिद अर्थात काबा के घर से मनुष्यों को रोकते हैं । यद्यपि वह उसके अधिकारी नहीं उसके अधिकारी तो संयमी हैं परन्तु इनमें के बहुतेरे नहीं समझते । (३४) काबा के घर के पास सीटियाँ और तालियाँ बजाने के अतिरिक्त उनकी नमाज ही क्या थी तो ऐ काफिर जैसा तुम मना करते रहे हो उसके बदले दण्ड भुगतो । (३५) इसमें सन्देह नहीं कि यह काफिर अपना धन व्यय करते हैं कि ईश्वर मार्ग से रोकें सो अभी और धन व्यय करेंगे फिर वही धन इनके लिए में दुःख का कारण होगा और अन्त में हार जायेंगे । काफिर नरक की ओर हाँके जायेंगे । (३६) जिससे अल्लाह अपवित्र को पवित्र से पृथक करे और अपवित्र को एक दूसरे के ऊपर रखकर उन सबका ढेर लगाए फिर उस ढेर को नरक में झौंक दे, यही मनुष्य हैं जो हानि में रहे। (३७) (रुकू ४)

काफिरों से कहो कि यदि मान जायेंगे तो उनके पिछले अपराध क्षमा कर दिये जायेंगे और यदि फिर उत्पात करेंगे तो अगले मनुष्यों की चाल पड़ चुकी है जैसा उनके साथ हुआ है इनके साथ भी होगा । (३८) काफिरों से लड़ते रहो यहाँ तक कि उत्पात न रहे और सब ईश्वर ही का धर्म हो जाय । बस यदि मान जावें तो जो कुछ यह करेंगे अल्लाह उसको देख रहा है । (३९) यदि सिर उठावें तो तुम समझते रहो कि अल्लाह तुम्हारा सहायक और अच्छा सहायक है । (४०)

दसवाँ पारा (वालमू)

और जान रक्खो कि जो वस्तु तुम लूटकर लाओ उसका पाँचवाँ भाग ईश्वर का और पैगम्बर का और पैगम्बर के सम्बन्धियों का अनाथों का और निर्धन और यात्रियों का यदि तुम ईश्वर का और उस अदृश्य सहायक का विश्वास रखते हो जो हमने अपने सेवक पर निर्णय के दिन उतारी थी जिस दिन कि मुसलमानों और काफिरों के दो लश्कर एक दूसरे से गुथ गये थे और अल्लाह प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (४१) यह वह समय था कि तुम मुसलमान युद्ध भूमि के उस सिरे पर थे और काफिर दूसरे सिरे पर और काफला नदी के किनारे तुमसे नीचे की ओर को उतर गया था, यदि तुमने आपस में युद्ध का ठहराव किया होता तो अवश्य प्रतिज्ञा भंग करनी पड़ती। परन्तु ईश्वर को जो कुछ करना स्वीकार था उसने पूरा कर दिखलाया जिससे मर जाये जो सूझकर मरे और जो जीवे तो सूझकर जीवे और अल्लाह सुनता और जानता है। (४२) ऐ पैगम्बर, उसी समय की घटना यह भी है जबकि ईश्वर ने तुमको थोड़े काफिर दिखलाये और यदि उन्हें तुमको बहुत कर दिखाता तो तुम अवश्य साहस छोड़ देते और युद्ध के विषय में भी अवश्य आपस में झगड़ने लगते। परन्तु ईश्वर ने बचाया निस्सन्देह वह हार्दिक विचारों से जानकार है। (४३) जब तुम एक दूसरे से लड़ मरे काफिरों को तुमने मुसलमानों की आँखों में थोड़ा कर दिखलाया और काफिरों की आंखों में तुमने मुसलमानों को बहुत कर दिखाया जिससे ईश्वर को जो कुछ करना स्वीकार था पूरा कर दिखाये और अन्ततः सब कामों का सहारा अल्लाह ही पर जाकर ठहरता है। (४४) (रुकू ५)

मुसलमानों! जब किसी सेना से तुम्हारी मुठभेड़ हो जाया करे तो जमे रहो और अल्लाह को खूब स्मरण करो सम्भवतः तुम लक्ष्य प्राप्त करो। (४५) अल्लाह और पैगम्बर की आज्ञा मानो और

आपस में झगड़ा न करो नहीं तो साहस छोड़ दोगे और तुम्हारी हवा उखड़ जायगी और ठहरे रहो और अल्लाह ठहरने वालों का साथी है। (४६) उन काफिरों जैसे न बनो जो अभिमान के मारे औरों को दिखाने के लिए अपने घरों से निकल खड़े हुए और ईश्वर को मार्ग से रोकते थे और जो कुछ भी यह करते हैं अल्लाह के वश में है। (४७) जब राक्षस ने उन काफिरों के कर्म उनको अच्छे कर दिखलाये और कहा आज मनुष्यों में कोई ऐसा नहीं जो तुम को जीत सके और मैं तुम्हारा सहायक हूं फिर जब दोनों सेनाएं आमने-सामने आई वह अपने उल्टे पाँव हटा और कहने लगा कि मुझको तुमसे कोई सम्बन्ध नहीं, मैं वह वस्तु देख रहा हूं जो तुमको सूझ पड़ती, मैं तो अल्लाह से डरता हूं और अल्लाह की मार बड़ी कठोर है। (४८) (रुकू ६)

जब मुनाफिकों और मनुष्यों के हृदय में अस्वीकृति की बीमारी थी कहते थे मुसलमान घमण्डी हैं और जो ईश्वर पर भरोसा रक्खेगा तो अल्लाह प्रबल और चमत्कार वाला है। (४९) और ऐ पैगम्बर तुम देखोगे जबकि देवदूत काफिरों की जान निकालते हैं इनके मुखों गुन्धियों पर मारते जाते हैं और कहते जाते हैं कि देखो नरक के दण्ड को भोगो। (५०) यह तुम्हारे उन बुर कामों का बदला है जो तुमने अपने हाथों पहले से भेजे हैं और इसलिए कि ईश्वर तो सेवकों पर किसी प्रकार का अत्याचार नहीं करता। (५१) जैसी गति फिरऔन की जाति और उनके अगलों की। कि उन्होंने ईश्वर की आयतों से मना किया तो ईश्वर नें उनके अपराधों के बदले उनको धर पकड़ा अल्लाह प्रबल है उसकी मार बड़ी कठोर है। (५२) यह इसलिए कि ईश्वर ने जो पदार्थ किसी जाति को दिये हों जब तक कि वह आप ही न बदलें जो उनके जी में है ईश्वर की आदत नहीं कि उसमें कुछ हेर-फेर करे और अल्लाह सुनता और जानता है। (५३) जैसी गति फिरऔन और उन मनुष्यों की हुई जो उनसे पहिले थे कि उन्होंने अपने पालनकर्ता की आयतों को झुठलाया तो हमने उनके पापों के

बदले मार डाला और फिरऔन के मनुष्यों को डुबो दिया और वह अन्यायी पशु थे वैसे ही इनकी गति होगी। (५४) अल्लाह के निकट सबसे बुरा वह है जो अस्वीकार करते हैं फिर नहीं मानते। (५५) जिससे तुमने प्रण किया। उस अपने प्रण को प्रत्येक बार तोड़ते हो और नहीं डरते। (५६) सो यदि तुम उनको युद्ध में पाओ तो उन पर ऐसा जोर डालो कि जो मनुष्य उनकी सहायता पर हैं इनको भागते देखकर उनको भी भागना ही पड़े सम्भवतः यह लोग सीख लें। (५७) और यदि तुमको किसी जाति की ओर से दगा का संदेह हो तो समानता का ध्यान रखकर उन्हीं की ओर फेंक मारों, अल्लाह धोखेबाजों को नहीं चाहता। (५८) (रुकू ७)

काफिरों यह न समझें कि हमारे वश से निकल गये वह कदापि हरा नहीं सकते। (५९) मुसलमानों, सैनिकत्व की शक्ति से और घोड़ों के बाँधे रखने से जहाँ तक तुमसे हो सके काफिरों के सामने के लिए साज व सामान इकट्ठा किये रहो कि ऐसा करने से अल्लाह के शत्रुओं पर और अपने शत्रुओं पर अपनी धाक बैठाये रक्खोगे और उनके अतिरिक्त दूसरों पर भी जिनको तुम नहीं जानते अल्लाह उनसे जानकार है और ईश्वर के मार्ग में जो कुछ भी व्यय करोगे वह तुमको पूरा-पूरा भर दिया जायगा। (६०) ऐ पैगम्बर यदि यह मनुष्य सन्धि की ओर झुकें तो तुम भी उसकी ओर झुको ओर अल्लाह पर भरोसा रक्खो क्योंकि वही सुनता-जानता है। (६१) यदि उनकी इच्छा तुमसे छल करने की होगी तो अल्लाह तुमको पर्याप्त है वही सबसे शक्तिशाली है। जिसने अपनी सहायता का और मुसलमानों की तुमको शक्ति दी। (६२) और मुसलमानों के हृदयों में आपस में प्रेम उत्पन्न कर दिया। यदि तुम पृथ्वी पर के सारे कोष भी व्यय कर डालते तो भी उनके हृदय में प्रेम न उत्पन्न न कर सके परन्तु अल्लाह ने उन मनुष्यों में प्रेम उत्पन्न कर दिया वह प्रबल चमत्कार वाला। (६३) ऐ पैगम्बर ! अल्लाह और मुसलमान जो तुम्हारे आज्ञाकारी हैं तुमको पर्याप्त हैं। (६४) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर ! मुसमलानों को लड़ने पर उत्तेजित करो कि यदि तुम में से जमे रहने वाले बीस भी होंगे तो दो सौ पर अधिक शक्ति-शाली बैठेंगे यदि तुम में से सौ होंगे तो सहस्र काफिरों पर अधिक शक्तिशाली बैठेंगे क्योंकि यह ऐसे मनुष्य हैं जो समझते ही नहीं। (६५) अब ईश्वर ने तुम पर अपनी आज्ञाओं का भार हल्का कर दिया और उसने देखा कि तुममें निर्बलता है तो यदि तुममें से जमे रहने वाले सौ होंगे दो सौ पर अधिक शक्तिशाली रहेंगे और यदि तुममें से सहस्र होंगे ईश्वर के आज्ञा से वह दो सहस्र पर अधिक शक्तिशाली बैठेंगे। अल्लाह उन मनुष्यों का साथी भी है जो जमे हैं। (६६) पैगम्बर जब तक देश में अच्छी प्रकार मारधाड़ न लें उनके पास बन्दियों का रहना उचित नहीं। तुम तो संसार के धन-धान्य चाहने वाले हो और अल्लाह प्रबल चमत्कार वाला है। (६७) यदि ईश्वर के यहाँ से आज्ञा लिखित पहिले से न हो चुकी होती तो जो कुछ तुमने लिया है* उसमें अवश्य तुमको बुरा ही दण्ड मिलता। (६८) तो जो कुछ तुमको लूट से हाथ लगा है उसको पाकर समझकर खाओ और अल्लाह से डरते अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६९) (रुकू ९)

ऐ पैगम्बर ! वे बन्दी जो तुम मुसलमानों के अधिकार में हैं उनको समझा दो कि यदि अल्लाह देखेगा कि तुम्हारे हृदय में भलाई है तो जो तुमसे छीना गया है उससे अच्छा तुमको देगा और तुम्हारे अपराध भी क्षमा करेगा और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (७०) और ऐ पैगम्बर यदि यह मनुष्य तुम्हारे साथ छल करना चाहेंगे तो पहिले भी अल्लाह से छल कर चुके हैं तो उसने इनको बन्दी करा दिया और

---

* बद्र की लड़ाई में बहुत-से काफिरों को मुसलमानों ने पकड़ लिया था। उनको फिदया कुछ रुपया या माल लेकर छोड़ दिया था। (जो कुछ) का अर्थ है वही धन या माल जिसके बदले कैदियों को छोड़ दिया गया था।

अल्लाह जानकार और चमत्कार वाला है। (७१) जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अल्लाह के मार्ग में अपनी तन-धन से प्रयत्न किया और जिन मनुष्यों ने स्थान दिया और सहायता की यही मनुष्य एक के स्वामी एक और जो मनुष्य विश्वास तो ले आये और देश त्याग नहीं किया तो तुम मुसलमानों को उनके स्वामी होने से कुछ सम्बन्ध नहीं जब तक देश त्याग करके तुममें न आ मिलें। हाँ यदि धर्म के विषय में तुमसे सहायता चाहें तो तुमको उनकी सहायता करनी आवश्यक है, परन्तु उस जाति की बराबरी में नहीं कि तुममें और उनमें प्रण हो और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको देख रहा है। (७२) और काफिर भी आपस में मित्र हैं यदि ऐसा न करोगे तो देश में उत्पात फैल जायगा और देश में बड़ा उत्पात होगा। (७३) और जो विश्वास लायें उन्होंने मुहाजरीन देश त्याग किया और अल्लाह के मार्ग में प्रयत्न किया और जिन मनुष्यों ने स्थान दिया और सहायता की, यही पक्के मुसलमान हैं। इनके लिए क्षमा और मान की जीविका है। (७४) और जो मनुष्य बाद को विश्वास लाये और उन्होंने देश त्याग किया और तुम मुसलमानों के साथ होकर धर्म-युद्ध किया तो वह तुम्हीं में सम्मिलित हैं और सम्बन्धी अल्लाह की आज्ञा के अनुसार अनजान की निस्बत अधिक अधिकारी हैं। अल्लाह प्रत्येक वस्तु का ज्ञाता है। (७५) (रुकू १०)

सूरे तौबा*

मदीने में अवतरित हुई इसमें १२९ आयतें और १६ रुकू हैं

जिन मुशरिकों के साथ तुमने प्रण कर रक्खा था अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर से उनको स्पष्ट उत्तर* है। (१) तो ऐ मुशरिको शान्ति के चार महीने जीकाज, जिलहिज्ज, मुहर्रम और रजब देश में चलो-फिरो और जाने रहो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और अल्लाह काफिरों को नरक देने वाला है। (२) और बड़े हज्ज के दिन अल्लाह और उसके पैगम्बर की ओर से मनुष्यों को सूचना दी जाती है कि अल्लाह और उसका पैगम्बर मुशारिकों से पृथक है। बस यदि तुम क्षमायाचना करो तो यह तुम्हारे लिये भला है और यदि फिरे रहो तो जान रक्खो कि तुम अल्लाह को हरा नहीं सकोगे और काफिरों को दुखदाई दण्ड का शुभसंवाद सुना दो। (३) हाँ मशरिकों में से जिनके साथ तुमने प्रण कर रक्खा था फिर उन्होंने तुम्हारे साथ किसी प्रकार की कमी नहीं की और न तुम्हारे सामने किसी की सहायता की। वह पृथक हैं तो उनके साथ जो प्रण है उसे उस समय तक जो उनके साथ ठहरी थी पूरा करो क्योंकि अल्लाह उन मनुष्यों को जो बचते हैं उन्हें वह चाहता है। (४) फिर जब

---

* इस सूरत के आरम्भ में ईश्वर ने बिस्मिल्लाह का उच्चारण नहीं भेजा, क्योंकि ये आयतें उस समय उतरी हैं जब मुशरिकों ने मुसलमानों के साथ किया हुआ समझौता तोड़ डाला था और इसलिए ईश्वर उनसे बहुत रुष्ट था।

** यानी मुशरिकों ने अपना प्रण तोड़ा तो मुसलमान भी उस समझौते का पालन नहीं करेंगे। यह हुदैबिया की संधि की ओर इशारा है।

मान के महीने निकल जावें तो मुशरिकों को जहाँ पाओ बध करो और उनको बन्दी करो। उनको घेर लो और हर घात के स्थान उनकी ताक में बैठो, फिर यदि वह क्षमा सूचना करें और नमाज पढ़ें और दान करें तो उनका मार्ग छोड़ दो। अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (५) और ऐ पैगम्बर मुशरिकों में से यदि कोई मनुष्य तुमसे शरण माँगे तो शरण दो। यहां तक कि वह ईश्वर का शब्द सुन ले फिर उसको उसके सुख के स्थान पर वापस पहुंचा दो इस कारण से कि यह मनुष्य जानकार नहीं। (६) (रुकू १)

अल्लाह और उसके पैगम्बर के निकट मुशरिकों का प्रण क्योंकर स्थिर रह सकता है जबकि उन्होंने उसको तोड़कर रख दिया है। परन्तु जिन मनुष्यों के साथ तुमने मसजिद पाप के निकट प्रण हुदेबिया की सन्धी की थी, तो जबतक वह तुममें सीधे रहें तुम भी उनसे सीधे रहो क्योंकि अल्लाह उन मनुष्यों को जो बचते हैं पसन्द करता है। (७) क्यों कर प्रण रह सकता है यदि तुमसे जीत जावें तो तुम्हारे पक्ष में सम्बन्ध और प्रण की नम्रता न करेंगे—अपने मुंह की बात से प्रसन्न करते हैं और उनके हृदय नहीं मानते और उनमें बहुत अवज्ञाकारी हैं। (८) यह मनुष्य ईश्वर की आयतों के बदले में थोड़ा सा लाभ पाकर ईश्वर के मार्ग से रोकने लगते हैं। यह जो कर रहे हैं बुरे काम हैं। (९) किसी मुसलमान के विषय में न तो सम्बन्ध का विचार रखते हैं और न प्रण का और यही मनुष्य असीमितता पर हैं (१०) फिर यदि यह मनुष्य क्षमायाचना करें और नमाज पढ़ें और दान दें तो तुम्हारे धर्मी भाई और जो मनुष्य समझदार हैं उनके लिए हम अपनी आयतों को खोल कर वर्णन करते हैं। (११) और यदि यह मनुष्य प्रण किये पीछे अपनी कसमों को तोड़ डालें और तुम्हारे धर्म में आक्षेप करें तो तुम कुफ़ के अगुओं से लड़ो, उनकी कसमें कुछ नहीं, सम्भवतः यह मान जावें। (१२) तुम इन मनुष्यों से क्यों न लड़ो जिन्होंने अपनी कसमों को तोड़ डाला और पैगम्बर के निकाल

देने का विचार किया और तुमसे छेड़खानी भी प्रथम इन्होंने ही आरम्भ की तुम इन मनुष्यों से डरते हो। बस यदि तुम विश्वास रखते हो तो तुमको अल्लाह से अधिक डरना चाहिए। (१३) इन मनुष्यों से लड़ो ईश्वर तुम्हारे ही हाथों इनको दण्ड देगा और इनकी अप-कीर्ति करेगा और इन पर तुमको विजय देगा और मुसलमानों के हृदय का कोप ठण्डा करेगा। (१४) और इनके हृदय में जो कोप है उसको भी दूर करेगा और अल्लाह जिसकी चाहे क्षमा स्वीकार कर ले और अल्लाह ज्ञाता चमत्कारवाला है। (१५) क्या तुमने ऐसा समझ रक्खा है कि छूट जाओगे और अभी अभी अल्लाह ने उन मनुष्यों को देखा तक नहीं जो तुममें से प्रयत्न करते हैं और अल्लाह और उसके पैगम्बर और मुसलमानों को छोड़ कर किसी को अपना मित्र नहीं बनाते। जो कुछ भी तुम कर रहे हो अल्लाह को उसकी सूचना है। (१६) (रुकू २)

मुशरिकों को कोई अधिकार नहीं कि अल्लाह की मसजिद आबाद रक्खें और अपने ऊपर कुफ्र को मानते जायें। यही मनुष्य हैं जिनका किया-धरा सब निरर्थक हुआ और यही मनुष्य सदैव नरक में रहने वाले हैं। (१७) अल्लाह की मसजिद को वही आबाद रखता है जो अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाता है और नमाज पढ़ता और दान देता रहा है और जिस ने ईश्वर के अतिरिक्त किसी का भय न माना तो ऐसे मनुष्यों पर आशा की जा सकती है कि ये शिक्षा पाने वालों में होंगे। (१८) क्या तुमने हाजियों* के पानी मिलाने और माननीय मसजिद आबाद रखने को उस व्यक्ति के कामों जैसा समझ लिया है जो अल्लाह और प्रलय पर विश्वास लाता और अल्लाह के मार्ग में युद्ध करता है। अल्लाह के निकट तो यह मनुष्य एक दूसरे के

---

* हज्ज यात्रा करने वाला।

समान नहीं और अल्लाह अत्याचारियों को सीधा मार्ग नहीं दिखलाया करता। (१९) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने देश त्याग किया और अपने जान व धन से अल्लाह के मार्ग में युद्ध किये,अल्लाह के यहाँ पदों में कहीं बढ़ कर है और यही हैं जो सफल हैं।(२०)इनका पालन-कर्ता इनको अपनी कृपा और स्वीकृति और ऐसे उपवनों का मंगल समाचार देता है जिनमें इनको सदैव का आराम मिलेगा। (२१) उन उपवनों में सदैव रहेंगे अल्लाह के यहाँ बड़ा बदला है। (२२) मुसल-मानों! यदि तुम्हारे पिता और तुम्हारे भाई विश्वास के मुकाबले में अविश्वास को भला समझे तो उनको मित्र मत बनाओ और जो तुममें से ऐसे पिता-भाइयों केसाथ मित्रता रखेगा तो यही मनुष्य अन्यायी हैं।(२३) ऐ पैगम्बर! मुसलमानों को समझा दो कि यदि तुम्हारेपिता और तुम्हारे पुत्र और तुम्हारे भाई और तुम्हारी स्त्रियाँ और तुम्हारे कुटुम्बी और धन जो तुमने कमाये हैं और व्यापार जिनके मंदा हो जाने का तुमको सन्देह हो और मकानात जिनको तुम्हारा दिल चाहता है अल्लाह और उसके पैगम्बर और अल्लाह के मार्ग में धर्मयुद्ध करने से तुमको अधिक प्यारे हों तो सन्तोष करो यहाँ तक जो कुछ ईश्वर को करना है वह लाकर उपस्थित करे और अल्लाह उन मनुष्यों को जो सिर उठावें उपदेश नहीं दिया करता। (२४) (रुकू ३)

अल्लाह बहुत-से अवसरों पर तुम्हारी सहायता कर चुका है और विशेषकर हुनैन के युद्ध के दिन जबकि तुम्हारी अधिकता के तुमको घमंडी*कर दिया था तो वह तुम्हारे कुछ भी काम न आती और

*मक्के की विजय के बाद मुसलमानों की संख्या बढ़ गई थी। जब उनको हवाजिन जाति के चढ़ाई करने के इरादे का पता लगा तो कहने लगे कि उनको मार भगाना क्या मुश्किल है। हम लगभग १६००० हैं और हमारे शत्रु केवल ४ या ५ हजार। खुदा को उनका घमंड बुरा लगा। हवाजिन ने उन पर ऐसा कड़ा धावा किया कि ७०

पृथ्वी अधिक होने पर भी तुम पर तंगी करने लगी। फिर तुम पीठ फेरकर भाग निकले। (२५) फिर अल्लाह ने अपने पैगम्बर पर और मुसलमानों पर अपना सन्तोष उतारा और ऐसी सेनाएँ भेजीं जो तुमको दिखलाई*नहीं पड़ती थीं और काफिरों को बड़ी कठोर मार दी और काफिरों का यही दण्ड है। (२६) फिर उसके पश्चात ईश्वर जिसको चाहे क्षमा देगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२७) मुसलमानों, मुशरिक तो मलीन हैं तो इस वर्ष के पश्चात माननीय मसजिद के निकट भी न फटकने पायें और यदि तुमको निर्धनता का खटका हो तो ईश्वर चाहेगा तो तुमको अपनी दया से धनवान कर देगा। ईश्वर जानकार चमत्कार वाला है। (२८) पुस्तकवाले जो न ईश्वर को मानते हैं और न प्रलय को और न अल्लाह और उसके पाप की पैगम्बर की हुई वस्तुओं को पाप समझते हैं और न सच्चे धर्म को मानते हैं,इनसे लड़ो यहाँ तक कि निर्लज्ज होकर अपने हाथो से** जजिया दें। (२९) (रुकू ४)

यहूद कहते हैं कि उजेर अल्लाह के पुत्र हैं और ईसाई कहते हैं कि मसीह अल्लाह के पुत्र हैं यह उनके मुंह का कहना है, उन्हीं काफिरों कैसी बातें बनाने लगे जो इनसे पहले हैं, ईश्वर इनको पूछे, किधर को भटके चले जा रहे हैं। (३०) इन मनुष्यों ने अल्लाह को छोड़कर अपने विद्वानों और अपने यतियों और मरियम के पुत्र मसीह को ईश्वर

सैनिकों को छोड़कर सब भाग खड़े हुए। अहंकार का यह परिणाम हुआ। बाद में खुदा की मदद से जीत हुई।

*फरिश्तों की सेना ने हुनैन के युद्ध में मुसलमानों की सहायता की, तब उनको विजय प्राप्त हुई। इस लड़ाई में जितना लूट का माल मुसलमानों के हाथ लगा उतना किसी और लड़ाई में नहीं लगा।

**जजिया उस कर को कहते हैं जो मुसलमान-शासक अपन खिलाफ मजहब वालों से किया करते थे।

बना खड़ा किया यद्यपि इनको यही आज्ञा दी गई थी कि एक ही ईश्वर की पूजा करते रहना, उसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं, वह उनकी शिर्क से पवित्र है। (३१) चाहते हैं कि ईश्वर के प्रकाश को मुंह से बुझा दें और ईश्वर को स्वीकार है कि हर प्रकार पर अपने प्रकाश को पूर्ण करे, काफिरों को भले ही बुरा लगे। (३२) वही है जिसने अपने पैगम्बर को उपदेश और सच्चा धर्म देकर भेजा जिससे उसको सम्पूर्ण धर्म पर विजय दी। मुशरिकों को भले ही बुरी लगे। (३३) मुसलमानों ! प्रायः विद्वान और यती मनुष्यों के धन निरर्थक खाते और ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं और जो मनुष्य सोना और चाँदी एकत्रित करते रहते हैं और उसको ईश्वर के मार्ग में व्यय नहीं करते तो उनको दुखदाई दण्ड का शुभसंवाद सुना दो। (३४) जबकि उस सोने चांदी को नरकाग्नि में तपाया जायगा फिर उससे उनके माथे और उनकी करवटें और उनकी पीठें चिन्हित की जायेंगीं और कहा जायगा यह है जो तुमने अपने लिए एकत्रित किया था, लो अपने एकत्रित किए का आनन्द चखो। (३५) जिस दिन ईश्वर ने नभ और पृथ्वी उत्पन्न किये हैं, ईश्वर के यहाँ महीनों की गिनती अल्लाह की पुस्तक में १२ महीने हैं जिनमें से चार आदरणीय हैं। सीधा मार्ग तो यह है मुसलमानों, इन चार महीने में अपनी जानों पर अत्याचार न करना लड़ना नहीं और तुम मुसलमान सब मुशरिकों से लड़ो जैसे वह तुम सबसे लड़ते हैं। जाने रहो कि अल्लाह संयमियों का साथी है। (३६) महीनों का हटा देना भी एक अधिक अस्वीकृति है। जिसके कारण से काफिर भटकते रहते हैं, एक वर्ष एक महीने को पुण्य समझ लेते हैं और उसी को दूसरे वर्ष पाप ठहराते हैं। अल्लाह ने जो पाप माने हैं उस गिनती के अनुसार अल्लाह के पाप माने हुए को पुण्य कर लें। इनके बुरे आचरण इनको भले दिखाई देते हैं और अल्लाह काफिरों को उपदेश नहीं दिया करता। (३७) (रुकू ५)

मुसलमानों, तुमको क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि धर्मयुद्ध के लिए निकलो तो तुम पृथ्वी पर ढेर हो जाते हो,

क्या प्रलय के बदले साँसारिक जीवन पर सन्तोष कर बैठें हो। प्रलय के बदले में जीवन के सुख बिलकुल नाचीज हैं (३८) यदि तुम न निकलोगे तो ईश्वर तुमको वही दुखदाई मार देगा और तुम्हारे बदले दूसरे मनुष्य लाकर उपस्थित करेगा और तुम उसका कुछ भी नहीं बिगाड़ सकोगे और प्रत्येक वस्तु पर शक्तिशाली है। (३६) यदि तुम पैगम्बर की सहायता न करोगे तो उसी ने अपने पैगम्बर की सहायता उस समय भी की थी जब काफिरों ने उनको मक्का से निकाल बाहर किया था, जब वह दोनों अबूवकर और मोहम्मद, सौर की कंदरा में छिपे थे उस समय पैगम्बर अपने साथी को समझा रहे थे कि मत डरो अल्लाह हमारे साथ है। फिर अल्लाह ने पैगम्बर पर अपना संतोष उतारा और उनकी ऐसी सेनाओं से सहायता दी जिनको तुम न देख सके और काफिरों की बात नींची रही और अल्लाह ही की बात ऊँची है और अल्लाह प्रबल चमत्कार वाला है। (४०) हल्के और भारी सशस्त्र हो या निशस्त्र तो पैगम्बर के बुलाने पर निकल खड़े हुआ करो और अपनी जान व धन से ईश्वर के मार्ग में युद्ध करो, यदि तुम जानते हो तो यह तुम्हारे पक्ष में भला है। (४१) यदि प्रत्यक्ष लाभ होता और यात्री भी साधारण सी होती तो तुम्हारे साथ चलते, परन्तु इनको यात्रा दूर प्रतीत हुई और ईश्वर की कसम खा-खाकर कहेंगे कि यदि हमसे बन पड़ता तो हम अवश्य तुम्हारे साथ निकल खड़े होते। यह मनुष्य स्वयं अपनी जानों को संकट में डाल रहे हैं और अल्लाह को पता है कि यह मनुष्य झूठे हैं। (४२) (रुकू ३)

ऐ मोहम्मद! ईश्वर तुझे क्षमा करे। तूने क्यों उनको इस युद्ध में न जाने की आज्ञा दी, इससे पहले कि तुझे उज्र में सच्चे और झूठे प्रतीत हों। (४३) जो मनुष्य ईश्वर का और प्रलय का विश्वास रखते हैं वह तो तुझसे इस बात का अवकाश माँगते कि अपनी जान व धन से धर्मयुद्ध सम्मिलित न हों। और अल्लाह संयमियों को खूब जानता है। (४४) तुमसे छुट्टी चाहनेवाले वही मनुष्य हैं जो अल्लाह

और प्रलय का विश्वास नहीं रखते। उनके हृदय सन्देह में पड़े हैं तो वह अपने सन्देह में अचम्भित हैं। (४५) और यदि यह मनुष्य निकलने का विचार रखते होते तो उसके लिए कुछ तैयारी करते परंतु अल्लाह को इनका स्थान से हिलना ही ना पसन्द हुआ तो उसने इनको आलसी बना दिया और कह दिया कि जहाँ और बैठे हैं तुम भी उनके साथ बैठे रहो। (४६) यदि यह मनुष्य तुममें निकलते तो तुममें और अधिक खराबियाँ ही डालते और तुममें उत्पात फैलाने के अर्थ से तुम्हारे मध्य दौड़े-दौड़े फिरते और तुममें उनके भेदी उपस्थित हैं और अल्लाह अत्याचारियों को जानता है। * (४७) उन्होंने पहले भी उत्पात डलवाना चाहा और तुम्हारे लिए तदबीरों की उलट-पलट करते ही रहे यहाँ तक कि सच्ची प्रतिज्ञा आ पहुंची और ईश्वर की आज्ञा पूरी हुई और उनको बुरा लगा। (४८) इनमें वह जो कहता है कि मुझको छुट्टी दे और मुझको विपत्ति में न डाल। सुनो जो यह मनुष्य विपत्ति में तो पड़े ही हैं और नरक काफिरों को घेरे हुए है। (४९) यदि तुम को कोई भलाई पहुंचे तो उनको बुरा लगता है कि हमने पहिले से ही अपना काम करा लिया था और प्रसन्नता से वापिस चले जाते हैं। (५०) कहो कि जो कुछ ईश्वर ने हमारे लिए लिख दिया है वही हमको पहुंचेगा, वही हमारा काम का सम्भालने वाला है और मुसलमानों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (५१) पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि तुम हमारे पक्ष में दो भलाइयों में* एकको तो प्रतीक्षा करते रहो और हम पक्ष में इस बात के प्रतीक्षक हैं कि ईश्वर

---

*यह हाल है उन लोगों का जो दावा मुसलमान होने का करते थे मगर दिल में मुसलमानों का बुरा चाहते थे। जब इससे कहा जाता था कि लड़ाई के लिए तैयार हो तो एक न एक बात बना देते थे। इनका सरदार अब्दुल्लाह-बिन-उबैया था।

* विजय या शहादत (धर्म में शरीर त्याग) के बाद स्वर्ग।

तुम पर अपने यहाँ से कोई दण्ड उतारे या हमारे हाथों से तुम्हें मरवा डाले तो तुम प्रतीक्षा में रहो हम तुम्हारे साथ प्रतीक्षा में हैं। (५२) पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि तुम हृदयोल्लास से व्यय करो या अप्रसन्नता से, ईश्वर तुमसे स्वीकार नहीं करेगा क्योंकि तुम अवज्ञाकारी हो। (५३) और उनका दिया इसलिए स्वीकार नहीं होता कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा नहीं मानी और नमाज को अनमने से पढ़ते हैं और बुरे हृदय से व्यय करते हैं। (५४) तू इनके धन और सन्तान से अचम्भा न कर, ईश्वर सांसारिक जीवन में इनको धन और सन्तान के कारण से दण्ड देना चाहता है और वह काफिर ही मरेंगे। (५५) अल्लाह की कसमें खाते हैं कि वह तुममें है यद्यपि वह तुममें नहीं है अपितु वह डरपोक हैं। (५६) गुफा में घुस बैठने के स्थान पर कहीं बचाव पावें तो रस्सी तुड़ा-तुड़ाकर दौड़ पड़ें। (५७)इनमें से कुछ मनुष्य ऐसे हैं कि दान में तुम पर पाप लगाते हैं फिर यदि इनको उसमें से दिया जाय तो प्रसन्न रहते हैं और यदि इनको उसमें से न दिया जाय तो वह तत्क्षण ही बिगड़ बैठते हैं। (५८) जो ईश्वर ने और उसके पैगम्बर ने इनको दिया था यदि यह उसको प्रसन्नता से ले लेते और कहते कि हमको अल्लाह पर्याप्त है, आगे को अपने काम में काम में अल्लाह और पैगम्बर हमको देगा। हम तो अल्लाह ही से लौ लगाये बैठें हैं। (५९) (रुकू ७)

दान का धन साधुओं का भाग है और निर्धनों का और उनका काम करने वालों का जो दान पर हैं और उन मनुष्यों के लिये जिनके हृदय इस्लाम की ओर लगाना स्वीकार है। सेवकों को छुटने और कर्जदारों में और धर्म युद्ध में और यात्रियों में दान के धन का व्यय ठहराया गया है और अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (६०) उनमें से कुछ ऐसे हैं जो पैगम्बर को हानि देते और कहते हैं कि

यह व्यक्ति का बड़ा कच्चा* है पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो वह तुम्हारे लिये भलाई का सुनाने वाला है, वह अल्लाह का विश्वास करता है और मुसलमानों का भी विश्वास रखता है। और जो मनुष्य तुममें से विश्वास लाये हैं उनके लिये दया है और जो लोग अल्लाह के पैगम्बर को हानि देते हैं उनको कठोर दण्ड होनी है। (६१) तुम्हारे सामने ईश्वर की कसमें खाते हैं जिससे तुमको प्रसन्न कर लें यद्यपि अल्लाह और उसका पैगम्बर अधिक अधिकार रखते हैं कि यह सच्चे मुसलमान हैं तो पैगम्बर को प्रसन्न कर। (६२) क्या इन्होंने अभी तक इतनी बात नहीं समझी कि जो अल्लाह और उसके पैगम्बर का विराध करता है उसके लिए नरकाग्नि है जिसमें वह सदैव रहेगा। यह बड़ा अपमान है। (६३) मुनाफिक डरते हैं कि ईश्वर की ओर से मुसलमानों पर ऐसी सूरत उतरे कि जो कुछ इनके हृदय में है मुसलमानों को बता दें। कहो कि हँसे जाओ जिस बात से तुम डर रहे हो ईश्वर वही बात** निकालेगा। (६४) यदि तुम इन मनुष्यों से पूछो तो वह अवश्य यही उत्तर देंगे कि हम तो इसी प्रकार बातें-चीतें और हंसी-मजाक कर रहे थे। कहो कि तुमको हंसी करनी थी तो ईश्वर के ही साथ और उसी की आयतों और उसी के पैगम्बर के साथ। (६५) बातें न बनाओ सच तो यह है कि तुम विश्वास लाये पीछे काफिर हो गये। यदि हम तुम में से एक गुट के अपराध क्षमा भी कर दें तो भी दूसरों को अवश्य दण्ड देंगे। (६६) (रुकू ८)

---

* कुछ मुनाफिक कहते थे कि मुहम्मद साहब से जो कोई हमारे बारे में कुछ कह देता वह उसको सच मान लेते हैं और जब हम आकर कसम खा लेते हैं तो हमको सच्चा समझने लगते हैं। इसका जवाब दिया गया है कि वह तुम्हारी बातों को भली भाँति जानते हैं लेकिन तुम पर दया करते हैं।

** यानी तुम्हारा झुठ खुल जायेगा।

मुनाफिक पुरुष और मुनाफिक स्त्रियाँ सबकी एक चाल है। बुरे काम की राय दें और भले कामों से मना करें और अपनी मुट्ठियाँ दान से बन्द रखते हैं। इन मनुष्यों ने अल्लाह को भुला दिया तो अल्लाह ने भी इन्हें भुला दिया। कुछ सन्देह नहीं कि मुनाफिक अहँकारी हैं। (६७) मुनाफिक पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों और काफिरों के पक्ष में ईश्वर ने नरकाग्नि का प्रण कर लिया है कि यह मनुष्य सदैव उसमें रहेंगे। यही उनको पर्याप्त है और ईश्वर ने इनको फटकार दिया है और इनके लिए सदैव के लिए दण्ड है। (६८) जैसा उदाहरण तुम से पहिलों का था वह तुमसे बहुत अधिक शक्तिशाली थे और धन और सन्तान भी अधिक रखते थे। तो वह अपने भाग के लाभ उठा चुके सो तुमने भी अपने भाग के लाभ उठाये। जैसे तुमसे पहिलों ने अपने भाग के लाभ उठाये थे और जैसी बातें वह मनुष्य किया करते थे तुम भी वैसी ही बातें करने लगे। इन्हीं मनुष्यों का संसार और प्रलय में करा-धरा निरर्थक हुआ और यही हानि में रहे। (६९) क्या इनको उन मनुष्यों की सूचना नहीं मिली जो इनसे पहिले हो चुके हैं। नूह की जाति और आद और समूद और इब्राहीम की जाति और मदियन के मनुष्य और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले कि इनके पैगम्बर इनके पास स्पष्ट चमत्कार लेकर आए। सो ईश्वर ने इन पर अत्याचार नहीं किया परन्तु यह मनुष्य स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते थे। (७०) मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ आपस में मित्र हैं। भले काम करने का उपदेश देते और बुरे काम से रोकते और नमाज पढ़ते और दान देते और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा पर चलते हैं। यही मनुष्य हैं जिन पर अल्लाह अवश्य दया करेगा। अल्लाह प्रबल चमत्कार वाला है। (७१) धर्म वाले पुरुषों और धर्म वाली स्त्रियों से अल्लाह ने उपवनों का प्रण कर लिया है जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी। उनमें सदैव रहेंगे और सदा रहने वाले स्वर्ग में अच्छे मकान हैं और ईश्वर की बड़ी प्रसन्नता और बड़ी सफलता है। (७२) (रुकू ९)

ऐ पैगम्बर! काफिरों और मुनाफिकों से धर्म युद्ध करो और उन पर कठोरता करो और उनका ठिकाना नरक है और वही बुरा स्थान है। अल्लाह की सौगन्धें खाते हैं कि हमने नहीं कहा यद्यपि अवश्य उन्होंने अस्वीकृति के शब्द कहे और मुसलमान हुए पीछे काफिर हो गये और उद्दण्डता करना चाहा। (७३) जिन पर उनकी शक्ति नहीं हुई और यह मनुष्य किस पर बिगड़े। इसी पर न कि अपनी कृपा से अल्लाह ने और उशके पैगम्बर ने इनको धनवान कर दिया। सो यह मनुष्य यदि अब भी क्षमायाचना करें तो इनके पक्ष में अच्छा होगा और यदि न मानें तो अल्लाह इनको संसार तथा नरक में दुखदाई दण्ड देगा और पृथ्वी पर न कोई इनका सहायक होगा। (७४) इनमें से कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जिन्होंने ईश्वर के साथ प्रण किया था कि यदि वह अपनी दया से हमको धन देगा तो हम अवश्य दान किया करेंगे और अवश्य भले काम करने वाले रहेंगे। (७५) फिर जब ईश्वर ने अपनी कृपा से उनको धन दिया जो उसमें कंजूसी करने लगे और मुँह मोड़ करके फिर बैठे। (७६) तो फल यह हुआ कि ईश्वर ने उनके हृदयों में भेद डाल दिया इसलिए कि उन्होंने ईश्वर से प्रतिज्ञा की थी उसको पूरा नहीं किया और झूठे बोले। (७७) क्या उन्होंने इतना भी न समझा कि अल्लाह इनके भेदों को और छुपकर बातें करने को जानता है और यह कि अल्लाह अदृष्ट की बातों से भी खूब भिज्ञ है। (७८) यही तो हैं कि मुसलमानों में जो मनुष्य प्रसन्नता से पुण्य करते हैं उन पर पाखंडी होने का दोष लगाते हैं और जो मनुष्य अपने परीश्रम के अतिरिक्त अधिक शक्ति नही रखते उन पर दोष लगाते हैं। इसलिए उन पर हँसते है। सो अल्लाह इन मुनाफिकों पर हंसता* है और उनके लिए

---

*मुहम्मद साहब ने खैरात करने का हुक्म दिया तो जिस मुसलमान से जितना हो सका लें आया। अब्बुर्रहमान चार हजार दरम लाये और आसिम केवल ४ सेर जौ। मुनाफिक कहने लगे अब्दुर्रहमान अपनी

दुखदाई दण्ड है। (७९) ऐ पैगम्बर तुम इनके पक्ष में क्षमा प्रार्थना करो या उनके पक्ष में न करो, यदि तुम सत्तर बार भी इनके लिए क्षमा माँगो तो भी ईश्वर कदापि इनको क्षमा नहीं करेगा। यह इनके इस कर्म का दण्ड है कि उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ अविश्वास किया और अल्लाह द्रोही मनुष्यों को शिक्षा नहीं दिया करता। (८०) (रुकू १०)

जो मुनाफिक अपनी जिद्द से पीछे छोड़ दिये गये वह ईश्वर के पैगम्बर के विरुद्ध अपने घरों में बैठे रहने से बहुत प्रसन्न हुए और ईश्वर के मार्ग में अपनी जान और धन से युद्ध करना उनको अनुचित लगा और समझाने लगे कि ग्रीष्म में घरसे न निकलना ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि नरक की अग्नि की उष्णता बहुत कठिन है। हा शोक! इनको इतनी समझ होती। (८१) तो यह मनुष्य थोड़ा हँसेंगे और बहुत रोवेंगे और यही उनकी कमाई का परिणाम है। (८२) तो ऐ पैगम्बर यदि ईश्वर तुमको इन मुनाफिकों के किसी गुट की ओर लौटाकर ले जाय और निकलने की तुमसे आज्ञा चाहे तो तुम कह देना कि तुम न तो कभी मेरे साथ निकलोगे और न मेरे साथ होकर किसी शत्रु से लड़ोगे। तुम पहली बार घरों में बैठ रहो। (८३) ऐ पैगम्बर यदि इनमें से कोई मर जाय तो तुम कदापि उस पर नमाज न पढ़ना और न उसकी कब्र पर खड़े होना। उन्होंने अल्लाह और उसके पैगम्बर के साथ अविश्वास किया और वह अन्यायी की दशा में ही मर गये। (८४) और इनके धन और इनकी संतान पर तू अचम्भा न कर। ईश्वर धन और संतान के कारण से इनको संसार में आनन्द देना चाहता है और जब इनकी जान निकले तो काफिर ही मरेंगे।

अमीरी जताता है और आसिम को देखो लोहू लगा के शहीदों में नाम करने चले हैं। इस पर ये आयतें उतरीं।

(८५) और ऐ पैगम्बर जब कोई सूरत अवतरित की जाती है कि अल्लाह पर विश्वास लाओ और उसके पैगम्बर के साथ युद्ध करो तो इन में से सामर्थ्यवाले तुमसे आज्ञा मांगने लगे हैं और कहते हैं कि हमको छोड़ जाओ कि बैठने वालों के साथ हम भी घरों में बैठे रहें। (८६) इनको स्त्रियों के साथ जो पीछे रहा करती हैं पीछे बैठे रहना पसंद आया और इनके हृदय पर मुहर कर दी गई है यह मनुष्य समझते नहीं हैं। (८७) परन्तु पैगम्बर ने और जो उनके साथ विश्वास लाये हैं अपनी जान और धन से ईश्वर के मार्ग में युद्ध किया यही मनुष्य हैं जिनके लिए इस लोक तथा परलोक को सर्वगुण हैं और यही लक्ष पानेवाले हैं (८८) इनके लिए अल्लाह ने स्वर्ग के उपवन तैयार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है। (८९) (रुकू ११)

ऐ पैगम्बर! देहातियों में से बहाना करनेवाले उज्र करते आये जिससे उनको आज्ञा दी जाय। जिन मनुष्यों ने अल्लाह और उसके पैगम्बर से झूठ बोला था वह बैठे रहे! इनमें से जिन्होंने अस्वीकार किया उनको शीघ्र ही कठोर दण्ड मिलेगा। (९०) ऐ पैगम्बर निर्बलों पर कुछ अपराध नहीं और न रुग्णों पर और न उन मनुष्यों पर जिनको व्यय की शक्ति नहीं शर्त यह कि अल्लाह और उनके पैगम्बर की भलाई में लगे रहें। भलाई करने वालों पर कोई दोष नही अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (९१) उन पर अपराध नहीं हैं जो तुम्हारे पास आते हैं कि सवारी दे और तुमने कहा कि मेरे पास कोई वस्तु नहीं जिस पर सवार कर दूँ। यह सुनकर वह लौट गये और व्यय की शक्ति न होने के कारण उनकी आँखों से आँसू बहते थे। (९२) अपराध तो उन्हीं पर है जो धन होने पर भी बचना चाहते हैं और स्त्रियों के साथ जो पीछे बैठी रहा करती हैं रहना पसन्द करते हैं और अल्लाह ने उनके हृदय पर मुहर की है वह नहीं समझते। (९३)

ग्यारहवाँ पारा (यातजिरून)

मुसलमानों जब तुम मुनाफिकों के पास वापस जाओगे तो तुम्हारे सामने अड़चन प्रस्तुत करेंगे तो ऐ पैगम्बर ! इनसे कह देना कि बातें न बनाओ, हम किसी प्रकार तुम्हारा विश्वास करने वाले नहीं । अल्लाह तुम्हारी दशा हमको बता चुका है और अभी तो अल्लाह और उसके पैगम्बर जो तुम्हारे कर्मों को देखेंगे फिर तुम उसकी ओर लौटाये जाओगे जो वर्तमान और भविष्य को जानता है फिर जो कुछ तुम करते रहे हो तुमको बतायेगा। (९४) जब तुम लौटकर उनके पास जाओगे तो यह मनुश्य अवश्य तुम्हारे सामने ईश्वर की कसमें खायेंगे जिससे तुम इनको क्षमा करो । सो इनको जाने दो क्योंकि यह अपवित्र हैं और इनका स्थान नरक हैं । यह उनकी कमाई का फल है। (९५) यह तुम्हारे सामने कसमें खायेंगे जिससे तुम इन से प्रसन्न हो जाओ सो यदि तुम इनसे प्रसन्न हो जाओ तो अल्लाह इन अवज्ञाकारी मनुष्यों से प्रसन्न न होगा। (९६) गाँव के मनुष्य अस्वीकृति और भेद में बड़े कठोर हैं । ईश्वर ने जो अपने पैगम्बर पर पुस्तक अवतरित की है उसकी आज्ञाओं को समझने के योग्य नहीं और अल्लाह ज्ञाता और चमत्कार वाला है। (९७) ग्रामीणों में से कुछ ऐसे हैं कि उनको जो व्यय करना पड़ता है उमको दण्ड समझते हैं और तुम मुसलमानों के भले में संसार के फेरों के प्रतीक्षक हैं। इन्हीं पर समय के बुरे फेर का प्रभाव पड़े। अल्लाह सुनता और जानता है (९८) और ग्रामीणों में से कुछ ऐसे भी हैं जो अल्लाह का और प्रलय का विश्वास रखते हैं और जो कुछ ईश्वर के मार्ग में व्यय करते हैं उसमें ईश्वर के पास का और पैगम्बर की प्रार्थनाओं का मार्ग समझते हैं। तो सुन रक्खो वह उनके लिये निकट है । अल्लाह अवश्य उनको अपनी शरण में ले लेगा। अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (९९) रुकू १२)

देशत्यागियों और सहायता करनेवालों में से जो मनुष्य मुसलमानी मत स्वीकार करने में सबसे पहले अगुआ हुए और वह मनुष्य जो सच्चे हृदय से धर्म में प्रविष्ट हुए ईश्वर उनसे प्रसन्न है और वह ईश्वर से प्रसन्न हुए और ईश्वर ने उनके लिए उपबन तैयार कर रक्खे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वे उनमें सदैव रहेंगे। यही बड़ी सफलता है। (१००) तुम्हारे समीप के कुछ ग्रामीणों में से कपटी हैं और स्वयं मदीने में रहनेवालों में से जो भेद पर अड़े बैठे हैं ऐ पैगम्बर तुम इनको नही जानते। हम इनको जानते हैं सो हम इनको दोहरो मार देंगे फिर बड़े दण्ड की ओर लौटाये जायेंगे। (१०१) कुछ ऐसे मनुष्य हैं जिन्होंने अपने अपराध को मान लिया है और उन्होंने कुछ काम भले और कुछ बुरे मिश्रित किये थे आश्चर्य नहीं कि अल्लाह उनकी क्षमा स्वीकार करे क्योंकि अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१०२) ऐ पैगम्बर, यह मनुष्य अपने धन का दान दें तो इनके धन का दान ले लिया करो कि दान के स्वीकार करने से तुम इनको पवित्र करते हो और उनको शुभ आशीर्वाद दो क्योंकि तुम्हारी प्रार्थना इनके लिए संतोष है और अल्लाह सुनता-जानता है। (१०३) क्या इन मनुष्यों को इसकी सूचना नहीं कि अल्लाह अपने सेवकों की क्षमा स्वीकार करता है और वही दान लेता और अल्लाह ही बड़ा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करने वाला कृपालु है। (१०४) और ऐ पैगम्बर ! इनको समझा दो कि तुम अपने स्थान पर काम करते रहो सो अभी तो अल्लाह पैगम्बर और मुसलमान तुम्हारे कामों को देखेंगे और अवश्य मरे पीछे तुम उसकी ओर जो दृष्ट और अदृष्ट को जानता है लौटाये जाओगे। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह बतावेगा। (१०५) कुछ ऐसे मनुष्य हैं जो ईश्वर की आज्ञा की प्रतीक्षा में हैं। वह या तो उनको दण्ड देवे या उनकी क्षमा प्रार्थना स्वीकार करे और अल्लाह जानने वाला और चमत्कारवाला है। (१०६) जिन्होंने इस अर्थ से एक मसजिद बना खड़ी की कि हानि पहुंचायें और स्वीकार करें और मुसलमानों में फूट डालें और उन मनुष्यों को शरण दें जो अल्लाह

ग्रौर उसके पैगम्बर के साथ पहिले लड चुके हैं ग्रौर पूछा जायगा तो सौगन्धें खाने लगेंगे कि हमने तो भलाई के ग्रतिरिक्त ग्रौर किसी प्रकार की इच्छा नहीं की ग्रौर ग्रल्लाह साक्षी देता है कि ये भूठे हैं। (१०७) ग्रत: ऐ पैगम्बर तुम उसमें कभी खड़े भी न होना । हां वह मसजिद जिसकी नींव पहले दिन से संयम पर रक्खी गई है वह इस योग्य है कि तुम उसमें खड़े हो । उसमें ऐसे मनुष्य हैं जो पवित्र रहने को पसंद करते हैं ग्रौर ग्रल्लाह पवित्रता सें रहने वालों को पसंद करता है । (१०८) भला जो मनुष्य ईश्वर के भय से ग्रौर उसकी प्रसन्ता पर ग्रपने भवन की नींव रक्खे । फिर वह उसको नरक की ग्रग्नि में ले गिरे ग्रौर ईश्वर ग्रत्याचारियों को उपदेश नहीं दिया करता (१०६) यह भवन जो इन मनुष्यों ने बनाई हैं इसके कारण से इन मनुष्यों के हृदय में सदैव संदेह रहेगा यहां तक कि इनके हृदय के टुकड़े टुकड़े हो जावें । ग्रल्लाह विजयी ग्रौर बड़ा चमत्कार वाला है । (११०) (रुकू १३)

ग्रल्लाह ने मुसलमानों से उनकी जानें ग्रौर उनका धन क्रय किए हैं कि उनके बदले उनको बैकुण्ठ देगा जिससे ग्रल्लाह के मार्ग में लड़ें ग्रौर मारें ग्रौर मरें, यह ईश्वर की दृढ़ प्रतिज्ञा है जिसका पूरा करना उसने ग्रपने ऊपर ग्रावश्यक कर लिया है ग्रौर यह प्रण तौरात, इंजील ग्रौर कुरान में है ग्रौर ईश्वर से बढ़कर ग्रपने प्रण का पूरा ग्रौर कौन हो सकता है । तो ग्रपने सौदे का जो तुमने ईश्वर के साथ किया है ग्रानन्द मनाग्रो ग्रौर यही बड़ी सफलता है (१११) क्षमाएँ माँगने वाले, प्रार्थना करनेवाले, बड़ाई करनेवाले, यात्रा करने वाले, रुकू करने वाले, वन्दना करने वाले, ग्रच्छे काम की राय देने वाले, बुरे काम से मना करने वाले ग्रौर ग्रल्लाह ने जो मर्यादा बाँध दी हैं उनको दृष्टि में रखनेवाले यही मोमिन हैं ग्रौर ऐ पैगम्बर ऐसे मुसलमानों को शुभ-संवाद सुना दो । (११२) जब पैगम्बर ग्रौर मुसलमानों को प्रतीत हो गया कि मुशरिकीन नारकीय होंगे तो उनको यह भला नहीं लगता कि

उनके लिए क्षमा चाहें। चाहे वह सम्बन्धी भी क्यों न हों। (११३) इब्राहीम ने अपने पिता के लिए क्षमा की प्रार्थना की थी सो एक प्रण से जो इब्राहीम ने अपने पिता से कर लिया था। फिर जब उनको प्रतीत हो गया कि यह ईश्वर का शत्रु है तो पिता से सम्बन्ध छोड़ दिया। इब्राहीम बड़े कोमल हृदय और सहनशील थे। (११४) और अल्लाह की शान से बाहर है कि एक जाति को शिक्षा दिये पीछे मार्ग से उन्हें भटकाये जब तक उनको वह वस्तुएँ न बतलावें जिनसे वह बचते रहें। अल्लाह प्रत्येक वस्तु से जानकार है। (११५) और नभ और पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है वही जीवन देता और मारता है, अल्लाह के अतिरिक्त तुम्हारा कोई सहायक नहीं। (११६) ईश्वर ने पैगम्बर पर कृपा की और देशत्यागी और सहायता करने वालों पर जिन्होने तंगी के समय में पैगम्बर का साथ दिया जबकि इनमें से कुछ के हृदय डगमगा चले थे, फिर उसी ने इन पर अपनी कृपा की। इसमें सन्देह नहीं कि ईश्वर इन सब पर अत्यन्त दया रखता है। (११७) उन तीनों * पर जो पीछे रखे गये थे यहाँ तक कि जब पृथ्वी चौड़ी होने पर भी तंगी करने लगी और वह अपने जीवन से भी तंग आ गये थे और समझ लिया कि ईश्वर के अतिरिक्त और कहीं शरण नहीं फिर ईश्वर ने उनकी क्षमा स्वीकार कर ली जिससे वे बच्चे रहें। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा क्षमा प्रार्थना स्वीकार करनेवाला कृपालु है। (११८) (रुकू १४)

---

*तीन मुसलमान तबूक की लड़ाई में भाग नहीं ले सके थे। उन पर कुछ ऐसी आपत्ति पड़ी कि वे अपनी मृत्यु को अपने जीवन की अपेक्षा अधिक अच्छा समझने लगे। अन्त में उन्होंने क्षमा चाही। उनके नाम यह हैं (१) मुरारा-बिन-रबी (२) काब-बिन-मालिक और (३) हिलाल-बिन-उमया।

मुसलमानों ! ईश्वर से डरो, सच बोलनेवालों के साथ रहो। (११९) मदीनावाले और उनके समीप के ग्रामीणों को उचित न था कि ईश्वर के पैगम्बर से पीछे रह जावें और न यह कि पैगम्बर की जान की चिन्ता न करके अपनी जानों की चिन्ता में पड़ जावें । यह इसलिए उनको ईश्वर के मार्ग में प्यास और परिश्रम और भूख का कष्ट पहुंचता हो और जिन स्थानों में काफिरों को इनका चलना बुरा लगता है वहाँ चलते हैं और शत्रुओं से जो कुछ मिल जाता है तो प्रत्येक काम के बदले इनका कर्म अच्छा लिख जाता है । अल्लाह सच्चे हृदयवालों के परिणाम को निरर्थक नहीं होने देता । (१२०) थोड़ा या बहुत जो कुछ व्यय करते हैं और जो मैदान उनको तै करने पड़ते हैं यह सब इनके नाम लिख जाता है जिससे अल्लाह इनको इनके कर्मों का अच्छे से अच्छा बदला देवे । (१२१) और उचित नहीं कि मुसलमान सब के सब निकल खड़े हों ऐसा क्यों न किया कि उनका प्रत्येक समाज में से कुछ मनुष्य निकलते कि धर्म की ससझ उत्पन्न करते और जब अपनी जाति में वापस जाते तो उनको डराते जिससे वह मनुष्य बचें । (१२२) (रुकू १५)

मुसलमानों । अपने समीप के काफिरों से लड़ो और चाहिए कि वह तुमसे दृढ़ता अनुभव करें और जाने रहो कि अल्लाह उन मनुष्यों का साथी है जो बचते हैं। (१२३) जिस समय कोई सूरत अवतरित की जाती है तो कपटियों से मनुष्य पूछने लगते हैं कि भला इससे तुम में से जिनका धर्म बढ़ा दिया, सो वह जो धर्मवाले हैं उसने उनका तो धर्म बढ़ाया और यह प्रसन्नता मनाते हैं । (१२४) और जिनके हृदय में कपट का रोग है तो इससे उनकी अपवित्रता और बढ़ी और यह मनुष्य काफिर ही मरेंगे । (१२५) क्या नहीं देखते कि यह मनुष्य प्रत्येक वर्ष एक या दो बार विपत्ति में पड़ते रहते हैं इस पर भी न तो क्षमा ही माँगते हैं और न शिक्षा ही मानते हैं । (१२६) जब कोई

सूरत अवतरित की जाती है तो उनमें से एक दूसरे की ओर देखने लगते हैं और कहते हैं कि तुमको कोई देखना *है या नहीं फिर चल देते हैं। अल्लाह ने इनके हृदय को फेर दिया इसलिए वह बिलकुल नहीं समझते। (१२७) तुम्हारे पास तुम्हीं में के एक पैगम्बर आए हैं तुम्हारा दुःख इनको कठिन प्रतीत होता है। वह तुम्हारी भलाई चाहता है और धर्मवालों पर प्रेम रखनेवाला और कृपालु हैं। (१२८) इस पर भी यह मनुष्य सिर उठायें तो कह दो कि मुझको तो अल्लाह पर्याप्त है, उसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं है, उसी पर भरोसा रखता हूं और अर्श जो बड़ा हैं उसका भी वही स्वामी है। (१२९) (रुकू १६)

सूरे यूनिस

मक्के में अवतरित हुई इसमें १०९ आयतें और ११ रुकू ह

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो दयावान तथा कृपालु है। अलिफ लाम, रा। यह ऐसी पुस्तक की आयतें हैं जिसमें वैदिक की बातें हैं। (१) क्या मक्कावालों को इस बात का अचरज हुआ कि हमने उन्हीं में के एक व्यक्ति की ओर इस बात का सन्देश भेजा कि मनुष्यों को डराओ और धर्मवालों को शुभसंवाद सुनाओ कि उनके पालनकर्ता

---

*मुनाफिकों को हर समय भय बना रहता था कि कोई मुसलमान उनको ताड़ न जाय, इसलिए जब कोई आयत उनके विषय में उतरती थी तो वह एक दूसरे को देखने लगते और तुरन्त भाग खड़े होते।

के पास उनका बड़ा आदर है। काफिर कहने लगे हो यह तो स्पष्टतया जादूगर है। (२) तुम्हारा पालनकर्ता वही अल्लाह है जिसने ६ दिन में नभ और दृथ्वी को बनाया फिर सिंगासन पर जा विराजा। प्रत्येक काम का प्रबन्ध कर रहा है कोई सिफारिशी नहीं परन्तु उसकी आज्ञा हुए पीछे। यही अल्लाह जो तुम्हारा पालनकर्ता है तो उसी की पूजा करो, क्या तुम विचार नहीं करते। (३) उसी की ओर तुम सबको लौटकर जाना अल्लाह का प्रण सच्चा है। उसी ने प्रथमबार संसार को बनाया है फिर उनको दुबारा जीवित करेगा जिससे जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किए, न्याय के साथ उनको बदला दे। काफिरों के लिए उनकी अस्वीकृति दण्ड में पीने को उबलता पानी और दुखदाई दण्ड होगी। (४) वही जिसने सूर्य को प्रकाशमय बनाया और चाँद को प्रकाशित किया और उनका मार्ग निश्चित किया जिससे तुम वर्षों को गिनती और हिसाब पता कर लिया करो। यह सब ईश्वर ने विचार से बनाया है। जो मनुष्य समझ रखते हैं उनके लिए पते निर्णय करता है। (५) जो मनुष्य डर मानते हैं उनके लिए रात्री और दिन के आने-जाने में और जो कुछ ईश्वर ने नभ और पृथ्वी में उत्पन्न किया हैं निशानियाँ हैं। (६) जिन मनुष्यों को हमसे मिलने की आशा नहीं और संसार के जीवन से प्रसन्न हैं और विश्वास के साथ जीवन व्यतीत करते हैं और जो मनुष्य हमारी निशानियों से अचेत हैं (७) यही मनुष्य हैं जिनके कर्मों के बदले उनका स्थान नरन में होगा। (८) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने भले काम किये उनके विश्वास की बुद्धि से उनको उनका पालनकर्ता मार्ग दिखा देगा कि आराम के उपवनों में रहेंगे और उनके नीचे नहरें बहती होंगी। (९) उनमें पुकार उठेंगे ऐ ईश्वर तू पावन है और उनमें उनकी प्रार्थनाएं सुख का प्रणाम होगा। उनकी अन्तिम प्रार्थना होगी, "अल्हम्द लिल्लाह रब्बुल आलमीन" अर्थात हर प्रकार की प्रशंसा के योग्य है जो समस्त संसार का पालनकर्ता है। (१०) (रुकू १)

जिस प्रकार मनुष्य लाभों के लिए शीघ्रता किया करते हैं यदि भी उनको शीघ्रता से हानि पहुंचा दिया करता तो उनकी मृत्यु आ चुकी होतो और हम उन पर मनुष्यों को जिन्हें हमारे पास आने की आशा नहीं छोड़े रखते हैं कि अपनी चंचलता में पड़े भटका करें। (११) जब मनुष्य को कष्ट पहुंचता है तो पड़ा या बैठा या खड़ा हमको पुकारता है फिर जब हम उनके कष्ट को उससे दूर कर देते हैं तो ऐसे चल देता है कि मानो उस कष्ट के लिए जो उसको पहुंच रही थी हमको पुकारा ही न था। जो मनुष्य सभा से पग बाहर रखते हैं उनको उनके काम इसी प्रकार अच्छे कर दिखाये गये हैं। (१२) और तुमसे पहले कितने समाज हुए। जब उन्होंने उद्दण्डता पर कमर बाँधी हमने उनको मार डाला। उनके पैगम्बर उनके पास स्पष्ट चमत्कार लेकर और उनको विश्वास लाना प्राप्त न हुआ। पापियों को हम इस प्रकार दण्ड दिया करते हैं। (१३) फिर उनके पीछे हमने पृथ्वी में तुमको उत्ताराधिकारी बनाया जिससे देखे तुम कैसे काम करते हो। (१४) जब हमारी स्पष्ट आज्ञाएं इन को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो जिन मनुष्यों को हमारे पास आने की आशा नहीं वह पूछते हैं कि इसके अतिरिक्त और कोई कुरान लाओ। कहो कि मेरी तो ऐसी सामर्थ्य नहीं कि अपनी ओर से उसको बदलूं। मेरी ओर जो ईश्वरीय सन्देश आता है मैं तो उसी पर चलता हूं। यदि मैं अपने पालनकर्ता की अवज्ञा करूं तो मुझे बड़े दिन को दण्ड का भय लगता है। (१५) कहो यदि ईश्वर चाहता तो मैं न तुमको पढ़कर सुनाता और न ईश्वर तुमको इससे संकेत करता, इससे पहिले मैं चिरकाल तक तुम में रह चुका हूं क्या तुम नहीं समझते*। (१६) तो उससे बढ़कर अत्याचारी

* अर्थात मैं ४० वर्ष से तुम लोगों के साथ जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मैंने इससे पहले कोई दावा नबी होने का नहीं किया। अब कर रहा हूँ तो जान लो कि जो कुछ कह रहा हूँ अपनी ओर से नहीं कह रहा हूं अपितु ईश्वर ही की आज्ञा से कह रहा हूं।

कौन है जो ईश्वर पर झूठ बाँधे या उसकी आयतों को झुठलाये। अपराधियों का भला नहीं होता। (१७) और ईश्वर के अतिरिक्त ऐसी वस्तुओं को पूजते हैं जो उनको हानि या लाभ नहीं पहुंचा सकतीं और कहते हैं कि अल्लाह के यहाँ हमारे सिफारशी हैं। कहो क्यों तुम अल्लाह को ऐसी वस्तु की सूचना देते हो जिसे वह न नभ में पाता है और न पृथ्वी में और वह इस शिर्क से पवित्र और अधिक ऊंचा है। (१८) मनुष्य एक ही ढँग पर थे। भेद तो उनमें पीछे हुआ और यदि तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से प्रण पहले से न हुआ होता तो जिन वस्तुओं में यह भेद डाल रहे हैं उनके मध्य उनका निर्णय कर दिया गया होता। (१९) मक्के वाले कहते हैं इसको उसके पालनकर्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं दिया कहो कि अदृश्य की सूचना तो बस ईश्वर को ही है तो तुम प्रतीक्षा करो। मैं तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में (२०) (रुकू २)

जब मनुष्यों को कष्ट पहुंचने के पश्चात हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो बस हमारी आयतों में बहाना लगाते हैं कहो अल्लाह की युक्ति अधिक चलती है वह कहता है हमारे देवदूत तुम्हारे कर्म लिखते हैं। (२१) वही है जो तुम को वन और नदी में फिराता है यहाँ तक कि कोई समय तुम किश्तियों में होते हो और वह मनुष्यों को अनुकूल हवा की सहायता से चलता है और मनुष्य उनसे प्रसन्न होते हैं। किश्ती को तूफानी वायु आवे और लहरें हर ओर से उन पर आने लगें और वह समझें कि अब हम घिर गये तो अन्तरतम से ईश्वर ही को मानकर उससे प्रार्थनाएं माँगने लगते हैं कि यदि तू हमको इस कष्ट से बचावे तो हम अवश्य धन्यवाद दें। (२२) फिर जब उसने बचा दिया तो वह निरर्थक की उद्दण्डता करने लगते हैं। मनुष्यों, तुम्हारी उद्दण्डता तुम्हारी ही जानों पर पड़ेगी। यह सांसारिक जीवन के सुख हैं अन्ततः तुम्हें हमारी ही ओर लौटकर आना है तो जो कुछ भी तुम

करते रहे तुमको बता देंगे। (२३) सांसारिक जीवन तो उदाहरण उस पानी जैसी है कि हमने उसको नभ से बरसाया फिर पृथ्वी की उपज जिसको मनुष्य और चौपाये खाते हैं पानी के साथ मिल गई यहाँ तक कि जब पृथ्वी ने अपना शृंगार कर लिया और सुन्दर हुई और खेत वालों ने समझा कि वह उस उपज पर वशीभूत हो गये और रात्री के समय या दिन के समय हमारी आज्ञा उस पर आयी। फिर हमने उसका ऐसा कटा हुआ ढेर कर दिया कि मानो कल उसका निशान न था। जो मनुष्य सोचते हैं उनके लिए आयतें वर्णन करते हैं। (२४) अल्लाह स्वर्ग की ओर बुलाता है और जिसको चाहता है। (२५) जिन मनुष्यों ने भलाई की उनके लिए भलाई है और कुछ बढ़कर मुंहों पर कालिमा न छाई न अपकीर्ति। यही वैकुण्ठबासी हैं कि वह वैकुण्ठ में सदैव रहेंगे। (२६) और जिन मनुष्यों ने बुरे कर्म किये तो बुराई का बदला वैसा ही बुराई और उन पर अपकीर्ति छा रही होगी। अल्लाह से कोई उनको बचाने वाला नहीं मानो अन्धेरी रात्री के भाग उनके मुंह पर अड़ा दिये हैं, यही नरकीय हैं कि वह नरक में सदैव रहेंगे। (२७) और जिस दिन हम उन सबको एकत्रित करेंगे फिर मुशरिकीन को आज्ञा देंगे कि तुम और जिनको तुमने देवता बनाया था वह तनिक अपने स्थान पर ठहरें। फिर हम उनके आपस में फूट डाल देंगे और उनके देवता कहेंगे कि हमारी पूजा तो तुम कुछ करते ही नहीं थे। (२८) हमारे और तुम्हारे मध्य बस ईश्वर ही साक्षी है, हमको तो तुम्हारी पूजा की बिल्कुल सूचना ही नहीं थी। (२९) वही प्रत्येक व्यक्ति अपने काम को जो उसने किये हैं जाँच लेगा और सब मनुष्य अपने सच्चे स्वामी अल्लाह की ओर लौटाये जायंगे और झूठ पाप लगाते रहे हैं वह सब उनसे निम्न हो जायंगे। (३०) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर ! मनुष्यों से इनना तो पूछो कि तुमको नभ और पृथ्वी से कौन जीविका देता है या कान ओर आँखों का कौन स्वामी है और

कौन मृत से जीवित निकालता है और कौन जीवित से मृत करता है और कौन प्रबन्ध चला रहा है, तो तुरन्त ही बोल उठेंगे कि अल्लाह। तो कहो कि फिर तुम उससे क्यों नहीं डरते। (३१) फिर यही अल्लाह तो तुम्हारा सच्चा पालनकर्ता है, तो सच्चाई के खुल जाने के पश्चात दूसरी मार्ग चलना पथभ्रष्टता नहीं तो और क्या है सो तुम किधर को फिरे चले जा रहे हो। (३२) इसी प्रकार तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा अवज्ञाकारियों पर सत्य हुई कि यह किसी प्रकार विश्वास नहीं लावेंगे। (३३) पूछो कि तुम्हारे देवताओं में कोई ऐसा भी है कि संसार को प्रथम बनाये करे फिर उनको दुबारा बनाया करें। कहो अल्लाह ही सृष्टि को प्रथम बार उत्पन्न करता है फिर उनको दुबारा उत्पन्न करेगा तो अब तुम किधर को उलटे चले जा रहे हो। (३४) पैगम्बर इनसे पूछो कि तुम्हारे देवताओं में से कोई ऐसा है जो सच्चा मार्ग दिखा सके। कहो अल्लाह ही सच्चा मार्ग दिखलाता है, तो क्या जो सत्य मार्ग दिखावे उसका अधिकार नहीं कि उसी का समर्थन किया जाय या जो ऐसा है कि जब तक दूसरा उसको मार्ग न दिखलाये वह स्वयं भी मार्ग नहीं पा सकता। तो तुमको क्या हो गया है जाने कैसा न्याय करते हो। (३५) और इन मनुष्यों में से प्रायः अनुमान पर चलते हैं सो केवल अनुमान अधिकार या सत्यता के सामने काम नहीं आते। जैसा-जैसा यह कर रहे हैं ईश्वर भली प्रकार जानता है। (३६) यह पुस्तक कुरान इस प्रकार की नहीं कि ईश्वर के अतिरिक्त और कोई इसे अपनी ओर से बना लावे। अपितु जो पुस्तकें इसके पहिले की हैं उनका प्रमाण है और उन्हीं का विस्तार है। इसमें सन्देह नहीं कि यह ईश्वर ही की अवतरित की हुई है। (३७) क्या वह कहते हैं कि इसे स्वयँ मुहम्मद पैगम्बर ने बना लिया है तू कह दे कि यदि सच्चे हो तो एक ऐसी ही सरत तुम भी बना लाओ और ईश्वर के अतिरिक्त जिसे चाहो बुला लो। (३८) और उस वस्तु को झुठलाने लगे जिसके समझने की इन्हें शक्ति नहीं अभी तक इनका इसके प्रमाणित करने का

अवसर ही नहीं आया। इसी प्रकार उन मनुष्यों ने भी झुठलाया था जो इनसे पहिले थे। तो पैगम्बर देखो अत्याचारियों को कैसा फल मिला। (३९) और इनमें से कुछ मनुष्य ऐसे हैं कि जो कुरान पर विश्वास ले आवेंगे और कोई-कोई नहीं लावेंगे और तुम्हारा पालन-कर्ता उत्पातियों को खूब जानता है। (४०) और ऐ पैगम्बर यदि तुम को झुठलावें तो कह दो कि मेरा करना मुझको और तुम्हारा करना तुमको। तुम मेरे काम के उत्तरदाइ नहीं और न मैं तुम्हारे काम का उत्तरदाई हूँ। (४१) और पैगम्बर इनमें से कुछ मनुष्य हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं क्या इससे तुमने समझ लिया कि यह मनुष्य विश्वास लावेंगे, तो क्या तुम बहरों को सुना सकोगे जो बुद्धि भी नहीं रखते हैं। (४२) और इनमें से कुछ मनुष्य हैं जो तुम्हारी ओर* ताकते हैं तो क्या तुम अन्धों को मार्ग दिखा दोगे जो इनको सूझ पड़ता हो। (४३) अल्लाह तो जरा भी मनुष्यों पर अत्याचार नहीं करता परन्तु स्वयं अपने ऊपर अत्याचार करते हैं। (४४) और जिस दिन मनुष्यों को एकत्रित करेगा तो मानो संसार में सारे दिन भी नहीं अपितु घड़ी भर संसार में रहे होंगे। आपस एक दूसरे को पहचानेंगे जिन मनुष्यों ने ईश्वर के मिलाप को झुठलाया वह बड़े छोटे में आ गये और उनको मार्ग ही न सूझा। (४५) जैसे-जैसे प्रण हम इनसे करते हैं चाहे इनमें से कुछ को तुमको दिखावेंगे या तुमको प्रण लेवेंगे। इन का तो लौटकर हमारी ओर आना है जो कुछ यह कर रहे हैं ईश्वर देख रहा है। (४६) और प्रत्येक समाज का एक पैगम्बर है तो जब वह उनका पैगम्बर अपने समाज में आता है तो उसके समाज न्याय

---

* अन्धों को आवाज सुनाई जा सकती है। बहरों को इशारे से कोई बात समझाई जा सकती है लेकिन जो अन्धा और बहरा हो यानी किसी प्रकार की समझने की शक्ति ही न रखता हो उसको समझाना निरर्थक है।

के साथ निर्णय होता है और मनुष्यों पर अत्याचार नहीं होता। (४७) पूछते हैं कि यदि तुम हो तो यह प्रण प्रलय का कब पूरा होगा। (४८) ऐ पैगम्बर, इनसे कहो कि मेरा अपना लाभ व हानि भी मेरे हाथ में नहीं। परन्तु जो ईश्वर चाहता है वही होता है। उसके ज्ञान में हर समाज का एक समय नियत है। जब उनकी मृत्यु आ जाती है तो घड़ी भर भी पीछे नहीं हट सकती और न आगे बढ़ सकती है। (४९) ऐ पैगम्बर इनसे पूछो कि भला देखो तो सही यदि ईश्वर का दण्ड रातों-रात तुम पर आ उतरे या दिन-दहाड़े आ जाय तो पाप लोग इससे पहिले क्या कर लेंगे। (५०) सो क्या जब आ पड़ेगी तभी उसका विश्वास करोगे, क्या अब विश्वास लाये और तुम तो इसके लिए शीघ्रता मचा रहे थे। (५१) फिर प्रलय के दिन अवज्ञाकारियों को आज्ञा होगी कि अब सदैव का दण्ड चक्खो, तुमको दण्ड दिया जा रहा है, यहीं तुम्हारी कमाई का बदला है। (५२) तुमको पूछते हैं कि जो कुछ तुम उनसे कहते हो क्या यह सच है? कहो कि पालनकर्ता की सौगन्ध सत्य है और तुम भाग कर ईश्वर को हरा न सकोगे। (५३) (रुकू ५)

जिस-जिसने संसार में अवज्ञा की है कि अपने छुटकारे के लिए यदि समस्त कोष पृथ्वी के जो उनके अधिकार में हों दे निकलें परन्तु दण्ड को देख उनको लज्जा खानी पड़ेगी और मनुष्यों में न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायगा और उन पर अत्याचार न होगा। (५४) स्मरण रक्खो जो नभ और पृथ्वी में है अल्लाह ही का है। स्मरण रक्खो कि अल्लाह का प्रण सच्चा है परन्तु अधिकतर ननुष्य विश्वास नहीं करते। (५५) वही जीवन देता और मारता है और उसकी ओर तुमको लौट कर जाना है। (५६) तुम्हारे पास शिक्षा आ चुकी और हृदय के रोग को दवा और धर्म वालों के लिए सावधानी* और दया

*** यानी कुरान में अच्छी-अच्छी शिक्षाएं हैं और सच्ची-सच्ची धर्म की बातें। इनसे हृदय के रोग (असत्य) मिट जातें हैं।**

आ चुकी है। (५७) पैगम्बर, इनसे कहो कि यह कुरान अल्लाह की कृपा और कृपादृष्टि है और मनुष्यों को चाहिए कि ईश्वर की कृपा और देन अर्थात कुरान को पाकर प्रसन्न हों कि जिन साँसारिक सुखों के पीछे पड़े हैं यह उनसे कहीं बढ़कर है। (५८) ऐ पैगम्बर, इनसे कहो कि भला देखो तो सही, ईश्वर ने तुमको जीविका दी अब तुम उसमें से पाप और पुण्य ठहराने लगे। इनसे पूछो ईश्वर ने तुम्हें क्या ऐसी आज्ञा दी है या उस पर झूठा पाप लगाते हो। (५९) जो ईश्वर पर झूठ बाँधते हैं वह प्रलय के दिन क्या समझेंगे अल्लाह मनुष्यों पर कृपा रखता है बहुत से आभार मानने वाले नहीं होते। (६०) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर तुम किसी दशा में हो और जो कोई सी कुरान की आयत भी पढ़कर सुनाओ और तुम भी कोई कर्म करते हो—जब तुम उसमें लगे रहते हो हम तुमको देखते रहते हैं और तुम्हारे पालनकर्ता से जरा भी कुछ छिपा नहीं रह सकता न पृथ्वी में और न आकाश में और कण से छोटी वस्तु हो या बड़ी प्रकाशित पुस्तक में लिखी हुई है। (६१) स्मरण रक्खो कि ईश्वर जिनको चाहता है उनको न भय होगा और न वे उदास होंगे। (६२) यह मनुष्य जो विश्वास लाये और डरते रहे इनको यहाँ साँसारिक जीवन में भी शुभ संवाद है।(६३) प्रलय में भी ईश्वर की बातों में भेद नहीं आता है यह बड़ी सफलता है। (६४) ऐ पगम्बर इनकी बातों से तुम उदास न हो क्योंकि सारी शक्ति अल्लाह की है वह सुनना जानता है। (६५) स्मरण रखो कि जो नभ में है और जो पृथ्वी में है सब अल्लाह ही का है और जो मनुष्य ईश्वर के अतिरिक्त देवताओं को पुकारते हैं कुछ पता नहीं कि किस पर चलते हैं। वह केवल वहम पर चलते हैं और निरा अनुमान दौड़ाते हैं। (६६) वही है जिसने तुम्हारे लिए रात्री को बनाया जिससे तुम उसमें विश्राम करो और दिन को जिससे तुम उसके प्रकाश में देखो-

भालो। रात-दिन के बनाने में उन मनुष्यों को जो सुनते हैं निशानियाँ हैं। (६७) कहते हैं कि ईश्वर ने पुत्र बना रखा है, वह पवित्र है इच्छारहित है जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है उसी का है तुम्हारे पास इसका कोई प्रमाण तो है नहीं तो क्या बेजाने-बूझे ईश्वर पर झूठ बोलते हो। (६८) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कह दो कि जो ईश्वर पर झूठा पाप बाँधते हैं उनकी इच्छापूर्ति नहीं होती। (६९) संसार के लाभ हैं फिर उनको हमारी ओर लौटकर आना है तब उनके कुफ्र के दण्ड में हम उनको कठोर दण्ड देंगे। (७०) (रुकू ७)

ऐ पैग़म्बर इन मनुष्यों को नूह की दशा पढ़कर सुनाओ कि जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि भाइयों, यदि मेरा कहना और ईश्वर की आयतें पढ़कर समझना तुम पर असह्य बीतता है तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है बस तुम और तुम्हारे देवता अपनी बात ठहरा लो फिर तुम्हारी बात तुम पर छिपी न रहे, फिर जो कुछ तुमको करना है मेरे साथ कर चुको और मुझे अवकाश न दो। (७१) फिर यदि तुम मुंह मोड़ बैठे तो मैंने तुमसे कुछ परिश्रमिक नहीं माँगा, मेरा परिश्रमिक तो बस ईश्बर ही पर है और मुझको आज्ञा दी गई है कि मैं उसकी सेवा में रहुं। (७२) फिर मनुष्यों ने उनको झुठलाया तो हमने नूह को और जो मनुष्य उसके साथ नावों में थे उनको बचा लिया और जिन मनुष्यों ने हमारी आयतों को झुठलाया उन सबको डुबोकर दूसरे मनुष्यों को अधिकारी बनाया तो जो मनुष्य डराये गये हैं उनका कैसा परिणाम हुआ। (७३) फिर नूह के पश्चात हमने पैगम्बरों को उनकी जाति की ओर भेजा तो यह पैगम्बर उनके पास चमत्कार लेकर आये। इस पर भी जिस वस्तु को पहले झुठला चुके थे उस पर विश्वास न लाये। इसी प्रकार हम अवज्ञाकारियों के हृदय पर मुहर कर दिया करते हैं। (७४) फिर इनके पश्चात हमने मूसा

और हारूँ को अपने निशान लेकर फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ भेजा, तो वे अकड़ बैठे और यह मनुष्य कुछ अपराधी थे (७५) तो जब इसके पास हमारी ओर से सच बात पहुँची तो वह कहने लगे कि यह तो अवश्य स्पष्ट जादू है। (७६) मूसा ने कहा कि जब सच बात तुम्हारे पास आई तो क्या तुम उसके विषय में कहते हो क्या यह जादू है ? और जादूगरों का भला नही होता। (७७) वह कहने लगे क्या तुम इस अर्थ से हमारे पास आये हो कि जिस पर हम अपने बड़ों को पाया उससे हमको फिरा दो और देश में तुम दोनों की सरदारी हो और हम तो तुम पर विश्वास लानेवाले नहीं हैं। (७८) और फिर-औन ने आज्ञा दी कि प्रत्येक जानकार जादूगर को हमारे सामने लाकर उपस्थित करो । (७९) फिर जब जादूगर आ उपस्थित हुए तो उनसे मूसा से कहा कि* जो तुमको डालना स्वीकार है डालो। (८०) तो जब उन्होंने डाल दिया तो मूसा ने कहा कि यह जो तुम लाये हो जादू है अल्लाह इसको झूठ करेगा क्योंकि अल्लाह उत्पातियों को काम नहीं बनाने देता। (८१) और अपनी आज्ञा से सच को सच करता है चाहे अपराधियों को बुरा ही क्यों न लगे। (८२) (रुकू ८)

इन सारी बातों पर मूसा ही के कुटुम्ब के केवल थोड़े से विश्वास लाये और सो भी फिरऔन और उसके सरदारों से डरते-डरते कि कहीं कोई विपत्ति उनके ऊपर न डाले। फिरऔन देश में बहुत बढ़ा-चढ़ा था और वह असीमितता किया करता था। (८३) और मूसा ने समझाया कि भाईयों ! यदि तुम अल्लाह पर विश्वास रखते हो तो उसी पर भरोसा करो। (८४) इस उन्होंने उत्तर दिया कि हमको ईश्वर ही का भरोसा है। ऐ हमारे पालनकर्ता ! इस पर इस अत्याचारी जाति की शक्ति न आजमा। (८५) अपनी कृपा से हमको काफिर जाति से बचा। (८६) हमने मूसा और उसके भाई की ओर

*अर्थात जो जादू तुम कर सकते हो मेरे ऊपर कर डालो।

आज्ञा भेजी कि मिस्र में अपने मनुष्यों के घर बना लो और अपने घरों को मसजिदें बता दो और नमाज पढ़ो और धर्मवालों को शुभ-संवाद सुना दो। (८७) मूसा ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! तूने फिरऔन और उसके सरदारों को संसार के जीवन में आदर, सत्कार और धन दे रखा है और ऐ हमारे पालनकर्ता यह इसलिए दिए हैं कि वह तेरे मार्ग से भटकावें, तो ऐ हमारे पालनकर्ता! इनके धन भेंट दे और इनके हृदय को कठोर कर दे कि यह दुखदाई दण्ड के देखे बिना विश्वास न लावें (८८) कहा तुम दोनौ अपनी मार्ग पर रहो और मूर्खों के मार्ग मत चलना। (८९) हमने इसराईल की सन्तान को पार उतार दिया। फिर फिरऔन और उसके लश्करियों ने उद्दण्डता और छेड़-छाड़ के मार्ग से उनका पीछा किया। यहाँ तक कि जब फिरऔन डूबने लगा तब कहने लगा कि मैं विश्वास लाया कि जिस पर इसराईल के पुत्र विश्वास लाये हैं। उसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं और मैं अवज्ञाकारियों में हूँ। (९०) इसका उत्तर मिला कि अब तू यों बोला पहले निरन्तर अवज्ञा करता रहा और तू उत्पातियों में था। (९१) तो आज तेरे शरीर को हम बचावेंगे कि जो मनुष्य तेरे पश्चात आनेवाले हैं तू उनके लिए शिक्षा हो और बहुत से मनुष्य हमारी निशानियों से सोये हुए हैं। (९२) (रुकू ९)

हमने इसराईल की सन्तान को एक सच्चे ठिकाने से जा बैठाया और उनको सुन्दर-सुन्दर पदार्थ दिये और उनमें भेद नहीं पड़ा। जब तक ज्ञान न आया यह मनुष्य जिन-जिन बातों में भेद डालते रहते हैं तुम्हारा पालनकर्ता प्रलय के दिन उन भेदों का निर्णय कर देगा। (९३) तो पैगम्बर, यह कुरान जो हमने तुम्हारी ओर अवतरित किया है यदि इसके विषय में तुमको किसी प्रकार का सन्देह हो तो तुमसे पहले जो मनुष्य पुस्तकों को पढ़ते है उनसे पूछ देखो कुछ सन्देह नहीं कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता की ओर सच्ची पुस्तक अवतरित है तो

कदापि सन्देह करनेवालों में न होना। (९४) और न उन मनुष्यों में होना जिन्होंने ईश्वर की आयतों को झुठलाया तो तुम भी हानि उठाने वालों में हो जाओगे। (९५) ऐ पैगम्बर जिन पर पालनकर्ता की बात ठीक आई वे विश्वास न लावेंगे। (९६) वह तो जब तक दुखदाई दण्ड को न देख लेंगे किसी प्रकार विश्वास लानेवाले नहीं हैं चाहे पूरा चमत्कार उनके सामने आ उपस्थित हो। (९७) तो यूनुस जाति के अतिरिक्त और कोई बस्ती ऐसी क्यों न हुई कि विश्वास ले आती और उनको विश्वास लाना लाभ देता तो जब विश्वास ले आये तो हमने साँसारिक जीवन में उसे अपकीर्ति के दण्ड को क्षमा कर दिया और उनको एक समय तक रहने दिया। (९८) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता चाहता तो जितने आदमी पृथ्वी के धरातल में है सबके सब विश्वास ले आते। तो क्या मनुष्यों को विवश कर सकते हो कि वह विश्वास ले आवें। (९९) किसी व्यक्ति के पक्ष में नहीं कि बिना आज्ञा ईश्वर के विश्वास ले आवे। मालिश उन्हीं पर डालता है जो बुद्धि को काम में नहीं लाते। (१००) निशानियाँ और डरावे उनको कोई उपकारी नहीं। (१०१) तो क्या वैसे ही संकट की प्रतीक्षा में हैं जैसी पहले मनुष्यों पर आ चुकी है। ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कह दो कि तुम भी प्रतीक्षा करो मैं भी तुम्हारे साथ प्रतीक्षा करने वालों में हूँ। (१०२) फिर हम अपने पैगम्बरों को बचा लेते हैं और इसी प्रकार उनकी जो विश्वास लाये हमने अपने लिए आवश्यक कर लिया है कि विश्वास वालों को बचा लिया करें। (१०३) (रुकू १०)

ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि यदि मेरे धर्म के सम्बन्ध में संदेह हो तो ईश्वर के अतिरिक्त तुम जिनकी पूजा करते हो, मैं तो उनकी पूजा नहीं करता अपितु मैं अल्लाह ही को पूजता हूँ जो कि

***गन्दगी से अभिप्राय है कुफ्र और शिर्क या अपवित्र विचार।**

तुमको मार डालता है और मुझको आज्ञा दी गई है कि मैं विश्वास वालों में रहूं। (१०४) यह कि धर्म की ओर अपना मुंह किये सीधे मार्ग चला जाऊंगा और मुशरिकों में कदापि न होउंगा। (१०५) और ईश्वर के अतिरिक्त किसी को न पुकारना कि वह तुमको न तो लाभ ही पहुंचा सकता है और न तुमको हानि ही पहुंचा सकता है। यदि तुमने ऐसा किया तो उसी समय तुम भी अत्याचारियों में होगे। (१०६) यदि ईश्वर तुमको कोई कष्ट पहुंचावे तो उसके अतिरिक्त उसका दूर करने वाला नहीं और यदि किसी प्रकार का सुख पहुँचाना चाहे तो कोई उसकी कृपा को रोकने वाला नहीं। अपने दासों में से जिसे चाहे लाभ पहुँचावे और वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१०७) कह दो मनुष्यो सत्य बात तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास आ चुकी। फिर सच्चा मार्ग पकड़ो तो अपने ही लिये और जो भटका सो भटक कर अपना ही खोता है और मैं तुम्हारा नायक नहीं। (१०८) और ऐ पैगम्बर तुम्हारी ओर से आज्ञा भेजी जाती है उसी चले जाओ और जब तक अल्लाह न्याय न करे ठहरे रहो और वही न्यायाधिशों में भला है। (१०९) (रुकू ११)

सूरे हूद

मदीने में अवतरित हुई इसमें १२३ आयतें और १० रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह पुस्तक कुरान पूर्णरूपेण सावधान की ओर से है जिसकी आयतें स्पष्ठता के साथ वर्णन की गई है। (१) ईश्वर के अतिरिक्त किसी की पूजा मत करो, मैं उसी की ओर से तुमको डराता और शुभ सम्वाद सुनाता हूं। (२) यह कि अपने पालनकर्ता से क्षमा

माँगी और उसी के सामने क्षमायाचना करो, तो वह तुमको एक समय निश्चित तक अच्छी प्रकार बसाये रक्खेगा और जिसने अधिक किया है वह उसको अधिक देगा और यदि मुँह मोड़ो तो मुझको तुम्हारे विषय में बड़े दिन के दण्ड का भय है। (३) तुमको अल्लाह की ओर लौटकर जाना है और वह हर वस्तु पर शक्ति रखता है। (४) ऐ पैगम्बर सुनो कि यह अपने सीनों को दुहरा किये डालते हैं जिससे ईश्वर से छिपे रहें। जब वह अपने कपड़े ओढ़ते हैं ईश्वर उनकी भूली हुई स्पष्ट बातों से सावधान है। वह हृदय के भेद जानता। (५)

बारहवाँ पारा (वमामिन दाब्बतिन)

जितने पृथ्वी में चलायमान हैं उनकी जीविका अल्लाह ही के जिम्मे है और वही उनके ठिकाने को और उनकी सौंपे जाने के स्थान को जानता है। सब कुछ खुली पुस्तक में है। (६) वही है जिसने नभ और पृथ्वी को ६ दिन में बनाया और उसका सिहासन (किब्रियाई) पानी पर था जिससे तुम को जाँचे कि तुममें किसके कर्म अच्छे हैं और यदि तुम कहो कि मेरे पीछे तुम उठाकर खड़े किये जाओगे तो जो मनुष्य नहीं मानते हैं अवश्य कहेंगे कि यह तो स्पष्ट जादू है। (७) और यदि हम दण्ड को इनसे गिनती के कुछ दिन तक रोके रहें तो अवश्य कहने लगेंगे कि कौन सी वस्तु दण्ड को रोक रही। सुनो जी जिस दिन दण्ड इन पर उतरेगा इनसे किसी के टाले टलने वाला नहीं और जिसकी यह हँसी उड़ा रहे थे वह इनको घेर लेगी। (८) (रुकू १)

यदि हम मनुष्य को अपनी कृपा का स्वाद दें फिर उसको उससे छीन लें तो वह निराश और आभार न मानने वाला होता है। (९) यदि तुमको कोई कष्ट पहुंचा हो और उसके पश्चात उसको आराम चखावें तो कहने लगता है कि मुझसे सब कठिनाईयाँ दूर हो गईं

क्योंकि वह बहुत ही प्रसन्न हो जानेवाला तथा झूठी प्रशंसा करनेवाला है। (१०) परन्तु दृढ़ रहते हैं और भले काम करते हैं यहीं हैं जिनके लिए दान और बड़ा परिणाम है। (११) तो क्या जो आज्ञा तुम पर भेजी जाती है तुम उसमें से थोड़ी सी छोड़ देना चाहते हो। इस कारण कि तंग होकर वे कहते हैं कि इस व्यक्ति को कोष*नहीं मिला। या उसके साथ कोई देवदूत क्यों नही आया। सो तुम डरानेवाले हो। और हर वस्तु ईश्वर ही के वश में है। (१२) ऐ पैगम्बर क्या काफिर कहते हैं कि इसने कुरान को अपसे हृदय से बना लिया है तो इनसे कहो कि यदि तुम सच्चे हो तो तुम भी इसी प्रकार की वनाई हुई दस सूरतें ले आओ और ईश्वर के अतिरिक्त जिसको तुमसे बुलाते बन पड़े बुला लो यदि तुम सच्चे हो। (१३) बस यदि काफिर तुम्हारा कहना न करें तो जाने रहो कि कुरान ईश्वर ही के ज्ञान से अवतरित हुआ है और यह कि उसके अतिरिक्त किसी की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए तो क्या अब तुम आज्ञा मानते हो। (१४) जिनका अर्थ साँसारिक जीवन और संसार में सुख चाहना है हम उनके काम का बदला संसार में उन को पूरा-पूरा भर देते हैं वह संसार में घाटे में नहीं रहते। (१५) यही वह मनुष्य हैं जिनके लिए प्रलय में नरक के अतिरिक्त और कु नहीं और जो काम संसार में इन मनुष्यों ने किये, निरर्थक हुए और इनका किया धरा निष्काम हुआ। (१६) तो क्या जो अपने पालनकर्ता के खुले मार्ग पर हों और उनके साथ उन्हीं में का एक साक्षी हो और

---

*इनकारी कहते थे कि मुहम्मद रसूल हैं तो इनके पास अधिक धन होना चाहिए या इनके साथ एक फरिश्ता निरँतर चलना चाहिए जो इनके रसूल होने का साक्षी हो। इन बातों से मुहम्मद साहब को बड़ा दुःख होता था। इन आयतों में यह बताया गया है कि नबी के लिए इस आडम्दर की आवश्यकता नहीं।

कुरान से पहिले मूसा की पुस्तक हो जो मार्ग दिखाने वाली और कृपालु है) वह मनुष्य इनको मानते हैं और गुटों में से जो इस कुरान से अस्वीकार करते हो उनका अन्तिम स्थान नरक है तो ऐ पैगम्बर तुम कुरान की ओर से संदेह में न रहना इसमें कुछ संदेह नहीं कि वह तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सत्य है ! परन्तु प्रायः मनुष्य विश्वास नहीं लाते । (१७) जो ईश्वर पर झूठ कलंक लगाये उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है । यही मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने उपस्थित किये जावेंगे और साक्षी देंगे कि यही हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता पर झूठ बोला था । सुनो अत्याचारियों पर ईश्वर ही की मार है । (१८) जो ईश्वर के मार्ग से रोकते और उसमें टेढ़ापन चाहते हैं और हैं जो प्रलय को अस्वीकार करते हैं । (१९) यह मनुष्य न संसार ही में ईश्वर को हरा सकेंगे और ईश्वर के अतिरिक्तन इनका कोई सहायक खड़ा होगा इनको दोहरा दण्ड होगा क्योंकि न सुन सकते थे न इनको सूझ पड़ता था । (२०) यही मनुष्य हैं जिन्होंने स्वयं अपनी हानि कर ली और झूठ जो बाँधा था खो गया । (२१) अवश्य यही मनुष्य प्रलय में सबसे अधिक घाटे में होंगे । (२२) जो मनुष्य विश्वास लाये और अच्छे काम किये और अपने पालनकर्ता के समक्ष विनती करते रहे यही स्वर्ग में रहनेवाले हैं कि यह स्वर्ग में सदैव रहेंगे । (२३) दो गुटों का उदाहरण अन्धे और बहिरे और आँखों वाले और सुननेवाले जैसा है । क्या दोनों का उदाहरण समान हो सकता है ? क्या तुम ध्यान नहीं *करते ? (२४) (रुकू २)

---

*अविश्वासी अन्धों के समान हैं कि ईश्वर की निशानियां नहीं देखते और बहरों के समान हैं कि रसूल की बातें नहीं सुनते और मुसलमान आँख और कानवाले हैं कि ईश्वर को निशानियों को देखते हैं और रसूल की बातों पर कान धरते हैं ।

और हम ही ने नूह को उनकी जाति की ओर भेजा कि मैं तुमको स्पष्ट भय सुनाने आया हूं। (२५) ईश्वर के अतिरिक्त पूजा न किया करो। मुझको तुम्हारे विषय में प्रत्येक दिन दण्ड का भय है। (२६) इस पर उनकी जाति के सरदार जो नहीं मानते थे कहने लगे कि हमको तो तुम हमारे ही जैसे मनुष्य दिखाई देते हो और हमारे निकट केवल मनुष्य तुम्हारे सहायक हो गये हैं जो हम में नीच हैं और हम तो तुम में अपने से कोई विशेषता नहीं पाते अपितु हम तुमको झूठा समझते हैं। (२७) नूह ने कहा भाइयों भला देखो तो सही यदि मैं अपने पालनकर्ता के खुले मार्ग पर हूं और उसने मुझको अपनी सरकार से देन दी है फिर वह मार्ग तुमको दिखाई नहीं देता तो क्या हम उसको तुम्हारे गले मढ़ रहे हैं और तुम उसको ना पसंद कर रहे हो। (२८) भाइयों, मैं इसके बदले मैं तुमसे रुपयों का चाहने वाला नहीं हूं। मेरा पारीश्रमिक तो अल्लाह ही पर है और मैं मनुष्यों को जो विश्वास ला चुके हैं निकालनेवाला नहीं हूं क्योंकि इनको भी अपने पालनकर्ता के यहाँ जाना है परन्तु मैं देखता हूं कि तुम मूर्ख हो। (२९) भाइयों यदि मैं इनको निकाल दूँ तो ईश्वर के सामने कौन मेरी सहायता को खड़ा हो जायगा, क्या तुम नहीं समझते। (३०) मैं तुमसे दावा नहीं करता कि मेरे पास ईश्वरीय कोष हैं और न मैं अदृष्ट जानता हूं और न मैं कहता हूं कि मैं देवदूत हूं और जो तुम्हारी दृष्टी में तुच्छ हैं मैं उनके सम्बन्ध में यह भी नहीं कह सकता कि ईश्वर उन पर दया नहीं करेगा इनके हृदय की बात को अल्लाह ही खूब जानता है यदि ऐसा कहूं तो मैं अत्याचारियों में हूँगा। (३१) वह बोले नूह तूने हमसे झगड़ा किया और बहुत झगड़ा किया, यदि तू सच्चा है तो जिससे हमको डराता है उसको हम पर ले आ। (३२) नूह ने कहा कि ईश्वर को स्वीकार होगा तो वही दण्ड को भी तुम पर लायेगा और तुम हटा न सकोगे। (३३) और जो मैं तुम्हारे लिए शिक्षा चाहूं यदि ईश्वर ही को तुम्हारा वह करना स्वीकार नहीं है तो मेरी शिक्षा तुम्हारे काम नहीं आ सकती। वही तुम्हारा पालनकर्ता है और उसी की ओर

तुमको लौटकर जाना है। (३४) ऐ पैगम्बर जिस प्रकार नूह को झुठलाया था क्या तुमको झुठलाते हैं और तुम पर हठ करते और कहते हैं कि कुरान को इसने स्वयं बना लिया है तुम उनको उत्तर दो कि यदि कुरान मैंने स्वयं बना लिया है तो मेरा अपराध मुझ पर है और जो अपराध तुम करते हो मेरा कुछ उत्तरदायित्व नहीं। (३५) (रुकू ३)

और नूह की ओर ईश्वरीय संदेश आया कि तुम्हारी जाति में जो विश्वास ला चुके हैं उनके अतिरिक्त अब कदापि कोई विश्वास नहीं लावेगा और जैसे-जैसे अत्याचार यह लोग करते रहे हैं तुम इसका दुःख न करो। (३६) हमारे सामने और हमारी इंगित के अनुसार एक नाव बनाओ और अवज्ञाकारियों के सम्बन्ध में हमसे कुछ न कहो। क्योंकि यह अवश्य डूबेंगे। (३७) अतः नूह ने नाव बनानी आरम्भ की और जब कभी उनकी जाति के माननीय मनुष्य उनके पास से होकर गुजरते तो उनसे हंसी करते नूह ने उत्तर दिया कि यदि तुम हम पर हँसते हो तुम पर हम हँसेंगे। (३८) थोड़े दिनों पश्चात तुमको प्रतीत हो जायगा कि किस पर दण्ड उतरता है जो उसकी अपकीर्ति करे और सदैव का दण्ड उसके सिर पड़े। (३९) यहाँ तक कि हमारी आज्ञा जब आ पहुंची और अल्लाह के कोष से तनूर ने जोश मारा तो हमने आज्ञा दी कि हर प्रकार में से दो-दो के जोड़े और जिसके विषय में प्रथम आज्ञा हो चुकी है उसको छोड़ कर अपने घर वाले और जो विश्वास ला चुके हैं उनको नौका में बैठा लो। (४०) और उनके साथ विश्वास भी थोड़ा ही लाये थे और उसने कहा सवार हो उसमें और नौका का बहाना और ठहरना अल्लाह के नाम से है और अल्लाह क्षम्य तथा कृपालु है। (४१) नौका इनको ऐसी लहरों में जो पर्वत के समान थीं ले गई और नूह का पुत्र पृथक था तो नूह ने उसे पुकारा कि पुत्र हमारे साथ बैठ ले और काफिरों के साथ मत रह। (४२) वह बोला मैं अभी किसी पर्वत के सहारे जा लगता हूं वह मुझको पानी से बचा

लेगा। नूह ने कहा कि आज के दिन अल्लाह के कोप से बचने वाला कोई नहीं परन्तु ईश्वर ही जिस पर अपनी कृपा करे और दोनों के मध्य एक लहर आ गई और दूसरों के साथ नूह का पुत्र भी डूब गया। (४३) आज्ञा हुई कि ऐ पृथ्वी अपना पानी सोख ले और ऐ नभ थम जा और पानी उतर गया और काम समाप्त कर दिया गया और नौका जूदी *पर्वत पर ठहर गई और आज्ञा हुई कि अत्याचारियो दूर रहो (४४) और नूह ने अपने पालनकर्ता को पुकारा और विनती की कि पालनकर्ता मेरा पुत्र मेरे मनुष्यों में है और तूने जो प्रण किया था सत्य है और तू सब अधिकारियों से बड़ा अधिकारी है। (४५) ईश्वर ने कहा कि नूह तुम्हारा पूत्र तुममें नहीं था क्योंकि इसके कर्म बुरे थे। जो तू नहीं जानता वह बात न पूछ। मैं तुमको समझाये देता हूँ कि मूर्खों में न हो। (४६) कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैं तेरी ही शरण माँगता हूं कि जो मैं नहीं जानता था उसके विषय में तुझ से पूछा और यदि तू मेरा अपराध नहीं क्षमा करेगा तो मैं नष्ट हो जाऊंगा। (४७) आज्ञा दी गयी है कि ऐ नूह ! हमारी ओर से अभय और दैन के साथ नौका से उतरो। तुम पर और उन मनुष्यों पर जो तेरे साथ वालों से उत्पन्न हुए हैं दैनें हैं और कुछ गुटों को लाभ देंगे फिर उनको हमारी ओर से दुख की मार पहुंचेगी। (४८) यह अदृष्ट की सूचनाएँ हैं ऐ मोहम्मद हम तेरी ओर ईश्वरीय संदेश भेजते हैं इससे पहले तू और तेरी जाति के मनुष्य इन बातों को न जानते थे, तो तू संतोष कर संयमियों का परिणाम भला है। (४९) (रुकू ४)

और आद की ओर हमने उन्हीं के भाई हूद को भेजा। उन्होंने समझाया कि भाइयों, ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई दूसरा मानने वाला नहीं तुम सब झूठ कहते हो। (५०) भाईयों इसके बदले मैं तुमसे कुछ पारीश्रमिक नहीं माँगता, मेरा पारीश्रमिक

* यह एक पहाड़ का नाम है जो शाम देश में हैं।

तो उसी के मत्थे है जिसने मुझको उत्पन्न किया तो क्या तुम नहीं समझते। (५१) भाइयों, अपने पालनकर्ता से माँगो फिर उसके सामने क्षमा माँगो कि वह तुम पर खूब बरसते हुए बादल भेजेगा और दिन पर दिन तुम्हारी शक्ति को बढ़ावेगा और उद्दण्डता करके उससे मुँह न मोड़ो : (५२) वह कहने लगे ऐ हूद ! तू हमारे पास कोई प्रमाण लेकर नहीं आया और तेरे कहने से हम अपने पूजितों को न छोड़ेंगे और हम तुम पर विश्वास न लावेंगे। (५३) हम तो यही समझते हैं कि तुम पर हमारे प्रार्थियों में से किसी की मार पड़ गई है। हूद ने उत्तर दिया कि मैं ईश्वर को साक्षी करता हूं और तुम भी साक्षी रहो कि ईश्वर के अतिरिक्त जो तुम देवता बनाते हो मैं तो उन से दुखित हूं। (५४) तो तुम सब मिल कर मेरे साथ अपनी बदी करो और मुझको क्षमा न दो। (५५) मैंने अपने और तुम्हारे अल्लाह पर भरोसा किया। जितने जीव हैं सभी की चोटी उसके हाथ में है। मेरा पालनकर्ता सीधे मार्ग पर है। (५६) इस पर भी यदि तुम फिरे रहो तो जो आज्ञा मेरे द्वारा भेजी गयी थी वह मैं तुमको पहुंचा चुका और मेरा पालनकर्ता तुम्हारे अतिरिक्त दूसरे मनुष्यों को तुम्हारे स्थान पर लाकर उपस्थित करेगा और मेरा पालनकर्ता हर वस्तु का रक्षक है। (५७) और जब हमारी आज्ञा आई तो हमने अपनी कृपा से हूद को और उन को जो उनके साथ विश्वास लाये थे बचा लिया और उनको कठिन दण्ड से बचा लिया। (५८) यह आद है जिन्होंने अपने पालनकर्ता की आज्ञाओं से मना किया और उसके पैगम्बरों की आज्ञा न मानी। प्रत्येक निर्दय शत्रु की आज्ञा पर चलते रहे। (५९) इस संसार में लांछन उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के दिन भी देखा आद ने अपमे पालनकर्ता को अस्वीकार किया। देखो आद जो हूद की जाति के थे फटकारे गये। (६०) (रुकू ५)

समुद्र की ओर हमने उनके भाई सालेह को भेजा तो उन्होंने कहा कि भाइयों ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा

कोई पूजित नहीं। उसने तुमको पृथ्वी से बना खड़ा किया और तुमको उसमें बसाया और उससे क्षमा माँगो और उसी के सामने क्षमा याचना करो। मेरा पालनकर्ता पास है और प्रार्थना स्वीकार करने वाला है। (६१) वह कहने लगे ऐ सालेह इससे पहिले तो हम में तुमसे आशा की जाती थी कि तुम हर प्रकार हमारा साथ दोगे सो क्या तुम हमको उनकी पूजा से मना करते हो जिनको हमारे पिता-पितामह पूजते चले आये हैं और उसकी ओर तुम हम को बुलाते हो हमको उसके विषय में सन्देह है। (६२) उत्तर दिया कि भाइयो, देखो तो सही यदि मुझे अपने पालनकर्ता से सूझ मिल गई है और उसने मुझ पर अपनी कृपा की है और यदि मैं उसकी अवज्ञा करने लगूं तो ऐसा कोन है जो ईश्वर के विरुद्ध में मेरी सहायता को खड़ा हो। तो तुम मेरी हानि ही कर रहे हो। (६३) और भाइयों, यह ईश्वर की ऊँटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है, तुम इसको छुटा रहने दो कि ईश्वर की पृथ्वी में से खाती फिरे और इसको किसी प्रकार की हानि न पहुंचाना अन्यथा तुरन्त ही तुमको दण्ड मिलेगा। (६४) तो मनुष्यों ने उसको मार डाला तो सालेह ने कहा तीन दिन अपने घरों में बस लो यह प्रण असत्य नहीं होगा। (६५) तो जब हमारी आज्ञा आई तो हमने सालेह को और उन मनुष्यों को जो उनके साथ विश्वास लाये थे अपनी कृपा से उस दिन की अपकीर्ती से बचा लिया, तुम्हारा पालनकर्ता वही प्रबल विजयी है। (६६) जिन मनुष्यों ने असीमितता की थी उनको कड़क ने पकड़ लिया, वे अपने घरों में बैठे रह गये। (६७) मानो उनमें बसे ही न थे। देखो समूद ने अपने पालनकर्ता की अवज्ञा की देखो समूद दुतकारे गये। (६८) और हमारे देवदूत इब्राहीम के पास शुभसंवाद लेकर आये उन्होंने प्रणाम किया। इब्राहीम ने प्रणाम का उत्तर दिया फिर इब्राहीम ने देर न की और भुना हुआ बछड़ा ले आया (६९) (रुकू ६) फिर जब देखा कि उनके हाथ खाने की ओर नहीं

उठते तो उनसे बुरा विचार हुआ और जी ही जी में उनसे डरे*। वह बोले डर मत हम तो देवदूत हैं लूट की जाति की ओर भेजे गये। (७०) इब्राहीम की पत्नि भी खड़ी थी वह हँसी, फिर हमने उसको इसहाक और इसहाक के पश्चात याकूब का शुभसंवाद दिया। (७१) वह कहने लगी हाय मेरी कमबख्ती, क्या मेरे संतान होगी मैं तो बुढ़िया हूं और यह मेरे पति भी बूढ़े हैं हमारे यहाँ संतान का होना अचरज की बात है। (७२) देवदूत बोले क्या तू ईश्वर की प्रकृति से अचम्भा करती है, ऐ बैत के**रहने वाले, तुम पर ईश्वर की कृपा और उसकी देनें हैं वह सराहनीय गुणोंवाला है। (७३) फिर जब इब्राहीम से भय दूर हुआ और उनको शुभसंवाद मिला लूत की जाति के सम्बन्ध में हम से झगड़ने लगे। (७४) इब्राहीम बड़े कोमल हृदय रुजू करने वाले थे। (७५) इब्राहीम इस विचार को छोड़ दो तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा आ पहुंची है और उन मनुष्यों पर ऐसा दण्ड आनेवाला है जो टल नहीं सकती। (७६) और जब हमारे देवदूत लूत के पास आये तो उनका आना उनको बुरा लगा और उनके आने के कारण से संकुचित हृदय हुए और कहने लगे यह तो बड़ी विपत्ति का दिन है। (७७) लूत की जाति के मनुष्य दौड़े-दौड़े लूत के पास आये और यह मनुष्य पहिले से ही बुरे काम किया करते थे। लूत कहने लगे कि भाइयों, यह मेरी पुत्रियाँ हैं यह तुम्हारे लिए अधिक पवित्र हैं तो ईश्वर से डरो और मेरे अतिथियों में मेरी अपकीर्ति न करो।

---

* इब्राहीम ने जब देखा कि उनके घर आने वाले उनके खाने की ओर हाथ नहीं बढ़ाते तो उनको डर लगा कि ये आनेवाले हमको कोई हानि पहुंचाना चाहते हैं, इसीलिए हमारे नमक से बच रहे हैं। उस समय मनुष्य जिसका खाना नहीं खाते थे उसे अपना शत्रु समझते थे।

** अर्थात इब्राहीम के घर वाली (पत्नी)

क्या तुममें कोई भला मनुष्य नहीं। (७८) उन्होंने उत्तर दिया कि तुमको तो पता है कि हमको तो तुम्हारी पुत्रियों से कोई सम्बन्ध नहीं। हमारे विचार से तुम भली-भाँति ज्ञाता हो। (७९) लूत बोले आज मुझमें तुम्हारे समान शक्ति होती या मैं किसी शक्तिशाली सहारे का आसरा पकड़ पाता। (८०) देवदूत बोले कि ऐ लूत। हम तुम्हारे पालनकर्ता के भेजे हुए हैं। यह कदापि तुम तक नहीं पहुंच पायेंगे तो तुम अपने मनुष्यों को लेकर कुछ रात्री से निकल भागो और तुममें से कोई मुड़कर न देखो परन्तु तुम्हारी पत्नी देखे कि जो दण्ड इन मनुष्यों पर उतरनेवाला है वह उस पर भी अवश्य उतरेगा। इनके प्रण का समय प्रातः हैं। क्या प्रातःकाल निकट नहीं। (८१) फिर जब हमारी आज्ञा आई तो ऐ पैगम्वर हमने बस्ती लौट दो और उस पर जमे हुए खंजड़ के पत्थर बरसाये। (८२) जिन पर तुम्हारे पालनकर्ता के यहाँ निशान किया हुआ था और यह अत्याचारियों से दूर नहीं। (८३)

(रुकू ७)

मदियन* की ओर उनके भाई शुऐब को भेजा। उन्होंने कहा भाइयों, ईश्वर ही की पूजा करो, उसके अतिरिक्त तुम्हारा कोई पूजित नहीं और नाप और तौल में कमी न किया करो। मैं तुमको स्मृद्ध देखता हूं और मुझको तुम्हारे विषय में दण्ड के दिन का भय है जो आ घेरेगा। (८४) भाइयों, नाप और तौल न्याय के साथ पूरा किया करो और मनुष्यों को उनकी वस्तुएं कम न दिया करो और देश में उत्पात मत मचाते फिरो। (८५) यदि विश्वास रखते हो तो अल्लाह का दिया जो कुछ बच रहे वही तुम्हारे लिए अच्छा है। मैं तुम्हारी रक्षा करने वाला तो नहीं हूं। (८६) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब !

*** हजरत इब्राहीम के बेटे का नाम मदियन था। फिर उनकी सन्तान का नाम पड़ गया।**

क्या तुम्हारी नमाज ने तुमको यह सिखाया है कि जिनको हमारे पिता-पितामह पूजते आये हैं हम उनको छोड़ बैठें या अपने धन में जिस प्रकार चाहें व्यय न करें, हाँ तुम ही तो सहनशील और भले निकले हो। (८७) शुऐब बोले भाइयों, भला देखो तो सही यदि मुझको अपने पालनकर्ता की ओर से सूझ हुई और वह मुझको अपने से अच्छी जीविका देता है मैं नहीं चाहता कि जिससे तुमको मना करता हूं और वही काम पीछे से स्वयं करूं, मैं तो जहाँ तक हो सके सुधार चाहता हूं और मेरा सफल होना तो बस ईश्वर ही से है। मैंने तो उसी पर भरोसा किया और उसी की ओर ध्यान देता हूं। (८८) भाइयों, मेरी हठ में आकर कहीं ऐसा अपराध न कर बैठना कि जैसी विपत्ति नूह व हूद की जाति व सालेह की जाति पर आई थी वैसी ही विपत्ति तुम पर भी आवे और लूत की जाति भी तुमसे दूर नहीं। (८९) अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगो, फिर उसी के सामने क्षमा-याचना करो मेरा पालनकर्ता कृपालु और चाहने वाला है। (९०) वह कहने लगे कि ऐ शुऐब! जो बातें तुम कहते हो उनमें से बहुत-सी तो हम नहीं समझते। इसके अतिरिक्त हम तुमको अपने में निर्बल पाते हैं और यदि तुम्हारे कुटुम्ब के मनुष्य नहीं होते तो हम तुम पर पथराव करते और तू हम पर सरदार नहीं। (९१) शुऐब ने उत्तर दिया कि भाइयों अल्लाह से बढ़कर तुम पर मेरे कुटुम्ब का दबाव है और तुमने ईश्वर को अपनी पीठ पीछे डाल दिया। जो कुछ तुम करते हो मेरा पालनकर्ता उसको जानता है। (९२) भाइयो, तुम अपने स्थान पर काम करो, मैं अपने स्थान पर काम करता हूं। आगे तुमको प्रतीत हो जावेगा कि किस पर दण्ड उतरता है जो उसकी अपकीर्ति कर दे और कौन झूठा है। मार्ग देखते रहो और मैं तुम्हारे साथ मार्ग देखता हूं। (९३) जब हमारी आज्ञा आ पहुंची तो हमने अपनी कृपा से शुऐब को और उन मनुष्यों को जो उनके साथ विश्वास लाये थे बचा लिया और जो मनुष्य अवज्ञा करते थे उनको चिंघाड़ ने आ पकड़ा तो अपने

घरों में मरे रह गये। (९४) मानों उनमें बसे ही न थे। सुन रखो कि जैसे समूद ईश्वर के यहाँ से दुतकारे गये, मदीअ्न वाले भी दुतकारे गये। (९५) (रुकू ८)

हमने मूसा को फिरऔन और उसके दरबारियों की ओर अपनी निशानियों और प्रत्यक्ष प्रमाण के साथ पैगम्बर बनाकर भेजा। (९६) तो मनुष्य फिरऔन के कहने पर चले और फिरऔन की बात कुछ मार्ग की न थी। (९७) प्रलय के दिन फिरऔन अपनी जाति के आगे-आगे होगा और उनको नरक में ले जा प्रविष्ट करेगा और बुरा घाट है जिस पर उतरे हैं। (९८) इस ससांर में लाँछना उनके पीछे लगा दी गई और प्रलय के दिन भी बुरा धर्म है जो दिया गया। (९९) ऐ पैगम्बर यह बस्तियों की सूचनायें हैं जो हम तुमसे वर्णन करते हैं, इनमें से कोई तो उस समय स्थिर है और कोई उजड़ गई हैं। (१००) हमने इन मनुष्यों पर अत्याचार किया तो ऐ पैगम्वर जब तुम्हारे पालनकर्ता की आज्ञा आई तो ईश्वर के अतिरिक्त जिन देवी-देवता को वह पुकारा करते थे, वह उनके नाश के कारण हुए। (१०१) और ऐ पैगम्बर जब बस्तियों के मनुष्य अत्याचार करने लगते हैं और तुम्हारा पालनकर्ता उनको पकड़ता है तो उसकी पकड़ ऐसी ही है, निसन्देह उसकी पकड़ दृढ़ तथा दुखदाई है। (१०२) इनमें उस मनुष्य के लिये जो प्रलय को दण्ड से डरे एक निशानी है। प्रलय का दिन वह दिन होगा जब मनुष्य एकत्रित किये जावेंगे और वह दिन देखने का है। (१०३) और हमने उसमें एक नियत समय तक देर की है। (१०४) जब वह दिन आवेगा तो ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई व्यक्ति बात नहीं कर सकेगा फिर कोई अभागे कोई भाग्यवान होंगे (१०५) तो जो अभागे हैं वह नरक में होंगे, वहाँ उनकों चिल्लाना और चीखना होगा। (१०६) जब तक नभ व पृथ्वी है सदैव उसीमें रहेंगे परन्तु ऐ पैगम्बर जिसको तुम्हारा पालनकर्ता चाहे। तुम्हारा पालनकर्ता जो चाहता है कर डालता है। (१०७) और जो मनुष्य भाग्यवान हैं वह स्वार्थ में होंगे जब तक नभ

और पृथ्वी है निरन्तर उसी में रहेंगे, परन्तु जिसको ईश्वर चाहे खूब देता है। (१०८) तो ऐ पैगम्बर यह मुशरिकन जिसकी पूजा करते हैं उसके सम्बन्ध में तुम किसी प्रकार के सन्देह में मत पड़ना। जैसी पूजा पहिले उनके पिता-पितामह पूजते आये हैं वैसी ही पूजा यह भी करते हैं और हम इनका भाग बिना कम-ज्यादा किये पूरा-पूरा पहुंचा देंगे। (१०९) (रुकू ९)

हमने मूसा को पुस्तक तौरात दी थी तो मनुष्य उसमें भेद डालने लगे और ऐ पैगम्बर यदि तुम्हारा पालनकर्ता एक बात पहिले से न कह चुका होता तो मनुष्यों में निर्णय कर दिया गया होता। (११०) यह मनुष्य कुरान की ओर से ऐसे सन्देह पड़े हुए हैं जिसने इनके दुखी कर रखा है। जब समय आवेगा तुम्हारा पालनकर्ता इनको इनके कर्मो का बदला अवश्य देगा क्योंकि जैसे-जैसे कर्म यह कर रहे हैं उसको सब ज्ञात है। (१११) तो ऐ पैगम्बर अपने साथियों सहित जिन्होंने तुम्हारे साथ क्षमा प्रार्थना की जैसी आज्ञा हुई है सीधे चले जाओ और सीमा से न बढ़ो और जो कुछ तुम कर रहे हो ईश्वर देख रहा है। (११२) मुसलमानों जिन मनुष्यों ने अवज्ञा की, उनकी ओर मत झुकना और नहीं तो नरकाग्नि तुम्हारे लगेगी और ईश्वर के अतिरिक्त तुम्हारा सहायक कोई नहीं है, अवज्ञा की ओर झुकने की दशा में उसकी ओर से भी तुमको सहायता नहीं मिलेगी। (११३) ऐ पैगम्बर दिन के दोनों सिरे अर्थात प्रातः सन्ध्या और रात्री के पहिले नमाज पढ़ा करो क्योंकि भलाइयाँ अपराधों को दूर कर देती हैं जो मनुष्य ईश्वर का वर्णत करने वाले हैं उनके पक्ष में यह स्मरण दिलाना है। (११४) ऐ पैगम्बर ठहरे रहो क्योंकि अल्लाह अच्छे कामों के बदले को निरर्थक नहीं होने देता। (११५) तो जो समाज तुमसे पहिले हो चुके हैं उनमें संसार की इतना परोपकार करने वाले क्यों न हुए कि देश में विद्रोह मचाने से मना करते, परन्तु थोड़े जिनको हमने बचा लिया। और जो अत्याचारी थे वही मार्ग चले जिसमें ऐश पाया और

यह मनुष्य पापी थे। (११६) और ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता ऐसा नहीं है कि बस्तियों को निरर्थक मार डाले और वहाँ के मनुष्य भले हों। (११७) यदि तुम्हारा पालनकर्ता चाहता तो मनुष्यों का एक ही मत कर देता परन्तु मनुष्य सदैव भेद डालते रहेंगे। (११८) परन्तु जिस पर तुम्हारा पालनकर्ता कृपा करे और इसीलिए तो इनको उत्पन्न किया है और तुम्हारे पालनकर्ता का कहा हुआ पूरा हो कि हम भूतों और मनुष्यों से नरक भर देंगे। (११९) ऐ पैगम्बर दूसरे पैगम्बरों के जितने किस्से हम तुमसे वर्णन करते हैं उनके द्वारा हम तुम्हारे हृदय को साहस बंधाते हैं और इनमें सच बात तुम्हारे पास पहुंची और धर्म वालों के लिए शिक्षा तथा ज्ञान है। १२०) ऐ पैगंबर जो मनुष्य विश्वास नहीं लाते उनसे कह तो कि तुम अपने स्थान पर काम करो हम भी काम करते हैं। (१२१) तुम अपना भी मार्ग देखो और हम भी मार्ग देखते हैं। (१२२) नभ और पृथ्वी की छिपी बातें अल्लाह ही के पास हैं और प्रत्येक काम अन्ततः उसी पर जाकर सहारा लेता है तो ऐ पैगम्बर उसी की पूजा करो और उसी पर भरोसा रक्खो और जो कुछ तुम कर रहे हो तुम्हारा पालनकर्ता उससे अनभिज्ञ नहीं। (१२३) (रुकू १०)

सूरे यूसुफ

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह *सूरत खुली पुस्तक अर्थात कुरान की आयतें

*** कुछ यहूदियों ने मक्के के बड़ लोगों से लोगों से कहा था कि मुहम्मद साहब से पूछो कि याकूब की संतान शाम देश से मिस्र क्यों कर आई। इसी प्रश्न के उत्तर में यह सूरत उतरी।**

हैं। (१) हमने इस कुरान को अरबी भाषा में अवतरित किया है। जिससे तुम समझ सको। (२) ऐ पैगम्बर हम तुम्हारी ओर उसी ईश्वरीय वाणी के द्वारा यह सूरत भेज कर तुमको एक अच्छा किस्सा सुनाते हैं और तुम इससे पहले अज्ञान थे। (३) एक समय था कि यूसुफ ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता ! मैंने ११ सितारों और सूर्य तथा चन्द्रमा को देखा है कि यह सब मुझको सिर झुका रहे हैं। (४) याकूब ने कहा बेटा पुत्र कहीं अपने स्वप्न को अपने भाइयों से न कह बैठना कि वह तुझको किसी न किसी विपत्ति में फँसाने की मन्त्रणा करने लगेंगे। राक्षस मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है: (५) जैसा तूने स्वप्न में देखा है वैसा ही होगा कि तेरा पालनकर्ता तुझको मेरे साथ में स्वीकार करेगा। तुझको स्वप्न की बातों की कल बैठना सिखायेगा और जिस प्रकार ईश्वर ने अपनी देन पहले तेरे पितामह इसहाक और इब्राहीम पर पूर्ण की थी उसी प्रकार तुझ पर और याकूब की सन्तान पर पूरा करेगा तेरा पालनकर्ता जानकार और चमत्कार वाला है। (६) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर, यहूद जो पूछते हैं उनके लिए यूसुफ और उनके भाइयों में निशानियाँ हैं। (७) जब यूसुफ के भाइयों ने आपस में कहा कि इसके बावजूद कि भाइयों का बड़ा संघ है तो भी यूसुफ और उसका भाई* हमारे पिता को हमसे बहुत अधिक प्यारे हैं, हमारा पिता स्पष्ट गलती में है। (८) तो या तो यूसुफ को मार डालो या उसको किसी स्थान पर फेंक आओ तो पिता का पक्ष तुम्हारी ही ओर रहेगा और उसके पश्चात तुम्हारे सब काम ठीक हो जायेंगे। (९) उनमें से एक कहने वाला बोल उठा कि यूसुफ को जान से न मारो। हाँ तुमको मारना है तो उसको अन्धे कुएं में डाल दो कि कोई मार्ग से चलता

*** यूसुफ के एक सगे भाई थे और ग्यारह सौतेले।**

काफिला उसको निकाल लेगा। (१०) तब सबने मिलकर याकूब से कहा कि ऐ पिता, इसका क्या कारण है कि आप यूसुफ के सम्बन्ध में हमारा विश्वास नहीं करते यद्यपि हम तो उसके हितैषी हैं। (११) उसको कल हमारे साथ भेज दीजिये कि वन के फल इत्यादि खा आयें और खेलें और हम उसकी रक्षा के उत्तरदाई हैं। (१२) याकूब ने कहा कि तुम्हारा इसको ले जाना तो मुझ पर कठिन गुजरता है और मैं इस बात से भी भयभीत हूं कि ऐसा न हो कहीं तुम इससे बेसुध हो जाओ और इसको भेड़िया खा जावे (१३) और हम इतने सब हैं तो इस सूरत में हम अकरमण्य ठहरे। (१४) अन्ततः जब यह मनुष्य याकूब की आज्ञा से यूसुफ को अपने साथ ले गये और सब ने इस बात का एका कर लिया कि इसको किसी अन्ध कूप में डाल दें तो जैसा ठहराया था वैसा ही किया और उसी समय हमने यूसुफ़ की ओर वही ईश्वरीय वाणी भेजी कि कि तुम एक दिन इनको इनके इस बुरे व्यवहार को जतलाओगे और वह तुमको नहीं जानेंगे*। (१५) अर्थ यह मनुष्य यूसुफ को कुएं में गिरा थोड़ी रात्री गये रोते पीटते पिता के समीप आये। (१६) कहने लगे ऐ पिता! जानो हम तो जाकर कबड्डी खेलने लगे और यूसुफ को हमने सामान के पास छोड़ दिया। इतने में भेड़िया उसे खा गया और यद्यपि हम सत्य भी कहते हों तो भी आपको हमारी बात का विश्वास न आवेगा। (१७) युसुफ के कुर्त्ते पर झूठमूठ का खून भी लगाये। याकूब ने उनका बयान सुनकर और खून सना कुर्ता देखकर कहा कि यूसुफ को भेड़िये ने तो नहीं खाया अपितु तुमने अपने मुँह उजागर करने के लिए अपने हृदय से एक बात बना ली है। खैर सन्तोष अच्छा है और जो तुम कहते हो ईश्वर ही सहायता करे।

*** यूसुफ जब कुएं में गिराये गये तो यह वही आई और जब उनके भाई मिस्र में अनाज लेने आये तो सच सिद्ध हुई।**

(१८) और एक काफिला आ गया, उन्होंने अपने भिश्ती को भेजा। ज्यों ही उसने अपना डोल लटकाया यूसुफ उसमें आ बैठे पुकार उठा अहा! यह तो लड़का है। काफिले वालों ने यूसुफ को व्यापार का धन कह कर छिपा रक्खा और इस दशा को छिपाने की जो तदबीरें यह कर रहे थे अल्लाह को खूब ज्ञात थीं। (१९) इतने में तो भाइयों को यूसुफ की सूचना लगी और उन्होंने उसको अपना सेवक बना कर बेचा। काफिले वालों ने कम मूल्य अर्थात कुछ दिरहम के बदले में उसको मोल ले लिया और वह यूसुफ की इच्छा न रखते थे। (२०) (रुकू २)

अन्ततः मिस्र के मनुष्यों में मिस्र के शासक से जिसने यूसुफ को मोल लिया उसमें अपनी स्त्री जुलैखा से कहा इसको अच्छी प्रकार रक्खो अचरज नहीं यह हमको लाभ पहुंचाये या इसको हम पुत्र ही बना लें और यों हमने यूसुफ को देश में स्थान दिया और अर्थ यह था कि हम उनकी बातों की कल बैठना सिखायें और अल्लाह अपने विचार पर दृढ़ है परन्तु प्रायः मनुष्य नहीं जानते। (२१) जब यूसुफ अपने यौवन को पहुंचा, हमने आज्ञा और ज्ञान दिया हम भलाई करने वालों को इसी प्रकार बदला दिया करते हैं। (२२) जुलेखा जिसके घर में यूसुफ थे उसने उनसे अनाचार का विचार किया और द्वार बन्दकर दिये और कहा शीघ्र आओ यूसुफ ने कहा अल्लाह बचावे व तुम्हारा पति मेरा स्वामी है, उसने मुझको अच्छी प्रकार रक्खा है मैं उसकी धरोहर में बुराई नहीं कर सकता क्योंकि अत्याचारी मनुष्य भलाई नहीं पाते। (२३) वह तो यूसुफ के साथ बुरी इच्छा कर ही चुकी थी और यूसुफ को अपने पालनकर्ता की ओर प्रमाण कि वह मेरा स्वामी है उस समय न सूझ गई होती तो वह भी उसके साथ बुरी इच्छा कर बैठे होते। इसी प्रकार हमने यूसुफ को दृढ़ रखा जिससे व्यभिचार और निर-लज्जता उनसे दूर रखें, कुछ सन्देह नहीं कि वह हमारे चुने सेवकों में

से था। (२४) और दोनों द्वार की ओर भागे और स्त्री ने पीछे से यूसुफ का कुर्ता फाड़* लिया और स्त्री का पति द्वार के पास मिल गया। वह पति से पेशबन्दी के ढंग पर बोली कि जो व्यक्ति तेरी पत्नि के साथ अनाचार की इच्छा करे बस उसका यही दण्ड है कि कैद कर दिया जाय या कड़ा दण्ड दिया जाय। (२५) यूसुफ ने कहा कि वह स्त्री स्वयं मुझसे मेरी चाहने वाली हुई थी और उसके कुटुम्ब वालों में से साक्षी ने यह बात बताई कि यूसुफ का कुर्ता देखा जाय यदि आगे से फटा है तो स्त्री सच्ची और यूसुफ झूठा। (२६) और यदि इसका कुर्ता पीछे से फटा है तो स्त्री झूठी और यूसुफ सच्चा। (२७) तो जब यूसुफ के कुर्ते को पीछे से फटा हुआ देखा तो उसने कहा कि यह तुम स्त्रियों के चरित्र हैं, कुछ संदेह नहीं कि तुम स्त्रियों के बड़े चरित्र हैं। (२८) यूसुफ इसको जाने दो और स्त्री तू अपने अपराध की क्षमा माँग क्योंकि प्रत्यक्ष तेरा ही अपराध था। (२९) (रुकू ३)

नगर में स्त्रियों ने चर्चा थी कि अजीज**की स्त्री अपने सेवक से अनुचित स्वार्थ प्राप्त करना चाहती है। सेवक का प्रेम उसके हृदय में स्थान पकड़ गया है। हमारे निकट तो वह स्पष्टतया अपराधी है। (३०) तो जब मिस्र के अजीज की स्त्री ने इनके ताने सुने, उनको बुलवा भेजा और उनके लिए एक महफिल की तैयारी की और फल काट-काट कर खाने के लिए एक-एक छुरी उनमें से प्रत्येक को दी और ठीक समय पर यूसुफ से कहा कि इनके सामने बाहर आओ और जरा अपना रूप तो दिखाओ फिर जब स्त्रियों ने यूसुफ को देखा तो उन पर

*** यानी यूसुफ जब भागे और जुलैखा ने उनको दौड़कर पकड़ना चाहा तो यूसुफ का कुर्ता उसके हाथ में आकर फट गया।**

**** "अजीज" पहले मिस्र के वजीर का खिताब था बाद को यह खिताब बादशाह का होगया था।**

[यूसुफ की ऐसी शान बैठी कि उन्होंने अपने हाथ काट लिए और कहने लगीं अल्लाह की कसम यह मनुष्य तो नहीं, हो न हो यह एक बड़ा देवदूत* है। (३१) अजीज मिस्र की स्त्री बोली बस यही तो है जिसके सम्बन्ध में तुमने मुझको लाँछना दी कि मैंने अपना अनुचित स्वार्थ इससे प्राप्त करना चाहा था। परन्तु उसने बचाया और उसको मैं इससे कह रही हूं यदि उसको नहीं करेगा तो अवश्य बन्दी किया जावेगा और अवश्य जलील होगा। (३२) यह सुनकर यूसुफ ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! जिसकी ओर यह स्त्री मुझको बुला रही है बन्दी रहना मुझको उससे कहीं अधिक पसंद है यदि इनके चरित्रों को तूने मुझसे दूर नहीं किया तो मैं इनसे मिल जाऊंगा और मूर्खों में हो जाऊंगा। (३३) तो यूसुफ के पालनकर्ता ने उनकी सुनली और उनसे स्त्रियों के चरित्रों को दूर कर दिया ईश्वर सुनता जानता है। (३४) फिर जब मनुष्यों ने यूसुफ की निष्कलंक निशानियाँ देख लीं, उसके पश्चात भी जुलेखा की हृदयशान्ती और यूसुफ को उसकी दृष्टी से दूर रखने के लिए उनको यही उचित प्रतीत हुआ कि एक समय तक उसको बन्दी रक्खें। (३५) (रुकू ४)

यूसुफ के साथ दो मनुष्य बन्दीगृह में प्रविष्ट हुए उन्होंने स्वप्न देखे कि यूसुफ को बुजुर्ग समझकर स्वप्नफल पूछने के अर्थ से एक ने कहा कि मैं देखता हूं कि सुरा निचोड़ रहा हूं और दूसरे ने कहा कि मैं देखता हूं कि अपने सर पर रोटियाँ उठाये हुए हूं और पक्षी उनमें से खा-खा जाते हैं। यूसुफ हमको हमारे इस स्वप्न का स्वप्नफल बताओ क्योंकि तुम हमको भले इन्सान दिखाई देते हो। (३६) यूसुफ ने उत्तर दिया कि जो खाना तुमको अब मिलनेवाला है वह तुम तक आने नहीं पावेगा कि उसके स्वप्न का स्वप्नफल बता दूंगा**यह उन बातों में से

* अर्थात ये मनुष्य नहीं वरन स्वर्गीय नवयुवक जान पड़ता है।

**यानी बहुत जल्दी।

जो मुझको मेरे पालनकर्ता ने सिखलाई हैं। मैं आरम्भ से उन मनुष्यों का धर्म छोड़े बैठा हूं जो ईश्वर पर विश्वास नहीं रखते और प्रलय को अस्वीकार करनेवाले हैं। (३७) मैं अपने पिता-पितामह इब्राहीम और इसहाक और याकूब के धर्म पर चल रहा हूँ। हमारा काम नहीं कि ईश्वर के साथ किसी वस्तु को देवता बनावें। यह विश्वास ईश्वर की एक कृपा है जो उसने सब पर और मनुष्यों पर की है परन्तु प्रायः मनुष्य कृतज्ञता प्रकट नहीं करते। (३८) बन्दीगृह के मित्रो! जुदे-जुदे पूजित अच्छे या एक ईश्वर शक्तिशाली। (३९) तुम ईश्वर के अतिरिक्त कई नामों ही की पूजा करते हो जो तुमने और तुम्हारे पिता पितामह ने गढ़ रखे हैं। ईश्वर ने तो इनका कोई प्रमाण नहीं दिया। साम्राज्य तो एक अल्लाह ही का हैं और उसने आज्ञा दी है कि केवल उसी की प्रार्थना करो, यही सीधा मार्ग है, परन्तु प्रायः मनुष्य नहीं जानते। (४०) ऐ बन्दीगृह के मित्रो! तुममें से एक तो अपने स्वामी को सूरापान करायेगा और दूसरा फाँसी पर लटकाया जायगा और पक्षी उसका सिर खाँयेंगे। जिस बात को तुम पूछते थे निर्णय हो चुका है। (४१) और जिस मानव के विषय में यूसुफ ने समझाया था कि इन दोनों में से एक का छुटकारा हो जायगा उससे कहा अपने स्वामी के पास मेरी चर्चा करना कि मैं अकारण बन्दी हूं। सो राक्षस ने उसको अपने स्वामी से चर्चा करना भुला दिया तो यूसुफ कई वर्ष बन्दीगृह में रहे। (४२) (रुकू ५)

इस मध्य में सम्राट ने वर्णन किया कि मैं सात मोटी गायें देखता हूं उनको सात दुबली खायें खा रही हैं और सात हरी बालें हैं और दूसरी सात सूखी। दरबार के मनुष्यो! यदि तुमको स्वप्न का स्वप्न-फल देना आता हो तो मुझ से इस स्वप्न विषय में अपनी राय प्रकट करो। (४३) उन्होंने कहा कि यह तो कुछ उड़ते विचार हैं और ऐसे विचारों का फल हमको नहीं आता। (४४) वह व्यक्ति जो यूसुफ के उन दो साथियों में से छुटकारा पा गया था और उसको एक अवधि

के पश्चात यूसुफ का किस्सा स्मरण हुआ, बोल उठा कि मुझको बन्दी-गृह तक जाने की आज्ञा हो तो मैं यूसुफ से पूछ कर इसका फल तुमको बताऊँ। (४५) उसको आज्ञा हुई और उसने यूसुफ से जाकर कहा कि ऐ यूसुफ! बड़ा सच्चा स्वप्नफल बतानेवाले हो। भला इस विषय में तो तुम अपनी राय हमसे प्रकट करो कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खाती हैं और सात हरी बालें और दूसरो सात बालें सूखी इसका उत्तर दो तो मैं मनुष्यों के पास लौट जाऊं जिससे इस फल का वर्णन उनको पता हो। (४६) यूसुफ ने कहा स्वप्न का फल यह है कि तुम सात वर्ष तक निरन्तर काश्तकारी करते रहोगे तो जो उपज काटो उसको उसी की बालों ही में रहने देना जिससे गल्ला गले सड़े नहीं परन्तु हाँ उतना लेलेना जो तुम्हारे खाने के काम में आये। (४७) फिर इसके पश्चात सात वर्ष बड़े कठिन अकाल के आयेंगे कि जो कुछ तुमने पहले से इन वर्षों के लिए एकत्रित कर रखा होगा खाजायेंगे परन्तु हाँ थोड़ा जो कुछ तुम बीज के लिए बचा रखोगे उतना ही मनुष्यों से बच जायगा। (४८) फिर उसके पश्चात एक ऐसा वर्ष आयेगा जिसमें मनुष्यों के लिए वर्षा होगी और खेती के अतिरिक्त उस वर्ष अंगूर भी खूब फलेंगे मनुष्य मदिरा के लिए उसके रस भी निचोड़ेंगे। (४९) (रुकू ६) साराँश यह कि *साक़ी ने यह सब स्वप्न-फल जाकर सम्राट से कहा।

सम्राट ने आज्ञा दी कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ तो जब चोबदार यूसुफ के पास यह आज्ञा लेकर पहुंचा तो उन्होंने कहा तुम अपनी सरकार के पास लौट जाओ और उनसे पूछो कि उन स्त्रियों की भी दशा प्रतीत है जिन्होंने मुझको देखकर अपने हाथ काट लिये थे

***साकी का अर्थ है पिलानेवाला। यह व्यक्ति चूँकि पानी आदि पिलाया करता था इसीलिए इस नाम से याद किया गया।**

अर्थात वह मेरे पीछे पड़ी थीं या मैं उनके पीछे पड़ा था इनके चरित्रों को मेरा पालनकर्ता जानता है। (५०) अतः सम्राट ने इन स्त्रियों को बुलवाकर उनसे पूछा कि जिस समय तुमने यूसुफ को अपना अर्थ व्यभिचार का प्राप्त करना चाहा था उस समय तुमको क्या मामला पेश आया। उन्होंने अर्ज किया "हाशा लिल्लाह" हमने तो यूसुफ में किसी प्रकार की बुराई नहीं पाई इस पर अजीज की पत्नि बोल उठी कि अब सब बात प्रकट हो गई। मैंने यूसुफ से अपना अनुचित स्वार्थ प्राप्त करना चाहा था और यूसुफ सच्चों में है। (५१) यह माजरा चोबदार ने यूसुफ से वर्णन किया। यूसुफ ने कहा मैंने कभी की दबी दबाई बात इसलिए उखाड़ी कि मिस्र के अजीज को पता होजाय कि मैंने उसकी पीठ पीछे उसकी धरोहर में खयानत नहीं की और यह भी पता रहे कि खयानत करने वालों की तदबीरों को ईश्वर चलने नहीं देता। (५२)

तेरहवाँ पारा (वमा उबर्रिउ)

मैं यूसुफ अपने विषय में नहीं कहता कि मैं पवित्र हूं क्योंकि इन्द्रियाँ तो बुराई के लिए उभारती ही रहती हैं परन्तु यह कि मेरा पालनकर्ता अपनी कृपा करे कुछ सन्देह नहीं कि मेरा पालनकर्ता क्षमा करने वाला दयालु है। (५३) समाज ने आज्ञा दी कि यूसुफ को हमारे सामने लाओ कि हम उसको अपनी सेविकाई के लिए रखेंगे जब यूसुफ से बात-चीत की तो कहा आज तूने विश्वासपात्र होकर हमारे पास स्थान पाया। (५४) यूसुफ ने अर्ज किया मुझको देशीय कोष पर नियुक्त कर दीजिये, मैं अत्यन्त निगहबान और चतुर हूं। (५५) यों हमने यूसुफ को देश में स्थान दिया कि उसमें जहाँ चाहे रहें। हम

जिस पर चाहते हैं अपनी कृपा करते हैं और अच्छे काम करने वालों के परिणाम निरर्थक नहीं होने देते। (५६) और जो मनुष्य विश्वास लाये और संयम करते रहे इनका अन्तिम परिणाम भला है। (५७) (रुकू ७)

यूसुफ के भाई आये और यूसुफ के पास गये, तो यूसुफ ने उनको पहचान लिया और उन्होंने यूसुफ को नहीं पहचाना। (५८) जब यूसुफ ने भाइयों का सामान उनके लिए तैयार कर दिया तो कहा अपने सौतेले भाई इब्नयामीन को लेते आना, क्या तुम नहीं देखते कि हम नाप तौल पूरी कर देते हैं और हम सबसे अच्छे मेजमान हैं (५९) फिर यदि तुम उसको हमारे पास न लाये तो तुमको हमारे यहाँ अन्न मिलेगा और तुम हमारे पास न आना। (६०) उन्होंने कहा कि हम जाते ही उसके पिता से उसके संवन्ध में विनती करेंगे और अवश्य हमको करना है। (६१) यूसुफ ने अपने सेवकों को आज्ञा दी कि इन की पूँजी उन्हीं की बोरियों में रख दो जिससे जब मनुष्य अपने बाल-बच्चों की ओर लौटकर जायें तो अपनी पूँजी को पहचानें अचरज नहीं यह फिरे भी आवें (६२) तो जब अपने पिता के पास लौटकर गये तो निवेदन किया कि ऐ पिता, हमें अन्न की मनाही कर दी गई है सो आप हमारे भाई को भी हमारे साथ भेज दीजिये कि हम अन्न लावें और हम उसकी रक्षा के जिम्मेदार हैं। (६३) कहा कि मैं इस पर तुम्हारा क्या विश्वास करूँ परन्तु वैसा ही यकीन जैसा मैंने पहले इसके भाई पर किया था सो ईश्वर सबसे अच्छी रक्षा करनेवाला है और वह सब कृपालुओं से अधिक कृपालु है। (६४) जब इन मनुष्यों ने अपना सामान खोला तो देखा कि इनकी पूँजी भी इनको लौटा दी गई है फिर पिता की ओर आये और कहने लगे कि ऐ पिता ! हमें और क्या चाहिए, यह समारी पूँजी फिर हमको लौटा दी गई है अब हमको आज्ञा दो कि बिनयामीन को साथ लेकर जावें अपने घर

के लिए सामग्री लावें और हम अपने भाई बिनयामीन की रक्षा करेंगे और एक बार ऊंट भर अन्न और लावेंगे, यह अन्न थोड़ा है। (६५) पिता ने कहा जब तक तुम ईश्वर की कसम खाकर मुझको पूरा वचन न दोगे कि तुम इसको अवश्य मेरे पास फिर आओगे। परन्तु यह कि तुम स्वयं ही घिर जाओ तो विवशता है। ऐरा वचन किये बिना तो में इसको तुम्हारे साथ कदापि नहीं भेजूँगा। तो जब उन्होंने पिता को अपना पक्का वचन दे दिया तो पिता ने कहा कि वचन जो हम कर रहे हैं अल्लाह उसका साक्षी हैं। (६६) और पिता ने उनको चलते समय यह भी चेतावनी दी कि लड़को देखो एक द्वार से प्रवेश न होना कि कहीं बुरी दृष्टि न लग जाय अपितु प्रथक-प्रथक द्वारों से प्रविष्ट होना और मैं ईश्वर की किसी वस्तु से नहीं बचा सकता। आज्ञा तो अल्लाह ही की है मैंने उसी पर विश्वास कर लिया है और भरोसा करने वालों को चाहिए कि उसी पर भरोसा करें। (६७) और जब वह उसी प्रकार जैसे उनके पिता ने उनसे कह दिया था मिस्र में प्रविष्ट हुए तो यह चतुराई ईश्वर के सामने इनकी कुछ भी काम नहीं आ सकती थी बह तो याकूब की एक हार्दिक इच्छा थी जिसको उन्होने पूरा किया और इसमें संदेह नहीं कि याकूब भी हमारे सिखाये से सावधान था परन्तु प्रायः मनुष्य नहीं जानते। (६८) (रुकू ८)

जब यूसुफ के पास गये तो यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास बैठा लिया कहा कि मैं तुम्हारा भाई यूसुफ हूं सो जो बुरा व्यवहार वह तुम्हारे साथ करते रहे हैं उसका कुछ दुःख मत करो। (६९) फिर जब यूसुफ ने भाइयों को उनका सामान साथ पहुंचा दिया तो अपने भाई की बोरी में पानी का कटोरा रखवा दिया। फिर एक करने वाले ने पुकारा कि काफिले वालों हो न हो तुम्हीं चोर हो। (७०) यह मनुष्य पुकारने वालों की ओर घिरकर पूछने लगे कि क्यों जी तुम्हारी क्या वस्तु खो गई है। (७१) उन्होंने कहा राजकीय माप

हमको नहीं मिलता और जो व्यक्ति उसे लाकर प्रस्तुत करे उसको एक बोझ ऊँट पारितोषिक मिलेगा और मैं उसका स्वामी हूं। (७२) यह सुनकर यह कहने लगे देश में उत्पात करने की इच्छा से नहीं आये और न हम कभी चोर थे। (७३) कटोरे के ढूँढ़ने वाले बोले कि यदि तुम झूठे निकले तो फिर चोर को क्या दण्ड। (७४) वह कहने लगे कि चोर को यह दण्ड कि जिसकी बोरी में कटोरा निकले वही* स्वयं उसके बदले में जावे अर्थात कटोरे के बदले समाज का सेवक। हम तो अत्याचारियों को इसी प्रकार का दण्ड दिया करते हैं। (७५) अन्ततः यूसुफ ने अपने भाई की बोरी से पहले दूसरे भाइयों की बोरियों की तलाशी लिवाना आरम्भ की, फिर अपने भाई के बोरे से कटोरा निकलवाया। यों हमने यूसुफ के लाभ के लिए बहाना किया सम्राट मिस्र के नियम के अनुसार वह अपने भाई को नहीं रोक सकते थे, परन्तु यह कि यदि ईश्वर को स्वीकार होता तो कोई दूसरा मार्ग निकलता है। हम जिसको चाहते हैं उसके पद ऊँचे कर देते हैं, कई सावधानी करनेवालों से एक सावधान बढ़कर है। (७६) जब इब्नयामीन के बोरे से कटोरा निकला तो भाई कहने लगे कि यदि इसने चोरी की हो तो अचरज की बात नहीं इससे पहले इसका भाई यूसुफ**भी चोरी कर चुका है तो यूसुफ ने इसका उत्तर देना चाहा परन्तु उनको अपने हृदय में रखा। इन पर उसको प्रकट न होने दिया

*इब्राहीम न्याय-शास्त्र के अनुसार चोर को एक वर्ष तक माल वाले मनुष्यों की गुलामी (दासता) करनी पड़ती थी। मिस्र में चोर को मार-पीट कर उससे दूना भरना भराते थे। यूसुफ ने अपने भाई को अपने पास रोक रखने के लिए यह उपाय किया था।

**यूसुफ के भाइयों ने यूसुफ पर झूठ लफंट लगाया है। और कुछ कहते हैं कि यूसुफ अपने घर से छिपाकर गरीबों को अन्न या भोजन दे आते थे, इसलिए उनके भाइयों ने उन पर चोरी का दोष लगाया है।

ग्रौर कहा कि तुम बड़े नीच हो ग्रौर जो कहते हो ईश्वर ही इसको खूब जानता है। (७७) कहने लगे ऐ ग्रजीज ! इसके पिता बहुत बूढ़े हैं, सो ग्राप कृपा करके इसके स्थान पर हममें से किसी को रख लीजिए हमको तो ग्राप बड़े कृपा करने वाले प्रतीत होते हैं। (७८) यूसुफ ने कहा ग्रल्लाह बचावे कि हम उस व्यक्ति को छोड़कर जिसके पास हमने ग्रपनी वस्तु पाई है किसी दूसरे व्यक्ति को पकड़ रखें। ऐसा करें तो हम ग्रपराधी ठहरें। (७९) (रुकू ९)

तो जब यूसुफ से निराश हो गये तो ग्रकेले मन्त्रणा करने बैठे। जो सबमें बड़ा था बोला कि क्या तुमको पता नहीं कि पिताजी ने ईश्वर की कसम लेकर तुमसे पक्का वचन लिया है ग्रौर पहले यूसुफ के साथ मैं तुमसे एक ग्रपराधी हो ही चुका हैं। तो जब तक मुझको पिता ग्राज्ञा न दें या जब तक ईश्वर मेरे लिए कोई सूरत न निकाले मैं तो उस स्थान से टलने वाला नहीं ईश्वर ही सबसे बढ़कर पूर्ति करने वाला है। (८०) तो तुम पिता की सेवा में लौट जाग्रो ग्रौर प्रार्थना करो कि पिता ! ग्रापके लड़के ने चोरी की हमने वही बात कही है जो हमको प्रतीत हुई है ग्रौर वह जो हमने इब्नयामीन की रक्षा का जिम्मा लिया था तो कुछ हमको ग्रदृष्ट की सूचना नहीं थी। (८१) ग्राप उस बस्ती से पूछ लीजिये जहाँ हम थे ग्रौर काफिले से जिसमें हम ग्राये हैं ग्रौर हम बिलकुल सत्य कहते हैं। (८२) जब से वह बातें कही गईं तो वह बोले कि इब्नयामीन ने तो चोरी नहीं की ग्रपितु तुमने ग्रपने हृदय से एक बात बना ली है तो खैर ग्रब संतोष ग्रच्छा है मुझको तो ग्राशा है कि ग्रल्लाह मेरे सब लड़कों को मेरे पास लावेगा क्योंकि वह ज्ञाता चमत्कार वाला है। (८३) याकूब पुत्रों से ग्रलग जा बैठे ग्रौर कहने लगे 'हाय यूसुफ' ग्रौर शोक के मारे उनकी दोनों ग्राँखें श्वेत हो गई थीं ग्रौर वह जी ही जी में घुटा करते थे। (८४) पिता की यह दशा देखकर पुत्र कहने लगे कि ईश्वर की कसम तुम तो सदैव यूसुफ ही की स्मृति में लगे रहोगे यहाँ तक कि

बीमार हो जाओगे या मर ही जाओगे। (८५) याकूब ने कहा मैंने तुमसे तो कुछ नहीं कहता जो चिन्ता और दुःख मुझको है उसकी पुकार ईश्वर ही से करता हूं और ईश्वर ही की ओर से मुझको वह बातें पता हैं जो तुमको पता नहीं। (८६) लड़को एक बार फिर मिस्र जाओ और यूसुफ और उसके भाई की टोह लगाओ और ईश्वर की कृपा से विश्वास हो क्योंकि ईश्वर की कृपा से वही निराश हुआ करते हैं जो काफिर हैं। (८७) तो जब यूसुफ तक पहुँचे तब गिड़-गिड़ाने लगे कि उजीज ! हम पर और हमारे बाल-बच्चों पर कठि-नाई पड़ रही है और हम कुछ थोड़ी-सी पूँजी लेकर आये हैं, हमको पूरा अन्न दिलवा दीजिए और हमको अपना दान दीजिए क्योंकि अल्लाह दान करने वालों को अच्छा बदला देता है। (८८) अब तो यूसुफ से ही न रहा गया और कहने लगे कि तुमको कुछ स्मरण भी है, जिस समय तुम मूर्खता पर थे तो तुमने यूसुफ और उसके भाई के साथ क्या किया था। (८९) इसके कहने से भाइयों को ध्यान हुआ और कहने लगे क्या सच तुम्हीं यूसुफ हो ? यूसुफ ने कहा मैं ही यूसुफ हूं और यह मेरा ही भाई है हम पर अल्लाह ने कृपा की। जो कोई संयमी हो और दृढ़ रहे तो अल्लाह भला करने वालों के परिणाम को निरर्थक नहीं होने देता ? (९०) बोले ईश्वर की कसम कुछ सन्देह नहीं कि तुमको अल्लाह ने हमसे अधिक पसन्द रक्खा और हम ही अपराधी थे। (९१) यूसुफ ने कहा अब तम पर कोई अपराध नहीं। ईश्वर तुम्हारे अपराध क्षमा करे और वह सब कृपालुओं से अधिक कृपालु है। (९२) तुम्हारे कहने से प्रतीत हुआ कि पिता की आँखें जाती रही हैं तो मेरा यह कुर्ता ले जाओ और इसको पिता के मुंह पर डाल दो कि वह देखने लगेंगे और अपने पूरे कुटुम्ब को मेरे पास ले आओ। (९३) (रुकू १०)

काफिला (व्यापारियों का झुंड) मिस्र से चला ही था कि उनके पिता ने कहा कि मेरा कहना निरर्थक न बनाओ तो एक बात कहूं कि

मुझको तो यूसुफ जैसी गन्ध आ रही है। (६४) तो जो पुत्र याकूब के पास ठहरे थे वह कहने लगे की ईश्वर की कसम तुम तो अपनी पुरानी गलती में हो। (६५) फिर जब यूसुफ को जीवन मिलने का समाचार देने याकूब के पास आया यूसुफ का कुर्ता याकूब के मुंह पर डाल दिया उनको तुरन्त ही दिखलाई देने लगा। अब याकुब ने पुत्रों से कहा कि क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि मैं अल्लाह की ओर से वह बातें जानता हूं जो तुम नहीं जानते। (६६) यह बोले पिता, ईश्वर से हमारे अपराध क्षमा करवा दे, हमीं अपराधी थे। (६७) याकूब ने कहा मैं अपने पालनकर्ता से तुम्हारे अपराधों को क्षमा कराऊंगा, वही क्षम्य तथा कृपालु है। (६८) फिर जब यह अन्तिम बार यूसुफ ने अपने माता पिता को प्रणाम करके उन्हें अपने पास स्थान दिया और सबकी ओर संबोधन करके कहा कि नगर मिस्र में प्रविष्ट हों और ईश्वर ने चाहा तो सब उनके आगे सुख के साथ रहोगे। (६६) मिस्र के नियम के अनुसार यूसुफ ने अपने माता-पिता को सिहासन पर ऊंचा बैठाया और सब नियमानुसार यूसुफ को ताजीम के लिए उनके आगे सर झुका कर साष्टांग दण्डवत की और यूसुफ ने अपसा स्वप्न स्मरण करके अपने पिता से निवेदन किया कि हे पिता ! वह जो मैंने पहले स्वप्न देखा था यह उस स्वप्न का फल* है। मेरे पालनकर्ता ने आज उस स्वप्न को सत्य कर स्खिलाया और उसके अतिरिक्त उसने मुझ पर कृपाएं कि मुझको बन्दीगृह से निकाला और तुमको गाँव से ले आया और यद्यपि मुझ में और मेरे भाइयों में राक्षस ने उत्पात डलवा दिया था बाहर से तुम सबको मुझ से ला मिलाया। निस्संदेह मेरे पालनकर्ता को जो स्वीकार होता है वह उसका ढंग खूब

---

* यूसुफ ने ११ सितारों और चाँद-सूरज को स्वप्न में सिजदा करते देखा था। वह यही ग्यारह भाई और उनके मा-बाप थे।

जानता है क्योंकि वह जानकार और चमत्कारवाला है। (१००) यूसुफ का मन संसार से तृप्त हो गया और ईश्वर से मिलने का शौक हुआ तो उन्होंने प्रार्थना की ऐ मेरे पालनकर्ता ! तूने मुझको को साम्राज्य दिया और मुझको स्वप्न की बातों का स्वप्नफल कहना भी सिखलाया। नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करनेवाले संसार और प्रलय दोनों में तू ही मेरा काम संभालनेवाला है मुझको भले मनुष्यों वाली मृत्यु दे। (१०१) ऐ पैगम्बर यह कुछ अदृष्ट की बातें हैं जिनको हम उसी के द्वारा तुम्हें भेजते हैं। और तू उनके पास न था जिस समय यूसुफ के भाइयों ने अपना पक्का विचार कर लिया था। कि यूसुफ को कुएँ में डाल दें। और वह उनके मारने के ढंग सोच रहे थे। (१०२) बहुत मनुष्य विश्वास लाने वाले नहीं यद्यपि तू कितना ही चाहे। (१०३) और तू उनसे उस पर कुछ भलाई नहीं माँगता यह कुरान और तो नहीं परन्तु सब संसार को शिक्षा है। (१०४) (रुकू ११)

नभ और पृथ्वी में कितनी निशानियाँ हैं जिन पर से होकर मनुष्य जाते हैं और उन ध्यान नहीं देते। (१०५) और प्रायः मनुष्यों की दशा यह है कि ईश्वर को मानते हैं और शिर्क भी करते हैं। (१०६) तो क्या इससे निकट हो गये हैं कि इन पर प्रलय आ जावे और इनको सूचना भी न हो। (१०७) ऐ पैगम्बर ! इन से कहो मेरा ढंग तो यह है कि सबको ईश्वर की ओर समझ-बूझ कर बुलाता हूं। मैं और जो मनुष्य मेरे* हैं और अल्लाह पवित्र है मैं मुशरिकों में नहीं हूँ। (१०८) और पैगम्बर हमने तुमसे पहले भी बस्तियों ही के रहनेवाले मनुष्य ही पैगम्बर बनाकर भेजे थे कि हमने उनपर ईश्वरीय वाणी भेजी थी तो क्या यह मनुष्य देश में चले-फिरे नहीं कि देख लेते कि जो मनुष्य इनसे पहले हो गये हैं उनका कैसा फल हुआ और सँयमियों के के लिए परलोक-वास अच्छा हैं। तो क्या तुम नहीं समझते। (१०९)

***अर्थात मैं और मेरे अनुयायी ही अल्लाह की ओर बुलाते हैं।**

यहाँ तक कि पैगम्बर निराश हो गये और विचार करने लगे कि उनसे झूठ कहा था तो हमारी सहायता उनके पास आ पहुंची तो जिसको हमने चाहा बचा लिया और अपराधियों से तो हमारा दण्ड टल ही नहीं सकता। (११०) निस्सदेह बुद्धिमानों के लिए इन मनुष्यों की दशा से शिक्षा है। यह कुरान कोई बनाई हुई बात तो नहीं है अपितु जो देवी पुस्तकें इससे पहले हैं उनका प्रमाण है और इसमें उन मनुष्यों के लिए जो विश्वास वाले हैं प्रत्येक वस्तु का व्योरे के अनुसार वर्णन है और शिक्षा और आज्ञा है। (१११) (रुकू १२)

सूरे राद

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४३ आयतें और ६ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम-रा। पैगम्बर यह पुस्तक कुरान की आयतें हैं और तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से जो कुछ तुम पर अवतरित हैं यह सत्य है किन्तु बहुत मनुष्य नहीं मानते। (१) अल्लाह वह है जिसने नभ को बिना किसी सहारे के ऊँचा बना खड़ा किया जैसा कि तुम देख रहे हो फिर सिंहासन पर जा बिराजा और चाँद सूर्य को काम में लगाया कि प्रत्येक समय निश्चित तक चला जा रहा है। वही सारे संसार का प्रबन्धकर्ता है अपनी प्रकृति की निशानियाँ विवरण के साथ वर्णन करता है जिससे तुम को अपने पालनकर्ता से मिलने का विश्वास हो। (२) वह है जिसने पृथ्वी को विस्तृत किया और उसमें पर्वत और नदी बना दीं और उसमें प्रत्येक प्रकार के फलों के दो-दो रूप उत्पन्न किये। रात्री को दिनसे ढाँपता है इन बातों में उन मनुष्यों के लिए जो ध्यान करते हैं निशानियाँ हैं। (३) और पृथ्वी में पास-पास कई खेत

हैं और अंगूर के उपवन और खेती और खजूर के पेड़, जड़ मिली और बिना मिली यद्यपि सबको एक ही पानी दिया जाता है और फलों में हम एक को एक पर गुण देते हैं उसमें निशानियाँ हैं उनको जो समझते हैं। (४) और यदि तू अचरज की बात चाहे तो उनका कहना अचरज है कि जब हम मिट्टी हो जायँगे तो क्या हम नये बनेंगे। यही मनुष्य हैं जिन्होंने अपने पालनकर्ता से मना किया और यही हैं जिनकी गर्दनों में प्रलय के दिन तौंक* होंगे। यही नरकवासी हैं और सदैव नरक ही में रहेंगे। (५) और ऐ पैगम्बर भलाई से पहले यह तुमसे बुराई की शीघ्रता मचा रहे हैं यद्यपि इनसे पहिले कहावतें चली आती है और ऐ पैगम्बर! इसमें कुछ रोक नहीं कि तुम्हारा पालनकर्ता मनुष्यों व उनके उच्छृंखलता के होने पर भी क्षमा करने वाला है और तुम्हारे पालनकर्ता की मार भी बड़ी कठोर है। (६) काफिर कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता की ओर से निशानी**क्यों नहीं अवतरित हुई ऐ पैगम्बर तुम तो केवल डराने वाले हो और प्रत्येक जाति को एक मार्ग बताने वाला है। (७) (रुकू १)

प्रत्येक मादा जो बच्चा पेट में लिए हुए है उसको अल्लाह ही जानता है और पेट का घटना-बढ़ना उसी को ज्ञात रहता है और उसके यहाँ प्रत्येक वस्तु का अनुमान है। (८) स्पष्ट और अदृश्य का जानने वाला सबसे ऊंचा है। (९) तुम में जो कोई बात चुपके से कहे और जो व्यक्ति पुकार कर कहे और जो रात्री के समय छिपा हो और दिन में गलियों में फिरता हो उसके निकट समान है। (१०) उस सेवक के आगे और पीछे पहरेवाले हैं जो उसको अल्लाह की आज्ञा से बचाते

***तौंक जो कैदियों के गले में डाला जाता था।**

****काफिर कहते थे कि जैसे हजरत ईसा मरे हुए लोगों को जिला देते थे वैसे ही मोहम्मद साहब क्यों नहीं करते या हजरत मूसा की तरह आश्चर्यजनक लाठी ही खुदा से मांग लें तो हम उनको रसूल समझें**

हैं। ईश्वर किसी जाति की दशा नहीं बदलता जब तक वह अपने हृदय के विचार न बदले और जब ईश्वर किसी जाति पर कोई विपत्ति डालनी चाहे, तो वह टल नहीं सकती और ईश्वर के अतिरिक्त उन मनुष्यों का कोई सहायक नहीं। (११) और वही है डराने और आशा दिलाने के लिए विद्युत का प्रकाश तुम को दिखाता और बोझिल बादलों को उभारता है। (१२) कड़क उसकी बड़ाई के साथ पवित्रता बतलाती है और देवदूत उसके भय के मारे और विद्युत भेजते हैं। फिर जिस पर चाहता है उस पर डालता है और यह ईश्वर की बात में झगड़ते हैं यद्यपि उसके दाँव कठोर हैं। (१३) उसी को सच्चा पुकारना है और जो मनुष्य इसके अतिरिक्त पुकारते हैं वह उनकी कुछ नहीं सुनते। परन्तु जैसे एक व्यक्ति अपने दोनों हाथ पानी की ओर फैलावे जिससे पानी उसके मुँह में आ जावे यद्यपि वह उस तक कभी नहीं पहुंचेगा। और जितनी काफिरों की पुकार है सब पथभ्रष्टता है। (१४) और जिस प्रकार नभ व पृथ्वी में है बस और विवश अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हुए हैं और इसी प्रकार प्रातः और संध्या उनके साये भी दण्डवत करते हैं। (१५) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से पूछो कि नभ और पृथ्वी पालनेवाला कौन है? कहो कि अल्लाह। कहो क्या तुमने ईश्वर के अतिरिक्त काम के संभालने वाले बना रक्खे हैं जो अपने स्वयं को खुद हानि-लाभ के स्वामी नहीं। कहो भला कहीं अन्धा और आँखों-वाला समान है। या कहीं अंधेरा और प्रकाश समान है? या कहीं इन्होंने अल्लाह के ऐसे देवता ठहरा रक्खे हैं कि उसी कैसी सृष्टि उन्होंने भी उत्पन्न कर रक्खी है और अब उनको संसार के सम्बन्ध में सन्देह हो गया है? ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि अल्लाह ही प्रत्येक वस्तु का उत्पन्न करने वाला है और वह अकेला प्रबल है। (१६) उसीने नभ से पानी बरसाया, फिर अपने अनुमान से नाले बह निकले। फिर फूला हुआ झाग जो ऊपर आ गया था उसको रेले ने ऊपर उठा लिया और जो जेवर दूसरे सामान के लिए धातों को अग्नि में तपाते हैं उसमें उसी प्रकार का झाग होता है। यों अल्लाह सच और झूठ का उदाहरण बतलाता है कि

पानी सत्य के स्थान पर है और झाग असत्य स्थान पर है सो झाग तो खराब जाता है और पानी मनुष्यों के काम आता है वह पृथ्वी में ठहरा रहता है अल्लाह इस प्रकार उदाहरण वर्णन करता है। (१७) जिन मनुष्यों ने अपने पालनकर्ता का कहा माना उनको भलाई है और जिन्होंने उसकी आज्ञा न मानी जो कुछ पृथ्वी पर है यदि सब उनके पास हो और उसके साथ उतना और तो वह मनुष्य अपने छुड़वाई के बदले में उसको दे डालें। परन्तु छुटकारा कहाँ ? यही मनुष्य हैं जिनसे बुरी प्रकार हिसाब लिया जायगा और उनका अन्तिम स्थान नरक है और वह बुरा स्थान है। (१८) (रुकू २)

भला जो व्यक्ति इस बात को समझता है कि जो तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम पर अवतरित हुआ है सत्य है उस मनुष्य के समान है जो अंधा हो बस वही मनुष्य समझते हैं जिनको समझ है(१९) वे जो अल्लाह के प्रण को पूरा करते हैं और बचन को नहीं तोड़ते। (२०) ईश्वर ने जिनको जोड़े रखने* की आज्ञा दी है वह उनको जोड़े रहते हैं और अपने पालनकर्ता से डरते और प्रलय के दिन बुरी प्रकार हिसाब लिए जाने का खटका रखते हैं। (२१) जिन्होंने अपने पालनकर्ता के लिए कष्ट पर सन्तोष किया और नमाजें पढ़ीं और हमारे दिए में से चुपके और स्पष्ट ईश्वर के मार्ग में व्यय किया और बुराई के मुकाबले भलाई की, यही मनुष्य हैं जिनको संसार का फल अच्छा है। (२२) सदैव रहने के उपवन हैं जिनमें वह जायेंगे और उनके बड़ों और उनकी पत्नियों और उनकी संतानें जो भला काम करने वाले होंगे सब उनके साथ जायेंगे और स्वर्ग के प्रत्येक द्वार से देवदूत उनके पास आते हैं। (२३) प्रणाम करेंगे और कहेंगे कि संसार में जो तुम

*खुदा ने नाता तोड़ने की आज्ञा नहीं दी। जो अपने नाते-रिश्ते वालों को छोड़ देते हैं या उनसे बुराई करते हैं वह पापी हैं।

सन्तोष करते रहे हो सो तुम को खूब अच्छा परिणाम मिला है। (२४) जो ईश्वर के साथ पक्का प्रण व वचन किये पीछे उसे तोड़ने और जिनके जोड़े रखने का ईश्वर ने आज्ञा दी है उनको तोड़ते और देश में उत्पात फैलाते हैं, यही मनुष्य हैं जिनके लिए फटकार है और उनका परिणाम बुरा है। (२५) अल्लाह जिसकी जीविका चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है कम कर देता है और वे काफिर सांसारिक जीवन से प्रसन्न हैं यद्यपि संसार का जीवन प्रलय के सामने बिलकुल अगण्य है। (२६) (रुकू ३)

जो मनुष्य अविश्वासी हैं कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता की ओर से कोई चमत्कार क्यों नहीं मिला! तुम इनसे कहो अल्लाह जिसको चाहता है भटकाया करता है और जो रुजू होता है उसको अपनी ओर का मार्ग दिखाता है। (२७) जो विश्वास लाये और उनके हृदय को ईश्वर की स्मृति से चैन होता है सुन रखो कि ईश्वर के स्मरण से हृदयों को चैन हुआ करता है। (२८) जो मनुष्य ईमान लाये और अच्छे काम किए उनके लिए प्रलय में सुख है और स्वर्ग में उनका अच्छा ठिकाना है(२९)ऐ पैगम्बर! जिस प्रकार हमने और पैग-म्बर भेजे थे इसीप्रकार हमने तुमको भी एक गुट में भेजा है जिनसे पहले और समाज गुजर चुकी हैं जिससे जो ईश्वरीय वाणी उसी के द्वारा तुम पर पहुंची है वह उनको पढ़कर सुना दो और यह मनुष्य अविश्वासी हैं तो कहो कि वही मेरा पालनकर्ता है, उसके अतिरिक्त किसी की प्रार्थना नहीं करनी चाहिए मैं उसी का भरोसा रखता हूं और उसकी ओर चित्त लगाता हूं। (३०) और यदि कोई कुरान ऐसा होता जिससे पर्वत चलने लगते या उसकी उन्नति से पृथ्वी के भाग हो सकते या उससे मृतक जी उठें और बोलने लगें तो वह यही होता, अपितु सब काम अल्लाह के हैं तो क्या धर्म वालों को इस पर सन्तोष नहीं होता कि यदि ईश्वर चाहे तो सबको मार्ग पर लावे। और जो मनुष्य नास्तिक हैं इनको इनके कर्म को दण्ड में कष्ट पहुंचाता रहेगा

या इनकी बस्ती के आस-पास उतरेगा यहाँ तक कि ईश्वर का वचन पूरा हो ईश्वर प्रण के विरुद्ध नहीं करता। (३१) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर तुमसे पहले भी पैगम्बरों की हंसी उड़ाई जा चुकी है सो हमने अविश्वासियों को ढील दी है फिर उनको धर पकड़ा तो हमारा दण्ड कैसा कठोर था। (३२) तो क्या जो प्रत्येक व्यक्ति के काम की सूचना रखता है और यह मनुष्य अल्लाह के लिए दूसरे देवता ठहराते हैं ऐ पैगम्बर ! उनसे कहो कि तुम इनके नाम तो लो क्या तुमई श्वर को ऐसे देवताओं का समाचार देते हो जिनको वह पृथ्वी में नहीं जानता या ऊपरी बातें बनाते हो। बात यह है कि नास्तिकों को अपनी चालाकियाँ भली प्रतीत होती हैं और मार्ग से रुके हुए हैं और जिसको ईश्वर पथभ्रष्ठ करे तो कोई उनको मार्ग दिखाने वाला नहीं। (३३) इनके लिए साँसारिक जीवन में दण्ड है और प्रलय का दण्ड बहुत कठोर है और ईश्वर से कोई इनको बचाने वाला नहीं। (३४) संयमियों के लिए जिस स्वर्ग का प्रण किया जा रहा है उसके नीचे नहरें बह रही हैं उसके फल सदाबहार हैं और छाँह भी। यह उनके लिए फल है जो संयम करते रहे और अविश्वासियों का परिणाम नरक है। (३५) जिनको हमने पुस्तक दी है वह जो तुम पर अवतरित हुई है उससे प्रसन्न होते हैं और दूसरे गुट उसकी कुछ बातों से अस्वीकृति रखते हैं, तुम इन से कहो कि मुझको तो यही आज्ञा मिली है कि मैं ईश्वर ही की प्रार्थना करूँ और किसी को उसका समकक्ष न बनाऊं तुमको उसी की ओर बुलाता हूं और उसी की ओर मेरा स्थान है। (३६) और ऐसा ही हमने इसको अरबी आज्ञा में अवतरित किया है और यदि इसके पश्चात भी जबकि तुमको ज्ञान हो चुका है तुमने इनकी इच्छाओं का समर्थन किया तो ईश्वर के सामने न कोई तुम्हारा सहायक होगा और न कोई बचाने वाला। (३७) (रुकू ५)

तुमसे पहले भी हमने पैगम्बर भेजे और हमने उनको पत्नियाँ

भी*दीं और संतान भी और किसी पैगम्बर की शक्ति न थी कि ईश्वर की आज्ञा के बिना कोई कर्तव्य दिखलावे। प्रत्येक लिखा हुआ है। (३८) ईश्वर जिसको चाहे मिटा देता है और जिसको चाहता है स्थिर रखता है और उसके पास वास्तविक पुस्तक है। (३६) जैसे-जैसे प्रण इनको हम करते हैं चाहे कुछ प्रण हम तुम्हारे जीवन में तुमको पूरे कर दिखावें और चाहे तुमको संसार में उठा लेवें। प्रत्येक दशा में पहुंचा देना तुम्हारा काम है और हिसाब लेना हमारा। (४०) क्या यह मनुष्य इस बात को नहीं देखते कि हम देश को सब ओर से दबाते** चले आते हैं और अल्लाह आज्ञा देता है कोई उनकी आज्ञा को टाल नहीं सकता और वह बड़ा शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (४१) जो मनुष्य इन मक्का के काफिरों के पहले जो गुजरे हैं उन्होंने भी बहाने किए सो सब बहाने तो अल्लाह ही के हाथ में हैं जो व्यक्ति जो कुछ कर रहा है ईश्वर को ज्ञान है और अस्वीकार करने वालों को शीघ्र ज्ञात हो जायगा कि पिछला घर किसका है। (४२) और काफिर कहते हैं कि तुम पैगम्बर नहीं हो तो इनसे कहो कि मेरे और तुम्हारे मध्य अल्लाह और जिनके पास पुस्तक है वे साक्षी है। (४३) (रुकू ६)

---

*कुछ यहूदी कहते थे कि नबी तो वह है जो बालबच्चों के झगड़े से दूर रहे और मुहम्मद साहब ऐसे नहीं हैं, इसलिए कैसे नबी हैं। इस पर यह आयतें उतरी।

**अर्थात इस्लाम फैलता जाता है इन्कार का क्षेत्र कम होता जाता है।

सूरे इब्राहीम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें और ७ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा यह पुस्तक हमने तुम पर इस आशय से अवतरित की है कि मनुष्यों को उनके पालनकर्ता की आज्ञा से अंघेरों से निकालकर प्रकाश की ओर उसके मार्ग पर जो प्रबल और प्रशंसा के योग्य है लायें। (१) अल्लाह का जो कुछ है नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है और अविश्वासियों को एक कठोर दण्ड में खराबी है। (२) जो मनुष्य प्रलय के सामने संसार का जीवन पसंद करते और अल्लाह के मार्ग से मनुष्यों को रोकते और उसमें ऐब ढूँढ़ते हैं यही मनुष्य बड़ी भूल पर हैं। (३) जब कभी हमने कोई पैगम्बर भेजा तो उसी की भाषा में * बातचीत करता हुआ भेजा जिससे वह उनको समझा सके। इस पर भी ईश्वर जिसको चाहता है फिर भटकाता है और जिसको चाहता है मार्ग देता है और वह प्रवल चमत्कार वाला है। (४) हमने ही मूसा को अपनी निशानियाँ देकर भेजा था कि अपनी जाति को कुफ्र के अंधेरे से निकालनर धर्म के प्रकाश में लाओ और उनको ईश्वर के धर्म का स्मरण कराओ क्योंकि उनमें जो सत्य मानने वाले अचल हैं उनके लिए निशानियाँ हैं। (५) और उसी समय की चर्चा यह भी है कि मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयों अल्लाह ने जो तुम पर कृपाएं की हैं उनको स्मरण करो। जबकि उसने तुमको फिरऔन के मनुष्यों से बचाया, वह तुमको बुरा दण्ड देते और तुम्हारे पुत्रों का

***काफिर चाहते थे कि कुरान अरबी के बदले किसी और भाषा में होता तो हम कुछ उस पर ध्यान भी देते। अरबी तो मुहम्मद की बोली है। सम्भवतः अपने मन से बना लिया हो।**

ढूँढ़-ढूँढ़कर वध करते और तुम्हारी स्त्रियों को जीवित रखते थे और इसमें तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से बड़ी सहायता थी। (६) (रुकू १)

जब तुम्हारे पालनकर्ता ने जता दिया था कि यदि अधिकार मानोगे तो हम तुमको और अधिक देन देंगे और यदि तुमने जघन्यता की तो हमारी मार कठोर है। (७) और मूसा ने कहा कि यदि तुम और जितने मनुष्य पृथ्वी के धरातल पर हैं वह सब ईश्वर से मना करने वाले हो जाओ तो ईश्वर निश्चिन्त और प्रशंसा के योग्य है। (८) क्या तुमको उनके समाचार नहीं पहुँचे जो तुमसे पहले नूह की आद की और समूद की जाति में हो गये हैं। जो उनके पश्चात हुए जिनकी सूचना ईश्वर ही को है उनके पगम्बर चमत्कार ले-लेकर उनके पास आये तो उन्होंने अपने हाथों को उन्हीं के मुखों पर उलट दिया अर्थात उनको नहीं माना और बोले जो आज्ञा लेकर तुम भेजे गये हो हम उनको नहीं मानते और जिस मार्ग की ओर तुम हमको बुलाते हो हम उसी के विषय में धोखे में हैं। (९) उनके पैगम्बरों ने कहा क्या ईश्वर पर संदेह है जो नभ और पृथ्वी का बनाने वाला है। वह तुमको इसीलिए बुलाता है कि तुम्हारे अपराध क्षमा करें और एक प्रण तक जो हो चुका है तुमको संसार में रहने दे। वह कहने लगे कि तुम भी हमारे समान मनुष्य हो। तुम चाहते हो कि जिन वस्तुओं को हमारे बड़े पूजते आये हैं उनसे हमको रोक दो तो हमको कोई स्पष्ट चमत्कार ला दिखाओ। (१०) उनके पैगम्बरों ने उनसे कहा कि हम तुम्हारे ही समान मनुष्य हैं परन्तु ईश्वर अपने भक्तों में से जिन पर चाहता है कृपा करता है और हमारी सामर्थ्य नहीं कि हम कोई चमत्कार लाकर तुमको दिखावें। अल्लाह ही पर धर्म वालों को भरोसा रखना चाहिए। (११) हन अल्लाह पर भरोसा क्यों न रखें हमारे ढंग उसी ने हमको बताये और जैसा-जैसा दुख तुम हमको दे रहे हो हम उन पर संतोष करेंगे और भरोसा करने वालों को चाहिए कि ईश्वर ही पर भरोसा करें। (१२) (रुकू २)

काफिरों ने अपने पैगम्बरों से कहा कि हम तुमको अपने देश से निकाल देंगे या तुम फिर हमारे धर्म में आ जाओ। इस पर पैगम्बरों के पालनकर्ता ने उनकी ओर वही ईश्वरीय संदेश भेजा कि हम इन अहंकारी मनुष्यो को अवश्य नष्ट करेंगे। (१३) और इनके पीछे अवश्य तुमको उसी पृथ्वी पर बसायेंगे, यह उस व्यक्ति का है जो हमारे सामने खड़े होने से डरे और हमारे दण्ड से डरे। (१४) पैगम्बरों ने चाहा कि उनका और काफिरों का झगड़ा निर्णय हो जावे और प्रत्येक अक्खड़ हठी अपूर्ण इच्छा के रह जाए। (१५) इनके पश्चात उसको नरक है और उसको पीप का पानी पिलाया जायगा। (१६) उसको पियेगा और उसको लीलना कठिन होगा और मृत्यु उसको हर दिशा घूँट-घूँट आती हुई दृष्टिगोचर होगी और वह नहीं मरेगा और उसके पीछे दुखदाई दण्ड है। (१७) जो मनुष्य अपने पालनकर्ता को नहीं मानते उनका उदाहरण ऐसा है कि उनके कर्म मानो राख का ढेर हैं कि आँधी के दिन उसको हवा ले उड़े जो यह मनुष्य कर गये हैं उनमें से कुछ भी इनके हाथ नहीं आवेगा यही अन्तिम कोटि की असफलता है। (१८) क्या तूने इस बात पर दृष्टि नहीं की कि ईश्वर ने नभ और पृथ्वी को जैसे चाहिए बनाया। यदि चाहे तो तुम को मिटा दे और नई सृष्टि को लाकर बसाये। (१९) और यह ईश्वर के लिए कुछ कठिन नहीं (२०) और सब मनुष्य ईश्वर के आगे निकल खड़े होंगे तो निर्बल अहंकरियों से कहेंगे कि हम तो तुम्हारे पीछे थे सो क्या तुम ईश्वर के दण्ड में से कुछ हम पर से हटा सकते हो। वह बोले यदि ईश्वर हमको मार्ग पर लाता तो हम भी तुमको मार्ग पर लाते अब तो असंतोष करें तो हमारे लिए समान है, हमको किसी प्रकार छुटकारा नहीं। (२१) (रुकू ३)

जब निर्णय हो चुकेगा तो राक्षस कहेगा कि ईश्वर ने तुम से सच्चा प्रण किया था और जो प्रण मैने तुमसे किया था झूठ था और तुम पर मेरी कुछ शक्ति न थी। बात तो इतनी ही थी कि मैंने तुमको अपनी

ओर बुलाया और तुमने मेरा कहा मान लिया तो अब मुझे दोष न दो अपितु अपने को दोष दो। न तो मैं तुम्हारी पुकार को पहुंच सकता हूं और न तुम मेरी पुकार पर पहुंच सकते हो। मैं तो मानता ही नहीं कि तुम मुझको पहले देवता बनाते थे। इसमें संदेह नहीं कि जो अत्याचारी हैं उनको कठोर दण्ड है। (२२) और जो विश्वास लाये और उन्होंने भले काम किये स्वर्ग के उपवन में प्रविष्ट किये जायेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अपने पालनकर्ता की आज्ञा से उनमें सदैव रहेंगे वहाँ उनको प्रणाम किया जायगा। (२३) क्या तुमने नहीं देखा कि ईश्वर ने अच्छी बात का कैसा उदाहरण दिया है कि मानो एक पवित्र वृक्ष है उसकी जड़ दृढ़ है और उसकी शाखाऐं नभ में हैं। (२४) अपने पालनकर्ता की आज्ञा से हर समय अपने फल देता है और अल्लाह मनुष्यों के लिए उदाहरण बतलाता है जिससे वह सोचें। (२५) निम्न बात का उदाहरण बुरे वृक्ष जैसा है जो पृथ्वी के ऊपर से उखड़ गया उसको कुछ ठहराव नहीं। (२६) जो मनुष्य लाये हैं उनको दृढ़ बात से अल्लाह संसार में दृढ़ और प्रलय में दृढ़ करता है और अल्लाह अन्यायियों को बिचला देता है और अल्लाह जो चाहता है करता है। (२७) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर क्या तुमने उन मनुष्यों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह के अच्छे पदार्थों के बदले में आभार न मानना और अपनी जाति को मृत्यु गृह में ले जा उतारा*। (२८) कि उसमें प्रविष्ट होंगे और वह बुरा स्थान है। (२९) इन मनुष्यों ने अल्लाह के सामने दूसरे पूजित खड़े किये हैं। जिससे उसके मार्ग से बिचलाये। ऐ पैगम्बर मनुष्यों से कहो कि खैर कुछ दिन संसार में और बस लो, फिर तो तुमको नरक की ओर जाना ही है। (३०) ऐ पैगम्बर हमारे सेवक जो विश्वास

*** मक्के के नेता जिन्होंने अपनी जाति को अनेक बुराइयों में डाला**

लाये हैं उनसे कहो नमाज पढ़ा करें और इससे पहले प्रलय का दिन आवे जबकि न सौदा है न मैत्री। हमारी दी हुई जीविका में से चुपके और स्पष्ट व्यय करते रहें। (३१) अल्लाह वही है जिसने नभ और पृथ्वी उत्पन्न किया और नभ ने पानी बरसाया। फिर पानी के द्वारा फल निकाले कि वह तुम्हारी जीविका है। नौकाओं को तुम्हारे अधिकार में किया जिससे उसकी आज्ञा से नदी में चलें और नदियों को भी तुम्हारे अधिकार में कर दिया (३२) और सूर्य व चन्द्रमा को जो चक्कर खाते हैं एक नियम पर तुम्हारे काम में लगाया और रात-दिन को तुम्हारे अधिकार में कर दिया। (३३) तुमको प्रत्येक वस्तु में से जो कुछ माँगा दिया और यदि ईश्वर की कृपाओं को गिनना चाहो तो पूरा-पूरा गिन सकोगे मनुष्य बड़ा अन्यायी और बड़ा ही कृपा न मानने वाला है। (३४) (रुकू ५)

जब इब्राहीम ने प्रार्थना की कि मेरे पालनकर्ता! इस नगर मक्का को शान्ति का स्थान बना और मुझको और मेरी संतान को मूर्ति-पूजा से बचा। (३५) पालनकर्ता इन मूर्तियों ने बहुत से मनुष्यों को भटकाया है सो जिसने मेरा मार्ग गहा वह मेरा है जिसने मेरा कहना न माना सो तू क्षमा करने वाला है। (३६) ऐ हमारे पालनकर्ता! मैंने तेरे प्रतिष्ठित घरके पास इस उजाड़ भूमिका में जहाँ खेती नहीं अपनी कुछ संतान बसाई है जिससे यह नमाजें पढ़ें, तो ऐसा कर कि मनुष्यों के हृदय इनकी ओर को लगें और फलों से इनको जीविका दे जिससे यह धन्यवाद दें* (३७) हमारे पालनकर्ता जो हम छिपाते और जो स्पष्ट करते हैं तुझको ज्ञात है और पृथ्वी और नभ में अल्लाह से कोई

*** इन आयतों में हजरत इस्माईल और उनकी माँ बीबी हाजिरा की कहानी की ओर संकेत किया गया है। इन लोगों को हजरत इब्राहीम ने अपनी दूसरी बीबी सारा के कहने से एक जंगल में डाल दिया था।**

वस्तु छिपी नहीं। (३८) ईश्वर को धन्य है जिसने मुझको बुढ़ापे में इस्माईल और इसहाक दो पुत्र दिये। मेरा पालनकर्ता पुकार को सुनता है। (३९) ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको मेरी संतान को शक्ति दे कि मै नमाज पढ़ता रहूं और ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरी प्रार्थना स्वीकार कर। (४०) ऐ हमारे पालनकर्ता! जिस दिन काम का हिसाब होने लगे मुझको और मेरी माँ और पिता को और धर्मवालों को क्षमा करना (४१) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर! ऐसा न समझना कि ईश्वर इन अत्याचारियों के काम से बेसुध है और ईश्वर इनको उस दिन तक का अवकाश देता है जबकि आँखें फटी की फटी रह जायेंगी। (४२) अपने सिरको उठाये दौड़ते फिरेंगे दृष्टि उनकी ओर न करेंगे ओर उनके हृदय जड़ जायँगे। (४३) ऐ पैगम्बर मनुष्यों को उस दिन से डरा जबकि उन पर दण्ड उतरेगा तो अन्यायी कहेंगे कि हमारे पालनकर्ता हमको थोड़ी सी अवधि का अवकाश और दे। तो हम तेरे बुलाने पर उठ खड़े होंगे और पैग-म्बरों के पीछे हो जायँगे। क्या तुम पहले सौगन्ध नहीं खाया करते थे कि तुमको किसी प्रकार की घटती न होगी। (४४) जिन मनुष्यों ने स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किये। उन्हीं के घरों में तुम भी रहे और तुम जान चुके थे कि हमने उनके साथ कैसा व्यवहार किया और हमने तुम्हारे लिए उदाहरण भी बतला दिये थे। (४५) यह अपना बहाना कर चुके और उनकी चालें ईश्वर की दृष्टी में थीं और उनकी चालें ऐसी न थीं कि पर्वतों को स्थान से हटा दें। (४६) सो ऐसा विचार न करना कि ईश्वर जो अपने पैगम्बरों से प्रण कर चुका है उसके विरुद्ध करेगा अल्लाह प्रबल बदला लेनेवाला है। (४७) जबकि पृथ्वी बदलकर दूसरे प्रकार की पृथ्वी कर दी जावेगी और नभ और सब मनुष्य एक ईश्वर प्रबल के सामने निकल खड़े होंगे। (४८) और ऐ पैगम्बर! तुम उसी दिन पथभ्रष्टों को जंजीरों में जकड़े हुए देखोगे। (४९) गन्धक के उन के

कुत्ते होंगे और उनके मुँहों को आग ढाँके लेती होगी। (५०) इस अर्थ से कि ईश्वर प्रत्येक व्यक्ति को उसके किये का बदला दे। अल्लाह शीघ्र हिसाब लेने वाला है। (५१) यह कुरान मनुष्यों के लिए एक संदेश है और अर्थ यह है कि इनके द्वारा मनुष्यों को डराया जाय और ज्ञात हो जाय कि ईश्वर एक है और जो मनुष्य बुद्धि रखते हैं शिक्षा को पकड़ें। (५२) (रुकू ७)

चौदहवां पारा (रुबमा)

सूरे हिज्र

मक्के में अवतरित हुई इसमें ९९ आयतें और ६ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। अलिफ-लाम-रा। यह पुस्तक "स्पष्ट कुरान" की आयतें हैं (१) काफिर बहुत सी इच्छायें करेंगे कि ईमानदार होते (२) तो ऐ पैगम्बर इनको रहने दो कि खायें और लाभ उठावें और आशाओं पर भूले रहें फिर पीछे प्रतीत हो जायगा। (३) हमने कोई बस्ती नहीं उजाड़ी परन्तु उसकी आयु पहले से निश्चित थी। (४) कोई समाज न अपनी आयु से आगे बढ़ सकता है और न पीछे रह सकता है। (५) मक्का के काफिर कहते हैं कि ऐ व्यक्ति! तुझ पर कुरान अवतरित हुआ है। तू पागल है। (६) यदि तू सच्चा है तो देवदूतों को हमारे सामने क्यों नहीं बुलाता। (७) सो हम फरिश्तों को नहीं अवतरित करते परन्तु निर्णय के लिये और फिर उनको अवकाश भी न मिलेगा। (८) हम ही ने

शिक्षा कुरान अवतरित की है और हम ही उसके संरक्षक भी हैं। (९) और हमने तुमसे पहले भी अगले मनुष्यों के समाज में पैगम्बर भेजे थे। (१०) जब-जब उनके पास पैगम्बर आये उनकी हंसी उड़ाई। (११) इसी प्रकार हमने अपराधियों के हृदयों में ठट्ठेबाजी डाली है। (१२) यह कुरान पर विश्वास नहीं लावेंगे और यह रिवाज पहले से चला आया है। (१३) यदि हम इन के लिए नभ का एक द्वार खोल दें और यह मनुष्य सब दिन चढ़ते रहें। (१४) तो भी यही कहेंगे हो न हमारी दृष्टी बाँध दी गई है और हम पर किसी ने जादू कर दिया है (१५) (रुकू १)

हमने नभ में बुर्ज बनाये और देखनेवालों के लिए उसको तारों से सजाया। (१६) और हर निकाले हुए दुष्ट से हमने उसकी रक्षा की। (१७) परन्तु चोरी छिपा कोई बात सुन भागे दहकता हुआ अंगारा एक तारा उसको खदेरने को उसके पीछे होता है। (१८) और हमने पृथ्वी को विस्तृत किया और हमने उसमें पर्वत गाड़ दिये और हमने इससे प्रत्येक वस्तु उचित उत्पन्न की। (१९) हमने पृथ्वी में तुम्हारे खाने का सामान एकत्रित किया और इनको जिनको तुम जीविका नहीं देते, (२०) और जितनी वस्तुऐं हैं हमारे यहाँ सबके कोष हैं। परन्तु हम एक परिणाम ज्ञात करके उनको भेजते रहते हैं। (२१) हमने हवाओं को जो बादलों को पानी से बोझदार करती हैं चलाया। फिर हमने नभ से पानी बरसाया फिर हमने वह तुम्हें पिलाया और तुम ने उसको एकत्रित करके नहीं रक्खा। (२२) और हम ही जीवन देते हैं और हमही मारते हैं और हम ही रक्षक होंगे। (२३) और हम तुम्हारे अगलों और पिछलों को जानते हैं। (२४) ऐ पैगम्बर ! तुम्हारा पालनकर्ता इनको एकत्रित करेगा। वह चमत्कारवाला तथा ज्ञाता हैं। (२५) (रुकू २)

हमने सड़े हुए गारे से जो सूखकर खनखनाने लगता है मनुष्य को उत्पन्न किया। (२६) और हम भूतों को पहले लू की अग्नि से उत्पन्न

कर चुके थे। (२७) और ऐ पैगम्बर उस समय को स्मरण करो जबकि तुम्हारे पालनकर्ता ने देवदूतों से कहा कि मैं सड़े हुए गारे से जो खन-खनाने लगता है एक मनुष्य को उत्पन्न करनेवाला हूं। (२८) तो जब मैं उनको पूरा बना चुकूँ और उसमें आत्मा फूँक दूँ तो तुम उसके आगे दंडवत करना। (२९) अतः समस्त देवदूत सब के सब दण्डवत करने लगे। (३०) परन्तु इबलीस जिसने दण्डवत करनेवालों में सम्मि-लित होने से मना किया। (३१) इस पर ईश्वर ने कहा ऐ इबलीस! तुमको क्या हुआ कि तू दण्डवत करने वालों में सम्मिलित नहीं हुआ। (३२) वह बोला कि मैं ऐसे व्यक्ति को दण्डवत न करूँगा जिस को तूने सड़े हुए गारे से उत्पन्न किया जो खनखनाने लगता है। (३३) ईश्वर ने कहा बस स्वर्ग से निकल तू फटकारा हुआ है। (३४) प्रलय के दिन तक तुझ पर फटकार होगी। (३५) कहाकि ऐ मेरे पालनकर्ता तू मुझ को उस दिन तक का अवकाश दे जबकि मृतक उठा खड़े किये जावेंगे। (३६) ईश्वर ने कहा कि तुझको अवकाश दिया गया। (३७) प्रलय के समय के दिन तक। (३८) दुष्ट ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता! जैसा तूने मेरा मार्ग मारा मैं भी संसार में इन सबको बसन्त दिखाऊँगा और इन सब को मार्ग से बहकाऊँगा। (३९) अतिरिक्त उनके जो मेरे चुने भक्त हैं। (४०) ईश्वर ने कहा कि यही हम तक सीधा मार्ग है। (४१) जो हमारे सेवक हैं उन पर तेरा किसी प्रकार का वश न होगा परन्तु उन पर* जो पथभ्रष्टों में से तेरे पीछे हो जायँ। (४२) ऐसे समस्त मनुष्यों के लिए नरक का वचन हैं। (४३) उसके सात द्वार हैं, हर द्वार के लिए नरकीय मनुष्यों की टोलियां भिन्न-भिन्न होंगी। (४४) (रुकू ३)

---

* आदमी दो तरह के हैं। (१) खुदा की राह चलने वाले, (२) राक्षस की राह चलनेवाले। यह दूसरे ही नरकवासी हैं।

संयमी स्वर्ग के उपवनों और चश्मों में हों। (४५) जीवन के साथ धैर्य से इन उपवनों में आओ। (४६) इनके हृदयों में जो द्वेष है उसको निकाल दो एक दूसरे के आमने-सामने सिंहासनों पर भाई हो कर बैठो। (४७) इनको वहाँ स्वर्ग में किसी प्रकार का दुख न होगा और न यह वहाँ से निकाले जावेंगे। (४८) हमारे सेवकों को चेता दो कि मैं क्षमा करने वाला दयालु हूं। (४९) हमारी मार दुख की मार है। (५०) इनको इब्राहीम के अतिथि की दशा सुनाओ। (५१) जब इब्राहीम के पास आये तो प्रणाम किया। इब्राहीम ने कहा हम तुमसे डरते हैं। (५२) वह बोले आप न कीजिये, हम आपको एक योग्य पुत्र की शुभ सम्वाद सुनाते हैं। (५३) इब्राहीम ने कहा क्या तुम मुझे शुभ सम्वाद देते हो जबकि मुझे बुढ़ापा आ चुका है तो अब काहे का शुभ सम्वाद सुनाते हो। (५४) वह कहने लगे हम आपको सच्चा समाचार सुनाते हैं सो आप निराश न हों। (५५) इब्राहीम ने कहा कि पथ भूलों के अतिरिक्त ऐसा कौन है जो अपने पालनकर्ता की कृपा से निराश हो। (५६) इब्राहीम ने कहा कि ईश्वर के भेजे हुए देवदूतों फिर अब तुमको क्या काम है। (५७) उन्होंने उत्तर दिया कि हम एक अपराधी कबीले की ओर भेजे गये हैं। (५८) अच्छा! लूत का कुटुम्ब हम बचा लेंगे। (५९) परन्तु उनकी स्त्री* अवश्य रह जायगी। (६०) (रुकू ४)

फिर जब ईश्वर के भेजे देवदूत लूत की जाति के पास आये (६१) तो लूत ने कहा कि तुम अनजाने-से हो। (६२) वह कहने लगे नहीं अपितु जिसमें तुम्हारी जाति को सन्देह था उसी को लेकर आये हैं। (६३) और हम सच आज्ञा लेकर तुम्हारे पास आये हैं और हम सच

*** लूत की स्त्री ईमानदार न थी। वह और लोगों के साथ नष्ट हो गई।**

कहते हैं। (६४) तो कुछ रात रहे तुम अपने मनुष्यों को लेकर निकल जाओ और तुम इनके पीछे रहना और तुममें से कोई मुड़ कर न देखे और जहाँ कोई आज्ञा दी गयी है उसी ओर को चले जाना। (६५) हमने लूत के हृदय में यह बात जमा दी थी प्रातःकाल होते-होते इनकी जड़ काट दी जावेगी। (६६) और नगर के मनुष्य खुशियाँ मनाते हुए आये। (६७) लूत ने उनसे कहा कि यह मेरे अतिथि हैं सो मेरा अपकीर्ति मत करो। (६८) और ईश्वर से डरो और मेरा अपमान मत करो। (६९) वह बोले क्या हमने तुमको संसार के मनुष्यों का पक्ष लेने से नहीं रोका था। (७०) लूत ने कहा यदि तुमको करना है तो यह मेरी बेटियाँ हैं इनसे विवाह कर लो। (७१) ऐ पैगम्बर तुम्हारी जान की कसम वह अपनी मस्ती में बेसुध हैं। (७२) अर्थ यह के सूर्य के निकलते-निकलते उनको एक बड़े जोर की वाणी ने घेर लिया। (७३) खैर हमने उस बस्ती को उलट-पलट दिया और उन पर कंकर पत्थर बरसाये। (७४) इसमें उन मनुष्यों के लिए जो समझ जाते हैं निशानियाँ हैं। (७५) और वह* बस्ती अभी तक सीधे मार्ग पर है। (७६) निस्सन्देह इसमें विश्वास लाने वालों के लिए निशानी हैं। (७७) और वन** के रहने वाले निश्चय अहंकारी थे। (७८) तो उनसे हमने बदला लिया और दोनों नगर अब पथ पर हैं। (७९) (रुकू ५)

हिज्र के रहने वालों ने पैगम्बरों को झुठलाया। (८०) हमने उनको निशानियाँ दीं फिर भी वह उनसे मुख मोड़े रहे। (८१) शान्ति से पर्वतों को काट-काट घर बनाते थे। (८२) तो उनको प्रातः होते होते बड़े जोर की वाणी ने घेर लिया। (८३) और जो उपाय करते थे

*** मक्के से शाम जाते हुए दिखाई देती है।**

**** एक वन था। उसके पास एक नगर था। हजरत शुऐब उस बस्ती के नबी थे।**

उनके कुछ भी काम न आये। (८४) हमने नभ और पृथ्वी को और जो कुछ नभ व पृथ्वी में है विचार ही से बनाया है और प्रलय अवश्य आने वाली है सो इस प्रकार किनारा पकड़ा। (८५) तुम्हारा पालनकर्ता उत्पन्न करने वाला ज्ञाता है। (८६) और हमने तुझको सात आयतें* सूरे फातिहा और बड़े पद का कुरान दिया। (८७) मनुष्यों को जो वस्तुएँ प्रयोग को दी हैं तुम इन पर अपनी दृष्टि न दौड़ाओ। और इन पर दुख न करना और अपनी बाँहों को धर्म वालों के लिये झुका। (८८) और कह दो कि मैं तो स्पष्टतया डराने वाला हूं। (८९) जैसे हमने इन पर पहुंचाया है। (९०) जिन्होंने बाँटकर कुरान के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। (९१) तेरे पालनकर्ता की कसम है कि हम सबसे पूछेंगे। (९२) बस तुमको जो आज्ञा हुई है उसे खोलकर** सुना दो (९३) मुशरिकीन की बिल्कुल चिन्ता न करो। (९४) हम तेरी ओर से ठट्ठा करने वालों को पर्याप्त हैं। (९५) जो ईश्वर के साथ दूसरे देवता ठहराते हैं इनको आगे चलकर ज्ञात हो जायगा। (९६) और हम जानते हैं कि तेरा जी उनकी बातों से रुकता है। (९७) सो तू अपने पालनकर्ता के गुणों का स्मरण कर और दण्डवत करने वालों में से हो। (९८) और जब तक तुझको विश्वास पहुंचे तब तक तू अपने पालनकर्ता की पूजा कर। (९९) (रुकू ६)

---

* यानी सूरे फातिहा जिसे नमाज में पढ़ते हैं।

** ३ वर्ष तक मुहम्मद साहब लोगों को चुपके-चुपके और छुपा-छुपा के इस्लाम का मत स्वीकार करने का उपदेश देते रहे। इसके उपरान्त यह आयत उतरी। इस समय से आपने निर्भीकता पूर्वक खुल्लमखुल्ला इस्लाम का प्रचार आरम्भ कर दिया।

सूरे नहल

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२८ आयतें, १६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। ईश्वर की आज्ञा आये तो उसके लिए शीघ्रता मत करो। इनके शिर्क से जात-पात और ऊंची है (१) वही अपने सेवकों में से जिसकी ओर चाहता है भेजता है, इस बात से चेता दो कि हमारे अतिरिक्त कोई पूजित नहीं सो हमसे डरते रहो। (२) उसी ने विचार से नभ और पृथ्वी को बनाया। तो यह मनुष्य जो समकक्ष बनाते हैं वह उससे ऊँचा है। (३) उसी ने मनुष्य को बून्द वीर्य से उत्पन्न किया। इस पर वह एकदम से खुल्लमखुल्ला झगड़ने लगा* (४) और उसी ने चारपायों को उत्पन्न किया जिसमें तुम मनुष्यों के शीतकाल के वस्त्र और कई लाभ हैं और उनमें से तुम किसी-किसी को खा लेते हो। (५) और जब सन्ध्या के समय घर वापस लाते हो और जब प्रातः को चराने ले जाते हो तो इस कारण से तुम्हारी शोभा भी है। (६) और जिन नगरों तक तुम जान तोड़कर भी पहुंच सकते। चारपाये वहाँ तक तुम्हारे बोझ उठा ले जाते हैं। तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा दयालु हृदय और कृपालु है। (७) उसने घोड़ों, खच्चरों और गधों को तुम्हारी शोभा और सवारी के लिए बनाया और वही उन वस्तुओं को उत्पन्न

---

* कहते हैं कि एक इन्कारी एक दिन पुरानी हड्डियाँ लाया और हाथ से उनको मलकर महीन करके आटे की तरह बना लिया और फिर उसको मुंह से फूंक दिया। वह राख हवा में उड़ गई। इस पर उसने कहा कि अब इसे कौन जिलायेगा। इस आयत में इसी की तरफ इशारा है और यह बताया गया है कि जो ईश्वर एक बूंद से आदमी को उत्पन्न करता है वह उसको मरे पीछें फिर उठा सकता है।

करता है जिनको तुम नहीं जानते। (८) और धर्म के मार्ग दो प्रकार के हैं, एक सीधा मार्ग ईश्वर तक है और दूसरा टेढ़ा और ईश्वर चाहता तो तुम सबको सीधा मार्ग दिखा देता। (९) (रुकू १)

वही है जिसने नभ से पानी बरसाया। जिसमें से कुछ तुम्हारे पाने का है और उससे पेड़ पोषण पाते हैं। जिनमें तुम अपने ढोरों को चराते हो। (१०) उसी पानी से ईश्वर तुम्हारे लिए खेती और जैतून खजूर और अंगूर और हर प्रकार के फल उत्पन्न करता है जो मनुष्य ध्यान करते हैं उनके लिए इसमें निशानी है। (११) और उसी ने रात और दिन और सूर्य और चन्द्रमा और सितारों को तुम्हारे काम में लगा रक्खा है और सितारे और तारे उसी के आज्ञाकारी हैं। जो बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन वस्तुओं में निशानियाँ हैं। (१२) जो वस्तुएँ तुम्हारे लिए पृथ्वी पर पृथक-पृथक रंग की उत्पन्न कर रक्खी हैं इनमें उन मनुष्यों को जो सोच विचार को काम में लाते हैं निशानियाँ हैं। (१३) वही जिसने नदी को आधीन कर लिया जिससे तुम उसमें से मछलियाँ निकालकर उनका ताजा माँस खाओ और उसमें से कभी-कभी मोती इत्यादि निकालो जिनको तुम पहनते हो और तू नौकाओं को देखता है कि फाड़ती हुई नदी में चलती हैं जिससे तुम ईश्वर की कृपा ढूंढ़ो और आभार प्रकट करो। (१४) पर्वत पृथ्वी पर गाड़े जिससे पृथ्वी तुम्हें लेकर किसी दूसरी ओर न झुकने पावे और नदियाँ और मार्ग बनाये सम्भवतः तुम मार्ग पाओ। (१५) और पते बनाये और मनुष्य तारों से मार्ग का पता करते हैं। (१६) तो क्या जो उत्पन्न करे उसके समान हो गया वह जो कुछ भी उत्पन्न नहीं कर सकता फिर क्यों तुम नहीं समझते। (१७) और यदि ईश्वर के पदार्थों को गिनना चाहे तो उनकी पूरी गिनती न गिन सकोगे ईश्वर बड़ा क्षमावान और कृपालु है। (१८) और कुछ तुम छिपाते हो और जो कुछ प्रकट करते हो अल्लाह जानता है। (१९) और ईश्वर के अतिरिक्त जिनको पुकारते हैं वह कोई वस्तु उत्पन्न नहीं कर सकते अपितु वह स्वयं बनाये

जाते हैं (२०) मृतक हैं जिनमें जीवन नहीं और ध्यान नहीं रखते कि प्रलय में सब उठाये जावेंगे। (२१) (रुकू २)

मनुष्यो तुम्हारा एक ईश्वर है सो जो मनुष्य पिछले जीवन का विश्वास नहीं करते उनके हृदय अविश्वासी हैं और वह घमंडी हैं। (२२) यह मनुष्य जो कुछ छिपाकर करते और जो प्रकट करते हैं अल्लाह जानता है। वह घमंडियों को पसंद नहीं करता। (२३) और जब इनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे पालनकर्ता ने क्या अवतरित किया है तो यह उत्तर देते हैं कि अगलों की कहानियाँ। (२४) फल यह है कि प्रलय के दिन अपने पूरे बोझ और जिन मनुष्यों को बिना समझे बूझे भटकाते हैं उनके भी बोझ उन्हीं को उठाने पड़ेंगे। देखो तो बुरा बोझ यह मनुष्य अपने ऊपर लादे चले जाते हैं। (२५) (रुकू ३)

इनसे पहले मनुष्य धोखा दे चुके हैं। तो ईश्वर ने उनके भवन की जड़ से सूचना ली। तो उसकी छत उन्हीं पर उनके ऊपर से गिर पड़ी और जिधर से उनको सूचना भी न थी दण्ड ने उनको आ घेरा। (२६) फिर प्रलय के दिन ईश्वर इनको अपकीर्ति करेगा और पूछेगा कि हमारे समकक्ष जिनके विषय में तुम लड़ा करते थे कहाँ हैं। जिन मनुष्यों को समझ दी गई थी वह बोल उठेंगे कि आज के दिन अपकीर्ति और खराबी काफिरों पर है। (२७) जिस समय देवदूतों ने इनकी आज्ञाएें निकाली थीं यह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार कर रहे थे। तब बिनती करते हुए आ मिलेंगे और कहेंगे कि हम तो किसी प्रकार की बुराई नहीं किया करते थे। जो कुछ तुम करते थे अल्लाह उससे खूब ज्ञाता है। (२८) नरक के द्वार से नरक में जा प्रविष्ठ हो, उसी में सदा रहो। घमंड करने वालों का बुरा स्थान है। (२९) और जो सँयमी हैं उनसे पूछा जाता है कि तुम्हारे पालनकर्ता ने क्या अवतरित किया? तो उत्तर देते हैं कि अच्छा जिन मनुष्यों ने भलाई की उनके लिए इस संसार में भी भलाई है और अन्तिम स्थान कहीं अच्छा हैं और संयमी का घर

अच्छा है। (३०) अर्थात उनको सदैव रहने के उपवन हैं जिनमें जो प्रविष्ट होंगे उनके नीचे नहरें बह रही होंगी और जिस वस्तु को उनका जी चाहेगा वहाँ उनके लिए उपस्थित होगी। सँयमियों को अल्लाह ऐसा ही बदला देता है। (३१) जिनकी जानें देवदूत पवित्र होने की दशा में निकालते हैं। देवदूत नमस्कार करते और कहते हैं कि जैसे कर्म तुम करते रहे हो उनके बदले स्वर्ग में जा प्रविष्ट हो। (३२) काफिर क्या इसी बात की बाट देखते हैं कि देवदूत उनके पास आवेंगे या अल्लाह उनके पास आज्ञा भेजेगा। ऐसा ही उनके अगलों ने किया और ईश्वर ने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वह अपने ऊपर आप अत्याचार करते हैं। (३३) फिर उन कर्मों के बुरे फल उनको मिले और उनकी ठट्ठेबाजी ने उन्हें घेर लिया। (३४) (रुकू ४)

मुशरिकीन कहते हैं कि यदि ईश्वर चाहता तो हम और हमारे बड़े उसके अतिरिक्त और की प्रार्थना न करते और न हम उनके बिना किसी वस्तु को पाप* ठहराते और ऐसा ही इनके अगलों ने कहा था। पैगम्बरों पर केवल स्पष्ट संदेशा पहुंचा देना है। (३५) हमने प्रत्येक समाज में एक पैगम्बर भेजा है कि ईश्वर की पूजा करो और दुष्ट से बचते रहो। सो उनमें से कुछ पथभ्रष्ट सिद्ध हुए। पृथ्वी पर चलो-फिरो और देखो कि झुठलाने वालों को कैसा फल मिला। (३६) यदि तू इन मनुष्यों को सीधे मार्ग पर लाने को ललचाये सो ईश्वर जिसको बिचलाना चाहता है उसको मार्ग नहीं दिया करता और कोई ऐसे मनुष्यों का सहायक नहीं होता। (३७) वह ईश्वर की बड़ी कठोर कसमें खाते हैं कि जो मर जाता है उसको ईश्वर पुनः नहीं उठाता ऐ पैगम्बर ! उनसे कहो कि अवश्य उठा खड़ा करेगा वचन सत्य है परन्तु प्रायः मनुष्य नहीं

*** मुशरिक ऊंटों के बच्चों को बुतों के नाम पर छोड़ देते थे और न उनपर सवार होतेथे और न सामान लादते और न उसका गोश्त खाते थे और कहते थे कि खुदा इस बात को न चाहता तो हम न करते।**

जानते। (३८) वह इसलिए उठायेगा कि जिन वस्तुओं पर यह झगड़ते थे ईश्वर उन पर प्रकट कर दे और काफिर जानलें कि वह झूठे थे। (३९) जब हम किसी वस्तु को चाहते हैं तो हमारा कहना उसके विषय में इतना ही होता है कि हम उसको कष्ट देंते हैं कि हो और वह हो जाता है (४०) (रुकू ५)

जिन पर अन्याय हुआ और अन्याय होने पर उन्होंने ईश्वर के लिये देश छोड़ा। हम उनको अवश्य संसार में स्थान देंगे और प्रलय का परिणाम कहीं बढ़कर है यदि उनको ज्ञात होता। (४१) यह मनुष्य जिन्होंने संतोष किया और अपने पालनकर्ता पर भरोसा किया। (४२) हमने तुमसे पहिले मनुष्य पैगम्बर बनाकर भेजे थे और उनकी ओर वही ईश्वरीय वाणी भेज दिया करते थे सो यदि तुमको स्वयं ज्ञात नहीं तो स्मरण रखने वालों से पूछ देखो। (४३) हमने तुम पर यह कुरान अवतरित किया जिससे जो आज्ञाऐं मनुष्यों के लिए उनकी ओर भेजीं गई हैं तुम उनको अच्छी प्रकार समझा दो और सम्भवतः वह सोचें (४४) तो जो बुराई का ढंग करते हैं क्या उनको इस बात का बिलकुल भय नहीं कि ईश्वर उनको पृथ्वी धंसा दे या जिधर से उनको सूचना भी न हो दण्ड उन पर आ गिरे। (४५) या उनके चलते फिरते ईश्वर उनको पकड़ ले जिसे वह हरा नहीं सकते। (४६) या उनको खटका हुए पीछे धर पकड़े सो इसमें सँदेह नहीं कि तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (४७) क्या उन मनुष्यों ने ईश्वर की सृष्टि में से ऐसी वस्तुओं की ओर नहीं देखा कि उसके साये दाहिनी ओर और बाईं ओर को अल्लाह के आगे सिर झुकाये हुए हैं और वह विनय को प्रगट कर रहे हैं। (४८) जितनी वस्तुऐं नभ में और जितने जीव पृथ्वी में हैं सब अल्लाह ही के आगे सिर झुकाये हैं और देतदूत ईश्वर की आज्ञा से दण्डवत किये हुए हैं और घमंड नहीं करते। (४९) अपने पालनकर्ता से जो उनके ऊपर है डरते रहते हैं और जो आशा उनको दी जाती है उसको पूर्ण करते हैं। (५०) (रुकू ६)

ईश्वर ने आज्ञा दी है कि दो पूजित न ठहराओ बस वही ईश्वर एक पूजित है उससे डरो। (५१) और उसी का है जो कुछ नभ तथा पृथ्वी में है और उसी का सदैव न्याय है सो क्या तुम ईश्वर के अतिरिक्त दूसरी वस्तुओं से डरते हो। (५२) और जितने पदार्थ तुमको मिले हैं ईश्वर ही की ओर से हैं। फिर जब तुमको कोई कष्ट पहुंचता है तो उसी के समकक्ष बिलबिलाते हो। (५३) फिर जब वह कष्ट को तुम पर से दूर कर देता है तो तुम में से एक गुट अपने पालनकर्ता का समकक्ष ठहराता है। (५४) जिससे जो देन हमने उनको दी थीं उनका आभार प्रदर्शित न करें और लाभ भी उठा लो फिर अन्ततः प्रलय में तो तुमको ज्ञान हो जायगा। (५५) और हमने जो इनको जीविका दी है उसमें यह मनुष्य जिन्हें नहीं जानते भाग ठहराते हैं।* सो ईश्वर की कसम तुम जैसे झूठ बाँधते हो तुमसे अवश्य पूछा जायगा। (५६) ईश्वर के लिए देवदूतों को पुत्रियाँ ठहराते हैं और वह पवित्र है और अपने लिए जो चाहे सो ठहराते हैं यानी पुत्र।** (५७) और जब इनमें से किसी को पुत्री के उत्पन्न होने का शुभसंवाद दिया जाता है तो मारे दुख के उसका मुँह काला पड़ जाता है और विष का घूंट पीकर रह जाता है। (५८) मनुष्यों से पुत्री की लाज के मारे जिसके उत्पन्न होने का उसकी शुभ सम्वाद सुना दिया गया है वह सोचता है कि इस अपकीर्ति को सहकर***जीता रहने दे या उसको मिट्टी में गाड़

*** काफिर खेती ऊंट और दुम्बे के बच्चों में एक भाग ईश्वर का ठहराते और एक भाग मूर्तियों का रखते।**

*** मुशरिक देवदूतों को ईश्वर की पुत्रियां बताते थे। इतना नहीं समझते थे कि ईश्वर को संतान की आवश्यकता होती तो उसको पुत्र रखना उचित था।**

*** अरब में पुत्री का किसी घर में जन्म लेना बहुत बुरा समझा जाता था। पुत्री वाला यही चाहता था कि उसको दण्ड दे।**

दे। देखो तो इन मनुष्यों की क्या बुरी राय है। (५९) उनकी बुरी बातें हैं जो प्रलय का विश्वास नहीं करते और अल्लाह की कहावत सबसे ऊपर है और वही प्रवल चमत्कार वाला है। (६०) (रुकू ७)

यदि ईश्वर सेवकों को उनके अन्याय को दण्ड में पकड़े तो पृथ्वी के धरातल पर किसी जीव को शेष न छोड़ेगा परन्तु एक समय नियत तक इनको अवकाश देता है। फिर जब इनको मृत्यु आवेगी तो न एक घड़ी पीछे रह सकते और न एक घड़ी आगे बढ़ सकते हैं। (६१) जिन वस्तुओं को आप नहीं पसन्द करते हैं और अपनी जिह्वा से असत्य बोलते हैं कि इनके लिए भलाई है उनके लिए नरकाग्नि है अपितु नरक में अग्रगामी है। (६२) ईश्वर की कसम है तुममें पहले हमने बहुत समाजों की ओर पैगम्बर भेजे। तो राक्षस ने उनके बुरे काम उनको अच्छे कर दिखाये। सो वही राक्षस इस युग में इनका मित्र है। और इनको कड़ा दण्ड है। (६३) हमने तुम पर पुस्तक इसीलिए अवतरित की है कि जिन बातों में यह आपस में भेद डाल रहे हैं वह इनको अच्छी प्रकार समझा दे। इसके अतिरिक्त यह कुरान धर्म वालों के लिए शिक्षा और दया है। (६४) अल्लाह ही ने नभ से पानी बरसाया फिर उसके द्वारा ही पृथ्वी को उसके मरे पीछे जिलाया। जो मनुष्य सुनते हैं उनके लिए निशानी हैं। (६५) (रुकू ८)

और तुम्हारे लिए चौपाओं में भी सोचने का स्थान है कि उनके पेट में जो है उससे गोबर और खून में से हम तुमको शुद्ध दूध पिलाते हैं जो पीने वालों को भला लगता है। (६६) और खजूर तथा अंगूर के फलों में से तुम मदिरा * और अच्छी जीविका बनाते हो। जो

*** मदिरा पीना इस आयत के उतरने के समय मना न था। बाद को मना हुआ है।**

मनुष्य बुद्धि रखते हैं उनके लिए इन वस्तुओं में निशानी है । (६७) ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता ने शहद की मक्खी के हृदय में यह बात डाल दी कि पर्वतों में और वृक्षों में तथा मनुष्य जो ऊँची-ऊँचीं टट्टियाँ बना लेते हैं उनमें छत्ते बनाएँ। (६८) फिर हर प्रकार के फल को चूस रस और अपने पालनकर्ता के सरल ढँगों पर चल। मक्खियों के पेट से पीने की एक वस्तु शहद निकलती है उसकी रंगतें कई प्रकार की होती है। मनुष्यों के रोग जाते रहते हैं। विचार करने वालों के लिए इसमें पता है। (६९) और ईश्वर ने ही तुमको उत्पन्न किया। फिर वही तुमको मारता है और तुममें से कोई निकम्मी उम्र अर्थात बुढ़ापे को पहुंचते हैं कि जाने पीछे कुछ न जान सकें बुढ्डा बेअक्ल हो जाय अल्लाह ज्ञान वाला चमत्कार वाला है। (७०) (रुकू ९)

ईश्वर ही ने तुममें से किसी को किसी पर जीविका में बढ़ती दी, तो जिनकी अधिक जीविका दी गई है वह अपनी जीविका लौटा कर अपने सेवक को नहीं देते कि जीविका में इनका भाग समान है तो क्या यह मनुष्य ईश्वर के पदार्थों के अविश्वासी हैं। (७१) तुम्हीं में से ईश्वर ने तुम्हारे लिए पत्नियों को उत्पन्न किया और तुम्हारी स्त्रियों से तुम्हारे लिए पुत्री और परपौत्रों को उत्पन्न किया। तुमको अच्छी वस्तुएं खाने को दीं तो क्या झूठे पूजितों के पदार्थ देने का विश्वास करते हैं और अल्लाह की कृपा को नहीं मानते। (७२) और ईश्वर के अतिरिक्त उनकी प्रार्थना करते हैं जो नभ और पृथ्वी से इनको भोजन देने का कुछ भी अधिकार नहीं रखते है। (७३) तो ईश्वर के लिए उदाहरण मत बनाओ। अल्लाह जानता है और तुम नहीं जानते। (७४) एक उदाहरण ईश्वर वर्णन करता है कि एक सेवक है दूसरे की सम्पत्ति पर जो किसी बात का अधिकार नहीं रखता और एक व्यक्ति है जिसको हमने अच्छे भोजन दे रक्खे हैं तो वह उसमें से छिपे और खुले कोष व्यय करता है क्या यह दोनों समान हो सकते हैं। सब प्रशंसा अल्लाह को है परन्तु इनमें बहुत से नहीं समझते। (७५)

ईश्वर एक दूसरा उदाहरण देता है कि दो मनुष्य हैं उनमें का एक गूंगा और सेवक भी है कि स्वयं कुछ नहीं कर सकता है और वह अपने स्वामी को बोझ भी है कि जहाँ कहीं उसको भेजे उससे कुछ भी ठीक नहीं बनता। क्या ऐसा सेवक और वह व्यक्ति समान हो सकते हैं जो मनुष्यों को समानता की सीमा पर स्थिर रहने को कहता और स्वयं भी सीधे मार्ग पर है। (७६) (रुकू १०)

नभ और पृथ्वी की छिपी बातें अल्लाह ही को ज्ञात हैं और प्रलय का घटित होना तो ऐसा है कि जैसा कि आंख का झपकना अपितु वह इससे भी निकट है निस्संदेह अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिशाली है। (७७) अल्लाह ही ने तुमको तुम्हारी माताओं के उदर से निकाला। तुम कुछ भी नहीं जानते थे और तुमको कान, आँख और हृदय दिये जिससे तुम धन्यवाद करो। (७८) क्या मनुष्यों ने पक्षियों को नहीं देखा जो नभ के मध्य में उड़ते हैं। उनको ईश्वर ही रोके रहता है। जो मनुष्य विश्वास रखते हैं उनके लिए इसमें निशानियाँ हैं। (७९) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारे घरों को ठिकाना बनाया और चौपायों की खालों से तुम्हारे लिए डेरे बनाये कि तुम अपने कूच के समय और अपने ठहरने के समय उनको हल्का पाते हो और चारपायों की ऊन और उनके रुआँ और उनके बालों से बहुत से सामान और काम की वस्तुएं बनाईं एक समय निश्चित तक इनसे लाभ उठाओ। (८०) और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए अपनी उत्पन्न की हुई वस्तुओं की छाया बनायी और तुम्हारे लिए कुर्ते बनाये जो तुम्हें गर्मी सर्दी से बचायें और कुछ लोहे के बख्तर कुर्ते बनाये जो तुमको दूसरे की चोट से बचावे। यों ईश्वर अपनी कृपाएं तुम पर पूरे करता है सम्भवतः तुम उसको मानो। (८१) फिर यदि मुँह मोड़ें तो तुम्हारे जिम्मे स्पष्टतया सुना देता है। (८२) ईश्वर की कृपा को पहचानते हैं फिर जान बूझकर उनसे मुकरते हैं और उनमें से प्रायः कृतघ्न हैं। (८३) (रुकू ११)

जब हम प्रत्येक गुट में से साक्षी बनाकर उठा खड़ा करेंगे काफिरों को बात करने की आज्ञा नहीं दी जायेगी और न उनसे क्षमाप्रार्थना के लिए कहा जायगा। (८४) जिन मनुष्यों ने उद्दण्डता की है जब दण्ड को देख लेंगे तो न तो इनसे दण्ड ही हलका किया जायगा और न उनको अवकाश दिया जायगा। (८५) और जो मनुष्य ईश्वर के समकक्ष बनते रहे जब वह अपने समकक्षों को देखेंगे तब बोल उठेंगे कि हमारे पालनकर्ता यही हैं वह हमारे देवता जिनको हम तेरे अतिरिक्त पुकारा करते थे तो उन देवताओं की बात उलटी,उलटी उन्हीं की ओर फेंक मारेंगे कि तुम निरे झूठे हो। (८६) और वह मनुष्य उस दिन ईश्वर के आगे सिर झुका देंगे और जो झूठ बाँधते थे वे उनको भूल जावेंगे। (८७) जो अविश्वासी हैं और मनुष्यों को ईश्वर के मार्ग से रोकते हैं उनके उत्पात के उत्तर में हम उनके पक्ष में दण्ड पर दण्ड बढ़ाते जावेंगे। (८८) जब हम प्रत्येक गुट में उन्हीं में का एक पैगम्बर उनके सामने खड़ा करेंगे और पैगम्बर तुमको इनके सामने साक्षी बना कर लावेंगे और ऐ पैगम्बर हमने तुम पर पुस्तक अवतरित की है जिसमें प्रत्येक वस्तु का वर्णन, मार्ग की सूझ, शिक्षा और दया है और शुभ सम्वाद धर्म वालों के लिए है। (८९) (रुकू १२)

अल्लाह न्याय करने और भलाई करने और सम्बन्धियों को धन का सहारा देने की आज्ञा देता है और निर्लज्जता के कामों और बुरे कामों और अत्याचार करने से मना करता है, तुम को शिक्षा देता है, सम्भवतः तुम ध्यान रक्खो। (९०) और जब तुम आपस में प्रतिज्ञा कर लो तो अल्लाह की कसम को पूरा करो और कसमों को उनके पक्के किये पीछे न तोड़ो जो तुम करते हो अल्लाह उसका ज्ञाता है।(९१)उस स्त्री जैसे मत बनो—जिसने अपना सूत काते पीछे टुकड़े-टुकड़े करके तोड़ डाला। आपस के झगड़े के कारण अपनी कसमों को मत तोड़ने लगो कि एक गुट दूसरे गुट से शक्तिशाली है। ईश्वर इस भेद से तुम्हारी जाँच करता है और जिन वस्तुओं में तुम भेद डालते हो प्रलय के दिन

ईश्वर तुम पर प्रकट करेगा। (९२) ईश्वर चाहता तो तुम सब को एक ही गुट बना देता परन्तु वह जिसको चाहता है पथभ्रष्ट करता है और जिसको चाहता है सुझाता है और जो कुछ तुम करते रहे हो उसकी तुमसे पूछ होगी*(९३)अपनी कसमों को अपने आपस के झगड़ेका कारण न बनाओ कि मनुष्य के पैर जमे पीछे उखड़ जायं और ईश्वर के मार्ग से रोकने के बदले में तुमको दण्ड चखना पड़े और तुमको बड़ा दण्ड हो। (९४) और अल्लाह की कसम के बदले तुच्छ लाभ मत लो। जो ईश्वर के यहाँ है वही तुम्हारे पक्ष में बहुत अच्छा है यदि तुम समझो। (९५) जो तुम्हारे पास है निपट जायगा और जो अल्लाह के पास है शेष रहेगा और जिन्होंने सन्तोष किया उनके अच्छे काम का बदला भला देंगे। (९६) जो व्यक्ति अच्छे काम करेगा पुरुष हो या स्त्री और वह विश्वास भी रखता हो तो हम उसका अच्छा जीवन व्यतीत करा देंगे और उनके कामों का जो करते थे देंगे। (९७) तो ऐ पैगम्बर जब तुम कुरान पढ़ने लगो फटकारे हुए दुष्ट से ईश्वर की शरण माँग लिया करो। (९८) जो मनुष्य विश्वास रखते हैं और अपने पालनकर्ता पर भरोसा करते हैं उन पर राक्षस का कुछ वश नहीं चलता। (९९) उसका बस तो उन्हीं पर चलता है जो उसके साथ मेलजोल रखते हैं ईश्वर का समकक्ष ठहराते हैं। (१००) (रुकू १३)

ऐ पैगम्बर जब हम एक आयत को बदल कर उसके स्थान पर दूसरी आयत अवतरित करते हैं और जो आज्ञा देता है उसको वही खूब जानता है तो काफिर तुम से कहने लगते हैं कि तू तो अपने हृदय से बनाया करता है अपितु इनमें से प्रायः नहीं समझते*। (१०१)

*** अर्थात काफिरों को धोखे से न मारो क्योंकि इससे कुफ्र नहीं मिटता और इससे अपने ऊपर बवाल पड़ता है।**

*** यह नहीं समझते कि पहले आज्ञा को क्यों बदला।**

ऐ पैगम्बर कहो कि सत्य तो यह है कि इस कुरान को तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से पवित्रात्मा जिब्रील लेकर आये हैं जिससे जो मनुष्य विश्वास ला चुके हैं ईश्वर उनको अचल रक्खे और धर्मवालों के पक्ष में मार्ग की सूझ और शुभसंवाद है। (१०२) ऐ पैगम्बर हमको खूब ज्ञात है कि काफिर कुरान के विषय में यह संदेह करते हैं कि हो न हो इस व्यक्ति को अमुक* मनुष्य सिखलाया करता है, सो जिस व्यक्ति की ओर अपेक्षा करते हैं उसकी बोली बिभाषा है कुरान सब अरबी भाषा है। (१०३) और जो मनुष्य ईश्वर की आयतों पर विश्वास नहीं लाते ईश्वर उन्हें सच्चा मार्ग नहीं दिखलाता और उनको दुखदाई दण्ड है। (१०४) हृदय से झूठ बनाना तो उन्हीं मनुष्यों का काम है जिनको ईश्वर की आयतों का विश्वास नहीं और यही मनुष्य झूठे हैं। (१०५) जो व्यक्ति विश्वास लाये पीछे ईश्वर की अस्वीकृति पर विवश किया जाय परन्तु उसका हृदय विश्वास की ओर से सँतुष्ट हो परन्तु जो कोई विश्वास लाये पीछे ईश्वर के साथ अस्वीकार करे और अविश्वास भी करे तो जी खोलकर, ऐसे मनुष्यों पर ईश्वर का कोप और उनके लिए बड़ा दण्ड है। (१०६) यह इस कारण से कि उन्होंने संसार के जीवन को प्रलय पर पसंद किया और इस कारण से कि अल्लाह अविश्वासियों को शिक्षा नहीं दिया करता। (१०७) यही वह मनुष्य हैं जिनके हृदय पर और जिनके कानों पर और जिनकी आँखों पर अल्लाह ने मुहर कर दी है और यही वे सुध हैं। (१०८) अवश्य प्रलय में यही मनुष्य घाटे में रहेंगे। (१०९) फिर जिन मनुष्यों ने विपत्ति आये पीछे घरबार छोड़े फिर ईश्वर के मार्ग में धर्मयुद्ध किये और डटे रहे, तुम्हारा पालनकर्ता क्षमा करनेवाला दयालु है। (११०) (रुकू १४)

*** एक आदमी का एक सेवक रूमी नसरानी मक्के में था। वह पैगम्बरों का हाल सुनाने के लिए मुहम्मद साहब के पास आकर बैठा करता था। काफिर कहने लगे यही आदमी मुहम्मद को सिखाता है कि यह कहो और वह कहो।**

जबकि वह दिन आवेगा प्रत्येक मनुष्य अपनी जाति के लिए झगड़ने के लिए उपस्थित होगा। प्रत्येक व्यक्ति को उसके कामके का पूरा-पूरा बदला दिया जावेगा और मनुष्य पर अत्याचार न होगा। (१११) ईश्वर ने एक गाँव का उदाहरण वर्णन किया है कि वहाँ के मनुष्य शाँति व धैर्य से थे, हर ओर से उनकी जीविका उनके पास बेखटके चली आती थी। फिर उन्होंने ईश्वर की कृपाओं पर जघन्यता की, तो उनके कामों के बदले में अल्लाह ने उनको भूख और भय का उनका ओढ़ना और बिछौना बना दिया। (११२) और उन्हीं में का एक पैगम्बर उनके पास आया तो उन्होंने उसको झुठलाया, उस पर ईश्वरीय दण्ड से उनको पकड़ा और वे अपराधी थे। (११३) तो ईश्वर ने जो तुझको पुण्य और पवित्र जीविका दी है उसको खाओ और यदि अल्लाह ही की पूजा करो और उसका धन्यवाद करो। (११४) उसने तुम पर मृत को और खूनको और सूअर के माँस को और उसको जो अल्लाह के अतिरिक्त किसी और के लिए आरक्षित किया जाय पाप किया, फिर जो व्यक्ति भूख से विवश हो न शक्ति से और न असीमितता से तो अल्लाह क्षमा करनेवाला दयालु हैं। (११५) झूठ-मूठ जो कुछ तुम्हारी जिह्वा पर आवे न कह दिया करो कि यह पुण्य है और यह पाप ईश्वर पर झूठ बाँधते हो और झूठ बाँधनेवालों का भला नहीं होता। (११६) थोड़े से सुख हैं और तत्पश्चात उनको दुखदाई दण्ड है। (११७) और ऐ पैगम्बर हमने यहूदियों पर वह वस्तुऐं जो पहले तुमसे वर्णन कर चुके हैं पाप कर दी थीं। हमने उन पर अत्याचार नहीं किया अपितु वह स्वयं अपने ऊपर अत्याचार किया करते थे। (११८) फिर जो मनुष्य पागलपन से अपराध करते थे फिर उसके पश्चात क्षमा माँगी और सुधार किया तो तुम्हारा पालनकर्ता क्षमा करने वाला दयालु है। (११९) (रुकू १५)

निस्संदेह इब्राहीम मनुष्यों के अगुआ हो गये हैं। ईश्वर के आज्ञा-कारी सेवक जो एक ईश्वर के होकर रहे थे और शिर्कवालों में से न

थे। (१२०) ईश्वर ने उनको चुन लिया था और उनको सीधा मार्ग दिखला दिया था और हमने उनको संसार में भलाई दी। (१२१) और प्रलय में भी वह भले मनुष्यों में होंगे। (१२२) फिर ऐ पैगम्बर हमने तुम्हारी ओर आज्ञा भेजी कि इब्राहीम के ढंग का समर्थन करो जो एक के होकर रहे थे और शिर्कवालों में से न थे। (१२३) हफ्ते की ताजीम तो उन्हीं पर आवश्यक की गई थी जिन्होंने उसमें भेद डाले और जिन-जिन बातों में यह मनुष्य आपस में भेद डालते रहे हैं प्रलय के दिन तुम्हारा पालनकर्ता उनमें उन बातों का निर्णय कर देगा। (१२४) ऐ पैगम्बर समझ की बातों और शिक्षाओं से अपने पालनकर्ता के मार्ग की ओर बुलाओ और उनकी ओर अच्छी प्रकार विचार करके जो कोई ईश्वर के मार्ग से भटका उसे और जिसने सीधा मार्ग पकड़ा उसे तुम्हारा पालनकर्ता खूब जानता है। (१२५) यदि कठोरता भी करो तो वैसी ही कठोरता करो जैसी तुम्हारे साथ की गई हो और यदि सन्तोष करो तो हर दशा में सन्तोष करनेवालों के लिए सन्तोष अच्छा है। (१२६) और सन्तोष करो और ईश्वर की सहायता से संतोष कर सकोगे और इन पर पछतावा न कर और उनके छल से दुख मत कर। (१२७) अल्लाह संयमियों और भले काम करनेवालों का साथी है। (१२८) (रुकू १६)

पन्द्रहवाँ पारा (सुभानल्लजी)

सूरे बनी इसराईल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १११ आयतें और १२ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। वह पवित्र है जो अपने भक्त को रातों रात मसजिद पाप अर्थात काबे घर से

मसजिद अक्सा अर्थात बैतुल मुकद्दस तक ले गया जिस के आस-पास हमने खूबियाँ दे रक्खी हैं और इसे ले जाने से अर्थ यह था कि हम उनको अपनी प्रकृति के नमूने दिखलावें। वह सुनता और जानता है। (१) और हमने मूसा को पुस्तक तौरात दी और उसकी इसराईल की संतान के लिए आज्ञा ठहराई और उनसे कह दिया कि हमारे अतिरिक्त किसी को अपना काम सँभालनेवाला न बना। (२) ऐ उन मनुष्यों की संतान ! जिनको हमने नूह के साथ नौका में सवार कर लिया था वह हमारे आभारी सेवक थे। (३) हमने इसराईल के पुत्रों से पुस्तक में स्पष्ट कह दिया था कि तुम अवश्य देश में दो बार उत्पात करोगे और बड़ा अत्याचार करोगे। (४) फिर जब पहला वचन आया तो हमने तुम्हारे मुकाबले में अपने ऐसे सेवक उठा खड़े किये जो बड़े लड़ने वाले थे और वह नगरों के अन्दर फैल गये और प्रण होना ही था। (५) फिर हमने शत्रुओं पर तुम्हारे दिन फेरे और धन से और पुत्रों से तुम्हारी सहायता की और तुमको बड़े जत्थे वाला बना दिया। (६) यदि तुम भलाई करो या बुराई अपनी ही प्रतिज्ञाओं के लिए है। फिर जब दूसरे उत्पात का समय आया तो फिर हमने अपने दूसरे भक्तों को उठाकर खड़ा किया कि तुम्हारे मुँह बिगाड़ दें और जिस प्रकार पहली बार मसजिद में घुसे थे उसी प्रकार उसमें घुसें और जिस वस्तु पर अधिकार पावें तोड़-फोड़ उसका सत्यानाश करें। (७) अचरज नहीं तुम्हारा पालनकर्ता तुम पर कृपा करे और यदि तुम फिर पहली सी उद्दण्डता करोगे तो हम भी दण्ड में लौटेंगे और हमने काफिरों के लिए नरक का बन्दीगृह तैयार कर रक्खा है। (८) यह कुरान वह मार्ग दिखाता है जो बहुत सीधा है। विश्वास वालों को और जो भले कर्म करते हैं इस बात का शुभसंवाद देती हैं। और जो भला काम करते हैं उनको बड़ा फल मिलेगा। (९) जो मनुष्य प्रलय का विश्वास नहीं रखते उनके लिए हमने कठिन दण्ड तैयार किया है। (१०) (रुकू १)

मनुष्य जिस प्रकार भलाई माँगता है उसी प्रकार बुराई माँगने

लगता है और मनुष्य बड़ा असंतोषी है। (११) हमने रात और दिन को दो नमूने बनाये, फिर रात के नमूने को मिटा दिया। दिन का निशान देखने की बना दिया जिससे तुम अपने पालनकर्ता से जीविका ढूँढ़ो और वर्षों की गिनती और हिसाब को जानो और हमने सब बातें खूब ब्यौरे के साथ वर्णन कर दी हैं। (१२) और प्रत्येक मनुष्य का भाग्य उसकी गर्दन से लगा दिया है और प्रलय के दिन हम उसके कर्मों का लेखा निकाल कर उसके सामने प्रस्तुत करेंगे, उसको अपने सामने खुला हुआ देख लेगा। (१३) और हम उससे कहेंगे कि वह अपना लेखा पढ़ ले, आज अपना हिसाब लेने के लिए तू स्वयं ही पर्याप्त है। (१४) जो मनुष्य सीधे मार्ग पर चला तो वह अपने ही लिए सीधा मार्ग चलता है और जो भटका तो उसके भटकने से अपराध का दण्ट भी उसी को भुगतना पड़ेगा और कोई दूसरे के बोझ को अपने ऊपर न लेगा और जब तक हम पैगम्बर को भेज न लें किसी को उसके अपराध का दण्ड नही दिया करते। (१५) हमको जब किसी गाँव को मार डालना स्वीकार होता है, हम उसके भली दशा के मनुष्यों को आज्ञा देते हैं। फिर वह उसमें अवज्ञा करते हैं तब उन पर यह दण्ड सिद्ध हो जाता है। फिर हम उस बस्ती को मार कर नष्ट कर देते हैं। (१६) और नूह के पश्चात हमने कितनी बस्तियों को मार डाला और ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता अपने सेवकों का अपराध जानने और देखने को पर्याप्त है। (१७) जो व्यवित संसार का चाहने वाला हो तो हम जिसे देना चाहते हैं उसीमें उसको उसी समय दे देते हैं*। फिर हमने उसके लिए नरक ठहरा रक्खा है जिसमें वे बुरी प्रकार से फटकारे हुए प्रविष्ट होंगे। (१८) और जो व्यक्ति परलोक का चाहने वाला है।

* कुछ लोग इसी जीवन में सफलता प्राप्त करना चाहते हैं और उस जीवन को सफल बनाने की चेष्टा नहीं करते जो आगे चलकर मरे पीछे होगा। ऐसे लोग अपना ही बुरा करते हैं।

और उसके लिए जैसा परिश्रम करना चाहिए वसा उसके लिए प्रयत्न करता है और वह विश्वास भी रखता है तो यही है जिनका परिश्रम सफल होगा। (१९) ऐ पैगम्बर वह सँसार के चाहने वाले और यह परलोक के चाहने वाले सबको हम तुम्हारे पालनकर्ता के दान से सहायता सहायता देते हैं और तुम्हारे पालनकर्ता का दान बन्द नहीं। (२०) देखो हमने एक को एक से कैसा बढ़ाया और प्रलय में बड़े पद हैं और बड़ी बढ़ती है। (२१) ऐ पैगम्बर ईश्वर के साथ किसी दूसरे की उपासना नहीं करना। नहीं तो तुम दुर्दशा पाकर बैठे रह जाओगे। (२२) (रुकू २)

तुम्हारे पालनकर्ता ने आज्ञा दे दी है कि उसके अतिरिक्त किसी की उपासना न करना और माता-पिता के साथ इच्छा व्यवहार करो। यदि माता-पिता में से एक या दोनों तेरे सामने बुड्ढे हो जावें तो उनके आगे हूं भी मत करना और न उनको झिड़कना और उनके साथ आदर के साथ बोलना, (२३) प्रेम से दीनता के साथ उनके सामने सिर झुकाये रखना और प्रार्थना करते रहना कि हे मेरे पालनकर्ता! जिस प्रकार उन्होंने मुझे छोटे से पाला है इसी प्रकार तू भी इन पर अपनी कृपा कर। (२४) तुम्हारे हृदय की बात को तुम्हारा पालनकर्ता खूब जानता है, यदि तुम भले हो तो वह क्षमा प्रार्थना करने वालों के अपराध क्षमा करने वाला है। (२५) सम्बन्धी निर्धन और यात्री को उसका भाग पहुंचाते रहो और अनुचित मत उड़ाओ। (२६) अनुचित उड़ाने वाले दुष्टों के भाई हैं और राक्षस अपने पालनकर्ता का बड़ा ही जघन्य है। (२७) यदि मुझे अपने पालनकर्ता से जीविका की तलाश में आशातीत होकर इनसे मुँह फेरना पड़े * तो नम्रता से

* अर्थात कोई ऐसा समय आये जिसमें तुमको कमाने की चिन्ता हो और तुम उनको कुछ न दे सको, तो उनको भली-भांति समझा दो कि तुम उस समय कोई उनकी सहायता नहीं कर सकते।

इनको समझा दो। (२८) अपना हाथ न तो इतना सिकोड़ो कि मानो गर्दन में बधा है न बिल्कुल उसको फैला ही दो कि तू फटकारा हुआ हारकर बैठ रहे। (२९) ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता जिसकी जीविका चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी जीविका चाहता है कम कर देता है। वह अपने सेवकों को जानता देखता है। (३०) (रुकू ३)

निर्धनता से अपनी सन्तान को मार मत डालो। उनको और तुमको हम जीविका देते हैं सँतान का जान से मारना बड़ा भारी पाप है। (३१) व्यभिचार के पास न फटकना क्योंकि वह निरलज्जता है और बुरा चलन है। (३२) किसी की जान को जिसका मारना अल्लाह ने पाप कर दिया है निरर्थक बध न करना परन्तु भाग पर और जो व्यक्ति अत्याचार से मारा जाय तो हमने उसके संरक्षक को अधिकार दे दिया है तो उसको चाहिए कि खून में अत्याचार न करे। क्योंकि उसकी सहायता होती है। (३३) जब तक अनाथ योवन को न पहुंचे उसके धनके पास मत जाओ परन्तु जिस प्रकार अच्छा हो और प्रण को पूरा करो क्योंकि प्रण की पूछ होगी। (३४) और जब तौल करो तो पैमाने को पूरा भर दिया करो और तौल कर देना हो तो डंडी सीधी रखकर तौला करो। यह अच्छा है और इसका अन्त भी अच्छा है। (३५) ऐ ध्यान देनेवालों जिसबात का तुझको ज्ञान नहीं उसके अन्ध-विश्वास से पीछे न हो क्योंकि कान और आंख और हृदय इन सबसे पूछ ताछ होनी है। (३६) पृथ्वी में अकड़ कर न चल क्योंकि न तो तू पृथ्वी को फाड़ सकता है और न पहाड़ों की ऊँचाई को पहुंच सकता है। (३७) ऐ पैगम्बर इन बातों की बुराई ईश्वर को नापसन्द है। (३८) ऐ पैगम्बर यह बातें उन बुद्धि की बातों में से हैं जिनको तुम्हारे पालनकर्ता ने तुम्हारी ओर आज्ञा किया है। ईश्वर के साथ और किसी की उपासना न करना नहीं तो तू फटकारा हुआ अपराधी होकर नरक में डाल दिया जायगा। (३९) ऐ शिर्कवालों क्या तुम्हारे पालनकर्ता

ने तुमको पुत्रों के लिए चुन लिया है और स्वयं पुत्रियाँ ले बैठा अर्थात देव दूरत्तियाँ यह तो तुम बड़ी बात कहते हो। ४०) (रुकू ४)

हमने इस कुरान में कई प्रकार से समझाया जिससे यह मनुष्य समझें परन्तु इससे इनकी घृणा ही बढ़ती जाती है। (४१) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि यदि ईश्वर के साथ जैसा यह मनुष्य कहते हैं कोई और पूजित होते तो इस सूरत में वे दूसरे पूजित सिंहासन के स्वामी ईश्वर की ओर मार्ग निकालते*। (४२) जैसी बातें यह मनुष्य कहते हैं इनसे वह पवित्र और बहुत ऊंचा है। (४३) नभ और पृथ्वी और जो नभ और पृथ्वी में है उसका नाम लेता है और जितनी वस्तुएं हैं सब उसकी प्रशन्सा के साथ उसका नाम लेती हैं, परन्तु तुम उनके पढ़ने को नहीं समझते। वह सहनशील और बड़ा क्षमा करने वाला है। (४४) ऐ पैगम्बर जब तुम कुरान पढ़ते हो तो हम तुममें और उन मनुष्यों में जिनको प्रलय का विश्वास नहीं एक परदा कर देते हैं। (४५) उनके हृदय पर आड़ है जिससे कुरान को समझ न सकें और उनके कामों में एक प्रकार का बोझ डालते हैं जिससे सुन न सकें। और जब कुरान में अकेले ईश्वर की चर्चा करते हैं तो काफिर घृणा करके उल्टे भाग खड़े होते हैं। (४६) जब यह तुम्हारी ओर कान लगाते हैं तो जिस इच्छा से सुनते हैं तब कहते हैं कि तुम तो एक मनुष्य के पीछे पड़े हो जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (४७) ऐ पैगम्बर देखो तुम्हारे बिषय में कैसी-कैसी बातें बकते हैं तो यह मनुष्य भटक गये और अब मार्ग नहीं पा सकते। (४८) और कहते हैं जब हड्डियाँ और टुकड़े-टुकड़े हो गया तो क्या हमको नये सिरे से उत्पन्न करके उठा खड़ा किया जायगा। (४९) ऐ पैगम्बर कहो कि तुम पत्थर या लोहा (५०) या और वस्तु बन जाओ या कोई वस्तु जो तुम्हारी समझ में बड़ी हो। उस पर पूछेंगे कि हमको पुनः कौन जीवित कर सकेगा। कहो कि वही ईश्वर जिसने तुमको पहली बार उत्पन्न किया था। इस पर यह तुम्हारे आगे सिर मटकाने लगेंगे और

पूछेंगे कि भला प्रलय कब आवेगी। तुम इनसे कहो आश्चर्य नहीं कि निकट ही आ लगी हो। (५१) जब ईश्वर तुमको बुलायेगा तो तुम उसकी प्रशंसा करते फिरे चले आओगे और विचार करोगे कि बस थोड़े ही दिन तुम रहे। (५२) (रुकू ५)

हमारे मानने वालों को समझा दो कि ऐसी कहें जो भली हो क्योंकि दुष्ट मनुष्यों में झगड़ा डलवाता है और राक्षस मनुष्य का स्पष्ट शत्रु है। (५३) मनुष्यों तुम्हारा पालनकर्ता तुम्हारी दशा से खुब परिचित है चाहे तुम पर दया करे और चाहे तुमको दण्ड दे और हमने तुमको मनुष्यों का ठेकेदार बनाकर तो नहीं भेजा (५४) और जो नभ और पृथ्वी में है तुम्हारा पालनकर्ता उससे खूब परिचित है और हमने किन्हीं पैगम्बरों पर किन्हीं को बढ़ोती दी और हमी ने दाऊद को जबूर दी। (५५) ऐ पैगम्बर! मनुष्यों से कहो कि ईश्वर के अतिरिक्त जिनको तुम स्वयं समझते हो पुकारो सो न तो तुम्हारा कष्ट ही दूर कर सकेंगे और न उसको बदल सकेंगे। (५६) यह जिनको शिर्कवाले बुलाते हैं वह अपने पालनकर्ता की ओर मार्ग ढूंढते हैं कि कौन भक्त अधिक समीप है और उसकी कृपा की आशा रखते हैं और उसकी मार से डरते हैं निस्सन्देह तेरे पालनकर्ता की मार भय की वस्तु है। (५७) कोई अवज्ञाकारियों की बस्ती नहीं जिसे प्रलय से पहले हम नष्ट न कर देंगे या उसको कठोर दण्ड न देंगे। यह बात पुस्तक में लिखी जा चुकी है। (५८) हमने चमत्कारों का भेजना बन्द किया क्योंकि अगले मनुष्यों ने उनको झुठलाया। हमने समूद को उंटनी का स्पष्ट चमत्कार दिया था फिर भी मनुष्यों ने उसे सताया और हम चमत्कार केवल डराने के विचार से भेजा करते हैं। (५९) जब हमने तुमसे कहा कि तुम्हारे पालनकर्ता ने मनुष्यों को हर ओर से रोक रक्खा है जो हमने तुमको दिखावा दिखाया सो मनुष्यों के जाँचने को दिखाया और वृक्ष जिस पर कुरान में लाँछना की गई है उसके पश्चात भी हम इन मनुष्यों को डराते हैं परन्तु हमारा डराना इनके अहंकार को बढ़ाता है। (६०) (रुकू ६)

हमने देवदूतों को आज्ञा दी कि आदम को दण्डवत करो तो सभी ने नमस्कार किया परन्तु इबलीस झगड़ने लगा कि क्या मैं ऐसे मनुष्य को नमस्कार करूँ जिसे तूने मिट्टी से बनाया। (६१) कहने लगा कि भला देख तो यही वह मनुष्य है जिसको तूने मुझ पर बढ़ती दी है, यदि तू मुझको प्रलय तक का अवकाश दे तो मैं अतिरिक्त थोड़े मनुष्यों के इसकी सब सन्तान की जड़ काटता रहूंगा। (६२) ईश्वर ने कहा चल दूर हो, जो मनुष्य इनमें से तेरा समर्थन करेगा सो तुम सबको नरका दण्ड पूरा बदला होगा। (६३) इनमें से जिसे अपनी बातों से बहका सके बहका ले और उन पर अपने सवार और प्यादे चढ़ा ला और उनके साथ धन और सन्तान में साझा लगा और इनसे प्रण कर और राक्षस तो इनसे जितने प्रण करता है सब धोखे के होते हैं। (६४) हमारे सेवकों पर तेरा किसी प्रकार का वश न होगा और तुम्हारा पालनकर्ता काम का संभालने वाला है। (६५) तुम्हारा पालनकर्ता वह है जो तुम्हारे लिए नदी में नाव को चलाता है जिससे तुम उसकी कृपा ढूंढो। ईश्वर तुमपर कृपालु है। (६६) जब नदी में तुमको दुख पहुंचता है तो जिनको तुम उसके अतिरिक्त पुकारा करते थे भूल जाते हो। परन्तु जब वह तुमको शुष्कता की ओर निकाल लाता है तो तुम फिर मुंह मोड़ते हो और मनुष्य बड़ा ही जघन्य है। (६७) सो क्या तुम इस बात से निडर हो गये हो कि वह तुमको वन की ओर धंसा दे या तुम पर पत्थर बरसावे और उस समय तुम अपना सहायक न पाओ। (६८) या तुम इस बात से निडर हो कि ईश्वर फिर तुमको लौटाकर पुनः उसी नदी में ले जावे और तुम पर हवा का झोंका भेजे और तुम्हारी जघन्यती के दण्डस्वरूप तुमको डुबो दे। फिर तुम अपने लिए हम पर दावा करने वाला न पाओ। (६९) निस्सन्देह हमने मानव का सन्तान को मान दिया और शुष्कता और नदी में उनको सवारी दी है और अच्छी वस्तुओं में उन्हें जीविका दी और जितने मनुष्य हमने उत्पन्न किये हैं उनमें बहुतसों पर उनको बढ़ती दी। (७०) (रुकू ७)

बड़ी बढ़ती तो उस दिन की है जब हम प्रत्येक गुट को उनके अग्रगामियों समेत बुलायेंगे। तो जिनका लेखा उनके हाथ में दिया जायगा वह अपने लेखे को पढ़ने लगेंगे और उन पर एक में रत्ती के समान भी अन्याय न होगा। (७१) जो इसमें अन्धा* रहा वह प्रलय में भी अन्धा होगा और मार्ग से बहुत दूर भटका हुआ होगा। (७२) और ऐ पैगम्बर जो हमने कुरान तुम्हारी ओर भेजा है मनुष्य तो तुमको इससे विचलाने में लगे थे जिससे इसके अतिरिक्त तुम झूठ हमारी ओर विचार करो और यह मनुष्य तुमको मित्र बना लेते हैं। (७३) यदि हम तुम दृढ़ न रखते तो तू भी थोड़ा इनकी ओर को झुकने लगा था। (७४) ऐसा होता तो हम तुमको जीते और मेरे दुहरे दण्ड का आनन्द चखाते, फिर तुमको हमारे मुकाबले में कोई सहायक न मिलता। (७५) यह मनुष्य तो तुमको मक्के की पृथ्वी से घबराहट उत्पन्न करा रहे थे जिससे तुमको यहाँ से निकाल वाहर करे और ऐसा होता तो तुम्हारे पीछे यह मनुष्य भी कुछ दिन से अधिक न रहने पाते। (७६) तुमसे पहले जितने पैगम्बर हमने भेजे हैं उनका यही नियम रहा है जो नियम हमारे निर्वाचित है में भेद होता न पाओगे। (७७) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर सूर्य के ढलने से रात्री के अंधेरे तक नमाजें पढ़ा करो करो और कुरान प्रात पढ़ना चाहिए। निस्सन्देह कुरान का प्रातःकाल ईश्वर के सामने होना है। (७८) और रात्री के एक भाग में कुरान (नमाज तहज्जद) पढ़ा करो और यह कर्तव्य से अधिक बात तेरे लिए है, सम्भवतः तुम्हारा पालनकर्ता तुमको प्रशंसनीय स्थान में पहुंचाये। (७९) प्रार्थना किया करो कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको अच्छे स्थान

*** अर्थात ईश्वर को इस जीवन में नहीं पहचानता और उसके प्यारों की आज्ञा का पालन नहीं करता वह दूसरी दुनिया में बड़े घाटे में रहेगा।**

पर पहुंचा और मुझको सच्चा मार्ग दिखला और अपने पास से मुझको साम्राज्य में सहायता दें। (८०)

ऐ पैगम्बर! मनुष्यों से कह दो कि सत्य धर्म आया है और असत्य धर्म मिट गया है और निस्सन्देह झूठ तो मिटने वाला ही था। (८१) हम कुरान में ऐसी-ऐसी बातें अवतरित करते हैं जो धर्म वालों के लिए औषधी और कृपा है और शीघ्रता करने वालों को तो इससे हानि ही और होती है। (८२) जब तक मनुष्य को आराम देते हैं तो उल्टा हमसे मुंह फेरता है और पार्व खाली करता है और जब उसको कष्ट पहुंचती है तो आशा तोड़ बैठता है। (८३) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि प्रत्येक अपने ढंग पर काम करता है, फिर जो ठीक सीधे मार्ग पर है तुम्हारा पालनकर्ता उसको खूब जानता है। (८४) (रुकू ९)

ऐ पैगम्बर आत्मा के विषय में तुमसे पूछते हैं तो कह दो आत्मा मेरे पालनकर्ता की ओर से और तुम को थोड़ा ही ज्ञान दिया गया है। (८५) ऐ पैगम्बर यदि चाहें तो जो कुरान हमने तुम्हारी ओर भेजा है उसको उठा* ले जावें, फिर तुमको उसके लिए हमारे मुकाबले में कोई सहायक न मिलेगा। (८६) परन्तु तुम्हारे पालनकर्ता ही की कृपा से तुम पर उसका बड़ा ही पोषण है। (८७) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि यदि सब मनुष्य और भूत ऐसा कुरान बनाने को एकत्रत हो तो भी ऐसा न बना सकेंगे, चाहे उनमें एक दूसरे की बड़ी सहायता करे। (८८) इतने पर भी कि हमने इस कुरान में मनुष्यों के लिए सभी उदाहरण वर्णन किये हैं बहुत-से मनुष्य अकृतज्ञ ही रहे। (८९) ऐ पैगम्बर! मक्का के काफिर तुमसे कहते हैं कि हम तो उस

*** अर्थात कुरान कों हम भुला देना चाहें तो ऐसा भुला दें कि किसी को इसका एक शब्द भी स्मरण न रह जाय।**

समय तक तुम पर विश्वास लाने वाले नहीं जब तक हमारे लिए पृथ्वी से कोई चश्मा वहाँ न निकालो। (९०) या खजूरों और अंगूरों का तुम्हारा कोई उपवन हो और उसके मध्य में तुम नहरें चालू कर दिखाओ। (९१) या जैसा तुम कहा करते थे कि नभ के टुकड़े-टुकड़े हम पर ला गिरावो या ईश्वर देवदूतों को लाकर सामने खड़ा करे। (९२) या कोई तुम्हारा स्वर्ण का घर हो या तुम नभ में चढ़ जाओ और जब तक तुम हमको लेखा न अवतरित करो जिसे हम आप पढ़ लें तब तक हम तुम्हारे चढ़ने का विश्वास करने वाले नहीं। कहो कि अल्लाह पवित्र है, मैं एक भेजा हुआ मनुष्य हूँ। (९३) (रुकू १०)

जब मनुष्यों के पास ईश्वर की ओर से शिक्षा आ चुकी तो उनको विश्वास लाने से इसके अतिरिक्त और कोई रोकने वाला नहीं हुआ। परन्तु यही कहने लगे क्या ईश्वर ने मनुष्यों को पैगम्बर बना के भेजा है। (९४) ऐ पैगम्बर तू मनुष्यों से कह कि पृथ्वी में यदि देवदूत होते और विश्वास से चलते-फिरते तो हम नभ से देवदूत ही को पैगम्बर बनाकर उनसे पास भेजते। (९५) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि हमारे और तुम्हारे मध्य में अल्लाह ही पर्याप्त है, वह अपने सेवकों से परिचित है और उन्हें देख रहा है। (९६) और जिसको ईश्वर शिक्षा दे वही सच्चे मार्ग पर है और जिसे भटकावे तो ऐरे पथ भूलों के लिए तुम ईश्वर के अतिरिक्त कोई सहायक नहीं पाओगे और प्रलय के दिन हम उन मनुष्यों को उनके मुंह के बल अन्धे और गूंगे और बहरे करके उठावेंगे। उनका स्थान नरक है जब नरकाग्नि बुझाने को होगी हम उनके लिए और अधिक भड़कावेंगे। (९७) यह उनका दण्ड है कि उन्होंने हमारी आयतों से अस्वीकार किया और कहा कि जब हम हड्डियाँ और टुकड़े-टुकड़े हो जायंगे तो क्या हम पुनः जन्म लेंगे। (९८) क्या इन मनुष्यों ने इस बात पर दृष्टि नहीं की ईश्वर जिसने नभ और पृथ्वी को उत्पन्न किया है इस बात पर भी सशक्त है कि इन जैसे मनुष्य पुनः उत्पन्न करे और उनके लिए पुनः उत्पन्न करने

को एक अवधि नियत कर रक्खी है जिसमें किसी प्रकार का सन्देह नहीं इस पर भी अन्यायी मनुष्य अस्वीकार ही करते हैं। (९९) ऐ पैगम्बर! इन से कहो यदि मेरे पालनकर्ता की दया के कोष तुम्हारे अधिकार में होते तो व्यय हो जाने के भय से तुम उन्हें बन्द ही रखते और मनुष्य बड़ा ही सँकुचित हृदय है। (१००) (रुकू ११)

हमने मूसा को स्पष्ट निशानियाँ दीं तो ऐ पैगम्बर इसराईल के पुत्रों से पूछ कि जब मूसा इसराईल की संतान के पास आये तब फिरऔन ने उससे कहा कि मूसा मेरे अनुमान में तुम पर किसी ने जादू कर किया है। (१०१) मूसा ने उत्तर दिया कि तू जान चुका है कि नभ और पृथ्वी तेरे पालनकर्ता की ही यह निशानियाँ हैं और ऐ फिरऔन मेरे विचार में तेरी विपत्ति आई है। (१०२) फिर फिरऔन ने इसराईल की सन्तान को दुखी करके देश से निकाल देना चाहा तो हमने उसको और उसके साथियों को सबको डुबो दिया। (१०३) फिरऔन के पीछे हमने याकूब के पुत्रों से कहा कि देश में बसना फिर जब प्रलय का प्रण आवेगा तो तुमको समेट कर एकत्रित करेंगे। (१०४) और पैगम्बर सच्चाई के साथ हमने कुरान को अवतरित किया और सच्चाई के साथ वह अवतरित होगा और हमने तो तुमको बस शुभ सम्वाद देने वाला और डराने वाला भेजा है। (१०५) कुरान को हमने थोड़ा-थोड़ा करके अवतरित किया कि तुम अवकाश के साथ उसे मनुष्यों को पढ़ कर सुनाओ और हमने उसे धीरे-धीरे अवतरित किया है। (१०६) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि तुम कुरान से पहले ज्ञान दिया गया है जब उनके सामने पढ़ा जाता है तो ठोडियों के बल दण्डवत करते हैं। (१०७) कहने लगते हैं कि हमारा पालनकर्ता पवित्र है और उसका प्रण पूरा होना ही था। (१०८) ठोड़ियों के बल गिर पड़ते हैं, रोते और कुरान के कारण से उनकी विनम्रता अधिक होती जाती है। (१०९) ऐ पैगम्बर! तुम इन से कहो कि तुम ईश्वर को अल्लाह कह कर पुकारो या रहमान (दयालु) कह कर

पुकारो, जिस नाम से भी पुकारो तो उसके सब नाम अच्छे हैं और ऐ पैगम्बर तू अपनी नमाज जोर से न पढ़ ओर न धीमी वाणी से अपितु इनके मध्य का मार्ग पकड़ा। (११०) और कहो कि हर प्रकार से ईश्वर को सराहना है जो न तो सन्तान रखता है और न उसके राज्य में कोई उसका समकक्ष है। वह निर्बल नहीं कि उसको किसी की सहायता को आवश्यकता हो। उसकी बड़ाइयाँ समय-समय पर करते रहा करो। (१११) (रुकू १२)

सूरे कहफ

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११० आयतें और १२ रुकू हैं

आरम्भ अल्लाह के नाम से जो अत्यन्त दयावान तथा कृपालु है। प्रत्येक प्रकार की प्रशंसा ईश्वर ही को है जिसने अपने सेवक पर कुरान अवतरित किया और उसमें कोई बुराई नहीं रक्खी। (१) बिल्कुल सीधी बात है जिससे ईश्वर की ओर से कठोर दण्ड से डराये और जो धर्म वाले हैं और अच्छे काम करते हैं और इस बात का शुभ सम्वाद दे कि उनको अच्छा परिणाम स्वर्ग है। (२) जिसमें वह सदैव रहेंगे। (३) उन मनुष्यों को ईश्वर के दण्ड से डरा जो कहते हैं कि ईश्वर सन्तान रखता है। (४) न तो उन्हीं को इस बात की कुछ खोज है और न इनके बड़ों को। क्या बुरी बात है जो इनके मुंह से निकलती है, जो कहते हैं निरी झूठ है। (५) इस बात को न माने तो सम्भवतः तुम दुख के मारे इनके पीछे अपनी जान दे डालोगे। (६) जो पृथ्वी पर है हमने उसको पृथ्वी की शोभा बनाई है जिससे इनमें मनुष्यों को

जांचे कि कौन अच्छे कर्म करता है। (७) और हम सब वस्तुओं को जो पृथ्वी पर हैं चटियल मैदान बना देंगे। (८) क्या तुम ऐसा विचार करते हो कि कोटर और कन्दरा के रहने वाले हमारी निशानियों में से अनोखे थे। (९) जब कुछ युवक कन्दरा में जा बैठे और प्रार्थना की कि हे हमारे पालनकर्ता ! हम पर अपनी ओर से कृपा कर और हमारे कार्य को पूरा कर। (१०) फिर कई वर्ष के लिए हमने कन्दरा में उनको सुला दिया। (११) फिर हमने उनको उठाया जिससे हम देख लें कि दो गुटों में से किसको ठहरने की अवधि स्मरण है। (१२) (रुकू १)

हम उनकी दशा ठीक-ठीक तुमसे कहते हैं कि वह थोड़े युवक थे जो अपने पालनकर्ता पर विश्वास लाये और हम उनको अधिक ही शिक्षा देते रहे। (१३) और हमने उनके हृदय पर गाँठ लगा दी कि जब उठ खड़े हुए और बोल उठे कि हमारा पालनकर्ता नभ और पृथ्वी का स्वामी है—हम तो उसके अतिरिक्त किसी पूजित को न पुकारेंगे यदि हम ऐसा करें तो हमने बड़ी ही अनुचित बात कही। (१४) यह हमारी जाति है जिन्होंने अल्लाह के अतिरिक्त कई पूजित समझ रक्खे हैं, इनका कोई स्पष्ट प्रमाणपत्र क्यों नहीं प्रस्तुत करते। जिसने ईश्वर पर झूठ बाँधा उससे बढ़कर कौन अपराधी है। (१५) जब तुमने अपनी जाति के मनुष्यों से और ईश्वर के अतिरिक्त जिनकी यह मनुष्य पूजा करते हैं उनसे किनारा खींच लिया तो कन्दरा में चल बैठो, तुम्हारा पालनकर्ता अपनी दया तुम पर फैला देगा और तुम्हारे काम में सुभीते करेगा। (१६) जब सूर्य निकले तो तू देखेगा कि वह उनकी कन्दरा से दाहिनी ओर को बचता हुआ रहता है और जब डूबता है तो उनसे बाईं ओर को कतरा जाता है और उस कन्दरा के अन्दर बड़ा चौड़ा स्थान में हैं। यह ईश्वर की निशानियों में से है और जिसको वह पथ-भ्रष्ट करे तो फिर तुम कोई उसको मार्ग पर लाने वाला न पाओगे। (१७) (रुकू २)

तू उनको समझे कि जागते हैं यद्यपि वह सो रहे हैं और हम दाहिनी ओर को और बाईं ओर को उनकी करवटें बदलते रहते हैं और उनका कुत्ता चौखट पर अपने दोनों हाथ फैलाये हैं। यदि तू उन मनुष्यों को झाँक कर देखे तो उनसे डरेगा और उल्टे पैर भाग खड़ा होगा। (१८) और इसी प्रकार हमने उनको जगा दिया था जिससे आपस में बातें करें। उनमें से एक बोल उठा भला तुम कितनी देर ठहरे होंगे। वह बोले कि हम एक दिन या दिन से भी कम। फिर बोले कि जितनी अवधि तुम कन्दरा में रहे तुम्हारा पालनकर्ता ही अच्छी प्रकार जानता है। तू अपने में से एक को अपना यह रुपया देकर नगर की ओर भेज जिससे वह देखे कि किसके यहाँ अच्छा भोजन है, तो उसमें से खाना तुम्हारे पास ले आये और चुपके से लेकर चला आये और किसी को तुम्हारी सूचना न होने दे। (१९) यदि मनुष्य तुम्हारी सूचना पा जावेंगे तो तुम पर पत्थरों की वर्षा करेंगे या तुमको उल्टा फिर अपने धर्म में कर लेवेंगे और ऐसा हुआ तो फिर तुमको कभी स्वर्ग नहीं मिलेगा। (२०) इसी प्रकार हलने उन्हें सूचित कर दिया था कि जान लें कि ईश्वर का प्रण सत्य है और प्रलय में कुछ भी सन्देह नहीं। अब खबर पाये पीछे मनुष्य उनके सम्बन्ध में आपस में झगड़ने लगे तो किसी-किसी ने कहा उन कहफ वालों पर एक भवन बनाओ और उनकी दशा को उनका पालनकर्ता ही भली प्रकार जानता है। उनके विषय में जिनकी राय प्रबल रही उन्होंने कहा हम उनके मकान पर एक मसजिद बनावेंगे। (२१) कोई-कोई कहते हैं कहफवाले तीन थे चौथा उनका कुत्ता और कोई कहते हैं कि पाँच थे और छठवाँ कुत्ता छिपी बातों में अनुमान चलाते हैं और कहते हैं कि सात थे और आठवाँ उनका कुत्ता। ऐ पैगम्बर! इन से कहो कि इस गिनती को तो मेरा पालनकर्ता ही जानता है, इनको बहुत थोड़े जानते हैं। तो ऐ पैगम्बर कहफवालो के विषय में झगड़ा मत करो, सिंहावलोकन का झगड़ा और कहफव.लो के सम्बन्ध में इनमें से किसी से पूछ-ताछ मत करो। (२२) (रुकू ३)

किसी काम के विषय में न कहा करो कि मैं इसको कल करूंगा परन्तु यह कहो कि ईश्वर चाहे तो इस काम को कल कर दूँगा, (२३) यदि कभी भूल जाया करो तो अपने पालनकर्ता को स्मरण करो और कह दो सम्भवतः मेरा पालनकर्ता इससे अधिक सीधा मार्ग मुझको बतावे। (२४) और कहफवाले अपनी * गुफा में ३०० वर्ष रहे और ९ साल और (२५) ऐ पैगम्बर! इस पर भी मनुष्य इस अवधि को न मानें तो उनसे कहो कि जितनी अवधि कहफवाले गुफा में रहे अल्लाह खूब जानता है। नभ और पृथ्वी की अदृष्ट का ज्ञान उसी को है, क्या ही देखने वाला और क्या ही सुनने वाला है। उसके अतिरिक्त मनुष्यों का कोई काम सम्भालनेवाला नहीं और न वह अपनी आज्ञा में किसी को सम्मिलित करता है। (२६) और ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता की पुस्तक से जो तुम पर आज्ञा उतरी है उसको पढ़ो, कोई उसकी बातों को बदल नहीं सकता और उसके अतिरिक्त तुम कहीं शरण न पाओगे। (२७) और जो मनुष्य प्रातः और संध्या अपने पालनकर्ता को स्मरण करते हैं और उसी की स्वीकृति चाहते हैं तू उनके साथ मिला रह और तेरी दृष्टी उन पर से हटने न पावे क्या साँसारिक जीवन के भोग ढूंढ़ता है और ऐसे व्यक्ति कहा न मान जिसके हृदय को हमने अपनी स्मृति दी से भुला दिया है और वह अपनी इच्छाओं के पीछे पड़ा है और उसकी साँसारिकता सीमा से बढ़ गई है। (२८) और ऐ पैग़म्बर! इन मनुष्यों से कहो कि यह कुरान तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से सत्य

---

* कहफवालों का हाल इतिहास में लिखा है। इनकार करनेवालों ने उनके विषय में मुहम्मद साहब से पूछा। आपने इस आशा पर कि वही (आयत) उतरेगी कह दिया कल बताऊंगा परन्तु आयत १८ दिन न आई। यह इसलिए कि आप जान लें कि हर बात का अधिकार ईश्वर को है और आगे से यों कहा करें कि यदि ईश्वर ने चाहा तो ऐसी-ऐसी बातें मैं इस समय करूंगा।

है बस जो चाहे माने और जो चाहे न माने, अस्वीकृतियों के लिए तो हमने ऐसी अग्नि तैयार कर रक्खी है जिसकी कनातें उनको चारों ओर से घेर लेंगी और प्रार्थना करेंगे तो जिस पानी से उनकी विनय की पहुंच की जायगी। वह इस प्रकार गरम होगा जैसे पिघला हुआ ताँबा और वह मुँहों को भूँन डालेगा। क्या ही बुरा पानी है और क्या बुरा आराम है। (२९) जो मनुष्य विश्वास लाये और उन्होंने शुभ काम किये जो व्यक्ति शुभ काम करे हम उसके बदले को निरर्थक नहीं होने दिया करते। (३०) यही मनुष्य हैं जिनके रहने के लिए स्वर्गिक उपवन हैं। इन मनुष्यों के मकानों के नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ सोने के कंकन पहिनाये जायँगे और वह महीन और मोटे रेशमी हरे कपड़े पहनेंगे और वहाँ सिंहासन पर तकिये लगाये बैठेंगे। क्या ही अच्छा बदला है और कितना आराम है। (३१) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से उन दो मनुष्यों का उदाहरण वर्णन करो जिन में से एक को हमने अंगूर के दो उपवन दिये थे और हमने उनके आस-पास खजूर के पेड़ लगा रक्खे थे और हमने दोनों उपवनों के मध्य स्थान में खेती लगा रक्खी थी। (३२) दोनों उपवन अपने फल लाये और फल लाने में किसी प्रकार की कमी नहीं की और दोनों के मध्य हमने नहर चालू की। (३३) तो उपवनों के स्वामी के पास एक दिन जिस दिन भिन्न-भिन्न उपज उपस्थित थी यह मनुष्य अपने किसी मित्र से बातें करते-करते बोल उठा कि मैं तुझ से धन में और मनुष्यों में अधिक हूं। (३४) यह बातें करता हुआ वह अपने उपवन में गया और घमंड और कृतघ्नता से अपने पर स्वयं ही बुरा कर रहा था कहने लगा कि मैं नहीं समझता कि यह उपवन कभी मिट जावे। (३५) मैं नहीं समझता कि प्रलय आनेवाली है और यदि में अपने पालनकर्ता की ओर लौटाया जाऊंगा तो जहाँ लौटकर जाऊँगा इससे बढ़कर वहाँ पाऊँगा। (३६) उसका मित्र जो उससे बातें करता जाता था, बोल

उठा कि क्या तू इसका अविश्वास करनेवाला है जिसने तुझको मिट्टी से फिर उत्पन्न किया, फिर तुझ को पूरा मनुष्य बनाया। (३७) परन्तु मैं तो यह विश्वास रखता हूं कि वही अल्लाह मेरा पालनकर्ता है और मैं अपने पालनकर्ता के साथ किसी को समकक्ष नहीं करता। (३८) जब तू अपने उपवन में आया तो तूने क्यों नहीं कहा कि यह सब ईश्वर की इच्छा से हुआ अन्यथा मुझमें तो ईश्वरकी सहायता के बिना कुछ भी बल नहीं, यदि धन और संतान के विचार से तू मुझको अपने से कम समझता है। (३९) तो अचरज नहीं मेरा पालनकर्ता तेरे उपवन से बढ़कर मुझको दे और तेरे उपवन पर नभ से कोई बला उतरे कि वह प्रातः को साफ मैदान होकर रह जाय। (४०) या उसका पानी बहुत नीचे उतर जाय और तू उसको किसी प्रकार ढूंढ़कर न ला सके। (४१) उसकी उपज फेर में आ गई तो वह उस लागत पर जो उपवन में लगाई थी अपने दोनों हाथ मलता रह गया और वह अपनी टट्टियों पर गिर पड़ा था और कहता जाता था कि क्या अच्छा होता यदि अपने पालनकर्ता के साथ किसी को साझी न ठहराता। (४२) उसका कोई ऐसा जत्था न हुआ कि ईश्वर के अतिरिक्त उसकी सहायता करता और न वह बदला ले सका। (४३) इसी से सब सच्चे अधिकार ईश्वर को हैं, वही बढ़कर और अच्छा बदला देनेवाला है। (४४) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से वर्णन करो कि साँसारिक जीवन का उदाहरण पानी जैसा है जिसको हमने नभ से बरसाया तो पृथ्वी की उपज पानी के साथ मिल गई फिर चूर-चूर- होकर रह गई जिसे हवायें उड़ाये-उड़ाये फिरती हैं और अल्लाह सर्वशक्तिमान हैं। (४५) ऐ पैगम्बर धन और सन्तान सांसारिक जीवन की शोभा है और अच्छे काम जिनका प्रभाव देर तक शेष रहे तुम्हारे पालनकर्ता के निकट उत्साह के विचार से बढ़कर है और आशा से भी बढ़कर हैं। (४६) मनुष्यो उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो, जिस दिन हम पर्वतों को हिलावेंगे

और ऐ पैगम्बर तुम पृथ्वीं को देख लोगे कि खुला मैदान पड़ा है और हम मनुष्यों को घेर बुलावेंगे और उनमें से किसी को नहीं छोड़ेंगे। (४७) पाँति के पाँति तुम्हारे पालनकर्ता के सामने प्रस्तुत किये जायँगे जैसा हमने तुमको पहली बार उत्पन्न किया वैसे ही तुम हमारे सामने आये परन्तु तुम यह विचार करते रहें कि हम तुम्हारे लिए कोई समय ही नही ठहरावेंगे। (४८) और मनुष्यों के कमेर का रजिस्टर रक्खा जायगा तो ऐ पैगम्बर तुम अपराधियों को देखोगे कि जो कुछ रजिस्टर में है उससे डर रहे हैं और कहते जाते हैं कि हाय हमारा दुर्भाग्य यह कैसा रजिस्टर है और जो कुछ इन मनुष्यों ने किया था कोई छोटी या बड़ी बात ऐसी नहीं जो उसमें न लिखी हो वह सब कर्मलेखे में लिखा हुआ पावेंगे और तुम्हारा पालनकर्ता किसी पर अन्याय नहीं करेगा। (४९) (रुकू ६)

जब हमने देवदूतों को आज्ञा दी कि आदमके आगे सिर झुकाओ तो इबलीस जो भूतों की जाति में से था के अतिरिक्त सिर झुकाया अपने पालनकर्ता की आज्ञा से निकल भागा तो मनुष्यो क्या मुझे छोड़-कर इबलीस को और उसके कुटुम्ब को मित्र बनाते हो यद्यपि वह तुम्हारे पुराने शत्रु हैं और अत्याचारियों का फल बुरा हुआ। (५०) हमने नभ और पृथ्वी के उत्पन्न करते समय अपितु स्वयं राक्षस के उत्पन्न करते समय भी राक्षस को नहीं बुलाया और हम ऐसे न थे कि मार्ग भुलानेवालों को अपना सहायक बनाते। (५१) और मनुष्यो उस दिन की चिन्ता से बेखटके न हो जिस दिन ईश्वर आज्ञा देगा कि जिनको तुम हमारा समकक्ष समझा करते थे उनको बुलाओ या उनको बुलावेंगे परन्तु वह इनको उत्तर ही न देंगे और हम इनके मध्य में आड़ कर देंगे। (५२) मार डालने वाले और अपराधी नरकाग्नि को देखेंगे और समझ पावेंगे कि वह उसमें गिरने वाले हैं और उनको उनसे कोई भागने का मार्ग नहीं मिलेगा। (५३) (रुकू ७)

हमने इस कुरान को मनुष्यों के लिए प्रत्येक प्रकार का उदाहरण वर्णन किये हैं परन्तु मनुष्य अधिक झगड़ालु है। (५४) जब मनुष्यों के पास शिक्षा आ चुकी तो अब विश्वास लाने और अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगने से इनको उसके अतिरिक्त और कौन काम रोकनेवाला हो सकता था कि अगले मनुष्यों जैसा चलन इनको भी मिले या हमारी दण्ड इनके सामने आ उपस्थित हो। (५५) हम पैगम्बरों को केवल इसलिए भेजा करते हैं कि शुभसंवाद सुनावें और डरावें और जो अस्वीकार करनेवाले हैं असत्य वातों का प्रमाणपत्र पकड़ कर झगड़े किया करते है जिससे झगड़े से सबको डिगावें और इन मनुष्यों ने हमारी आयतों को और हमारे दण्ड को जिसमें इनको डराया जाता है हँसी बना रक्खा है। (५६) और उससे बढ़कर अत्याचारी कौन है जो ईश्वर की आयतों से समझाये जाने पर फिर उसकी ओर से मुँह फेरे और अपने पहिले कामों को भूल जावे। हम ही तें इनके हृदयों पर पर्दे डाल दिये जिससे सत्य बात समझ न सकें और इनके कानों में एक प्रकार का बोझ उत्पन्न कर दिया है। और ऐ पैगम्बर यदि तुम इनको सत्य मार्ग की ओर बुलाओ तो यह कभी मार्ग पर आने वाला नहीं। (५७) और तुम्हारा पालनकर्ता वड़ा क्षमा करनेवाला कृपालु है। यदि इनके काम के बदले में इनको पकड़ना चाहता तो तुरन्त ही इन पर दण्ड उतार देता है परन्तु इनके लिए एक अवधि है जिससे इधर कहीं शरण नहीं पा सकते। (५८) आद और समूद की यह वस्तियाँ जिनको तुम देखते हो इन्होंने भी जव उच्छृक्षखलता की हमने उनको मिटा किया और इनके मार डालने की भी हमने एक अवधि नियत कर रक्खी है। (५९) (रुकू ८)

ऐ पैगम्बर जब मूसा* खिज्र के मिलाप के विचार से चले तो उन्होने अपने सेवक यूशा से कहा कि जब तक मैं दोनों नदियों के मिलने के

* एक दिन हजरत मूसा से किसी ने पूछा, "तुमसे भी अधिक ज्ञान किसी को है ?" मूसा ने कहा, "हम नहीं जानते।" यदि उन्होंने यों

स्थान पर न पहुंच लूँ निरन्तर चलूँगा या में कारनून तक चला ही जाऊंगा। (६०) फिर जब यह दोनों उन दो नदियों के संगम पर पहुंचे तो दोनों अपनी मछली भुनी हुई भूल गये तो मछली ने नदी में सुरंग के समान अपना मार्ग बना लिया। (६१) फिर जब आगे बढ़ गये तो मूसा ने अपने सेवक से कहा कि हमारा जलपान तो हमको दो। हमारी इस यात्रा से तो हमको वड़ी थकावट हुई। (६२) सेवक ने कहा आपने यह भी देखा कि जब उस पत्थर के पास ठहरे तो मैं मछली भूल गया और राक्षस ही ने मुझको भुला 'दया कि मैं आप से उसका वर्णन करता और मछली ने अनोखे ढंग से नदी में जाने का अपना मार्ग कर लिया। (६३) मूसाने कहा कि वही है जिस की हम खोज में थे फिर दोनो अपने पैरों के निशानों के खोज लगाते–लगाते उलटे पाँव फिरे। (६४) तो उन्होंने हमारे मानने वालों में से एक सेवक अर्थात खिज्र को पाया जिस पर हमने अपनी कृपा की और अपनी ओर उसको एक ज्ञान सिखाया था। (६५) मूसा ने खिज्र से कहा कि क्या में तेरे साथ इस शर्त पर रहूं कि जो ज्ञान तुझको सिखाया गया हैं तू कुछ मुझको भी सिखा दे। (६६) खिज्र ने कहा तू मेरे साथ न ठहर सकेगा। (६७) और जो वस्तु तुम्हारे ज्ञान के घेरे से बाहर है उस पर तू कैसे सन्तोष कर सकता है। (६८) मूसा ने कहा कि जो ईश्वर ने चाहा तू मुझको संतोष करने वाला पावेगा और मैं तेरी किसी आज्ञा को न टालूँगा। (६९) खिज्र ने कहा यदि तुझको मेरे साथ रहना हैं ती जब तक मैं तुझसे किसी बात की चर्चा न करूँ तू मुझसे कोई प्रश्न न कर। (७०) (रुकू ९)

कहा होता कि हम ऐसे अल्लाह के बहुतेरे बन्दे हैं, तो बहुत उचित होता इस लिए उन पर वही (आयत) आई कि एक सेवक हमारा है जो नदी के संगम पर रहता है उससे मिलो। वह तुमसे अधिक ज्ञान रखता है।

फिर मूसा और खिज्र दोनों यहाँ तक चले कि जब दोनों नौका में सवार हुए तो खिज्र ने एक तख्त तोड़ कर शेष नौका को फाड़ दिया। मूसा ने कहा कि तूने क्या नौका को इसलिए फाड़ा कि नौका के मनुष्यों को समुद्र में डुबो दे। तूने एक अनोखी बात की है। (७१) खिज्र ने कहा क्या मैंने न कहा था कि तू मेरे साथ न ठहर सकेगा (७२) मूसा ने कहा कि तू मेरी भूल-चूक न पकड़ और मेरे काम के कारण मुझ पर कठोरता मत डाल। (७३) फिर दोनों और बढ़े यहां तक कि मार्ग में एक लड़के से मिले तो खिज्र ने उसको मार डाला। मूसा ने कहा क्या बिना किसी जान के बदले तूने एक निरपराध मनुष्य को मार डाला, तूने बड़ा अनुचित कार्य किया है। (७४)

पवित्र कुरान

दूसरा भाग

सूरे कहफ

सोलहवाँ पारा (काल अलम अकुल)

खिज्र ने कहा क्या मैंने तुमसे नहीं कहा था कि मेरे साथ तुम सन्तोष नहीं कर सकोगे। (७५) मूसा ने कहा कि इसके बाद अगर मैं तुमसे कुछ भी पूछूं तो मुझको अपने साथ न रखना फिर मैं तुमसे कुछ उज्र न करूंगा। (७६) फिर आगे बढ़े यहां तक कि गाँववालों के पास पहुंचे और वहां के लोगों से खाने को माँगा उन्होंने उनको खाना देना मंजूर न किया। इतने में उन्होंने गाँव में एक दीवार देखी जो गिरा चाहती थी। खिज्र ने उसको खड़ा कर दिया। इस पर मूसा ने कहा अगर तुम चाहते हो इन लोगों से दीवार के खड़े कर देने की मजदूरी ले सकते थे। (७७) खिज्र ने कहा अब मुझमें और तुझमें जुदाई पड़ गई जिस पर तू सन्तोष न कर सका। मैं तुझको उसकी सच्चाई बताये देता हूं। (७८) नाव तो गरीबों की थी। वह नदी में चलाकर पेट पालते थे। मैंने चाहा कि उसको ऐबदार कर दूं क्योंकि इनके सामने की तरफ एक बादशाह था जो हर एक नाव को जब्त कर लिया करता था। (७९) और वह जो लड़का था उसके माता-पिता ईमानवाले थे, हमको यह डर हुआ कि यह लड़का

सरकशी और इन्कार से उनके सिरों पर न बला डाले (८०) इसलिए हमने यह इरादा किया कि उसको मार दिया और उनका पालनकर्ता उसके बदले में उसको पाक और उससे अच्छे विचार वाला पुत्र देगा। (८१) रही दीवार सो शहर के दो अनाथ लड़कों की थी, उसके नीचे उन्हीं लड़कों का धन गड़ा हुआ था और उसका पिता अच्छा आदमी था। बस तुम्हारे पालनकर्ता ने चाहा कि दोनों लड़के अपनी जवानी को पहुँच कर अपना धन निकाल लें। तुम्हारे पालन-कर्ता की यह कृपा थी और मैंने जो कुछ किया सो अपने आप से नहीं किया अपितु ईश्वर की आज्ञा से यह उसका भेद है जिस पर तुम सन्तोष न कर सके। (८२) (रुकू १०)

ऐ पैगम्बर लोग तुमसे जुलकरनैन सिकन्दर का हाल पूछते हैं। तुम कहो कि मैं तुमको उनका थोड़ा-सा हाल पढ़कर सुनाता हूं। (८३) हमने उसको तमाम जमीन पर सामर्थ्यवान किया और हमने उसको हर तरह के साज-समान दिए। (८४) वह एक सामान के पीछे पड़ा यात्रा की तय्यारी की। (८५) यहां तक कि जब सूरज के डूबने की जगह पर पहुँचा तो उसको सूरज ऐसा दिखाई दिया कि वह काली-काली कींचड़ के कुण्ड में डूब रहा है और देखा कि उस कुण्ड के करीब एक जाति बसी है। हमने कहा कि ऐ जुलकरनैन ! चाहो इनको दण्ड दो या इनको भला बनाओ। (८६) जुलकरनैन ने कहा जो सरकशी करेगा उसको तो हम दण्ड देंगे, वह अपने पालन-कर्ता के सामने लौटकर जायगा और वह भी उसे बुरी मार देगा। (८७) और जो विश्वास लाये और अच्छे काम करे उसके बदले में उसको भलाई मिलेगी और हम उससे नर्मी से पेश आयेंगे। (८८) उसने यात्रा की तैयारी की। (८९) यहाँ तक कि जब वह सूरज के निकलले की जगह पहूंचा तो उसको ऐसा मालूम हुआ कि सूरज कुछ लोगों पर निकलता है जिनके लिए हमने सूरज के इधर कोई आड़ नहीं रखौ। (९०) ऐसा ही था और जुलकरनैन के पास जो कुछ था

हमको उससे पूरी जानकारी थी। (९१) फिर वह एक सामान के पीछे पड़ा। (९२) यहाँ तक कि जब चलते-चलते एक पहाड़ की घाटी के बीच में पहुँचा तो किनारों के इधर एक जाति को पाया जो भाषा व बात को नहीं समझते थे। (९३) उन लोगों ने अपनी बोली में कहा कि ऐ जुलकरनैन ! इस घाटी के उधर से याजूज और माजूज* मुल्क में आकर फसाद करते हैं तो हम आपके लिए चन्दा जमा कर दें (९४) जुलकरनैन ने कहा कि मेरे पालनकर्ता ने जो मुझे सामर्थ्य दी है काफी है चन्दे की आवश्यकता नहीं बल से मेरी सहायता करो, मैं तुममें और उसमें एक दीवार खींच दूंगा। (९५) लोहे की सिलें हमको ला दो वे लाये यहाँ तक कि जब जुलकरनैन ने दोनों किनारों के बीच को पाटकर बराबर कर दिया तो आज्ञा दी कि अब इसको धौंको यहां तक कि अब लोहे की दीवार को लाल अंगारा कर दिया तो कहा कि अब हमको ताँबा ला दो कि उसको पिघलाकर इस दीवार पर डाल दें। (९६) गरज इस तदबीर से ऐसी ऊँची और मजबूत दीवार तैयार हो गई कि याजूज माजूज न उस पर चढ़ सकते थे और न उसमें सूराख कर सकते थे। (९७) जुलकरनैन ने कहा कि यह मेरे पालनकर्ता की कृपा है। लेकिन जब मेरे पालनकर्ता का वादा आवेगा तो इस दीवार** को गिरा देगा और मेरे पालनकर्ता का वादा सच्चा है। (९८) और हम उस दिन किसी को किसी में मौज करने के लिए छोड़ देंगे और नरसिंगा फूंका जावेगा, फिर हम सब लोगों को जमा करेंगे। (९९) और उसी दिन काफिरों के सामने नरक पेश करेंगे। (१००) जिनकी आखें हमारी यादगारी से पर्दे में

---

*याजज और माजूज दो जातियों के नाम हैं। यह घाटी पार करके लूटकार किया करते थे।

**यह लोहे की दीवार भी प्रलय के निकट गिर पड़ेगी।

थीं और वह सुन न सकते थे। * (१०१) (रुकू ११)

क्या काफिर इस ख्याल में हैं कि हमको छोड़कर हमारे बन्दों को काम का संभालने वाला बनावें। हमने काफिरों की मेहमानी के लिए नरक तैयार कर रखा है। (१०२) कहो तो बताऊँ कि किसके काम अकारथ हैं। (१०३) वह मनुष्य जिनकी दुनियाँ की जिन्दगी में कोशिश गई गुजरी हुई और वह इसी ख्याल में हैं कि वह अच्छे काम कर रहे हैं (१०४) यही वह मनुष्य हैं जिन्होने अपने पालनकर्ता की आयतों को और उनके सामने हाजिर होने को न माना तो इनके काम अकारथ हो गये तो प्रलय के दिन हम इनकी तौल न खड़ी करेंगे (१०५) यह नरक उनका बदला है कि उन्होंने मना किया और हमारी आयतों और हमारे पैगम्बरों की हंसी उड़ाई। (१०६) जो मनुष्य विश्वास लाये और नेक काम किये उनकी मेहमानी के लिए जन्नत के बाग हैं। (१०७) जिनमें वह हमेशा रहेंगे, यहाँ से उठना नहीं चाहेंगें। (१०८) ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कहो कि अगर मेरे पालन-कर्ता की बातों को लिखने के लिए समुद्र स्याही हो, वह लिखते-लिखते समाप्त हो जाय चाहे वैसा समुद्र और भी सहायता को लिया जाय। (१०९) ऐ पैगम्बर कहो कि मैं तुम्हीं जैसा आदमी हूं मेरे पास यह वहीईश्वरीय सन्देश आया है कि तुम्हारा पूजित केवल एक ईश्वर ही है तो जिसको अपने पालनकर्ता के मिलने की इच्छा होवे उसे भले काम करना चाहिए और किसी को अपने पालनकर्ता की पूजा में शामिल न करना चाहिए। (११०) (रुकू १२)

---

*यानी जो लोग तुम्हारे बताये मार्ग पर न चलते थे और बताने वाले की बात न सुनते थे।

सूरे मरियम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९८ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो निहायत रहमवाला मेहरवान है । काफ-हा-या-ऐन-स्वाद । (१) ऐ पैगम्बर यह उस मेहरवानी का हाल है जो तुम्हारे पालनकर्ता ने अपने सेवक जकरिया पर की थी । (२) कि जब उन्होंने अपने पालनकर्ता को दबी आवाज से पुकारा । (३) बोले कि ऐ पालनकर्ता ! मेरी हड्डियाँ सुस्त पड़ गई हैं और सिर बुढ़ापे से भड़क उठा है । और ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैं तुझसे माँग कर खाली नहीं रहा । (४) अपने पीछे मुझको भाई बन्दों से डर है और मेरी बीवी बांझ है, बस अपनी तरफ से मुझको एक बेटा दे । (५) जो मेरा वारिस हो और याकूब की सन्तान का वारिस हो और ऐ मेरे पालनकर्ता ! उसे मनमाना बना । (६) ईश्वर ने कहा जकरिया, हम तुमको एक लड़के की शुभ सूचना देते हैं जिनका नाम यहिया होगा । और इससे पहिले हमने इस नाम का कोई आदमी उत्पन्न नहीं किया । (७) जकरिया ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता ! मेरे यहाँ लड़का कैसे हो सकता है जब कि मेरी पत्नि बाँझ है और मैं बिल्कुल बूढ़ा हो गया हूं (८) कहा ऐसा हा तुम्हारा पालनकर्ता कहता है कि तुमको इसमें बेटा देना हमारे लिये आसान है और पहिले तुम्हीं को हमने पैदा किया हालाँकि तुम कुछ भी न थे । (९) जकरिया ने निवेदन किया कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझे कोई निशानी बता । कहा कि तुम्हारी निशानी यही है कि तुम बराबर तीन रात दिन लोगों से बात नहीं कर सकोगे। (१०) फिर जकरिया कोठे से निकलकर लोगों के सामने आया तो इशारे से उनको समझा दिया कि सुबह औव शाम ईश्वर की पूजा में लगे रहो । (११) गरज यहिया पैदा हुआ । हमने उसको आज्ञा दी ऐ यहिया ! किताब को कठोरता से लिये रहना और अभी वह लड़के

ही थे कि हमने अपनी कृपा से उनको पैगम्बरी दी। (१२) और दया और शुद्ध स्वभाव दिया और वह संयमी था। (१३) और अपने मां-बाप की सेवा करता था और जबरदस्त बेहुक्म न था। (१४) और सलाम है उस पर जिस दिन पैदा हुआ और जिस दिन मरेगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा होगा। (१५) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर कुरान में मरियम का जिक्र करो कि जब वह अपने लोगों से अलग होकर पूरब की तरफ जा बैठी। (१६) और लोगों की तरफ पर्दा कर लिया तो हमने अपनी आत्मा को उनकी तरफ भेजा, फिर हमारी आत्मा पूरा मनुष्य बनकर उसके सामने आई। (१७) मरियम कहने लगी अगर तुम संयमी हो तो मैं ईश्वर की शरण चाहती हूं। (१८) बोले कि मैं तेरे पालनकर्ता का भेजा हुआ फरिश्ता हूं, इसलिए आया हूं कि तुमको एक पवित्र लड़का दे जाऊं। (१९) वह बोली कि मेरे यहाँ कैसे लड़का हो सकता है जबकि मुझे किसी मनुष्य ने नहीं छुआ और मैं कभी बदकार नहीं रही। (२०) शुद्धात्मा ने कहा ऐसा ही तुम्हारा पालनकर्ता कहता है कि यह मामला मुझ पर आसान है और मनुष्यों के लिये हम उसको एक निशानी और दया अपनी ओर से किया चाहते हैं और यह काम पहिले सृष्टि के आदि से ठहर चुका है। (२१) इस पर मरियम के गर्भ रह गया और वह फिर गर्भ लेकर कहीं अलग दूर के मकान में जा बैठी। (२२) फिर उसको एक खजूर के पेड़ की जड़ के पास जनने का दर्द उठा। मरियम ने कहा अगर मैं इससे पहिले मर चुकी होती और भूली-बिसरी हो गई होती। (२३) उसको उसके नीचे से आवाज आई कि उदास न हो, तेरे पालनकर्ता ने तेरे नीचे एक झरना बहा दिया है। (२४) और खजूर की डालों को अपनी ओर हिलाओ उससे तेरे लिए पक्के खजूर गिरेंगे। (२५) फिर खाओ और झरने का पानी पियो और पुत्र को देख कर आँखें ठण्डी करो। फिर कोई आदमी दिखलाई पड़े और वह तुझसे पूछे तो इशारे से कह देना कि मैंने दयालु रहमान का रोजा

रक्खा है। सो मैं आज किसी मनुष्य से न बोलूँगी। (२६) फिर मरियम लड़के को गोद में लिये अपनी जाति के लोगों के पास आई। वह देख कर कहने लगे कि ऐ मरियम! यह तूफान कहाँ से लाई (२७) हारूँ की बहिन! न तो तेरा बाप ही व्यभिचारी था और न तेरी माता ही व्यभिचारिणी थी। (२८) तो मरियम ने बच्चे की ओर इशारा किया कि जो कुछ पूछना है उससे पूछ लो। वह कहने लगे कि हम गोद के बच्चे से कैसे बात करें। (२६) इस पर बच्चा बोला कि मैं अल्लाह का सेवक हूं, उसने मुझको किताब इन्जील दी और मुझको पैगम्बर बनाया। (३०) और कहीं भी रहूं मुझको बरकत दी और मुझको आज्ञा दी कि जब तक जिन्दा रहूं नमाज पढ़ूँ और जकात दूँ। (३१) और मुझको अपनी माँ का सेवक बनाया और मुझको जालिम और अभागा नहीं बनाया। (३२) और मुझ पर सलाम है कि जिस दिन मैं पैदा हुआ और जिस दिन मरूंगा और जिस दिन दुबारा जिन्दा उठ खड़ा हूंगा। (३३) यह ईसा मरियम का पुत्र है, सच्ची-सच्ची बातें जिसमें लोग झगड़ा करते हैं। (३४) ईश्वर ऐसा नहीं कि बेटा बनावे, वह पवित्र है। जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो इतना कह देता है कि हो और हो जाता है। (३५) अल्लाह मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है तो उसी की पूजा करो वही सीधी राह है। (३६) फिर आपस में फूट न डालने लगो, सो उन मनुष्यों के हाल पर अफसोस है जो इन्कार करते हैं कि बड़े दिन प्रलय में फिर हाजिर होना पड़ेगा। (३७) जिस दिन यह लोग हमारे सामने आवेंगे, क्या कुछ सुनेंगे क्या कुछ देखेंगे लेकिन जालिम आज के दिन खुली गुमराही भटकने में पड़े हैं। (३८) और इन लोगों को पछतावे के दिन से डराओ जब काम का फैसला कर दिया जावेगा और यह लोग भूल और ईमान नहीं लाते। (३९) हम जमीन के वारिस होंगे और उन लोगों के भी जो तमाम जमीन पर हैं और हमारी ओर सबको लौटकर आना होगा। (४०) (रुकू २)

और कुरान में इब्राहीम का हाल बताओ कि वह बड़े ही सच्चे पैगम्बर थे। (४१) जब उन्होंने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता! आप क्यों इन मूर्तियों की पूजा करते हैं जो न सुनते और न देखते और ने कुछ काम आपके आ सकते हैं। (४२) ऐ पिता! मुझको ईश्वर की ओर से ऐसी सूचना मिली है जो तुझको नहीं मिली। सो तू मेरे पीछे हो, तुझको सीधी राह दिखाऊंगा। (४३) ऐ पिता! राक्षस को न पूज क्योंकि राक्षस ईश्वर से फिरा हुआ है। (४४) ऐ पिता! मुझको इस बात से डर है कि ईश्वर से कोई दण्ड न आ लगे और तू राक्षस का साथी हो जावे। (४५) इब्राहीम के पिता ने कहा कि ऐ इब्राहीम क्या तू मेरे पूजितों से फिर हुआ है। अगर तू नहीं मानेगा तो मैं तुझको पथराव कर दूंगा और अपनी खैर चाहता है तो मेरे सामने से दूर हो। (४६) इब्राहीम ने कहा अच्छा तो मेरा सलाम जुदाई है, मैं अपने पालनकर्ता से तेरे लिए क्षमा माँगूँगा वह मुझ पर मेहरबान है। (४७) मैं तुम मूर्ति पूजा वालों को और इन मूर्तियों से जिनको तुम ईश्वर के सिवाय पुकारा करते हो अलग होता हूं और अपने पालनकर्ता को पुकारूँगा, आशा है कि मैं अपने पालनकर्ता से दुआ माँगकर अभागा नहीं बनूंगा। (४८) तो जब इब्राहीम उन मूर्ति पूजकों से और उन मूर्तियों से जिनको वह ईश्वर के अतिरिक्त पूजते थे अलग हो गये, हमने उनको इसहाक और याकूब* दिये और सबको हमने पैगम्बर बनाया। (४९) और अपनी कृपा से उनको सब कुछ दिया और उनके लिए सच्चे और बड़े शब्द कहे। (५०) (रुकू ३)

और किताब में मूसा का वर्णन करो कि वह चुना हुआ और पैगम्बर था। (५१) और हमने उसको पहाड़ तूर की दाहिनी ओर की

---

* इब्राहीम के बेटे और पोते। यहाँ इस्माईल का नाम नहीं लिया क्योंकि वह इब्राहीम के साथ नहीं रहे।

पुकारा और भेद कहने के लिए उसको पास बुलाया। (५२) और अपनी कृपा से उसके भाई हारू को पैगम्बर बनाकर छोड़ दिया। (५३) और कुरान में इस्माईल का वर्णन कर कि वह वादे का सच्चा और पैगम्बर था। (५४) और अपने घर वालों को नमाज और जकात की आज्ञा देता और ईश्वर को पसन्द था। (५५) और पुस्तक में इद्रीक का वर्णन कर कि वह सच्चा पैगम्बर था। (५६) और हमने उसको उठा कर बड़ी ऊंची जगह दाखिल किया। (५७) यह लोग हैं जिन पर अल्लाह ने कृपा की और आदम की सन्तान हैं और उन लोगों की सन्तान हैं जिनको हमने नूह के साथ नाव में सवार कर लिया था और इब्राहीम और इसराईल की सन्तान हैं और लोर्गो की सन्तान में से हैं जिनको हमने सच्ची राह दिखलाई और चुन लिया। जब अल्लाह की आयतें उनको पढ़कर सुनाई जाती थीं सिर झुकाते थे और रोते थे। (५८) फिर उनके बाद ऐसे नालायक पैदा हुए जिन्होंने जाते छोड़ दीं और बुरी इच्छाओं के पीछे पड़ गये सो उनकी गुमराही उनके आगे आवेगी। (५९) मगर जिसने क्षमा माँगी और ईमान लाये और अच्छे काम लिये तो ऐसे लोग बागों में दाखिल होंगे और उन पर अत्याचार न होगा। (६०) यानी बिना देखे बाग जिनका ईश्वर ने अपने दासों से वादा कर रक्खा है। उसका वादा आने वाला है। (६१) वहाँ कोई बुरी बात उनके कान में न पड़ेगी सिवाय सलाम* के और वहाँ उनको खाना सुबह शाम मिला करेगा। (६२) यही वह स्वर्ग है जिसे अपने दासों में से जो संयमी होगा उसे उसका वारिस बनायेंगे। (६३) और ऐ पैगम्बर हम**फरिश्ते तुम्हारे पालनकर्ता की बिना आज्ञाके दुनियामें नहीं

*** यह स्वर्ग का वर्णन है। सलाम से यहाँ अच्छी और पवित्र बातों से प्रयोजन है।**

*** यह उत्तर उस प्रश्न का है जो मुहम्मद साहब ने जिब्रील से पूछा था। एक बार वह कई दिन के बाद आये तो नबी ने रोज न आने**

आ सकते। जो कुछ हमारे आगे होने वाला है और जो कुछ हमसे पहले हो चुका है और जो कुछ इन दोनों के बीच में है सब उसी की आज्ञा से है और तेरा पालनकर्ता भूलने वाला नहीं। (६४) आसमान जमीन का पालने वाला और उन चीजों का जो नभ-पृथ्वी के बीच में हैं तो उसी की पूजा में लगे रहे और उसकी पूजा को बरदाश्त करो, भला तुम्हारी जान में जैसा कोई और भी है। (६५) (रुकू ४)

और आदमी पूछा करता है कि जब मैं मर जाऊंगा तो क्या दुबारा जीवित हो जाऊंगा। (६६) क्या आदमी याद नहीं करता कि हमने पहले इसको पैदा किया था और वह कुछ भी न था। (६७) तो ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कसम हम उन्हें राक्षस के साथ इकट्ठा करेंगे और नरक के गिर्द घुटनों के बल बिठलायेंगे। (६८) फिर हर गुट में से उन लोगों को अलग करेंगे जो ईश्वर से अकड़े फिरते थे। (६९) फिर जो लोग नरक में जाने के योग्य हैं हम उनको खूब जानते हैं। (७०) और तुममें से कोई नहीं जो नरक में होकर न गुजरे, यह वादा तेरे पालनकर्ता पर लाजिम हो चुका है। (७१) फिर हम संयमियों को बचा लेंगे और अवज्ञाकारियों को उसी में पड़ा छोड देंगे। (७२) और जब हमारी खुली आयतें लोगों को पढ़कर सुनाई जाती हैं तो काफिर मुसलमानों से पूछने लगते हैं कि हक दोनों फकीरों में से दर्जा किसका अच्छा है और मजलिस किसकी अच्छी। (७३) और हम इससे पहले वहुत-सी जमातों को जो समान और दिखावे में अच्छी थीं मिटा चुके हैं। (७४) ऐ पैगम्बर कहो कि जो मनुष्य भूले हुए हैं ईश्वर उसको लम्बा खींचे* यहाँ तक कि जब उस चीज को देख लें जिसका उससे

का कारण पूछा। जिब्रील ने कहा, "मैं ईश्वर की आज्ञा से आता हूँ। अपनी और से नहीं आता।

* यानी ढील दिये जाता है।

प्रण किया जाता है यानी दण्ड या प्रलय तो उस समय इनको मालूम हो जायगा कि अब किसका रुतबा बुरा और किसका कमजोर है। (७५) और जो लोग सीधी राह पर हैं अल्लाह उनको ज्यादा शिक्षा देता है और अच्छे काम का जिनका प्रभाव बाकी रहे अच्छा बदला मिलता है और उनका लौट आना भी अच्छा है। (७६) भला तुमने उस मनुष्य को देखा जिसने हमारी आयतों से मना किया और कहने लगा प्रलय होगी तो वहाँ भी मुझको धन और सन्तान मिलेगी*। (७७) क्या उसको गैब की खबर लग गई है या इसने ईश्वर से प्रण कर लिया है। (७८) कदापि नहीं जो कुछ यह बकता है हम लिख लेते हैं और इसका दण्ड बढ़ाते चले जायंगे। (७९) और यह जो धन और सन्तान उसके पास है अन्त में हम उससे ले लेवेंगे और यह अकेले हमारे सामने आवेगा। (८०) और मुशरिकों ने जो ईश्वर के अलावा पूजित बना रक्खे हैं ताकि वे इनके सहायक हों। (८१) कभी नहीं यह पूजित इनकी पूजा को मना करेंगे और उलटे इनके शत्रु हो जायंगे। (८२) (रुकू ५)

क्या तुमने नहीं देखा कि हमने राक्षसों को काफिरों पर छोड़ रक्खा है कि वह उनको बढ़ावा देते रहते हैं। (८३) तो तुम इन राक्षसों पर दण्ड आने की जल्दी न करो हम उनके लिए दिन गिन रहे हैं। (८४) जिस दिन हम संयमियों को ईश्वर के सामने अतिथियों की तरह जमा करेंगे। (८५) और पापियों को प्यासे नरक की ओर हाँकेंगे। (८६)

---

* एक काफिर धनवान ने एक मुसलमान की मजदूरी न दी और कहा, "तू अपना धर्म छोड़ दे तो मजदूरी दूंगा।" मुसलमान बोला, "तू मरकर फिर जिये तो भी मैं अपना ईमान न बदलूं।" इस पर पहला बोला, "मैं फिर जिऊंगा तों यही धन और सन्तान पाऊंगा।" इस पर कहा है कि वहाँ ईमान काम आवेगा, धन नहीं।

वहाँ अनुमति का अधिकार होगा, हां जिसने ईश्वर से प्रण लिया है। (८७) और कोई-कोई कहते हैं कि ईश्वर पुत्र रखता है। (८८) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि तुम ऐसी कठिन बात कहते हो। (८९) जिससे आसमान फट पड़े और जमीन फट जावे और पर्वत काँप कर गिर पड़े। (९०) इसलिए कि ईश्वर के लिए पुत्र सिद्ध करते हैं। (९१) और इस-लिए कि ईश्वर के योग्य नहीं कि पुत्र बनावे। (९२) आकाश और पृथ्वी में कोई नहीं है जो ईश्वर के आगे दास होकर न आवे। (९३) ईश्वर ने इनको घेर लिया और गिन रक्खा है। (९४) और यह सब प्रलय के दिन अकेले उसके सामने आवेंगे। (९५) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनके लिए ईश्वर मित्र पैदा करेगा। (९६) तो हमने इस कुरान को तुम्हारी भाषा में इस लिए आसान कर दिया है कि तुम इस से संयमियों को खुशखबरी सुनाओ, झगड़ालुओं को दण्ड से डराओ। (९७) और इनसे पहले हम बहुत से सम्प्रदायों गुटों को मार चुके हैं भला अब तुम उनमें से किसी को देखते हो या उनमें से किसी की आवाज सुनते हो। (९८) (रुकू ६)

सूरे ताहा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १३५ आयतें और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो बहुत ही कृपालु है। ता-हा। (१) ऐ पैगम्बर हमने तुम पर कुरान इसलिए नहीं उतारा* कि तुम कष्ट उठाओ

*** जब कुरान उतरने लगा तो पैगम्बर साहब पहले से अधिक खुदा की पूजापाठ करने लगे। रात-रात भर खड़े होकर नमाज पढ़ते। इसको देखकर काफिर कहते, "कुरान तो आपके लिए मुसीबत बन गया।" इसके उत्तर में यह आयतें उतरीं और ज्यादा पूजापाठ से रोका।**

(२) हाँ यह कुरान शिक्षा है उसी के लिए जो ईश्वर से डरता है। (३) यह उसका उतारा हुआ है जिसने पृथ्वी और ऊँचे आकाश को पैदा किया। (४) रहमान कृपालु अर्श तख्त पर विराज रहा है। (५) उसी का है जो कुछ नभ में है और जो कुछ पृथ्वी में है और जो कुछ दोनों के बीच में है और जो कुछ मिट्टी के नीचे है, उसी का है। (६) और अगर तू पुकार कर बात करे तो वह भेद को और छिपी हुई बात को जानता है। (७) अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं अच्छे नाम उसी के हैं। (८) और क्या तुमने मूसा की पक्की बात सुनी है। (९) जब उनको आग* दिखलाई दी तो उन्होंने अपने घर के लोगों से कहा ठहरो मुझको आग दिखाई दी है, आश्चर्य नहीं उससे तुम्हारे लिए प्रकाश-ज्ञान ले आऊँ या आग से मार्ग का पता मालूम करूँ। (१०) फिर जब मूसा वहाँ आये तो उनको वहाँ आवाज आई कि हे मूसा! (११) मैं तेरा पालनकर्ता हूं, तू अपनी जूतियाँ उतार डाल, तू तौबा के पाक मैदान में है। (१२) और मैंने तुमको पैगम्बरों के लिए चुना है तो जो कुछ आज्ञा होती है उसको कान लगा कर सुनो। (१३) कि मैं ही अल्लाह हूं मेरे सिवाय कोई पूजित नहीं तुम मेरी ही पूजा किया करो और मेरी याद के लिए नमाज पढ़ा करो। (१४) प्रलय आने वाली है मैं उसके समय को छिपाता हूं ताकि हर आदमी डर से नेक काम करने का प्रयत्न करे। (१५) और प्रलय में उसको प्रयत्न का बदला मिले। तो ऐसा न हो कि जो आदमी प्रलय का यकीन नहीं रखता और अपनी दिली इच्छा के पीछे पड़ा है तुमको प्रलय से रोके

---

*मूसा जब मदयन से मिस्र को चले तो उनके साथ बहुत सी बकरियाँ और उनकी स्त्री भी थी। रास्ते में स्त्री को प्रसव की पीड़ा उठी। इस समय बड़ी सर्दी थी और वह जंगल में भटक रहे थे। इतने में मूसा को दूर से आग दिखाई दी। यह आग न थी बल्कि ईश्वर की लीला थी। इन आयतों में इसी बात का विवरण है।

रक्खे कि तू बरबाद हो जावे। (१६) और मूसा तुम्हारे दाहिने हाथ में यह क्या है ? (१७) मूसा ने कहा यह मेरी लाठी है, मैं इस पर सहारा लगाता हूं और इसी से अपनी बकरियों के लिए पत्ती झाड़ता हूं और इसमें मेरे और भी मतलब हैं। (१८) कहा ! ऐ मूसा ! इसको जमीन पर डाल दे। (१९) इस पर मूसा ने लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक भागता हुआ साँप बन गई। (२०) कहा इसको पकड़ लो और डरो मत, हम इसको फिर वैसा ही कर देंगे। (२१) और अपने हाथ को सिकोड़ कर अपनी बगल में रख लो और फिर निकालो तो वह बिना किसी तरह की बुराई के सफेद निकलेगा, यह दूसरा चमत्कार है। (२२) हम तुमको अपने बड़े प्रमाण दिखलायें (२३) अच्छा तू फिरऔन के पास चला जा, उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (२४) (रुकू १)

मूसा ने कहा हे मेरे पालनकर्ता ! मेरा हृदय खोल दे। (२५) और मेरे काम को मेरे लिए आसान कर। (२६) और मेरी जीभ की गाँठ खोल दे। (२७) ताकि लोग मेरी बात समझें* (२८) और मेरे घरवालों में से काम बनाने वाला सहायक दे। (२९) मेरे भाई हारूँ को। (३०) उससे मेरी हिम्मत बँधा (३१) और मेरे काम में उसे मिला दे। (३२) ताकि हम दोनों तेरी पवित्रता अधिक बना सकें। (३३) और तेरी यादगारी में बहुत लगे रहें। (३४) तू हमारे हाल को खूब देख रहा है। (३५) कहा मूसा तुम्हारी अभिलाषा पूरी हुई। (३६) और हम तुम पर एक बार और भी कृपा कर चुके हैं। (३७) हमने तुम्हारी माँ को आज्ञा भेजी जिसका हाल आगे बताया जाता है। (३८) यह कि

---

* कहा जाता है कि मूसा हकलाकर बात करते थे। इसलिए प्रार्थना की कि उनकी जीभ की गाँठ खुल जाय और वह ठीक-ठीक बोलने लगे।

उस मूसा को संदूक में रखकर नदी में डाल दो। नदी उस सन्दूक को किनारे पर लगा देगी। उसको हमारा शत्रु और मूसा का शत्रु फिरऔन ले लेगा *और ऐ मूसा! हमने तुझ पर अपनी तरफ से प्रेम दिया। और अर्थ यह था कि तेरा हमारी ओर से पालन-पोषण हो। (३९) जबकि तुम्हारी बहिन विदेशी बनकर कहती फिरती थी कि मैं तुमको ऐक ऐसी धाय बतला दूँ जो उसको पाले। हमने तुमको फिर तुम्हारी मां के पास पहुंचा दिया ताकि उसकी आँखें ठन्डी रहें और दुःख और तूने एक आदमी को मार डाला तो हमने तुमको उस दुःख से छुटकारा दिया। अतः यह कि हमने तुमको खूब ठोक-बजाकर आजमाया। फिर तू कई वर्ष मदियन के लोगों में रहा। फिर तू भाग्य से यहाँ आया। (४०) और मैंने तुझको अपने लिए चुन लिया है। (४१) तुम और तुम्हारा भाई हमारे चमत्कार लेकर जाओ और हमारी यादगारी में सुस्ती न करना। (४२) दोनों फिरऔन के पास जाओ, उसने बहुत सिर उठा रक्खा है। (४३) फिर उससे नर्मी से बात करो शायद वह समझ जावे या डरे। (४४) दोनों भाइयों ने प्रार्थना की कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हम इस बात से डरते हैं कि हम पर ज्यादती और सरकशी न करने लगे। (४५) कहते डरो मत हम तुम्हारे साथ सुनते और देखते हैं। (४६) अभिप्राय यह कि उसके पास जाओ और उससे कहा कि हम दोनों आपके पालनकर्ता के भेजे हुये हैं। तू इसराईल के पुत्रों को हमारे साथ

---

* फिरऔन बनी इसराइल के बेटों को मार डालता था क्योंकि उसे मालूम था कि उसके राज्य को उलटने के लिए बहुत शीघ्र एक बच्चा पैदा होने वाला है। जब मूसा का जन्म हुआ तो उनकी मां डरीं कि यह भी मार न डाले जायें। उनको स्वप्न में बताया गया कि बच्चे को संदूक में रख कर नदी में डाल दो। उन्होंने ऐसा ही किया। संदूक बहता हुआ फिरऔन के बाग में आया। फिरऔन की स्त्री असिया ने उसे उठाया और मूसा को अपना बेटा बना लिया।

भेज दे और उनको दुख न दे। हम तेरे पालनकर्ता से चमत्कार लेकर आये हैं और अच्छाई उसी के लिए है जो सच्ची राह की पैरवी करे। (४७) हम पर हुक्म उतरा है कि सज़ा उसी पर होगी जो ईश्वर के कार्यों को झुठलाये और उससे मुँह मोड़े। (४८) फिरऔन ने पूछा तुम दोनों भाइयों का पालनकर्ता कौन है। (४९) मूसा ने कहा हमारा पालनकर्ता वह है जिसने प्रत्येक वस्तु को उसकी शक्ल दी फिर उसको मार्ग दिखलाया। (५०) फिरऔन ने पूछा भला अगले लोगों का क्या हाल है ? (५१) मूसा ने कहा इन बातों का ज्ञान मेरे पालनकर्ता के यहाँ किताब में मौजूद है। मेरा पालनकर्ता न भटकता है न भूलता है। (५२) उसी ने तुम लोगों के लिए जमीन का बिछौना बनाया और तुम लोगों के लिए ज़मीन सड़कें निकालीं और आसमान से पानी बरसाया फिर हम ही के द्वारा भाँति-भाँति की पैदावारें निकलीं। (५३) खाओ और अपने चौपायों को चराओ इनमें बुद्धिमानों के लिए प्रमाण हैं। (५४) (रुकू २)

इसी पृथ्वी से हमने तुमको उत्पन्न किया और इसी में तुमको लौटा कर लायेंगे और इसी से तुमको पुनः निकाल खड़ा करेंगे। (५५) और हमने फिरऔन को अपनी सभी निशानियाँ दिखलाईं, इस पर भी वह झुठलाता और इनकार ही करता रहा। (५६) कहा कि मूसा, क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमको हमारे देश से निकाल दे। (५७) हम भी ऐसा ही जादू तेरे सामने ला उपस्थित करेंगे। तू हमारे और अपने बीच एक प्रण ठहरा कि न हम उसके विरुद्ध करें और न तू खुले मैदान में हो। (५८) मूसा ने कहा तुम्हारा वादा* सजनई के दिन है और यह कि मनुष्य दिन चढ़ एकत्र हों। (५९) यह सुनकर फिरऔन लौट गया फिर गया फिर उसने अपने हथ-

---

* यह कार्य त्यौहार पर उठा रखा ताकि बहुत-से लोग उसको देखे।

कण्डे जमा किये फिर आ उपस्थित हुआ। (६०) मूसा ने फिरऔनियों से कहा कि तुम्हारी शामत आई है, ईश्वर पर जादू की झूठा दोषारोपण मत लगाओ नहीं तो वह सजा से तुम्हें बरबाद कर देगा। और जिसने ईश्वर पर झूठ बाँधा वह लक्ष्य को नहीं पहुंचा। (६१) फिर वह आपस में अपने काम पर झगड़ने लगे और चुपके-चुपके विचार करने लगे। (६२) सब ने कहा यह दोनों जादूगर हैं। चाहते हैं कि अपने जादू से तुमको तुम्हारे देश से निकाल बाहर करें और तुम्हारे मिस्त्रियों के सुन्दर धर्म को मिटा देवें। (६३) तो तुम भी कोई अपना उपाय उठा न रक्खो, पंक्ति बनाकर आओ और जो आज ऊपर रहा वही जीत गया। (६४) जादूगरों ने कहा कि मूसा या तो यह हो कि तू अपनी वस्तु मैदान में डाल और या यह हो कि हम पहले डालें। (६५) मूसा ने कहा नहीं तुम ही डालो चलो, तो बस मूसा को उनके जादू की वजह से ऐसा मालूम हुआ कि उनकी रस्सियाँ और लाठियाँ साँप बन कर इधर-उधर दौड़ रही हैं। (६६) फिर मूसा अपने जी ही जी में डर गया। हमने कहा मूसा डरो मत। (६७) तुम ऊंचे रहोगे। (६८) और तुम्हारे दाहिने हाथ में जो लाठी है उसको मैदान में डाल दो कि इन जादूगरों ने जो जादू बना खड़ा किया है सबको हड़प कर जावे। जो जादू बना खड़ा किया है जादूगरों का कार्य और जादूगर कहीं भी जाय उसको छुटकारा नहीं। (६९) आशय मूसा की लाठी ने साँप बन कर जादूगरो की सँपोलियों को हड़प कर लिया तो यह देखकर जादूगरों ने दण्डवत की। कहने लगे हम हारूं और मूसा के पालनकर्ता पर ईमान लाये। (७०) फिरऔन ने कहा क्या इससे पहले कि हम तुमको आज्ञा दें तुम मूसा पर विश्वास ले आये। हो न हो यह मूसा तुम्हारा बड़ा गुरु है, जिसने तुमको जादू सिखाया है तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पैर उल्टे काट डालूँ और तुमको खजूरों के तनों पर सूली चढ़ाऊं और तुमको ज्ञात हो जायगा कि हम दो पँथियों में किसकी मार अधिक सख्त और स्थायी है। (७१) जादूगर बोले कि खुले-खुले चमत्कार जो हमारे सामने आये उन पर और जिस ईश्वर ने हमको पैदा किया है

उस पर तो हम तुझको किसी तरह विजय देने वाले नहीं हैं। तू जो करने वाला है, कर डाल। तू संसार की इसी जिन्दगी पर आज्ञा चला सकता है। (७२) और हम अपने पालनकर्ता पर विश्वास लाये हैं जिससे वह हमारे पापों को क्षमा करे और जादू का जिस पर तूने हमको विवश किया। और अल्लाह की कृपा चिरस्थायी है। (७३) कुछ सन्देह नहीं कि जो आदमी अपराधी होकर अपने पालनकर्ता के सामने गया उसके लिए नरक है, जिसमें वह न तो मरेगा ही और न जिन्दा ही रहेगा। (७४) और जो ईमानदार ईश्वर के सामने उपस्थित होगा और उसने अच्छे काम किये होंगे तो यही लोग हैं जिनके उच्च-पथ होंगे। (७५) रहने के बाग जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी उन में हमेशा रहेंगे और जो मनुष्य पवित्र रहें उनका यही बदला है। (७६) (रुकू ३)

और हममें मूसा की ओर आज्ञा भेजी कि हमारे भक्तों इसराईल के पुत्रों को रातों-रात मिस्र से नदी में लाठी मारकर उनके लिए सूखी सड़क बनाकर निकाल ले जा। (७७) तू उनके पकड़े जाने का भय और सन्देह न कर। फिरऔन ने अपनी सेना लेकर इसराईल के पुत्रों का पीछा किया, फिर नदी का जैसा कुछ बहाव उन फिरऔन पर आया सो आया वे डूब गये। (७८) और फिरऔन ने अपनी जाति को पथ-भ्रष्ट किया और सीधा मार्ग न दिखाया। (७९) ऐ इसराईल के पुत्रों! हमने तुमको तुम्हरे शत्रु फिरऔन से छुटकारा दिलाया और तुमसे तूर के दाहिनी ओर का वादा किया* और हमने

* कहते हैं कि फिरऔन के नदी में डूब जाने के बाद मूसा की कौम ने उनसे एक किताब माँगी जिसमें उपदेश और काम की बातें हों मूसा ने ७० आदमियों को साथ लिया और तूर की ओर इसी विचार से गये और हारू को अपनी जगह छोड़ गये। यहाँ से वह ४० दिन के बाद तौरात लेकर लौटे। इसी बीच में सामरी ने एक सोने का बछड़ा

तुम पर मन* और सलाव** उतारा। (८०) और कहा अच्छी दिन-चर्या जो हमने तुमको दी है खाओ और इसके बारे में नटखटी मत करो। ऐसा करोगे तोम तुम पर हमारा क्रोध उतरेगा और जिस पर हमारा क्रोध उतरा तो वह नरक के गढ़े जा गिरा। (८१) और जो व्यक्ति स्वीकार करे और विश्वास लाये और शुभ कार्य करे फिर सही मार्ग पर स्थिर रहे तो हम उसके क्षमा करने वाले हैं। (८२) और ऐ मूसा! तुम जल्दी करके अपनी जाति से कैसे आगे आ गये? (८३) कहा कि वह भी मेरे पीछे आ रहे हैं और ऐ मेरे पालनकर्ता! मैं जल्दी करके इसलिए तेरी ओर बढ़ आया हूं कि तू प्रसन्न हो। (८४) कहा तुम्हारे पीछे हमने तुम्हारी जाति को एक और बला में फाँस दिया है और उनको सामरी ने भटका दिया है। (८५) फिर मूसा क्रोध और दुख की दशा में अपनी जाति की ओर वापस आये। कहने लगे कि भाइयो! क्या तुमसे तुम्हारे पालनकर्ता ने भली किताब का वचन नहीं किया था, तो क्या तुमको मुद्दत लम्बी मालूम हुई या तुमने चाहा कि तुम पर तुम्हारे पालनकर्ता का क्रोध आ उतरे और इस कारण से तुमने उस वचन के खिलाफ किया? (८६) कहने लगे कि हमने अपने आप से वचन नहीं तोड़ा बल्कि जाति के जेवरों का बोझ हम पर लदा था। अब सामरी के कहने से उसे आग में ला डाला और इसी तरह सामरी ने भी। (८७) फिर सामरी ही ने लोगों के लिए बछड़ा बनाया जिसकी आवाज बछड़े-जैसी थी फिर कहने लगे यही तो तुम्हारी पूजित है और मूसा का पूजित है और वह मूसा बछड़े को भूल लर दूर चला गया है। (८८) क्या इन लोगों को इतनी वात भी नहीं सूझ पड़ती थी

बनाया और इसमें कुछ ऐसे कर्तव्य दिखाये कि लोगों को बाड़ा आश्चर्य हुआ और इसी कारण सच्चे मार्ग से भटक गये।

*मीठी चीज जो रात में पत्तों पर जम जाती है।

**बटेर-जैसी चिड़िया का माँस।

कि बछड़ा इनकी बात का न तो उलट कर उत्तर दे सकता है और न इनके किसी हानि-लाभ पर अधिकार रखता है। (८९) (रुकू ४)

और हारूँ ने बछड़े की पूजा से पहले इनसे कह दिया था कि भाइयों! इस बछड़े के कारण से तुम्हारी परीक्षा की जा रही है, वर्ना तुम्हारा पालनकर्ता कृपालु है, तो मेरे कहे पर चलो और मेरी बात मानो। (९०) कहने लगे जब तक मूसा हमारे पास लौट कर न आये हम तो बराबर उसी पर जमे बैठे रहेंगे। मूसा ने हारूं की ओर इंगित किया कहा (९१) कि हारूँ! जब तुमने इनको देखा था कि यह लोग पथभ्रष्ट हो गये (९२) तो क्यों तुमने मेरा शिक्षा का ध्यान न किया? क्यों तुमने मेरा कहा न माना? (९३) वह बोले कि ऐ मेरे माँ जाये भाई! मेरे सिर और दाढ़ी को मत पकड़ो*। मैं इस बात से डरा कि तुम वापस आकर कहीं यह न कहने लगो कि तुम इसराईल के पुत्रों में फूट डाल दी और मेरी बात का विचार न किया। (९४) जब मूसा ने सामरी से पूछा कि सामरी! तेरा क्या मतलब है, (९५) कहा मुझे वह चीज दिखाई दी जो दूसरों को नहीं दिखाई दी, तो मैंने जिबरा-ईल देवदूत के पर के निशान से एक मुट्ठी मट्टी भर ली, फिर उसको बछड़े के पेट में डाल दिया और वह बछड़े की बोली बोलने लगा और यही बात मुझे उस समय भली लगी। (९६) मूसा ने कहा चल दूर हो इस जीवन में तेरी यह सजा है कि जिन्दगी भर कहता फिरे कि मुझे छू न जाना**इसीलिए सामरियों के हाथकी चीज यहूदी नहीं खाते और तेरे लिए प्रलय की सजा का एक वचन है जो किसी तरह नहीं टलेगा और अपने पालनकर्ता अर्थात बछड़े की ओर देख जिस पर तू जमा

*** यानी मुझसे न बिगड़ और मुझे लज्जित न कर।**

**** सामरी को आगे चलकर ऐसा बुरा रोग लगा कि वह सबसे अलग रहने लगा और जो कोई उसको हाथ लगा देता उसको भी ताप चढ़ आती। ऐसा मालूम होता था कि उसे क्षय का रोग लगा था।**

बैठा था, इनको हम जला देंगे और नदी में बहा देंगे। (९७) लोगों ? तुम्हारा पूजित एक ईश्वर है, जिसके अतिरिक्त कोई पूजित नहीं, उसके ज्ञान में हर एक चीज छिप रही है। (९८) ऐ पैगम्बर ! इसी प्रकार हम बीते हुए समाचार तुमको सुनाते हैं और हमने पास से कुरान दिया। (९९) जिन लोगों ने इससे मुंह फेरा प्रलय के दिन एक बोझ लादे होंगे। (१००) और इसी हाल में हमेशा रहेंगे और क्या ही बड़ा बोझ है जो वह लोग प्रलय के दिन उठाये होंगे। (१०१) जिस दिन नरसिंहा फूंका जायगा और हम दिन अपराधियों की जमा के दिन, उनकी आँखें डर के मारे नीली होंगी। (१०२) वह आपस में चुपके-चुपके कहेंगे कि दुनिया में हम लोग दस ही दिन ठहरे होंगे। (१०३) जैसी-जैसी बातें यह लोग उस दस दिन करेंगे हम उनसे अच्छी प्रकार जानकार हैं, जो इनमें आधिक जानकार होगा वह कहेगा नहीं तुम दुनिया में ठहरे होंगे तो बस एक दिन*। (१०४) (रुकू ३)

और ऐ पैगम्बर ! तुमसे पर्वतों के विषय पूछते हैं कि प्रलय के दिन इनका क्या हाल होगा तो कहा कि मेरा पालनकर्ता इनको उड़ा देगा। (१०५) और पृथ्वी को मैदान चौरस कर छोड़ेगा। (१०६) जिसमें तू न तो कहीं मोड़ देखेगा और न कहीं ऊंचा नीचा। (१०७) उस दिन बे सब लोग बिना इधर-उधर को मुड़े उसके उसके पीछे हो जावेंगे और मारे डर के ईश्वर कृपालु के आगे सबकी आवाजें बैठ जायंगी। काना-फूसी के सिवाय और कुछ न सुनेगा। (१०८) उस दिन किसी की सिफारिश काम न आवेगी, मगर जिसकी कृपालु ने इजाजत दी और उसका बोलना पसन्द आया। (१०९) जो कुछ लोगों के सामने हो रहा है और जो उनसे पहले हो चुका है वह सब कुछ जानता है और लोग खोज करके भी उसे काबू में नहीं

*** कयामत का दिन इतना लम्बा होगा कि दुनिया बाले उसे अपने सारे जीवन से भी अधिक बड़ा समझेंगे।**

ला सकते। (११०) और प्रलय के दिन सदैव जीवित रहनेवाले के सामने मुँह रगड़ते होंगे और उस दिन के लिए जो व्यक्ति अत्याचार का बोझ लादेगा उसी की बरबादी है। (१११) और जो अच्छे काम करेगा और वह विश्वास भी रखता होगा तो उसको अन्याय का डर न होगा। (११२) और ऐसे ही हमने अरबी भाषा में कुरान उतारा है और उसमें भाँति-भाँति के भय सुना दिये हैं जिससे लोग बच चलें या उनमें विचार पैदा हो। (११३) बस ईश्वर सब से ऊंचा वास्तविक सम्राट है और तू कुरान के लेने में जल्दी न कर जब तक कि उसका उतरना पूरा न हो और प्रार्थना कर कि ऐ मेरे परवरदिगार ! मेरी समझ बढ़ा* । (११४) और हमने मनुष्य से एक वचन लिया था, सो मनुष्य भूल गया और हमने उसमें धैर्य न पाया। (११५) (रुकू ६)

और जब हमने देवदूतों से कहा कि मनुष्य के आगे दण्डवत करो तो सब ही ने दण्डवत की, मगर इबलीस ने इन्कार किया। (११६) तो हमने मनुष्य से कहा कि ऐ मनुष्य ! यह इबलीस तुम्हारा और तुम्हारी स्त्री का शत्रु है तो ऐसा न हो कि कहीं तुम दोनों को स्वर्ग से निकलवा दे। (११७) और यहाँ स्वर्ग में तो तुम को ऐसा सुख है कि न तो तुम भूखे रहोगे न नंगे। (११८) और यहाँ तुम न प्यासे होगे न धूप में रहोगे। (११९) फिर शैतान ने मनुष्य को बहकाया और कहा ऐ मनुष्य ! कहो तो तुमको कल्पतरु का वृक्ष बता दूँ कि जिसको खाकर हमेशा जीते रहो और ऐसी सल्तनत जो पुरानी न हो। (१२०) अन्ततः दोनों ने वृक्ष के फल को**खा लिया तो उन पर उनके

*** मुहम्मद साहब इस डर से कि उतरनेवाली आयतें भूल न जायें उन्हें जल्दी से उतारने के बीच ही में याद करने लगते थे। यह बात खुदा को अच्छी न लगी और ऐसा करने से उनको रोक दिया।**

****आदम को एक पेड़ के पास जाने से मना किया गया था। शैतान ने उनको बहकाया और वह उसकी बातों में आगये। उसका परिणाम**

पर्दे की चीजें जाहिर हो गईं और अपने को स्वर्ग के उपवन के पत्तों से ढाँकने लगे और आदम ने अपने पालनकर्ता की आज्ञा न मानी और भटक गया। (१२१) फिर उनके पालनकर्ता ने उनको चुन लिया और उनकी ओर ध्यान दिया और मार्ग दिखलाया। (१२२) कहा कि तुम दोनों यहां स्वर्ग से नीचे उतर जाओ, तुम में से एक दूसरे के शत्रु होंगे, फिर अगर तुम्हारे पास हमारी तरफ से शिक्षा आवे तो जो हमारी शिक्षा पर चलेगा न भटकेगा न दुख झेलेगा। (१२३) और जिसने हमारी याद से मुँह मोड़ा तो उसका जीवन दुख में ही होगा और प्रलय के दिन हम उसको अन्धा उठावेंगे। (१२४) वह कहेगा हे मेरे पालन-कर्ता! तूने मुझको अन्धा क्यों उठाया और मैं तो देखता था। (१२५) ईश्वर कहेगा ऐसे ही हमारी आयतें तेरे पास आईं मगर तूने उनकी कुछ खोज न की और इसी तरह आज तेरी खोज न की जायगी। (१२६) और जो आदमी हद से बढ़ चला और और अपने पालनकर्ता की आयतों पर विश्वास न लाया हम उसको ऐसा ही बदला दिया करते हैं और अन्त का दण्ड दुनिया के दण्ड से बहुत ही सख्त और देर तक की है। (१२७) क्या लोगों को इससे अनुभव न हुआ कि इनसे पहिले हमने कितने गुटों को मार डाला जो अपने गिरोहों में चलते-फिरते थे। जो लोग बुद्धिमान हैं उनके लिए इसी में प्रमाण हैं। (१२८) (रुकू ७)

यदि पालनकर्ता ने पहले से एक बात न कही होती और सीमा स्थिर न की होती तो सजा का आना आवश्यक बात थी। (१२९) ऐ पैगम्बर! जैसी बातें यह काफिर कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने से पहिले और उसके डूबने से पहले अपने पालनकर्ता

यह हुआ कि उनके बदन से उन्नत के कपड़े छिन गये और वह अपने को पत्तों से ढाँकने लगे। इस पेड़ के बारे में भिन्न-भिन्न विचार हैं, किन्तु अधिकतर लोग उसे गेहूँ का पेड़ बताते हैं।

की प्रशंसा के साथ माला फेरा करो। और रात के समय में और दोपहर दिन के लगभग माला फेरा करो, शायद तुमको खुशी मिल जाय (१३०) और ऐ पैगम्बर! हमने जो भिन्न प्रकार के मनुष्यों को दुनिया के जीवन में ऐश्वर्य के साधन प्रयोग के लिए दे रक्खे हैं तू उनकी ओर दृष्टि न दौड़ा कि उनकी उनमें परीक्षा ले और तुम्हारे पालनकर्ता की दिनचर्या कहीं अच्छी और स्थिर है। (१३१) और अपने घरवालों पर नमाज की देखभाल रखो और उसके नियमबद्ध रहो। हम तुमसे कोई दिनचर्या नहीं माँगते, हम तुमको रोजी देते हैं और अन्त में नियमवालों ही का भला है। (१३२) और यहूद और ईसाई कहते हैं कि यह पैगम्बर अपने पालनकर्ता की ओर से हमारे पास कोई प्रमाण क्यों नहीं लाता, क्या अगली किताबों की साक्षी इनके पास नहीं पहुंची। (१३३) और यदि हम कुरान से पहले किसी सजा से उनको मरवा देते तो वह कहते ऐ हमारे पालनकर्ता! तुमने हमारी ओर कोई पैगम्बर क्यों न भेजा कि बदनाम होने से पहले हम तेरी आज्ञा पर चलते। (१३४) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि सभी बाट देख रहे हैं तुम भी करो तो आगे चलकर तुम समझ लोगे कि सीधा मार्ग पर कौन है, और किसने मार्ग पाया। (१३५) (रुकू ८)

सत्रहवाँ पारा (इक्तरबलिन्नास)

सूरे अम्बिया

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११२ आयतें और ७ रुकू हैं

ईश्वर के नाम से जो बहुत ही कृपालु आरम्भ करता हूं। लोगों के के हिसाब का समय नजदीक आ लगा, इस पर भी भूल में अनभिज्ञ हैं। (१ उनके पास उनके पालनकर्ता की ओर से जो नया हुक्म आता

है उसे ऐसे बेपरवाह होकर सुनते हैं कि हंसी-खेल बनाते हैं। (२) उन के दिल ध्यान नहीं देते हैं और यह अन्यायी चुपके-चुपके कानाफूसी करते हैं कि यह मुहम्मद है ही क्या ? तुमही जैसा एक व्यक्ति, फिर जानते-बूझते क्यों जादू में पड़ते हो। (३) पैगम्बर ने कहा तुम लोग काना-फूसी करते हो ? जितनी बातें आकाश और पृथ्वी में होती हैं मेरे पालनकर्ता को ज्ञात हैं और वह सुनता-जानता है। (४) बल्कि कहने लगे कि यह तो विचारों का सिरदर्द है बल्कि इसने यह झूठी-झूठी बातें अपने दिल से गढ़ ली हैं, बल्कि यह तो कवि है नहीं तो कोई चमत्कार दिखावे जैसे अगले पैगम्बरों ने दिखलाये हैं। (५) जिस बस्ती को हमने उससे पहले मार डाला वह चमत्कार देखकर भी ईमान न लाई तो क्या यह विश्वास ले आवेंगे ? (६) और हमने पहले भी आदमी ही पैगम्बर बना कर भेजे थे। हम उन्हें वही ईश्वरीय संदेश दिया करते थे, तो यदि तुमको ज्ञात नहीं तो किताब वालों से पूछ देखो (७) और सबने उनके ऐसे शरीर भी नहीं बनाये थे कि खाना न खाते हों, न वे लोग दुनिया में हमेशा रहनेवाले अमर ही थे*। (८) फिर हमने उनको दण्ड का वादा सच्चा कर दिखाया तो उन पैगम्बरों को और जिनको हमने चाहा दण्ड से बचा दिया। जो लोग सीमा से बढ़ गये थे। हमने उनको मार डाला। (९) हमने तुम्हारी तरफ किताब उतारी है जिसमें तुम्हारा जिक्र है। क्या तुम नहीं समझते ? (१०) (रुकू १)

और हमने बहुत सी बस्तियों को जहाँ के लोग दुष्ट प्रकृति थे तोड़ फोड़कर बराबर कर दिया और उनके बाद दूसरे लोग उठा खड़े किये।

---

* इस्लाम के न माननेवालों का विचार था कि नबी या रसूल कोई साधारण मनुष्य नहीं हो सकता। नबी होने के लिए असाधारण लक्षणों की आवश्यकता बताते थे।

**यमन निवासियों ने अपने नबी का बध कर डाला था।

(११) तो जब उन नष्ट होने वालों ने हमारे दण्ड की आहट पाई तो उस बस्ती से भागने लगे। (१२) हमने कहा भागो मत और उसी दुनियां के ऐश्वर्य साधना की ओर लौट जाओ जिसमें अब तक चैन करते थे और अपने मकानों की ओर जाओ शायद तुम्हारी कुछ पूछ हो। (१३) वह कहने लगे हाय हमारा दुर्भाग्य, हम ही अपराधी थे। (१४) बस वह लोग बराबर यही पुकारा किये, यहाँ तक कि हमने उनको कटे हुए खेत बुझे हुए अंगारे जैसा बरबाद कर दिया। (१५) और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है उसको खेल के लिए पैदा नहीं किया। (१६) यदि हमको खेल बसाना मन्जूर नहीं था। (१७) बात यह है कि हम सच को झूठ पर खींच मारते हैं तो वह झूठ के सिर को कुचल देता है और झूठ उसी समय नष्ट हो जाता है और मनुष्यों ! तुम पर दुख है कि तुम ऐसी बातें बनाते हो। (१८) और जो आकाश और जो पृथ्वी में है उसी का है और जो है ईश्वर के पास वह न तो उसकी पूजा से गर्व करते हैं और न थकते हैं। (१९) रात दिन उसकी याद में लगे रहते हैं, सुस्ती नहीं करते। (२०) क्या इन मनुष्यों ने जमीन की चीजों से ऐसे पूजित बनाये हैं जो इनको बना खड़ा करते हैं ? (२१) यदि पृथ्वी-आकाश में ईश्वर के अतिरिक्त और पूजित होते तो पृथ्वी आकाश दोनों बर्बाद हो गये होते। तो जैसी-जैसी बातें यह लोग बनाते हैं ईश्वर जो सब का मालिक है वह इनसे पवित्र है। (२२) जो कुछ वह करता है उसकी पूछ-ताछ उससे नहीं होती और लोगों से पूछ-ताछ होती है। (२३) क्या लोगों ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित बना रखे हैं ? ऐ पैगम्बर तुम इन लोगों से कहो कि अपनी दलील तो पेश करो जो मेरे साथ हैं उनकी किताब कुरान और जो मुझ से पहिले हो चुके हैं उनकी किताबें तौरात इन्जील आदि मौजूद हैं। बात यह है कि इनमें से प्रायः लोग सच को न समझ कर मुँह मोड़ते हैं। (२४) और ऐ पैगम्बर हमने तुमसे पहले जब कभी कोई पैगम्बर भेजा तो उस पर हम आज्ञा उतारते रहे कि हमारे सिवाय कोई पूजित नहीं। हमारी ही पूजा करो

(२५) और कोई-कोई कहते हैं कि दयालु ईश्वर बेटे रखता है *। उसकी जात पाक है। देवदूत ईश्वर के बेटे नहीं बल्कि मानवीय सेवक हैं। (२६) उसके आगे बढ़कर बात नहीं कर सकते और वह उसी के आदेश पर काम करते हैं। (२७) इनका अगला पिछला हाल उसको मालूम है और यह देवदूत किसी की सिफारिश नहीं कर सकते, मगर उसके लिए जिससे ईश्वर खुश हुआ और वह खुद ईश्वर के भय से काँपते हैं। (२८) और जो उनमें से यह दावा करें कि ईश्वर नहीं मैं पूजित हूं तो उसको हम नरक की दण्ड देंगे। अन्यायियों को हम ऐसे ही दण्ड दिया करते हैं। (२९) (रुकू २)

क्या जो लोग इन्कार करने वाले हैं, उन्होंने नहीं देखा कि आकाश और जमीन दोनों का एक पिंडा सा था। सो हमने उसको तोड़कर जमीन और आकाश को अलग-अलग किया और पानी से तमाम जानदार चीजें बनाई, तो क्या इस पर भी लोग ईमान नहीं लाते ? (३०) और हम ही ने जमीन में पहाड़ रखे ताकि लोगों को लेकर झुक न पड़े और हम ही ने चौड़े-चौड़े रास्ते वनाये ताकि लोग राह पावें। (३१) और हम ही ने आकाश को बचाव की छत बनाया और वे आसमानी निशानियों को ध्यान में नहीं लाते। (३२) और वही है जिसने रात और दिन और सूरज और चन्द्रमा को पैदा किया कि तमाम चक्र दायरे में फिरा करते हैं। (३३) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमसे पहले किसी आदमीं को अमर नहीं किया, वस अगर तुम मर जाओगे तो क्या यह लोग हमेशा रहेंगे। (३४) हर जीव को मौत चखनी है और हम तुमको बुराई और भलाई से आजमाकर जाँचते हैं और तुम सब को हमारी तरफ लौटकर आना है। (३५) और ऐ पैगम्बर ! जब इन्कार करने वाले तुमको देखते हैं तो आपस में तुम्हारी हँसी उड़ाने

*** जैसे ईसाई हजरत ईसा को और यहूदी हजरत ओजैस को ईश्वर का पुत्र बताते थे।**

लगते हैं कि क्या यही है जो तुम्हारे पूजितों की नहीं मानते हैं। (३६) आदमी जल्दी का पुतला बनाया गया है। हम तुमको अपनी निशानियाँ दिखाये देते हैं तुम जल्दी मत मचाओ। (३७) और इन्कार करने वाले कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का प्रण कब पूरा होगा ? (३८) कभी इन्कार करने वाले उस समय का जानें जबकि आग आ घेरेगी, न अपने मुँह से रोक सकेंगे और न अपनी पीठ पर से और न उनको सहायता मिलेगी। (३९) लेकिन वह एक दम से उन पर आ पड़ेगी और इनके होश खो देगी। फिर यह उसे न हटा सकेंगे और न इनको समय मिलेगा। (४०) और ऐ पैगम्बर ! तुमसे पहले पैगम्बरों के साथ भी हँसी की जा चुकी है तो जो लोग जिस दण्ड की हँसी उड़ाया करते थे उसने आकर इनको पकड़ा। (४१) (रुकू ३)

ऐ पैग़म्बर ! इन लोगों से पूछो कि रहमान से तुम्हारी रात दिन कौन चौकीदारी कर सकता है मगर वह ईश्वर के नाम से मुँह मोड़े हैं। (४२) क्या हमारे बजाय इनके कोई और पूजित हैं जो इनको बचा सकते हैं, न वह आप अपनी सहायता कर सकते हैं और न वह हमारे साथी हैं। (४३) बल्कि हमने इन लोगों को और इनके पुरखों को दुनियाँ में बसाया, यहां तक कि इन पर बहुत सी उम्र गुज़र गई यह घमण्डी हो गये। तो क्या यह लोग इस बात को नहीं देखते कि हम देश को चारों तरफ से दबाते चले आते हैं*। अब क्या वह कुरेश जीतने वाले हैं। (४४) ऐ पैग़म्बर ! कहो कि मैं ईश्वरी संदेशा इलहाम से डराता हूं, मगर यह लोग बहरे हैं और बहरों को डराया जाय तो वह पुकार नहीं सुनते। (४५) और ऐ पैग़म्बर ! अगर इनको तुम्हारे पालन कर्ता का दण्ड की हवा भी लग जाय तो बोल उठेंगे कि दुःख है कि

---

*यानी मुसलमान धीरे-धीरे अपने शत्रुओं को पराजित करते जाते हैं और उनके देश पर अपना अधिकार जमाते जाते हैं।

हम ही अपराधी थे। (४६) और प्रलय के दिन लोगों के काम की तौल के लिए हम सच्ची तराज़ू* लगा देंगे तो किसी पर ज़रा भी अत्याचार न होगा और अगर राई के दाने बराबर भी अलग होगा तो हम उसे तौलने के लिए लावेंगे और हिसाब लेने के लिए हम काफी हैं। (४७) और हमने मूसा और हारूं को विवेक करने वाली किताब तौरात दी और रोशनी और शिक्षा डरने वालों के लिए। (४८) जो बिन देखे ईश्वर से डरते और उस घड़ी प्रलय से काँपते हैं। (४९) और यह कुरान शुभ शिक्षा है जो हमी ने उतारी है, सो क्या तुम लोग इसको नहीं मानते ? (५०) (रुकू ४)

और इब्राहीम को हमने शुरू ही से अच्छी समझ दी थी और हम उनसे जानकर थे। (५१) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी जाति से कहा कि यह मूर्ति क्या हैं जिनकी पूजा पर जमे बैठे हो ? (५२) वह बोले कि हमने अपने बाप दादों को उन्हीं की पूजा करते देखा है। (५३) इब्राहीम ने कहा कि ठीक हो कि तुम और तुम्हारे बड़े जान बूझ कर भूल में पड़े रहे। (५४) वह बोले क्या तू हमारे पास सच्ची बात लेकर आया है या हंसी करता है ? (५५) इब्राहीम ने कहा आकाश और पृथ्वी का स्वामी तुम्हारा ईश्वर है जिसने इनको पैदा किया और मैं इसी बात का कायल हूं। (५६) ईश्वर की सौगन्ध तुम्हारे पीठ फेरे पीछे मैं तुम्हारे मूर्तियों के साथ मकर करूंगा। (५७) इब्राहीम ने मूर्तियों को तोड़-फोड़ टुकड़े-टुकड़े कर दिया, मगर उनके बड़े मूर्त को इस कारण से रहने दिया कि वह उसकी तरफ आवेंगे। (५८) जब लोगों को मूर्तियों के तोड़े जाने का हाल मालूम हो गया तो उन्होंने कहा हमारे पूजितों के साथ यह काम किसने किया वह कोई अन्यायी है। (५९) बोले कि वह नौजवान जिसको इब्राहीम के नाम से पुकारा

---

*सत्य और असत्य तथा पुण्य और पाप में बतानेवाली तराज़ू।

जाता है, उसको हमने इन मूर्तियों का जिक्र करते हुऐ सुना है। (६०) लोगों ने कहा उसको आदमियों के सामने ले आओ ताकि लोग साक्षी रहें। (६१) गरज इब्राहीम बुलाये गये और लोगों ने पूछा कि इब्राहीम हमारे पूजितों के साथ यह क्या हरकत तूने की है ? (६२) इब्राहीम ने कहा नहीं बल्कि यह जा इन सब में बड़ी मूर्ति है उसने यह हरकतकी होगी और अगर यह मूर्ति बोल सकते हों तो इन्हीं देखो। से पूछ(६३) उस पर लोग अपने जी में सोचे और आपस में कहने लगे कि लोगों ! तुम्हीं अन्यायी हो। (६४) फिर अपने सिरों के बल औंधे उसी गुमराहों में ढकेल दिये गये और इब्राहीम से बोले कि तुमको मालूम है कि यह मूर्ती बोला नहीं करती। (६५) इब्राहीम ने कहा क्या तुम ईश्वर के सिवाय ऐसे पूजितों को पूजते हो कि जो न तुमको कुछ लाभ ही पहुंचा सकें और न कुछ हानि ही पहुंचा सकते हैं। (६६) अफसोस तुम पर और उन चीजों पर जो तुम ईश्वर के सिवाय पूजते ही क्या तुम नहीं समझते हो ? (६७) वह कहने लगे कि अगर तुमको कुछ करना है तो इब्राहीम को आग में जला दो और अपने पूजितों की सहायता करो। (६८) इसलिए उन मनुष्यों ने इब्राहीम को आग में झोंक दिया हमने आग की आज्ञा दी कि ऐ आग ! इब्राहीम के लिए ठण्डी और आराम देने वाली हो जा। (६९) और लोगों ने इब्राहीम के साथ बुराई करनी चाही थी, तो हमने उन्हीं को असफल किया। (७०) और इब्राहीम को और लूत को सही-सलामत निकालकर उस जमीन में ले जा दाखिल किया जिसमें हमने लोगों के लिये तरह तरह की बरकतें रखी हैं। (७१) और इब्राहीम को एक बेटा इसहाक और पोता याकूब दिया और सभी को हमने नेक बक्त किया। (७२) और उनको पेशवा बनाया कि हमारी आज्ञा से उनको शिक्षा देते थे और उनको नेक काम करने और नमाज पढ़ने और जकात देने के लिये कहला भेजा और वे हमारी पूजा में लगे रहते थे। (७३) और लूत को हमने आज्ञा और समझा दी और उनको उस शहर से जहाँ के लोग गन्दे काम करते थे बचा निकाला। इसमें सन्देह नहीं कि वह बड़े बुरे और अनाचार थे।

(७४) और लूत को हमने अपनी कृपा में ले लिया क्योंकि वह नेक-बक्तों में था। (७५) (रुकू ५)

और ऐ पैगम्बर! नूह ने जब हमको पहले पुकारा तो हमने उनके सुन ली और उसको और उसके लोगों को बड़ा दुख से बचाया। (७६) और फिर हमने उसे उस जाति पर जो आयतों को झुठलाया करते थे जीत दी। और वह लोग बुरे थे, हमने उन सबको डुबो दिया (७७) और ऐ पैगम्बर! दाऊद और सुलेमान जबकि यह दोनों एक खेती के बारे में, जिसमें कुछ लोगों की बकरियाँ जा पड़ी थीं, फैसला करने लगे और हम उनके फैसले को देख रहे थे। (७८) फिर हमने फैसला सुलेमान को समझा दिया और हमने दोनों की आज्ञा समझा दी थी और पहाड़ों और पक्षियों को दाऊद के अधीन कर दिया कि उनके साथ ईश्वर की पवित्रता बयान करें और करने वाले हम थे। (७९) और दाऊद को हमने तुम लोगों के लिए एक पहनाव यानी बख्तर बनाना सिखा दिया था ताकि लड़ाई में तुमको बचावे, तो क्या तुम धन्यवाद करते हो? (८०) और हमने जोर की हवा को सुलेमान तावे कर दिया था कि उनकी आज्ञा से देश शाम की ओर चलती थी जिसमें हमने बरकतें दे रखी थीं और हम सब चीजों से जानकार थे। (८१) और कितने देवों को अधीन किया जो सुलेमान के लिए गोते लगाते ताकि जवाहरात निकाल लावें और हम ही उनकी थामे रहते थे। (८२) और ऐ पैगम्बर! ऐयूब जब उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि मुझे दुख पड़ा है और तू सब दया करने वालों से ज्यादा दया करने वाला है। (८३) और हमने उसकी सुन ली और जो दुख उनका था उसको दूर कर दिया और जो मनुष्य उसके मर गये थे जिला दिये, बल्कि उतने ही और अधिक कर दिये, हमारी कृपा थी और पूजा करने वालों के लिये यादगार है। (८४) और इस्माईल और इद्रीस और जल किफ्ल यह सब साबिर थे। (८५) और हमने इनको अपनी कृपा में ले लिया, क्योंकि यह लोग अच्छी में हैं। (८६) और मछली

वाले यूनिस* को याद करो जब नाराज होकर चल दिये और समझे कि हम उसे पकड़ न सकेंगे तो अँधेरों के अन्दर चिल्ला उठे कि तेरे सिवाय कोई पूजित नहीं, मैं अन्यायियों में हूं। (८७) हमने उसकी सुन ली और उसको दुख से छुटकारा दिया और हम ईमान वालों को इसी तरह बचा लिया करते हैं। (८८) और जकरिया ने जब पालनकर्ता को पुकारा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको अकेला निस्संतान मत छोड़ और तू सब वारिसों से अच्छा है। (८९) तो हमने उसकी सुन ली और बेटा यहिया दिया और उसकी पत्नि को उसके लिए भला चंगा कर दिया। यह लोग नेक कामों में जल्दी करते थे और हमको आशा और भय से पुकारते रहते और हमसे दवे रहते थे। (९०) और वह पत्नि मरियम जिसने अपनी शर्म की यानी शिहबत की जगह की हिफाजत की, तो हमने उसमें अपनी रूह फुंक दी और हमने उसको और उसके बेटे ईसा को दुनिया जहान के मनुष्यों के लिए निशानी करार दिया। (९१) वह तुम्हारे दीन के लोग सब एक दीन पर हैं और मैं तुम्हारा पालनकर्ता हूं, सो सब हमारी ही पूजा करो। (९२) और मनुष्यों ने आपस में फूट न करके दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, सब हमारी ही तरफ लौट कर आने वाले हैं। (९३) (रुकू ६)

सो जो आदमी नेक काम करे और वह ईमान भी रखता हो तो उसका प्रयत्न व्यर्थ होने वाला नहीं है और हम उसका लिखते जाते हैं। (९४) और जिस बस्ती को हमने नष्ट कर दिया हो यह ठीक नहीं कि वह मनुष्य लौट कर आवें। (९५) हाँ इतना जरूर ठहरना पड़गा

---

* हजरत यूनिस ने अपनी जाति से कहा था कि ईश्वर का गजब उतरने वाला है। जब उन्होंने ऐसा न देखा तो अपनी कौम से शरमिन्दा होकर भाग गये। रास्ते में उनको एक मछली निगल गई। उसी के पेट में उन्होंने यह प्रार्थना।

कि याजूज-माजूज खोल दिये जावें, वह हर बुलन्द से लुढ़कते हुए चले आवेंगे। (९६) और सच्चा वादा पास आ पहुंचे तो एकदम से काफिरों की आँखें खुली की खुली रह जावें और बोल उठें कि हम तो सुस्ती में रह गये बल्कि हम ही अपराधी थे। (९७) तुम जिन और चीजों को अल्लाह के सिवाय पूजते हो, यह सब नरक का ईन्धन बनेंगे और तुमको नरक में जाना होगा। (९८) अगर यह पूजित अल्लाह होते तो नरक में न जाते और वह सब इसमें सदैव रहेंगे। (९९) इन मनुष्यों की नरक में चिल्लाट लगी होगी वह वहाँ न सुन सकेंगे। (१००) जिन मनुष्यों के लिए हमारी तरफ से भलाई है वह नरक से दूर रखे जायेंगे। (१०१) उसकी भनक भी उसके कानों में न पड़ेगी और वह अपनी मनमानी मुरादों में हमेशा रहेंगे। (१०२) और उनको प्रलय की बड़ी भारी घबराहट में भी डर न होगा और देवदूत उनको हाथोंहाथ लेंगे और कहेंगे कि यही तो तुम्हारा दिन है जिसका प्रण तुमसे कर दिया गया था : (१०३) जिस दिन हम आसामान को इस तरह लपेटेंगे जैसे तूमार में कागज लपेटते हैं, जिस तरह हमने पहले पैदाइश शुरू की हम उसे दुहरावेंगे, वादा हमारे जिम्मा हैं, हमें करना है। (१०४) और हम जबूर में शिक्षा के बाद यह बात लिख चुके हैं कि हमारे नेक बन्दे पृथ्वी के वारिस होंगे। (१०५) जो मनुष्य पूजा करने वाले ईश्वर के हैं उनके लिए इसमें शिक्षा है। (१०६) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमको संसार के मनुष्यों पर कृपा करके भेजा है। (१०७) ऐ पैगम्बर ! कहो कि मुझको तो आज्ञा आई है कि अकेला ईश्वर ही तुम्हारा पूजित है तो क्या तुम आज्ञा पालन करते हो ? (१०८) पस अगर न मानें तो कहो कि मैंने तुमको एकसा तौर पर सदैव भेज दो और मैं नहीं जानता कि जिस दण्ड का तुमसे प्रण किया जाता है करीब आ लगी है या दूर। (१०९) वह खुली बात को जो मैंने जाहिरा कही जानता है और तुम्हारी छिपी हुई बातें भी जानता है। (११०) और मैं नहीं जानता, शायद ईश्वर को उसमें तुमको जाँचना है और एक समय तक बर्तने देना मंजूर है। (१११)

पैगम्बर ने बताया है कि मेरा पालनकर्ता ठीक निर्णय कर देगा और वह हमारा रहमान है जिससे हम उन बातों के मुकाबले में जो तुम बताते हो सहायता माँगते हैं। (११२) (रुकू ७)

सूरे हज्ज

मक्के में अवतरित इसमें ७८ आयतें और १० रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। लोगों ! अपने पालनकर्ता से डरो क्योंकि प्रलय का भूचाल एक बड़ी चीज है। (१) जिस दिन यह तुम्हारे सामने आ मौजूद होगी हर दूध पिलानेवाली अपने दूध-पीते बच्चे को भूल जायगी और गर्भवती अपना गर्भ गिरा देगी और लोग नशे में दिखाई देंगे हालाँकि वह मतवाले नहीं। बल्कि ईश्वर का दण्ड बड़ा कठिन है। (२) और लोगों में कुछ ऐसी भी हैं जो बेजाने ईश्वर के बारे में झगड़ते और राक्षस के पीछे हो जाते हैं। (३) राक्षस के बारे में लिखा है कि जो कोई उसका मित्र बने या जिस का वह मित्र बने उसे भटकाकर नरक की राह बतावेगा। (४) लोगों अगर तुमको जी उठने में संदेह है तो हमने तुमको मिट्टी से, फिर धातु से, फिर खूनके लोथड़े से, फिर पूरी और अधूरी बनी हुई बोटी से पैदा किया ताकि तुम पर जाहिर करें और पेट में हम जिसको चाहते हैं नियत समय तक ठहराये रखते हैं। फिर तुमको बच्चा बनाकर निकालते हैं ताकि तुम अपनी जवानी को पहुंचो। और कोई-कोई तुममें से मर जाता है और कोई सबसे ज्यादा निकम्मी उम्र की तरफ लौटा कर लाया जाता है कि जाने पीछे कुछ न समझने लगे और तू पृथ्वी को सूखी देखता है। फिर जब हम उस पर पानी बरसाते हैं तो वह लह-

लहाने और उभरने लगती है और भाति-भाति के खानें की चीजें उगने लगती हैं। (५) यह इस बात की अपनी शक्ति की दलील है कि अल्लाह सचमुच है और मरे हुए को जिलाता हैं और वह हर चीज पर शक्तिशाली है (६) और यह कि वह प्रलय की घड़ी अवश्य आनेवाली है उसमें किसी तरह का संदेह नहीं और जो लोग कब्रों में हैं अल्लाह उनको उठायेगा। (७) और लोगों में कोई ऐसे भी है कि जो अल्लाह के बारे में बिना सूझ के रोशन पुस्तक के झगड़ा करते हें। (८) घमंड से ताकि ईश्वर की राह से बहकावें। ऐसों के लिए दण्ड सजा संसार में बदनामी है और प्रलय के दिन हम उनको जलने का दण्ड मिलेगा (९) यह उनका बदला है कि जो तूने अपने हाथों किया वर्ना ईश्वर तो अपने मनुष्यों पर अन्याय नहीं करता। (१०) (रुकू १)

और लोगों में कोई-कोई ऐसे भी हैं जो ईश्वर की पूजा उखड़े-उखड़े करते हैं कि अगर कोई उनको लाभ पहुंचा तो उसके कारण यकीन हो गया और कोई दुःख आ पड़ा तो जिधर से आया था उल्टा उधर ही लौट गया। इसने संसार और परलोक दोनों ही गंवाये। निस्संदेह घाटा यही है। (११) ईश्वर के अलावा उन चीजों को बुलाते हो जो फायदा नहीं पहुंचातीं। यही भूलकर दूर पड़ना है। (१२) उन चीजों को बुलाते हो अपनी सहायता के लिए पुकारते हो जिनके फायदे से हानि ज्यादा पास है। ऐसा काम संभालने वाला भी बुरा और ऐसा साथी भी बुरा है। (१३) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये उनको अल्लाह बागों में भेजेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी अल्लाह जो चाहे करे। (१४) जिनको यह विचार हो कि ईश्वर संसार और परलोक में उसकी सहायता करेगा तो उसको चाहिए कि ऊपर की तरफ को एक रस्सी लटकावे, फिर काट डाले, फिर देखे कि उसकी यह तदबीर क्रोध खाती है या नहीं*। (१५) और यों हमने यह

*** खुदा से हटकर आदमी सफलता की आशा कैसे रख सकता है। कटी हुई रस्सी पर कैसे चढ़कर कोई पार उतर सकता है।**

कुरान खुली आयतों में उतारा है और अल्लाह जिसे चाहे समझ देवे। (१६) जो लोग ईमान लाये हैं और यहूदी और साबी, ईसाई और मजूस अग्नि पूजक और शिर्क वाले प्रलय के दिन इनके बीच अल्लाह निर्णय कर देगा। अल्लाह सब बातों को देख रहा है। (१७) क्या तूने नहीं देखा कि जो आसमानों में है और जो जमीन में है और सूर्य चन्द्रमा और नक्षत्र, सितारे और पहाड़ और पेड़ और चौपाये ईश्वर के आगे सिर झुकाये हैं और बहुत से आदमी ऐसे भी हैं जिनका दण्ड दिया जा चुका है और जिसको ईश्वर बदनाम करे तो कोई उसको भलाई देनेवाला नहीं। ईश्वर जो चाहे सो करे। (१८) यह दो गुट हैं एक दूसरे के आपस में विरुद्ध अपने पालनकर्ता के बारे में झगड़ते हैं। एक गुट ईश्वर को मानता है और एक नहीं मानता तो जो लोग नहीं मानते उनके लिए आग के कपड़े ब्योंते यानी आग उनके बदन से ऐसा लिपटेगी जैसे कपड़ा है। उनके सिरों पर गर्म पानी डाला जायगा (१९) जिससे जो कुछ उनके पेट में है और खालें गल जायेंगी। (२०) और उनके लिए लोहे के हथौड़े मौजूद हैं। (२१) घुटे-घुटे जब उससे निकलना चाहेंगे तो उसी में फिर ढकेल दिये जावेंगे ताकि जलने का दण्ड मिलता रहे। (२२) (रुकू २)

जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनको अल्लाह बागों में भेजेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहां उनको गहना पहनाया जायगा। सोने कंकन और मोती और वहाँ उनको कपड़े रेशमी होंगे। (२३) और उनको अच्छी बात की शिक्षा दी गई थी और उनको उसी ईश्वर की राह दिखाई गई थी जो प्रशंसा के योग्य है (२४) जो लोग मना करते हैं और ईश्वर की राह से और मसजिद हराम से रोकते हैं जिसको हमने सब आदमियों लिए बनाया है, चाहे वहाँ के रहने वाले हों, सबको एकसी बनी है। और उनको जो मसजिद हराम में शरारत से इन्कार करना चाहें हम उसे दुखदाई दण्ड देंगे। (२५) (रुकू ३)

और ऐ पैगम्बर ! जब हमने इब्राहीम के लिए काबे के घर की जगह तै कर दी और आज्ञा दी कि हमारे साथ किसी को न मिलना और हमारे घर की परिक्रमा करने वालों और ठहरने, खड़े होने, नत-मस्तक होने के लिए साफ और सुथरा रखना। (२६) और लोगों में हज्ज के लिए पुकार दो कि लोग तुम्हारी तरफ और हरलागर ऊंटों पर सवार होकर दूरी की राह से चले आवें। (२७) अपने लाभ के लिए आएं खुदा ने जो जानवर उनको दिये हैं खास दिनों में उन पर ईश्वर का नाम लें। उसमें से खाओ और दुखिया फकीर को खिलाओ (२८) फिर चाहिए कि अपना मैल-कुचैल उतार दें और अपनी मन्नतें, पूरी करें, पुराने काबे की परिक्रमा करें। (२९) यह सुन चुके और जो आदमी ईश्वर के अदब की बढ़ाई रखे तो यह उसके पालनकर्ता के यहाँ उसके प्रति अच्छा है और जो तुमको कुरान से पढ़कर सुनाया जाता है वह सब चौपाये तुमको हलाल हैं और मूर्ती की गन्दगी से बचते रहो और झूठी बात के कहने से बचते रहो। (३०) एक अल्लाह के हो रहो, उसके साथी साझी न ठहराओ और जो ईश्वर का साक्षी बनावे गोया वह आकाश से गिर पड़ा। फिर उसको पक्षियों ने उचक लिया या उसको हवा ने किसी और जगह पटक दिया। (३१) यह बात है और जो मनुष्य उन चीजों का अदब-लिहाज रखे जो ईश्वर के नाम रखी गई हैं तो यह दिलों की परहेजगारी है। (३२) तुमको चौपायों में खास समय तक लाभ हैं फिर पुराने खाने के पास उनको पहुंचा देना है। (३३) (रुकू ४)

हर एक गिरोह के लिए हमने कुरबानी ठहरा दी है ताकि ईश्वर ने जो उनको मवेशी दे रखे हैं उन पर ईश्वर का नाम लेवे। सो तुम सब का एक ईश्वर है, तो उसी के आज्ञाकारी बनो और गिड़गिड़ाने वाले मनुष्यों को खुशखबरी सुना दो। (३४) जब ईश्वर का नाम लिया जाता है उनके दिल काँप उठते हैं और जो दुख उन पर आ पड़े उस पर संतोष करते और नमाज पढ़ते और जो हमने उनको दे रखा हैं

उसमें से खर्च करते हैं। (३५) और हमने तुम्हारे लिए कुरबानी के ऊँटों को उन चीजों में कर दिया है जो ईश्वर के साथ नामजद की जाती है उनमें तुम्हारे लिए लाभ हैं तो उनका खड़ा रखकर उन पर ईश्वर का नाम लो * फिर जब वह किसी पहलू पर गिर पड़े तो उनमें से खाओ संतोष वालों और भिखारियों को खिलाओ। हमने यों तुम्हारे बस में इन पशुओं को कर दिया है ताकि तुम धन्यवाद दो। (३६) ईश्वर तक न तो इनके माँस ही पहुंचते हैं और न इनके खून** बल्कि उस तक तुम्हारी संयम ही पहुंचाता है। ईश्वर ने इनको यों तुम्हारे काबू में कर दिया है ताकि उसने जो तुमको राह दिखा दी है तो इसके बदले में उसकी बड़ाइयाँ करो। (३७) ईश्वर धर्म वालों से उनके पाप हटाता रहता है बेशक अल्लाह किसी धोखेबाज कृतघ्नी को पसँद नहीं करता। (३८) (रुकू ५)

जिससे काफिर लड़ते हैं उनको भी उन काफिरों से लड़ने की छूट है इसलिए कि उन पर अत्याचार हो रहा है और अल्लाह उनकी सहायता करने पर शक्तिशाली है। (३९) यह वह हैं जो इस बात के कहने पर कि हमारा पालनकर्ता अल्लाह है नाहक अपने घरों से निकाल दिये गये और अगर अल्लाह एक दूसरे से न हटाया करता तो ईसाइयों की पूजा की जगहों और गिरजाओं और यहूदियों की पूजा जगहों और मुसलानों की मसजिदें, जिनमें अधिकता से ईश्वर का नाम

---

* ऊंट के हलाल करने का तरीका यह है कि उसको काबे की ओर खड़ा करते हैं फिर उसकी छाती पर भाला मारते हैं ताकि उसका सारा खून निकल जाय और जब वह गिर पड़ता तो काटते हैं।

**पहले कुरबानी का खून काबे की दीवारों पर छिड़कते थे। मुसलमानों को ऐसा करने से रोका गया और बतलाया गया कि ईश्वर तक केवल संयम ही पहुंचता है।

लिया जाता है , कभी के ढाये जा चुके होते । और जो अल्लाह की सहायता करेगा । अल्लाह बड़ा शक्तिशाली है । (४०) यह मनुष्य अगर इनके पाँव जमीन में जमा दें तो नमाजें पढ़ेंगे । और दान देंगे और अच्छे काम के लिए कहेंगे और बुरे कामों से मना करेंगे और सब चीजों का अन्त तो ईश्वर ही के हाथ है (४१) और ऐ पैगम्बर ! अगर तुमको झुठलाएँ तो इनसे पहले नूह के गिरोह के मनुष्य और आद और समूद के द्वारा झुठलाये जा चुके हैं । (४२) और इब्राहीम की जाति और लूत की जाति । (४३) और मदीअन के रहने वाले अपने-अपने पैगम्बरों को झुठला कुके हैं और मूसा झुठलाये जा चुके हैं । तो हमने काफिरों का समय दिया फिर उनको धर पकड़ा सो हमारी नारजगी कैसी थी । (४४) बहुत बस्तियाँ जो अत्याचारी थीं हमने उनको मार डाला, बस अपनी छतों पर गिर पड़ी हैं । (४५) क्या यह मनुष्य देश में चले फिरे नहीं जो इनके ऐसे दिल होते कि उनके द्वारा समझते और ऐसे कान होते कि उनके द्वारा सुनते । बात यह है कि कुछ आँखें अन्धी नहीं हुआ करतीं परन्तु दिल जो छाती में है वह अन्धे हो जाया करते हैं । (४६) और ऐ पैगम्बर ! तुमसे दण्ड की जल्दी मचा रहे हैं और ईश्वर तो कभी अपना प्रण झूठा करने का नहीं और संदेह नहीं कि तुम्हारे पालनकर्ता के यहां तुम लोगों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष के बराबर एक दिन है । (४७) और बहुत सी बस्तियाँ जिनको हमने ढील दिया फिर उनको पकड़ा और हमारी तरफ लौटकर आना है । (४८) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर ! बहो कि मैं तुमको प्रत्यक्ष दण्ड से डराने वाला हूं । (४९) फिर जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने नेक काम किये उनके लिए इज्जत की रोजी है । (५०) और जो लोग हमारी आयतों को हराने के लिए दौड़ते हैं वही नरकवासी हैं । (५१) और ऐ पैगम्बर हमने तुमसे पहले कोई ऐसे पैगम्बर नहीं भेजा और कोई ऐसा नबी की उसको यह मामला पेश न आया हो कि जब वह ख्याल बाँधने लगा

राक्षस ने उनके विचार में कुछ न कुछ डाल दिया है *। फिर ईश्वर ने राक्षस के बुरे विचार को दूर और अपनी आयतों को कठोर कर दिया और अल्लाह चमत्कारी है सब खबर रखता हैं। (५२) इसलिए कि उस राक्षस के मिलाये से उन लोगों को जांचे जिनके दिलों में बुरे विचार की बीमारी है और उनके दिल कठोर हैं और अपराधी तो खिलाफी में दूर पड़े हैं। (५३) और यह इस लिए कि जिन लोगों को विद्या दी गयी है वह जान लें कि वह तेरे पालन कर्ता से सच है, फिर वह उस पर विश्वास लाये और उनके दिल उसके आगे दबें और जो विश्वास लाये हैं ईश्वर उनको सीधी राह दिखलाता है। (५४) और जो लोग मना करने वाले हैं वह तो हमेशा इस क़ुरान की तरफ़ संदेह ही में रहेंगे, यहाँ तक कि प्रलय अचानक उन पर आ पहुंचे या बुरे दिन का दण्ड उन पर उतरे। (५५) राज्य उस दिन ईश्वर का होगा। वह लोगों में निर्णय कर देगा तो जो लोग विश्वास लाये और उन्होंने अच्छे काम किये वह आराम के बाग़ों में होंगे। (५६) और जो मना करते और हमारी आयतों को झुठलाते रहे तो यही है जिनको बदनामी का दण्ड होगा। (५७) (रुकू ७)

और जिन लोगों ने ईश्वर की राह में घर छोड़े फिरे मारे गये या मर गये उनको जरूर अच्छी रोजी देगा और ईश्वर ही सबसे अच्छी रोजी देने वाला है। (५८) वह उनको ऐसी जगह पहुंचावेगा जैसी वह चाहेंगे और अल्लाह जानकार है। (५९) यह सुन चुके और जिस आदमी ने उतना सताया जितना कि यह मनुष्य सताया गया है, फिर उस पर अधिकता हुई तो इसकी ईश्वर अवश्य सहायता करेगा। ईश्वर

---

* कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद साहब ने कुछ आयतें पढ़ीं तो राक्षस ने उनकी ही आवाज में मूर्ति की तारीफ भी मिला दी। इस पर मुशरिक बहुत खुश हुए लेकिन रसूल को यह सुन कर बड़ा दुख हुआ।

क्षमा करनेवाला छोड़ देनेवाला है। (६०) यह इस कारण से है कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में। अल्लाह सुनता, देखता है। (६१) यह इस कारण से है कि अल्लाह ही सचमुच है और जिनको इन्कारी ईश्वर के अलावा पुकारते हैं वह झूठे हैं और इस कारण से अल्लाह ही बहुत बड़ा है। (६२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह आकाश से पानी बरसाता है फिर जमीन हरी हो जाती है निःसन्देह अल्लाह छिपी चीजें जानता है। (६३) उसी का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है। अल्लाह वेपरवाह और बड़ाई के योग्य है। (६४) (रुकू ८)

क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने इन चीजों को जो जमीन में हैं तुम लोगों के बस में दिया है और नाव उसकी आज्ञा से नदी में चलती है और आकाश पृथ्वी पर गिरने से थमा है मगर उसकी आज्ञा से कुछ संदेह नहीं कि अल्लाह आदमियों पर बड़ी दयालुता और प्रेम रखता है। (६५) और वही है जिसने तुममें जान डाली। फिर तुमको मारता है। फिर जिलावेगा। निःसन्देह मनुष्य बड़ा कृतघ्नी है। (६६) ऐ पैगम्बर! हमने हर गुट के लिये पूजा के उपाय बताए कि वह उन पर चलते हैं, तो इन लोगों को चाहिए कि तुझसे इस काम में झगड़ा न करें और तुम अपने पालनकर्ता की तरफ बुलाये चले जाओ। निःसंदेह तुम सीधी राह पर हो (६७) और अगर तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उसे खूब जानता है। (६८) जिन बातों में तुम आपस में भेद डालते हो अल्लाह प्रलय के दिन झगड़ों का निर्णय कर देगा। (६९) क्या तुम नहीं जानते कि जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है अल्लाह उसे जानता है, यह किताब में लिखा हुआ है, यह अल्लाह पर आसान है। (७०) और ईश्वर के अलावा उन चीजों की करते हैं जिनके लिए न तो ईश्वर ने कोई प्रमाण उतारा और न इनके पास कोई इसकी अक़ली दलील है और अन्यायियों का कोई सहायक न होगा। (७१) और ऐ पैग़म्बर! जब उनको हमारी खुली-खुली आयत

पढ़कर सुनाई जाती हैं तो तुम काफ़िरों के चेहरों में अप्रसन्नता देखते हो, करीब है कि यह लोग क़ुरान सुनानेवालों पर हमला कर बैठें। ऐ पैग़म्बर ! कहो कि इससे बुरी और एक चीज सुनाऊँ। वह नरक है जिसका प्रण खुदा अविश्वासियों से करना है, बुरा ठिकाना है। (७२) (रुकू ९)

लोगों ! एक उदाहरण दिया है तो उनको कान लगाकर सुनो कि ईश्वर के बजाय जिनको तुम पुकारते हो एक मक्खी भी नहीं पैदा कर सकते, यदि उसके पैदा करने के लिए सबके सब इकट्ठे क्यों न हो जावें। और अगर मक्खी इनसे कुछ छीन ले जावे तो उसको उससे नहीं छुड़ा सकते। कैसे बादे यह बुत जो पीछा करें और उसको न पकड़ सकें (७३) और कैसी बादी वह मक्खी* जिसका पीछा किया जाय और फिर हाथ न आवे। इन लोगों ने ईश्वर की जैसी क़दर जानना चाहिए थी नहीं जानी और अल्लाह तो बड़ा ज़बर-दस्त और जीतनेवाला है। (७४) अल्लाह देवताओं में से और आदमियों में से ईश्वरीय सँदेशा पहुंचाने के लिए चुन लेता है। अल्लाह सुनता-देखता है। (७५) वह उनके अगली और पिछली बातों को जानता है और सब कामों की पहुंच अल्लाह ही पर है। (७६) ऐ ईमानवालो ! रुकू करो और जिसदा करो और अपने पालनकर्ता की पूजा करो और भलाई करते रहो। (७७) और अल्लाह की राह में प्रयत्न करो जैसा कि उसमें प्रयत्न करने का हक़ है। उसने तुमको चुन लिया और दीन में किसी तरह की कठोरता नहीं की दीन तुम्हारे बाप इब्राहीम का था। उसी ने तुम्हारा नाम पहले से मुसलमान रखा और इसमें भी ताकि पैगम्बर तुम्हारे मुक़ाबिले में गवाह हो और तुम दूसरे लोगों के मुक़ाबिले में गवाह हो। तो नमाज़ें पढ़ो और ज़कात दो और अल्लाह ही का सहारा पकड़ो, वही तुम्हारे काम का सँभालनेवाला है खूब मालिक है, और खूब ससायक है। (७८) (रुकू)

***कहते हैं कि काफ़िर बुतों पर शहद चढ़ाते थे और जब मक्खियाँ उसको चाट जाते तो खुश होतीं। सो यहां बताया है कि मूर्तियाँ तो ऐसी**

अठारहवाँ पारा (कद अफ्लहल मोमिनून)

सूरे मोमिनून

मक्के में अवतरित इसमें ११८ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु तथा दयावान है। विश्वास वाले मुराद को पहुंच गये। (१) वह जो अपनी नमाज़ में नत हैं, (२) और वह जो निकम्मी बात पर ध्यान नहीं करते, (३) और वह जो ज़कात दिया करते हैं, (४) और वह जो अपदी शिहवत की जगहों की रक्षा करते हैं, (५) मगर अपनी बीबियों और स्त्रियों के बारे में इल्ज़ाम नहीं है। (६) फिर जो कोई उसके अलावा ढ़ूँढ़े तो यही लोग हद्द से बाहर निकले हुए मर्यादा-भ्रष्ट हैं। (७) और वह जो अपनी अमानतों और प्रतिज्ञा को विचार में रखते हैं, (८) और जो अपनी नमाज़ों के पक्के हैं, (६) यही लोग वारिस हैं। (१०) जो स्वर्ग के वारिस होंगे वही उसमें हमेशा रहेंगे। (११) और हमने आदमी को सनी मिट्टी से बनाया है। (१२) फिर हमने उसको ठहरने वाली जगह पर वीर्य्य बनाकर रखा। (१३) फिर हमने वीर्य्य से लोथड़ा बनाया। फिर हड्डियों पर माँस मढ़ा। फिर उसको एक नई सूरत में बना खड़ा किया। सो अल्लाह की देन है जो सबसे अच्छा बनानेवाला हैं। (१४) फिर इसके बाद तुमको मरना हैं। (१५) फिर प्रलय के दिन तुम उठा खड़े किये जाओगे। (१६) और हमने तुम्हारे ऊपर सात आसमाने बनाये और पैदा करने में हम अनाड़ी न थे। (१७) और हमने नापकर आकाश से पानी बरसाया, फिर उसको पृथ्वी में ठहरा दिया और हम उस पानी को ले जा सकते हैं। (१८) फिर हमने उस पानी से तुम्हारे

दुर्बल और हीन है कि अपना खाना तक मक्खियों से नहीं छीन सकतीं। वह दूसरों की क्या सहायता करेंगे।

लिए खजूरों और अंगूरों के बाग उगा दिये। तुम्हारे लिए उसमें बहुत से फल हैं और उनमें से ही तुम खाते हो। (१९) और सैना पहाड़ पर हमने एक पेड़ जैतून पैदा किया हैं जिससे तेल निकलता है। और रोटी डुबाने का रसा निकलता है। (२०) और तुमको चौपायों में ध्यान करना हैं कि जो उनके पेटों में हैं उसी से हम तुमको दूध पिलाते हैं और तुमको उनमें बहुत आराम हैं और उनमें तुम किन्हीं-किन्हीं को खाते हो। (२१) और उन पर नावों पर चढ़े फिरते हो। (२२) (रुकू १)

और हमने नूह को उनकी जाति की तरफ भेजा तो उसने कहा कि भाइयो! अल्लाह की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं, तो क्या तुमको डर नहीं लगता? (२३) इस पर उनकी जाति के सरदार जो इन्कारी थे कहने लगे वह भी एक आदमी है जो तुमसे बड़ा बनना चाहता है और अगर ईश्वर को पैगम्बर ही भेजना मंजूर होता तो फरिश्तों को उतारता, हमने तो ऐसी बात अपने अगले बाप-दादा से नहीं सुनी। (२४) हो न हो यह एक आदमी है जिसको घमण्ड हो गया है सो एक खास समय तक उसकी राह देखो। (२५) [illegible] प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता! जैसा इन्होंने मुझे झुठलाया है, तू ही मेरी सहायता कर। (२६) इस पर हमने नूह को आज्ञा दी कि हमारी आँखों के सामने और हमारी आज्ञा से एक नाव बनाओ। फिर जब हमारी आज्ञा आवे और ज़मीन से पानी उबलने लगे तो नाव में हरएक जीवधारी में से नर और मादा दो-दो का जोड़ा और अपने घर वालों को बैठा लो, मगर उनमें से नूह की स्त्री और पुत्र के लिए आज्ञा हो चुकी है और अन्यायियों के बारे में मुझसे न बोल। वह डूबेंगे। (२७) फिर जब तुम और तुम्हारे साथी नाव में बैठ जाओ तो कहो कि ईश्वर का धन्यवाद है, जिसने हमको अत्याचारी मनुष्यों से छुटकारा दिया। (२८) और कहा कि ऐ पालनकर्ता! मुझको बरकत का उतारना उतार और तू सब उतारने वालों से अच्छा है। (२९)

इसमें प्रमाण हैं और हम जाँचने वाले हैं। (३०) फिर हमने उनके बाद एक और गुट उठाया। (३१) और उन्हीं में से सालेह को पैगम्बर बनाकर भेजा कि ईश्वर की पूजा करो, उसके सिवाय तुम्हारा कोई पूजित नहीं, तो क्या तुमको डर नहीं लगता। (३२) (रुकू २)

और उसकी जाति के सरदार जो इन्कारी थे और प्रलय के आने को झुठलाते थे और संसार के जीवन में हमने उनको आराम दिया था कहने लगे कि यह सालेह तुम्हीं जैसा आदमी है जो तुम खाते हो यह भी खाता है और जो पानी तुम पीते हो यह भी पीता है। (३३) और अगर तुम अपने जैसे आदमी के कहने पर चलो तो तुम निस्सन्देह खराब होगे। (३४) यह मनुष्य तुमसे कहता है कि जब तुम मर जाओगे और मिट्टी और तुम्हारी हड्डियाँ रह जावेंगी तो तुम दुबारा उठाये जाओगे। (३५) जो तुम्हें प्रण किया जाता है नहीं हो सकता, नहीं हो सकता। (३६) और कुछ नहीं यह हमारे संसार का जीना है। हम जीते और मरते हैं और हम उठाये न जावेंगे। (३७) हो न हो यह सालेह ऐसा आदमी है जिसने ईश्वर पर झूठ बाँधा है और हम तो इसका विश्वास नहीं करते। (३८) सालेह ने कहा ऐ मेरे पालन-कर्ता! मेरी सहायता कर, इन्होंने मुझे झुठलाया है। (३९) ईश्वर ने कहा थोड़े दिनों बाद पछतायेंगे। (४०) यद्यपि सच के अनुसार उनको चिंघार ने आ पकड़ा और हमने उनको कूड़ा कर दिया कुचल दिया ताकि अन्यायी लोग दूर हो जावें। (४१) फिर उनके बाद हमने और गिरोह उठाया। (४२) कोई संगत अपने समय से न आगे बढ़ सकती न पीछे रह सकती है। (४३) फिर हम लगातार अपने पैगम्बर भेजते रहे। जब किसी गिरोह का पैगम्बर उनके पास आता तो उसे झुठलाया करते थे, तो हम भी एक के पीछे एक को हलाक करते गये और हमने उनकी कथाएं बना दीं। तो जो लोग नहीं मानते दूर हो जावें। (४४) फिर हमने मूसा और उनके भाई हारूँ को अपने निशानियाँ और खुले प्रमाण देकर भेजा। (४५) फिरऔन और उसके

दरबारियों की तरफ भेजा तो वह वह घमण्ड में आ गये और वह चढ़ रहे थे। (४६) कहते क्या हम अपने जैसे दो आदमियों को मानने लगे हालाँकि उनकी जाति हमारी सेवा में है। (४७) इन लोगों ने मूसा और हारूं दोनों को झुठालाया तो यह मार डाले गये। (४८) और हमने मूसा को किताब दी ताकि मनुष्य शिक्षा पावें। (४९) और* हमने मरियम के बेटे ईसा और उनकी माँ को निशानी बनाया और उन दोनों को ऊंची जगह पर जहाँ पड़ाव सोता था ठहराव दिया। (५०) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर ! सुथरी चीजें खाओ और भले काम करो। जैसे काम तुम करते हो मै जानता हूं,। (५१) और यह सब एक धर्म पर थे और मैं तुम्हारा पालनकर्ता हूं, मुझसे डरते रहो। (५२) फिर लोगों ने आपस में फुट करके अपना धर्म अलग-अलग कर लिया। जो जिस गुट के पास है वह उससे रीझ रहा है। (५३) तो ऐ पैगम्बर ! तुम एक समय तक इनको इनकी भूल में रहने दो। (५४) क्या ऐसे लोग विचार करते हैं जो हम धन और सन्तान इनको दिए जा रहे हैं। (५५) इनको लाभ पहुंचाने में हम जल्दी कर रहे हैं, बल्कि यह समझते नहीं। (५६) जो लोग अपने पालनकर्ता से डरते हैं (५७) और जो अपमे पालनकर्ता की आयतों को मानते हैं (५८) और जो अपने पालनकर्ता के साथ शरीक नहीं ठहराते (५९) और जितना कुछ देते बनता है ईश्वर की राह में देते हैं और उनके दिलों को इस बात का खटका लगा रहता कि उनको अपने पालनकर्ता की ओर लौटकर जाना है। (६०) यही मनुष्य नेक कामों में जल्दी करते हैं और उनके लिए लपकते हैं (६१) और हम किसी आदमी की ताकत से बढ़कर बोझ

* ईसा ने जन्म लेते ही बातचीत की "यह उनका चमत्कार था" वैसे उनकीं माँ ने किसी पुरुष से मिले बिना ईसा-जैसा महान पुत्र जना यह उनका चमत्कार था।

नहीं डालते और हमारे यहाँ मनुष्यों के काम का रजिस्टर है जो ठीक हाल बताता है और उन पर अन्याय न होगा। (६२) लेकिन इनके दिल इस बात से भूले हैं और इन कामों के सिवाय और कामों में लगे हैं। (६३) यहाँ तक कि जब हम इनमें से धनवान मनुष्यों को दण्ड में धर पकड़ेंगे तो वह मनुष्य चिल्ला उठेंगे। (६४) मत चिल्लाओ आज के दिन तुम हमसे सहायता न पाओगे। (६५) कुरान में से हमारी आयतें तुमको पढ़कर सुनाई जाती थीं और तुम उलटे भागते थे।(६६) तुम कुरान से अकड़ते हुए उद्दण्डता करते थे। (६७) क्या इन मनुष्यों ने कुरान में ध्यान नहीं दिया था। इनके पास एक बात आई जो इनके अगले पिता-दादों के पास नहीं आई थी। (६८) क्या यह मनुष्य अपने पैगम्बर से जानकार नहीं थे और उसे ऊपरी समझते हैं? (६९) क्या यह कहते हैं कि इनको जनून है बल्कि रसूल इनको सच बात लेकर आया है और इनमें से बहुतो को सच बात बुरी लगती है। (७०) और अगर सच्चा ईश्वर उनकी खुशी पर चलता तो आसमान और जमीन और जो कुछ उनके बीच में है खराब हो गया होता, वल्कि हमने इनको इन्हीं की शिक्षायें लाकर सुनाईं सो वे अपनी शिक्षाओं पर ध्यान नहीं देते। (७१) क्या ऐ पैगम्बर! तुम इनसे कुछ मजदूरी माँगते हो तो तुम्हारे पालनकर्ता की देन भली है और वह रोजी देने वाला बेहतर है। (७२) और ऐ पैगम्बर! तू इनको सीधी राह पर बुलाता है। (७३) और जिन मनुष्यों को प्रलय का विश्वास नहीं है वही रास्ते से हटे हुए हैं। (७४) और यदि हम इन पर रहम कर जावें और जो कष्ट इनको पहुंचता है दूर कर दें तो भटके हुए अपनी गुमा-राही में हमेशा पड़े रहेंगे। (७५) और हमने इनको दण्ड में फाँसी तो भी यह मनुष्य अपने पालनकर्ता के आगे न झुके और न आजिजी नम्रता की। (७६) यहाँ तक कि जब हम इन पर कठोर दण्ड का दरवाजा खोल देंगे तव उसमें उनकी आस टूटेगी। (७७) (रुकू ४)

और उसी ने तुम्हारे लिए कान और आँखें और दिल बना दिये

मगर तुम बहुत ही कम कृपा मानते हो। (७८) और उसी ने तुमको जमीन पर फैला रखा है और तुमको इकट्ठा होना है। (७९) और वही जिलाता और मारता है और रात दिन का बदलना भी उसी का काम तो क्या तुम नहीं समझते। (८०) जो बात अगले* कहते चले आते हैं वैसा ही यह भी कहते हैं। (८१) कहते है कि क्या हम जब मर जावेंगे और हड्डियाँ बाकी रह जावेंगी तब क्या हम दोबारा जीवित करके उठा खड़े किये जावेंगे ? (८२) हमको और हमारे बड़ों को इसका वादा पहले भी मिल चुका है, हो न हो यह अगले मनुष्यों के ढकोसले हैं। (८३) ऐ पैगम्बर ! पूछा कि यदि तुम समझते हो तो बताओ कि पृथ्वी और जो कुछ उसमें है किसके हैं। (८४) कहेंगे कि अल्लाह के उनसे कहो कि फिर क्यों नहीं ध्यान देते ? (८५) ऐ पैगम्बर इनसे पूछो कि सात आसमानों का स्वामी और उस बड़े सिंहासन का स्वामी कौन है ? (८६) अब बतावेंगे कि अल्लाह। कहो फिर तुम क्यों नहीं डरते ? (८७) ऐ पैगम्बर ! उन मनुष्यों से पूछो कि यदि जानते हो तो बताओ कि हर चीज पर वस्तु पर अधिकार किसका है और कौन है, जो बचता है ? और उससे कोई बचा नहीं सकता। (८८) अब बतावेंगे अल्लाह को। कहो तो फिर कहाँ से जादू पड़ जाता है ? (८९) सच यह है कि हमने सच-सच बात इनको पहुंचा दी है और बेशक यह झूठे हैं। (९०) अल्लाह ने किसी को पुत्र नहीं बनाया और न उसके साथ कोई और ईश्वर है। यदि ऐसा होता तो हर ईश्वर अपने बनाये को लिए फिरता और एक दूसरे पर चढ़ जाता। जैसी-जैसी बातें यह मनुष्य बयान करते हैं वह उनसे निराला है। (९१) जाहिरा और छिपी बात का जानने वाला उनसे बहुत ऊपर है और ये शरीक बताते हैं। (९२) (रुकू ५)

*** अगले लोग भी कहते थे कि मरने के बाद कोई न जिलाया जायेगा।**

ऐ पैगम्बर ! तुम यह माँगों कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! जिस दण्ड का वादा इनसे किया गया है यदि तू मुझे भी दिखा दे। (९३) तो ऐ मेरे पालनकर्ता ! जालिम मनुष्यों में मुझे न शामिल कर लेना। (९४) और ऐ पैगम्बर ! हमको सामर्थ्य है कि जिस दण्ड का वादा इन काफिरों से कर रहे हैं। (९५) तुमको दिखा दें। जो कुछ यह कहते हैं हम खूब जानकार हैं। (९६) और दुआ करो ऐ पालनकर्ता ! मैं शैतान की छेड़ से तेरी शरण चाहता हूं। इससे कि शैतान मेरे पास आवें। (९८) और यहाँ तक कि जब इनमें से किसी की मौत आती है कहता है कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझे फिर संसार में भेज। (९९) ताकि जिसे मैं छोड़ आया हूं उसमें फिर जाकर भले काम करूं यह एक बात है जिसे वह कहता है उनके पीछे अटकाव है जब तक कि मुर्दों में से उठाये जायँ। (१००) फिर जब नरसिंहा सूर फूंका जायगा तो उस दिन मनुष्यों में न तो रिश्तेदारियाँ बाकी रहेंगी और न एक दूसरे की बात पूछेंगे। (१०१) फिर जिनका पल्ला भारी निकलेगा तो यही मनुष्य मुराद पावेंगे। (१०२) और फिर जिनका पल्ला हल्का होगा तो वही मनुष्य हैं जो अपनी जानें हार गये और सदैव नरक में रहेंगे। (१०३) आग उसके मुहों को झुलसाती होगी और वह वहां बुरे मुंह बनाये होंगे। (१०४) क्या हमारी आयतें तुमको पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं और तुम उनको झुठलाते थे। (१०५) वह कहेंगे ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमको हमारी कमबख्ती ने आ दबाया और हम भटके हुए थे। (१०६) ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमको इस आग से निकाल और यदि हम फिर ऐसा करें तो निस्संदेह अपराधी होंगे। (१०७) ईश्वर कहेगा दूर हो, इसी आग में रहो और हमसे बात न करो। (१०८) हमारे सेवकों में एक गिरोह ऐसा भी था जो कहा करता था कि ऐ मेरे पालनकर्ता हम ईमान लाये, तू हमारे अपराध क्षमा कर और तू दयावानों में भला है। (१०९) फिर तुमने उनकी हंसी उड़ाई, यहाँ तक कि उन्होंने तुमको हमारी याद भुला दी और तुम उनसे हंसी ठट्ठा करते रहे। (११०) आज हमने उनको सन्तोष का

बदला दिया, वही मुराद पावेंगे। (१११) फिर ईश्वर नरक वालों से पूछेगा कि तुम जमीन पर गिनती के कितने वर्ष रहे ? (११२) वह कहेंगे कि एक दिन या दिन से भी कम रहे होंगे। गिनने वालों से पूछ देख। (११३) बताया जायेगा तुम उसमें बहुत नहीं थोड़े हीं रहे होंगे, यदि तुम जानते होते। (११४) क्या तुम विचार करते हो कि हमने तुमको बेकार पैदा किया है और यह कि तुमको हामारी तरफ फिर लौटकर आना नहीं है। (११५) सो ईश्वर सच्चा बादा बहुत ऊंचा है, उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही बड़े सिंहासन का स्वामी है। (११६) और जो मनुष्य ईश्वर के सिवाय किसी को बुलाता है उसके पास इस की कोई प्रमाण नहीं। तो बस उसके पालनकर्ता के ही यहाँ उसका हिसाब होना है। निस्संदेह इन्कारी मनुष्यों का भला न होगा। (११७) और तुम प्रार्थना करो कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! क्षमा कर और कृपा कर और तू अन्य कृपा करने वालों से भला है (११८) (रुकू ६)

सूरे नूर

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ६४ आयतें, ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। एक सूरत है जिसको हमने उतारा और यह हमारा ही बाँधा हुआ है और हमने इसमें खुले-खुले आज्ञा उतारे ताकि तुम याद रखो। (१) मर्द और औरत छिनाला करें तो दोनों में से हर एक को १०० कोड़े मारो और यदि अल्लाह का और आखिर दिन को विश्वास रखते हो तो अल्लाह

की आज्ञा की तामील में तुमको उन पर तरस न आना चाहिए और मुसलमानों को चाहिए कि जब उन पर मार पड़े तो देखने आवें*। (२) व्यभिचारी आदमी व्यभिचारिणी से विवाह करेगा और शिर्क वाली औरत शिर्कवाले मर्द से विवाह करेगी और यह बात धर्मवालों के लिए हराम है। (३) और जो लोग पवित्र औरतों पर लफंट लगायें और चार गवाही न ला सकें तो उनके अस्सी चाबुक मारो और कभी उनकी साक्षी कबूल न करो और ये लोग अनाचार हैं। (४) मगर जिन्होंने ऐसा किए पीछे क्षमा की और अपनी आदत ठीक कर ली तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) और जो लोग अपनी स्त्रियों पर छिनाले का लफंट लगायें और उनके पास सिवाय उनकी जानों के और गवाह न हों तो उनमें से एक की गवाही चार दफे ले लेना चाहिए कि वह सच्चों में हैं। (६) और पांचवें दफे यों कहे कि वह अगर झूठ बोलता हो तो उस पर अल्लाह की फटकार पड़े। (७) और औरत से इस तरह पर दण्ड टल सकता है कि वह चार बार ईश्वर की कसम खाकर बयान करे कि यह आदमी बिल्कुल झूठा है। (८) और पांचवें बार यों कहे कि अगर यह आदमी अपने प्रण में सच्चा है तो मुझ पर ईश्वर ही का कोप पड़े। (९) और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा न होती तो तुम बड़ी आपत्ति में पड़ जाते परन्तु अल्लाह क्षमा करनेवाला चमत्कार वाला है। (१०) (रुकू १)

जिन लोगों ने तूफान उठा खड़ा किया ** तुम ही में एक गिरोह है। इस तूफान को अपने लिए बुरा न समझो बल्कि यह तुम्हारे लिए अच्छा हुआ। तूफान उठाने वालों में से जितना अपराध जिसने इकट्ठा

---

* ताकि स्वयं ऐसा बुरा काम करने से डरें।

** कुछ लोगों ने मुहम्मद साहब की चहीती स्त्री हजरत आइशा पर अनाचार का लफंट लगाया था। यह आयतें उसी से सम्बन्धित हैं।

किया है उसी का फल भोगेगा और जिसने उनमें से तूफ़ान का बड़ा भाग लिया वैसे ही उसको बड़ा दण्ड होगा। (११) जब तुमने ऐसी बात सुनी थी ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली औरतों ने अपने हक में अच्छे विचार क्यों नहीं किया और क्यों न बोल उठे कि यह प्रत्यक्ष लफंट है। (१२) जिन लोगों ने यह तूफान उठा खड़ा किया अपने बयान के प्रमाण पर चार साक्षी क्यों न लाये ? फिर जब साक्षी न ला सके तो ईश्वर के नजदीक यही झूठे हैं। (१३) और अगर तुम पर सँसार और प्रलय में ईश्वर की कृपा न होती तो इस चर्चे में तुम पर बड़ा दण्ड उतरता। (१४) जब तुमने लफंट को अपनी जबानों पर लिया और अपने मुँह से ऐसी बात कहने लगे जिनको तुम न जानते थे और तुम उसे हल्की बात समझे, हालांकि अल्लाह के पास वह बड़ी बात है। (१५) और जब तुमने ऐसी बात सुनी थी क्यो न बोल उठे कि हमको ऐसी बात मुँह से निकालना शोभा नहीं देता। अल्लाह तो पवित्र है और यह बड़ा लफंट है। (१६) ईश्वर तुमको शिक्षा देता है कि अगर तुम धर्म रखते हो तो फिर कभी ऐसा न करना। (१७) और अल्लाह अपनी आज्ञा तुमसे खोलकर करता है और अल्लाह चमत्कार वाला जानकार है। (१८) जो लोग चाहते हैं कि ईमानवालों में व्यभिचार की चर्चा हो उनके लिए दुनिया में और प्रलय में दुखदाई दण्ड है। और अल्लाह ही जानता है और तुम नहीं जानते। (१९) और अगर अल्लाह की कृपा तुम पर न होती तो तुम एक भयंकर विपत्ति में पड़ जाते, लेकिन अल्लाह नर्मी करने वाला कृपालु है। (२०) (रुकू २)

ऐ ईमानवालों ! राक्षस के कदम पर कदम न रखो और जो राक्षस के कदम पर कदम रखेगा तो राक्षस उसको बेशर्मी और बुरे काम को कहेगा और अगर तुम पर अल्लाह की कृपा और दया न होती तो तुममें से कोई कभी भी पवित्र न होता। लेकिन अल्लाह जिसे चाहता है पवित्र करता है और अल्लाह सुनता जानता है। (२१)

और तुमसे जो लोग बड़ाई वाले और सामर्थ्यवान हैं नातेदारों, मुहताजों और देश छोड़ने वालों को अल्लाह की राह में देने से सौगन्ध न खा बैठें बल्कि क्षमा करें और छोड़ दें। क्या तुम नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हारे अपराध क्षमा करे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है ? (२२) जो लोग ईमानवाले बेखबर पवित्र औरतों पर लफंट लगाते हैं ऐसे लोग दुनिया और प्रलय में फटकारे गये हैं और उनको बड़ा दण्ड होगा। (२३) जब इनकी जबानें और इनके हाथ और इनके पाँव इनके कामों की जो कुछ वे करते थे साक्षी देंगे, (२४) उस दिन अल्लाह इनको पूरा-पूरा बदला देगा और जान लेंगे कि अल्लाह ही सच्चा दिखाने वाला है। (२५) व्यभिचारिणी औरतें व्यभिचारी मर्दों के लिए और व्यभिचारी मर्द व्यभिचारी औरतों के लिए और पवित्र औरतें पवित्र मर्दों के लिए और पवित्र मर्द पवित्र औरतों के लिए हैं और जो लफंट लगाये फिरते हैं उनसे जो अलग हैं उनके लिए क्षमा है इज्जत की रोजी है। (२६) (रुकू ३)

ऐ धर्मवालों ! अपने घरों के सिवाय और घरों में बगैर पूछे और बिना सलाम किये न जाया करो, यह तुम्हारे हक में भला है, शायद तुम याद रखो। (२७) फिर अगर तुमको मालूम हो कि घर में कोई आदमी नहीं है तो जब तक तुम्हें आशा न हो उसमें न जाओ और अगर तुमसे कहा जावे कि लौट जाओ यह तुम्हारे लिये ज्यादा सफाई की बात है और जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसको जानता है। (२८) और उजाड़ा हुआ मकान जिसमें तुम्हारा सामान हो उनमें चले जाने से तुम्हें पाप नहीं और जो कुछ तुम जाहिरा करते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो अल्लाह जानता है। (२९) ऐ पैगम्बर धर्म वालों से कहो कि अपनी आँख नीची रखे और अपनी शर्मगाहों को बुरे काम से बचाये रहें। इसमें उनकी ज्यादा सफाई है और लोग जो कुछ भी किया करते हैं अल्लाह को खबर है। (३०) और ऐ पैगम्बर ! धर्मवाली स्त्रियों से कहो कि अपनी आखें नीची रखें और

अपनी शर्मगाहों को बचाये रहें और अपना शृंगार न दिखावें, मगर जितना जाहिर है यानी मुँह, हाथ और पैर और अपने कन्धों पर ओढ़नी ओढे रहें और अपना शृंगार न दिखावें, सिवाय अपने पति के और अपने बाप के या अपने ससुर के या अपने पति के बेटे के या अपने भाइयों के या भतीजों के या अपने भान्जों के या अपनी मेल-जोल की औरतों के या अपने हाथ के माल यानी लौंडियों या घरके लगे हुए ऐसे सेवकों के या जो मर्द तो हों मगर औरतों से कुछ गरज नहीं रखते हों या लड़कों को जिन्होंने औरतों के भेद नहीं जाने। और चलने में अपने पाँव ऐसे जोर से न रखें कि लोगों को उनके अन्दरूनी जेवर की खबर हो और तुम सब अल्लाह के सामने क्षमा माँघो, जिससे छुटकारा पाओ। (३१) और अपनी विधवाओं के निकाह करा दो और अपने गुलामों और लौंडियों में से जो नेकबख्त हों उनके निकाह करा दो। अगर यह लोग मुहताज होंगें तो अल्लाह उनको मालदार बना देगा और अल्लाह गुंजाइश वाला जानकार है। (३२) और जिन लोगों का विवाह नहीं हुआ वे अपने को थामे रहें, यहाँ तक कि अल्लाह अपनी कृपा से उन्हें सामर्थ्य दे और तुम्हारे हाथ के माल में से जो लिखने* के चाहनेवाले हों तो तुम उनके साथ लिख दिया करो बशर्ते कि तुम उनमें नेकी पाओ और माले खुदा में से जो उसने तुमको दे रखा है उनको दो और तुम्हारी लौंडियां जौ पवित्र रहना चाहती हैं उनको साँसारिक जीविन के लाभ की गरज से व्यभिचार पर मजबूर न करो और जो उनको मजबूर करेगा तो अल्लाह उनके मजबूर किये पीछे क्षमा करनेवाला कृपालु है। (३३) और हमने इस कुरान में तुम्हारे पास खुली-खुली आज्ञा भेजी हैं और जो लोग तुमसे पहिले हो गुजरे हैं उनके हालात संयमी के लिए शिक्षा हैं। (३४) (रुकू ४)

***यानी जो सेवक अपनी आजादी के लिए एक तहरीर चाहे जिसने उसको आजादी की शर्तों का जिक्र हो तुम ऐसी तहरीर उसको दे दो।**

अल्लाह आकाश और पृथ्वी की रोशनी है। उसकी रोशनी की मिसाल ऐसी है कि जैसे एक आला है, उस आले में एक दिया और दिया एक शीशे की कंडील में रखा है और कंडील एक सितारे की तरह चमकता है। जैतून के बरकत के पेड़ से उस चिराग में तेल जलता है जो न पूर्वी और न पश्चिमी है। उसका तेल ऐसा साफ है कि अगर उसको आँचल न छुए तो भी जल उठे। उजाले पर उजाला अल्लाह अपने उजाले की तरफ जिसको चाहता है राह दिखाता है और अल्लाह लोगों के लिए मिसालें बनाता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (३५) ऐसे घरों में जिनकी बावत ईश्वर ने आज्ञा दी है कि उनकी बुजुर्गी की जाय और उनमें ईश्वर का नाम लिया जावे, उनमें सुबह शाम याद करते हैं। (३६) ऐसे लोग ईश्वर की पवित्रता कहते रहते हैं जो सौदागरी और लेन-देन ईश्वर के जिक्र और नमाज के पढ़ने और तामज के देने से गाफिल नहीं होते, उस दिन से डरते हैं जबकि दिल और आँखें उलट जायंगी। (३७) अल्लाह उनका उनके कामों का भला से भला बदला दे और उनको अपनी कृपा से बढ़ती दे और अल्लाह जिसको चाहता है रोजगार देता है। (३८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके काम जैसे मैदान में चमकता हुआ रेत, प्यासा उसको पानी समझता है। यहां तक कि जब उसके पास पहुंचता है तो उसको कुछ नहीं पाता और ईश्वर को अपने पास मौजूद पाया। उसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया और अल्लाह जरा देर में हिसाब करने वाला है। (३९) उनके काम का उदाहरण बड़े गहरे नदी के अन्दरूनी अंधेरों कैसी है कि नदी को लहर ने ढाँक रखा है और लहर के ऊपर लहर उसके बादल का अँधेरा है, एक के ऊपर एक अपना हाथ निकाले तो आशा नहीं कि उसको देख सकें। और जिसको अल्लाह ही ने उजाला नहीं दिया तो उसके लिए कोई उजाला नहीं। (४०) (रुकू ५)

क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है अल्लाह की पवित्रता बताता है और पक्षी पर फैलाये उड़ते फिरते हैं। सबने

अपनी नमाज और याद का तरीका जान रखा है। और जो कुछ यह करते हैं अल्लाह उससे जानकार है। (४१) और आकाश और पृथ्वी पर साम्राज्य अल्लाह का है और अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है। (४२) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को हाँकता है, फिर बादलों को आपस में जोड़ता है, फिर उनको तह पर तह करके रखता है, फिर तू बादल में से मेह को निकलते हुए देखता है और आकाश में जो ओलों के पहाड़ जमे हुए हैं जिस पर चाहता है ओले बरसाता है और जिसे चाहता है उसे बचा देता है। बादल की विजली की चमक आँखों को उचक ले जावे। (४३) अल्लाह रात और दिन को बदलता रहता है। जो लोग सूझ रखते हैं उनके लिए ध्यान की जगह है। (४४) और अल्लाह ने तमाम जानदारों को पानी से पैदा किया है फिर उनमें से कोई जो पेट के बल चलते हैं और कोई उनमें से पाँव से चलते हैं और कोई उनमें से चार पांव से चलते हैं अल्लाह जो चाहता हैं बनाता है। निस्संदेह अल्लाह हर चीज पर शक्तिशाली है। (४५) हमने खुली आयतें उतारी हैं और अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह बताता है। (४६) कहते हैं कि हम अल्लाह पर और पैगम्बर पर ईमान ले आये और आज्ञा मानी, फिर इसके बाद इनमें का एक गुट नहीं मानता हैं और वे ईमान लाने वाले नहीं। (४७) और जब ईश्वर और पैगम्बर की तरफ बुलाये जाते हैं कि उनमें उनके आपस के झगड़ों का निबटारा कर दें, उनका एक गुट मुँह मोड़ता है। (४८) और अगर उनको कुछ हक पहुंचता हो तो कान दबाये रसूल की तरफ चले आते हैं। (४९) क्या इनके दिलों में कुछ रोग है या संदेह में पड़े हैं या डरते हैं कि अल्लाह और उसका रसूल उनकी हकतलफी न कर बैठें बल्कि यही लोग अन्यायी हैं। (५०) (रुकू ६)

ईमानदारों की बात यह है कि जब ईश्वर और उनके पैगम्बर की तरफ निर्णय के लिए बुलाये जाते हैं तो कहते हैं हमने सुना और माना

और यही मनुष्य छुटकारा पाते हैं। (५१) और जो कोई अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा माने और अल्लाह से डरे और उससे बचता रहे तो ऐसे ही मनुष्य मुराद को पहुंचेंगे। (५२) और अल्लाह की पक्की सौगन्धें खा-खाकर कहते हैं कि यदि आप आज्ञा देवें तो बिला उज्र निकल खड़े हों। ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यों से कहो कि कसमें न खाओ, तुम्हारी आज्ञाकारी की सचाई मालूम है और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (५३) कहो कि अल्लाह की आज्ञा मानो और पैगम्बर का कहा मानो। फिर यदि तुम भागोगे तो जो जिम्मेदारी पैगम्बर पर है उसका उत्तर वह है और जो जिम्मेदारी तुम पर है उसके उत्तर तुम हो। यदि पैगम्बर के कहने पर चलोगे तो किनारे जा लगोगे और पैगम्बर के जिम्मे तो ईश्वर की आज्ञा साफ तौर पर पहुंचा देना है। (५४) तुम में से जो मनुष्य ईमान लाये और अच्छे काम किये उनसे ईश्वर का प्रण है कि उनको संसार में खलीफा बनायेगा जैसे इन मनुष्यों से पहले खलीफे बनाये थे। उनका दीन जो उसने उनके लिए पसंद किया उसको उनके लिए कठोर कर देगा और डर जो इनको है इनके बाद इनको शाँति देगा कि हमारी पूजा किया करेंगे और किसी वस्तु को हमारा साझी न मानेंगे और जो आदमी इनके बाद इन्कारी हो तो ऐसे ही मनुष्य अवज्ञाकारी हैं। (५५) और नमाज पढ़ा करो और दान दिया करो और पैगम्बर के कहे पर चलो शायद तुम पर दया की जावे। (५६) ऐ पैगम्बर ! ऐसा विचार न करना कि काफिर देश में हमें हरा देंगे और इनका ठिकाना नरक है, और वह बुरी जगह है। (५७) (रुकू ७)

ऐ ईमान वालो ! तुम्हारे हाथ के सेवक और तुम्हारे अवयस्क लड़के तीन वक्तों में तुम्हारी आज्ञा लेकर घर आवें। एक तो प्रातः की नमाज से पहले और दूरे दोपहर को जब तुम कपड़े उतारा करते हो और तीसरे रात की नमाज के बाद। वह तीनों समय तुम्हारे परदे के हैं। इन वक्तों के सिवाय न तुम पर कुछ पाप है और न उन पर,

क्योंकि वह तुम्हारे पास आते-जाते हैं। यों अल्लाह आयतों को तुमसे खोल-खोलकर बयान करता है और अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (५८) जब तुम्हारे लड़के वयस्क हो जावे तो जिस तरह इनके अगले आज्ञा माँगा करते हैं इसी तरह इनको भी आज्ञा माँगनी चाहिये। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल-खोलकर कहता है और अल्लाह जानकर चमत्कार वाला है। (५९) और बड़ी-बूढ़ी औरतें जिनको निकाह की आज्ञा नहीं यदि अपने कपड़े दुपट्टे या चद्दर उतार रखा करें] तो इसमें उन पर कुछ अपराध नहीं बशर्ते कि उनको अपना बनाव दिखाना मन्जूर न हो और यदि बचाए रखें तो उनके हक में भला है और अल्लाह सुनता जानता है। (६०) अंधे, लंगड़े और बीमार तुम्हारा जानों पर भी कुछ पाप नहीं कि अपने पिता के घर से या माँ के घर से या अपने भाइयों के घर से या अपनी बहनों के घरों से या अपने चाचाओं के घरों से या अपनी फूफियों के घरों से या अपने मामुओं के घरों से या अपनी मौसियों के घरों से या उन घरों से जिनकी कुञ्जियाँ तुम्हारे काबू में हैं या अपने मित्रों के घरों से फिर इसमें भी तुम पर पाप नहीं कि सब मिल कर खाओ या अलग-अलग। फिर जब घरों में जाने लगो तो अपने मनुष्यों को सलाम कर लिया करो। क्षेम कुशल की आशीष ईश्वर की ओर से बरकत उम्मह वाली है। यों अल्लाह आज्ञा खोल खोलकर कहता है शायद तुम समझो। (६१) (रुकू ८)

ईमान वाले हैं जो अल्लाह और पैगम्बर पर ईमान लाये हैं और जब किसी ऐसी बात के लिए, जिसमें मनुष्यों के जमा होने की जरूरत है, पैगम्बर के पास होते हैं तो जब तक पैगम्बर से आज्ञा न ले लें नहीं जाते हैं। ऐ पैगम्बर ! जो तुमसे आज्ञा ले लेते हैं आज्ञा में वहीं मनुष्य हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर विश्वास लाये हैं। तो यह मनुष्य अपने किसी काम के लिए तुमसे आज्ञा मांगे तो तुम इनमें से जिसको चाहो आज्ञा दे दिया करो। ईश्वर से उनके लिए क्षमा माँगो।

अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६२) जब पैगम्बर तुममें से किसी को बुलाये तो उन के बुलाने को आपस में मामूली बुलाना न समझो जैसा तुम में एक को एक बुलाया करता है। अल्लाह उन मनुष्य को खूब जानता है जो तुम में से छिपकर सटक जाते हैं। तो जो मनुष्य रसूल की आज्ञा का विरोध करते हैं, उनको इससे डरना चाहिए कि उन पर कोई आफत न आ पड़े या उन पर दुखदाई दण्ड आ जाये। (६३) सुनो जो अल्लाह ही का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है, तुम जिस हाल में हो उसे मालूम है और जिस रोज ईश्वर की तरफ लौट कर लाये जाओगे तो जेसे काम करते रहे हैं ईश्वर उनको बता देगा और अल्लाह सब कुछ जानता है। (६४) (रुकू ९)

सूरे फुर्कान

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ७७ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयालु तथा कृपालु है। उसको बरकत है जिसने अपने सेवक मुहम्मद पर कुरान उतारा ताकि तमाम संसार के लिए डराने वाला हो (१) आकाश और पृथ्वी का साम्राज्य उसी की है और वह कोई पुत्र नहीं रखता और न राज्य में उसका कोई साझी है। और उसी ने हर वस्तु को पैदा किया, फिर हर एक वस्तु के लिए एक अन्दाजा ठहरा दिया। (२) और राक्षसों ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित मान लिए हैं जो किसी वस्तु को पैदा नहीं कर सकते बल्कि वह खुद बनाये हुए हैं। और अपने लिए बुरे-भले के स्वामी नहीं हैं और न मरने के और न जीने के और न जी उठने के स्वामी हैं। (३) और राक्षस कुरान की निस्बत कहते हैं कि यह तो निरा झूठ है

जिसको इस पैगम्बर ने गढ़ लिया हैं और दूसरे मनुष्यों ने उसकी सहायता की है। यही मनुष्य झूठ और अत्याचार पर हैं। (४) और कहते हैं कि कुरान अगले मनुष्यों की कहानियाँ है जिसको इस मुहम्मद ने किसी से लिखवा लिया है और वही सुबह शाम पढ़-पढ़कर सुनाया जाता है। (५) ऐ पैगम्बर! कहो यह कुरान उसने उतारा है जो आकाश और पृथ्वी की सब छिपी बातों को जानता है। वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (६) और कहते हैं कि यह कैसा पैगम्बर है जो खाना खाता और बाजारों में फिरता है*। इसके पास कोई देवदूत क्यों नहीं भेजा गया कि इसके साथ होकर डराता। (७) या इस पर कोई खजाना बरसा होता या इसके पास बाग होता कि उससे खाता। और अत्याचारी कहते हैं कि तुम तो ऐसे आदमी के पीछे हो गये हो कि जिस पर किसी ने जादू कर दिया है। (८) ऐ पैगम्बर ? देखो तुम्हारी लिए कैसी बातें बनाते हैं जिससे गुमराह हो गये और फिर राह पर नहीं आ सकते हैं। (९) (रुकू १)

वह ऐसा बरकत वाला है कि चाहे तो तुम्हारे लिए ऐसे बाग दे कि जिनके नीचे नहरें बहती हों और तुम्हारे लिए महल बना दे। (१०) असली बात यह मनुष्य प्रलय को झूठ समझते हैं और मनुष्य प्रलय को झूठ समझें उनके लिये हमने नरक तैयार कर रखा है। (११) जब वह उसको दूर से देखेंगे तो उसकी चिल्लाहट और झुंझलाहट सुनेंगे। (१२) और जब नरक की किसी तंग जगह में गठरी बाँध कर डाल दिये जायँगे तो वहाँ मृत्यु को पुकारेंगे। (१३) देवदूत कहेंगे कि एक मृत्यु को न पुकारो बल्कि बहुत मौतों को पुकारो। (१४) ऐ

*** काफिर समझते थे कि नबी या रसूल साधारण मनुष्य के समान नहीं रहता। उसके साथ हर समय एक फरिश्ता रहता है, जो दूसरों को बताता रहता है कि यह नबी या रसूल हैं।**

पैगम्बर ? इनसे कहो कि यह बढ़कर है या हमेशा रहने के बाग जिसका प्रण संयमों का मिला है कि उनका बदला वह ठिकाना होगा। (१५) और जो वस्तु वह चाहेंगे वहाँ मौजूद होगी। हमेशा रहेंगे। यह उनका माँगा हुआ प्रण तेरे ईश्वर पर लाजिम आ गया है। (१६) और जिस दिन ईश्वर उन राक्षसों का और पूजितों को जिनको यह ईश्वर के सिवाय पूजते हैं जमा करेगा फिर इनके पूजितों से पूछेगा कि क्या तुमने मेरे इन दासों को गुमराह किया था या यह आपसे आप राह भटक गये थे ? (१७) इनके पूजित कहेंगे कि तू पवित्र है, हमको यह बात किसी तरह शोभा नहीं देती थी कि तेरे सिवाय दूसरे काम संभालने वाले बनाते बल्कि तूने इनको और इनके बडों को आराम चैन दो, यहाँ तक कि वह तेरी याद को भुला बैठे और यह माने होने वाले मनुष्य थे। (१८) हम काफिरों से कहेंगे तुम्हारे इन पूजितों ने तुमको सारी बातों में झुठलाया। अब तुम न तो हमारे दण्ड को टाल सकते हो और न सहायता ले सकते हो। और जो तुममें से ईश्वर बना कर अत्याचार करेगा हम उसको बड़ा दण्ड देंगे।(१९) और ऐ पैगम्बर ! हमने तुमसे पहले जितने रसूल भेजे, वह खाना खाते थे और बाजारों में चलते-फिरते थे और हमने तुममें एक दूसरे की जाँच को रखा है तो देखें ठहरे रहते हो या नहीं और तुम्हारा पालनकर्ता देख रहा है। (२०) (रुकू २)

उन्नीसवाँ पारा (वकालल्लजीन)

और जो मनुष्य हमसे मिलने की आशा नहीं रखते वह कहा करते हैं कि हम पर देवदूत क्यों नहीं उतरे या हम अपने पालनकर्ता को देखें तो विश्वास करें। इन मनुष्यों ने अपने दिलों में अपनी बड़ी बड़ाई समझ रखी है और सीमा से बहुत बढ़ गये हैं। (२१) जिस दिन

मनुष्य फरिश्तों को देखेंगे उस दिन पापियों को कोई खुशी न होगी। और फरिश्तों को देखकर कहेंगे कि किसी आड़ में हो जाओ। (२२) और यह मनुष्य जो काम कर गये हैं अब हम उनकी तरफ ध्यान देंगे और उनको बिखरी हुई धूल कर देंगे। (२३) स्वर्ग वालों का उस दिन अच्छा ठिकाना होगा और दोपहर को सोने का स्थान भी अच्छा मिलेगा। (२४) और जिस दिन आकाश बदली से फट जायगा और फरिश्ते दर्जा बदर्जा उतारे जायंगे, (२५) उस दिन रहमान का सच्चा राज्य होगा और वह दिन काफिरों को कठिन होगा। (२६) और जिस दिन अपराधी अपने हाथ चबा-चबा लेगा और कहेगा कि किसी तरह मैंने पैगम्बर के साथ राह पकड़ी होती। (२७) हाय मेरी कम-बख्ती मैं उस आदमी को मित्र बनाता। (२८) उसने तो शिक्षा आये पीछे भी मुझको बहका दिया और राक्षस आदमियों को समय पर धोखा देने वाला है। (२९) और उस समय पैगम्बर मुहम्मद ईश्वर से सामने कहेंगे कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मेरे गुट ने इस कुरान को बेकार समझा। (३०) और ऐ पैगम्बर ! जिस तरह तुम्हारे जमाने के काफिर शत्रु हैं इसी तरह पापियों को हम हरएक पैगम्बर के शत्रु बनाते आये हैं और हिदायत देने और सहायता करने का तुम्हारा पालनकर्ता काफी है। (३१) और काफिर कहते है कि इस पैगम्बर पर कुरान सारे का सारा एकदम से क्यों नहीं उतारा गया ? हम इसके द्वारा तुम्हारे हृदय को तसल्ली देते रहे और हमने उसे रुक-रुककर उतारा। (३२) और जो उदाहरण यह तेरे पास लाते हैं, हम उसका ठीक उत्तर और सच्चा बयान तुझे देते रहते हैं। (३३) जो मनुष्य औंधे मुंह नरक की ओर हाँके जायँगे यही मनुष्य बुरी जगह में होंगे और वही बहुत भटके हुए हैं। (३४) (रुकू ३)

और हमने मूसा को किताब तौरात दी और उनके भाई हारूँ को उनके साथ नायब कर दिया। (३५) फिर हमने आज्ञा दी कि दोनों

भाई उन मनुष्यों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया है तो हमने उन मनुष्यों को नष्ट-भ्रष्ट कर दिया। (३६) और कौम नूह ने भी जब पैगम्बरों को झुठलाया तो हमने उनको डुबो दिया और उनको मनुष्यों के लिए निशान उदाहरण बना दिया और हमने अन्यायियों को दुखदाई दण्ड तैयार कर रखा है। (३७) इसी तरह आद और समूद और खन्दक वालों और उनके बीच-बीच में और बहुत से गुटों को हमने मार डाला। (३८) और सबों को उदाहरण दे देकर समझाया था और हमने उनका नाश कर दिया (३९) और यह मक्के के काफिर जरूर कौम लूत की उस बस्ती पर हो आये हैं जिस पर बुरा पथराव बरसाया गया था, तो क्या उन्होंने उसे न देखा होगा, यदि इन मनुष्यों को मरे पीछे जी उठने की आशा ही नहीं। (४०) और पैगम्बर! जब यह मनुष्य तुमको देखते हैं तुम्हारी हंसी बनाते हैं और छेड़ने के तौर पर कहते हैं कि क्या यही है जिसका अल्लाह ने रसूल ऐ बना कर भेजा है? (४१) यदि हम मूर्तियों की पूजा पर जमे न रहते तो इस मनुष्य ने हमको हमारे पूजितों से फिरा दिया था और कुछ रोज बाद प्रलय के दिन जब यह मनुष्य को देख लेंगे तो जान जेंगे कि कौन गुमराहा था।(४२)ऐ पैगम्बर! क्या तुमने उस मनुष्य पर भी दृष्टि की जिसने अपनी चाह को अपना ईश्वर बना रखा है, तो क्या तुम निगरानी कर सकते हो? (४३) या तुम विचार करते हो कि इन काफिरों में अक्सर सुनते या समझते हैं? यह तो चौपायों की तरह हैं बल्कि यह उनसे भी गये गुजरे हैं। (४४) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर! क्या तुमने अपने पालनकर्ता की ओर नहीं देखा कि उसने साये को क्यों कर फैला रखा है और यदि चाहता तो उसको ठहराये रहता। फिर हमने सूर्य को साया का कारण ठहरा दिया है। (४५) फिर हमने साया को धीरे धीरे अपनी ओर समेट लिया।(४६) और वही है जिसने तुम्हारे लिए रात को ओढ़ना और नींद को आराम बनाया और दिन मनुष्यों के चलने फिरनें के लिए बनाया। (४७)

और वही है जो अपनी कृपा के सामने हवाओं को खुशखबरी देने को भेजता है और हमने आकाश से पवित्र पानी उतारा। (४८) ताकि उसके द्वारा सूखे शहर में जान डाल दे और अपने पैदा किये हुए यानी बहुत से चारपायों और आदमियों को उससे पानी पिलावें। (४९) और हमने मनुष्यों में पानी को तरह तरह से बांटा लेकिन अक्सर मनुष्यों ने कृतघ्नता के सिवाय कुछ न माना। (५०) और यदि हम चाहते तो हर बस्ती में डर सुनाने वाला यानी पैगम्बर उठा खड़ा करते। (५१) तो ऐ पैगम्बर! तुम काफिरों का कहा न मानो और कुरान के प्रमाणों से उनका सामना बड़े जोर से करो। (५२) और वही है जिसने दो नदियों को मिलाया एक का पानी मीठा मजेदार और एक का खारी कड़वा, और दोनों में एक रोक और अटल आड़ बना दी। (५३) और वही है जिसने पानी वीर्य से आदमी को पैदा किया। फिर उसको किसी का पुत्र या पुत्री और किसी का दामाद बहू बनाया। और तुम्हारा पालनकर्ता हर वस्तु पर शक्तिमान है। (५४) और काफिर ईश्वर के सिवाय झूठे पूजितों को पूजते हैं जो न उनको लाभ पहुँचा सकते हैं और न उनको हानि पहुंचा सकते हैं और काफिर तो अहने पालनकर्ता से पीठ दिए हुए हैं। (५५) और ऐ पैगम्बर! हमने तुमको खुशखबरी सुनाने और केवल डराने के लिए भेजा है। (५६) इन मनुष्यों से कहो कि मैं तुमसे इस ईश्वर की आज्ञा पर कुछ मजदूरी नहीं माँगता, हाँ जो चाहे अपने पालनकर्ता तक पहुंचने की राह पकड़े। (५७) ऐ पैगम्बर! उस चैतन्य पर भरोसा रखो जो अमर है और बड़ाई के साथ उसकी पवित्रता बताते रहो और अपने दासों के पापों से वह काफी खबरदार है। (५८) जिसने आकाश और पृथ्वी और जो कुछ आकाश ओर पृथ्वी में है सब को छः दिन में पैदा किया फिर सिहांसन पर जा बैठा। वही ईश्वर रहमान है, तो उसकी खबर किसी खबरदार से पूछोगे। (५९) और जब काफिरों से कहा जाता है कि रहमान ही की पूजा के लिए झुको, तो कहते हैं कि रहमान क्या वस्तु है? क्या जिसके आगे तुम हमें सिर झुकाने को कहो उसी के आगे झुकाने लगें? और उनकी स्पष्टता बढ़ती है। (६०) (रुकू ५)

बड़ी बरकत है उसकी जिसने आकाश में बुर्ज बनाये और उसमें चिराग और चाँद उजाला करने वाला रखा। (६१) और वही है जिसने रात और दिन को जो एक के बाद एक आते जाते रहते हैं ठहराया, उन मनुष्यों के लिए जो गौर करना चाहें या धन्यवाद करना चाहें। (६२) और रहमान के सेवक तो वह हैं जो पृथ्वी पर नम्रता के साथ चलें और अपढ़ उनसे बातें करने लगते हैं तो उनको सलाम करते हैं*। (६३) और जो रात अपने पालनकर्ता के लिए सिर झुकावें और खड़े रहने में काटते हैं। (६४) और जो कहते हैं ऐ हमारे पालन कर्ता! नरक के दण्ड को हमसे दूर रख, क्योंकि उसका दण्ड बड़ा कठिन है। (६५) वह ठहरने की बुरा स्थान है। (६६) और जब वह खर्च करते हैं तो वृथा खर्च नहीं करते और न बहुत तंगी करते हैं बल्कि उनका खर्च औसत दर्जे का होता है। (६७) और जो ईश्वर के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारें और वृथा किसी आदमी को जान से न मारें जिनको ईश्वर ने हराम कर रखा है, और छिनाले के भी कबूल करने वाले न हों, और कोई यह काम करेगा वह पाप का बदला भुगतेगा। (६८) प्रलय के दिन उसको दोहरा दण्ड दिया जावेगा और अपमान के साथ उसी हाल में हमेशा रहेगा। (६९) यदि जिसने क्षमा माँगी और विश्वास लाया और नेक काम किये तो अल्लाह ऐसे मनुष्यों के पापों को नेकियों से बदल देगा और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (७०) और जिसने क्षमा माँगी और भले काम किये वह हकीकत में ईश्वर की ओर फिर आये हैं। (७१) और यह जो झूठ साक्षी न दें और जब बुरे कामों के पास होकर गुजरें वजेदारी के साथ गुजर जावें। (७२) और वह मनुष्य जब उनको उनके पालनकर्ता की आयतें पढ़ पढ़कर सुनाई जावें तो अन्धे और बहरे होकर उन पर नहीं गिरते*। (७३) और जो दुवाएं माँगते हैं कि ऐ हमारे पालनकर्ता!

---

* यानी वह उनसे उन्हीं की तरह मूर्खता का व्यवहार नहीं करते।
* यानी वह लोग बुरी बातों से बचते रहते हैं।

हमको हमारी पत्नियों और सन्तान से आँखों की ठण्डक दे और हमको संयमियों का पेशवा बना। (७४) यही मनुष्य हैं जिनको उनके सन्तोष के बदले में स्वर्ग में रहने को ऊपर के मकान मिलेंगे और दुआ सलाम के साथ वहाँ उनकी अगवानी की जायगी। (७५) और यह मनुष्य स्वर्ग में हमेशा रहेंगे। क्या अच्छी जगह ठहरने के लिए है और क्या ही अच्छा स्थान रहने के लिए है। (७६) ऐ पैगम्बर! कहो कि मेरा पालनकर्ता तुम्हारी कुछ परवाह नहीं करता, सो तुमने उसकी आयतों को झुठलाया, बस अब तो उसका बवाल पड़कर रहेंगा। (७७) (रुकू ६)

सूरे शुअ्ररा

मक्के में अवतरित हुई इसमें २७७ आयतें और ११ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। तो-सीन मीम (१) यह उसी किताब की आयतें हैं जिसका अर्थ साफ है। (२) ऐ पैगम्बर! शायद तू अपनी जान घोट मारे कि यह लोग ईमान क्यों नहीं लाते *? (३) हम चाहें तो इन पर आकाश से एक निशानी उतारें। फिर तो इनकी गर्दनें उसके आगे झुककर रह जावेंगी। (४) और जब कभी ईश्वर के पास से उनके पास कोई नई शिक्षा आती है तो उससे मुँह मोड़ते हैं। (५) यह लोग तो झुठला चुके इनको उस दण्ड की हकीकत मालूम हो जायगी जिसकी हँसी उड़ाया करते थे। (६) क्या इन लोगों ने पृथ्वी की तरफ नहीं देखा कि हमने भाँति-भाँति की

---

* मुहम्मद साहब इस बात से बहुत दुखी रहते थे कि काफिर विश्वास नहीं लाते थे। वह आयतें उनको संतोष दिला रही हैं।

अच्छी-अच्छी चीजें कितनी उसमें पैदा की हैं। (७) इनमें निशानी है। मगर इनमें से अक्सर ईमान लानेवाले नहीं। (८) तुम्हारा पालन-कर्ता शक्तिशाली दयावान है। (९) (रुकू १)

और ऐ पैगम्बर ! जब तेरे पालनकर्ता ने मूसा को बुलाया कि इन जालिम लोगों यानी फिरऔन की कौम के पास जाओ। (१०) क्या यह मनुष्य नहीं डरते ? (११) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता मैं डरता हूं कि वह झुठलायेंगे। (१२) और बातें करने में मेरा दम रुकता है और मेरी जबान नहीं चलती हकलाती हैं इसलिए हारूँ को ईश्वरीय संदेशा भेज दे कि मेरे साथ चले (१३) और मेरे जिम्मे एक पाप उनका दावा भी है मेंने एक किब्ती को मार दिया था सो मैं डरता हूँ कि मुझको मार न डालें। (१४) बताया बिल्कुल नहीं। तुम दोनों भाई हमारी निशानियां लेकर जाओ। हम तुम्हारे साथ सुनते रहेंगे। (१५) वह दोनों फिरऔन के पास आये और कहा कि हम सारे संसार के पालनकर्ता के भेजे हुए हैं। (१६) तू इसराईल के बेटों को हमारे साथ भेज दे। (१७) फिरऔन ने कहा क्या हमने तुझको अपने यहाँ रखकर बच्चे की तरह नहीं पाला था ? तू बरसों हमारे यहाँ रहा। (१८) और तूने एक मूर्खता भी की थी यानी किब्ती की हत्या और तू कृतघ्नी है। (१९) मूसा ने कहा कि मैं उन दिनों वह मूर्खता कर बैठा जब मैं गलती पर था। (२०) फिर जब मुझको तुमसे डर लगा मैं भाग गया। फिर मेरे पालनकर्ता ने मुझे पैगम्बर के अधिकार दिये और पैगम्बरों में दाखिल कर लिया। (२१) और यह एहसान है जो तू मुझ पर रखता है यह कि तूने इसराईल की संतान को सेवक बना रखा है * ? (२२) फिरऔन ने पूछा तमाम जहान का पालनकर्ता

* फिरऔन ने मूसा को पाला-पोसा था और उनको बहुत दिनों अच्छी तरह रखा था। मगर मूसा ने अपनी अपेक्षा अपनी जाति का अधिकतर ख्याल किया और उनको स्वतन्त्र करना चाहा, इसीलिए यह कहा, "मेरे लालन-पालन का एहसान मुझ पर क्या रखता है जबकि तूने मेरी कौम को दास बना रखा हैं।"

कौन हैं ? (२३) मूसा ने कहा, आकाश और पृथ्वी और ज़ो कुछ उनमें है सब का वही मालिक है, अगर तुम विश्वास करो। (२४) फिरऔन ने अपने मुसाहिबों से जो उसके आस-पास थे कहा क्या तुम मूसा की बातें नहीं सुनते ? (२५) मूसा ने कहा वही तुम लोगों का और तुम्हारे बाप-दादा का पालनकर्ता हैं (२६) फिरऔन ने कहा कि हो न हो तुम्हारा पैगम्बर जो तुम्हारे पास भेजा गया बावला है। (२७) मूसा ने कहा वही पूर्व और पश्चिम का और जो कुछ उनके बीच में है सब का मालिक है, अगर तुम विचार रखते हो । (८) फिरऔन ने कहा अगर मेरे सिवाय किसी और को तूने ईश्वर माना तो मैं तुमको बन्दी कर दूँगा। (२९) मूसा ने कहा कि अगर मैं तुझको एक खुला हुआ चमत्कार दिखाऊँ। (३०) फिरऔन ने कहा अगर तू सच्चा है तो ला दिखा। (३१) इस पर मूसा ने अपनी लाठी डाल दी तो क्या देखते हैं कि वह एक साँप है। (३२) और अपना हाथ बाहर निकाला तो निकालने के साथ सब देखनेवालों की नजर में बड़ा चमक रहा था। (३३) (रुकू २)

फिरऔन ने अपने दरबारियों से जो इर्द-गिर्द थे कहा कि इसमें संदेह नहीं कि यह कोई जानकार जादूगर हैं। (३४) और चाहता है कि तुमको अपने जादू से देश से बाहर निकाल दे, तो तुम मनुष्य क्या सलाह देते हो ? (३५) दरबारियों ने निवेदन किया कि मूसा और हारूँ को रोको और देश में जादूगरों को जमा करने को हरकारे दौड़ाओ (३६) कि वह तमाम बड़े-बड़े जादूगरों को तुम्हारे पास लावें (३७) ठहरे हुए दिन जादूगर जमा किये गये। (३८) और लोगों में मनादी करा दी गई कि अब तुम मनुष्य जमा होगे या नहीं। (३९) अगर जादूगर मूसा ही जीत में रहा तो शायद हम उन्हीं का दीन कबूल कर लें। (४०) तो जब जादूगरे आये, उन्होंने फिरऔन से कहा कि अगर हम जीते तो हमको क्या इनाम मिलेगा ? (४१) फिरऔन ने

कहा हां जरूर, जीतने पर तुम पास बैठनेवालों में से होगे *। (४२) मूसा ने जादूगरों से कहा जो कुछ तुमको डालना मन्जूर हो डाल चलो। (४३) इस पर जादूगरों ने अपनी रस्सियाँ और अपनी लाठियाँ डाल दीं और बोले कि फिरऔन के प्रताप से हम ही जबरदस्त रहेंगे। (४४) इस पर मूसा ने अपनी लाठी मैदान में डाली तो बस वह उन जादुओं को जो जादूगर बना लाये थे एकदम से निकलने लगी। (४५) यह देखकर जादूगर सिर झुकाकर गिर पड़े। (४६) और बोले कि हम तमाम संसार के पालनकर्ता पर विश्वास लाये। (४७) जो मूसा और हारूँ का पालनकर्ता है। (४८) फिरऔन ने कहा क्या तुम मेरी आज्ञा देने से पहले विश्वास लाये? हो न हो यह मूसा तुम्हारा बड़ा गुरु है, जिसने तुम्हें जादू सिखलाया है सो तुमको मालूम हो जायगा। मैं तुम्हारे हाथ और पाँव उल्टे काटूँगा और तुम सबको फाँसी दूँगा। (४९) वह बोले कुछ हर्ज की बात नहीं, हम अपने पालनकर्ता की तरफ लौट जावेंगे **। (५०) हम आशा रखते हैं कि हमारा पालनकर्ता हमारे अपराधों को क्षमा कर दे, इसलिए कि हम सब से पहले विश्वास लाये हैं। (५१) (रुकू ३)

और हमने मूसा को आज्ञा भेजी कि हमारे बन्दो यानी इसराईल की संतान को रातों-रात निकाल ले जा क्योंकि तुम्हारा पीछा किया जायेगा। (५२) इस पर फिरऔन ने शहरों में हरकारे दौड़ाये (५३) कि इसराईल की संतान थोड़ी सी जमात है। (५४) और उन्होंने हमको क्रोध दिलाया है। (५५) और हमारी जमात हथियारबन्द है।

*** यानी हमारे दरबारियों में से हो जाओगे, जिससे ऊंचा कोई पद नहीं हो सकता।**

**** यानी अधिक से अधिक तू हमको मार डालेगा और क्या कर लेगा।**

(५६) गरज हमने फिरऔन के मनुष्यों को बागों से झरनों से (५७) और खजानों से और इज्जत की जगह से निकाल बाहर किया। (५८) ऐसा ही और इसराईल की संतान को उन चीजों का वारिस बनाया। (५९) तो फिरऔन के लोगों ने दिन निकलते-निकलते इसराईल के बेटों का पीछा किया। (६०) फिर जब दोनों जमातें एक दूसरे को देखने लगीं तो मूसा के मनुष्य कहने लगे कि अब तो शत्रुओं ने हमको घेर लिया। (६१) मूसा ने कहा हरगिज नही, मेरे साथ मेरा पालनकर्ता है वह मुझको राह दिखलायेगा। (६२) फिर हमने मूसा को आज्ञा दी कि अपनी लाठी दरिया पर दे मारो, चुनांचे मूसा ने दे मारी। दरिया फट गया और हरएक टुकड़ा गोया एक बड़ा पहाड़ था। (६३) और उसी मौके के पास हम दूसरे मनुष्यों फिरऔन वालों को लिवा लाये। (६४) और हमने मूसा और जो मनुष्य उनके पास थे सबको बचा लिया। (६५) फिर दूसरों फिरऔन वालों को डुबो दिया। (६६) इसमें एक चमत्कार है और फिरऔन के लोगों में से अक्सर विश्वास लाने वाले न थे। (६७) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (६८) (रुकू ४)

और ऐ पैग़म्बर! इन लोगों को इब्राहीम का हाल सुनाओ। (६९) जब उन्होंने अपने बाप और अपनी जाति से पूछा कि तुम किस चीज को पूजते हो? (७०) तो उन्होंने उत्तर दिया कि हम मूर्तियों को पूजते हैं और उन्हीं की सेवा करते रहते है। (७१) इब्राहीम ने पूछा कि जब तुम उनको पुकारते हो तो क्या यह तुम्हारी सुनते हैं? (७२) या तुमको लाभ या हानि पहुंचा सकते हैं? (७३) उन्होंने कहा नहीं। मगर हमने अपने बड़ों को ऐसा ही करते देखा है। (७४) इब्राहीम ने कहा भला देखो तो जिन्हें तुम पूजते हो, (७५) तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादे पूजिते चले आये हों। (७६) यह तो मेरे शत्रु हैं, मगर संसार का पालनकर्ता साथी है। (७७) जिसने मुझको पैदा किया वही राह दिखाये। (७८) और जो मुझको खिलाता और पिलाता

है (७६) और जब मैं बीमार पड़ता हूं वही मुझको अच्छा करता है। (८०) और जो मुझको मारेगा और फिर जिलायेगा। (८१) और मुझे आशा है कि बदले के दिन मेरे अपराध क्षमा करेगा। (८२) ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको समझा दे और नेक दासों में मिलाले। (८३) और आनेवाली नस्लों में मेरा अच्छा जिक्र जारी रख। (८४) और स्वर्ग की न्यामतों के वारिसों में से मुझको भी एक वारिस बना। (८५) और मेरे बाप को क्षमा कर, वह गुम राहों में से था। (८६) और जब मनुष्य दुबारा जिला कर खड़े किये जायेंगे मुझको उस दिन बदनाम न कर। (८७) उस दिन धन और संतान काम न आवेंगे। (८८) मगर जो पवित्र दिल लेकर ईश्वर के सामने हाजिर होगा। (८६) और स्वर्ग में संयमियों के पास लाया जायगा। (६०) और नरक गुम राहों के वास्ते खोला जायगा। (६१) और उनसे कहा जायगा कि ईश्वर के सिवाय जिन चीजों को तुम पूजिते थे कहाँ हैं? (६२) क्या वह तुम्हारी कुछ सहायता कर सके या बदला ले सकते हैं? (६३) फिर वे पूजित और वह मनुष्य औंधे मुंह नरक में झोंक दिये जायंगे। (६४) और इबलीस का सब लश्कर औंधे मुँह नरक में ढकेल दिया जायेगा। (६५) गुमराह और उनके पूजित वहां आपस में झगड़ते हुए यों कहेंगे। (६६) ईश्वर की सौगन्ध हम तो जाहिरा गुमराही में थे। (६७) जब हमने तुमको संसार के पालनकर्ता के बराबर ठहराया था, (६८) और हमको तो पूजितों पापियो ने गुमराह किया था। (६६) तो न तो कोई हमारी सिफारिश करने वाला है (१००) और न कोई मित्र। (१०१) सो यदि हमको संसार में फिर लौटकर जाना हो तो हम ईमानवालों में रहें। (१०२) बेशक ईब्राहीम के इस किस्से में चमत्कार है और इब्राहीम के गिरोह में अक्सर ईमान लाने वाले न थे। (१०३) और पैगम्बर! तेरा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१०४) (रुकू ५)

इसी तरह नूह की जाति ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१०५) उनसे भाई नूह ने कहा क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते ? (१०६) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं। (१०७) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१०८) और मैं इस समझाने पर तुमसे मजदूरी नही माँगता। मेरी मजदूरी तो संसार के पालनकर्ता पर है। (१०९) ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (११०) वह कहने लगे कि क्या हम तुम्हारी बात को मान लें और हम देखते हैं छोटे * दर्जे के लोग तुम्हारे पीछे हो गये हैं। (१११) कहा जो यह लोग करते रहे हैं मुझ को क्या खबर है। (११२) इनका हिसाब तो सिर्फ अल्लाह पर है अगर तुम समझो। (११३) और मैं ईमानवालों को धक्का देनेवाला नहीं हूं। (११४) मैं तो मनुष्यों को साफ तौर पर ईश्वर के दण्ड से डरानेवाला हूं। (११५) वह बोले नूह! अगर तू अपनी मूर्खता से बाज न आया तो जरूर पत्थरों से मारा जायगा। (११६) नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मेरी जाति ने मुझको झुठलाया। (११७) तू मुझमें और इन मनुष्यों में फैसला कर दे और मुझे और ईमानवालों को छुटकारा दे। (११८) फिर हमने नूह और उन मनुष्यों को जो भरी हुई नावों में उनके साथ थे तूफान से बचा दिया। (११९) फिर इसके बाद हमने बाकी मनुष्यों को डुबो दिया। (१२०) इसमें अलबत्ता शिक्षा है और नूह के गिरोह के बहुत मनुष्य ईमान लाने वाने न थे। (१२१) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता अलबत्ता वही बड़ा कृपालु है। (१२२) (रुकू ६)

इसी तरह कौम आद ने पैगम्बरों को झुठलाया। (५२३) जब उसके भाई हूद ने उनसे कहा क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते ? (१२४)

*** हर सुधार करने वाले के साथ निम्न श्रेणी के लोग होते हैं, इसी तरह नूह पर ईमान लाने वाले भी थे।**

मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं। (१२५) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो (१२६) और मैं इस पर तुमसे कुछ बदला तो नहीं माँगता, मेरी उजरत तो बस संसार के पालनकर्ता पर है। (१२७) क्या तुम हर ऊंची जगह पर बेजरूरत यादगारें* बनाते हो। (१२८) और बड़ी कारीगरी के महल बनाते हो। गोया तुम संसार में हमेशा रहोगे। (१२९) और जब हाथ डालते हो तो बड़ी सख्ती** से पकड़ते हो। (१३०) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानों। (१३१) और उसके कोप से डरो, जिसने तुम्हारी तमाम वस्तु से सहायता की, जो तुमको मालूम है। (१३२) चारपायों और से पुत्रों से (१३३) और बागों और झरनों से तुम्हारी सहायता की। (१३४) मैं तुम्हारी बाबत बड़े दिन के दण्ड से डरता हूं। (१३५) वह बोले तुम हमको शिक्षा करो या न करो हमको तो सब बराबर हैं। (१३६) वह शिक्षा देना अगले मनुष्यों का एक स्वभाव है। (१३७) और हम पर कोई दुख नहीं पड़ने का (१३८) गरज कौम आद ने हूद को झुठलाया तो हमने उनको मार डाला। इसमें एक शिक्षा है। और हूक की जाति अक्सर ईमान लाने वाली न थे। (१३९) और पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१४०) (रुकू ७)

समूद ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१४१) फिर उनके भाई सालेह ने उनसे कहा कि क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते? (१४२) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं। (१४३) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१४४) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नहीं चाहता और मेरी मजदूरी तो संसार के पालनकर्ता पर है। (१४५) क्या जो वस्तु यहाँ हैं। (१४६) यानी बागों और झरनों में। (१४७) और खेतों

* लोगों को ऊंची-ऊंची इमारतें बनवाने का बड़ा शौक था।
** यानी जब अत्याचार करते हो तो कठोर हो जाते हो।

और खजूर में जिनके गुच्छे मारे बोझ के टूट पड़ते हैं। (१४८) तुम इन्हीं में छोड़ दिये जाओगे। खुशी से पर्वतों को काट-काटकार घर बनाते हो। (१४९) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१५०) और सीमा से बढ़ जाने वालों के कहे में न आ जाना, (१५१) और जो देशों में झगड़े डालते हैं। और ठीक करते हैं। (१५२) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१५३) तुय भी हम ही जैसे आदमी हो और यदि सच्चे हो तो कोई चमत्कार ला दिखाओ। (१५४) सालेह ने कहा यह ऊंटनी चमत्कार है। पानी पीने की एक एक दिन की बारी इसकी है और तुम्हारे पानी पीने को एक दिन* नियुक्त है। (१५५) और इसको किसी तरह की हानि न पहुंचाना वरना बड़े दिन का दण्ड तुमको आयेगा। (१५६) इस पर भी मनुष्यों ने उसकी एड़ी के ऊपर के हिस्से काट डाले, फ़िर पछताये। (१५७) आखिरकार उनको दण्ड ने पकड़ लिया। इनमें भी एक बड़ी शिक्षा है और सालेह जाति के बहुत-से मनुष्य विश्वास लाने वाले न थे। (१५८) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१५९) (रुकू ८)

इसी तरह कौम लूत ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१६०) जब उनके भाई लूत ने उनसे कहा क्या तुम नहीं डरते। (१६१) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूं। (१६२) तो अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (१६३) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नहीं माँगता, मेरी मजदूरी तो संसार के पालनकर्ता पर है। (१६४) क्या तुम संसार के मनुष्यों में से लड़कों पर दौड़ते हो** (१६५) और तुम्हारे पालनकर्ता

*** हजरत सालेह की ऊंटनी को भागते देखकर दूसरे मवेशी भाग जाते थे, इसलिए यह ठहरी कि एक दिन ऊंटनी घाट पर जाय, दूसरे दिन और पशु जावें।**

**** यह जाति स्त्री का काम सुन्दर बालकों से निकालती थी। अर्थात महा पाप करती थी।**

ने जो तुम्हारे लिये स्त्रियाँ दी हैं उन्हें छोड़ देते हो बल्कि तुम सरकश कौम हो। (१६६) वह बोले लूत ! यदि तुम इन बातों से बाज न आओगे तो देश से निकाल बाहर करेंगे। (१६७) लूत ने कहा कि मैं तुम्हारे इस काम का शत्रु हूं। (१६८) लूत ने प्रार्थना की कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मुझको और मेरे घर वालों को इन अपवित्र कामों से जो यह मनुष्य करते हैं छुटकारा दे। (१६९) फिर हमने लूत को और उनके घर वालों को सबको छुटकारा दिया। (१७०) यदि लूत की बूढ़ी औरत बाकी रही*। (१७१) फिर हमने बाकी मनुष्यों को हलाक कर मारा। (१७२) और इन पर पत्थर बरसाये। बुरा पत्थरों का बरसाना था जो इन मनुष्यों पर बरसा जो हमारे दण्ड से डराये गये थे। (१७३) इनमें निशानी है। और लूत की जाति के बहुधा मनुष्य तो विश्वास लाने वाले न थे। (१७४) और तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१७५) (रुकू ९)

इसी तरह वन के रहने वालों ने पैगम्बरों को झुठलाया। (१७६) जब शुऐब ने उनसे कहा क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते ? (१७७) मैं तुम्हारा अमानतदार पैगम्बर हूँ। (१७८) तो ईश्वर से डरो और मेरा कहा मानो। (१७९) और मैं इस पर तुमसे कुछ मजदूरी नहीं चाहता, मेरी मजदूरी तो संसार के पालनकर्ता पर है (१८०) और वस्तु पैमाने से नापकर दिया करो तो नाप भर कर दिया करो। मनुष्यों को हानि पहुंचाने वाले न बनो। (१८१) और तौला करो तो तराजू की डंडी सीधी रखकर तौला करो। (१८२) और मनुष्यों को उनकी वस्तु जो खरीदें कमी से न दिया करो और देश में झगड़ा फैलाते न फिरो। (१८३) और उस ईश्वर से डरते रहो जिसने तुमको और तुमसे

---

* लूत को पहले ही ईश्वर के कोप आने का समाचार मिल चुका था। उन्होंने जब अपनी पत्नी से बस्ती बाहर निकल चलने को कहा तो उसने न माना और अन्त में नगर-निवासियों के साथ नष्ट हो गई।

अगलों को पैदा किया। (१८४) वह बोले तुम पर तो किसी ने जादू कर दिया है। (१८५) और तुम तो हमारी तरह के एक आदमी हो और हम तुमको झूठा ही समझते हैं। (१८६) और सच्चे हो तो हम पर आकाश से एक टुकड़ा गिरा दो। (१८७) शुऐब ने कहा जो तुम कर रहे हो मेरा पालनकर्ता उसको खूब जानता है। (१८८) गरज उन मनुष्यों ने शुऐब को झुठलाया तो उनको सायबान* के दण्ड ने आ घेरा, बेशक सायबान ही का दण्ड था। (१८९) इसमें बेशक शिक्षा है और शुऐब के गृट के बहुधा मनुष्य विश्वास लाने वाले न थे। (१९०) और तुम्हारा पालनकर्ता बड़ा कृपालु है। (१९१) (रुकू १०)

और यह कुरान संसार के पालनकर्ता का उतारा हुआ है। (१९२) इसको जिब्राईल अमीन ने उतारा है। (१९३) तेरे दिल पर ताकि तू डराने वालों में हो जाय। (१९४) साफ अरबी जबान में। (१९५) इसकी खबर अगले पैगम्बरों की पुस्तकों में है। (१९६) क्या लोगों के लिए यह प्रमाण नहीं है कि इसराईल के पुत्रों में विद्वान इस होनहार से जानकार हैं। (१९७) और यदि हम कुरान को किसी ऊपरी जबान वाले पर उसकी जबान में उतारते, (१९८) और वह उसे इन अरब वालों को पढ़कर सुनाते तो वह उस पर ईमान न लाते। (१९९) इसी तरह के इन्कार को हमने अपराधियों के दिल में जमा दिया है। (२००) जब तक दण्ड न देख लें इस पर विश्वास न लावेंगे। (२०१) वह दण्ड इन पर यकायक इनके सामने आ जायगी और इनको सूचना भी न होगी। (२०२) फिर कहेंगे हमें कुछ समय मिल सकता है। (२०३) क्या यह मनुष्य हमारे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे हैं। (२०४) तो पैगम्बर ! जरा देखो तो सही यदि हम कुछ वर्ष इनको

*** बादल ऐसा छाया जैसा सायबान सर पर तान दिया जाये। इस बादल से पानी की जगह आग बरसी।**

संसार में लाभ उठाने दें। (२०५ फिर जिस दण्ड का इनसे प्रण किया जाता है वह उनके सामने आवेगा। (२०६) तो वह जो इन्होंने संसार के लाभ उठा लिए इनके क्या काम आ सकते हैं। (२०७) और हमने किसी गाँव को नहीं मारा जब तक उनके पास डर सुनाने वाले पैगम्बर न आयें। (२०८) याद दिलाने को और हमारा काम अत्याचार करना नहीं हैं। (२०९) और इस कुरान को जैसा यह मनुष्य विचार करते हैं राक्षस लेकर नहीं उतरे। (२१०) और न यह काम उनके करने का है और न वह इसको कर सकते हैं। (२११) वह तो सुनने से दूर रखे गये हैं। (२१२) तो पैगम्बर ! तुम ईश्वर के साथ किसी दूसरे पूजित को न पुकारने लगना वरना तुम भी दण्ड में फंस जाओगे। (२१३) और अपने पास के रिश्तेदारों को ईश्वर के दण्ड से डराओ। (२१४) और जो ईमान वालों में से तेरे पीछे हो गया है उससे खातिरदारी के साथ पेश आओ। (२१५) यदि मनुष्य तेरा कहा न मानें तो कह दे कि मैं तुम्हारे कर्मों से बरी हूं। (२१६) और ईश्वर बड़ा कृपालु है उस पर भरोसा रखो। (२१७) तो जो तुम नमाज में खड़े होते हो तो वह तुम्हारे खड़े होने को देखता है (२१८) और नमाजियों में तेरा फिरना देखता है। (२१९) बेशक वही सुनता, जानता है। (२२०) ऐ पैगम्बर ! इन मनुष्यों से कहो कि मैं तुमको बताऊं कि किस पर राक्षस उतरा करते हैं। (२२१) वह हर झूठे कुकर्मी पर उतरा करते हैं। (२२२) राक्षस सुनी सुनाई बात उन पर डाल देते हैं और उनमें बहुतेरे झूठे ही होते हैं। (२२३) कवि की बात पर वही चले जो गुम-राह हों। (२२४) क्या तूने न देखा कि यह कवि हरएक मैदान में सिर मारते फिरते। (२२५) और ऐसी बातें कहा करते। (२२६) मगर जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये और बहुतायत से ईश्वर का जिक्र किया और उन पर अत्याचार हुए पीछे बदला लिया और जिन्होंने मनुष्यों पर अत्याचार किये हैं उनको जल्दी मालूम हो जायगा करवट पर उलटते हैं। (२२७) (रुकू ११)

सूरे नम्ल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९३ आयतें और ७ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयालु है। तो-सीन। यह कुरान यानी पुस्तक की कुछ आयतें हैं। (१) जो विश्वास वालों के लिए शिक्षा और खुशखबरी है। (२) नमाज, जकात देते और परलोक का विश्वास रखते हैं। (३) जो मनुष्य परलोक का विश्वास नहीं रखते हमने उनके काम उन्हें अच्छे कर दिखाये तो यह लोग भटके फिरते हैं। (४) यही लोग हैं जिनको बुरी तरह का दण्ड होता है और यही लोग प्रलय में ज्यादा हानि में रहेंगे। (५) और तुझको तो कुरान एक चमत्कार वाले खबरदार से मिलता है। (६) जब मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि मुझको आग दिखलाई दी है। मैं वहाँ से तुम्हारे पास कोई खबर या एक सुलगता अँगारा लाऊँगा ताकि तुम तापो। (७) फिर जब मूसा आग पास आये तो उनको आवाज आई कि वह जो आग में है और वह जो इस आग के आस-पास है बरकत वाला है और अल्लाह तमाम संसार का पालनकर्ता और पवित्र है। (८) ऐ मूसा मैं बड़ा चमत्कार वाला अल्लाह हूँ। (९) और अपनी लाठी डाल। तो जब मूसा ने देखा कि लाठी चल रही है जीवित साँप की तरह तो पीठ फेर कर भागे और पीछे न देखा। हमने बताया मूसा डरो मत, हमारे पास पैगम्बर नहीं डरा करते। (१०) यदि जिसने कोई कसूर किया हो फिर अपराध के बाद नेकी की तो मैं क्षमा करने वाला कृपालु हूँ। (११) और अपना हाथ अपनी छाती पर रख फिर निकालो तो वह बेरोग सफेद निकलेगा। फिरऔन और उसकी कौम के मनुष्यों की ओर यह नये चमत्कार हैं कि वे अन्यायी हैं। (१२) जो जब उनके पास हमारे आँखें खोल देने वाले चमत्कार आये तो कहने लगे कि यह तो जाहिर जादू है। (१३) और बावजूद कि उनके दिल

कबूल कर चुके थे। यदि उन्होने हेकड़ी और शेखी से उन्हें न माना तो ऐ पैगम्बर! देख झगड़ालुओं का कैसा अन्त हुआ। (१४) (रुकू १)

और हमने दाऊद और सुलेमान को शिक्षा दी थी और दोनों ने कहा कि ईश्वर का धन्यवाद है जिसने हमको अपने बहुत से विश्वास वाले मनुष्यों पर बड़प्पन दी है। (१५) और सुलेमान दाऊद के वारिस हुए और कहा लोगों! हमको ईश्वर की तरफ से पक्षी की बोली सिखाई गई है और हमको हर तरह के सामान मिले, यह ईश्वर की प्रत्यक्ष कृपा है। (१६) और सुलेमान का लश्कर जिन्नों और मनुष्यों और चींटियों में से जमा किये गये तो वह कतार बाँध-बाँध कर खड़े किये जाते थे। (१७) यहाँ तक कि जब चींटियों, के मैदान में पहुंचे तो एक चींटी ने कहा कि चींटियों अपने बिलों में घुस जाओ। ऐसा न हो कि सुलेमान और सुलेमान का लश्कर तुमको कुचल डाले और उनको खबर भी न हो। (१८) चींटी की इस बात से सुलेमान हँसे और कहने लगे कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको सामर्थ्य दे कि जैसी कृपा तूने मुझ पर और मेरे मां-बाप पर की हैं तेरी उन कृपाओं का धन्यवाद दूँ और ऐसे अच्छे काम करता रहूं कि जिनको तू पसंद करता है। तू मुझे अपने आशीर्वाद से अपने अच्छे मनुष्यों में मिला ले। (१९) और सुलेमान ने चिड़ियों की हाजिरी ली तो कहा कि क्या कारण है जो मैं हुदहुद को नहीं देखता या वह गैरहाजिर है। (२०) मैं उसको अवश्य कठोर दण्ड दूँगा या उसे हलाल कर डालूंगा या वह हमारे हुजूर में कोई कारण (गैरहाजिरी की) बतायें। (२१) फिर थोड़ी देर बाद हुदहुद आ गया और कहने लगा मुझको एक ऐसा हाल मालूम हुआ है जो तुम्हें मालूम नहीं, और मैं शहर सबा की जांची खबर लाया हूं। (२२) मैंने एक औरत को देखा जो वहाँ की रानी है और हर तरह के सामान राज्य उसको मिले हैं और उनके यहाँ बड़ा तख्त है। (२३) मैंने रानी और उनके लोगों को देखा कि ईश्वर को छोड़ कर सूरज को

शीश नवाते हैं ग्रौर राक्षस ने उनके कामों को उन्हें ग्रच्छा कर दिखाया है ग्रौर उनको सीधी राह से रोक दिया है तो उनको नहीं सूझ पड़ता (२४) फिर ईश्वर ही के ग्रागे क्यों नहीं शीश नवाते जो ग्राकाश ग्रौर पृथ्वी की छपी हुई चीजों को प्रत्यक्ष करता है ग्रौर जो काम तुम छिपाकर करते हो या प्रत्यक्ष करते हो वह सब से जानकार है। (२५) ग्रल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं, सिर्फ वही बड़े तख्त का मालिक है। (२६) कहा ग्रब देखूंगा कि तू सच्चा है या झूठा। (२७) यह हमारी लिखावट लेकर चला जा ग्रौर इनको उनकी तरफ डाल दे। फिर उनसे हट जा, फिर देख कि वह लोग क्या उत्तर देते हैं। (२८) बोली * ऐ दरबारियो ! एक इज्जत का खत मेरी तरफ डाला गया है। (२९) यह सुलेमान की तरफ से है ग्रौर शुरू ग्रल्लाह के नाम से है जो बड़ा कृपालु दयावान है। (३०) ग्रौर यह कि सबसे सरकशी न करो ग्रौर ग्राज्ञाकारी बनकर हमारे सामने चले ग्राग्रो। (३१) (रुकू २)

बोली ऐ दरबारियो ! मेरे मामलों में ग्रपनी सलाह दो। जब तक तुम मेरे सामने मौजूद न हो मैं किसी काम में पक्की ग्राज्ञा नहीं दिया करती। (३२) दरबारियों ने निवेदन किया कि हम ताकतवर ग्रौर बड़े लड़नेवाले हैं ग्रौर तुझे ग्रखित्यार है जैसी चाहे ग्राज्ञा दे। देखें तू क्या ग्राज्ञा देती है। (३३) वह बोली राजा जब किसी शहर में दाखिल होते हैं तो उसको खबर करते हैं ग्रौर वहाँ के इज्जतदारों को बेइज्जत करते हैं, ऐसा ही करेंगे। (३४) ग्रौर मैं उनकी तरफ नजर भेजकर देखती हूं कि दूत क्या उत्तर लेकर ग्राते हैं। (३५) फिर जब सुलेमान के सामने नजर लेकर ग्राया तो सुलेमान से कहा क्या तुम लोग माल से मेरी सहायता करते हो। जो कुछ ईश्वर ने मुझको दे रखा है ठीक है, बल्कि तुम ग्रपने इनाम से प्रसन्न रहो। (३६) ऐ दूत ! जिसने

---

*यानी रानी सबा की जिसका नाम बिलकीस था।

तुझे भेजा है उन्हीं के पास लौट जा और हम ऐसा लश्कर लेकर उनपर चढ़ाई करेंगे कि जिनका उनसे सामना न हो सकेगा और हम वहाँ से उनको अपमानित करके निकाल देंगे। (३७) सुलेमान ने कहा ऐ दरबारियो ! कोई तुम में ऐसा भी है कि उस औरत का तख्त मेरे पास उठा लाये उससे पहले कि वह इस पर मुसलमान होकर हाजिर हो ? (३८) इस पर जिन्नों में से एक बोला कि दरबार के समाप्त होने के पहले मैं वह तख्त ले आऊँगा। मैं उसके उठा लाने पर अमानतदार जोरावर हूं। (३९) एक आदमी जिसको किताब की शिक्षा थी बोला कि मैं आंख झपकने के पहले तख्त को तुम्हारे सामने ला दूंगा। सुलेमान ने तख्त को अपने पास मौजूद पाया तो बोल उठा कि यह भी मेरे पालनकर्ता का अहसान है ताकि मुझे आजमाये कि मैं धन्यवाद देता हूं या कृतघ्नता करता हूं। और कोई ईश्वर को धन्यवाद देता है तो वह अपने लिए धन्यवाद देता है और कोई कृतघ्नता करता है तो मेरा पालनकर्ता बेपरवाह दाता है। (४०) सुलेमान ने आज्ञा दी कि मलिका की अक्ल अजमाई के लिए उस तख्त की सूरत बदल दो ताकि हम देखे कि वह पहचानती है या उनमें हाती है जो राह पर नहीं आते (४१) फिर जब आई तो उससे कहा गया कि ऐसा ही तख्त है ? वह बोली गोया वही है और सुलेमान से बोली कि मुझे तो इससे पहले मालूम हो गया था और मैं मान गई थी। (४२) और वह ईश्वर के बजाय सूरज को पूजती थी, उससे उसको रोका गया, क्योंकि वह काफिरों में से थी। (४३) उससे कहा गया कि महल में दाखिल हो, तो जब उसने महल को देखा तो उसको पानी का हौज समझी और दोनों पिंडलियां खोल दी। सुलेमान ने कहा यह तो शीश महल है जिसमें शीशे जड़े हैं। बोली ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैंने अपना ही नुकसान किया और अब मैं सुलेमान के साथ होकर अल्लाह दोनों जहान के पालनकर्ता पर विश्वास लाई। (४४) (रुकू ३)

और हमने जाती समूत की तरफ उनके भाई सालेह को पैगम्बर! बनाकर भेजा था कि ईश्वर की पूजा करो, तो सालेह के आते ही वह लोग दो फरीक हो गये और झगड़ने लगे। (४५) सालेह ने कहा भाइयो! भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो अल्लाह के सामने क्यों नहीं क्षमा माँगते, शायद तुम पर कृपा हो। (४६) वह बोले हमने तुझे और इन लोगों को जो तेरे साथ हैं बड़ा ही बुरा पाया है। सालेह ने कहा तुम्हारी बदकिस्मती ईश्वर की तरफ है। बल्कि तुम लोग जाँचे जा रहे हो (४७) और शहर में नौ आदमी थे जो देश में झगड़ा करते और सलाह न करते थे। (४८) उन्होंने कहा आपस में ईश्वर की सौगन्ध खाओ कि हम जरूर सालेह को और उसके घर वालों को रात के समय जा मारेंगे। फिर उसके वारिस से कह देंगे कि सालेह के घर वालों के मारे जाने के समय हम मौजूद न थे और हम बिल्कुल सच कहते हैं। (४९) गरज वह एक दाँव चले और उनको खबर भी न हुई, (५०) तो ऐ पैगम्बर! देखा कि उनके दाँव का कैसा परिणाम हुआ कि हमने उनको और उनकी सब जाति को मार डाला (५१) अब यह कि उनके घर अन्यायियों से खाली पड़े हैं। इसमें उनको जो जानते हैं शिक्षा है। (५२) और जो मनुष्य ईमान लाये और ईश्वर से डरते थे उनको हमने बचा लिया। (५३) और लूत ने जब अपनी जाति से कहा कि तुम बेशर्मी करते हो और देखे जाते हो*। (५४) क्या तुम औरतों को छोड़कर मर्दों पर ललचाकर दौड़ते हो? बात यह है कि तुम बेसमझ हो। (५५) तो लूत की जाति का इसके सिवाय और कुछ उत्तर न था कि लूत के घराने को अपनी बस्ती से निकाल बाहर करो। क्योंकि यह मनुष्य बड़े पवित्र बनना चाहते हैं। (५६) तो हमने लूतको और उनके खानदान के मनुष्यों को दण्ड से बचा लिया, मगर उनकी बबी जिसकी तकदीर में लिख चुके थे कि

*** यानी जानते हो कि यह कैसा बुरा काम है।**

वह पीछे रहने वालों में होगी। (५७) और हमने उन पर पत्थर बरसाये, सो उन लोगों पर बरसे जो डराये जा चुके थे। (५८) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर ! कहो ईश्वर का धन्ययाद है और ईश्वर के मनुष्यों को नमस्कार है जिनको उसने मान लिया। भला अल्लाह अच्छा है या जिनको ये शरीक ठहराते हैं ? (५९)

बीसवाँ पारा (अम्मन खलक)

भला आकाश व पृथ्वी किसने पैदा किये और आकाश से तुम लोगों के लिए किसने पानी वरसाया, फिर पानी के जरिये से हमने अच्छे बाग पैदा किये। तुम्हारे बस की तो बात न थी कि तुम उनके पेड़ों को उगा सको। क्या ईश्वर के साथ कोई और पूजित है ? मगर यहीं लोग राह से मुड़ते हैं। (६०) भला किसने पृथ्वी को ठहरने की जगह बनाया और उसके बीच में नदी नाले बनाये और उसके लिए अटल पहाड़ बनाये और दो समुन्द्रों में खास सीमा रक्खी। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूजित है, कोई नहीं। मगर इन लोगों में बहुधा नहीं जानते (६१) भला बेचैन की पुकार कौन सुनता है जब वह पुकारे कौन औरबुराई को टाल सकता देता है और तुमको पृथ्वी में नायब बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई पूजित है तुम बहुत कम चिन्ता करते हो। (६२) भला कौन तुम लोगों को पृथ्वी और पानी के अंधियारे में दिखाता है और कौन अपनी कृपा के आगे हवाओं को मेह की खुशखबरी देने के लिए भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और पूजित है ? ईश्वर उनके शिर्क से ऊंचा है (६३) कौन है जो पहले नई सृष्टि पैदा करता है और उसी तरह बार-

बार पैदा करता है और कौन है जो तुम्हें आकाश व पृथ्वी से रोजी देता है। क्या अल्लाह के साथ और कोई पूजित है ? ऐ पैगम्बर ! इन लोगों से कहो कि अगर सच्चे हो तो अपनी दलील पेश करो। (६४) कहो कि जितनी पैदाइश आकाश व पृथ्वी में है उसमें से किसी को भी ईश्वर के सिवाय छिपे हुए भेद की खबर नहीं। मगर अल्लाह जानता है और वह नहीं जानते की किस समय उठाये जायेंगे। (६५) बात यह कि उन लोगों के विचार प्रलय के बारे हार गए बल्कि इसके बारे में इनको संदेह है, यह लोग उससे अन्धे बने हुए हैं। (६६) (रुकू ५)

और जो लोग अविश्वास वाले हैं वह कहते हैं कि जब हम और हमारे बाप–दादा मिट्टी हो जायेंगे तो क्या हम फिर निकाले जायेंगे। (६७) पहले से भी हमारे और हमारे बाप-दादों के साथ और ऐसे वादे होते चले आये हैं, यह अगले लोगों के ढकोसले हैं। (६८) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि देश में चलो-फिरो और देखो कि अपराधियों का कैसा अन्त हुआ। (६९) और इन पर कुछ दुख न करो और जैसी जैसी तदबीरें कर रहे हैं उनसे तंगदिल न हो। (७०) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब होगा। (७१) क्या आश्चर्य जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो वह तुम्हारे पास आ लगी हो। (७२) और यह कि तुम्हारा पालनकर्ता लोगों पर कृपा रखता है मगर अक्सर लोग धन्यवाद नहीं देते। (७३) और यह कि जैसी-जैसी बातें लोगों के दिलों में छिपी हुई हैं और जो कुछ यह प्रत्यक्ष करते हैं, तुम्हारे पालनकर्ता को मालूम है। (७४) आकाश और पृथ्वी में ऐसी कोई छिपी हुई बात नहीं जो खुली किताब लोहमहफूज में न लिखी हो।

*** काफ़िर तुम्हारी बात नहीं मान सकते। वह ऐसे बहरे और अन्धे हैं कि किसी तरह उनको सीधा मार्ग दिखाया और बताया नहीं जा सकता।**

(७५) यह कुरान इसराईल के बेटों की बहुधा बातों को जिनमें शिर्क डालते हैं, प्रत्यक्ष है। (७६) और यह कुरान विश्वास वालों के हक में हिदायत और कृपा है। (७७) ऐ पैगम्बर तुम्हारा पालनकर्ता अपनी आज्ञा से इनके बीच निर्णय कर दे और वह सबका जानकार है। (७८) तो ऐ पैगम्मर अल्लाह ही पर भरोसा रक्खो, तुम राह पर रहो। (७९) तुम मुर्दों* को नहीं सुना सकते और न बहरों को आवाज सुना सकते हो। ऐसी हालत में कि वह पीठ फेर कर भाग खड़े हों। (८०) और न तुम अन्धों को गुमराही से राह दिखा सकते हो तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों का विश्वास रखते हैं। तो वह मान भी जाते हैं। (८१) और जब प्रलय इन लोगों पर आयेगी तो हम पृथ्वी से इनके लिए एक जानवर निकालेंगे, वह इनसे बातें करेगा कि लोग हमारी बातों का विश्वास नहीं रखते थे। (८२) (रुकू ६)

और जब हम हरएक गुट में से उस एक दल को जमा करेंगे जो हमारी आयतों को झुठलाया करते थे फिर कतार में खड़े किये जायंगे। (८३) यहाँ तक कि जब उपस्थित होवेंगे तो ईश्वर उनसे पूछेगा कि बावजूद कि तुमने हमारी आयतों को अच्छी तरह समझा भी न था क्यों तुमने उनको झुठलाया यह नहीं किया तो और क्या करते रहे। (८४) और यदि यह मनुष्य सरकशी करते रहे दण्ड उन पर पूरा हुआ और यह लोग बात भी न कर सकेंगे। (८५) क्या इन मनुष्यों ने नहीं देखा कि हमने रात को बनाया है कि उसमें आराम करें और दिन को बनाया देखने को। इसमें उन मनुष्यों को निशानियां हैं जो ईमान रखते हैं। (८६) और जिस दिन नरसिंहा फूका जायगा तो जो आकाश मे हैं और जो पृथ्वी में हैं सब काँप जायेंगे, मगर जिसको ईश्वर चाहे वही धैर्य से रहेगा और सब उसके सामने झुके हाजिर होंगे। (८७) और तू पहाड़ों को देखकर ख्याल करता है कि जमे हुए हैं। मगर यह प्रलय के दिन बादल की तरह उड़े-उड़े फिरेंगे। यह भी अल्लाह की कारीगरी है जिसने हर वस्तु को खूब कठोर बनाया है।

निस्सन्देह जो कुछ भी तुम करते हो वह उससे खबरदार हैं। (८८) जो मनुष्य अच्छे कर्म लेकर आयेगा तो उनको उससे बढ़कर अच्छा बदला मिलेगा और ऐसे मनुष्य उस दिन डर से छूटकर चैन में होंगे। (८९) और जो बुरे काम लेकर आवेंगे वह औंधे मुंह नरक में ढकेल दिये जावेंगे तुमको उन्हीं कर्मों की सजा दी जा रही है जो तुम करते थे। (९०) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि मुझको यही आज्ञा मिली है कि वह शहर मक्का के स्वामी की पूजा करे जिसने उसको प्रतिष्ठा दी है और सब कुछ उसी का है और मुझे आज्ञा मिली है कि आज्ञाकारी रहूं। (९१) और यह कि कुरान पढ़-पढ़कर सुनाऊं तो जो मार्ग पर आ गया सो अपने ही भले को और जो गुमराह हुआ तो तुम कह दो कि मैं तो सिर्फ डराने वाला हूँ। (९२) और कहो कि ईश्वर की बड़ाई हो, वह जल्दी तुमको अपनी निशानियाँ दिखलायेगा और तुम उनको पहचान लोगे और जैसे-जैसे काम तुम लोगकर रहेगे तुम्हारा पालनकर्ता उनसे बेखबर नहीं। (९३) (रुकू ७)

सूरे कसस

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ८८ आयतें और ९ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो बड़ा कृपालु व दयावान है। तो-सीनमीम। (१) यह खुली पुस्तक की आयतें हैं। (२) ऐ पैगम्बर हम उन लोगों के लिए जो विश्वास करते हैं मूसा और फिरऔन के सच्चे हाल को तेरे सामने सुनाते हैं। (३) फिरऔन देश मिस्र में चढ़ रहा था और उसने वहाँ के लोगों के अलग-अलग जत्थे कर रक्खे थे। उनमें से एक

गुट इसराईल की सन्तान को कमजोर कर रक्खा था कि उनके पुत्रों को मरवा देता और बेटियों को जीवित रखता। वह झगड़ालुओं में से था। (४) और हमारा विचार यह था कि जो मनुष्य देश में कमजोर समझे गये थे उन पर नेकी करें और उनको सरदार बनायें और उनको राज्य का स्वामी बनायें। (५) और उनको देश में जमावें और फिरऔन, हामान और उनके लश्कर को जिस बात का डर है वही उनके आगे लावें। (६) और हमने मूसा की माँ को आज्ञा भेजी कि उसको दूध पिलाओ फिर जब इनकी बाबत तुमको डर होवे तो इनको नदी में डाल दे और डर न करना और न दुख करना। हम इनको फिर तुम्हारे पास पहुँचा देंगे* और इनको पैगम्बरों में से एक पैगम्बर बनावेंगे। (७) तो फिरऔन के लोगों ने उसे बहते को उठा लिया कि उनका शत्रु दुख पहुंचाने का कारण हो। कुछ सन्देह नहीं कि फिरऔन और हामान और उनके सिपाहियों ने गलती की थी। (८) और फिरऔन की औरत अपने पति से बोली यह मेरी और तुम्हारी आँखों की ठण्डक है, इसको मार मत डालो, आश्चर्य नहीं कि हमारे काम आवे। वा इसको अपना पुत्र बना लें और उनको खबर न थी। (९) और मूसा की माँ का दिल बेचैन हो गया और वह जाहिर करने वाली ही थी कि मैं उसकी माता हूं। हमने उसके दिल को कठोर कर दिया ताकि वह ईमान वालों में रहे। (१०) और सन्दूक को नदी में डालते

---

* फिरऔन को ज्योतिषियों ने बता दिया था कि इसराईल की सन्तान में एक बच्चा होने वाला है जो तेरे को छिन्न-भिन्न कर देगा। इसीलिए उसने हर लड़के की हत्या करनी आरम्भ कर दी थी।

मूसा की माँ ने मूसा को एक काठ के सन्दूक में रखकर नहर में बहा दिया। वह सन्दूक बहते-बहते फिरऔन के महल के पास आया। फिरऔर ने उसको निकलवाया और मूसा को अपने पुत्र के समान पाला।

समय मूसा की माँ ने मूसा की बहिन से कहा कि इसके पीछे-पीछे चली जा। तो वह उसको दूर से ऊपर की ओर देखती रही और फिरऔन के लोगों को खबर न हुई। (११) और हमने मुसा पर पहिले ही से धाय के दूध वन्द कर रक्खे थे। कि वह किसी की छाती मुंह में लेते ही न थे। इस पर मूसा की बहिन ने कहा कि हम तुमको एक घराने का पता बतावें कि वह तुम्हारे लिए इसका पालनकर्ता करेंगे और वह इसके हित के चाहने वाले हैं। (१२) फिर हमने मूसा को उसकी माता* के पास भेजा ताकि आँखें ठण्डी हों और उदास न रहे यह भी जान ले कि अल्लाह का प्रण सच्चा है परन्तु बहुत मनुष्य नहीं जानते। (१३) (रुकू १)

और जब मूसा अपती जवानी को पहुंचे और सम्भले, हमने उसको आज्ञा और बुद्धि दी और सुकर्मियों का हम इसी तरह बदला दिया करते हैं कि दो मनुष्य आपस में लड़ रहे हैं, एक तो उनकी जाति का है और एक उनके शत्रुओं में था। तो जो मूसा की जाति का था, इसने उस आदमी के सामने जो उनके बैरियों में था, सहायता माँगी। तो मूसा ने उस बैरी के घूंसा मारा और उसका काम तमाम कर दिया। फिर कहने लगे कि यह तो एक शैतानी का काम हुआ। कुछ सन्देह नहीं कि शैतान प्रत्यक्ष गुमराह करने वाला है। (१५) मूसा ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! मैंने अपने ऊपर अत्याचार किया, तू मेरा पाप क्षमा कर। ईश्वर ने उसका पाप क्षमा किया। वह बहुत क्षमा करने वाला दयालु है। (१६) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता जैसी तूने मुझ पर कृपा की मैं आगे कभी अन्यायियों का साथी न

---

* मूसा को दूध पलाने के लिये मूसा की माँ ही को चुना गया क्योंकि मूसा ने अपनी माँ के सिवाय और किसी दाई का दूध मुंह से नहीं लगाया।

हूंगा। (१७) सुबह को डरते-डरते शहर में गया : इतने में क्या देखता है कि वही आदमी जिसने कल इनसे सहायता माँगी थी आज फिर इसको पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा कि इसमें सन्देह नहीं तू तो प्रत्यक्ष खराब राह पर है। (१८) फिर मूसा ने उस किब्ती को जो इसका और उस फरियाद करने वाले दोनों का शत्रु था, पकड़ना चाहा, तो इसराईल की सन्तान को शक हुआ कि मुझको पकड़ना चाहते हैं और वह चिल्ला उठा कि मूसा जिस तरह तूने कल एक आदमी को मार डाला, क्या मुझको भी मार डालना चाहता है। बस तू यह चाहता है कि देश में अत्याचार करता फिरे और मेल करा देने वाला नहीं बनाना चाहता। (१९) और शहर के परले सिरे से एक मनुष्य दौड़ता हुआ आया, उसने सूचना दी कि बड़े-बड़े आदमी तुम्हारे बारे में सलाहें कर रहें हैं। कि तुमको मार डालें तुम निकल जाओ, मैं तेरे भले की कहता हूं। (२०) यद्यपि मूसा नगर से निकल भागे और डरते-डरते जाते थे कि देखें क्या होता है और मूसा ने प्रार्थना की ऐ मेरे पालनकर्ता ! अत्याचारी मनुष्यों से छुटकारा दे। (२१) (रुकू २)

और जब मदीयन की ओर मुँह किया तो कहा मुझको अपने पालनकर्ता से आशा है कि वह मुझको सीधी राह दिखायेगा। (२२) और जब नगर मदायन के कुएं पर पहुंचा तो देखा कि लोग पानी पिला रहे हैं। और देखा उसने अलग दो औरतें अपनी बकरियों को रोके खड़ी हैं। मूसा ने उनसे पूछा कि तुम्हारा क्या प्रयोजन है वह बोलीं जब तक दूसरे चरवाहे अपने जानवरों को पानी पिलाकर हटा न ले जायं, हम अपनी बकरियों को पानी पिला नहीं सकतीं और हमारे पिता बूढ़े हैं। (२३) यह सुनकर मूसा ने उनके लिए पानी खींच कर उनकी बकरियों को पिला दिया, फिर हट कर छाया में जा बैठे और कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता ! तू अपनी कृपा के थाल से इस समय जो मुझको भेज दे, मैं उसका चाहने वाला हूं। (२४) इतने में उन दो औरतें में एक उनकी तरफ शरमाती चली रही है। उसने मूसा से कहा कि मेरे

पिता तुझे बुला रहे हैं* कि वह जो तूने हमारे लिए हमारी बकरियों को पानी पिला दिया था, तुमको उसकी मजदूरी देंगे। जब मूसा उस बुड्ढे के पास पहुंचा और उनसे हाल बताया तो उन्होंने कहा, डर न कर, तू अत्याचारी मनुष्य से बच गया। (२५) फिर उन दो औरतों में से एक ने अपने पिता से कहा कि ऐ पिता ! तू इनको नौकर रख ले क्योंकि अच्छे से अच्छा आदमी जो तू नौकर रखना चाहे मजबूत ईमानदार होना चाहिए। (२६) उस बुड्ढे ने मूसा से कहा कि मैं चाहता हूं कि अपनी इन दो बेटियों में से एक को तुम्हारे साथ ब्याह दूं। इस वचन पर तुम आठ वर्ष मेरी नौकरी करो और यदि तुम दस वर्ष पूरे करो तो तुम्हारी भलाई है और मैं तुझे कष्ट नहीं देना चाहता और तू मुझको ईश्वर ने चाहा तो भला आदमी पायेगा। (२७) मूसा ने कहा यह बातें मेरे और तेरे बीच हो चुकीं मेरी मरजी है दोनों वादों में से कोई सा भी वादा पूरा करूँ। मुझ पर किसी तरह का जोर नहीं और जो मेरे और तेरे बीच में वचन हुआ है, अल्लाह उसका साक्षी है। (२८) (रुकू ३)

फिर जब मूसा ने वादा पूरा किया और अपनी स्त्री को लेकर चल दिया तो तूर पहाड़ की ओर से इसको एक आग दिखाई दी मूसा ने अपने घर के मनुष्यों से कहा कि तुम इसी स्थान ठहरो, मुझको आग दिखाई दी है। शायद वहां से तुम्हारे पास कुछ खबर ले आऊँ या आग की एक चिनगारी लेता आऊं, ताकि तुम लोग तापो। (२९) फिर जब मूसा आग के पास पहुँचे तो उस पवित्र स्थान मैदान के दाहिने किनारे पेड़ से उसे आवाज सुनाई दी कि मूसा हम सब संसार के पालने वाले अल्लाह हैं। (३०) और यह कि तुम अपनी लाठी जमीन पर

*** यह दोनों लड़कियाँ हजरत शुऐब की पुत्रियाँ थीं। जब उन्होंने अपने पिता से मूसा के पानी भर कर देने का हाल बताया, तो उन्होंने मूसा को अपने पास बुला भेजा।**

डाल दो। तो जब लाठी को डाला और उसको इस तरह चलते हुए देखा कि गोया वह साँप है तो पीठ फेर कर भागा और पीछे को न देखा। हमने बताया मूसा आगे आओ और डर न करो। तू बेखटके है। (३१) अपना हाथ अपने गिरेबान के अन्दर रक्खो और फिर निकलो तो वह बिना किसी बुराई के सफेद निकलेगा। डर दूर हो जाने के लिए अपनी भुजा अपनी ओर सिकोड़ ले। लाठी और सफेद हाथ यह दोनों चमत्कार ईश्वर के दिये हुए हैं। जो तुम्हारी मारफत फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ भेजे जाते हैं क्योंकि वे अवज्ञाकारी है। (३२) मूसा ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता! मैंने उनमें से एक मनुष्य को मार दिया है। डर है कि मुझे मार न डालें। (३३) और मेरे भाई हारू जिसकी जबान मुझसे ज्यादा साफ हैं, सो उसको मेरे सहायता के लिए भेज कि वह मुझे सच्चा करे। मुझको डर है कि फिरऔन के मनुष्य मुझको झुठलायेंगे। (३४) बताया कि मैं तेरे भाई को तेरा सहायक बनाऊंगा और तुम दोनों को ऐसी जीत देंगे कि फिरऔन के मनुष्य तुम तक पहुंच न सकेंगे। तुम दोनों और जो तुम दोनों की पैरवी करें विजयी होंगे। (३५) फिर जब मूसा खुले हुए चमत्कार लेकर उनके पास पहुंचा वह कहने लगे यह बनाया हुआ जादू है और हमने अपने अगले बाप-दादों से ऐसी बातें नहीं सुनीं। (३६) और मूसा ने कहा कि जो आदमी ईश्वर की तरफ से सूझ की बात लेकर आया है और जिसका अन्तिम परिणाम भला होगा और मेरे पालनकर्ता को खूब मालूम है। निस्सन्देह अन्यायियों का भला न होगा। (३७) फिरऔन ने कहा दरबारियों, मुझको तो अपने सिवाय तुम्हारा कोई ईश्वर मालूम नहीं। ऐ हामान* तू हमारे लिए मिट्टी की ईटों में आग लगा और हमारे लिए एक महल बनवा कि हम उस पर चढ़कर मूसा के ईश्वर को झाँकें और हम मूसा को झूठा ही समझते हैं। (३८) और

*** हामन फिरऔन का प्रधान मन्त्री था। इसी के कहने से फिरऔन बेगार लिया करता था।**

फिरऔन और उसके लश्करों तथा देशों में बहुत सिर उठाया और उन्होंने ऐसा समझा कि वह हमारी तरफ लौटकर नहीं लाये जायंगे। (३९) तो हमने फिरऔन और उसके लश्करों को धर पकड़ा और उनको समुद्र में फेंक दिया, सो देख अत्याचारियों का कैसा परिणाम हुआ। (४०) और हमने उनको सरदार किया कि नरक की तरफ बुलाते रहें और प्रलय के दिन इनको सहायता मिलने कीं नहीं। (४१) और हमने इस संसार में उनके पीछे फटकार लगा दी और प्रलय के दिन तो उनका बुरा हाल होना है। (४२) (रुकू ४)

और अगले ग्रोहों के मार डाले पीछे हमने मूसा को किताब तौरात दी जिससे लोगों को सूझ हो और राह पकड़ें और कृपा हो, शायद वे शिक्षा पावें। (४३) और पैगम्बर जिस समय हमने मूसा की आज्ञा भेजी तू तूर के पश्चिम ओर न था और तू देखने वालों में न था। (४४) लेकिन हमने बहुत से गुट निकाल खड़े किये और उन पर बहुत सी उम्रें गुजर गईं और न तुम मदिनन के लोगों में रहते थे कि उनको हमारी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाते परन्तु हम पैगम्बर भेजते रहे हैं। (४५) और तू तूर के पास उस समय न था जबकि हमने मूसा को बुलवाया था बल्कि तेरे पालनकर्ता की कृपा है कि तू उन लोगों को डरावे जिनके पास तुमसे पहले कोई डरानेवाला नहीं आया। शायद यह लोग शिक्षा पकड़ें। (४६) और ऐसा न हो कि इन पर अपने ही करतूत के बदले में कोई आफत आ पड़े तो कहने लगें ऐ मेरे पालनकर्ता तूने मेरे पास कोई पैगम्बर क्यों न भेजा जिस से हम तेरी आज्ञा की पैरवी करते और ईमान वालों में होते। (४७) फिर जब हमारी तरफ से ठीक बात उनके पास पहुंची तो कहने लगे कि जैसे चमत्कार मूसा को मिले थे ऐसे ही इस पैगम्बर को क्यों नहीं मिले ? क्या जो चमत्कार पहले मूसा को मिले थे लोग उनके मना करने याले नहीं हुए थे ? उन्होंने कहा था कि मूसा और हारूँ दोनों जादूगर हैं और एक दूसरे के साथी हैं और कहा कि हम बोनों को नहीं मानते। (४८)

पैगम्बर ! इन लोगों से कहो कि अगर तुम सच्चे हो तो ईश्वर के यहाँ से कोई किताब ले आओ जो इन दोनों से हिदायत में बढ़कर हो, मैं उस पर चलूँ। (४९) तो अगर यह लोग तेरे कहने के अनुसार न कर दिखायें तो जान लो कि अपनी बुरी चाहों पर चलते हैं और उससे बढ़-कर गुमराह कौन है कि ईश्वर विना राह बताये अपनी चाह पर चले अल्लाह अन्यायियों को राह नहीं दिखाता। (५०) (रुकू ५)

और हम बराबर लोंगों पर आयतें आज्ञायें भेजते रहे हैं। शायद वह शिक्षा पकड़ें। (५१) जिन मनुष्यों को कुरान से पहले हमने किताब दी वह इस पर ईमान ले आते है। (५२) और जब उनको कुरान सुनाया जाता है तो बोल उठते हैं कि हमको तो इसका विश्वास आ गया कि हमारे पालनकर्ता की तरफ से भेजा हुआ ठीक है। हम तो इससे पहले के आज्ञा मानने वाले हैं। (५३) यही लोग हैं जिनको इनके सब्र के बदले दोहरा बदला दिया जायगा और नेकी से बदी का बदला करते हैं और हमने जो इनको दिया है उसमें से खर्च करते हैं। (५४) और जब बेहूदा बात सुनते हैं तो उससे किनारा पकड़ते हैं और कहते है कि हमारे काम हमको और कुम्हारे काम तुमको हैं हम-तुम दूर ही से सलाम करते हैं। हम बेसमझों को नहीं चाहते। (५५) ऐ पैगम्बर तू जिसको चाहे आज्ञा नहीं दे सकता बल्कि अल्लाह जिसको चाहता है आज्ञा देता है और वही राह पर आने वालों से खूब जानकार है। (५६) और लोग कहते हैं कि अगर हम तेरे साथ सच्चे दीन की पैरवी करें तो हम अपनी जगह से उचक जायें। क्या हमने उनको अदनवाले मकान में जहाँ चैन है जगह नहीं दी कि हर तरह से फल यहाँ खिचे चले आते हैं। इनकी रोजी हमारे यहाँ से है। मगर वह बहुधा नहीं जानते। (५७) और हमने बहुत सी बस्तियाँ मार डालीं जो अपनी रोजी में इतरा चली थीं। तो यह उनके घर हैं जो उनके पीछे आबाद नहीं हुए सिवाय थोड़ों के और हम ही वारिस हुऐ। (५८) और जब तक तेरा पालनकर्ता किसी बस्ती में पैगम्बर भेज दे और वह उनको

हमारी आयतें पढ़कर न सुना दें तब तक वह बस्तियों को मार नहीं सकता और हम बस्तियों को तभी मार डालते हैं जबकि वहाँ के लोग पापी हो जाते हैं। (५९) और जो कुछ तुमको दिया गया है सांसारिक जीवन में बर्तने के लिए हैं और यहां की शोभा है और जो अलाह के यहाँ है वही बढ़कर है और वही स्थायी रहने वाला है, क्या तुम लोग नहीं समझते। (६०) (रुकू ६)

भला वह आदमी जिसे हमने अच्छा प्रण दिया और वह उसको मिलने वाला है क्या उसके बराबर है जिसे हमने सँसार का बर्तना बर्ता लिया फिर वह प्रलय के दिन पकड़ा हुआ आया। (६१) और जिस दिन ईश्वर काफिरों को बुलाकर पूछेगा कि जिन लोगों को तुम हमरे साझी समझते थे कहाँ हैं। (६२) जिन पर बात साबित हुई बोल उठेंगे कि हमारे पालनकर्ता! यह वही मनुष्य हैं जिनको हमने बहकाया जिस तरह हम बहके थे इसी तरह हमने उनको भी बपकाया। हम तेरे सामने इन्कार करते हैं यह लोग हमको नहीं पूजते थे। (६३) और कहेंगे कि अपने शरीकों को बुलाओ। फिर यह लोग उनको बुलायेंगे तो वह पूज़ित इनको उत्तर न देंगे और दण्ड कोदेख लेंगे और पछतायेंगे कि हम सच्ची राह पर होते। (६४) और जिस दिन ईश्वर काफिरों को बुलाकर पूछेगा कि पैगम्बरों को तुमने क्या उत्तर दिया। (६५) तो उस दिन उनको कोई बात न सूझ पड़ेगी और बह आपस में पूछ-ताछ भी न कर सकेंगे। (६६) सो जिसने क्षमा की और ईमान लाया और अच्छे काम किये तो आशा है कि ऐसे मनुष्य मुक्ति पाने वाले हों। (६७) और ऐ पैगम्मर तेरा पालनकर्ता जो चाहता है पैदा करता और चुन लेता है चुनना लोगों के हाथ में नहीं है। अल्लाह पवित्र है और इनके पूजितों से ऊँचा है। (६८) और जो यह लोग़ अपने दिलों में छिपाते और जो जाहिर करते हैं तेरा पालनकर्ता उदको खूब जानता है। (६९) और वही अल्लाह है कि उसके शिवाय कोई पूजित नहीं। संसार और प्रलय में उसी की तारीफ है और उसी का साम्राज्य है

और उसी की तरफ तुम लोगों को लौटकर जाना है। (७०) ऐ पैगम्बर कहो कि देखो तो कि अगर अल्लाह प्रलय के दिन तक लगातार तुम पर रात किये रहे तो अल्लह के सिवाय कौन है जो तुम्हारे लिए रोशनी ले आये। क्या तुम नहीं सुनते। (७१) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि अगर अल्लाह प्रलय के दिन तक लगातार तुम पर दिन ही बनाये रहे तो अल्लाह के सिवाय कौन है जो पुम्हारे लिए रात लावे जिसमें चैन पाओ। क्या तुम लोग नहीं देखते। (७२) और अपनी कृपा से तुम्हारे लिए रात और दिन को बनाया है ताकि तुम रात में चैन पाओ और उसकी कृपा के ढूँढने में लगे रहो। शायद तुम कृतज्ञ हो। (७३) और जिस दिन ईश्वर मुशरिकों को बुलाकर पूछेगा कि कहाँ हैं मेरे शरीक जिनको तुम दावा करते थे। (७४) और हर एक गिरोह में हम एक साक्षी यानी पैगम्बर को अलग करेंगे फिर कहेंगे कि अपनी दलील पेश करो तब जानेंगे कि अल्लाह की बात सच्ची है और जो बातें बनाते थे उनसे गुम होजायगी। (७५) (रुकू ७)

कारून मूसा की जाति में से था। फिर वह उन पर अत्याचार करने लगा और हमने इनको इतना धन दे रक्खा था कि कई जोरदार मनुष्य उसकी कुन्जियां कठिनता से उठा सकते थे। तब उसकी जाति ने उससे कहा इतरा मत क्योंकि अल्लाह इतराने वालों को नहीं चाहता (७६) और जो तुझको ईश्वर ने दे रक्खा है उससे अन्त के घर की फिक्र कर और संसार में जो तेरा भाग गसको मत भूल और जिस तरह अल्लाह ने तेरे साथ भलाई की है तू भी भलाई कर और देश में झगड़ा चाहने वाला न हो। अल्लाह झगड़ा करने वालों को पसंद नहीं करता (७७) कारून बोला यह तो मुझको अपनी लियाकत से मिला है, क्या यह विचार न किया कि इससे पहले ईश्वर कितने गिरोहों का नाश कर चुका जो इस करून से ज्यादा बल और धन रखते थे और पापियों से उनके पाप न पूछे जायेंगे। (७८) फिर कारून अपनी ठसक से अपनी

जाति पर निकला तो जो लोग संसार के जीवन के चाहने वाले थे कहने लगे कि जैसा कुछ कारून को मिला है हमको भी मिले बेशक कारून बड़ा भाग्यवान है। (७६) और जिन लोगों को समझ मिली थी, बोल उठे कि तुम्हारा सत्यानाश हो, तो आदमी ईमान लाया और उसने सुकर्म किये उसके लिए ईश्वर का सवाब कारून के माल से बहुत है और यह बात सब्र करने वालों के लिए है। (८०) फिर हमने कारून और उसके घर को जमीन में धसा दिया और ईश्वर के सिवाय कोई गिरोह उसकी सहायता को न आया और न अपने लिए बचा सका। (८१) और जो लोग कल उस जैसे होने की इच्छा करते थे सुबह उठकर कहने लगे। अरे अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसकी रोजी चाहे बढ़ा दे और जिसको चाहे तंग करे। अगर ईश्वर हम पर कृपा न करता तो हमको भी धँसा देता। अरे काफिरों का भला नहीं होता। (८२) (रुकू ८)

यह परलोक का घर है। हमने उन लोगों के लिए कर रक्खा है जो संसार में शेखी और झगड़ा नहीं चाहते और संयमियों का अच्छा परिणाम है। (८३) जो आदमी सुकर्म करे उसको उससे बढ़कर फल मिलेगा और जो कुकर्म करेगा तो जिन लोगों ने जैसा बुरा किया है वैसा ही फल पायेंगे (८४) वह ईश्वर जिसने कुरान को तुम पर कर्तव्य ठहराया है जरूर तुमको ठिकाने से लगा देगा ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि मेरा पालनकर्ता जानता है कि कौन सच्चा धर्म लेकर आया है और कौन प्रत्यक्ष गुमराही में है। (८५) और तुम्हें क्या आशा थी कि तुम पर किताब उतारी जायगी। मगर तेरे पालनकर्ता की कृपा से दी गई। तू काफिरों का साथी न हो। (८६) और ऐसा न हो कि जब ईश्वर की आज्ञा तुम पर उतर चुकी है उसके बाद यह आदमी तुमको उनसे रोकें और अपने पालनकर्ता की तरफ मनुष्यों को बुलाये चले जाओ और मुशरिकों में न हो। (८७) और अल्लाह के साथ

किसी दूसरे पूजित को न पुकारो। उसके सिवाय कोई और पूजित नहीं। उसकी जात के सिवाय सब चीजें मिटने वाली हैं उसी का साम्राज्य है और उसी की तरफ तुमको लौटकर जाना है। (८८) (रुकू ९)

सूरे अन्कबूत

मक्के में अवतरित इसमें ६९ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयावाला कृपालु है। अलिफ-लाम-मीम। (१) क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि इतना कहने पर छूट जयेंगे कि हम ईमान ले आये और उनको आजमाया न जायगा। (२) और हमने उन लोगों को आजमाया था जो इनसे पहले थे, पस ईश्वर को चाहिए कि सच्चे भी मालूम हो जायं और झूठे भी मालूम हो जायँ। (३) क्या जो लोग काम करते हैं उन्होंने समझ रक्खा है कि हमारे काबू से बाहर हो जायेंगे। यह लोग क्या बुरी तजवीज करते हैं। (४) जिसको अल्लाह से मिलने की उम्मेद हो तो ईश्वर का समय जरूर आनेवाला है। और वह सुनता जानता है (५) और जो महनत उठाता है वह अपने ही लिए मेहनत उठाता है। ईश्वर को संसार के लोगों की परवाह नहीं है। (६) और जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने कुकर्म किये हम जरूर उनके पाप उनसे दूर कर देंगे और इनको अच्छे से अच्छे कामों का फल देंगे। (७) और हमने आदमी को अपने माता पिता के साथ अच्छा बर्ताव करने की आज्ञा दी और अगर माता-पिता जोर दें कि तू किसी को हमारा साझी ठहरा जिसकी तेरे पास कोई

प्रमाण नहीं तो तू इनका कहा न मानना। तुमको हमारी तरफ लौट कर आना है फिर जो तुम करते हो हम तुमको बता देंगे। (८) और जो ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये हम उनको नेक मनुष्यों में प्रवेश करेंगे। (९) और कुछ मनुष्य ऐसे भी हैं जो कहते कि हम ईश्वर पर ईमान लाये। फिर जब उनको ईश्वर के मार्ग में दुख पहुंचता है तो मनुष्यों के दुख को ईश्वर के दण्ड के बराबर ठहराते हैं और अगर तेरे पालनकर्ता की तरफ से सहायता पहुंचे तो कहने लगते हैं कि हम तुम्हारे साथ थे। भला जो कुछ संसार के दिलों में है, क्या ईश्वर उनसे जानकार नहीं (१०) और जो लोग ईमान लाये हैं अल्लाह उनको जान लेगा और जान लेगा उनको धोखेबाज हैं। (११) और काफिर ईमान वालों से कहते हैं कि हमारे कायदे पर चलो और तुम्हारे पाप हम उठायेंगे हालाँकि यह लोग जरा भी उनके पाप नहीं उठा सकते और यह झूठे हैं। (१२) मगर हाँ अपने बोझ उठायेंगे और अपने बोझों के साथ और भी बोझा उठायेंगे और जैसी-जैसी लफंटबाजियाँ यह मनुष्य करते रहे हैं प्रलय के दिन इनके पूछा जायगा। (१३) (रुकू १)

और हमने नूह को उनकी जाति के पास भेजा तो वह पचास वर्ष कम हजार वर्ष उनमें रहे, फिर* उनको तूफान ने पकड़ लिया और वह पापी थे। (१४) फिर हमने नूह को और जो नाव में थे उनको तूफान से बचा दिया। (१५) और हमने इसको सारे संसार के लिए शिक्षा बना दी। और इब्राहीम ने जब अपनी कौम से कहा कि ईश्वर की पूजा करो और उससे डरो यह बढ़ कर हैं अगर तुम समझ रखते हो। (१६) तुम जो ईश्वर के सिवाय मूर्ती की पूजा करते हो और झूठी-झूठी बातें बनाते हो। ईश्वर के सिवाय जिनकी तुम पूजा करते

*** कहते हैं कि नूह १४०० वर्ष जीवित रहे। जब उनकी आयु ९५० वर्ष की हुई तो एक भयंकर तूफान आया जिसमें पृथ्वी में स: गई।**

तुम्हारी रोजी के मालिक नहीं हैं। सो रोजी ईश्वर ही से माँगो और उसी की पूजा करो और उसी को धन्यवाद दो और उसी की ओर लौटकर जाना है (१७) और यदि तुम झुठलाओगे तो तुमसे पहिले बहुत संगतें अपने पैगम्बरों को झुठला चुकी हैं और पैगम्बर के जिम्मे तो ईश्वर की आज्ञा है साफ तौर पर पहुंचा देना है। (१८) क्या मनुष्यों ने नहीं देखा कि ईश्वर किस तरह सृष्टि को पहली बार पैदा करके फिर उसी तरह की सृष्टि बार-बार पैदा करता रहता है। यह अल्लाह के लिये एक साधारण बात है। (१९) समझाओ कि तुम देश में चलो फिरो और देखो कि ईश्वर ने किस तरह पहली बार सृष्टि को पैदा किया। फिर ईश्वर आखिरी उठाना भी उठायेगा। बेशक अल्लाह हर वस्तु पर शक्तिमान है। (२०) जिसे चाहे दण्ड दे और जिस पर चाहे कृपा करे और तुम उसकी तरफ लौटकर जाओ। (२१) और तुम न तो पृथ्वी में ईश्वर को हरा सकते हो और न आकाश में और ईश्वर के सिवाय न कोई तुम्हारे काम का संभालने वाला होगा न साथी होगा। (२२) (रुकू २)

और जो मनुष्य ईश्वर की आयतों को और उससे मिलने को नहीं जानते वे हमारी कृपा से निराश हुए हैं और उनको दुखदाई दण्ड है। (२३) बस इब्राहीम की कौम के पास इसके अलावा उत्तर न था कि इसको मार डालो या जला दो। चुनांचे उनको आग में फेंक दिया यदि ईश्वर ने उसको आग से बचा दिया। इसमें बड़े पते हैं उन लोगों को जो ईमान रखते हैं। (२४) और इब्राहीम ने कहा कि तुमने जो ईश्वर के सिवाय मूर्तियों को मान रखा है केवल संसार के जीवन में आपस की मित्रता प्यार के विचार से, फिर प्रलय के दिन तुममें से एक का एक इन्कार करेगा और एक लानत करेगा और तुम सबका ठिकाना नरक होगा और मूर्ती में से कोई भी तुम्हारा सहायक नहीं होग, (२५) इस पर केवल लूत इब्राहीम पर ईमान लाये और इब्राहीम ने कहा कि

मैं तो देश छोड़कर अपने पालनकर्ता की तरफ निकल जाऊंगा वह बड़ा चमत्कार वाला है। (२६) और हमने इब्राहीम का पुत्र इसहाक और याकूब दिया और उनके कुटुम्ब में पैगम्बरी और पुस्तक को जारी रखा और हमने इब्राहीम को सँसार में भी उनका बदला दे दिया और प्रलय में भी वह नेकों में हैं। (२७) और लूत को भेजा जब उन्होंने अपना कौम से कहा कि बेशर्मी का काम करते हो जो तुमसे पहले संसार के मनुष्यों में से किसी ने नहीं किया। (२८) क्या तुम लड़कों पर गिरते और मार्ग मारते और अपनो मजलिसों में बुरे काम करते हो। उस लूत की कौम का यही उत्तर था कि अगर तू सच्चा है तो हम पर ईश्वर का दण्ड ला। (२९) लूत ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! झगड़ालु लोगों के मुकाबिले में मेरी सहायता कर। (३०) (रुकू ३)

और जब हमारे फरिश्ते इब्राहीम के पास शुभ सन्देश लेकर आये तो उन्होंने इब्राहीम से कहा कि हम उस बस्ती के रहने वालों का नाश कर देंगे क्योंकि इसके मनुष्य झगड़ालु हैं। (३१) इब्राहीम ने कहा कि उसमें लूत भी है। वह बोल कि जो मनुष्य उसमें हैं हमें खूब मालूम है। हम लूत को और उनके घर वालों को बचा लेंगे यदि लूत की स्त्री पीछे रह जाने वालों में होगी। (३२) और जब हमारे देवदूत लूत के पास आये तो लूत उनसे अप्रसन्न हुआ और दिल दुखाया। देवदूतों ने कहा डर न कर और उदास न हो। हम तुझको और तेरे घर के लोगों को बचा लेंगे यदि तेर स्त्री रह जाने वालों में रहेगी। (३३) हम इस बस्ती के लोग जैसे कुकर्म करते रहे हैं उसके दण्डमें इन पर एक आकाश से आफत उतारने वाले हैं। (३४) और हमने उन मनुष्यों के लिए जो अक्ल रखते हैं उस बस्ती का जाहिरा निशान छोड़ रखा है। (३५) और हमने मदियन की तरह उनके भाई शुऐब को भेजा तो उन्हाने कहा कि भाइयों! ईश्वर की पूजा करो और अन्त का विचार रखा और देश में झगड़ा फैलाते न फिरो। (३६) तो उन्होंने शुऐब का झुठलाया। बस भूचाल ने उनको पकड़ा और सुबह को अपने घरों में

बैठे रह गये (३७) और हमने कौम आद और समद को मेट दिया और तुमको उनके घर दिखाई देते हैं और राक्षस ने उनके लिए जो वह करते थे अच्छा कर दिखाया था और मार्ग से रोका था हालाँकि वह सूझ-बूझ के लोग थे। (३८) और हमने कारून और फिरऔन और हामान को मिटा दिया और मूसा उनके पास खुले-खुले चमत्कार लेकर आये। वह देश में घमण्ड करने लगे थे और हमसे जीतने वाले न थे। (३९) तो हमने सबको उनके पाप में धर पकड़ा। चुनाँचे उनमें से काई तो वह थे जिन पर हमने पत्थर बरसाये कौम आद, कोई उनमें से कोई थे जिनको बड़े जोर की आवाज ने पकड़ा जैसे समूद और उनमें से कोई वह थे जिनको हमने जमीन में धंसाया जैसे कारून कोई उतमें से वह थे जिनको डुबो दिया जैसे फिरऔन हामान। और ईश्वर ऐसा न था कि उन पर अत्याचार करता यदि वह अपने ऊपर आप अत्याचार किया करते थे। (४०) जिन लोग़ों ने ईश्वर के सिवाय दूसरे काम सम्भालने वाले बना रखे हैं उनकी मिसाल मकड़ी-जैसी* है कि उसने घर बनाया और सब घरों में बोदा मकड़ी का घर है, यदि यह लोग समझते। (४१) जिनको ईश्वर के सिवाय यह लोग पुकारते हैं वह जानता है और वह बड़ा चमत्कारिक है। (४२) और हम यह उदाहरण मनुष्यों के लिए बताते हैं। और समझदार ही इनको समझते हैं। (४३) ईश्वर ने आकाश-पृथ्वी बनाई। इसमें ईमान वालों के लिए निशानी है। (४४) (रुकू ४)

* यानी जैसी मकड़ी का जाला बहुत कमजोर 'होता है वैसे ही इनका मत है।

इक्कीसवाँ पारा (उत्लु मा ऊहिया)

ऐ पैगम्बर ! किताब में जा ईश्वरीय सन्देशा दिया जाता है उसे पढ़ और नमाज पढ़ाकर। नमाज बेशर्मी और बुरी आदतों से रोकती है और अल्लाह की याद बड़ी बात है, और जो तुम करते हो अल्लाह जानता है। (४५) और किताब वालों के साथ झगड़ा न किया करो मगर ऐसी तरह पर जो बेहतर है। हाँ जो लोग उनमें से तुम पर अधिकता करें और कि हम पर उतारा है और तुम पर उतरा है सभी को मानते हैं और हमारा ईश्वर और तुम्हारा ईश्वर एक ही है और हम उसी की आज्ञा पर हैं। (४६) और इसी तरह हमने तुम पर किताब उतरी सो जिनको हमने किताब दी है वे उसको मानते हैं और इनमें से भी ऐसे हैं कि वह भी उस पर ईमान ले आते हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मातते। (४७) और कुरान से पहले न तो तुम कोई पुस्तक ही पढ़ते थे और न तुमको अपने हाथ से लिखना ही आता था। यदि ऐसा तुम करते होते तो निस्सन्देह यह झूठा ठहराने वाले लोग सन्देह कर सकते थे। (४८) जिन मनुष्यों को समझ दी गई है उनके दिलों में यह खुली आयतें हैं और जो इन्कारी हैं वही हमारी आयतों को नहीं मानते। (४९) और कहते हैं कि इस पर इसके पालनकर्ता ने निशानियाँ क्यों नहीं उतरी। कहा निशानियाँ तो ईश्वर के पास हैं और मैं तो साफ तौर पर सुनाने वाला हूं। (५०) ऐ पैगम्बर ! क्या इन लोगों के लिए यह काफी नहीं कि हमने तुम पर कुरान उतारा, जो उनको पढ़ कर सुनाया जाता है। जो लोग ईमान लाने वाले हैं उनके लिए इसमें कृपा और शिक्षा है। (५१) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर ! कहो कि मेरे और तुम्हारे बीच अल्लाह काफी साक्षी है। वह आकाश और पृथ्वी की वस्तुओं को जानता है और जो मनुष्य झूठे पूजितों पर ईमान लाते हैं और अल्लाह से फिरे हुए हैं यही तो

घाटे में रहेंगे। (५२) और ऐ पैगम्बर! तुमसे दण्ड के लिए शीघ्रता मचा रहे हैं और यदि समय नियत न होता तो इन पर दण्ड आ चुका होती और वह एकबारगी इन पर आवेगी और इनको पता भी न होगी। (५३) तुमसे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे हैं और नरक काफिरों को घेरे हुए हैं। (५४) जबकि दण्ड उनके ऊपर से और इनके पैरों के तले से इनको घेर लेगी और ईश्वर कहेगा कि जैसे-जैसे कर्म तुम करते रहो हो उसका आनन्द लो। (५५) हमारे सेवकों जो ईमान लाये हो, हमारी जमीन चौड़ी है, हमारी ही पूजा करो। (५६) हर जीव मरेगा फिर हमारी ओर लौटकर आवेगा। (५७) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनको हम स्वर्ग की खिड़कियों में स्थान देंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। उनमें हमेशा रहेंगे। काम वालों को अच्छा बदला है। (५८) जिन्होंने सन्तोष किया और अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते रहे उनका अच्छा फल है। (५९) और जितने जीव हैं जो अपनी रोजी उठा नहीं सकते, अल्लाह ही उनको रोजी देता है और वही सुनता और जानता है। (६०) और ऐ पैगम्बर! यदि तू इनसे पूछे कि किसने आकाश और पृथ्वी को पैदा किया और किसने चाँद और सूरज को बस में कर रखा है, तो अवश्य उत्तर देंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६१) अल्लाह ही अपने सेवकों में से जिसको चाहे रोजी देता है और जिसको चाहता है नपी-तुली कर देता है। अल्लाह ही हर वस्तु से जानकार है। (६२) और यदि तुम इनसे पूछो कि किसने आकाश से पानी बरसाया फिर उस पानी के द्वारा जमीन को उसके मरे पीछे कौन जिला उठता है, तो उत्तर देंगे कि अल्लाह। ऐ पैगम्बर! तू कह सब खूबी अल्लाह को है। इनमें अवसर समझ नहीं रखते। (६३) (रुकू ६)

और यह सांसारिक जीवन तो जी बहलाना और खेल है और पिछला घर परलोक को जाना ही जाना है यदि समझते। (६४) फिर

जब नाव में सवार होते हैं तो उसी पर पूरा भरोसा करके अल्लाह को पुकारते हैं। फिर जब उनको छुटकारा देकर जमीन की तरफ पहुंचा देता है तो छुटकारा पाते ही वह साझी ठहराने लगते हैं। (६५) जो हमने उनको दिया है उससे मुकरते हैं आगे चलकर मालूम कर लेंगे। (६६) क्या मक्के के काफिरों ने नहीं देखा कि हमने हरम को अमन की जगह बना रखा है और मनुष्य इनके आस पास बचके जाते हैं तो क्या यह लोग झूठ पर ईमान रखते हैं और अल्लाह की दया नहीं मानते। (६७) और उससे बढ़कर कौन अत्याचारी है जो ईश्वर पर झूठ लफंट लगाये या जब सत्य बात को पहुंचे तो उसको झुठलावे। क्या इनकार करने वालों का नरक ही ठिकाना नहीं है। (६८) और जिन्होंने हमारे काम में प्रयत्न किया हम उसको अपना मार्ग दिखलावेंगे और निस्सन्देह नेक काम वालों का अल्लाह ही साथी बनता है। (६९) (रुकू ७)

सूरे रूम

मक्के में अवतरित हुई इसमें ६० आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अलिफ-लाम-मीम। (१) रूमी लोग दब गये हैं। (२) समीप के देशों में दब गये हैं और वे हारे पीछे फिर जीत जावेंगे (३) कुछ वर्षों में पहले और पिछले काम अल्लाह ही के हाथ में हैं और उस दिन ईमानदार प्रसन्न होंगे। *(४)

* रूम (ईसाई) और ईरान (अग्नि-पूजक) के बीच युद्ध हुआ। इसमें ईरान वाले जीते। उनकी विजय से मक्के के काफिर बहुत प्रसन्न हुए, क्योंकि उनका मत ईरान के अग्नि के उपासकों से मिलता था। इसलिए मक्के के मुशरिक मुसलमानों से बड़ा बोल बोलने लगे और कहने लगे जैसे रूम के ईसाई परास्त हुए जो एक प्रकार तुम्हारे ही मत वाले हैं वैसे ही तुम भी जब हमसे लड़ोगे तो अवश्य हारोगे। इस पर यह आयतें उतरीं।

वह जिसको चाहता सहायता करता है और वह बलवान दयालु है। (५) अल्लाह का प्रण है और अपने प्रण के खिलाफ नहीं किया करता लेकिन बहुधा लोग नहीं समझते। (६) संसारी जीवन के जाहिरा हालों को समझते हैं और परलोक से यह लोग बिलकुल बेखबर है। (७) क्या इन लोगों ने अपने दिल में ध्यान नहीं दिया कि अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को और उन वस्तुओं को जो इन दिनों के बीच में हैं किसी मतलब से और नियत समय के लिये पैदा किया है और बहुतेरे आदमी प्रलय के दिन अपने पालनकर्ता से मिलने को नहीं मानते। (८) क्या यह लोग देश में नहीं चलते-फिरते हैं कि अपने पहलों का परिणाम फल देखें। वह लोग इनसे बल में भी बढ़ कर थे और उन्होंने इनसे ज्यादा जमीन को जोता और आबाद किया था और उनके पास उनके पैगम्बर चमत्कार लेकर आये थे यदि उन्होंने न माना और अपने किये का दण्ड पाया। तो ईश्वर उन पर अत्याचार करने वाला नहीं था बल्कि वह अपनी जानों पर आप अत्याचार करते थे। (९) फिर जिन लोगों ने बुरा किया उनका परिणाम बुरा ही हुआ क्योंकि उन्होंने ईश्वर की आयतों को झुठलाया और उनकी हंसी उड़ाई थी। (१०) (रुकू १)

अल्लाह पहली बार सृष्टि पैदा करता है फिर उसको दुहरावेगा, फिर उसकी तरफ लौट जाओगे। (११) जिस दिन प्रलय आएगी अप-राधी निराश होकर रह जावेंगे। (१२) और इनके शरीकों से कोई सिफारिशी न होगा और ये अपने शरीकों से फिर बैठेंगे। (१३) जिस दिन प्रलय उठेगी उस दिन वे भले बुरे तितर-बितर हो जायंगे। (१४) फिर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये वह बाग स्वर्ग में होंगे। उनकी आवभगत हो रही होगी। (१५) और जिन लोगों ने इनकार किया और हमारी आयतों और अन्तिम दिन के पेश आने को झुठलाते रहे तो यही लोग दण्ड में पकड़े जावेंगे। (१६) बस जिस

समय तुम लोगों को शाम हो और जिस समय तुमको सुबह को अल्लाह की पवित्रता से याद करो। (१७) आकाश औत पृथ्वी में वही अल्लाह प्रशंसा के योग्य है और तीसरे पहर भी और जब तुम लोगों को दोपहर हो। (१८) जिन्दे को मुर्दे ये निकालता है और मुर्दे को जिन्दे से निकालता है और पृथ्वी को उनके मरे पीछे जीवित करता है और इसी तरह तुम लोग भी मरे पीछे पृथ्वी से निकाले जाओगे। (१९) (रुकू २)

उसने तुमको मिट्टी से पैदा किया फिर जब तुम मनुष्य होकर फैले हुए हो। (२०) और उसके चमत्कारों में से एक यह है कि उसने तुम्हारे बीच स्त्रियाँ पैदा की कि तुमको उनके पास चैन मिले और तुममें प्यार और प्रेम पैदा किया। इस मामले में समझ वालों के लिए चमत्कार है। (२१) और आकाश और पृथ्वी का पैदा करना और तुम्हारी बोलियाँ औरी तुम्हारी रंगतों का अलग-अलग होना, इसमें समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (२२) और तुम्हारा रात और दिन का सोना और उसकी कृपा तलाश करना उसकी निशानियाँ हैं। जो लोग सुनते हैं उनके लिए इनमें निशानियाँ हैं। (२३) और उसी की निशानियों में से हैं कि वह तुमको डरने और आशा करने के लिए बिजलियाँ दिखाता और आकाश से पानी बरसाता और उसके द्वारा से पृथ्वी को उसके मरे पीछे जिला उठता है। जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए इन बातों में निशानियाँ हैं। (२४) और उसी की निशानियों में से है कि आकाश और पृथ्वी उसकी आज्ञा से स्थिर हैं। फिर जब वह तुमको एक आवाज देकर पृथ्वी से बुलायेगा तो तुम सब के सब निकल पड़ोगे। (२५) और जो आकाश और पृथ्वी में हैं उसी के हैं। सब उसी के काबू में हैं। (२६) और वही है जो पहली बार पैदा करता है, फिर उनको दुबारा पैदा करेगा, यह उसके लिए आसान है और और आकाश और पृथ्वी में उसी की सुन्दरता अधिक है और वह बलवान चमत्कार वाला है। (२७) (रुकू ३)

वह तुम्हारे लिए तुममें का एक उदाहरण बताता है कि तुम्हारे दासों में से कोई हमारी दी हुई रोजी में साझी है कि तुम सब उसमें बराबर हक रखते हो । तुम उनकी वैसी ही परवाह करते हो जैसी कि तुम अपनी परवाह करते हो * जो लोग समझ रखते हैं उनके लिए हम आयतों को इसी तरह खोल-खोलकर बताते हैं । (२८) मगर जो लोग साक्षी ईश्वर बनाकर अत्याचार कर रहे हैं वह तो वे जाने-बूझे अपनी इच्छाओं पर चलते हैं तो जिसको ईश्वर गुमराह करे उसको कौन सीधी राह पर ला सकता है, और ऐसे लोगों का कोई सहायक न होगा । (२६) ऐ पैगम्बर ! तू एक ईश्वर का होकर दीन की तरफ अपना मुंह सीधा कर । यह ईश्वर की चतुराई है जिससे उसने लोगों की सूरत बनाई है । खुदा की बनावट में बदली नहीं जा सकती यही दीन सीधा है । मगर अक्सर लोग नहीं समझते । (३०) उसी की तरफ फिरो और उसी एक ईश्वर का डर और नमाज पढ़ो और शरीक ठहरानेवालों में न हो । (३१) जिन्होंने अपने दीन में अन्तर डाला और ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित बना कर फिरके हो गये । जो जिस फिरके में है वह उसी में मगन है । (३२) और जब लोगों को कोई दुख पहुंचता है तो वह अपने पालनकर्ता की तरफ फिर कर उसी को पुकारने लगते हैं । फिर जब वह उनको अपनी कृपा चखा देता है तो उनमें से कुछ लोग झूठे पूजितों को अपने पालनकर्ता का साझी बना बैठते हैं । (३३) ताकि जो कृपाएं हमने उनको दी हैं उनकी श्रद्धा करें तो लाभ उठा लो आगे चलकर फल मालूम कर लोगे । (३४) क्या हमने इन लोगों पर कोई प्रमाण उतारा है कि जिससे यह लोग ईश्वर के साथ शरीक ठहरा रहे हैं, वह प्रमाण इनको शरीक करना बता रही है

*** कहने का अर्थ यह है कि जैसे तुम अपने दासों और बाँदियों की परवाह करते और जैसा तुम्हारा मन चाहता है वैसा करते हो वेसे ही ईश्वर को तुम्हारा और सारी सष्टि का कुछ डर नहीं । वह जो चाहे करे । उसकी शान निराली है ।**

(३५) और जब मनुष्यों को हम कृपा का स्वाद चखा देते हैं तो वह उससे खुश होते हैं और अगर उनके पिछले कर्मों के बदले में उन पर आफत आ जावे तो वह आस तोड़ बैठते हैं। (३६) लोगों ने नहीं देखा कि अल्लाह जिसकी रोजी चाहे ज्यादा कर दे और जिसकी चाहे नपी-तुली कर देता है। जो लोग ईमान रखते हैं उनके लिए इसमें निशानियाँ हैं। (३७) तो सम्बन्धी को और मुहताज को और मुसाफिर को उनका भाग देते रहो। जो लोग ईश्वर की रोजी के चाहने वाले हैं यह उनके लिए बेहतर हैं और यही मनुष्य मनमाने फल पाने वाले हैं। (३८) और जो तुम लोग ब्याज देते हो ताकि लोगों के माल में ज्यादती हो तो वह ब्याज ईश्वर के यहाँ फूलता-फलता नहीं। जो ईश्वर की राह पर दान करते हो तो जो मनुष्य ऐसा करते हैं उन्हीं के दूने हो गये। (३९) अल्लाह वह है जिसने तुमको पैदा किया, फिर तुमको रोजी दी, फिर तुमको मारता है, फिर तुमको जिलायेगा। भला तुम्हारे शरीकों में कोई है जो इनमें से कोई काम कर सके? यह मनुष्य जैसे-जैसे शरीक ठहराते हैं ईश्वर इनसे पवित्र और अधिक बड़ा है। (४०) (रुकू ४)

लोगों की ही करतूतों से पृथ्वी और पानी में खराबियां दिखा चुके हैं। मनुष्य जैसे-जैसे कार्य कर रहे हैं ईश्वर उनको उनके कामों का मजा चखाये। शायद वे मान जावें (४१) ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कहो कि पृथ्वी पर चलो-फिरो और पहलों का अन्त देखो। उनमें से बहुदा शरीक ठहराते थे। (४२) तो इससे पहले कि ईश्वर की तरफ से वह प्रलय आवे जो टल नहीं सकता तू दीन के सीधे मार्ग पर अपना मुँह सीधा किये रह। उस दिन ईमानवाले और काफिर एक दूसरे से अलग-अलग होंगे। (४३) जो मना करता है तो उसी पर उसकी आफत पड़ेगी और जो अच्छे कर्म करता है तो यह अपने ही लिए आराम का सामान कर रहा। (४४) जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने सत्कर्म किये, उनको अल्लाह अपनी कृपा से बदला देगा। वह

काफिरों को पसन्द नहीं करता। (४५) और उनकी प्राकृतिक निशानियों में से है कि वह हवाओं को भेजता है कि वर्षा का शुभसंदेश पहुंचावे, ताकि अल्लाह तुम लोगों को अपनी कृपा का स्वाद चखाये, ताकि अपने आज्ञा से नावें चलावे और शायद तुम उसकी कृपा ढूंढो और भलाई मानो। (४६) और ऐ पैगम्बर! हमने तुमसे पहले भी पैगम्बर उनकी जाति की तरफ भेजे तो वह पैगम्बर चमत्कार लेकर उनके पास आये मगर उन्होंने झुठलाया। तो जो मनुष्य झुठलाने के अपराध के अपराधी हुए उनसे हमने बदला लिया और ईमानवालों की सहायता हम पर आवश्यक थी। (४७) अल्लाह वह है जो हवाओं को भेजता है। वह बादलों को उभारता है फिर जिस तरह चाहता है बदल को आकाश में फैलाता हैं और उसको टुकड़े-टुकड़े कर देता है। तो तू देखता है बादल के बीच में से मेंह बरता है। फिर जब ईश्वर अपने बन्दों में से जिस पर चाहता है वर्षा देता है तो वह लोग खुशियाँ मनाने लगते हैं। (४८) वैसे मेंह के बरसने से पहजे यह लोग निराश थे*। (४९) तो ईश्वर की कृपा की निशानियों को देख कि पृथ्वी को उसके मरे पीछे कैसे जिलाता है। निस्सँदेह यह ईश्वर मुर्दों का जिलाने वाला है और हर वस्तु पर शक्तिमान है। (५०) और अगर हम ऐसी हवा चलावें और यह लोग खेती को पीला देखें तो खेती के पीले पड़े पीछे जरूर कृतघ्नता करने लगते हैं। (५१) तो ऐ पैगम्बर! तुम न तो मुर्दों को सुना सकते हो न बहरों ही को अपनी आवाज सुना सकते हो उस समय कि बहरे पीठ फेर कर भागें। (५२) और तू न अन्धों को उल्टे रास्ते से सीधे रास्ते पर ला सकता है, तू तो बस उन्हीं लोगों

---

*यानी जैसे वर्षा से पहले प्रायः लोग समझते हैं कि पानी न बरसेगा। वैसे ही सच्चे धर्म के प्रचार से पहले लोग उसके विषय में मनमानी बातें करते हैं।

सुना सकता है जो हमारी आयतों को मान लेते हैं वही धर्म वाले हैं। (५३) (रुकू ५)

अल्लाह वह है जिसने तुमलोगों को कमजोर हालत से पैदा किया फिर लड़कपन की कमजोरी के बाद जवानी की ताकत दी। फिर ताकत के बाद कमजोरी और बुढ़ापे की हालत दी। जो चाहता है पैदा करता है और वही जानकार चमत्कार वाला है। (५४) और जिस दिन प्रलय होगी पापी लोग सौगन्धें खायेंगे कि संसार में एक घड़ा से ज्यादा नहीं ठहरे। इसी तरह मनुष्य बहके रहे। (५५) जिन लोगों को विद्या और ईमान दिया गया है वह उत्तर देंगे कि तुम तो अल्लाह की किताब में प्रलय के दिन तक ठहरे और यह प्रलय का दिन है, मगर पापियों को विश्वास न था। (५६) तो उस दिन न पापियों को उनका उज्र करना लाभ पहुंचायेगा और न उनको ईश्वर के राजी कर लेने का समय दिया जायगा (५७) और हमने लोगों के लिए इस कुरान में हर तरह का उदाहरण दिया है अगर और तुम इनको कोई चमत्कार लाकर दिखाओ तो जो इन्कार करने वाले हैं वह कहेंगे कि तुम निरे धोखेबाज हो। (५८) जो लोग समझ नहीं रखते उनके दिलों पर अल्लाह इसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (५९) तो ऐ पैगम्बर तू कायम रह निस्संदेह अल्लाह का प्रण सच्चा है और ऐसा न हो कि जो मनुष्य विश्वास नहीं करते, तुमको उछाल दें (६०) (रुकू ६)

सूरे लुकमान

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३४ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। अलिफ लाम-मीम (१) यह चमत्कारिक पुस्तक की आयतें हैं। (२) नेकों के लिए सूझ और कृपा है। (३) जो नमाज पढ़ते और दान देते और वह प्रलय का भी विश्वास रखते हैं। (४) वे पालनकर्ता की तरफ से सूझ पर हैं और वे मनमाने फल पाने वाले हैं। (५) और मनुष्यों में कोई ऐसे भी हैं जो व्यर्थ कहानियाँ मोल लेते हैं ताकि बेसमझे-बूझे ईश्वर की की राह से भटकाएँ और ईश्वर की आयतों की हंसी उड़ायें। यही हैं जिनको जिल्लत का दण्ड होना है। (६) और जब उनको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो अकड़ता हुआ मुंह फेर कर चल देता है मानो उसको सुना ही नहीं जैसे उसके दोनों कान बहरे हैं। सो तू उसे दुखदाई दण्ड की शुभसंदेश सुना दे। (७) जो लोग ईमान लाये और शुभ काम किये स्वर्ग के उपवन हैं। (८) उनमें हमेशा रहेंगे ईश्वर का पक्का प्रण है। और वह बड़ा चमत्कारिक है। (९) उसी ने आकाश को जिनको तुम देखते हो बगैर खम्भों के खड़ा किया है और पृथ्वी में पहाड़ों को डाल दिया कि तुम्हें लेकर पृथ्वी झुक न पड़े और उसमें हर तरह के जानदार फैला दिये और आकाश से पानी बरसाया, फिर पृथ्वी में हर तरह के अच्छे जोड़े पैदा किये। (१०) यह ईश्वर की पैदा की हुई है। बेस तुम मुझे दिखाओ कि ईश्वर के अलावा जो पूजित तुम लोगों ने बना रखे हैं उन्होंने क्या पैदा किया। यह अत्याचारी खुली गुमराही में हैं। (११) (रुकू १)

और हमने लुकमान को चमत्कार दिया कि अल्लाह को जो धन्यवाद देता है अपने इसीलिए धन्यवाद देता है और जो कृतघ्नता करता है

तो अल्लाह बेपरवाह और तारीफ के योग्य है। (१२) और जब लुकमान ने अपने पुत्र को शिक्षा देते समय उससे कहा कि बेटा, किसी को ईश्वर का शरीक न ठहराना। शरीक ठहराना अत्याचार की बात है। (१३) और मनुष्य को उनके माता-पिता के हक में ताकीद का कि उसकी माता ने बोझ उठा कर उसको पेट में रखा और दो वर्ष में उसका दूध छूटता है, मेरा और अपने माता पिता का धन्यवाद दो आखिर को मेरे पास ही तुझको आना है। (१४) और अगर तेरे माता-पिता* तुझको मजबूर करें की तू हमारे साथ शरीक बना जिसका तुझे विद्या नहीं तो उनका कहा न मान। दुनिया में* उनके साथ अच्छी तरह रह और उन मनुष्यों के तरीके पर चल जो मेरी तरफ रुजू हैं। फिर तुमको मेरी तरफ लौटकर आना है तो जैसे काम तुम मनुष्य करते रहे हो मैं तुमको बताऊँगा। (१५) बेटा, अगर राई के दाने के बराबर भी कोई चीज हो और फिर वह किसी पत्थर के अन्दर या आकाश में या पृथ्वी में हो तो उसको ईश्वर ला हाजिर करेगा। निस्संदेह अल्लाह बारीक जानने वाला है। (१६) बेटा नमाज पढ़ाकर और भली बात सिखला और बुरी बातों से मनाकर और जो कुछ तुझ पर आ पड़े उसे झेल निस्संदेह यह एक बड़ा काम है। (१७) और लोगों से बेरुखी न करना पृथ्वी पर इतरा कर न चल। अल्लाह किसी इतरानेवाले को पसँद नहीं करता। (१८) और बीच की चाल चल। अपनी आवाज नीची कर। निस्संदेह बुरी से बुरी गधों का आवाज है *। (१९) रुकू २)

---

* कहते हैं कि साद-बिन-बक्कास की माँ ने तीन दिन खाना पीना न लिया ताकि साद डरकर इस्लाम धर्म को छोड़ दे। परन्तु साद ने कहा कि मेरी माँ सत्तर बार मरे तो भी मैं अपना ईमान न छोड़ूँगा। इस आयत का उतरना इसी घटना से सम्बन्धित बताया जाता है।

* दुनियां की बातों में माँ-बाप की आज्ञा का पालन करो।

* यानी गन्धों के समान ऊंचे स्वर में न बोल इस प्रकार की बोली बुरी समझी जाती है।

क्या तुमने नहीं देखा कि जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है सबको अल्लाह ने तुम्हारे काम में लगा रहा है और तुम पर अपनी जाहिरा और छिपो हुई इच्छा पूरी की है, और लोगों में से कुछ ऐसे भी हैं जो ईश्वर के बारे में झगड़ते हैं। न तो विद्या है और न आज्ञा और न रोशन किताब जो उनको सीधा रास्ता दिखाये। (२०) और जब इनसे कहा जाता है कि कुरान ईश्वर ने उतारा है हमने अपने बड़ों को पाया। भला अगर राक्षस इनके बड़ों को नरक के दण्ड की तरफ बुलाता रहा हो तो भी चलेंगे? (२१) और जो ईश्वर के सामने अपना सिर झुकाये और वह सत्कर्मी हो तो उसने मजबूत रस्सी पकड़ ली और हर काम का अन्त ईश्वर पर है। (२२) और जो इन्कारी है तो इसके इन्कार की वजह से तुझे उदास न होना चाहिए। हमारी तरफ लौटकर आना है। तो जो कुछ यह करते रहे हम इनको बतावेंगे अल्लाह जो दिलों में है जानता है। (२३) हम इनको थोड़े लाभ पहुंचाते रहेंगे, फिर इनको दुखदाई दण्ड की तरफ खींच बुलावेंगे। (२४) और अगर तुम लोगों से पूछा कि आकाश को और पृथ्वी का किसने पैदा किया, तो यही उत्तर देंगे कि ईश्वर ने, तो कहो सब खूबियाँ अल्लाह की हैं, मगर इनमें से अक्सर समझ नहीं रखते। (२५) अल्लाह ही का है जो कुछ अकाश और पृथ्वी में है। निस्संदेह अल्लाह बे परवाह और प्रशंसा के योग्य है। (२६) और पृथ्वी में जितने पेड़ हैं मगर सब कलम बन जायें और समुद्र उसके बान सात समुद्र और उसकी सहायता करें यानी स्याही के हो जावें तो भी ईश्वर की बातें तमाम न होवें। निस्संदेह अल्लाह बड़ा चमत्कार वाला है। (२७) तुम सबको पैदा करना और मरे पीछे जिलाना ऐसा ही है जैसा एक मनुष्य का पैदा करना और जिलाना। निस्सँदेह अल्लाह सुनता देखता है। (२८) तूने नहीं देखा कि अल्लाह रात को दिन में और दिन को रात में प्रवेश करता है और सूर्य चन्द्रमा को काम में लगा रखा है कि हरएक ठहरे हुए प्रण तक चलता है और जो कुछ भी तुम मनुष्य कर रहे हो अल्लाह को उसका संदेह है। (२९) यह इसलिए है कि अल्लाह ही

सच है और उसके बजाय जिनको तुम पुकारते हो झूठ है और अल्लाह बड़ा सबसे ऊपर है। (३०) (रुकू ३)

तूने नहीं देखा कि अल्लाह ही कृपा से नाव नदी में चलती है कि कुछ अपनी प्रकृति तुमको दिखाये। हरएक संतोषी और सच समझने-वाले के लिए निशानियाँ हैं। (३१) और जब लहरें नाव के चढ़ने वालों पर बादलों की तरह आ जाती है तो वह साफ दिल से अल्लाह की बन्दगी को बता कर उसी को पुकारने लगते हैं लेकिन जब ईश्वर उनको छुटकारा देकर पृथ्वी पर पहुंचा देता है तो उनमें से कुछ ही बीच की चाल पर कायम * रहते हैं और हमारी निशानियों से वही लोग इन्कारी रखते हैं जो वादे के झूठे और सच न समझने वाले हैं। (३२) मनुष्यो ! अपने पालनकर्ता का डर रखो और उस दिन से डरो कि न कोई पिता अपने पुत्र के काम आवेगा और न कोई पुत्र अपने पिता के काम आ सकेगा। ईश्वर का वादा प्रलय के दिन सच्चा है, तो संसार की जीवन के धोखे में न आजाना और न ईश्वर में राक्षस का धोखा खाना। (३३) अल्लाह ही के पास प्रलय का संदेश है और वही मेंह बरसाता और जो कुछ माताओं के पेट में है जानता है और कोई नहीं जानता कि कम क्या करेगा और कोई नहीं जानता कि वह किस पृथ्वी पर मरेगा। निस्संदेह अल्लाह ही जानने वाला खबर रखने वाला है। (३४) (रुकू ४)

* यानी कठिनाई के समय मुशरिक और मुसलमान दोनों ईश्वर ही को सहायता के लिए पुकारते हैं परन्तु आपत्ति टल जाने पर मुश-रिक ईश्वर को छोड़कर मूर्ति पूजने लगते है और मुसलमान हर हालत में ईश्वर ही को पूजते हैं।

सूरे सज्दह

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३० आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु दयावान है। अलिफ-लाम-मीम। (१) इसमें कुछ संदेह नहीं कि कुरान संसार के पालनकर्ता की ओर से उतरता है। (२) क्या करते हैं कि इनको इसने अपने दिल से बना लिया है। बल्कि यह ठीक तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से है ताकि तुम उन मनुष्यों को जिनके पास तुम से पहले कोई डराने वाला नहीं पहुंचा ईश्वर के दण्ड से डराओ। अजब नहीं कि यह मनुष्य राह पर आ जावें। (३) अल्लाह वह है जिसने ६ दिन में आकाश और पृथ्वी और उन चीजों को पैदा किया जो आकाश और पृथ्वी के बीच में हैं। फिर सिंहासन पर जा विराजा। उनके सिवाय न कोई तुम मनुष्यों का काम संभालने वाला है और न कोई सिफारशी है। क्या तुम नहीं सोचते (४) वह आकाश से पृथ्वी तक का बन्दोबस्त करता है। फिर तुम मनुष्यों की गिनती के अनुसार हजार वर्ष का समय का एक दिन होगा उस दिन तमाम इन्तजाम उसके सामने गुजरेगा। (५) वही छिपी और खुली सब बातों का जानने वाला बड़ा कृपालु है। (६) उसने जो चीज बनाई खूब ही बनाई और आदमी की पैदायश की मिट्टी से शुरू किया। (७) फिर से उसकी संतान बनाई। (८) फिर उसको ठीक किया और उसमें अपनी तरफ से जान डाली और तुम मनुष्यों के लिए कान, आखें और दिल बनाये। तुम बहुत ही थोड़ी भलाई मानते हो। (९) और कहते हैं कि जब हम मिट्टी में मिल जायँगे तो क्या फिर हम नये जन्म में आवेंगे बल्कि अपने पर पालनकर्ता के सामने हाजिर होने को नहीं मानते। (१०) कहो कि मौत यमदूत जो तुम पर तैनात हैं तुम्हारे जीवों को निकालते हैं फिर अपने पालनकर्ता की ओर लौटाये जाओगे (११) (रुकू १)

और अफसोस तुम अपराधियों को देखो कि अपने पालनकर्ता के सामने सिर झुकाये खड़े हैं और फरियाद कर रहे हैं ऐ हमारे पालनकर्ता हमारी आखें और हमारे कान खुलें, हमको फिर संसार में भेज कि हम भलाई करें, हमको विश्वास आया। (१२) हम चाहते तो हर आदमी को उसकी राह की सूझ देते मगर हमारी बात पूरी होती है कि भूत और आदमी सबसे हम नरक भर देंगे। (१३) तो जैसे तुम अपने इस दिन के पेश आने को भूल रहे थे आज उसका मजा चखो कि हमने तुमको भुला दिया और जैसे-जैसे तुम काम करते रहे उसके बदले में हमेशा का दण्ड लो। (१४) हमारी आयतों पर तो वही मनुष्य ईमान लाते है कि जब उनको वह याद दिलाई जाती हैं तो शीश नवा में गिर पड़ते और अपने पालनकर्ता की तारीफ के साथ पवित्र याद करने लगते हैं और वे घमन्ड नहीं करते। (१५) रात के समय उनकी करवटें बिछौना से तृप्त नहीं होतीं, डर और आशा से अपने पालनकर्ता से दुआयें माँगते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से ईश्वर की राह में व्यय करते हैं। (१६) तो कोई आदमी नहीं जानता कि मनुष्यों के नेक काम के बदले में कैसी-कैसी आंखों की ठन्डक उसके लिए छिपा रखी है। (१७) तो क्या ईमान लानेवाला उसके बराबर जो आज्ञाकारी है? बराबर नहीं हो सकते। (१८) सो जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये, उनके लिए रहने को उपवन होंगे, मेहमानदारी उनके शुभ कामों का बदला है जो करते रहे। (१९) और जो मनुष्य अवज्ञाकारी हुए उनका ठिकाना नरक होगा। जब उससे निकलना चाहेंगे उसी में लौटा दिये जायँगे और उनसे कहा जायगा कि जिस दण्ड नरक को तुम झुठलाते रहे अब उसी नरक का मजा चक्खो। (२०) और प्रलय की बड़ी दण्ड से पहले हम इनको संसार में भी दण्ड का मजा चखायेंगे। शायद यह मनुष्य फिरें। (२१) और उससे बढ़कर अन्यायी कौन है कि उसको उसके पालनकर्ता की बातों से शिक्षा दी जाय और वह उनसे मुँह फेर ले, हमको इन पापियों से बदला लेना है। (२२) (रुकू २)

और हमने मूसा को किताब तौरात दी थी तो ऐ पैगम्बर तुम भी उसके मिलने से सन्देह में मत करो और हमने उसको इसराईल के पुत्रों के लिए आज्ञा दी थी। (२३) और हमने इसराईल के पुत्रों में से पेशवा बनाए थे जो हमारी आज्ञा से आदेश दिया करते थे और वह सन्तोष किये बैठे रहे और हमारी आयतों का विश्वास रखते रहे। (२४) ऐ पैगम्बर इसराईल के पुत्र जिन-जिन बातों में फूट डालते रहे तुम्हारा पालनकर्ता प्रलय के दिन उनमें उनका निर्णय कर देगा। (२५) क्या लोगों को इसका नहीं हुआ कि हमने इनसे पहिले कितने गुट मार डाले यह मनुष्य उन्हीं के घरों में चलते फिरते हैं। इस लौट फेर में बहुत पते हैं तो क्या यह लोग सुनते नहीं (२६) और इन्होंने नहीं देखा कि हम पड़ी हुई पृथ्वी की तरफ पानी को निकाल देते हैं। फिर पानी द्वारा खेती को निकालते हैं और जिनमें से इनके चौपाये भी खाते हैं और आप भी खाते हैं तो क्या यह मनुष्य नहीं देखते। (२७) और कहते हैं कि यदि तुम सच्चे हो तो यह निर्णय कब होगा। (२८) ऐ पैगम्बर उत्तर तो कि जो लोग संसार में इन्कार करते रहे निर्णय के दिन उनका ईमान लाना उनके कुछ भी काम न आवेगा और न उनको समय मिलेगा। (२९) सो ऐ पैगम्बर तू उनका विचार छोड़ और मार्ग देख वे भी मार्ग देखते हैं। (३०) (रुकू ३)

सूरे अहजाब

मक्के में अवतरित इसमें ७३ आयतें और ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु और दयावान है। ऐ पैगम्बर ईश्वर से डरते हो और काफिरों और धोखेबाजों का कहा न मानों निःसंदेह अल्लाह जानकार चमत्कार वाला है। (१) और तेरे पालनकर्ता से जो आज्ञा आवे उसी पर चल अल्लाह तुम्हारे कामों से खबरदार है। (२) और अल्लाह पर भरोसा रक्खो अल्लाह काम का बनाने वाला काफी है। (३) अल्लाह ने किसी मनुष्य के सीने में दो दिल नहीं रखे और न तुम लोगों की स्त्रियों को जिनको तुम माँ कह बैठते हो तुम्हारी सच्ची माँ बनाया और न तुम्हारे मुंह बोले बेटे को तुम्हारा बेटा ठहराया यह तुम्हारे अपने मुंह की बात है और अल्लाह ठीक बात कहता है और वही मार्ग दिखाता है। (४) उन मुंह बोले पुत्रों को उनके सगे पिता के नाम से बुलाया करो। यही बात अल्लाह के न्याय से अधिक पास है। बस यदि तुमको उनके पिता मालूम न हों तो तुम्हारे जाति भई और तुम्हारे जाति मित्र हैं और तुमसे इसमें भूल चूक हो जाय तो इसमें तुम पर कुछ पाप नहीं। यदि हाँ दिल से इरादा करके ऐसा करो। और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) ईमान वालो की अपनी जान से जियादह नबी से लगाव है और उस पैगम्बर की स्त्रियाँ उनकी मातायें हैं नाते वाले एक दूसरे से सब ईमान वालों और देश छोड़ने वालों से जियादह लगाव रखते हैं यदि यह कि तुम अपने मित्रों के साथ अच्छा बर्ताव करना चाहो यह आज्ञा पुस्तक में लिखी हुई हैं। (६) और जब हमने पैगम्बरों से और मुझसे नूह से इब्राहीम से मूसा और मरियम के पुत्र ईसा से करार लिया और पक्का प्रण किया था। (७) प्रलय के दिन ईश्वर सच्चों से उनकी सत्यता का हाल पूछेगा और काफिरों को दुखदाई दण्ड तैयार है। (८) (रुकू १)

ऐ मुसलमानों अपने ऊपर अल्लाह की कृपा याद करो। जब तुम पर बद्र व ऊहद के युद्ध में फौजें चढ़ आईं तब हमने उन पर आँधी भेजी और फौज जो तुमको दिखलाई नहीं देती थी और जो तुम लोग करते हो अल्लाह देख रहा है। (६) जिस समय कि शत्रु तुम पर तुम्हारे ऊपर और नीचे की ओर से आये थे और डर के मारे तुम्हारी आँखें फिरी रह गईं थीं और दिल गलों तक आ गये थे और तुम ईश्वर की बावत तरह-तरह के विचार करने लगे थे। (१०) वहाँ मुसलमानों की जाँच की गई और वह खूब हिलाये गये। (११) और जब मुनाफिक और वह मनुष्य जिनके दिलों में रोग थे बोल उठे कि ईश्वर और उसके पैगम्बर ने जो हमसे प्रण किया था बिल्कुल धोखा था। (१२) और जब उनमें से एक गुठ कहने लगा कि मदीने के लोगों तुमसे इस स्थान के मुकाबिलों में नहीं ठहरा जायगा तो लौट चलो और उनमें से कुछ पैगम्बर से घर लौट जाने की आज्ञा माँगने लगे और कहने लगे कि हमारे घर खुले पड़े हैं। वह हरगिज खुले न पड़े थे उनका विचार केवल भागने का था। (१३) और यदि शहर में कोई किनारे से आकर घुसे फिर उन्हें दीन से बिचलाना चाहे तो यह लोग मान ही लेते और थोड़ी देर करते। (१४) हालाँकि पहिले ईश्वर से प्रण कर चुके थे कि हम शत्रु के सामने से पीठ न फेरेंगे और ईश्वर के वादे की पूंछ-ताँछ होकर रहेगी (१५) ऐ पैगम्बर कहो कि अगर तुम मरने या मारे जाने से भागते हो यह भागना तुम्हारे काम न आवेगा और यदि भाग कर बच भी गये तो संसार में कुछ रोज रह बस लोगों (१६) ऐ पैगम्बर कहो कि यदि ईश्वर तुम्हारे साथ बुराई करनी चाहे तो कौन ऐसा है जो तुमको उससे बचा सके तुम पर कृपा करना चाहे तो कौन उसको रोक सकता है और ईश्वर के सिवाय न तो अपना हिमायती ही पाओगे और न सहायक। (१७) ईश्वर तुम में से उनको खूब जानता है जो दूसरों को लड़ाई में शामिल होने से रोकते और अपने भाई बन्दों से कहते हैं कि लड़ाई से अलग होकर हमारे पास चले आओ और लड़ाई में हाजिर नहीं होते यदि थोड़ी देर के लिये। (१८)

धोखा रखते हैं तुम्हारी तरफ से तो जब डर का समय आवे तो तू उनको देखेगा कि तेरी तरफ ताकते हैं और उनकी आँखें ऐसी फिरती हैं जैसी किसी पर मौत की वेहोशी हो। फिर जब डर दूर हो जाता है तो माल लूट पर गिरे पड़ते हैं और चढ़-चढ़कर तेज जबानों से तुम पर ताने मारते हैं यह लोग ईमान नहीं लाये तो अल्लाह ने काम अकार्थ कर दिये और अल्लाह के पास आसान है। (१९) विचार कर रहे हैं कि यह लश्कर नहीं गये और अगर शत्रुओं के लश्कर आजायें तो यह मनुष्य चाहें कि देहात में निकल जायं और उनका संदेह पूछते हैं और अगर यह मनुष्य तुम में होते हैं तो बहुत ही कम लड़ते हैं।(२०) (रुकू २)

तुम्हारे लिये पैगम्बर की चाल सीखनी भली थी। उसके लिये जो अल्लाह और प्रलय के दिन से डरते थे और बहुत-बहुत ईश्वर की याद किया करते थे। (२१) और जब मुसलमानों ने शत्रुओं के गिरोहों को देखा तो बोल उठे कि यह तो वही है जो ईश्वर और उसके पैगम्बर ने हमें पहिले से बता रक्खा था और अल्लाह और रसूल ने सच कहा था और उससे मनुष्यों का ईमान और भी जियादह हो गया। (२२) ईमान वालों में कितने मर्द हैं कि अल्लाह से जो उन्होंने बचन कर लिया था उसे सच कर दिखाया। तो उनमें वह भी थे जो काम पूरा कर चुके और उनमें ऐसे भी हैं कि इन्तज़ार हैं और वह कुछ भी नहीं बदले। (२३) तो अल्लाह सच्चों को सच का बदला दे और मुनाफिकों को चाहे दण्ड दे या उनकी क्षमा कबूल करले निस्सन्देह अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (२४) और ईश्वर ने काफिरों को हटा दिया गुस्से में उनको कुछ भी लाभ न पहुंचा और ईश्वर ने मुसलमानों को लड़ने की नौबत न आने दी अल्लाह बलवान जीतने वाला है। (२५) और किताब वालों में से जो मनुष्य यानी यहूदी मुशरकीन के सहायक हुए थे ईश्वर ने उनको गढ़ियों से नीचे उतार दिया और उनके दिलों में ऐसी धाक बैठा दी कि तुम कितनों को जान से मारने लगे और कितनों

को बन्दी करने लगे। (२६) और उनकी पृथ्वी और उनके घरों और उनके धन का और उस जमीन का जिसमें तुमने कदम तक नहीं रक्खा था तुमको मालिक कर दिया और अल्लाह हर वस्तु पर सर्व शक्तिमान है। (२७) (रुकू ३)

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियों से कह दो कि अगर तुम संसार का जीना या यहाँ की रौनक चाहती हो तो मैं तुम्हें दिला कर अच्छी तरह से बिदा कर दूं। (२८) और यदि तुम ईश्वर और उसके पैगम्बर और प्रलय के घर को चाहने वाले हो तो तुम में से जो नेकी पर हैं उनके लिये ईश्वर ने बड़े फल तैयार कर रक्खे हैं। (२९) ऐ पैगम्बर की स्त्रियों तुम में से जो कोई प्रयत्न अनाचार करेगी उसके लिये दोहरा दण्ड दिया जायगा और अल्लाह के निकट यह मालूम बात है। (३०)

बाईसवाँ पारा (वमैं यक्नूत)

और जो तुममें से अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञाकारिणी होगी और भले काम करेगी हम उसको उसका दुगुना फल देंगे और हमने उसके लिये प्रतिष्ठा की रोजी तैयार कर रक्खी है। (३१) ऐ पैगम्बर की स्त्रियो तुम और स्त्रियों की तरह नहीं हो। यदि तुमको संयमी मंजूर है तो दबी जबान के साथ बात न किया करो। कि ऐसा करोगी तो जिसके दिल में किसी तरह का बुराई है वह तुमसे किसी तरह की आशा पैदा कर लेगा और तुम ठीक बात कहो। (३२) और अपने घरों में ठहरो और अपना बनाव शृंगार वगैरह न दिखाती फिरो। जैसा पहले नादानी के समय में दिखाने का दस्तूर था और नमाज पढ़ो और दान दो और अल्लाह और उसके पैगम्बर की आज्ञा

मानों घरवालियों ईश्वर यही चाहता है कि तुमसे अपवित्रता दूर करे और तुमको खूब पवित्र बनाये। (३३) और तुम्हारे घरों में जो ईश्वर की बातें और अकलमन्दी की बातें पढ़ी जाती हैं उनको याद रक्खो क्योंकि अल्लाह भेद का जानने वाला जानकार है। (३४) (रुकू ४)

निस्सन्देह मुसलमान पुरुष और मुसलमान स्त्रियाँ और ईमान वाले पुरुष और ईमान वाली स्त्रियाँ और आज्ञाकारी पुरुष और आज्ञाकारी औरतें और सच्चे पुरुष और सच्ची औरतें और सन्तोषी पुरुष और सन्तोखी औरतें और गिड़गिड़ाने वाले पुरुष और गिड़गिड़ाने वाली स्त्रियाँ और पुण्य करने वाले पुरुष और पुण्य करने वाली स्त्रियाँ और रोजा व्रत रखने वाले पुरुष और रोजा रखने वाली स्त्रियाँ और विषय इन्द्रिय के थामनेवाले पुरुप और विषय इन्द्रिय को थामनेवाले स्त्रियां और अवसर याद रखने वाली स्त्रियाँ इन सब के लिये अल्लाह ने पापों की क्षमा और बड़े फल तैयार कर रखे हैं। (३५) जब और अल्लाह और उसका पैगम्बर कोई बात ठहरा दे तो किसी मुसलमान स्त्री और पुरुष को अपने काम का अधिकार नहीं है जैनब और उसके भाई अब्दुल्ला का किस्सा है जिन्होंने हजरत की आदेश को नामंजूर किया था कि जैद सेवक को विवाह के लिये नामंजूर करते थे और जिसने अल्लाह और उनके पैगम्बर की आज्ञा नहीं माना वह जाहिरा राह भूल गया यह सुनकर जैनब ने लाचारी से ज़ैद के साथ विवाह किया (३६) और जब तू ऐ मोहम्मद उस जैद से जिस पर अल्लाह ने और तू ने कृपा की कहता था *कि तू अपनी स्त्री को अपने पास रहने दे और अल्लाह से

---

* जैद एक सेवक को मुहम्मद साहब ने मोल लेकर आजाद कर दिया था और उनकी जैनब के साथ कर दी थी। कुरैश दासों के साथ विवाह करने को बुरा समझते थे। विवाह होने के बाद जैनब अपने पति को दास होने का ताना दे बैठती थी इस पर जैद ने उसको तलाक

डर और तू अपने दिल में उस बात को छिपाता था अल्लाह जिसे प्रत्यक्ष किया चाहता था। और तू आदमियों से डरता था हालाँकि तुझे अल्लाह से डरना चाहिये था। बस जब जैद ने तलाक दी हमने मुहम्मद तेरा विवाह उस स्त्री से कर दिया ताकि मुसलमानों को अपने मुंह बनाये बेटों की स्त्रियों से विवाह कर लेना पाप न रहे। जबकि उसको छोड़दें और उससे अपना सम्बन्ध तोड़ दै और वह ईश्वर ही की आज्ञा थी। (३७) अल्लाह ने पैगम्बर के लिए जो बात ठहरा दी हो उसमें पैगम्बर के लिए कुछ हर्ज नहीं। पैगम्बर पहिले हो चुके हैं उनमें ईश्वर का यही नियम रहा है और अल्लाह की आज्ञा हो चुकी है। (३८) वे ईश्वर के संदेह पहुंचाते और ईश्वर से डरते थे और ईश्वर के अलावा किसी से नहीं डरते थे और हिसाब के लिये अल्लाह काफी है। (३९) मुहम्मद तुममें से किसी पुरुष का पिता नहीं है तो जैद का क्यों है वह तो अल्लाह का पैगम्बर है और पैगम्बर पर मुहर है और अल्लाह सब चीजों से जानकार है। (४०) (रुकू ५)

मुसलमानों ईश्वर को ही याद किया करो (४१) और सुबह व शाम उसी की पवित्रता याद करते रहो (४२) वही है जो तुम पर दया भेजता है और इसके फरिश्ते भी ताकि तुमको अन्धेरों से निकाल

देना चाहा। मुहम्मद साहब चाहते थे कि यह सम्बन्ध बना रहे इसलिये दोनों को समझाते बुझाते थे परन्तु अन्त में टूट कर ही रहा और जनब के साथ मुहम्मद साहब ने स्वयं विवाह कर लिया क्योंकि उस समय जैनब का विवाह और किसी आजाद के साथ नहीं हो सकता था। इस सम्बन्ध का लक्ष्य अरब की दो बुरी रीतियों को तोड़ना था एक यह कि आजाद हुए सेवक की छोड़ी हुई स्त्री को घृणा की दृष्टि से देखना दूसरे मुंह बोले बेटों को सगे बेटों ही जैसा हर बात में समझना।

कर रोशनी में लावे और ईश्वर ईमान वालों पर कृपालु है। (४३) जिस दिन यह लोग ईश्वर से मिलेंगे उसका सलाम उनकी सलामी होगी और ईश्वर ने उनके लिये इज्जत का फल तैयार कर रखा है। (४४) पेगम्बर हमने तुमको साक्षी देने वाला और डराने वाला भेजा है। (४५) और अल्लाह की आज्ञा से उनकी तरफ बुलाने वाला और रोशन चिराग बनाकर भेजा है। (४६) और ईमानवालों को इसकी शुभ-सन्देश सुना दो कि उन पर अल्लाह की बड़ी कृपा है। (४७) और काफिरों और धोखेबाजों का कहा न मान और उसके दुख देने की चिन्ता न कर और ईश्वर पर भरोसा रख और ईश्वर का बनाने वाला काफी है। (४८) मुसलमानों जब तुम मुसलमान औरतों के साथ अपना विवाह करो फिर उनको हाथ लगाने से तलाक दे दो। तो इद्दत में बिठाने का तुमको उन पर कोई अधिकार नहीं कि इद्दत की गिन्ती पूरी कराने लगो। सो उनको कुछ दे दिलाकर अच्छे नियम के साथ बिदा कर दो। (४९) ऐ पैगम्बर हमने तेरी वह पत्नी तुझ पर हलाल कीं जि?के मिहर तू दे चुका है और लौंडियाँ जिन्हें अल्लाह तेरी ओर लाया और तेरे चचा की बेटियाँ और तेरी बुआ की बेटियाँ और तेरे मामा की बेटियों और मौसियों की बेटियाँ जो तेरे साथ देश त्याग कर आई हैं और वह मुसलमान औरतें जिन्होने अपने को पैगम्बर को दे दिया वे मिहर निकाह में आना चाहें बशर्ते कि पैगम्बर भी उनके साथ निकाह करना चाहे यह आज्ञा खास तेरे ही लिए है सब मुसलमानों के लिए नहीं। हमने जो मुसलमानों पर उनकी पत्नियों और उनके हाथ के माल यानी लौंडियों का अधिकार मिहर ठहरा दिया है सबको मालूम है इसलिये कि तुम पर किसी तरह की तंगी न रहे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५०) अपनी पत्नियों में से जिसको चाहो अलग रखो जिसको चाहो अपने पास रखो और जिनको तुमने अलग कर दिया था उनमें से किसी को फिर बुलवालो तो तुम पर कोई पाप नहीं। यह इसलिए कि बहुधा तुम्हारी पत्नियों की आँखें ठण्डी रहें और

उदास न हो और जो तुम उनको दे दो उसे लेकर सब की सब राजी रहें और जो कुछ तुम लोगों के दिलों में है अल्लाह जानता है और अल्लाह जानने वाला है। (५१) ऐ पैगम्बर इस समय के बाद से दूसरी औरतें तुमको ठीक नहीं और न यह ठीक हैं कि उनको बदल कर दूसरी पत्नियाँ कर लो अगर्चे उनकी खूबसूरती तुमको अच्छी ही क्यों न लगे मगर पत्नियाँ और भी आ सकती हैं और अल्लाह हर चीज का देखने वाला है। (५२) (रुकू ६)

मुसलमानों! पैगम्बर के घरों में न जाया करो मगर यह कि तुमको के लिए आने की आज्ञा दी जावे कि तुमको खाना तैयार होने की राह न देखनी पड़े मगर जब तुम बुलाये जाओ तब आओ इससे पैगम्बर को को दुख होता है और पैगम्बर तुमसे शर्माते हैं और अल्लाह ठीक बात बताने में शर्म नहीं करता और जब पैगम्बर की पत्नियों से तुम्हें कोई वस्तु माँगनी हो तो पर्दे के बाहर खड़े रहकर उनसे माँगो। इससे तुम्हारे और उनकी स्त्रियों के दिल पवित्र रहेंगे और तुम्हें योग्य नहीं है कि ईश्वर के पैगम्बर को दुःख दो और न यह योग्य है कि पैगम्बर के बाद कभी उनकी स्त्रियों से विवाह करो। ईश्वर के यहाँ यह बड़ा पाप है। (५३) तुम किसी वस्तु को प्रत्यक्ष करो या छिपाओ अल्लाह सब जानता है। (५४) तुम पैगम्बर की पत्नियों पर अपने पिता के अपने पुत्रों के अपने भाइयों के अपने भतीजों के और अपने भानजों के और अपनी औरतों और अपने दासी दासों के सामने होने में कुछ पाप नहीं और अल्लाह से डरती रहो अल्लाह हर चीज का साक्षी है। (५५) अल्लाह और उसके देवदूत पैगम्बर पर कृपा भेजते रहते सो मुसलमानों तुम भी पैगम्बर पर कृपा और सलाम भेजते रहो। (५६) जो लोग अतलाह और पैगम्बर को दुःख देते हैं उन पर संसार और प्रलय में अल्लाह की फटकार है और ईश्वर ने उनके लिए निन्दनीय दण्ड तैयार कर रखा है। (५७) और लोग मुसलमान मनुष्यों और मुसलमान स्त्रियों को बिना अपराध सताते हैं लफंट लगाते

हैं तो उन्होंने झूठे का और जाहिरा पाप का बोझ उठाया। (५८) (रुकू ७)

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियों और अपनी पुत्रियों और मुसलमानों की स्त्रियों से कह दो कि अपनी चादरों के घूंघट निकल लिया करें। इससे बहुधा पहचान पड़ेगी कि सुयोग्य हैं और कोई छोड़ेगा नहीं मदीने में बिला घूंघट वाली स्त्रियों को झगड़ालु मनुष्य छेड़ते थे और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५९) मुनाफिक और वह लोग जिनकी नियतें बुरी और जो लोग मदीन में झूठी खबरें फैलाया करते हैं अगर बाज न आवेंगे तो हम तुमको उन पर उभार देंगे। फिर मदीने में तुम्हारे पड़ोस में कुछ दिन के सिवाय ठहरने न पावेंगे। (६०) इनका यह हाल हुआ कि जहाँ पाए गए पकड़े गए और जान से मारे गए। (६१) जो लोग पहले हो चुके हैं उनमें ईश्वर का दस्तूर रहा है ऐ पैगम्बर तुम ईश्वर के दस्तूर में कभी बदल न पाओगे। (६२) ऐ पैगम्बर लोग तुमसे प्रलय का हाल मालूम करते हैं तुम कहो कि प्रलय की सूचना तो अल्लाह ही के पास है और तुम क्या जानों शायद प्रलय निकट आ गई। (६३) निस्सन्देह अल्लाह ने काफिरों को फटकार दिया है और उनके लिये दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (६४) उसमें हमेशा रहेंगे न हिमायती पावेंगे और न सहायक। (६५) यह वह दिन होगा जबकि इनके मुंह आग में उलट-पलट किये जावेंगे और कहेंगे दुःख हमने अल्लाह का और पैगम्बर का कहा माना होता। (६६) और कहेंगे कि हे हमारे पालनकर्ता हमने अपने सरदारों और अपने बड़ों का कहा माना फिर उन्होंने हमको राह से भटका दिया। (६७) तो ऐ हमारे पालनकर्ता उनको दुहरा दण्ड दे और उन पर बड़ी लानत कर। (६८) (रुकू ८)

मुसलमानों! उन लोगों जैसे न बनो जिन्होंने मूसा को दुख दिया फिर अल्लाह ने उनके कहे से उसे बेऐब दिखलाया और वह अल्लाह के

नजदीक इज्जतदार था। (६९) मुसलमानों अल्लाह से डरते रहो और बात सीधी कहो। (७०) वह तुमको तुम्हारे कर्म सम्भाल देगा और तुम्हारे पाप तुमको क्षमा करेगा और जिसमे अल्लाह और पैगम्बर का कहा माना उसने बड़ी सफलता पाई। (७१) हमने वह अमानत आकाश पृथ्वी और पहाड़ों के सामने पेश की थी उन्होंने उसके उठाने से इन्कार किया और उससे डर गये और आदमी ने उसे उठा लिया वह बड़ा अत्याचारी नादान था। (७२) ताकि अल्लाह मुनाफिक कपटी मनुष्यों और कपटी औरतों और मुशरिक पुरुष और मुशरिक औरतों को दण्ड दे और मुसलमान मनुष्यों और मुसलमान औरतों पर अपनी कृपा करे अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु। (७३) (रुकू ९)

सूरे सबा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५४ आयतें, ६ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। सब खूबी अल्लाह की है जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी पर है। उसी का है और परलोक में उसी की प्रशंसा है और वही चमत्कार वाला खबरदार है। (१) जो कुछ पृथ्वी में पैदा होता है जैसे बीज और जो कुछ उससे निकलता है जैसे बनपस्ती और जो कुछ आकाश से उतरता जैसे पानी और जो कुछ उसमें चढ़ कर जाता है जैसे भाप, वह जानता है और वही कृपालु क्षमा करने वाला है। (२) और इनकारी कहने लगे कि हमको वह घड़ी न आवेगी। छिपी बातों के जानने वाले अपने पालनकर्ता की सौगन्ध जरूर आवेगी कुछ भी आकाश और पृथ्वी में उससे छिपा नहीं और कण से छोटी और कण से बड़ी जितनो चीजें हैं सब रोशन किताब

में लिखी हुई हैं। (३) ताकि ईमान वालों को उनका बदला दे। यही वह मनुष्य हैं जिनके लिए बख्शीश और इज्जत की रोजी है। (४) और जो मनुष्य हमारी आयतों के हराने में करते रहे उन्हें दुःखदाई दण्ड है। (५) और जिनको समझ दी गई है वह जानते हैं कि तेरे पालनकर्ता की तरफ से तुझ पर उतारा है वही सच है और उस ईश्वर का मार्ग दिखलाता है। (६) और जो मनुष्य इन्कार करने वाले हैं वह कहते हैं कि कहो तो हम तुमको ऐसा आदमी मुहम्मद बतलावें जो तुमको सन्देह देगा कि जब तुम मरे पीछे बिलकुल टुकड़े-टुकड़े हो जाओगे तो तुमको फिर नये जन्म में आना होगा। (७) इस मनुष्य ने अल्लाह पर कैसा झूठ बाँधा है या इनको किसी तरह का जुनून है कोई नहीं परन्तु जो प्रलय का विश्वास नहीं रखते दुख में और गल्ती में दूर पड़े हैं। (८) तो क्या इन मनुष्यों ने आकाश और पृथ्वी की तरफ जो इनके आगे और इनके पीछे हैं नहीं देखा। अगर हम चाहें तो इनको पृथ्वी में धंसा दें या इन पर आकाश के टुकड़े गिरादें। इनमें हरेक मनुष्य को जो रुजू रखता है पता है। (९) (रुकू १)

और हमने दाऊद को अपनी तरफ से बड़ाई दी। पहाड़ों और परिन्दों दाऊद के साथ ध्यान से पढ़ो और उस दाऊद के लिये हमने लोहे को मुलायम कर दिया (१०) कि पूरी जिरह बख्तर बनाये और कड़ियो के जोड़ने में अन्दाजे का ध्यान रखे और तुम सब भले काम करो। जो कुछ तुम करते हो मै देख रहा हूं। (११) और हवा को सुलेमान के अधिकार में कर दिया था कि उसकी सुबह की मंजिल एक महीना भर की होती और हमने उनके लिये ताँबे का चश्मा बहा दिया और भूतों में से वह भूत जो उसके पालनकर्ता की आज्ञा से उसके सामने काम करते थे और इनमें से जो कोई हमारी आज्ञा से फिरेगा हम उसको नरक का दण्ड देंगे। (१२) और वह भूत उसके लिये जो वह चाहता बनाते थे किले तस्वीरें और प्याले जैसे तालाब और देंगे जो एक ही जगह रखें रहें। ऐ दाऊद के घर वालों धन्यवाद करो और

हमारे मनुष्यों में थोड़े कृपालु हैं*। (१३) फिर जब हमने सुलेमान पर मौत भेजी तो भूतों को उनके मारने का पता न बताया। मगर घुनके कीड़े ने जो सुलेमान की लाठी को खाता था यानी जब वह गिर पड़ी तो भूतों ने जाना कि अगर हम छिपी हुई बातें जानते होते निन्दनीय न रहते। (१४) सबा के मनुष्यों के लिये उनकी बस्ती में एक निशानी थी। दो बाग दाहिने और बायें थे अपने पालनकर्ता की रोजी खाओ और उसको धन्यवाद दो अच्छे शहर और क्षमा करने वाला पालनकर्ता है (१५) इस पर उन्होंने कुछ परवाह न की तो हमने उन पर बड़े जोर का नाला छोड़ दिया और हमने उनके दो बागों के बदले में और दो बाग दिये जिनमें फल कसैले और झाऊ थोड़े से बेर थे। (१६) यह हमने उनको उनकी कृतघ्नता का बदला दिया और हम कृतघ्नों को ऐसे बदला दिया करते हैं। (१७) और हमने सबा के मनुष्यों और उन देहात के बीच जिनमें हमने बरकत दे रखी थी और बहुत से गाँव आबाद कर रखे थे जो दिखाई देते थे और उनमें चलने की मन्जिलें ठहरा दीं कि वे बेखटके इनमें रातों और दिनों को चलो फिरो (१८) फिर कहने लगे ऐ पालनकर्ता हमारी मन्जिलों को दूर-दूर कर दे। इन मनुष्यों ने अपने ऊपर आप अत्याचार किया। फिर हमनें उनके हिस्से बना दिये और टुकड़े-टुकड़े कर दिये। हर ठहरने वाले संतोषी और सच समझने वालों के लिये इसमें पते हैं! (१९) और इब्लीस ने अपनी अटकल उन पर सच कर दिखाई। उन्होंने उसी की राह पकड़ी मगर थोड़े से ईमान वालों ने उसकी राह न पकड़ी (२०) और राक्षस का

---

* दाऊद के समय में मूर्तियाँ बनाना मना नहीं था। यह मूर्तियाँ महापुरुषों की होती थीं जैसे पैगम्बर और सन्त आदि। उनको मसजिदों में रखा जाता था ताकि लोग उनको देख कर ईश्वर को याद करें। अरब वाले उनको स्वयं पूजने लगे इसलिये इस्लाम में जीवधारी वस्तुओं की मूर्तियाँ बनाना रोक दिया गया।

उन पर कुछ जोर न था और मतलब असली यह था कि जो मनुष्य परलोक पर विश्वास रखते हैं हम उनको उन मनुष्यों से मालूम कर लें जो उसकी तरफ से सन्देह में हैं और तेरा पालनकर्ता हर चीज का देखने वाला है। (२१) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर कहो कि ईश्वर के सिवाय जिनको तुम समझते हो उनको बुलाओ कि वह न तो आकाश ही में जर्रा भर अधिकार रखते हैं और न पृथ्वी में और न आकाश पृथ्वी में इनका कुछ साझा है और न इसमें कोई सहायक (२२) और के यहां इनकी सिफारिश काम नहीं आती मगर उसके काम आयेगी जिसकी बाबत सिफारिश की आज्ञा दे, यहाँ तक जब उनके दिलों से घबराहट उठ जावे तब तुम्हारे पालन-कर्ता ने क्या बतलाया। वे कहेंगे जो वाजिबी है और वही सबसे ऊपर बड़ा है। (२३) ऐ पैगम्बर इन लोगों से पूछो कि तुमको आकाश और पृथ्वी से कौन रोजी देता है कहो कि अल्लाह और मैं हूं या तुम हो एक न एक गुट तो अवश्य सच मार्ग पर है और दूसरी खुली हुई गुमराही में। (२४) ऐ पैगम्बर कहो कि हमारे पापों की पूछ न तुझसे और न तेरे पापों की पूछ-ताछ मुझसे होगी। (२५) और कह दो कि हमारा पालनकर्ता प्रलय के दिन हमको जमा करेगा फिर हम में न्याय के साथ निर्णय कर देगा और वह बड़ा जानकार न्यायी है। (२६) ऐ पैगम्बर कहो जिसको तुम शरीक बनाकर ईश्वर के साथ मिलाते हो उन्हें मुझे दिखलाओ। कोई उसका शरीका नहीं बल्कि वही अल्लाह जबरदस्त चमत्कार वाला है। (२७) और हमने तुमको सारे संसार के मनुष्यों की तरफ भेजा है कि उनको शुभसन्देश सुनाओ और डराओ मगर अक्सर मनुष्य नहीं समझते। (२८) और पूछते अगर तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का प्रण कब पूरा होगा। (२९) कहो कि तुम्हारे साथ जिस दिन का प्रण है तुम न उससे एक घड़ी पीछे रह सकोगे और न आगे बढ़ सकोगे (३०) (रुकू ३)

और इन्कारी कहने लगे कि हम इस कुरान को कभी न मानेंगे और न इससे पहली किताबों को मानेंगे और अफसोस तुम देखो जब प्रलय के दिन यह अत्याचार अपने पालनकर्ता के सामने खड़े किये जायंगे एक की बात एक रद्द कर रहा होगा कि छोटे दर्जे के मनुष्य बड़े मनुष्यों से कहेंगे कि अगर तुम न होते तो हम जरूर ईमान लाते (३१) इस पर बड़े मनुष्य कमजोरों से कहेंगे जब तुम्हारे पास ईश्वर की ओर से आज्ञा आई तो क्या उसके आये पीछे हमने तुमको रोका बल्कि तुम अपराधी थे। (३२) और कमजोर लोग बड़े लोगों से कहेंगे रात दिन के तुम्हारे झूठ ने हमें भुला दिया। जब हम से कहते थे कि हम अल्लाह को न मानें और उसके साथ दूसरे पूजित ठहरावें और जब यह मनुष्य दण्ड को देखेंगे तो छिपे-छिपे पछतायेंगे और हम काफिरों की गर्दनों में तौक डलवा देंगे। जैसे-जैसे काम ये लोग करते रहे हैं उन्हीं का फल पावेंगे। (३३) और हमने जिस बस्ती में डराने वाला भेजा वहाँ के धनी मनुष्यों ने कहा कि जो कुछ तुम लाये हो हम उसे नहीं मानते। (३४) और इसी प्रकार ये मक्के के काफिर भी मुसलमानों से कहते हैं कि हम धन और सन्तान में अधिक हैं और हम को दण्ड न होगा। (३५) ऐ पैगम्बर इन लोगो से कहो कि मेरा पालनकर्ता जिसकी रोजी चाहता है अधिक कर देता है और लोग नहीं जानते। (३६) (रुकू ४)

और तुम्हारे धन और सन्तान ऐसी नहीं कि तुमको मारा नगीची बनावे मगर जो ईमान लाया और उसने नेक काम किये ऐसे मनुष्यों लिये उनके काम का दुगना बदला है और वह बालाखानों में भरोसे से बैठे होंगे। (३७) और जो लोग हमारी आयतों के हराने का प्रलय करते हैं वह दण्ड में रखे जाँयगे। (३८) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि मेरा पालनकर्ता अपने सेवकों में से जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है और तुम कुछ भी ईश्वर के मार्ग में खर्च करो वह उसका बदला देगा और वह

सब रोजी देने वालों से अच्छा है। (३९) और ईश्वर सब मनुष्यों को जमा किये पीछे फरिश्तों से पूछेगा कि क्या यह तुम्हारी ही पूजा किया करते थे। (४०) वह बोले तू पवित्र है हमको तुझसे काम है इनसे नहीं। परन्तु यह लोग भूतों की पूजा करते थे इनमें अक्सर भूतों पर विश्वास रखते हैं। (४१) सो आज तुम में एक दूसरे के भले-बुरे का मालिक नहीं और हम उन पापियों से कहेंगे कि जिस आग को तुम झुठलाते थे उसका आनन्द लो। (४२) और जब हमारी खुली-खुली आयतें उनके सामने पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहते हैं कि यह मुहम्मद एक आदमी इसका मतलब यह है कि जिनको तुम्हारे बाप दादा पूजा करते थे तुमको उनसे रोक दे और कुरान के बारे में कहते हैं कि यह तो बस निरा झूठ है। और इसका अपना बनाया हुआ है और जो लोग इन्कार करने वाले हैं जब उनके पास सच्ची बात आई तो वह उसके लिए कहने लगे कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (४३) और हमने इनको किताबें नहीं दीं कि उनको पढ़ते हों और न तुमसे पहले इनकी तरफ कोई डराने वाला भेजा। (४४) और इनसे अगले मनुष्यों ने पैगम्बरों को झुठलाया था और जो हमने उन लोगों को दे रखा था यह मनुष्य तो अभी उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे। फिर उन्होंने पैगम्बरों को झुठलाया। तो हमारा क्या बिगाड़ हुआ। (४५) (रुकू ५)

हे पैगम्बर तुम इनसे कहो कि मैं तुमको एक शिक्षा करता हूं कि अल्लाह के काम के लिये दो-दो और एक-एक खड़े हों। फिर सोचो कि तुम्हारे मित्र मुहम्मद को किसी तरह का घमण्ड तो नहीं है। यह तो तुमको आगे आने वाली एक बड़ी आफत से डराने वाला है। (४६) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि मैं तुमसे कुछ मजदूरी नहीं चाहता मेरी मजदूरी तो हर चीज का गवाह है (४७) ऐ पैगम्बर कहो कि मेरा पालनकर्ता सच्चा चला रहा है और वह छिपी हुई बातों को खूब जानता है। (४८) ऐ पैगम्बर कहो कि सच्ची बात आ पहुंची और झूँठ से न तो कभी कुछ होता है और न आगे होगा। (४९) ऐ

पैगम्बर कहो कि मैं गलती पर हूं तो मेरी गलती मेरे ही ऊपर है और अगर सच्चे मार्ग हूं तो इस ईश्वरीय सन्देश के कारण से जिसे मेरा पालनकर्ता ने मेरी तरफ भेजता है वह सुनने वाला पास है।(५०) और ऐ पैगम्बर कभी तू देख जब यह घबड़ाये हुए फिर भागकर नहीं बचेंगे और पास के पास से पकड़ जायंगे। (५१) और कहेंगे हम उस पर ईमान लाये और इतनी दूर जगह से कैसे इनके हाथ ईमान आ सकता है। (५२) और पहले इससे इन्कार करते रहे और वे देखे-भाले दूर ही से अटकलें तुक्के चलाते रहे। (५३) और इनमें और इनकी आशाओं में एक अटकाव पड़ गया, जैसा पहले उनके पूर्वजों के साथ किया गया कि वे मनुष्य धोखे में थे। (५४) (रुकू ६)

सूरे फातिर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हर तरफ की प्रशंसा ईश्वर ही को है जिसने आकाश और पृथ्वी बना निकाले। उसी ने देवदूतों को दूत बनाया जिनके दो-दो और तीन-तीन और चार-चार है। पैदाइश में जो चाहता है ज्यादा कर देता है। निस्सन्देह अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (१) अल्लाह जो मनुष्यों पर कृपा खोले तो कोई उसको बन्द करने वाला नहीं और बन्द कर ले तो उसके पीछे कोई उसको जारी करने वाला नहीं, और वह बड़ा चमत्कार वाला है। (२) ऐ मनुष्यों! अल्लाह की भलाइयाँ जो तुम पर हैं, उनको याद करो। अल्लाह के सिवाय क्या कोई पैदा करने वाला है जो आकाश-पृथ्वी से तुमको रोजी दे। उसके सिवाय कौन पूजित है? फिर

बहके चले जा रहे हो। (३) और ऐ पैगम्बर ! अगर तुमको झुठलायें तो तुमसे पहले भी पैगम्बर झुठलाये जा चुके हैं और सब काम अल्लाह ही की तरफ फिरते हैं। (४) मनुष्यों ! अल्लाह का प्रण प्रलय का सच्चा है तो ऐसा न हो कि संसार की जीवन तुमको धोखे में डाल दे और ऐसा न हो कि राक्षस धोखेबाज ईश्वर के बारे में तुमको धोखा दे। (५) राक्षस तुम्हारा शत्रु है, सो उसको शत्रु ही समझे रहो। वह अपने मनुष्यों को अपनी ओर केवल इसलिए बुलाता है कि वह लोग नरकवासियों में हों। (६) जो मनुष्य इनकार करने वाले हैं उनको कठोर दण्ड होना है। जो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए दान और बड़ा फल है। (७) (रुकू १)

तो क्या वह जिसको उसके कुकर्मों को सुकर्म करके दिखाया गया और वह उसको अच्छा समझता अच्छे मनुष्यों की भाँति हो सकता है ? नहीं कदापि नहीं अल्लाह जिसको चाहता है गुमराह करता है और जिसको चाहता है, सीधा मार्ग दिखाता है, तो इन मनुष्यों पर अफसोस करके तुम्हारी जान न जाती रहे। जैसे-जैसे कर्म यह लोग कर रहे हैं अल्लाह उनसे जानकार है। (८) अल्लाह है हवायें चलाता है, धिर हवायें बादल को उभारती हैं, फिर बादल को दूसरे शहर की तरफ हाँका। फिर हमने मेंह के द्वारा पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवन किया है। इसी तरह पुरुषों को उठाना है। (९) जो इज्जत का चाहने वाला हो सब इज्जत ईश्वर को है। अच्छी बातें उसी तक पहुंचती हैं और सुकर्म को ऊँचा करता है और जो लोग बुरी तदबीरें करते रहते हैं उनको सख्त सजा होगी और उनकी तदवीरें वहीं समाप्त हो जायंगी। (१०) और अल्लाह ही ने तुमको मिट्टी से उत्पन्न किया। फिर वीर्य से, फिर तुमको जोड़े-जोड़े बनाया। और न कोई स्त्री गर्भ रखती और न जनती है, वह सब अल्लाह की विद्या से है। और बड़ी आयु वाला जो आयु पाता है और जिसकी आयु घटती है, सब पुस्तक में है। यह अल्लाह पर आसान है। (११) और दो समुद्र एक तरह

के नहीं हैं। एक का पानी मीठा स्वादिष्ट और प्यास बुझाने वाला हैं और एक का पानी खारी कड़वा है, और तुम दोनों में से मछलियों का शिकार करके ताजा गोश्त खाते और निकालते हो जिनको पहनते हो। और तू देखता है कि नाव नदियों में पानी को फाड़ती चली जाती हैं ताकि तुम ईश्वर की कृपा ढूंढो और तुम भलाई मानो। (१२) वह रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल कर देता है, और उसी ने सूर्य और चन्द्रमा वश में कर रखे हैं दोनों बंधे हुए समय पर चल रहे हैं। यही अल्लाह आपमा पालनकर्ता है, उसी का राज्य है और उसके सिवाय जिन पूजितों को तुम पुकारा करते हो वे जरा-सा अधिकार नहीं रखते। (१३) तुम उनको कितना ही बुलाओ वह तुम्हारे बुलाने को नहीं सुनेंगे और सुने भी तो तुम्हारी दुआ कबूल नहीं कर सकते और प्रलय के दिन तुम्हारे शरीक ठहराने से इन्कार करेंगे और जैसी खबर रखने वाला बतावेगा और कोई तुझे न बतावेगा। (१४) (रुकू २)

लोगों! तुम ईश्वर के मुहताज हो और अल्लाह असंख्य गुणों वाला है। (१५) वह चाहे तुमको ले जाय और नई सृष्टी ला बसाये। (१६) और यह अल्लाह को कठिन नहीं। (१७) और कोई आदमी किसी दूसरे का बोझ नहीं उठावेगा और अगर किसी पर पापों का बड़ा भारी बोझ हो और वह अपना बोझ बटाने के लिए किसी को बुलावे तो उसका जरा सा भी बोझ नही बटाया जायगा चाहे वह उसका सम्बन्धी क्यों न हो। ऐ पैगम्वर! तुम तो उन्हीं लोगों को डरा सकते हो जो बे देखे अपने पालनकर्ता से डरते और नमाज पढ़ते हैं और जो मनुष्य सुधरता हैं सो अपने ही लिए सुधरता है और अल्लाह की तरफ लौटकर जाना हैं। (१८) और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं। (१९) और न अँधेरा और न उजाला। (२०) और न छाया और न धूप। (२१) और न जीवित और न मृत बराबर हो सकते हैं। अल्लाह जिसको चाहता है सुनाता है और जो मनुष्य कब्रों में हैं तू उनको सुना नहीं सकता। (२२) और तू तो सिर्फ डरानेवाला है। (२३)

हमने तुमको शुभसंदेह सुनाने वाला और डरानेवाला बना कर भेजा है और कोई गुट ऐसा नहीं जिसमें कोई डरानेवाला न हो (२४) और जो वह तुझे झुठलाये तो इन से पहलों ने भी अपने पैगम्बरों को झुठलाया है और उनके पैगम्बर उनके पास खुले चमत्कार और छोटी किताबें और रोशन किताबें लेकर आये थे। (२५) फिर मैंने इन्कार करनेवालों को धर पकड़ा तो मेरे इन्कार का कैसा फल हुआ। (२६) (रुकू ३)

क्या तूने देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा। फिर उसके जरिये हमने अलग-अलग रंगों के फल निकाले और पहाड़ों में अलग-अलग रंगतों के कुछ पत्थर निकाले। सफेद, लाल और काले भुजंग (२७) और इसी तरह आदमियों और चारपायों की रंगतें भी कई-कई तरह की हैं। इश्वर से उसके वही बन्दे डरते हैं जो समझ रखते हैं। अल्लाह बलवान क्षमा करने वाला है। (२८) जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते और नमाज पढ़ते और जो कुछ हमने उनको दे रखा है उसमें से छिपाकर और खुले तौर पर ईश्वर की राह में खर्चा करते हैं, वह ऐसे व्यापार की आस लगाये बैठे हैं जिसमें कभी घाटा नहीं हो सकता। (२९) ईश्वर उनको उनका पूरा फल देगा और अपनी कृपा से उनको ज्यादा भी देगा। वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (३०) और ऐ पैगम्बर! यह किताब जो हमने ईश्वरीय संदेश से तुम पर उतारी है यह ठीक है औरे जो किताबें इससे पहले की हैं यह उनकी सचाई बताती है। अल्लाह अपने सेवको से खबरदार देख रहा है। (३१) फिर हमने अपने सेवकों में से उन लोगों को इस किताब का वारिस ठहराया जिसको हमने चुना। फिर उनमें से कोई अपनी जानों पर अत्याचार कर रहे हैं और कोई उनमें से बीच की चाल चले जाते हैं और कौई उनमें से ईश्वर के आज्ञा से नेकियों में आगे बढ़े हुए हैं। यही ईश्वर की बड़ी कृपा है। (३२) और उनका बदला यह है वसाँ बसने के बाग हैं, यह लोग उनमें दाखिल होंगे।

वहां उनको सोने के कंगन और मोती का गहना पहनाया जायगा और उनकी पोशाक रेशमी होगी। (३३) और कहेंगे कि ईश्वर को धन्यवाद है जिसने हमसे दुख दूर कर दिया। हमारा पालनकर्ता बड़ा क्षमा करने वाला कदर जानने वाला हैं। (३४) जिसने हमको अपनी कृपा से ठहरने के घर में उतारा। यहां हमको कोई दुख न पहुंचायेगा और न वहाँ हमको थकान आवेगी। (३५) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं उनके लिए नरक की आग है। न तो उनको मृत्यु आती है कि मर जायें और न नरक का दण्ड ही उनसे कम किया जाता है हम हर एक कृतघ्नी को इसी तरह पर दण्ड दिया करते हैं। (३६) और यह लोग नरक में चिल्लाते होंगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता! हमको यहाँ से निकाल संसार में ले चल कि हम जैसे कर्म करते रहे थे वैसे नहीं बल्कि सुकर्म करेंगे तो इनसे कहा जायगा क्या हमने तुमको इतनी आयु नहीं दी थी कि इसमें जो कोई सोचना चाहे सोच ले और तुम्हारे पास डराने वाला आ चुका था। बस दुख का आनन्द लिया जालिमों, का कोई सहायक नहीं। (३७) (रुकू ४)

अल्लाह आकाश और पृथ्वी की छिपी बातों को जानता है और जो दो दिलों के अन्दर है वह जानता है (३८) वही है जिसने तुमको पृथ्वी में कायम मुकाम बनाया फिर जो इन्कार करता है उसकी इन्कारी का बवाल उसी पर है और जो लोग इन्कार करते हैं उनकी इन्कारी ईश्वर का प्रकोप ही बढ़ाती है और इन्कार के कारण काफिरों को घाटा ही होता चला जाता है। (३९) ऐ पैगम्बर! इनसे कहो कि तुम अपने शरीकों को जिनको तुम ईश्वर के सिवाय बुलाया करते हो, मुझे दिखाओ। उन्होंने कौन सी पृथ्वी बनाई है या आकाश में उनका कुछ साझा है या हमने इन मुशरिकों को कोई किताब दी है कि यह उसका प्रमाण रखते हैं, अत्याचार दूसरों को धोखे ही के वादे देते हैं। (४०) अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को थाम रखा है कि टल न जांय

और टल जायं तो फिर उसके सिवाय कोई नहीं जो उनको थाम सके अल्लाह संतोषी और क्षमा करने वाला है। (४१) और अल्लाह की बड़ी-बड़ी पक्की कसमें खाया करते थे इन के पास कोई डराने वाला आयेगा तो वह जरूर हर एक गुट से ज्यादा राह पर होंगे। फिर जब डरानेवाल उनके पास आया तो उनकी घृणा ही बढ़ी। (४२) देश में सरकशी और बुरे यत्न करने लगे और बुरी तदबीर उलटकर बुरी तदबीर करने वाले पर ही पड़ती है। अब वह अगले लोगों के दस्तूर ही की राह देखते हैं और तू ईश्वर के दस्तूर में हेर-फेर न पायेगा और अल्लाह के दस्तूर में टलना नहीं पायेगा। (४३) क्या चले-फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखें। वह बल में इनसे कहीं बढ़कर थे और अल्लाह इस लायक नही कि आकाश पृथ्वी में उसको कोई चीज थका सके। वह जाननेवाला बलवान है। (४४) और अगर ईश्वर लोगों को उनके कामों के बदले में पकड़े तो पृथ्वी पर किसी जानदार को न छोड़े। मगर वह एक नियत समय तक या ी प्रलय तक लोगों को मुहलत दे रहा हैं फिर जब उनका समय अयेगा तो उनको बदला देगा। अल्लाह अपने सेवकों को देख रहा है। (४५) (रुकू ५)

सूरे यासीन

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ८३ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है यासीन (१) चमत्कार वाले पक्के कुरान की सौगन्ध। (२) तू पैगम्बरों में है। (३) सीधी राह पर। (४) यह कुरान शक्तिवान और कृपालु ने

उतारा है। (५) ताकि तुम ऐसे लोगों को डराओ जिनके बाप डराये नहीं गये और वह बेखबर है। (६) इनमें से बहुतेरों पर बात दण्ड कायम हो चुका है, सो यह न मानेंगे। (७) हमने इनकी गर्दनों में ठोड़ियों तक तौक़ डाल दिये हैं, सो वह सिर उभार कर रह गये हैं। (८) और हमने एक दीवार इनके आगे बनाई और एक दीवार इनके पीछे। फिर ऊपर से ढाक दिया सो उनको नहीं सूझता। (९) और ऐ पैगम्बर ! इनके लिए एकसा है कि तुम इनको डराओ या न डराओ यह तो ईमान लाने वाले नहीं हैं। (१०) तू तो उसी को डरा सकता हैं जो समझाये पर चले और बेदेखे रहमान से डरे, तो उसको क्षमा और इज्जत की शुभसूचना सुना दो। (११) हम मुर्दों को जिलाते हैं और जो आगे भेज चुके हैं उनको निशानी हम लिख रहें हैं और हमने हर चीज खुली असल किताब में लिख दी है। (१२) (रुकू १)

और ऐ पैगम्बर इनसे उदाहरण के तौर पर एक गाँव रूम वालों का हाल बताओ कि जब उनके पास पैगम्बर आये। (१३) जब हमने उनकी तरफ दो पैगम्बर भेजे तो उन्होंने इन दोनों को झुठलाया। इस पर हमने तीसरे पैगम्बर को भेजकर उनकी सहायता की तो उन दोनों ने मिलकर कहा कि हम तुम्हारे पास ईश्वर के भेजे हुए हैं। (१४) वह कहने लगे कि तुम हमारी तरह के आदमी हो और ईश्वर ने कोई चीज नहीं उतारी, तुम झूठ बोलते हो। (१५) पैगम्बरों ने कहा हमारा पालनकर्ता जानता है कि हम तुम्हारी तरफ भेजे गए हैं। (१६) और हमारा काम तो साफ पहुंचा देना है। (१७) वह कहने लगे हमने तो तुमको मनहूस पाया। अगर तुम न मानोगे तो तुमको पत्थरों से मारेंगे और हमारे हाथों से तुमको दुखदाई मार लगेगी। (१८) कहा कि तुम्हारी शामत तुम्हारे साथ है क्या तुमको समझाया गया तुम हमको बेकार उल्टा उलाहना देने लगे, नहीं तुम लोग हद से बढ़ गए हो। (१९) और शहर के परले सिरे से एक आदमी दौड़ता हुआ आया और कहने लगा कि भाइयों ! इन पैगम्बरों

केके हे पर चलो। (२०) ऐसे लोगों के कहे पर चलो जा तुमसे बदला नहीं माँगते और ईश्वर की सीधी राह पर हैं। (२१)

तेईसवाँ पारा (वमा लिय)

और मुझे क्या है कि जिसने मुझको पैदा किया है उसकी पूजा न करूं। तुम उसी की तरफ लौटाये जाओगे। (२२) क्या उसके सिवाय दूसरों का पूजित मान लूं। अगर अल्लाह मुझे कोई कष्ट पहुंचाना चाहे तो उनकी सिफारिश मेरे कुछ काम न आए और वह मुझको न छुड़ा सकें। (२३) अगर ऐसा करूं तो मैं प्रत्यक्ष कुमार्ग में जा पड़ा। (२४) मैं तुम्हारे पालनकर्ता पर ईमान लाया हूं, सो सुन लो (२५) आज्ञा हुई कि स्वर्ग में चला जा। बोला कि क्या अच्छा होता जो मेरी जाति को मालूम हो जाता। (२६) कि मुझे मेरे पालनकर्ता ने क्षमा कर दिया और इज्जतदारी में दाखिल किया। (२७) और हमने उसके पीछे उनकी कौम पर आकाश से फरिश्तों का कोई लश्कर न उतरा और हम फौजें नहीं उतारा करते। (२८) वह तो बस एक आवाज थी और उसी दम वह जाति आग की तरह धुंझर रह गई। (२९) मनुष्यों पर शोक है जब कोई पैगम्बर उसके पास आया इन्होंने उसकी हंसी ही उड़ाई। (३०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि इनसे पहले हमने कितने गुटों को मार डाला। और वे इनकी तरफ लौटकर कभी न आयेंगे। (३१) और सब में कोई ऐसा नहीं जो इकट्ठा हमारे पास पकड़ा हुआ न आवे। (३२) (रुकू २)

और इनके लिए पृथ्वी एक निशानी है। हमने उनको जिलाया और उसने अनाज निकाला जो उसी में से खाते हैं। (३३) और पृथ्वी

में हमने खजूर और अंगूरों के बाग लगाए और उनमें झरने बहाये (३४) ताकि बाग के फलों में से भाग्य का खायें और यह फल इनके हाथों के बनाये हुए नहीं। फिर क्यों धन्यवाद नहीं देते। (३५) वह पवित्र है जिसने सब चीजों से जिन्हें पृथ्वी उगाती है और इनकी किस्म में थे और उस किस्म में से जिन्हें तुम नहीं जानते हो जोड़े पैदा किए (३६) और इनके लिए एक निशानी रात है कि हम उसमें से दिन को खींचकर निकाल लेते हैं, फिर यह लोग अन्धेरे में रह जाते हैं। (३७) और सूरज अपने एक ठिकाने पर चला जाता है। वह जोरावर व आगाह से सधा हुआ हैं। (३८) और चांद के लिए हमने मंजिलें ठहरा दीं यहां तक कि आखिर माह में घटते-घटते फिर ऐसा टेढ़ा पतला रह जाता है जैसे खजूर की पुरानी टहनी। (३९) न तो सूरज ही से बन पड़ता है कि चाँद को पकड़े और न रात ही दिन से आगे आ सकती है और हर कोई एक-एक घेरे में फिरते हैं। (४०) और इनके लिए एक निशानी है कि हमने इन मनुष्यों की औलाद को भरी हुई नाव में उठा लिया। (४१) और नाव की तरह हमने इनके लिए और चीजें पैदा की हैं जिन पर सवार होते हैं। (४२) और हम चाहें तो इनको डुबो दें, फिर न तो कोई इनकी सहायता लेनेवाला होगा और न यह छुड़ाये जा सकेंगे। (४३) मगर यह हमारी कृपा है और एक समय तक लाभ के लिए मंजूर है। (४४) और जब उनसे कहा जाता है कि जब तुम्हारे आगे और पीछे हैं उनसे डरते रहो शायद तुम पर कृपा की जावे। (४५) और इनके पालनकर्ता की निशानियाँ इनके पास आती हैं तो यह उनसे मुंह मोड़ते हैं। (४६) और जब इनसे कहा जाता है कि ईश्वर ने जो तुमको रोजी दे रखी है उसमें से कुछ खर्च करते रहा करो तो काफिर मुसलमानों से कहते हैं कि क्या हम ऐसे लोगों को खिलायें जिनको ईश्वर चाहे तो आप खिला सकता है। तुम प्रत्यक्ष गुमराही में ही। * (४७) और कहते हैं अगर

***काफिर कहते थे कि हम उन लोगों को अपनी गाढ़ी कमाई से**

तुम सच्चे हो तो यह प्रलय का वादा कब पूरा होगा ? (४८) यही राह देखते हैं कि यह मनुष्य आपस में लड़-झगड़ रहे हो। और एक जोर की आवाज इनको आ पकड़े। (४९) फिर न तो वसीयत ही कर सकेंगे और न अपने बाल-बच्चों में लौटकर जा सकेंगे। (५०) (रुकू ३)

और सूर नरसिंहा फूंका जायगा तो एकदम से कब्रों से निकल-निकल अपने पालनकर्ता की तरफ चल खड़े होंगे। (५१) पूछोगे कि हाय ! हमारा अभाग्य किसने हमारी कब्रों से हमको उठाया ? यही तो वह प्रलय है जिसका वादा रहमान ने कर रखा था और पैगम्बर सच कहते थे। (५२) प्रलय बस एक जोर की आवाज होगी तो एकदम से सब मनुष्य हमारे सामने पकड़े आवेंगे। (५३) फिर उस दिन किसी आदमी पर जरा-सा भी अत्याचार न होगा और तुम लोगों को उसी का बदला दिया जायगा जो करते रहे। (५४) स्वर्ग वाले उस दिन मजे से जी बहला रहे होंगे। (५५) वह और उनकी स्त्रियाँ साये में तकिया लगाये तख्तों पर बैठी होंगीं। (५६) वहाँ उनके लिए मेवे होंगे और जो कुछ वे मांगें। (५७) पालनकर्ता कृपालु से सलाम किया जायगा। (५८) और ऐ अपराधियों ! आज तुम अलग हो जाओ। (५९) ऐ आदमी की संतान ! क्या हमने तुम पर आज्ञा नहीं कर दी थी कि राक्षस की पूजा न करना कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है। (६०) और यह कि हमारी ही पूजा करना, यही सीधी राह है। (६१) और उसने तुममें से कुछ लोगों को गुमराह कर दिया, क्या तुम

क्यों खाने को दें जिनको ईश्वर ही ने खाने को नहीं दिया। यदि ईश्वर इनको खिलाना चाहता तो स्वयं खिलाता। इनको खिलाना तो ईश्वर की इच्छा के विरुद्ध करना है। इस पर ये आयतें और इनके अतिरिक्त और कई आयतें उतरीं।

अक्ल नहीं रखते थे ? (६२) यह नरक है जिसका तुमसे वाद किया जाता था। (६३) आज अपने मना करने के बदले इसमें जाओ। (६४) आज हम इनके मुँह पर मुहर लगा और जैसे काम यह मनुष्य कर रहे थे इनके हाथ हमको बता देंगे और इनके पैर गवाही देंगे। (६५) और हम चाहें तो इनकी आखोंको मेट दें, फिर यह राह चलने को दोड़ें तो कहाँ से देख पावें (६६) और अगर हम चाहें तो यह जहाँ हैं वहीं इनकी सूरतें बदल दें, फिर न आगे चल सकें न पीछे फिर सकें। (६७) (रुकू ४)

और हम जिसकी आयु बड़ी करते हैं संसार में उसको उल्टा घटाते चले जाते हैं। फिर क्या नहीं समझते ? (६८) और हमने इन पैगम्बर मुहम्मद को शायरी नहीं दिखाई और शायरी इनके योग्य भी नहीं। यह कुरान तो शिक्षा है और साफ है। (६९) ताकि जो जिन्दा दिल हों उनको [ईश्वर के दण्ड से डरायें। काफिरों को दण्ड दें। (७०) क्या इन लोगों ने नहीं देखा कि हमने अपने हाथों से इनके लिए चौपाये पैदा किए और यह उनके मालिक हैं। (७१) और हमने उनको इनके वश में कर दिया है तो उनमें से कुछ इनकी सवारियाँ हैं और उनमें से कुछ को खाते हैं। (७२) और उनमें इदके लिए लाभ हैं और पीने की चीजें दूध, तो क्या यह मनुष्व धन्यवाद नहीं देते। (७३) और लोगों ने ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजित इस उम्मेद से बना रखे हैं कि उनको सहायता मिले। (७४) सो वह उनकी सहायता नहीं कर सकते बल्कि यह उनकी फौज होकर खुद पकड़े जावेंगे। (७५) तो इनकी बातें तुम्हारी उदासी का कारण न हों क्योंकि जो कुछ छिपाकर और जो करते हैं जाहिरा करते हैं, हम जानते हैं। (७६) क्या आदमी को मालूम नहीं कि हमने उसको वीर्य से पैदा किया, फिर वह जाहिरा झगड़ालू हो गया। (७७) और हमारी बाबत बातें बनाने लगा जब हड्डियाँ गल गई तो उनको कौन जीवित करेगा। (७८) ऐ पैगम्बर! तुम इस गुस्ताख से कहो जिसने हड्डियों को पहली

बार पैदा किया था वही उनको जिलायेगा और वह सब तरह का पैदा करना जानता हैं। (७९) वही है जो हरे पेड़ों से तुम्हारे लिए आग पैदा करता है, फिर तुम उससे और आग सुलगा लेते हो। (८०) क्या जिसने आकाश और पृथ्वी पैदा किये वह इस पर शक्तिमान नहीं कि इन जैसे आदमियों को दुबारा पैदा करे। हाँ जरूर शक्तिमान है और वह बड़ा पैदा करनेवाला जाननेवाला है। (८१) उसकी आज्ञा यही है कि जब किसी चीज के बनाने का इरादा करे तो उसे कहे 'हो' और वह हो जाता है। (८२) वह पवित्र है, जिसके हाथ में हर चीज का पूरा अधिकार है और मरे पीछे तुम उसी की तरफ लौटाए जाओगे। (८३) (रुकू ५)

सूरे साफ्फात

मक्के में अवतरित हुई इसमें १८२ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। लश्करों की सौगन्ध जो कतारों में खड़े होते हैं। (१) फिर झिड़क कर डाटने-वालों की कसम। (२) फिर याद कर कुरान पढ़नेवालों की सौगन्ध। (३) निसन्देह तुम्हारा हाकिम एक ईश्वर है। (४) आकाश पृथ्वी और जो चीजें आकाश और पृथ्वी में हैं सबका पावन लवकर्ता और उन मुकामों का पालनकर्ता जहाँ-जहाँ से सूरज अलग-अलग समय पर निक-लता है। (५) हमने आकाश को तारों की शोभा से सजाया। (६) और हर राक्षस सरकश से बचाव बनाया। (७) वह राक्षस ऊपर के मनुष्यों यानी देवदूत की बातों की तरफ कान नहीं लगाने पाते और उनके लिए हर तरफ से उनपर अंगारे फेंके जाते हैं। (८) भागने

के लिए और उनकी हमेशा की मार है। (६) मगर कोई किसी देवदूत की बात को जल्दी से उचक ले जाता है तो दहकता हुआ अंगारा उसके पीछे लगता है। (१०) तो ए पैगम्बर! इनसे पूछ कि क्या इनका पैदा करना ज्यादा कठिन है या जिनको हमने बनाया है? इन आदम के पुत्रों को हमने लसदार मिट्टी से पैदा किया है (११) ऐ पैगम्बर! तूने आश्चर्य किया और यह हंसते हैं। (१२) और जब इनको समझाया जाता है तो नहीं समझते। (१३) और जब इनको कोई निशानी देखते हैं हंसते उडाते हैं। (१४) और कहतें हैं यह तो बस प्रत्यक्ष जादू है। (१५) क्या जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो कर रह गए, प्रलय में उठा खड़े किए जावेंगे! (१६) और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी उठेंगे? (१७) ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कहो कि हाँ, और तुम जलील होगे। (१८) सो वह तो एक झिड़की है, फिर तभी यह देखने लगेंगे। (१६) और बोल उठेंगे। कि हाय! हमारा अभाग्य, यह तो न्याय का दिन है। (२०) यही न्याय का दिन है जिसको तुम झुठलाया करते थे। (२१) (रुकू १)

अत्याचारियों का और उनकी स्त्रियों को और ईश्वर के अलावा जिनको पूजते रहे हैं उनको इकट्ठा करो। (२२) फिर उनको नरक की राह ले चला। (२३) और उनको खड़ा रखो कि उनसे सवाल होगा। (२४) तुम्हेंक या हो गया कि एक दूसरे की सहायता नहीं करते। (२५) यह कुछ भी उत्तर न देंगे बल्कि यह उस दिन नीची गर्दन किये होंगे। (२६) और एक की तरफ एक ध्यान देकर पूछा-ताछी करेगा। (२७) एक गुट दूसरे गुट से कहेगा कि तुम्हारी दाहिनी तरफ से बहकाने को हमारे पास आया करते थे। (२८) वह कहेंगे नहीं तुम आप ईमान नहीं लाते थे। (२६) और तुम पर हमारा कुछ जोर तो न था बल्कि तुम बड़े थे। (३०) सो हमारे पालनकर्ता का वादा हमारे हक़ में पूरा

हुआ, हमको दण्ड के मजे चखने होंगे। (३१) हम बहके हुये थे सो हमने तुमको भी बहका दिया। (३२) सो वे उस दिन दण्ड में शरीक होंगे। (३३) हम अपराधियों के साथ ऐसा ही किया करते हैं। (३४) यह ऐसे बलवान थे। जब इनसे कहा जाता था कि ईश्वर के सिवाय कोई पूजित नहीं तो यह अकड़ बैठते थे। (३५) और कहते थे कि भला हम अपने पूजितों को एक पागल शायर के लिए छोड़ दें। (३६) बल्कि वह सच्चा धर्म लेकर आया है और सब पैगम्बरों का सच माना है। (३७) तुम जरूर दुखदाई दण्ड चखोगे। (३८) और जैसे-जैसे कर्म करते रहे हो उन्हीं का बदला पाओगे। (३९) मगर अल्लाह के खास बन्दे। (४०) यह ऐसे होंगे कि इनकी रोजी मालूम है। (४१) मेवे और इनकी इज्जत होगी। (४२) निआमत के बागों में (४३) तख्तों पर आमने सामने होंगे। (४४) इनमें साफ शराब का प्याला घुमाया जायगा। (४५) सफेद रंग पीने वालों को मजा देगी। (४६) न उससे सिर घूमते हैं और न उससे बकते हैं। (४७) और उनके पास नीची निगाह वाली बड़ी आँखों की स्त्रियाँ होंगी। (४८) जैसे कि वह अण्डे छिपे रखे हैं, (४९) फिर यह एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस में पूछा-ताछी करेंगे। (५०) इनमें से एक कहेगा कि एक मेरा साथी था। (५१) और वह पूछा करता था कि क्या तू उन मनुष्यों में है जो प्रलय को मानते हैं। (५२) क्या जब हम मर जायंगे और मिट्टी और हड्डियाँ होकर रह जायंगे हमको बदला मिलेगा? (५३) कहने लगा भला तू झाँककर देखेगा। (५४) फिर झाँकेगा तो उसको नरक के बीचोबीच देखेगा। (५५) बोल उठेगा कि ईश्वर की सौगन्ध तू तो मुझे तबाह करने को था। (५६) और मेरे पालनकर्ता की कृपा न होती तो मैं पकड़े हुओं में होता। (५७) क्या हमको अब मरना नहीं। (५८) अगर पहली बार मर चुके और हमें दण्ड न होगा। (५९) निस्सन्देह यही बड़ी कामयाबी है। (६०) चाहिये कि ऐसी कामयाबी के लिये काम करने वाले काम करें। (६१) भला यह मेहमानी बेहतर है सेंहुड़ का पेड़? (६२) हमने

उसको जालिमों के खराब करने को रखा है। (६३) वह एक पेड़ है जो नरक की जड़ में से उगता है। (६४) उसके फल जैसे शैतानों के के सिर। (६५) सो यह उसी में से खायंगे और उसी से पेट भरेंगे। (६६) फिर उनको उस पर खौलता हुआ पानी दिया जायगा। (६७) फिर इनको नरक की तरफ लौटाना होगा। (६८) ऐ पैगम्बर ! इन्होंने यानी मक्के के काफिरों ने अपने बाप दादों को बहका हुआ पाया। (६९) सो वे उन्हीं के पीछे-पीछे चले जा रहे हैं। (७०) और इनसे पहले वे मार्ग भूल चुके हैं। (७१) और उनमें भी हमने डर सुनाने वाले पैगम्बर भेजे थे। (७२) तो ऐ पैगम्बर ! देखो उन मनुष्यों का कैसा अच्छा परिणाम हुआ जो उठाये जा चुके हैं। (७३) मगर अल्लाह के चुने हुये बन्दे। (७४) (रुकू २)

और नूह ने हमको पुकारा था तो हमने उनकी प्रार्थना सुन ली और हम अच्छी प्रार्थना पर पहुंचने वाले हैं। (७५) नूह और उनके घर वालों को उस घड़ी घबराहट से बचा दिया। (७६) और उनकी सन्तान को ऐसा किया कि बाकी रह गई। (७७) और आने वाले गुटों में उनका जिक्र खैर बाकी रखा। (७८) सारे संसार में हर तरफ से नूह पर सलाम। (७९) नेक मनुष्यों को हम ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (८०) नूह हमारे ईमानदार बन्दों में से हैं। (८१) फिर औरों को हमने डुबो दिया। (८२) और नूह के तरीकों पर चलनेवाले में से एक इब्राहीम भी थे। (८३) जब साफ दिल से अपने पालन-कर्ता की तरफ रुजू हुआ, (८४) जब अपने पिता और अपनी जाति से कहा कि तुम क्या पूजते हो। (८५) क्यों अल्लाह के सिवाय झूठे पूजित बनाकर चाहते हो ? (८६) फिर तुमने संसार के पालने वाले को क्या समझा रखा है ? (८७) फिर तारों पर एक निगाह की। (८८) फिर कहा मैं बीमार हूं*। (८९) तो वह मनुष्य उनको छोड़

*** हजरत इब्राहीम की जाति ने उनसे मेले चलने को कहा तो**

कर चले गये। (९०) उनका जाना था कि इब्राहीम चुपके से उनकी मूर्तियों में जा घुसे और कहा कि तुम खाते नहीं। (९१) तुम्हें क्या हुआ, तुम क्यों नहीं बोलते? (९२) फिर इब्राहीम दाहिने हाथ से उनके मारने को घुसा। (९३) फिर लोग उस पर घबराते दौड़े आये। (९४) इब्राहीम ने कहा क्या तुम ऐसी चीजों को पूजते हो जिनको तुम आप काट कर बनाते हो? (९५) तुमको और जिन चीजों को तुम बनाते हो अल्लाह ही ने पैदा किया है। (९६) यह सुनकर वह लोग कहने लगे कि इब्राहीम के लिए एक मकान बनाओ और उसको दहकती हुई आग में डाल दो। (९७) फिर इब्राहीम के साथ बुरा दावं चाहने लगे। फिर हमने उन्हीं को नीचे डाला। (९८) और कहा मैं अपने पालनकर्ता कि ओर जाता हूं, बस मुझे ठिकाने लगा देगा। (९९) और इब्राहीम ने दुआ माँगी ऐ मेरे पालनकर्ता! मुझको नेकों में से एक नेक जीव दे। (१००) फिर हमने उनको एक बड़े हलीम के लड़के इस्माईल का शुभसन्देश दिया। (१०१) फिर जब लड़का इब्राहीम के साथ चलने फिरने लगा तो इब्राहीम ने कहा बेटा! मैं स्वप्न में देखता हूं कि मैं तुझको बलिदान कर रहा हूं, फिर देख कि तेरी क्या राय है? पुत्र ने कहा ऐ पिता! जो तुझको आज्ञा हुई है तू कर, ईश्वर ने चाहा तू मुझे सन्तोषी पायेगा। (१०२) फिर जब दोनों पिता पुत्र ने आज्ञा मानी और पिता ने हलाल करने के लिए पुत्रों को माथे के बल पछाड़ा। (१०३)और हमने उसे पुकारा कि ऐ इब्राहीम! १०४) तूने स्वप्न को सचकर दिखाया, नेकों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।(१०५) निस्सन्देह यह खुली हुई परीक्षा थी। (१०६) और हमने बड़े बलि-

---

उन्होंने यह बात कहकर उनको अपने पास से टाल दिया और फिर उनकी मूर्तियों को तोड़ डाला ताकि उनके जाति वाले समझ लें कि वह जिनको पूजते हैं वह बेशक दूसरों का क्या अपना भी बचाव नहीं कर सकते।

दान* को इस्माईल के बदले में दिया। (१०७) और आने वाले गुटों में में उनका जिक्र बाकी रखा। (१०८) इब्राहीम पर सलाम। (१०९) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (११०) यह इब्राहीम हमारे ईमानदार बन्दों में। (१११) और हमने इब्राहीम को दूसरे पुत्र इसहाक को शुभसन्देश दिया कि यह भी नेक और पैगम्बर होगा। (११२) और हमने इब्राहीम और इसहाक को बरकतें दीं और इन दोनों की सन्तान में कोई नेक और कोई बुरे अपने ऊपर आप अत्याचार करने वाले भी हैं। (११३) (रुकू ३)

और हमने मूसा और हारून पर एहसान किये। (११४) और दोनों भाइयों का और उनकी जाति को बड़ी घबराहट यानी फिरऔन के अत्याचार से छुटकारा दिलाया। (११५) और फिरऔन के मुकाबिले में उनकी सहायता की तो यही मनुष्य जीत में रहे। (११६) और दोनों को भाइयों को तौरात की किताब दी। (११७) और दोनों को सीधी राह दिखाई। (११८) और उनके बाद आने वाले गुट में उनका जिक्र बाकी रखा। (११९) मूसा और हारून पर सलाम है। (१२०) हम नेक सेवकों को ऐसा ही बदला दिया करते हैं। (१२१) यह दोनों हमारे ईमान वाले बन्दों में हैं। (१२२) और इलियास भी निस्संदेह पैगम्बर में से हैं। (१२३) जब उन्होंने अपनी जाति से कहा क्या तुम ईश्वर से नहीं डरते ? (१२४) क्या तुम मूर्ति को पूजते और बेहतर अल्लाह को छोड़ बैठे हो ? (१२५) अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता और तुम्हारे अगले बाप-दादों का पालनकर्ता है। (१२६) लोगों ने उनको झुठलाया सो यह लोग भी गिरफ्तार होंगे। (१२७) मगर अल्लाह के

---

* ईश्वर ने उनके बेटे को बचा लिया और उनके बदल एक दुम्बा हलाल हो गया। वह बात इब्राहीम को उस समय मालूम हुई जबकि उन्होंने अपनी आँखों की पट्टी खोली।

चुने बन्दे। (१२८) और इल्यास के बाद आने वाले गुटों में हमने उनका जिक्र बाकी रखा। (१२९) इल्यास पर सलाम हो। (१३०) तुम नेकों को इसी तरह बदला दिया करते हैं। (१३१) इल्यास हमारे ईमान वाले दासों में से हैं। (१३२) और निस्सन्देह लूत पैगम्बरों में से हैं। (१३३) हमने लूत को और उनके तमाम कुटुम्ब को बचा लिया। (१३४) मगर एक बुढ़िया लूत की स्त्री बाकियों में थी। (१३५) फिर हमने औरों को मार डाला। (१३६) और तुम सुबह को गुजरते हो। (१३७) और रात को भी गुजरते हो क्या तुम नहीं समझते। (१३८) (रुकू ४)

और निस्संदेह यूनिस पैगम्बरों में से है। (१३९) जब भाग कर भरी हुई नाव के पास पहुंचे। (१४०) और फिर चिट्ठियाँ डालीं चूँकि उसमें उनका नाम निकला तो ढकेले हुओं में हो गया। (१४१) फिर उनको मछली ने निगल लिया और वह उस समय अपने आप धिक्कार करता था। (१४२)अगर यूनिस ईश्वर की पवित्रता से याद करने वालों में से न होता। (१४३) तो उस दिन तक जब कि लोग उठा खड़े किये जाँयगे मछली ही के पेट में रहता। (१४४) फिर हमने उसको मछली के पेट से निकाल कर खुले मैदान में डाल दिया और वह मछली के पेट में रहने से बीमार था। (१४५) फिर हमने उस पर कद्दू की तरह का एक बेलदार पेड़ उगाया। (१४६) और उसको लाख बल्कि लाख से भी अधिक आदमियों की तरफ पैगम्बर बनाकर भेजा। (१४७) फिर वह ईमान लाये तो हमने उनको एक समय तक बरतने दिया! (१४८) तो ऐ पैगम्बर इन मक्के के काफिरों से पूछो कि क्या ईश्वर के लिऐ पुत्रियां और उनके लिये पुत्र हैं। (१४९) या हमने देवताओं को औरतें बनाया और वह देख रहे थे। (१५०) यह तो अपने दिल से बना-बना कर कहते हैं। (१५१) कि ईश्वर संतान वाला है और कुछ संदेह नहीं कि यह लोग झूठे हैं (१५२) क्या ईश्वर ने बेटों पर बेटियाँ पसन्द कीं। (१५३) तुमको क्या हुआ कैसे न्याय

करते हो। (१५४) क्या तुम ध्यान नहीं देते। (१५५) क्या तुम्हारे पास कोई खुला हुआ प्रमाण है। (१५६) सच्चे हो तो अपनी किताब लाओ! (१५७) और इन लोगों ने ईश्वर में और दिनों में नाता ठहराया है हलाँकि जिन्नों को अच्छी तरह मालूम है कि वह हाजिर किये जायँगे। (१५८) जैसी बातें यह लोग बनाते हैं ईश्वर उनसे पवित्र है। (१५९) मगर अल्लाह के खालिस बन्दे हैं। (१६०) सो तुम और जिन्नों को जिनकी तुम पूजा करते हो। (१६१) ईश्वर से जिद्द करके किसी को बहका नहीं सकते। (१६२) मगर उसी को जो नरक में जानेवाला है। (१६३) और हममें से हर एक का दर्जा मुकर्रर है। (१६४) और हम जो हैं हम ही हैं ईश्वर की सेवा में पाँति बाँधने वाले। (१६५) और हमतो उसकी याद में लगे रहते हैं। (१६६) और यह मक्का के काफिर कहा ही करते थे। (१६७) कि अगले लोगों की कोई पुस्तक हमारे पास होती। (१६८) तो हम ईश्वर के चुने हुए बन्दे होते। (१६९) सो उन्होंने कुरान को न माना तो आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (१७०) और हमारे बन्दे पैगम्बरों के हक में हमारी आज्ञा पहले ही हो चुकी है। (१७१) निस्संदेह उन्हीं की सहायता होती है। (१७२) और हमारा लशकर बलवान रहा करता है (१७३) तो ऐ पैगम्बर कुछ दिन इन इन्कार करने वालों से मुंह मोड़ ले। (१७४) और उन्हें देखता रहे कि आगे यह भी देख लेवें। (१७५) क्या हमारे दण्ड के लिए जल्दी मचा रहे हैं। (१७६) जब वह दण्ड उनके आँगनों में उतरेगी तो जिन लोगों को पहले से डराया जा चुका था उनकी सुबह बुरी होगी। (१७७) और तू उनसे एक समय तक मुंह मोड़ ले। (१७८) और डेखता रह आगे चलकर देख लेंगे। (१७९) ऐ पैगम्बर जैसी-जैसी बात यह लोग बनाते हैं उनसे तेरा इज्जतवाला पालनकर्ता पवित्र है। (१८०) और पैगम्बरों पर सलाम है (१८१) और सब खूबी अल्लाह को है जो सब संसार का पालनकर्ता है (१८२) (रुकू ५)

सूरे साद

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। कुरान की सौगन्ध जिसमें नसीहत है (१) निस्संदह जो लोग इन्कार करने वाले हैं दुश्मनी में हैं। (२) हमने इयसे पहले बहुत से गिरोहों को मार डाला दण्ड के समय चिल्ला उठे और छूटने का समय न रहा। (३) और इन लोगों ने आश्चर्य किया कि इनमें का डराने वाला इनके पास आ गया और काफिरों ने कहा यह जादूगर झूँठा है। (४) क्या इसने पूजितों की खोज खोकर एक ही पूजित रक्खा यह बड़ी ही अनोखी बात है। (५) और इनमें के कुछ सरदार लोग यह कह कर चल खड़े हुए और अपने पूजितों पर जमे रहो, यह बात जो यह मनुष्य समझता है निस्संदेह इसमें इसकी कुछ गरज है। (६) हमने यह बात पिछले धर्म में नहीं सुनी यह इसकी गढ़ंत है। (७) क्या हम में से उसी पर ईश्वर की बात उतारी है वह सेरे कलाम की बाबत संदेह में हैं अभी इन्होने हमारा दण्ड नहीं देखा। (८) ऐ पैगम्बर क्या तुम्हारे पालनकर्ता शक्तिमान दाता की कृपा के खजाने इन्हीं के पास हैं। (९) यह आकाश या पृथ्वी और वह चीजें जो आकाश पृथ्वी में हैं उनका अधिकार उन्हीं को है तो इनको चाहिए कि रस्सियां लगा कर आकाश पर चढ़ें। (१०) ऐ पैगम्बर तमाम लशकरों में से यह कोम भी इस जगह एक हारी हुई फौज है। (११) इनसे पहले नूह की कौम और आद और मेखों वाले फिरऔन झुठला चुके हैं। (१२) और समूद और लूत की कौम और एका के गुट। (१३) इन सब ही ने तो पैगम्बरों को झुठलाया फिर हमारा दण्ड आ गया। (१४) (रुकू १)

और यह कुरेश भी एक चिंघाड़ की बाट देखते हैं जो बीच में दम न लेगी। (१५) उन्होंने कहा• ऐ हमारे पालनकर्ता हमारे कर्म का लेखा हिसाब लेने के दिन से पहिल हमको जल्दी दे। (१६) ऐ पैगम्बर

जैसी-जैसी बातें यह लोग करते हैं उन पर सब्र कर और हमारे सेवक दाऊद को याद कर कि हर तरह का बल रखते थे और वह ईश्वर की तरफ रुजू रहते थे। (१७) हमने पहाड़ों को उनके कब्जे में कर रक्खा था कि सुबह शाम उनके साथ पवित्र बोला करें। (१८) और पक्षी सब जमा होकर उनके सामने रुजू रहते। (१९) और हमने उसके राज्य को मजबूत कर दिया और उसे चमत्कार और न्याय की बात दी थी। (२०) और ऐ पैगम्बर क्या दावेदारों की खबर तेरे पास आई है जब वह पूजित जगहों की दीवारें फाँद कर। (२१) दाऊद के पास आये वह उनसे डरा उन्होंने कहा मत डरो। हम दोनों झगड़ालू हैं हममें से एक ने दूसरे पर ज्यादती की है। तू हममें सच्चा फैसला कर दे और बात को दूर न डाल और हमको सीधी राह बता दे। (२२) यह मेरा भाई है इसके निन्नानवे भेड़ें हैं और मेरे यहाँ सिर्फ एक ही भेड़ है अब यह कहता है कि अपनी भेड़ भी मुझे दे डाल और बात चीत में मुझसे कड़ाई की है। (२३) दाऊद ने कहा कि इसने जो तेरी भेड़ माँग कर अपनी भेडों में मिलाने के लिए तुझ पर अत्याचार किया है और बेहूदा शरीक एक दूसरे पर ज्यादती करते रहते हैं मगर जो लोग ईमान रखते और नेक काम करते हैं और ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं और दाऊद को ध्यान आया कि हमने उनको आजमाया फिर अपने पालनकर्ता से क्षमा माँगी और झुककर मेरी ओर रुजू हुआ। (२४) और हमने उनको क्षमाकर दिया और हमारे यहाँ उसका सम्मान और अच्छा ठिकाना है। (२५) ऐ दाऊद हमने तुझे देश में नायव बनाया तो लोगों में न्याय किया कर और अपनी इच्छा पर न चल एसा करोगे तो इन्द्रियों को इच्छाओं की पैरवी तुझे ईश्वर की राह से भटका देगी जो लोग ईश्वर की राह से भटकते उसको कठोर दण्ड होना है। इसलिए कि प्रलय के दिनको भूल रहे हैं। (२६) (रुकू २)

और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो चीजें आकाश और पृथ्वी में है उनको वृथा नहीं पैदा किया। यह उन लोगों का ध्यान है

जो काफिर हैं और नरक के सबब से काफिरों के हाल पर अफसोस है। (२७) क्या हम ईमानदारों और नेक काम करने वालों को जमीन में झगड़ालुओं के बराबर कर देंगे या हम संयमी को बदकारों के बराबर करेंगे। (२८) ऐ पैगम्बर यह कुरान बरकत वाली किताब है जो हमने तेरी तरफ उतारी है ताकि लोग इसकी आयतों में ध्यान दें और अक्ल वाले समझें। (२९) हमने दाऊद को सुलेमान दिया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था। (३०) जब शाम के समय खासे असील घोड़े उनके सामने पेश किये गये तो वह उनके देखने में ऐसे जुटे कि नमाज का समय जाता रहा। (३१) तो कहने लगे कि मैंने अपने पालनकर्ता की यादगारी से माल की मुहब्बत जियादह की यहां तक कि सूरज ओट में छिप गया (३२) अच्छा तो इन घोड़ों को मेरे पास लौटा लाओ और अब पिंडलियाँ और गर्दनों पर हाथ फेरने लगे। (३३) और हमने सुलेमान को जाँचा और उसके तख्त पर एक मुर्दा जिस्म को डाल दिया और फिर सुलेमान रुजू हुआ (३४) बोला ऐ मेरे पालनकर्ता मेरा अपराध क्षमा कर और मुझे ऐसा राज्य दे कि मेरे पीछे किसी को न चाहे। निस्संदेह तू बड़ा दाता है। (३५) फिर हमने हवा उसके काबू में कर दी थीं उसी की आज्ञा से हवा धीरे-धीरे जहां वह चाहता था चलती थी। (३६) और शैतान जितने इमारत बनाने वाले और डुबकी लगाने वाले थे उनके काबू में कर दिये थे। (३७) कितने बंधे बेड़ियों में हैं। (३८) यह हमारी बे हिसाब देन है अब तू भलाई कर या अपने ही पास रक्खे रह। (३९) और निस्संदेह सुलेमान का हमारे यहां मर्तबा और अच्छा ठिकाना है। (४०) रुकू ३)

ऐ पैगम्बर हमारे दास अयूब को याद करो जब उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि शैतान ने मुझे दुख और कष्ट पहुंचा रक्खी है। (४१) खुदा ने कहा अपने पाँव से लात मार इस पर लात मारी तो एक झरना निकला तो हमने अयूब से कहा कि तुम्हारे नहाने और पीने के लिये यह ठँडा पानी हाजिर है। (४२) और हमने उसको उसके

बाल-बच्चे और उनके साथ इतने ही और दिये यह हमने अपनी तरफ से कृपा की ताकि जो समझ रखते हैं उनके लिए यादगारी रहे। (४३) और हमने अयूब से कहा सींकों का मुट्ठा अपने हाथ में ले और अपनी स्त्री को उससे मार और अपनी सौगन्ध न तोड़ हमने अयूब को संतोषी पाया। वह अच्छा बन्दा रुजू रहने वाला था। (४४) और ऐ पैगम्बर हमारे बन्दा इब्राहीम, इसहाक और याकूब को याद कर वे हाथों और आंखों वाले थे। (४५) हमने उनको एक खास बात प्रलय की याद के लिए चुना था। (४६) और वह हमारे यहाँ कबूल किये हुए नेक दासों में हैं। (४७) और इस्माईल और इलयास और जुलकिफिल को याद कर सब नेक बन्दों में हैं। (४८) यह जिक्र है और निस्संदेह संयमियों का अच्छा ठिकाना है। (४९) रहने के लिए बैकुण्ठ के बाग जिनके द्वार उनके लिए खुले होंगे। (५०) उनमें तकिया लगा-कर बैठेंगे वहां बैकुण्ठ के नौकरों से बहुत से मेवे और शराब मँगावेंगे। (५१) और उनके पास नीची नजर वाली स्त्रियाँ होंगी और हम उम्र होंगी। (५२) यह वह दैन है जिनका तुमसे प्रलय के दिन के लिए वादा किया जाता है। (५३) निस्संदेह यह हमारी दी हुई रोजी है जो कभी समाप्त होने की नहीं। (५४) यह बात है कि सरकशों का बुरा ठिकाना है। (५५) नरक उसमें इनको जाना पड़ेगा और वह बुरी जगह है। (५६) यह खौलता हुआ पानी और पीब इसको चक्खो (५७) और इस तरह की और तरह-तरह की चीजें हैं। (५८) यह एक फौज हैं वही तुम्हारे साथ नरक में धँसती

---

* कहते हैं कि अयूब ने अपनी बीबी से किसी बात पर बिगड़ कर कसम खाई थी कि मैं तुमको सौ छडियाँ मारूंगा। कसम का पालन करने के लिये सौ सींकों की झाड़ से एक बार अपनी बीबी को मारने का हुक्म दिया गया।

आती है इनको जगह न मिले वह आग में जाने वाले हैं। (५९) बोले तुम्हीं तो हो तुम्हें खुशी भी नसीब न हो तुम्हीं तो यह हमारे आगे लाये हो यह बुरी जगह है। (६०) बोले ऐ हमारे पालनकर्ता जो यह हमारे आगे लाया उसको नरक में दोहरा दण्ड बढ़ा दे। (६१) और कहेंगे कि जिन लोगों को हम बुरे लोगों में गिना करते थे हम उनको नहीं देखते। (६२) क्या हमने उनको हंसोड़ ठहराया या उनकी तरफ से आखें टेढ़ी हो गई थीं। (६३) यह नरकवासियों का आपस में झगड़ना सच है। (६४) (रुकू ४)

ऐ पैगम्बर इन लोगों से कहो कि मैं सिर्फ डराने वाला हूं और एक ईश्वर के सिवाय और कोई भगवान नहीं। (६५) आकाश और पृथ्वी और उन चीजों का मालिक है जो आकाश पृथ्वी के नीच में है और वह बड़ा दानी है।। (६६) ऐ पैगम्बर इन लोगों से कहो कि कुरान बड़ी खबर है। (६७) क्या तुम इसको ध्यान में नहीं लाते। (६८) मुझको ऊपर वाली किसी आबादी की कुछ खबर न थी जब वह झगड़ते थे। (६९) मुझको तो यही आज्ञा आती है कि मैं सिर्फ एक जाहिरा डर सुनाने वाला हूं। (७०) जब तेरे पालनकर्ता ने देवदूतों से कहा कि मैं मिट्टी से एक अदमी बनाने वाला हूँ। (७१) तो जब मैं उसे पूरा कर लूं और अपनी रूह उसमें फूँक दूं तो तुम उसके आगे सिजदे में गिर पड़ना। (७२) इसलिए सब ही देवदूतों ने उसे शीश नवाया। (७३) इब्लीस ने घमण्ड किया और वह काफिरों में था। (७४) ईश्वर ने इब्लीस से पूंछा कि ऐ इब्लीस जिसको मैंने अपने हाथों वनाया उसको शीश नवाने से तुझे किसने रोका। क्या तूने घमण्ड किया या तू दर्जे में बड़ा था। (७५) बोला मैं उससे कहीं बेहतर हूं मुझको तूने आग से बनाया और उसको तूने मिट्टी से बनाया है। (७६) बताया तू यहाँ से निकल तू फटकारा हुआ है। (७७) और प्रलय तक मुझ पर हमारी फटकार है। (७८) बोला ऐ मेरे पालनकर्ता मुझको उस दिन तक का समय दे जब कि

मुर्दे दुबारा उठा खड़े किये जायेंगे। (७६) तुझको उस दिन तक का समय है। (८०) उस दिन तक जो मालूम है। (८१) फिर बोला तेरी सौगन्ध मैं इस सबको बेखबर करूंगा। (८२) मगर जो तेरे चुने बंदे हैं उनको नहीं। (८३) बताया तो ठीक बात यह है और ठीक ही कहता हूँ। (८४) कि मैं तुझसे और जो कोई उनमें से तेरी पैरवी करेगा उनसे नरक को भर दूंगा। (८५) ऐ पैगम्बर तुम इन लोगों से कहो कि मैं ईश्वर की इस आज्ञा पर तुमसे कुछ थदला नहीं माँगता और न मुझको तकल्लुफ करना आता है। (८६) यह कुरान संसार के लोगों को शिक्षा है। (८७) और कुछ दिनों में तुमको इसका पता चल जाएगा। (८८) (रुकू ५)

सूरे जुमर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ७५ आयत और ८ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु दयावान, है। बड़ा चमत्कारिक अल्लाह की तरफ से इस किताब का उतरना हुआ है। (१) हमने तेरी तरफ ठीक किताब उतारी है सो केवल अल्लाह ही की पूजा किये जाओ। (२) पूजा सारी ईश्वर ही के लिए है। और जिन लोगों ने ईश्वर के सिवाय हिमायती बना रखे हैं कि हम इनकी पूजा सिर्फ इस-लिए करते हैं कि ईश्वर के हमको नजदीक करें जिन-जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं ईश्वर उनके बीच उनका न्याय कर देगा। अल्लाह झूठे और सच न मानने वाले को आज्ञा नहीं दिया करता। (३) अगर ईश्वर किसी को अपना पुत्र बनाना चाहता तो अपनी सृष्टि

में से जिसको चाहता पसन्द करता। वह अकेला ईश्वर पवित्र और बड़ा बलवान है। (४) उसी ने आकाश और पृथ्वी कौ ठीक पैदा किया। रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है और उसी ने सूरज और चाँद को काम में लगा रखा है यह हरएक नियत समय तक चलता है वही ईश्वर बड़ा धर्म करने वाला है। (५) उसी ने तुम लोगों को अकेले शरीर से पैदा किया, फिर उसी से उसकी स्त्री को पैदा किया और तुम्हारे लिए आठ तरह के चौपाये पैदा किए। वही तुमको तुम्हारी माताओं के पेट में एक तरह के बाद दूसरी तरह तीन अन्धेरों में वनात है। यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता है उसी का राज्य हे उसके सिवाय कोई पूजित नहीं फिर किधर को फिरे चले जा रहे हो। (६) अगर तुम इन्कारी हो जाओ तो अल्लाह तुम्हारी परवाह नहीं करता और अपने मनुष्य के लिए इन्कारी को पसन्द नहीं करता और अगर तुम धन्यवाद करो तो वह तुम्हारे लाभ के लिए पसन्द करेगा और कोई किसी का बोझ नहीं उठायेगा फिर तुम को अपने पालनकर्ता की तरफ लौटकर जाना हैं। तो जैसे जैसे कर्म तुम करते रहे हो तुमको बता देगा। वह दिल की बातों को जानता है। (७) और जब मनुष्य को कोई दुःख पहुंचाना है तो अपने पालन-कर्ता की तरफ रजू होकर पुकारता है फिर जब ईश्वर अपनी तरफ से उसको कोई नियामत देता है तो जिस लिए उसे पहले पुकारता था भूल जाता है और ईश्वर क शरीक ठहराया है ताकि ईश्वर की राह से भटकावे तो कह और बरत ले इन्कार के साथ थोड़े दिन में तू नरकवासियों में होगा। (८) भला जो रात के समय में ईश्वर की बन्दगी में लगा है शौश झुकाता है और खड़ा होता परलोक से डरता है और अपने पालनकर्ता की कृपा का उम्मेदवार है ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि कहीं जानने वाले बराबर होते हैं वही लोग शिक्षा पकड़ते हैं ो समझ रखते हैं। (९) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर समझा दो कि हमारे ईमानदार मनुष्यों अपने पालनकर्ता से डरो जो मनुष्य इस संसार में नेकी करते हैं उनके लिए भलाई है और ईश्वर की पृथ्वी चौड़ी है संतोषियों को उसका बे हिसाब मिलता है। (१०) ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि मुझे आज्ञा मिली है कि मैं केवल अल्लाह ही की पूजा करूं (११) और मुझे यही आज्ञा मिली है कि मैं सबसे पहिला मुसलमान बनूं। (१२) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि अगर मैं पालनकर्ता की अवज्ञा करूं तो मुझे बड़े दिन के दण्ड से डर है। (१३) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि मैं निरे खुदाही में लगकर उसकी पूजा करता हूं। (१४) रहे तुम सो उसके सिवाय जिसको चाहो पूजो ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि घाटे में वह मनुष्य हैं जिन्होंने प्रलय के दिन अपने को और अपने बाल बच्चों को घाटे में डाला। यही तो प्रत्यक्ष घाटा है। (१५) इनके ऊपर आग का ओढ़ना और नीचे आग ही का बिछौना होगा। यह बात है जिससे ईश्वर अपने बन्दों को डराता है तो ऐ हमारे सेवकों हमारा ही डर मानो। (१६) और जो मनुष्य बुतों के पूजनेसे बचे और ईश्वर की ओर ध्यान दिया उनके लिये बैकुण्ठ ही शुभसन्देश है सो तू हमारे उन सेवकों को शुभसन्देश सुना दे। (१७) जो हमारी बात को कान लगाकर सुनते और उसकी अच्छी बातों पर चलते हैं यही वह लोग हैं जिनको ईश्वर ने राह दी है और यही बुद्धिमान हैं। (१८) भला जिसे दण्ड की आज्ञा हो चुकी सो तू उस नरक वासी को निकाल सकेगा। (१९) मगर जो अपने पालनकर्ता से डरते हैं उनके लिये बैकुण्ठ में खिड़कियों पर खिड़कियाँ बनी हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी यह वादा खिलाफी नहीं करता। (२०) क्या तूने नहीं देखा कि अल्लाह ने आकाश से पानी उतारा फिर पृथ्वी के चश्मों में वह पानी बहा दिया फिर उससे रंग बिरंगी खेती निकलती है फिर वह जोरों पर आती है फिर पके पीछे तू उसे पीली पड़ी हुई देखेगा। तो ईश्वर ने उसे चूर-चूर कर डाला है निस्सन्देह खेती के इस शुरू और अन्त में बुद्धिमानों के लिये शिक्षा है। (२१) (रुकू २)

जिसका दिल ईश्वर ने इस्लाम के लिये खोल दिया फिर वह अपने पालनकर्ता की रोशनी में है अफसोस है उन मनुष्यों पर जिनके दिल अल्लाह की याद से कठोर हैं। यही लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (२२) अल्लाह ने बहुत ही अच्छी किताब उतारी और बार-बार दुहराई गई हैं जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते हैं इससे उनके बदन काँप उठते हैं फिर उनके शरीर और दिल अल्लाह की याद में नरम होते हैं। यह अल्लाह की आज्ञा है जिसे चाहे इससे राह दिखाता है और जिसे ईश्वर भटकावे उसे फिर कोई शिक्षा देने वाला नहीं। (२३) कोई जो प्रलय के दिन बुरे दण्ड से अपने मुंह छिपा सके और अत्याचारियों से कहा जायगा जैसा तुमने किया है वैसा भुगतो। (२४) इनसे पहिलों ने झुठलाया था तो उनको दण्ड ने ऐसी तरफ से आ घेरा कि उन्हें उसकी खबर न थी। (२५) सांसारिक जीवन में अल्लाह ने उन्हें बदमानी चखाई और परलोक का दण्ड कहीं बढ़कर है अगर यह मनुष्य जानते (२६) और हमने मनुष्यों के लिये इस कुरान में सभी तरह के उदाहरण बयान किये हैं शायद वह लोग शिक्षा पकड़ें। (२७) अरबी कुरान में किसी तरह की पेचीदगी नहीं ताकि डरें। (२८) अल्लाह ने एक उदाहरण बताया है कि एक आदमी है उसमें कई साझी हैं जो आपस में भेद रखते हैं और एक मनुष्य एक मनुष्य का पूरा गुलाम है तो क्या इन दोनों की हालत एक सी हो सकती है। सब खूबी अल्लाह को है पर बहुत लोग समझ नहीं सकते। (२९) तुमको मरना है और वे भी मरेंगे। (३०) फिर प्रलय के दिन तुम अपने पालनकर्ता के सामने झगड़ोगे। (३१) (रुकू ३)

चौबीसवाँ पारा (फमन अजलम)

फिर उससे बढ़कर अत्याचारी कौन जो ईश्वर पर झूंठ बोले और सच्ची बात जब उसके पास पहुंची तो झुठलाया। क्या काफिरों का नरक ही ठिकाना नहीं है? (३२) और जो सत्य बात लेकर आया और जिन्होंने सच माना यही लोग संयमी हैं। (३३) जो चाहेंगे उनके पालनकर्ता के यहाँ उनके लिये होगा नेकी करने वालों का यही बदला है। (३४) ताकि ईश्वर उनके कुकर्म उनसे उतार दे और उनके नेक कामों के बदले में उनको फल दे (३५) क्या ईश्वर अपने बन्दे के लिये काफी नहीं (३६) और जिसको ईश्वर शिक्षा दे तो कोई उसे मार्ग भुलाने वाला नहीं और ऐ पैगम्बर यह लोग तुमको ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजितों से डराते हैं और जिसको गुमराह करे उसको कोई राह बताने वाला नहीं क्या ईश्वर बड़ा बदला देने वाला नहीं है। (३७) और ऐ पैगम्बर अगर तू इनसे पूछ कि आकाश और पृथ्वी को किसने उत्पन्न किया तो कहेंगे ईश्वर ने। कहो कि भला देखो तो सही कि ईश्वर के सिवाय जिनको तुम पुकारते हो अगर ईश्वर मुझे कोई कष्ट पहुँचाना चाहे तो क्या यह पूजित उस कष्ट को दूर कर सकते हैं या अगर ईश्वर मुझ पर कृपा करना चाहे तो क्या वह पूजित उसकी कृपा को रोक सकते हैं ऐ पैगम्बर तुम कहो कि मुझे तो ईश्वर काफी है। भरोसा रखने वाले उसी पर भरोसा रखते हैं। (३८) ऐ पैगम्बर इनसे कहो कि भाइयों तुम अपनी जगह काम किये जाओ मैं अपनी जगह काम कर रहा हूं फिर आगे चल कर तुमको मालूम हो जायगा। (३९) कि किस पर आफत आती है जो उसकी ख्वारी करे और किस पर सदा के लिए दण्ड उतरेगा। (४०) किताब हमने लोगों के लाभ के लिए तुम पर उतरी फिर जो कोई राह पर आया सो अपने भले को और जो कोई बहका सो अपने बुरे को बहका और तुझ पर उसका जिम्मा नहीं। (४१) (रुकू ४)

मनुष्यों के मरते समय अल्लाह उनकी जानों को बुला लेता है और जो मनुष्य मरे नहीं उनकी जानें सोते समय नींद में बुला लेता है फिर जिनकी निस्बत मौत की आज्ञा दे चुका है उनको सोने वालों को एक नियत समय तक फिर संसार में भेज देता है जो लोग ध्यान दें उनके लिये इसमें निशानी* हैं। (४२) क्या इन मनुष्यों ने ईश्वर के सिवाय दूसरे सिफारिशी ठहराये हैं ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो वैसे यह सिफारिशी कुछ भी अधिकार न रखते हों और न समझ रखते हों तो भी तुम उन्हें माने जाओगे। (४३) कहो कि सिफारिश तो सारे ईश्वर के अधिकार में है आकाश और पृथ्वी में उसी का राज्य है फिर तुम उसी की तरफ से लौटाये जाओगे। (४४) और जब अकेले ईश्वर का जिक्र हो तो मनुष्य परलोक का विश्वास नहीं रखते उनके दिल रुक जाते हैं और जब ईश्वर के सिवाय दूसरे पूजितों का जिक्र आता है तो यह लोग खुश हो जाते हैं। (४५) ऐ पैगम्बर तू कह कि ऐ ईश्वर आकाश और पृथ्वी के पैदा करने वाले, छिपे और खुले के जानने वाले, जिन बातों में तेरे बन्दें आपस में भेद डाल रहे हैं तू ही इनके झगड़ों को चुकायेगा। (४६) और अपराधियों के पास जितना कुछ पृथ्वी में है वह सब को और उसके साथ उतना ही और हो तो प्रलय के दिन दुखदाई दण्ड के छुड़वाने में सब दे डालें और इनको ईश्वर की ओर से ऐसा मामला पेश आवेगा जिसका उनको गुमान भी न था। (४७) और जैसे-जैसे कर्म यह लोग करते रहे हैं उनकी खराबियाँ उन पर जाहिर हो जायँगी और जिस सजा की हंसी उड़ाते रहे हैं वह उनको आ घेरेगी। (४८) इन्सान को जब कोई तकलीफ पहुंचती है तो हमको पुकारता है। फिर जब हम उसको अपनी ओर से कोई नियामत देते हैं तो कहने लगता है कि यह तो मुझको इल्म से मिला, यह जाँच है मगर बहुत लोग नही समझते। (४९) ऐसी बात अगले कह चुके हैं

*** सोना और मरना बराबर है। जैसे मनुष्य सोकर फिर उठता है जैसे-ही मर कर फिर उठेगा।**

फिर वह जो कमाते थे उनके काम न आया। (५०) और उनके कर्मों के बुरे फल उनको पहुंचे और इन मक्का के इन्कार करने वालों में से जो लोग अवज्ञाकारी हैं उनको उनके कर्म का बुरा फल मिलेगा और वह हरा न सकेंगे। (५१) क्या इनको मालूम नहीं कि अल्लाह जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और जिनको चाहता है नपी तुलीकर देता है इसमें इमान वालों के लिये निशानियाँ हैं। (५२) (रुकू ५)

ऐ पैगम्बर इनके कह दो कि ऐ हमारे बन्दों जिन्होंने अपनी जानों पर जियादती की अल्लाह की कृपा से नाउम्मेद न हो जाओ। अल्लाह तमाम पापों को क्षमा कर देता है। वह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५३) और तुम पालनकर्ता की ओर ध्यान दो और उसकी आज्ञा मानो। इससे पहिले कि तुम पर दण्ड आ उतरे और फिर उस समय तुमको सहायता न मिलेगी। (५४) और अपने पालनकर्ता की ओर रुजू हो और आज्ञाकारी बनो। इससे पहले कि अचानक दण्ड तुम पर आ उतरे और तुमको खबर न हो। (५५) कोई मनुष्य कहेगा अफ-सोस मैंने ईश्वर के सामने पाप किया और मैं तो हंसता ही रहा। (५६) या कहने लगा कि यदि ईश्वर मुझको शिक्षा देता तो मैं संय-मियों में होता। (५७) जब दण्ड देखा तब कहने लगा कि किसी तरह मुझको संसार में फिर जाना हो तो मैं नेको में हो जाऊं। (५८) हमारी आज्ञायें तुमको पहुंची तो तूने उन्हें झुठलाया और अकड़ बैठा और तू इन्कार करने वालों में था। (५९) और ऐ पैगम्बर तू प्रलय के दिन इन्हें देखेगा जो ईश्वर पर झूंठ बोलते थे उनके मुंह काले होंगे क्या घमण्डियों का ठिकाना नरक में नहीं है। (६०) और जो लोग संयमी हैं उनको ईश्वर सफलता के साथ छुटकारा देगा। उनको दण्ड नहीं छुएगा और न वह उदास होंगे। (६१) अल्लाह हर चीज को पैदा करने वाला है और वही हर चीज का जिम्मा लेने वाला है (६२) आकाश और पृथ्वी की कुञ्जियाँ उसी के पास हैं और जो मनुष्य ईश्वर की आयतों को नहीं मानते वहीं घाटे हैं। (६३) (रुकू ६)

ऐ पैगम्बर इन मनुष्यों से कहो कि क्या तुम मुझे ईश्वर के सिवाय दूसरों की पूजा की आज्ञा देते हो। (६४) और तुमको और तुझ से अगलों को आज्ञा हो चुकी है कि अगर तूने शरीक ठहराया तो तेरे किये सब अकार्थ जावेंगे और तू घाटे में होगा। (६५) बल्कि अल्लाह ही की पूजा करो और धन्यवाद दो। (६६) और इन लोगों ने ईश्वर की जैसी कदर करनी चाहिये थी वैसी कदर नहीं की। हालाँकि प्रलय के दिन सारी पृथ्वी उसकी मुट्ठी में होगी और सब आकाश लिपटे हुये उसके दाहिने हाथ में होंगे और वह इनके बनाये हुए शरीकों से ज्यादा पवित्र और बहुत ऊपर है। (६७) और सूर नरसिंह फूंका जायगा तो जो आकाश और पृथ्वी में हैं बेहोश हो जायंगे और देखने लगेंगे। (६८) और पृथ्वी अपने पालनकर्ता के नूर से चमक उठेगी और किताबें रख दी जायँगी और उनमें पैगम्बर गवाह हाजिर किये जायँगे और उनमें इन्साफ से न्याय कर दिया जायगा और उन पर अत्याचार न होगा। (६९) और जिसने जैसे काम किये हैं सबको पूरा पूरा बदला मिलेगा और जो कुछ भी कर रहे हैं ईश्वर उससे खूब जानकार है। (७०) (रुकू ७)

और काफिर नरक की तरफ टोलियाँ बना-बनाकर भेजे जायंगे यहाँ तक कि जब नरक के पास पहुंचेंगे तो उसके द्वार खोल दिये जायंगे और नरक का दारोगा उनसे कहेगा कि क्या तुममें के पैगम्बर तुम्हारे पास नहीं आये थे कि वह तुम्हारे पालनकर्ता की आयतें तुमको पढ़-पढ़ कर सुनाते और इस दिन की भेंट से तुम्हें डराते यह उत्तर देंगे कि हाँ मगर दण्ड की आज्ञा काफिरों हर कायम हो गई है। (७१) फिर इनसे कहा जायगा कि नरक के द्वारों में जाओ हमेशा इसमें रहो गरज अकड़ने वालों का बुरा ठिकाना है (७२) और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता से डरते थे वे टोलियाँ बना-बनाकर बैकुण्ठ के पास पहुंचेंगे और उसके द्वार खुले होंगे और वैकुण्ठ के कार्यकर्ता उनसे सलाम करके कहेंगे कि तुम मजे में रहे। बैकुण्ठ में हमेशा के लिए

दाखिल हो (७३) और यह मनुष्य कहेंगे कि ईश्वर का धन्यवाद हमको सचकर दिखाया और हमको पृथ्वी का मालिक बनाया कि हम बैकुण्ठ में जहाँ चाहें रहें तो नेक काम करने वालों को अच्छा फल है। (७४) और ऐ पैगम्बर उस दिन तू देखेगा कि देवदूत अपने पालनकर्ता की खूबी बताते तख्त को आस पास घेरे हैं और इनमें न्याय के साथ निर्णय कर दिया जायगा और कहा जायगा कि संसार के पालनकर्ता अल्लाह की बड़ाई हो। (७५) (रुकू ८)

सूरे मोमिन

मक्के में अवतरित हुई इसमें ८५ आयतें और ६ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम (१) जोरावर हिकमत वाले अल्लाह की तरफ से इस किताब का उतरना हुआ है। (२) पापों का क्षमा करने वाला है और तोबा का कबूल करने वाला कठोर दण्ड देने वाला है। बड़ी कृपा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं, उसकी ओर लौटकर जाना है। (३) ईश्वर की आयतों में सिर्फ वही मनुष्य झगड़े निकालते हैं जो इन्कार करने वाले हैं। इन मनुष्यों का शहरों से इधर-उधर चलना फिरना तुमको धोखे में न डाले (४) इनसे पहिले नूह की जाति ने और उनके बाद और गुटों ने अपने पैगम्बरों को झुठलाया और हर गुट ने अपने पैगम्बर के गिरफ्तार करने का इरादा किया और झूठी बातों से झगड़े ताकि अपनी हुज्जतों से सच को डिगा दें। फिर मैंने उनको धर पकड़ा तो मैंने उसको कैसा दण्ड दिया। (५) और इसी तरह काफिरों पर तुम्हारे पालनकर्ता की बात साबित हुई कि यह नरकगामी हैं। (६) जो देव-

दूत तख्त को उठाये हुये हैं और जो तख्त के आस पास हैं। अपने पालनकर्ता को बड़ाई और पवित्रता के साथ याद करते रहते और उस पर ईमान लाते और ईमान वालों के लिए क्षमा कराते हैं। ऐ हमारे पालनकर्ता तेरी कृपा और तेरे ज्ञान में सब चीजें समाई हैं। जिन्होंने तौबा की और तेरे मार्ग पर चले उनको क्षमा कर दे और उन्हें नरक के दण्ड से बचा। (७) और ऐ हमारे पालनकर्ता उनको बैकुण्ठ के बसने के बागों में लें जाकर दाखिल कर जिनका तूने उनसे प्रण किया है और उनके बाप दादों और उनकी पत्नियों और उनकी सन्तान में से जो-जो नेक हो उनको भी। निस्सन्देह तू बड़ा चमत्कार वाला है। (८) और उनको खराबियों से बचा और जिसको तूने उस दिन खराबियों से बचाया उस पर तूने कृपा की और यही बड़ी कामयाबी है। (९) (रुकू १)

जो मनुष्य इन्कार करने वाले है प्रलय के दिन उनसे जोर से कह दिया जायगा कि जैसे तुम आज अपने जी से दुखी हो इससे बढ़कर ईश्वर दुखी था। जब कि तुम ईमान की ओर बुलाये जाते थे और नहीं मानते थे। (१०) काफिर कहेंगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता तू हमको दो बार मृत और दो बार जीवित कर चुका। बस हम अपने पापों का स्वीकार करते है फिर निकलने की कोई सूरत है। (११) ईश्वर कहेगा नहीं और यह इसलिये कि संसार में जब अकेले ईश्वर को पुकारा जाता था तो तुम नहीं मानते थे और अगर उसके साथ शरीक ठहराये जाते थे तो तुम मान लेते थे तो आज सब से ऊपर और बड़े अल्लाह ही की आज्ञा है। (१२) वही है जो तुमको अपनी निशानियाँ दिखाता और आकाश से तुम्हारे लिए रोजी उतारता है और यही सोचता है जो ध्यान देता है। (१३) तो मुसलमानों को ईश्वर ही के आज्ञाकारी विचार करके उसी को पुकारो यद्यपि काफिरों को भले ही बुरा लगे। (१४) साहिब ऊंचे दर्जे के तख्त का स्वामी अपने दासों में से जिस पर

चाहता है अपने अधिकार से भेद की बात उतारता है ताकि पैगम्बर प्रलय के दिन की मुसीबत से डरावे। (१५) जब कि वह ईश्वर के सामने आ मौजूद होंगे उनकी कोई बात ईश्वर से छिपी न होगी आज किसका राज्य है अकेले अल्लाह दबाववाले की (१६) आज हर आदमी अपने किये का बदला पाएगा आज किसी पर अत्याचार न होगा। अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है। (१७) और इन मनुष्यों को आने वाले दिन से डराओ कि रंज के कारण दिल गले तक आ जावेंगे। पापियों का न कोई मित्र होगा और न कोई सिफारिशी होगा जिसकी बात मानी जावे। (१८) ईश्वर आँखों की चोरी और जो दिल में छिपी है जानता है। (१९) और अल्लाह ठीक आज्ञा देता है और उसके सिवाय जिन पूजितों को यह लोग पुकारते हैं वह किसी तरह की आज्ञा नहीं दे सकते। निस्सन्देह अल्लाह सुनने वाला है। (२०) (रुकू २)

और क्या इन लोगों ने देश में चल फिर कर नहीं देखा कि जो उनसे पहिले थे उनका परिणाम क्या हुआ। वह बलबूते के लिहाज से और उन निशानों के लिहाज से जो पृथ्वी में छोड़े गये हैं इनसे कहीं बढ़चढ़ कर थे। तो ईश्वर ने उनको उनके अपराधों के दण्ड में घेर लिया और उनको ईश्वर से कोई बचाने वाला न हुआ। (२१) यह इस कारण से हुआ कि उनके पैगम्बर चमत्कार लेकर उन के पास आये इस पर उन्होंने न माना तो अल्लाह ने उनको धर पकड़ा वह बड़ी कठोर दण्ड देने वाला है। (२२) और हमने मूसा को अपनी निशानियाँ और खुली ईश्वर ने संदेश देकर भेजा। (२३) फिरऔन और हामान* और कारून की ओर। तो वह कहने लगे कि यह जादूगर झूठा हैं। (२४) फिर जब मूसा हमारी ओर से सच लेकर उनके पास गया तो उन्होंने आज्ञा दी कि जो लोग मूसा के साथ ईमान लाये

*** हामान फिरऔन का मंत्री था। कारून बड़ा धनी था। कारून का खजाना मशहूर है।**

हैं उनके पुत्रों को मार डालो और पुत्रियों को जींता रखो और काफिरों का दावा लगती में होता है। (२५) और फिरऔन ने अपने दरबारियों से कहा कि मुझे छोड़ दो कि मैं मूसा को कत्ल करूं और वह अपने पालनकर्ता को बुलावे मुझको सन्देह है कि कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे दीन को उलट पलट कर डाले या देश झगड़ा फैलावे। (२६) और मूसा ने कहा मैं अपने पालनकर्ता और तुम्हारे पालनकर्ता की शरण ले चुका हूं। हर एक घमण्डी से जो प्रलय को नहीं मानता। (२७) (रुकू ३)

और फिरऔन के मनुष्यों में से एक मनुष्य ईमानदार था लो अपने ईमान को छिपाता था वह बोला कि क्या तुम एक मनुष्य को कत्ल करने को उद्यत हो कि वह ईश्वर ही को अपना पालनकर्ता बताता है। हालाँकि वह तुम्हारे पालनकर्ता की ओर से तुम्हारे पास चमत्कार ले कर आया है और अगर झूठा भी हो तो उसकी झूठ का ववाल उसी पर पड़ेगा और अगर सच्चा हुआ तो जिस-जिस का तुमसे प्रण करता है उनमें से कोई न कोई तुम पर आ उतरेगा। अल्लाह किसी झूंठे अवज्ञाकारी को आदेश नहीं करता। (२८) आज तुम्हारा राज्य देश में बढ़ा चढ़ा है अगर ईश्वर का दण्ड हमारे सामने आवे तो कौन हमारी सहायता करेगा। फिरऔन ने कहा में तुमको वही बात समझता हूं जो मैं समझा हूं और वही मार्ग बताता हूं जिसमें भलाई है। (२९) और ईमानदार बोला ऐ भाइयों मुझको तुम्हारी बाबत डर है कि तुम कर अगले गुटों जैसा दिन आ जाय। (३०) जैसा नूह, आद और समूद की जाति। और उन लोगों का हुआ जो उनके बाद हुए और अल्लाह तो बन्दों पर किसी तरह का अत्याचार करना नहीं चाहता। (३१) और ऐ कौम मुझको तुम्हारे लिए प्रलय के दिन का डर है। (३२) जब कि तुम पीठ देकर भागोगे। तुमको ईश्वर से कोई न बचावेगा और ईश्वर जिसको गुमराह करे तो उसको कोई आदेश देने वाला नहीं। (३३) और इससे पहिले यूसुफ खुली आज्ञा लेकर

तुम्हारे पास आ चुका है। फिर जब वह तुम्हारे पास लेकर आये तुम उनमें सन्देह ही करते रहे यहाँ तक कि जब वह मर गया तब तुम कहने लगे कि इसके बाद अल्लाह कोई पैगम्बर न भेजेगा। इसी तरह अल्लाह उनको जो लोग हद्द से बढ़े हुए सन्देह में पड़े रहते हैं राह भटकाया करता है। (३४) जो मनुष्य ईश्वर की आयतों में बिना किसी प्रमाण के झगड़ते हैं अल्लाह के और ईमान वालों के लिए नापसंद बात है। घमण्डी सरकशों के दिलों पर अल्लाह उसी तरह मुहर लगा दिया करता है। (३५) और फिरऔन ने कहा ऐ हामान मेरे लिये एक महल बनवा कि मैं रास्तों पर पहुंचूं (३६) रास्तों में आकाश के मैं मूसा के ईश्वर तक पहुंचूं और मैं तो मूसा को झूठा समझता हूं। और इसी तरह फिरऔन की बदकारी उसको भलाई कर दिखाई गई और वह राह से रोका गया और फिरऔन की तदबीरें बेकार होने वाली थीं। (३७) (रुकू ४)

और वह ईमानदार बोला ऐ कौम मेरे कहे पर चल मैं तुमको सीधा मार्ग दिखा दूंगा। (३८) भाइयो यह सांसारिक जीवन थोड़ा है और परलोक रहने का घर है। (३९) जो बुरे काम करता है उसको वैसा ही बदला मिलेगा और जो नेकी करता है मनुष्य हो या स्त्री मगर हो ईमानदार तो यह लोग बैकुण्ठ में होंगे वहाँ उनको बेहिसाब रोजी मिलेगी। (४०) और ऐ कौम मुझे क्या हुआ कि मैं तुमको छुटकारे की तरफ और तुम मुझे नरक की तरफ बुलाते हो (४१) तुम मुझ बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ्र करूं और उसके साथ उस चीज को शरीक करूं जिसका मुझे ज्ञान ही नहीं और मैं तुम्हें बली बख्शने वाले की तरफ बुलाता हूं। (४२) कुछ शक नहीं कि जिस चीज की तरफ मुझको बुलाते हो वह न संसार में पुकारे जाने के लायक है और न परलोक में और कुछ सन्देह नहीं कि हमको अल्लाह की तरफ लौट कर जाना है जो लोग सीमा से बढ़े हुये हैं वही नरकवासी हैं। (४३) जो

मैं तुमसे कहता हूं सो आगे याद करोगे और मैं अपना काम ईश्वर को सौंपता हूं। निस्सन्देह अल्लाह की निगाह में सब जीव हैं। (४४) इसलिए मूसा को तो अल्लाह ने फिरऔनियों के बुरे दावों से बचा दिया और फिरऔनियों को बुरे दण्ड ने घेर लिया (४५) यानी नरक की सुबह ओर शाम फिरऔन के लोग आग के सामने खड़े किये जाते हैं और जिस दिन प्रलय आवेगी कठोर दण्ड मिलेगा। (४६) और एक समय एक दूसरे से नरक में झगड़ेंगे तो कमजोर मनुष्य अत्याचारियों से कहेंगे कि हम तुम्हारे काबू में थे फिर क्या तुम थोड़ी सी आग भी हम पर से हटा सकते हो। (४७) घमण्डी कहेंगे कि हम सब इसी में हैं अल्लाह बन्दों में आज्ञा दे चुका है। (४८) और जो लोग नरक में हैं वह नरक के कार्यकर्त्ता से कहेंगे कि अपने पालनकर्ता से अर्ज करो कि एक ही दिन का दण्ड हमसे हलकी कर दिया जावे। (४९) वह उत्तर देंगे क्या तुम्हारे पैगम्बर तुम्हारे पास खुले चमत्कार लेकर नहीं आते रहे वह कहेंगे हाँ! फिर तुम्हीं पुकारो और काफिरों का पुकारना केवल भटकना है और कुछ नहीं। (५०) (रुकू ५)

हम संसारिक जीवन में अपने पैगम्बरों की और ईमान वालों की सहायता करते हैं और उस दिन भी सहायता करेंगे जबकि गवाह खड़े होंगे (५१) जिस दिन इन्कारियों का उज्र काम न देगा और उन पर फटकार होगी और उनको बुरा घर मिलेगा। (५२) और हमने मूसा को शिक्षा दी और इसराईल के बेटों को किताब का वारिस बनाया। (५३) बुद्धमानों के लिए शिक्षा और आदेश है। (५४) सो ऐ पैगम्बर तू ठहरा रह ईश्वर का प्रण सच्चा है और अपने पापों की क्षमा मांग और सुबह और शाम अपने पालनकर्ता की पवित्रताकी प्रार्थना करो। (५५) जो लोग बिना किसी प्रमाण के ईश्वर की आयतों में झगड़ते हैं उनके दिलों में अकड़ है वह इसको न पहुंचेंगे सो ईश्वर की शरण माँग वह सुनता देखता है। (५६) आकाशों को और पृथ्वी को

पैदा करना आदमियों के पैदा करने के मुकाबिले में बड़ा काम है मगर बहुधा लोग नहीं समझते। (५७) और अन्धा और आँखों वाला बराबर नहीं और ईमानदार जो भले काम करते हैं कुकर्मियों के बराबर नहीं। तुम थोड़ी ही भलाई पकड़ते हो। (५८) प्रलय आने वाली है इसमें संदेह नहीं लेकिन अक्सर लोग ईमान नहीं लाते। (५९) और तुम्हारे पालनकर्ता ने मुझ से कहा है कि तुम दुआ करो। मैं उसे कबूल करूंगा। जो लोग मेरी पूजा से सिर उठाते हैं बदनाम होकर नरक में जावेंगे। (६०) (रुकू ६)

अल्लाह है जिसने तुम्हारे लिये रात बनाई ताकि तुम उसमें आराम करो और दिन बनाए ताकि देखो। अल्लाह लोगों पर बड़ा ही कृपालु है लेकिन बहुधा लोग धन्यबाद नहीं देते। (६१) यही अल्लाह तुम्हारा पालनकर्ता हैं कुल चीजों का पैदा करने वाला उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। फिर तुम किधर बहके चले जाते हो। (६२) जो लोग ईश्वर की आयतों से इन्कारी हैं इसी तरह बहकाये जाते हैं। (६३) अल्लाह जिसने तुम्हारे लिए जमीन को ठहराने की जगह और आकाश को छत बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं और अच्छी बनाईं और बढ़िया वस्तुएं तुम्हें दीं। यही अल्लाह तो तुम्हारा पालनकर्ता है। सो अल्लाह सँसार का पालनकर्ता बड़ा दान देने वाला है। (६४) वह जीवित है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं तो खालिस उसी की आज्ञा का ध्यान रख कर उसी की पूजा करो। सब बड़ाइयाँ ईश्वर ही को हैं जो सब संसार का पोषण करने वाला है। (६५) ऐ पैगम्बर कहो कि मुझे मना हुआ है कि मैं अल्लाह के सिवाय उन्हें पूजूं जिन्हें तुम पुकारते हो। जब कि मेरे पालनकर्ता से मेरे पास खुली आयतें कुरान की आ गई और मुझे आज्ञा हुई है कि मैं संसार के पालनकर्ता पर ईमान लाऊं। (६६) वही है जिसने तुमको मिट्टी से पैंदा किया, फिर वीर्य से, फिर लोथड़े से, फिर तुमको बच्चा निकालता है तुम अपनी जवानी को पहुंचते हो। फिर तुम बूढ़े हो जाते हो और तुम में

से कोई पहिले मर जाते हैं और जिनको जवानी या बुढ़ापे तक जिन्दा रक्खा जाता है तो इस गरज से कि तुम ठीक समय तक पहुंचो और शायद तुम समझो। (६७) वही जिलाता और मारता है फिर जब वह किसी काम का करना ठान लेता है तो बस उसे कह देता है कि हो और वह हो जाता है (६८) (रुकू ७)

ऐ पैगम्बर क्या तूने उनकी तरफ न देखा जो ईश्वर की आयतों में झगड़ा करते हैं किधर को बहके चले जा रहे हैं। (६९) यह लोग जो किताब को झुठलाते हैं और उन किताबों को जो हमने अपने दूसरे पैगम्बरों की मारफत भेजी हैं सो आखिरकार इनको मालूम हो जायगा (७०) जब इनकी गर्दनों में तौक और जंजीरें होंगी घसीटते हुए उनको झुलसते पानी में ले जायँगे (७१) फिर आग में झोंके जायंगे। (७२) फिर इनसे पूछा जायगा कि ईश्वर के सिवाय तुम जिन पूजितों को शरीक ठहराते थे वे कहाँ हैं। (७३) वे कहेंगे हमसे खोये गये बल्कि हम तो पहले अल्लाह के सिवाय किसी चीज की पूजा करते ही न थे। अल्लाह काफिरों को इसी तरह भटकाते है। (७४) उनसे कहा जायगा कि यह तुम्हारी उन बातों का दण्ड है कि तुम पृथ्वी पर बेकार खुशियाँ मनाया करते थे और उसका दण्ड कि तुम इतराया करते थे (७५) तो अब नरक के दरवाज़ों में जा दाखिल हो हमेशा इसी में रहो गर्ज घमण्ड करने वालों का बुरा ठिकाना है (७६) ऐ पैगम्बर संतोष कर ईश्वर का प्रण सच्चा है। तो जैसे प्रण हम इन लोगों से करते हैं कुछ तुझको दिखायेंगे या तुझे संसार से उठा लेंगे फिर वे हमारी तरफ आवेंगे। (७७) और हमने तुमसे पहिले कितने पैगम्बर भेजे उनमें से कोई ऐसे हैं* जिन के हालात हमने तुमको सुनाये और

---

* कुरान में कुछ रसूलों ही के हालात हैं कुछ के नाम हैं और कुछ के नाम वही हैं और न उनके हालात ही हैं, यद्यपि वह समय-समय पर विभिन्न स्थानों में हुए हैं।

उनमें से कोई ऐसे हैं * जिनके हालात हमने तुमको नहीं सुनाये और किसी पैगम्बर की ताकत न थी कि बिना ईश्वर की आज्ञा कोई चमत्कार ला दिखावे । फिर जब ईश्वर की आज्ञा यानी दण्ड आया तो न्याय के साथ निर्णय कर दिया गया और जो लोग गलती में थे घाटे में रहे । (७८) (रुकू ८)

अल्लाह ऐसा है जिसने तुम्हारे वास्ते चौपाये बनाये ताकि उन पर सवारी लो और कोई उनमें से ऐसा है कि तुम उनको खाते हो (७९) और तुम्हारे लिए चौपायों में बहुत फायदे हैं और उन पर चढ़कर अपने दिली मतलब को पहुंचो और चौपायों पर और किश्तियों पर तुम लदे फिरते हो । (८०) और तुमको ईश्वर अपनी निशानियाँ दिखाता है तो ईश्वर की प्राकृतिक कौन २ सी निशानियों से इन्कार करते हो । (८१ क्या यह लोग देश में चखे फिरे नहीं कि अपने अगलों का परिणाम देखते । वह बलबूते के लिहाज से और पृथ्वी पर छोड़े हुए निशानों के लिहाज से इनसे कहीं बढ़चढ़ कर थे फिर उनकी कमाई उनके कुछ काम न आई । (८२) और जब उनके पैगम्बर उनके पास खुली हुई दलीलें लेकर आये तो जो उनके पास खबर थी उस पर खुश हुए और जिसकी हंसी उड़ाते थे वह इन्हीं पर उलट पड़ी । (८३) फिर जब उन्होंने हमारा दण्ड आते देखा तो कहने लगे कि हम एक ईश्वर पर ईमान लाये और जिन चीजों को हम शरीक ठहराते थे अब हम उनको नहीं मानते । (८४) मगर जब उन्होंने हमारी दण्ड आते देख ली तो ईमान लाना उनको कुछ भी लाभकारी न हुआ यह दस्तूर अल्लाह का है जो उसके बदों में जारी है और काफिर यहाँ घाटे में होते हैं । (८५) (रुकू ९)

सूरे हामीम सज्दह

मदीने में अवतरित हुई इसमें ५४ आयतें और ६ रुकू हैं

आल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम (१) कृपालु ईश्वर की तरफसे उतरा। (२) यह कुरान किताब है जिसकी आयतें अरबी बोली में समझदार लोगों के लिए ब्यौरे के साथ बयान कर दी गई हैं। (३) शुभ संदेश सुनाता और डरता है इस पर भी इनमें से अक्सरों ने मुंह मोड़ा और वह नहीं सुनते। (४) और कहते हैं कि जिस बात की तरफ तुम हमको बुलाते हो हमारे दिल उनसे पर्दों में हैं और हमारे कान भारी हैं और हममें और तुममें भेद है तू काम कर और हम काम कर रहे है। (५) ऐ पैगम्बर कहो कि मैं जैसा आदमी हूं मुझ पर आज्ञा आता है कि तुम्हारा एक पूजित है सो सीधे उसी की तरफ चले जाओ और उससे क्षमाँ मागो और शरीक करने वालों पर शोक है (६) जो जकात नहीं देते और वह परलोक के भी इन्कार करने वाले हैं। (७) वैसे जो लो लोग ईमान लाये और उन्होंने अच्छे काम किये उनके लिए बड़ा फल है। (८) ऐ पैगम्बर कहो क्या तुम उससे इन्कार करते हो जिसने दो दिन में पृथ्वी पैदा किया और तुम उसका शरीक बनाते हो। यही सारे जहान का पालन-कर्ता है। (६) (रुकू १)

और उसी ने पृथ्वी में पहाड़ बनाये और उसमें बरकत दी और उसी में माँगने वालों के लिए चार दिनो खुराकें ठहरा दीं। (१०) फिर आकाश की तरफ सीधा हो गया और वह धुआँ था पृथ्वी और आकाश दोंनो से कहा कि तुम दोनों खुशी से आये या लाचारी से। दोनों ने कहा हम खुशी से आये। (११) इसके बाद दो दिन में उस धुयें के सात आकाश बनाये और हर एक आकाश में अपना आज्ञा उतारा और पहले आकाश को हमने तारों से सजाया और हिफाजत

रक्खी यह बड़ा प्रकृति से सधा है। (१२) अगर मक्का के काफिर सिर फेरें तो कह कि जैसी कड़क और समूद पर हुई थी उसी तरह की कड़क से तुमको भी डरता हूं। (१३) तब उनके पास उनके आगे से और उनके पीछे से पैगम्बर आये कि ईश्वर के सिवाय किसी की पूजा न करो। वह कहने लगे अगर हमारा पालनकर्ता चाहता तो देवदूत भेजता फिर जो कुछ तुम लाए हो हम उसको नहीं मानते। (१४) सो आद के लोगों ने वृथा घमण्ड किया और बोले बलबूते में हम से बढ़कर कौन है क्या उनको इतना न सूझा कि जिस अल्लाह ने उनको पैदा किया वह बलबूते में उनसे कहीं बढ़-बढ़कर है। गरज वह लोग हमारी आयतों से इन्कार ही करते रहे। (१५) तो हमने उनपर बड़े जोर की आँधी चलाई ताकि संसारिक जीवन में उनको दण्ड का मजा चखायें और परलोक की दण्ड में तो पूरी खराबी है और उनको सहायता न मिलेगी। (१६) और वह जो समूद थे हमने उन्हें हिदायत की उन्होंने सीधी राह छोड़कर गुमराही तो ली। परिणाम यह हुआ कि उनके कुकर्मों की वजह से उनको जिल्लत की कड़क ने दबा लिया। (१७) और जो मनुष्य ईमान लाये और डरते थे उनको हम ने बचा लिया। (१८) (रुकू २)

और जिस दिन ईश्वर के शत्रु नरक की तरफ हाँके जायँगे उनके अलग-अलग गुट होंगे। (१९) यहाँ तक कि नरक के पास जमा होंगे तो जैसे जैसे काम यह लोग करते रहे हैं उनके कान* और उनकी आंखें और उनके चमड़े उनके मुकाबिले में गवाही देंगे। (२०) और यह लोग अपनी खाल से पूछेंगे कि तुमने हमारे खिलाफ क्यों गवाही दी

---

* काफिरों के अमालनामे (कर्म सूची) फरिश्ते लायेंगे तो वह कहेंगे यह हमारे शत्रु हैं। इनकी बात हम नहीं मानते। फिर पृथ्वी और आकाश उनके कर्मो को बतायेंगे परन्तु वे उनको भी झूठा बतायेंगे तो उनकी इन्द्रियां नाक कान आदि स्वयं बुरे कामों की गवाही देंगी।

वह उत्तर देगी कि जिस ईश्वर ने हर वस्तु को बोलने की शक्ति दी उसी ने हमसे बुलवा लिया। उसी ने तुम्हें पहिली बार पैदा किया और अब तुम लोग उसी की तरफ लौटाये जाओगे (२१) और तुम इस बात की परवा न करते थे कि तुम्हारे कान आंखें और चमड़ा गवाही देंगे बल्कि तुम को यह विचार था कि तुम्हारे बहुत से कामों से खुदा भी जानकार नहीं। (२२) और उस बदगुमानी ने जो तुमने अपने पालनकर्ता के हक में की तुमको नष्ट किया और तुम घाटे में आ गये। (२३) फिर अगर यह लोग संतोष करें तो उनका ठिकाना नरक है और अगर क्षमा चाहें तो इनको क्षमा नहीं दी जायगी। (२४) और हमने इन काफिरों के साथ बैठने वाले नियत कर दिये थे* तो उन्होंने इनके अगले और पिछले तमाम हालात इनकी नजर में अच्छे कर दिखाये और जिन्नों और आदमियों के सब फिर्के जो उनसे आगे हो चुके हैं उन पर बात ठीक पड़ी। निस्संदेह वे घाटे में थे। (२५) (रुकू ३)

और जो लोग इन्कार करने वाले हैं यह कहा करते हैं कि इस कुरान को मत सुनो और इसमें शोर मचा दिया करो। शायद तुम बाजी ले जाओ। (२६) सो जो लोग इन्कार करने वाले हैं हम उनको कठोर दण्ड देंगे। और उनके कामों का बुरा बदला देंगे। (२७) नरक ईश्वर के शत्रुओं यानी काफिरों का बदला है वह हमारी आयतों से इन्कार किया करते थे उसके दण्ड में उनको हमेशा के लिए नरक में घर मिला। (२८) और जो लोग इन्कार करने वाले हैं प्रलय में कहेंगे कि ऐ हमारे पालनकर्ता शैतान और आदमी जिन्होंने हमको गुमराह किया था एक नजर उनको हमें भी दिखा कि हम उनको अपने पैरों

---

* ये साथी शैतान हैं जिन्होंने उनको यह समझा रक्खा है कि दुनियां का सुख चैन उठाना चाहिए और आखिरत (परलोक) को तो किसी ने नहीं देखा उससे डरना बेकार है।

के तले डालें ताकि वह बहुत ही जलील हों। (२९) जिन लोगों ने इकरार किया कि अल्लाह ही हमारा पालनकर्ता है और जमे रहे उन पर देवदूत उतरेंगे कि न डरो और न रंज करो और बैकुण्ठ जिस का तुम्हें प्रण मिला था अब उससे खुदा हो। (३०) हम सांसारिक जीवन में और परलोक के जीवन में तुम्हारे सहायक हैं। जिस चीज को तुम्हारा जी चाहे और जो तुम माँगो मौजूद होगी। (३१) वहाँ क्षमा करने वाले कृपालु की तरफ से धन्यवाद है। (३२) (रुकू ४)

और उससे अच्छी किस की बात हो सकती है जो ईश्वर की तरफ बुलाये गये और नेक काम करे और कहे कि मैं ईश्वर के आज्ञाकारी सेवकों में हूं। (३३) और नेकी और बदी बराबर नहीं बुराई का बदला अच्छे बर्ताव से दे तो तुझ में और जिस आदमी में शत्रुता थी उसे तू पक्का मित्र पायेगा। (३४) और बात उन्हीं लोगों को दी जाती है जो सब्र करते हैं और यह उन्हीं लोगों को दी जाती है जिनके बड़े भाग्य हैं। (३५) और अगर तुमको किसी तरह का शैतानी ख्याल बहकाये तो ईश्वर से पनाह माँगो। वही सुनता जानता है। (३६) और ईश्वर की निशानियों में से रात और दिन और सूरज और चाँद भी हैं। न सूरज को शीश नवाओ और न चाँद को और अगर तुम ईश्वर के पूजने वाले हो तो अल्लाह ही को शीश नवाना जिसने इन चीजों को पैदा किया है। (३७) फिर अगर यह लोग घमण्ड करें तो ईश्वर को इनकी कोई परवा नहीं जो देवदूत तुम्हारे पालनकर्ता के पास हैं वह रात और दिन उसकी दिल से याद करने में लगे रहते हैं और वह नहीं थकते। (३८) और उसकी निशानियों में से एक यह है कि तू जमीन को दबी हुई देखता है फिर जब हम उस पर पानी बरसा देते हैं तो वह लहलहाने लगती और उभर कर चलती है। जिसने इस पृथ्वी को जिलाया वही मृत को भी जीवित करने वाला है। वह हर चीज पर शक्तिमान है। (३९) जो लोग हमारी आयतों में टेढ़ापन पैदा करते हैं हम पर छिपे नहीं।

आदमी नरक में डाला जाय वह अच्छा है या वह आदमी जिसको प्रलय के दिन खटका न हो—लोगों जो चाहो सो करो जो कुछ भी तुम करते हो ईश्वर उसको देख रहा है। (४०) जिन लोगों के पास शिक्षा आई और उन्होंने उसको न माना और यह कुरान अजीब किताब है। (४१) उसमें झूठ का न इसके आगे से और न इसके पीछे से दखल है हिकमत वाले सब खूबियों सहारे से उतरी हुई है (४२) ऐ पैगम्बर तुझ से वही बात कही जाती हैं जो तुझ से पहिले पैगम्बरों से कही जा चुकी है बेशक तेरा पालनकर्ता क्षमा करने वाला और उसकी सजा दुःखदाई है। (४३) और अगर हम इसको अरबी* के सिवाय दूसरी भाषा में बनाते तो कहते कि इसकी आयतें अच्छी तरह खोल कर क्यों नहीं समझाई गईं इनकी भाषा तो अरबी है और हमारी अरबी ऐ पैगम्बर कहो जो मनुष्य ईमान रखते हैं उन के लिए तो यह कुरान हिदायत और सेहत है और जो ईमान नहीं रखते उनके कानों में बोझ है और वह उनके हक में अन्धापन है। यह लोग दूर की जगह से पुकारते जाते हैं कैसे सुनें (४४) (रुकू) ५

और हमने मूसाको किताब दी थी तो उसमें बड़े २ भेद डाले गये और अगर तुम्हारे पालनकर्ता से न्याय करने की आज्ञा पहले उतर न चुकती तो इनमें न्याय कर दिया गया होता और यह लोग कुरान के लिए संदेह में पड़े हैं। (४५) ऐ पैगम्बर जिसने नेक काम किये उसने अपने लिए और जिसने बुरा किया तो उसी पर है और तेरा पालनकर्ता बन्दों पर अत्याचार नहीं करता। (४६)

---

* इन्कारी कहते थे कि कुरान अरबी भाषा में क्यों उतरी। और किसी भाषा में उतरती तो हम मान भी लेते। अरबी तो मुहम्मद की मातृभाषा है उन्होंने अपने आप बना लिया होगा। इसका यह उत्तर दिया गया है कि यदि यह कुरान किसी अन्य भाषा में भी होती तो भी न मानने वाले न मानते और कहते हम पराई बोली क्या जानें और उसे क्यों मानें?

पच्चीसवाँ पारा (इलैहि यूरद्दु)

उसी की तरफ प्रलय के ज्ञान का हवाला दिया जाता है और उसी के ज्ञान से फल गाभों से निकलते हैं। न कि मादा का पेट रहता हैं और वह जानती है। मगर उसके ज्ञान से और जब ईश्वर लोगों को पुकारेगा कि तुम्हारे शरीक कहाँ हैं वह उत्तर देंगे कि हमने तुझे सुना दिया कि हममें से किसी को खबर नहीं। (४७) और जिन पूजितों को पहिले यह मनुष्य पुकारते थे अब इनसे खोये गये और यह समझ लेंगे कि इनके लिए छुटकारा नहीं। (४८) आदमी भलाई माँगने से नहीं थकता और जो उसे बुराई पहुंचे तो उदास और निराश हो जाता है। (४९) और अगर उसको कोई दुःख पहुंचे और दुःख के बाद हम उसको अपनी कृपा दिखावें तो कहने लगता है कि यह तो मेरे ही लिए है और मैं नहीं समझता कि प्रलय कायम हो और अगर मुझको अपने पालनकर्ता की तरफ लौटाया जायगा तो उसके यहाँ मेरे लिये खूबी होगी। सो हम काफिरों को उनके काम बता देंगे और उनको कठोर दण्ड का मजा चखायेंगे। (५०) और जब हम आदमी पर नियामत भेजते हैं तो मुँह फेर लेता है और अलग हो जाता है और जब उसको दुख पहुंचता है तो लम्बी चौड़ी दुआयें करने लगता है। (५१) ऐ पैगम्बर कहो कि भला देखो तो सही कि अगर यह कुरान ईश्वर के यहां से हो और इस पर भी तुम इससे इन्कार करो तो जो शत्रु हो कर दूर चला जावे तो उससे बढ़कर गुमराह कौन है। (५२) हम इनको अपनी निशानियाँ चारों ओर दिखलावेंगे और उनकी जानों में भी। यहाँ तक कि इन पर जाहिर हो जायगा कि यह सच है क्या यह बात काफी नहीं कि तुम्हारा पालनकर्ता हर वस्तु का साक्षी है। (५३) यह अपने पालनकर्ता की मुलाकात से सन्देह में है ईश्वर हर वस्तु को घेरे हुए है। (५४) (रुकू ६)

सूरे शूरा

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५३ आयतें और ५ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम- (१) ऐन-सीन-काफ। (२) ऐ पैगम्बर जिस तरह यह सूरत तुम्हारे ऊपर उतारी जाती है इसी तरह अल्लाह जो बड़े चमत्कारवाला हैं तुम्हारी तरफ और उन पैगम्बरों की तरफ जो तुमसे पहिले हो कुके हैं वही ईश्वरीय संदेशा भेजता रहा है। (३) उसी का है जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है और वही बड़ा आलीशान है। (४) दूर नहीं कि आकाश अपने ऊपर से फट पड़े और देवदूत अपने पालनकर्ता की तारीफ के साथ पाकी से याद करने में लगे हैं। और जो लोग पृथ्वी में हैं उनकी क्षमा करते है। अल्लाह ही क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) और जिन लोगों ने ईश्वर के सिवाय काम सम्भालने वाले ठहरा रक्खे हैं अल्लाह को याद है और तू उन पर कुछ तैनान नहीं। (६) और इसी तरह अरबी कुरान हमने उतारा ताकि तू मक्के के रहने वालों को और जो लोग मक्के के आस पास हैं उनको डरावे और प्रलय के दिन के दुःख से डरावे। जिसमें कुछ संदेह नही कुछ लोग बैकुण्ठ में और कुछ लोग नरक में होंगे। (७) और ईश्वर चाहता तो लोगों का एक ही फिरका बना देता लेकिन वह जिसको चाहे अपनी कृपा में ले और पापियों का कोई हामी और सहायक न होगा। (८) क्या इन लोगो ने अल्लाह के सिवाय दूसरे काम संभालने वाले बना रक्खे हैं सो अल्लाह ठीक काम बनाने वाला है और वही मृत को जिलाता और हर चीज पर शक्तिमान है। (९) (रुकू १)

और जिन-जिन बातों में तुम लोग आपस में भेद रखते हो उनका निर्णय खुदा ही के हवाले है लोगों यही अल्लाह मेरा पालनकर्ता है। मैं उसी पर भरोसा रखता और उसी की तरफ ध्यान करता हूं।

(१०) आकाश और पृथ्वी का पैदा करने वाला है उसी ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स के जौड़े बनाये और चारपायों के जोड़े इस तरह तुमको पृथ्वी पर फैलाता है कोई चीज उस जैसी नहीं और वह सुनता देखता है। (११) आकाश पृथ्वी की कुन्जियाँ उसी के पास है जिसकी रोजी चाहता है बढ़ा देता है और जिसकी चाहता है नपी तुली कर देता है वह हर चीज से जानकार है। (१२) उसने तुम्हारे लिए दीन की वही राह ठहराई है जिस पर चलने की उसने नूह को आज्ञा दी थी और ऐ पैगम्बर तेरी तरफ हमने जो आज्ञा भेजी और जो हमने इब्राहीम मूसा और ईसा को आज्ञा दी थी कि इसी दिनको लायक रक्खो और इसमें फर्क न डालो। ऐ पैगम्बर तुम जिसे दीन की तरफ मुशरिकों को बुलाते हो वह उन पर गिराँ गुजरता है अल्लाह जिसे चाहे अपनी तरफ चुन ले और उसको अपनी तरफ राह दिखाता है जो रुजू होता है। (१३) और उन्होंने समझ आये पीछे आपस की जिद्द के कारण से भेद डाला ऐ पैगम्बर अगर तुम्हारे पालनकर्ता की तरफ से एक नियत समय का वादा पहले से न हुआ होता तो उनमें न्याय कर दिया गया होता और जो लोग अगलों के बाद किताब के वारिस हुए वे उसकी तरफ से धोखे में हैं (१४) तो ऐ पैगम्बर तू उसी की तरफ बुला और जैसा तुझ से फर्माया गया है उस पर कायम रह और इनकी इच्छाओं पर न चल और कह दो कि हर किताब पर जो ईश्वर ने उतारी है ईमान लाता हूं और मुझे आज्ञा मिली है कि तुममें न्याय करूं। अल्लाह हमारा और तुम्हारा पालनकर्ता हैं। हमारा किया हम को और तुम्हारा किया तुमको मिलेगा हममें और तुममें कोई झगड़ा नहीं। अल्लाह ही हम सब को जमा करेगा और उसी की तरफ जाना है। (१५) और जब ईश्वरको मान चुके तो जो लोग इसके बाद अल्लाह के बारे में झगड़ते हैं तो उनके पालनकर्ता के नजदीक उनकी हुज्जत झूठी है और उन पर गजब है और उनके लिए दुखदाई दण्ड है। (१६) अल्लाह जिसने किताबें और तराजू सच्ची उतारीं ऐ पैगम्बर तुम क्या जान सकते हो शायद प्रलय करीब

हो (१७) जिनको प्रलय का यकीन नहीं वह तो उसके लिए जल्दी मचा रहे हैं और जो ईमान वाले हैं वह उससे डर रहे हैं और जानते हैं कि प्रलय सच है। सुनो जो लोग प्रलय में झगड़ते हैं वे भटक कर दूर जा पड़े हैं। (१८) अल्लाह अपने सेवकों पर कृपालु है जिसे चाहता है रोजी देता है और वह जोरावर बली है। (१९) (रुकू २)

जो कोई परलोक की खेती चाहता है हम उसकी खेती में उसके लिए बढ़ती देंगे और जो सँसार की खेती चाहता हैं हम उसको कुछ उसमें से देंगे। फिर परलोक में उसका कुछ हिस्सा नहीं। (२०) क्या इन लोगों के शरीक वे लोग हैं जिन्होंने उनके लिए ऐसे दीन का रास्ता ठहरा दिया है जिस को ईश्वर ने आज्ञा नहीं दी और यकीनी वादा न हुआ होता तो इनमें निर्णय कर दिया गया होता और पापियों को दुखदाई दण्ड है। (२१) ऐ पैगम्बर तू उस दिन पापियों को देखेगा कि वे अपनी कमाई से होंगे वह बदला इन पर पड़ने वाला है और जो लोग ईमान लाये और नेक काम किये वह स्वर्ग के बाग की क्यारियों में होंगे। जो उनको जरूरत होगी उनके पालनकर्ता के यहाँ होगा। यही तो बड़ी कृपा है। (२२) यह वह बदला है जिसका शुभ संदेह ईश्वर अपने ईमानदार नेक काम करने वाजे सेवकों को देता है ऐ पैगम्बर कहो कि मैं तुमसे इस पर कोई मजदूरी नहीं चाहता मगर रिश्ते नाते की प्रेम और जो मनुष्य नेकी करेगा उसके लिए हम और ज्यादा खूबी पैदा कर देंगे, अल्लाह क्षमा करनेवाला कदरदान है। (२३) क्या यह लोग कहते हैं कि इस मनुष्य ने ईश्वर पर झूठ बाँधा सो ईश्वर अगर चाहे तो तेरे दिल पर मुहर लगाये। मगर अल्लाह अपनी बात से झूठ को मिटाता और सच को जमाता है और वह दिल की बात जानता है। (२४) और वही है जो अपने जीवों की क्षमा मानता और बुराइयाँ क्षमा करता और जैसे-जैसे कर्म तुम करते हो जानता है। (२५) और वह ईमान वालों की जो नेक काम करते हैं दुआ कबूल करता है और अपनी कृपा से उनको बढ़ती देता है और

जो लोग ईन्कार करने वाले हैं उनके लिए कठोर दण्ड है। (२६) और अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोजी ज्यादा कर दे तो वह देश में सरकशी करने लगें मगर वह अन्दाज से जितनी रोजी चाहता है उतारता है। वह अपने सेवकों का खबरदार देखने वाला है। (२७) वही है जो लोगों के निराश हुए पीछे मेंह बरसाता है और अपनी कृपा को सब पर कर देता है और वह काम बनानेवाला और प्रशंसा के योग्य है। (२८) और उसी की निशानियों में से आकाश और पृथ्वी का पैदा करना है और उन जानदारों को जो उसने आकाश और पृथ्वी में फैला रक्खे हैं। वह जब चाहे उनके जमा कर लेने पर शक्तिमान है। (२९) (रुकू ३)

और तुम पर जो दुख पड़ता है सो तुम्हारे हाथों की कमाई का बदला है और ईश्वर बहुत अपराधों से बचाता है। (३०) तुम पृथ्वी में ईश्वर को हरा नहीं सकते और न ईश्वर के सिवाय तुम्हारा कोई काम बनाने वाला है और न सहायक। (३१) और उसी की निशानियों में से जहाज हैं जो समुद्रों में पहाड़ों की तरह हैं। (३२) अगर ईश्वर चाहे हवा को ठहरा दे तो जहाज समुद्र की सतह पर खड़े के खड़े रह जायं। इसमें ठहरने वालों और धन्यवाद करने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (३३) या जहाज वालों के कर्मों के बदले में जाहजों को समाप्त कर दे। (३४) और बहुतेरे अपराधों को क्षमा करता है। और जो लोग हमारी आयतों में झगड़ने वाले है, जान लें कि उनको भागने की जगह नहीं है। (३५) सो जो कुछ तुमको दिया गया है सांसारिक जीवन का सामान है और जो ईश्वर के यहाँ है ईमानदारों और जो अपने पालनकर्ता पर भरोसा रखते हैं उनके लिए बढ़कर और पक्का है। (३६) और जब बड़े-बड़े कुकर्मों और बेशर्मी की बातों से अलग रहते हैं और जब उनको गुस्सा आ जाता है तब बच जाते हैं। (३७) और जिन्होंने पालनकर्ता की आज्ञा मानी और नमाज पढ़ी और उनका काम आपस के मशविरों से होता हे और हमने जो उनको दे

रखा है उसमें से ईश्वर के मार्ग पर खर्च करते हैं। (३८) और जो ऐसे हैं कि उन पर अधिकता होती है वह बदला ले लेते हैं।(३९)और बुराई का बदला वैसे ही बुराई है, इस पर जो क्षमा कर दे और सुलह कर ले तो उसका पुण्य अल्लाह के जिम्मे है। वह अत्याचार करने वालों को पसन्द नहीं करता। (४०) और जिस पर अत्याचार हुआ हो और वह उसके बाद बदला ले तो ऐसे लोगों पर कोई दोष नहीं। (४१) दोष उन्हीं पर है जो लोगों पर अत्याचार करते और व्यर्थ देश में ज्यादती करते हैं उन्हीं को दुखदाई दण्ड है। (४२) और जिसने सन्तोष किया और दूसरे की गलती को क्षमा कर दिया तो वह बातें हिम्मत की हैं। (४३) (रुकू ४)

और जिसे ईश्वर ने गुमराह किया फिर उसे अल्लाह के सिवाय कोई सहायक नहीं और तू अत्याचारियों को देखेगा कि जब लेंगे तो कहेंगे कि भला संसार में फिर लौट चलने की भी कोई राह है।(४४) और तू इनका देखेगा कि नरक के सामने बदनामी के मारे हुए झुके हुए छिपी निगाहों को देखते होंगे और उस समय ईमान वाले कहेंगे कि घाटे में वह हैं जिन्होंने प्रलय के दिन अपने आपको और अपने घर वालों को तबाह किया। अत्याचार करने वाले हमेशा के दण्ड में रहेंगे। (४५) और ईश्वर के सिवाय उनका कोई सहायक न होगा जो उनकी सहायता करे और जिसे ईश्वर ने गुमराह किया तो उसके लिए कोई राह नहीं। (४६) अपने पालनकर्ता का कहा मान लो। उस दिन प्रलय के आने से पहिले न कोई जो ईश्वर की ओर से टलने वाली नहीं। उस दिन तुम्हारे लिए न कोई बचाव की जगह होगी और न इन्कार बन पड़ेगा। (४७) तो अगर यह लोग मुंह मोड़ें तो हमने तुमको इन पर निगहबान बनाकर नहीं भेजा। तेरा जिम्मा पहुंचना है और जब हम आदमी को अपनी कृपा चखाते हैं तो वह उससे खुश होता है और लोगों को जो उनके कामों के बदले में दुख पहुंचना है तो मनुष्य बड़ा ही भलाई भूलने वाला है। (४८) आकाश और पृथ्वी का

राज्य अल्लाह ही का है लो चाहे पढ़ा करे जिसे चाहे पुत्रियाँ दे और जिसे चाहे पुत्र दे। (४९) या पुत्र और पुत्रियां मिलाकर उनको दोनों तरह की सन्तान दे और जिसको चाहे बाँझ करे, वह जानकर और शक्तिमान है (५०) और किसी आदमी की ताकत नही कि ईश्वर से बात करे* मगर आकाशवाणी से या पर्दे के पीछे या किसी देवदूतों को उसके पास भेज दे और वह की आज्ञा से जो मंजूर हो पहुँचा देता है। वह सबके ऊपर चमत्कार वाला है। (५१) और ऐ पैगम्बर इसी तरह हमने अपनी आज्ञा से तेरी ओर एक देवदूत भेजा ! तू न जानता था कि किताब क्या चीज और ईमान क्या चीज है। लेकिन हमने कुरान को रोशन बनाया और अपने सेवकों में से जिसे चाहे उससे राह दिखावे और ऐ पैगम्बरों तू अलबत्ता सीधी राह दिखाता है। (५२) राह अल्लाह की है जो आकाश और पृथ्वी की सब चीजों का मालिक है। सुनो जो अल्लाह तक कामों की पहुंच है (५३) (रुकू ५)

---

* मक्के के काफिर मुहम्मद साहब से कहते थे कि खुदा तुम्हारे सामने आकर बातें क्यों नहीं करता। वह तो मूसा से ऐसे ही बातें करता था। इस पर यह आयत उतरीं कि खुदा किसी से उसके आमने सामने आकर बातें नहीं करता।

सूरे जुखरुफ़

मक्के में अवतरित हुई इसमें ८६ आयतें और ७ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम (१) जाहिर किताब की सौगन्ध (२) हमने इसका अरबी में बनाया है ताकि तुम समझो। (३) और यह कुरान हमारी यहाँ असल किताब में बड़े पाये का चमत्कार किया है। (४) तो क्या इस वजह से कि तुम लोग हद से बाहर हो गये हो, हम बेतअल्लुक होकर शिक्षा करना छोड़ देंगे। (५) और अगले लोगों में हमने बहुत से पैगम्बर भेजे (६) और जो पैगम्बर उनके पास आये उन्होंने हंसी ही उड़ाई। (७) फिर हमने उनको जो इन मक्का के काफिरों में कहीं जोरावर थे मार डाला और अगले लोगों के किस्से चल पड़े। (८) ऐ पैगम्बर अगर तुम इन लोगों से पूछो कि आकाश और पृथ्वी को किसने पैदा किया है। तो वह कहेंगे कि इनको सर्वशक्तिमान बुद्धिमान ने पैदा किया है।(९) वही है जिसने पृथ्वी को तुम लोगों के लिये फर्श बनाया है और तुम्हारे लिये उसमें राह निकाली ताकि तुम राह पाओ। (१०) और जिसने अटकल के साथ आकाश से पानी बरसाया। फिर हमने उस पानी से मरे हुए शहर को जिला उठाया। इसी तरह तुम लोग भी निकाले जाओगे। (११) और जिसने सब चीजों के जोडे बनाये और तुम्हारे लिए नावें और चौपाये बनाये हैं जिन पर तुम सवार होते हो। (१२) कि उनकी पीठ पर बैठ जाओ फिर जब उन पर बैठ जाओ तो अपने पालनकर्ता की भलाई याद करो और कहो कि वह पवित्र है जिसने इन चीजों को को हमारे वश किया है और हम उनको अधिकार में करने की सामर्थ न रखते थे। (१३) और हमको अपने पालनकर्ता की ओर लौट आना है। (१४) और लोगों ने ईश्वर के दिये उसके बन्दे को एक बेटा दिया है। आदमी बड़ा हीं कृतघ्नी है। (१५) (रुकू १)

क्या ईश्वर ने अपनी सृष्टि में से आप तो पुत्रियाँ लीं और तुम लोगों का पुत्र चुनकर दिये। (१६) और जब इन लोगों में से किसी को उस चीज के होने का शुभसन्देश दिया जाय यानी पुत्री की जो ईश्वर के लिए कहावत ठहराई है तो अन्दर ही अन्दर ताव खाकर उसका मुंह काला पड़ जाता है। (१७) क्या जो गहनों में पाला जावे और झगड़ते समय बात न कह सके वह ईश्वर की पुत्री हो सकती ? (१८) और इन लोगों ने देवदूतों को जो ईश्वर के बन्दे हैं औरतें ठहराया है। क्या जिस समय ईश्वर ने देवदूतों को पैदा किया यह लोग मौजूद थे। इनका कौल लिखा जायगा और इनसे पूछा जायगा। (१६) और कहते हैं कि अगर कृपालु चाहता तो हम इनकी पूजा न करते। उन्हें इस बात की कुछ खबर नहीं, निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (२०) या इनको हमने इसके पहले कोई किताब दी है कि यह उसे पकड़ते हैं। (२१) बल्कि कहते हैं कि हमने अपने बाप-दादों को एक तरीके पर पाया और उन्हीं के कदम ब कदम हम भी ठीक राह चले जा रहे हैं। (२२) और ऐ पैगम्बर इसी तरह हमने तुमसे पहिले जब कभी किसी गाँव में को पैगम्दर डर सुनाने वाला भेजा के धनी लोगों ने यही कहा कि हमने अपने दादों का एक राह पर पाया और उन्ही के कदम ब कदम चलते हैं। (२३) वह बोला कि जिस राह पर तुमने अपने बाप-दादों को पाया, अगर में उनसे बढ़कर राह की सूझ लेकर तुम्हारे पास आया हूं तो भी तुम उसे न मानोगे वह वोले जो तुम लाये हो हम उसकों नहीं मानते। (२४) आखिरकार हमने उनसे बदला लिया तो देखो कि पैगम्बरों के झुठलाने वालों का कैसा परिणाम हुआ। (२५) (रुकू २)

और जब इब्राहीम ने अपने बाप और अपनी कौम से कहा कि जिनकी तुम पूजा करते हो मुझको उनसे कुछ सरोकार नहीं। (२६) मगर जिसने मुझको पैदा किया सो वही मुझको राह दिखायेगा। (२७) और यही बात अपनी सन्तान में छोड़ गया शायद वह ध्यान दें। (२८)

बल्कि हमने इनको और इनके बाप-दादों को संसार में बरतने दिया यहाँ तक कि इनके पास सच्चा दीन और खुलो सुनाने वाला पैगम्बर आया। (२६) और जब जब इनके पास सच्चा दीन आया तो कहने लगे यह तो जादू है और हम इनको नहीं मानते। (३०) और बोले कि दो बस्तियों यानी मक्का और तायफ से किसी बड़े आदमी पर यह कुरान क्यों न उतारा। (३१) क्या यह लोग तेरे पालनकर्ता का कृपा के बाँटने वाले हैं सो इस जीवन में इनकी रोजी इनमें हम बाँटते हैं और हमने दुनियावी दर्जों के एतबार से इनमें एक को एक पर बढ़ा रखा है ताकि इनमें एक का एक अपना आज्ञाकारी बनाये रहें और जो माल असबाब यह लोग समेटे फिरते हैं तेरे पालनकर्ता की कृपा तो इससे कहीं बढ़ कर है। (३२) और अगर यह बात न होती कि सब मनुष्य एक ही तरीके के हो जायंगे तो जो ईश्वर से इन्कारी हैं, हम उनके लिये उनके घरौ की छतें और जीने जिन पर चढ़ते हैं चाँदी के बना देते। (३३) और उनके घरों के द्वार और तख्त भी, जिन पर तकिया लगाये बैठे है चाँदी के कर देते। (३४) और सोना भी देते और यह तमाम इस जीवन के लाभ हैं और ऐ पैगम्बर! परलोक तेरे पालनकर्ता के यहाँ संयमियों के लिए है। (३५) (रुकू ३)

और जो मनुष्य ईश्वर कृपालु की याद से जीचुराता हैं,हम उस पर एक शैतान नियत कर दिया करते हैं। और वह उसके साथ रहता है। (३६) और शैतान पापियों को राह से रोकता है और यह समझते हैं कि हम राह पर हैं। (३७) यहाँ तक कि जब हमारे सामने आता है तो कहता है कि अच्छा होता जो मुझमें और तुझमें पूर्व और पश्चिम की दूरी का फर्क हो जावे। तू बुरा साथी है। (३८) जब तुम अत्याचार कर चुके तो आज यह बात भी तुम्हारे कुछ काम न आवेगी जब तुम और शैतान एक साथ दण्ड में हो। (३९) तो ऐ पैगम्बर क्या तुम बहरों को सुना सकते हो या अन्धों को और उनको जो प्रत्यक्ष गुमराही में हैं, राह दिखा सकते हो। (४०) फिर अगर हम तुझे संसार से

उठा लें तो भी हमको इन काफिरों से बदला लेना है। (४१) या हमने जो उनसे प्रण किया है तुझको दिखा देंगे। हम उन पर सामर्थ्य-वान है। (४२) तो जो तुझे आज्ञा हुई है उसे तू मजबूती से पकड़ निस्सन्देह तू सीधी राह पर हे। (४३) यह तेरे और तेरी कौम के लिए शिक्षा है और आगे चल कर तुझसे पूछ-ताछ होनी है। (४४) और ऐ पैगम्बर तुझसे पहले जो हमने पैगम्बर भेजे उनसे पूछा। क्या हमने ईश्वर कृपालु के सिवाय दूसरे पूजित ठहराये हैं कि उनकी पूजा की जावे। (४५) (रुकू ४)

और हमने मूसा को अपने चमत्कार देकर फिरऔन और उसके दरबारियों की तरफ भेजा। मूसा ने कहा मैं संसार के पालनकर्ता का भेजा हुआ हूं। (४६) जब मूसा हमारे चमत्कार लेकर उनके पास आया तो वह हंसने लगे। (४७) और हम जो चमत्कार उनको दिखाते बड़ा था और हमने उनको दण्ड में पकड़ा। शायद यह मान जावें। (४८) और कहने लगे ऐ जादूगर! हमारे लिए अपने पालनकर्ता को पुकार, जैसा उसने तुझसे वादा कर रखा है। हम निस्सन्देह राह पर आवेंगे। (४९) फिर जब हमने उन पर से दण्ड उठा लिया वह अपने कौल तोड़ने लगे। (५०) और फिरऔन ने अपने लोगों में इस बात की मनादी करा दी कि लोगों! क्या देश मिस्र हमारा नहीं और यह नहरें हमारे शाही महल के नीचे नहीं बह रही हैं, तो क्या तुम नहीं देखते। (५१) भला मैं इस मूसा से जो एक जलील आदमी है बढ़कर नहीं हूं। (५२) और वह साफ नहीं बोल सकता। और मूसा हमसे बेहतर होता फिर उसके लिए सोने के कंगत* ईश्वर के यहाँ से क्यों नहीं आये या फरिश्ते उसके साथ जमा होकर क्यों नहीं उतरे। (५३)

---

* उन समय सरदारों को सोने का कंगन पहनते थे। इसलिए फिरऔन ने कहा "मूसा अगर नबी होते तो इनके हाथ में जड़ाऊ कंगन होता।"

फिरऔन ने अपने लोगों को बेसमझ कर दिया—फिर उसी का कहा मानो। निस्सन्देह वह अवज्ञाकारी थे। (५४) फिर जब इन लोगों ने हमको क्रोध दिलाया हमने इनसे बदला लिया, फिर इन सब को डुबो दिया। (५५) फिर इनको गया-गुजरा कर दिया और आने वाली नस्लों के लिए कहावत बना दिया। (५६) (रुकू ५)

और ऐ पैगम्बर जब मरियम के पुत्र का उदाहरण दिया गया तो तेरी जाति के लोग उसका सुनकर एकदम से खिलखिला पड़े। (५७) और कहने लगे कि हमारे पूजित अच्छे हैं या ईसा। इन मनुष्यों ने ईसा का उदाहरण तेरे लिए सिर्फ झगड़ने के लिए सुनाया है। यह झगड़लू कौम है। (५८) तो ईसा भी हमारे एक बन्दे थे। हमने उन पर भलाई की थी और इसराईल बेटों के लिए एक नमूना बनाया था। (५९) और हम चाहते तो तुममें देवदूत कर देते कि वह पृथ्वी में तुम्हारी जगह आबाद होते। (६०) और ईसा उस घड़ी प्रलय का एक निशान है उसमें सन्देह न करो और मेरे कहे पर चलो। यही सीधी-सीधी राह है। (६१) और ऐसा न हो कि तुमको राक्षस रोके कि वह तुम्हारा खुला शत्रु है। (६२) और चमत्कार लेकर आये तो उन्होंने कहा कि मैं तुम्हारे पास पक्की बातें लेकर आया हूं और मतलब यह है कि तुम्हारी उन बातों को बयान करूं जिनमें भेद डाल रहे हो। अल्लाह से डरो और मेरा कहा मानो। (६३) अल्लाह ही मेरा और तुम्हारा पालनकर्ता है, उसी की पूजा करो यही सीधी राह है। (६४) तो उन्हीं में से बहुत से लोग भेद डालने लगे, तो जो लोग सरकशी करते हैं प्रलय के दिन दुखदाई दण्ड के एतबार से उन पर है। (६५) क्या यह लोग प्रलय ही की राह देख रहे हैं कि एकाएक इन पर आ जावे और इनको सूचना भी न हो। (६६) जो लोग आपस में मित्र रखते हैं उस दिन एक दूसरे के शत्रु हो जायेंगे मगर संयमी। (६७) (रुकू ६)

ऐ हमारे बन्दों ! आज तुमको न किसी तरह का डर है और न तुम उदास होंगे। (६८) जो हमारी आयतों पर ईमान लाये और आज्ञाकारी रहे। (६९) तुम और तुम्हारी स्त्रियाँ स्वर्ग में जा दाखिल हों ताकि तुम्हारी इज्जत की जावे। (७०) उन पर सोने की रकाबियों और प्यालों की दौड़ चलेगी और जिस चीज को उनका जी चाहे और नजर में भली मालूम हो स्वर्ग में होगी और तुम हमेशा यहीं रहोगे। (७१) और यह स्वर्ग की वारिसी तुमको उनके बदले में जो तुम करते रहे हो मिली है। (७२) यहाँ तुम्हारे लिये बहुत मेवे होंगे जिनमें से तुम खाओगे। (७३) अलबत्ता पापी हमेशा नरक के दण्ड में रहेगा। (७४) उनसे दण्ड हल्का न किया जायगा और वह उसमें निराश रहेंगे। (७५) और हमने उन पर अत्याचार नहीं किया बल्कि वही अत्याचार करते रहे। (७६) और पुकारेंगे ऐ मालिक ! हमारा काम तमाम कर दे। वह कहेगा कि तुमको इसी में रहना है। (७७) हम तुम्हारे पास सच बात लेकर आये हैं लेकिन तुममें अक्सर सच से चिढ़ते हैं। (७८) क्या इन लोगों ने कोई बात ठान रखी है तो समझ रक्खें कि हमने भी ठान रक्खी है। (७९) या विचार करते हैं कि हम इनके भेद और मशविरे नहीं जानते और हमारे देवदूत इनसे पास लिखते हैं। (८०) ऐ पैगम्बर कहो रहमान के कोई संतान हो तो मैं सबसे पहिले उसकी पूजा करने को तैयार हूं। (८१) जैसी-जैसी बातें बनाते हैं, उनसे आकाश और पृथ्वी और तख्त का मालिक पवित्र है। (८२) तो ऐ पैगम्बर इन लोगों को बकने और खेलने दे यहाँ तक कि जिस रोज का इनसे प्रण किया जाता है यानी प्रलय इनके सामने आ जावे। (८३) और वही है कि आकाश में उसी की बन्दगी है और पृथ्वी में भी उसी की बन्दगी है। और वह चमत्कार वाला और सब चीजों का जानने वाला है। (८४) जिसका राज्य आकाश और पृथ्वी और जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है सब पर है। वह मुबारिक है और उस घड़ी प्रलय की खबर उसी को है और तुम तरफ लौट कर जाओगे। (८५) और ईश्वर के सिवाय जिन पुजितों को यह लोग

पुकारते हैं वह सिफारिश का अख्तार नहीं रखते मगर जिसने सच्ची गवाही दी वे जानते थे। (८६) और ऐ पैगम्बर अगर तू पूछे कि इनको किसने पैदा किया तो मजबूरन यही कहेंगे कि अल्लाह ने। फिर किधर को बहके चले जा रहे हैं। (८७) पैगम्बर कहते रहे हैं कि ऐ पालनकर्ता! ये लोग ईमान लाने वाले नहीं। (८८) तू इनसे मुंह मोड़ ले और सलाय कह, फिर आगे चल कर मालूम कर लेंगे। (८९) (रुकू ७)

सूरे दुखान

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५९ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हो-मीम। (१) जाहिर किताब की सौगन्ध। (२) हमने मुबारिक रात २७ वीं रात रमजान की और शब्बरात में इसको उतारा—हमें डराना मंजूर था। (३) संसार की हर कठोर बात उसी रात को निर्णय हुआ करती है। (४) हमारे आज्ञा से क्योंकि हम भेजने वाले हैं। (५) ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कृपा है। वह सुनता और जानता है। (६) आकाश और पृथ्वी का और जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है उनका मालिक वही है, अगर तुमको विश्वास हो। (७) उसके सिवाय कोई पूजित नहीं। वही जिलाता और मारता है। वही तुम्हारा और तुम्हारे अगले बाप-दादों का पालनकर्ता है। (८) कुछ नहीं वे धोखे में खेलते हैं। (९) सो उस दिन का इन्तिजार कर जिस दिन आकाश से धुआँ जाहिर हो*। (१०) और वह सब लोगों पर छा जायगा। यह दुखदाई दण्ड है। (११) ऐ हमारे पालनकर्ता हम पर से दुःख को टाल हम ईमान-

दार हैं। (१२) वह क्योंकर शिक्षा पकड़ें इनके पास पैगम्बर खोल कर सुनने वाला आ चुका। (१३) फिर इन्होंने उससे मुंह मोड़ा और कहा कि यह सिखाया हुआ दीवाना है। (१४) हम दण्ड को थोड़े दिनों के लिए हटा देंगे मगर तुम फिर करोगे। (१५) हम जिस दिन बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, हम बदला ले लेंगे। (१६) और इनसे पहिले हम फिरऔन की कौम को आजमा चुके हैं और उनके पास बड़े दर्जे के पैगम्बर आये। (१७) और उन्होंने आकर फिरऔन के लोगों से कहा कि अल्लाह के बन्दों इसराईल के बेठों को मेरे हवाले करो, मैं तुम्हारे पास आया हूं और अमानतदार हूं। (१८) और यह कहा कि ईश्वर के सिर न फेरो, मैं साफ प्रमाण तुम्हारे सामने लाया हूं। (१९) और इससे कि तुम मुझको पत्थरों से मारो और मैं तुम्हारे पालनकर्ता की पनाह माँगता हूं। (२०) और अगर तुमको मेरी बात का विश्वास न हो तो मुझसे अलग हो जाओ। (२१) तब मूसा ने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि यह लोग अपराधी हैं। (२२) ईश्वर ने कहा कि मेरे बन्दों यानी इसराईल के बेटों को लेकर निकल जाओ, तुम लोगों का पीछा किया जायगा। (२३) और दरिया को ठहरा हुआ छोड़ जाना कि फिरऔनियों का सारा लश्कर डुबो दिया जायगा। (२४) यह लोग कितने बाग और नहरें छोड़ गये। (२५) और खेत और अच्छे मकान। (२६) और आराम के सामान जिनमें मजे उड़ाया करते थे, छोड़ करे। (२७) ऐसे ही हमने दूसरे लोगों को इसका वारिस बना दिया। (२८) तो उन पर न तो आकाश ही रोया और न पृथ्वी ही रोई और न वह ढील ही दिये गये। (२९) (रुकू १)

और हमने इसराईल के पुत्रों को जिल्लत के दण्ड से बचा लिया। (३०) वह सरकश हद्द से बाहर हो गया था। (३१) और इसराईल पुत्रों को हमने समझ कर संसार के मनुष्यों पर पसन्द कर लिया। (३२) और हमने उनको चमत्कार दिये जिनमें प्रत्यक्ष जांच थी। (३३) यह कहते हैं। (३४) यह कुछ नहीं हमारा पहली ही दफा का मरना

है और हम दुबारा नहीं उठाये जायंगे। (३५) बस अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप-दादों को ले आओ। (३६) यह लोग बढ़कर हैं या तुब्बा शाह यमन का खिताब की कौम। और इनसे पहिले के लोग जिनको हमने मार डाला पापी थे। (३७) और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो चीजें आकाश और पृथ्वी में है खेल नहीं बनाया। (३८) हमने उनको ठीक काम पर बनाया मगर बहुधा लोग नहीं समझते। (३९) निर्णय का दिन यानी प्रलय का दिन इन सबका नियत समय है। (४०) उस दिन कोई मित्र किसी मित्र के काम न आयेगा और न उन्हें सहयाता पहुंचेगी। (४१) मगर जिस पर ईश्वर कृपा करे, वह बड़ा दयालु है। (४२) (रुकू २)

सेहुंड़ थूहड़ का पेड़ (४३) पापियों का खाना होगा। (४४) जैसे पिघला ताँबा खौलता है पेटों में खौलेगा। (४५) जैसे खौलता पानी। (४६) हम देवदूतों को आज्ञा देंगे कि इसको पकड़ो और घसीटते हुए नरक के बीचोंबीच ले जाओ। (४६) फिर दण्ड दो और इसके सिर पर खौलता हुआ पानी डालो। (४८) मजा चख तू बड़ा इज्जत वाला सरदार है। (४९) यही है जिसकी निस्बत तुम सन्देह करते थे। (५०) संयमी चैन की जगह होंगे। (५१) बाग और चश्मों में। (५२) रेशमी महीन और मोटी पोशाकें पहने हुए आमने-सामने बैठे होंगे। (५३) ऐसा ही होगा और बड़ी-बड़ी आँखों वाली हूरों से हम उनका ब्याह कर देंगे। (५४) वहाँ मेवे खातिर जमा से मंगवा लेंगे। (५५) पहली मौत के सिवाय वहाँ उनको मौत चखनी न पड़ेगी और ईश्वर ने उन्हें नरक के दण्ड से बचाया। (५६) ऐ पैगम्बर तेरे पालनकर्ता की कृपा से यही बड़ी सफलता है। (५७) हमने इस कुरान को तेरी बोली में इस मतलब से सहल कर दिया है, शायद वे याद रक्खें। (५८) तो राह देख वे भी राह देखते हैं। (५९) (रुकू ३)

सूरे जासियह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४५ आयतें और ५ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा-मीम।(१) यह जबरदस्त चमत्कार वाले अल्लाह की उतारी हुई किताब। (२) निस्सन्देह ईमान वालों के लिए आकाश और पृथ्वी में बहुत निशानियाँ हैं। (३) और तुम्हारे पैदा करने में और जानवरों में जिनको पृथ्वी पर बिखेरता है, उन लोगों को जो विश्वास रखते हैं निशानियाँ है। (४) और रात-दिन के आने-जाने में और रोजी जिसे ईश्वर ने आकाश से उतारा। फिर उनके द्वारा पृथ्वी को उसके मरे पीछे जीवित कर देता है। और हवाओं की तब्दीलियों में निशानियाँ हैं। समझने वालों के लिए निशानियाँ हैं। (५) यह ईश्वर की आयतें हैं जिन्हें हम तुमको ठीक पढ़कर सुनाते हैं। फिर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन-सी बात होगी जिसे सुनकर ईमान लायेंगे। (६) हरएक झूठे पापी के लिए अफसोस है। (७) ईश्वर की आयतें उसके सामने पढ़ी जाती हैं, उनको सुनता है। फिर हमारे घमण्ड के अड़ा रहता है गोया उसने इन आयतों को सुना ही नहीं। तो ऐसों को दुखदाई दण्ड की शुभ सूचना सुना दो। (८) और जब हमारी आयतों की कुछ भी खबर पाता है तो उनकी हंसी उड़ाता है। ऐसे लोगों के लिए जिल्लत का दण्ड है। (९) आगे इनके नरक है और जो कुछ कर्म कर गये और जिनको इन्होंने ईश्वर के सिवाय काम बनाने वाला बना रक्खा हैं इनके कुछ काम न आयगा और उनका बड़ा दण्ड होगा। (१०) यह आदेश है और जो लोग अपने पालनकर्ता की आयतों के इन्कार करने वाले हुए उनको बड़ी दुखदाई दण्ड की मार है। (११) (रुकू १)

अल्लाह वह है जिसने नदी को तुम्हारे वश में कर दिया है ताकि ईश्वर की आज्ञा से उसमें जहाज चलें और तुम लोग उसकी कृपा से रोजी ढूंढ़ो और शायद तुम धन्यवाद करो। (१२) और जो कुछ

आकाश में है और पृथ्वी में है उसी ने अपनी कृपा से इन सबको तुम्हारे काम में लगा रक्खा है। इनमें ईश्वर की कुदरत उन लोगों के लिए जो फिक्र को काम में लाते हैं बहुतेरी निशानियाँ हैं। (१३) ऐ पैगम्बर मुसलमानों से कहो कि लोग ईश्वर के दिनों की आशा नहीं रखते उन्हें क्षमा करें ताकि अल्लाह मनुष्यों को इनसे किये का बदला दे*। (१४) जिसने नेक काम किये अपने लिये और जिसने बुराई की उस पर है, फिर तुम अपने पालनकर्ता की तरफ लौटोगे (१५) हमने इसराईला के पुत्रों को किताब और हुकूमत और पैगम्बरी दी और अच्छी-अच्छी चीजें खाने को दीं और संसार के लोगों पर उनको बड़-प्पन दिया। (१६) और दीन की खुली-खुली बातें इन्हें बता दीं। फिर ज्ञान प्राप्त होने के बाद आपस की जिद से जिन बातों में यह लोग भेद डाल रहे हैं। प्रलय के दिन तुम्हारा पालनकर्ता उनमें निर्णय कर देगा। (१७) फिर हमने तुझको उसे काम के एक रास्ते पर रखा सो तू उसी पर चल और नादानों की इच्छाओं पर मत चल। (१८) वह अल्लाह के सामने तेरे कुछ काम न आवेगा और अन्यायीं एक दूसरे के मित्र हैं और संयमियों का अल्लाह साथी हैं। (१९) यह लोगों के लिए समझ की और राह की बातें हैं और जो लोग विश्वास करते हैं उनके लिए निर्देश और कृपा है। (२०) वह जो बदी कमाते हैं क्या यह समझते हैं कि उन्हें मरने और जीने में जीने में ईमानदारों और भले काम करने वालों के बराबर कर कर देंगे। यह बुरे दावे करते हैं। (२१) (रुकू २)

और अल्लाह ने आकाश और पृथ्वी को ठीक पैदा किया और मतलब यह है कि हर मनुष्य को उसके किये का बदला दिया जायगा।

---

* कहते हैं कि मक्के के एक काफिर ने हजरत उमर को बुरा कहा था। उन्होंने उससे बदला लेना चाहा। इस पर यह आयत उतरी कि सजा देना अल्लाह पर छोड़ा जाय।

और लोगों पर अत्याचार नहीं किया जायगा। (२२) ऐ पैगम्बर भजा देखो तो जिसने अपने इच्छाओं को अपना पूजित ठहराया और ज्ञान होते हुए भी अल्लाह ने उसे गुमराह कर दिया और उसके कानों पर और उनके दिल पर मुहर लगा दी और उसकी आँखों पर पर्दा डाल दिया तो ईश्वर के गुमराह किये पीछे उसको कौन आदेश दे। क्या तुम नहीं सोचते। (२३) और कहते हैं कि बस हमारा तो यही साँसारिक जीविन है। हम मरते और जीते हैं और हमें काल मारता है और उनको उसकी कुछ खबर नहीं। निरी अटकलें दौड़ाते हैं। (२४) और जब इनको हमारी खुली-खुची आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो बस यही हुज्जत करते हैं और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो हमारे बाप दादों को ले आओ। (२५) कहो कि अल्लाह तुमको जिलाता है फिर तुम्हें मारता है। फिर प्रलय के दिन जिसमें कुछ संदेह नहीं वह तुमको इकट्ठा करेगा, मगर अक्सर लोग नहीं समझते। (२६) (रुकू ३)

और आकाश और पृथ्वी का राज्य अल्लाह ही का है और जिस दिन वह घड़ी प्रलय होगी उस दिन झूठे खराब होंगे। (२७) और तू देखेगा कि हर गिरोह घुटने का बल बैठा होगा। हर गिरोह अपने कर्म लेखा के पास बुलाया जायगा जैसे तुम काम करते थे आज उनका बदला पाओ। (२८) यह हमारा दफ्तर है तुम्हारे काम ठीक बतलाता है जो कुछ तुम करते थे हम उनको लिखवाते जाते थे। (२९) सो जो मनुष्य ईमान लाये और नेक काम किये उनको उनका पालनकर्ता अपनी कृपा में ले लेगा। यही प्रत्यक्ष कामयाबी है। (३०) और जो लोग इन्कार करते रहे क्या तुमको हमारी आयतें पढ़-पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं मगर तुमने घमण्ड किया और तुम लोग पापी हो रहे थे। (३१) और जब कहा जाता था कि ईश्वर का वायदा सच्चा है और प्रलय में कुछ भी संदेह नहीं तो कहते थे कि हम नहीं जानते कि प्रलय क्या चीज है। हाँ हमको एक विचार सा होता है मगर हमको विश्वास नहीं। (३२) और जैसे जैसे कर्म यह मनुष्य करते रहे उनकी

खराबियाँ उन पर जाहिर हो जायेंगी और जिस दण्ड की हंसी उड़ाते रहे हैं वह उन्हें घेर लेगी। (३३) और कहा जायगा कि जिस तरह तुमने इस दिन के आने को भुलाये रक्खा था, आज हम भी भुला जायँगे और तुम्हारा ठिकाना नरक है और कोई सहायक नहीं (३४) यह उसका दण्ड है कि तुमने दण्ड की आयतों की हंसी उड़ाई और साँसारिक जीवन ने तुमको धोखे में डाला। आज न तो यह लोग नरक से निकाले जायंगे, और न इनको मौका दिया जायगा कि राजी कर लें (३५) बस अल्लाह की तारीफ है जो आकाश का और पृथ्वी का मालिक और संसार का मालिक है। (३६) और आकाश और पृथ्वी में उसी की बड़ाई है और वही बड़ा चमत्कार वाला है। (३७) (रुकू ४)

छब्बीसवाँ पारा (हामीम)

सूरे अहकाफ

मक्के में अवतरित इसमें ३५ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हा मीम। (१) बड़ा चमत्कार वाले अल्लाह ने किताब उतारी है। (२) हमने आकाश और पृथ्वी को और जो आकाश और पृथ्वी के बीच में हैं उनको किसी इरादे से और एक समय खास के लिए पैदा किया है और काफिरों को जिस प्रलय से डराया जाता है उसीकी परवाह नहीं करते। (३) ऐ पैगम्बर! इन मनुष्यों से कहो कि भला देखो तो ईश्वर के सिवाय जिन पूजितों को तुम पुकारते हो मुझको दिखाओ कि जिन्होंने जमीन में पैदा किया या आकाश में उनका साझा है? अगर तुम सच्चे हो तो इसपें

पहले की कोई किताब या ज्ञान मेरे सामने पेश करो। (४) और उससे बढ़कर गुमराह कौन है जो ईश्वर के सिवाय ऐसे पूजितों को पुकारे जो प्रलय के दिन तक उसको उत्तर न दे सकें। और उनको उनकी दुआ की खबर नहीं। (५) और जब प्रलय के दिन मनुष्य इकट्ठे किये जायंगे तो यह पूजित उल्टे उनके बैरी हो जायंगे और उनकी पूजा से इन्कार करेंगे। (६) और जब हमारी खुली-खुली आयतें इनको पढ़कर सुनाई जाती हैं, जो मनुष्य इनकार करने वाले हैं सच्चे के पीछे उसे कहते हैं कि यह तो प्रत्यक्ष जादू है। (७) क्या यह कहते हैं कि इसको इसने अपने दिल से बना लिया है ? तू कह कि अगर मैंने इसको अपने दिल से बनाया होगा तो तुम ईश्वर के मुकाबिले में मेरा कुछ नहीं कर सकते। जैसी-जैसी बातें तुम मनुष्य बनाते हो वही उनको खूब जानता है। मेरे और तुम्हारे बीच काफी गवाह है और वही क्षमा करने वाला कृपालु है। (८) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि मैं पैगम्बर में कोई नया नहीं हूं और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या होगा और तुम्हारे साथ क्या होगा। मेरी तरफ जो वही उतरती है, मैं उसी पर चलता हूं जो मुझको आज्ञा आती है, और मेरा काम खोलकर डर सुनाना है। (९) ऐ पैगम्बर ! इनसे कहो कि देखो अगर यह कुरान ईश्वर की तरफ से हो और तुम इससे इनकार कर बैठे, और इसराईल के बेटों में से एक गवाह ने इसी तरह की एक किताब के उतरने की गवाही दी और वह ईमान ले आया और तुम अकड़े ही रहे। निस्संदेह अल्लाह अन्यायियों को आदेश नहीं दिया करता। (१०) (रुकू १)

और काफिर मुसलमानों की बाबत कहते हैं अगर दीन इसलाम बेहतर होता तो यह सब आदमी हमसे पहले उसकी तरफ न दौड़ पड़ते और जब कुरान के जरिये से इनको आदेश न हुई तो अब कहेंगे कि यह पुराना झूठ है। (११) और इस कुरान से पहले मूसा की किताब राह बताने वाली और क्या है और यह किताब अरबी भाषा भाषा में उसको सच्चा करती है ताकि अन्यायी डराये जावें और नेकी

वालों को खुशखबरी हो। (१२) निस्संदेह जिन मनुष्यों ने कहा कि हमारा पालनकर्ता अल्लाह है फिर जमे रहे तो न तो उन पर डर होगा और न वह उदास होंगे। (१३) यहीस्वर्गवासी हैं कि उसमें हमेशा रहेंगे, यह उनके कर्मों का फल है। (१४) और हमने आदमी को माता पिता के साथ भलाई करने की ताकीद की है कि कष्ट से उसकी माता ने उसको पेट में रखा और कष्ट से उस को जना, और उसका पेट में रहना और उसके दूधका छूटना कम से कम कहीं ३० महीने में जाकर तमाम होता है। यहाँ तक कि जब आदमी अपनी पूरी ताकत को पहुंचता है यानी ४० वर्ष की उम्र हुई तो कहने लगा कि ऐ मेरे पालन-कर्ता! मुझको शक्ति दे कि तूने जो मुझ पर और मेरे माँ-बाप पर भलाई की हैं उनका धन्यवाद दें। और मैं ऐसे भले काम करूँ जिनसे तू राजी हो और मेरी औलाद में नेकबख्ती पैदा कर। मैंने तेरी तरफ ध्यान दिया और मैं हुक्म उठाने वालों में हूं। (१५) यही मनुष्य स्वर्ग वाले हैं। हम इनके भले कामों को कबूल करते और इनके अपराधों को बरा जाते हैं। ऐसा ही सच्चा प्रण इनसे किया गया था। (१६) और जिसने अपने माँ-बाप से कहा कि मैं तुमसे अप्रसन्न हूं क्या तुम मुझे प्रण देते हो कि मैं कब्र से जीवित निकाला जाऊंगा हालाँकि मुझसे पहले कितने गिरोह गुजर गये और किसी को मरकर जीते न देखा और वे दोनों माता-पिता ईश्वर से दुहाई देते हैं कि तेरा नाश जा। ईमान ला निस्संदेह अल्लाह का प्रण सच्चा है। फिर कहता है कि यह तो अगलों के निरे ढकोसले हैं। (१७) यही वह मनुष्य हैं जिन पर जिन्नों की और आदमियों की मिली हुई संगतों जो इनसे पहले हो गुजरी हैं उनमें यह भी दण्ड के प्रण के हकदार ठहरे। निस्संदेह यह मनुष्य टोटे में हैं। (१८) हर किसी के लिए कर्म के अनुसार दर्जे हैं और उनके कामों का उन्हें पूरा फल मिलेगा और उन पर अत्यचार न होगा। (१९) और जब काफिर नरक के सामने लाये जायंगे तो इनसे कहा जायगा तुमने अपनी साँसारिक जीवन में अच्छी चीजें बर्बाद कीं और उनसे लाभ उठा चुके। पृथ्वी में तुम्हारे अकड़ने और अवज्ञा-

कारी करने के कारण आज तुम्हें जिल्लत की दण्ड बदले में मिलेगी। (२०) (रुकू २)

और तू आद के भाई को याद कर। जब इन्होंने अपनी कौम को अहकाफ में जो देश यमन में एक मैदान है डराया और उन हूद के आगे और पीछे बहुत डराने वाले पैगम्बर गुजर चुके और हूद ने अपनी कौम से कहा कि ईश्वर के सिवाय किसी की पूजा न करो, मुझको तुम्हारी निस्बत बड़े दिन के दण्ड का डर है। (२१) वह कहने लगे कि क्या तू हमको हमारे पूजितों से फेरने आया है? अगर तू सच्चा है तो जिस दण्ड का वादा हमसे करता है उसको हम पर ले आ। (२२) इसकी खबर तो अल्लाह ही को है और मुझको तो जो पैगाम देकर भेजा गया है वह तुमको पहुंचाये देता हूं, मगर मैं तुमको देखता हूं कि तुम लोग बेवकूफी करते हो। (२३) फिर उन मनुष्योंने जब उस दण्ड को देखा कि एक बादल है जो उनके मैदानों की तरफ को उमड़ता चला आ रहा है, तो कहने लगे यह तो एक बादल है और हम पर बरसेगा बल्कि यह वही है जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे थे। आँधी है जिस में दुखदाई दण्ड है। (२४) यह अपने पालनकर्ता की आज्ञा से हर चीज को नष्ट भ्रष्ट कर देगी चुनाँचे यह लोग ऐसे तबाह हो गये कि इनके घरों के सिवाय और कोई चीज नजर नहीं आती थी। पापियों को हम इसी तरह दण्ड दिया करते हैं। (२५) और हमने उनको वह ताकत दी थी जो तुमने मक्का वालों को नहीं दी और हमने

---

* आद एक उन्नत जाती थी जो कुमार्ग पर चलने लगी थी। उसके नेता मक्के मेह (वर्षा) मांगने आये। उनको तीन प्रकार के बादलों में चुनना था। उन्होंने काले बादल को स्वीकार किया। वह उनके साथ चला। वह समझते थे कि इस बादल से पानी बरसेगा और उनको बड़ा लाभ होगा परन्तु वास्तव में वह ईश्वर का कोप था। उससे वह बिल्कुल नष्ट हो गये।

उनको कान और आँखें और दिल दिये थे, लेकिन उनके कान और आँखें और दिल कुछ काम न आये थे, इसलिए कि अल्लाह की आयतों से इनक़ारी थे और जिस को हंसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें घेर लिया। (२६) (रुकू ३)

और हमने तुम्हारे पास की कितनी ही बस्तियाँ नष्ट भ्रष्ट कर डाली और हमने फेर-फेरकर आयतें सुनाइँ शायद वे ध्यान दें। (२७) तो ईश्वर के सिवाय जिन चीजों को उन्होंने नजदीकी के लिए अपना पूजित बना रखा उन्होंने उनकी क्यों न सहायता की बल्कि इनकी नजर सें छिप गये और यह झूठ था जो बाँधते थे। (२८) और जब हम चन्द जिन्नों को तुम्हारी तरफ ले आये कि वह कुरान सुनें। फिर जब वह हाज़िर हुए तो बोले कि चुप रहो। फिर जब कुरान का पढ़ना तमाम हुआ तो वह अपने लोगों की तरफ लौट गये कि उनको डरायें। (२९) कहने लगे ऐ हमारी कौम! हम एक क़िताब सुन आये हैं जो मूसा के बाद उतारी है। अगली किताबों को सही बताती है और सीधी राह दिखाती है। (३०) ऐ हमारी कौम! यह पैगम्बर मुपम्मद ज़ो ईश्वर की तरफ से मनादी करता है इस की बात मानो और ईश्वर पर ईमान लाओ ताकि ईश्वर तुम्हारे पाप क्षमा करे और दुखदाई दण्ड से तुमको बचावे। (३१) और जो कोई अल्लाह के पुकारने वाले को न मानेगा वह जमीन में थका न सकेगा और ईश्वर के सिवाय कोई सहायक न होगा। यह लोग प्रत्यक्ष गुमराही में हैं। (३२) क्या उन्होंने न देखा कि जिस ईश्वर ने आकाश को और पृथ्वी को पैदा किया और उनके पैदा करने में उसको थकान न हुई। वह मुर्दों के जिला उठाने में शक्तिमान है। वह तो हर चीज पर शक्ति रखता है। (३३) और जिस दिन काफिर नरक के सामने लाये जायँगे उनसे पूछा जायगा कि क्या यह ठीक नहीं? वह कहेंगे हमको अपने पालनकर्ता की सौगन्ध सच है, तो ईश्वर आज्ञा देगा कि अपने इनकारी के बदले में दण्ड चखो। (३४) तो जिस तरह हिम्मती पैगम्बरों ने

सन्तोष किया तुमभी संतोष करो और इनके लिए जल्दी न मचा। जिस दिन प्रण की बात प्रलय को देखेंगे ऐसे होंगे गोया दिन की एक घड़ी संसार में रहे थे ईश्वर के आदेश का पहुंचाना है। अब वही जो अवज्ञाकार हैं, मारे जायेंगे। (३५) (रुकू ४)

सूरे मुहम्मद

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ३८ आयतें, ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है जिन लोगों ने न माना और अल्लाह के रास्ते से लोगों को रोका, ईश्वर ने उनके काम गये गुजरे कर दिये। (१) और जो लोग ईमान लाये और उन्होंने भले काम किये और कुरान जो मुहम्मद पर उतारा है, उसे मान लिया और बस सच है, उनके पालनकर्ता की तरफ से ईश्वर ने अपते पाप उन पर से उतार दिये और उनकी हालत ठीक कर दी। (२) यह इस लिए है कि काफिर झूठ पर चले और जो ईमान लाये वह अपने पालनकर्ता के ठीक रास्ते पर चले। यों अल्लाह लोगों के लिए उनके हाल वर्णन करना है (३) तो जब लड़ाई में काफिरों से तुम्हारी मुठ भेड़ हो तो गर्दनें काटो, यहाँ तक कि जब खूब अच्छी तरह उनका जोर तोड़ लो तो मुस्कें कस लो। फिर पीछे या तो भलाई रखकर छोड़ दो या बदला लकर, यहाँ तक कि शत्रुओं लड़ाई के हथियार रख दें। ऐसी ही आज्ञा है और ईश्वर चाहता तो उनसे बदला ले लेता लेकिन यह इसलिए हुआ कि तुम में से एक को एक से आजमाये और जो लोग ईश्वर की राह में मारे गये उनके कामों को ईश्वर अकारथ नहीं होने देगा। (४) उन्हें राह देगा और उनका हाल ठीक करेगा।

(५) और उनको स्वर्ग में दाखिल करेगा जिसका हाल उसने बता रखा है। (६) ऐ ईमानवालों! अगर तुम अल्लाह की सहायता करोगे तो वह तुम्हारी सहायता करेगा। और तुम्हारे पाँव जमाये रखेगा। (७) और जो इनकारी हुए उनके पाँव उखड़ जायंगे और उनका सारा किया धरा ईश्वर अकारथ कर देगा। (८) यह इसलिए कि ईश्वर ने जो उतारा उसको उन्होंने पसन्द किया, फिर ईश्वर ने उनके कर्म वृथा कर दिये। (९) क्या यह लोग मुल्क में चले फिरे नहीं कि अगलों का परिणाम देखते कि अल्लाह ने उनको नष्ट भ्रष्ट कर दिया और काफिरों के लिए ऐसा ही होता रहता है। (१०) क्यों कि अल्लाह ईमान वालों का सहायक है और काफिरों का कोई सहायक नहीं। (११) (रुकू १)

जो लोग ईमान लाये और उन्होंने नेक काम किये अल्लाह स्वर्ग के बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। और काफिर संसार में लाभ उठाते और खाते हैं जैसे चारपाये खाते हैं और इनका ठिकाना नरक है। (१२) और ऐ पैगम्बर! तुम्हारी बस्ती मक्का जिसने तुमको निकल छोड़ा, कितनी बस्तियाँ इससे भी बलबूतों में बढ़ी चढ़ी थीं, हमने उनको हलाक कर मारा और कोई भी उनकी सहायता को न खड़ा हुआ। (१३) तो क्या जो लोग अपने पालनकर्ता के खुले रास्ते पर हैं वह उनकी तरह हैं जिनके बुरे कर्म उनको भले कर दिखाये गये हैं और वह अपनी चाहों पर चलते हैं। (१४) जिस स्वर्ग का प्रण संयमियों से किया जाता है उसकी कैफियत यह है। कि उसमें ऐसे पानी की नहरें हैं जिसमें बू नहीं और दूध की नहरें हैं जिनका स्वाद नही बदला और शराब की नहरें हैं जो पीने वालों को बहुत ही मजेदार मालूम होंगी। और साफ शहद की नहरें हैं और उनके लिए वहाँ हर तरह के मेवे होंगे और उनके पालनकर्ता की तरफ से क्षमा क्या ऐसे स्वर्ग के रहनेवाले उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में होंगे और उनको खौलता पानी पिलाया जायगा और वह उनकी आँतों के टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। (१५) और ऐ पैगम्बर! बाज इनमें से

ऐसे हैं जो तुम्हारी ओर कान लगाते हैं मगर जब तुम्हारे पास से बाहर जाते हैं तो जिन मनुष्यों को ज्ञान मिला* है उनसे पूछते हैं कि इसने अभी क्या कहा था। यही मनुष्य हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने मुहर कर दी, और अपनी इच्छाओं पर चलते हैं। (१६) और जो मनुष्य सीधी राह पर आये हैं उससे उनकी सूझ बढ़ी है और उससे उनको बचकर चलना मिला है। (१७) तो क्या यह लोग प्रलय ही की राह देखते हैं कि एकदम से इन पर आ पड़े उसकी निशानियां तो आ ही चुकी हैं। फिर जब प्रलय इनके सामने आ जायगी तो उस समय इनका समझना इनको क्या ठीक होगा। (१८) तो जान लो कि अल्लाह के सिवाय कोई पूजित नहीं और अपने पापों की क्षमा माँग और ईमान वाले मर्दो और औरतों के लिए भी माँगते रहो। और तुम लोगों का चलना, फिरना, ठहरना अल्लाह को मालूम है। (१९) (रुकू २)

और ईमानदार कहते थे कि जिहाद की निस्बत कोई सूरत क्यों न उतारी। फिर जब एक सूरत साफ मानी उतरी और उसमें लड़ाई का जिक्र आया तो जिनके दिलों में रोग है तूने उनको देखा कि वह तेरी तरफ ऐसे ताकते रह गये जैसे वह ताकता है जिसे मौत की बेहोशी हो तो खराबी है उनकी आज्ञा मानना और भली बात कहना अच्छा है। (२०) फिर जब काम की ताकीद हो और यह लोग ईश्वर से सच्चे रहें तो उनका भला है। (२१) और तुमसे कुछ दूर नहीं कि अगर शासक बन बैठे तो देश में झगड़ा करने लगोगे और अपने रिश्ते-

---

* यह हाल उन मुताफिकों का है जो मुहम्मद साहब की बातें सुनकर उनकी हंसी उड़ाते थे और मुसलमानों से कहते कि जो बात हमसे उन्होंने कही है वह क्या है। वह तो हमारी समझ में ही नहीं आई।

नातों को तोड़ने लगोगे। (२२) यही मनुष्य हैं जिन पर ईश्वर ने लानत की है और इनको बहरा और इनकी आँखों को अन्धा कर दिया (२३) क्या लोग कुरान में ध्यान नहीं करते या दिलों पर ताले लगे हैं। (२४) जिन लोगों को सीधा रास्ता साफ तौर पर मालूम हो और फिर भी वह अपने उल्टे पाँव फिर गये तो राक्षस ने उनके लिए बात बनाई है और उन्हें समय दिया। (२५) और यह इसलिए कि जो मनुष्य कुरान को जो ईश्वर ने उतारा है नापसंद करते हैं कि कुछ बातों में हम तुम्हारीं ही सलाह पर चलेंगे* और अल्लाह उनकी छिपी बातों को जानता है। (२६) फिर कैसी गति होगी जब देवदूत उनकी जानें निकालेंगे और उनकी पीठों और मुँहों पर मारते जाते होंगे। (२७) यह इसलिए कि जो चीज ईश्वर को बुरी लगती है, यह उसी पर चले और उसकी खुशी न चाही, तो ईश्वर ने उनके कर्म मेट दिये। (२८) (रुकू ३)

क्या वह लोग जिनके दिलों में रोग है ईश्वर उनकी दिली अदावतों को कभी जाहिर न करेगा। (२६) और ऐ पैगम्बर! हम चाहते तो तुझे उन लोगों को दिखा देते कि तू उनको उनकी सूरत से पहचान लेता और अल्लाह तुम्हारे कर्मों को जानता है। (३०) और तुमको हम आजमायेंगे ताकि तुम में से जो जिहाद करने वाले और बरदाश्त करने वाले हैं उनको हम मालूम कर लें और तुम्हारी खबरों को आजमावेंगे। (३१) जिन मनुष्यों ने साफ राह जाहिर हुए पीछे इन्कार किया और अल्लाह की राह से रोका और पैगम्बर की दुश्मनी की, यह मनुष्य अल्लाह का कुछ न बिगाड़ेंगे बल्कि वह उनके किये को अकारथ कर देगा। (३२) ऐ मुसलमानों! अल्लाह की आज्ञा पर

---

*यहूदियों ने मक्के के काफिरों से वादा किया था कि यदि मुसलमानों और उनमें युद्ध हुआ तो वह मक्के वालों का साथ देंगे। उनकी यह बात खुदा ने मुहम्मद साहब पर जाहिर कर दी।

चलो और अपने कर्मों को वृथा न करो। (३३) जो काफिर हुए और मनुष्यों को ईश्वर के मार्ग से रोका फिर कुफ्र ही की हालत में मर गये, ईश्वर उनको कदापि क्षमा न करेगा। (३४) सो तुम दुर्बल न बनो कि सुलह की तरफ पुकारने लगो और तुम्हारी ही जीत होगी और अल्लाह तुम्हारे साथ है और तुम्हारे कर्मों को न मेटेगा (३५) साँसारिक जीवन खेल-तमाशा है और अगर ईश्वर पर ईमान लाओ और संयम करते रहो तो तुम को तुम्हारे फल देगा और तुम्हारे माल तुमसे न माँगेगा। (३६) अगर वह तुमसे तुम्हारे माल माँगे और तुम को तंग करे तो तुम कंजूसी करोगे और इससे तुम्हारी दिली अदावतें जाहिर हो जावेंगी। (३७) ऐ लोगों! जब अल्लाह की राह में खर्च करने को बुलाए जाते हो तो तुममें से कोई-कोई कंजूसी करता है, अपने ही लिए करता है अल्लाह तो दाता है और तुम मुहताज हो और अगर तुम मुह मोड़ोगे तो ईश्वर तुम्हारे सिवाय दूसरे लोगों को ला बिठायेगा और वह तुम जैसे न होंगे। (३८) (रुकू ४)

सूरे फतह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २६ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है*। हमने तुझे खुली

---

* विजय का इस स्थान पर क्या अर्थ है इसमें विद्वानों के भिन्न-भिन्न मत है इसका अर्थ हैं, हुदैबिया की सन्धि, कुछ कहते हैं इसका अर्थ है, मक्के की विजय और कुछ कहते हैं इस विजय से उस बचन की ओर संकेत किया गया है जो "बैअतुर्रिजवान,, के नाम से प्रसिद्ध है। उसका वर्णन आगे आता है।

विजय दी। (१) ताकि ईश्वर तेरे अगले-पिछले पाप क्षमा करे और तुझ पर अपनी भलाइयाँ पूरी करे और तुमको सीधी राह दिखावे। (२) और तुझे भारी सहायता दी। (३) उसने मुसलमानों के दिलों में संतुष्टता डाली ताकि उनके ईमान के साथ ईमान जियादह हो और आकाश और पृथ्वी के लश्कर अल्लाह के हैं और जाननेवाला चमत्कार वाला है। (४) ताकि ईश्वर ईमान वाले पुरुषों और ईमान वाली स्त्रियों को स्वर्ग के बाग़ों में ले जा दाखिल करे। जिनके नीचे नहरें वह रही होंगी। वह हमेशा उनमें रहेंगे और वह उन पर से उनके पापों को उतार देगा और ईश्वर के पास यह बड़ी कामयाबी है। (५) और ताकि मुनाफिक पुरुषों और मुनाफिक स्त्रियों और मुशरिक पुरुषों और मुशरिक स्त्रियों को दण्ड दे, जो अल्लाह के बारे में बुरे विचार रखते हैं। अब यहीर मुसीबत के चक्कर में आ गये और अल्लाह का गुस्सा उन पर हुआ और उसने इनको फटकार दिया और उनके लिए नरक तैयार किया और वह बुरी जनह है। (६) और आकाश और पृथ्वी लश्कर अल्लाह के हैं और अल्लाह बली और चमत्कार वाला है (७) ऐ पैगम्बर! हमने तुमको हाल बताने वाला और खुशी और डर सुनाने वाला बना के भेजा है। (८) ताकि तुम अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और ईश्वर की सहायता करो और उसका सम्मान रखो और सुबह-शाम उसकी माला फेरते रहो। (९) ऐ पैगम्बर! जो लोग तुझसे हाथ मिलाते हैं उनके हाथों* पर ईश्वर का हाथ है फिर जिसने कौल तोड़ा उसने अपने ही लिये तोड़ा और जिसने

---

* मुहम्मद साहब ने हजरत उस्मान को मक्के के कुरेश की ओर अपना दूत बनाकर भेजा था। कुछ लोगों को वह समाचार मिला कि उन काफिरों ने मार डाला है। इस पर मुसलमानों से मुहम्मद साहब ने एक वृक्ष नीचे यह दृढ़ वचन लिया कि वे उस्मान के खून का बदला अवश्य लेंगे। इसी को "बैअतुर्रिवान,, कहते हैं।

उस कौल को पूरा किया जिसका ईश्वर ने प्रण किया था वह, उसे बड़ा फल देगा। (१०) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर! देहाती लोग जो पीछे रह गये हैं और इस हुदैविया के सफर में शरीक नहीं हुए तुझसे कहेंगे कि हम अपने माल और बाल-बच्चों में लगे रहे, तू हमारे अपराध ईश्वर से क्षमा करो। यह लोग अपनी जबान से ऐसी बातें कहते हैं जो इनके दिलों में नहीं। कहा कि अगर ईश्वर तुमको हानि पहुंचाना चाहे या लाथ पहुंचाना चाहे तो कौन है जो ईश्वर के सामने तुम्हारा कुछ भी कर सके बल्कि जो कुछ भी करते हो ईश्वर उससे जानकार है। (११) बल्कि तुमने ऐसा समझा था कि पैगम्बर और मुसलमान अपने पर वापिस आने के ही नहीं और यह तुम्हारे दिलों में चुभ गई थी और तुम बुरे बिचार करने लगे थे और तुम लोग आप बर्बाद हुए। (१२) और जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये तो अपने इनकार करने वालों के लिए दहकती आग़ तैयार कर रखी है। (१३) और आकाश और पृथ्वी की बादशाही अल्लाह ही की है जिसको चाहे क्षमा करे और जिसको चाहे दण्ड दे और अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) जब तुम खबर की लूटों के माल लेने को जाने लगोगे तो जो लोग हुदैबिया के सफर से पीछे रह गये थे कहेंगे कि हमको भी अपने साथ चलने दो। इनका मतलब यह है कि ईश्वर के कहे हुए को बदल दें। ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कह दो कि तुम हमारे साथ न चलने पाओगे अल्लाह ने पहले ही से ऐसा कह दिया है। यह सुनकर कहेंगे कि नहीं बल्कि तुम हमसे डाह रखते हो बल्कि यह लोग कम समझते हैं। (१५) ऐ पैगम्बर! देहाती जो जो हुदैविया की सफर से पीछे रहे इनसे कह दो कि तुम बड़े लड़ने वालों के लिए बुलाये जाओगे। तुम उनसे लड़ो या वे मुसलमान हो जावें। तो अगर ईश्वर की आज्ञा मानोगे तो अल्लाह तुमको भला फल देगा और अगर तुमने सिर फेरा जैसे तुम पहले हुदैविया के सफर में सिर फेर चुके हो तो तुमको दुखदाई दण्ड

देगा। (१६) अन्धे पर सख्ती नहीं और न लंगड़े पर कठोरता है और न बीमार पर कठोरता है और जो अल्लाह और उनके पैगम्बर की आज्ञा मानेगा वह उनको बागों में दाखिल करेगा, जिनके नीचे नहरें बह रही होगी और जो फिरेगा वह उसको दुखदाई दण्ड देगा। (१७) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर! जब मुसलमान बबूल के पेड़ के नीचे तुझसे हाथ मिलाने लगे अल्लाह उसे खुश हुआ और उसने उनके दिली विश्वास को को जान लिया और उनको तसल्ली दी और उसके बदले में उनको नजदीकी फतह दी। (१८) और बहुत-सी लूटें उनके हाथ लगीं और अल्लाह बली चमत्कार वाला है। (१९) अल्लाह ने तुमसे बहुत सी लूटों के देने का प्रण किया था कि तुम उसे लोगे फिर मह खैबर की लूट तुमको जल्द दी और हुदैविया की सुलह से वजह से अरब के लोगों पर जुल्म करने से तुमको रोका ताकि यह मुसलमानों के लिए निशानी हो और वह तुमको सीधी राह पर ले चले। (२०) और दूसरा प्रण लूट का है जो तुम्हारे काबू में नहीं आया। यह ईश्वर के हाथ है और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (२१) और अगर काफिर तुमसे लड़ते तो जरूर भाग जाते, फिर कोई हिमायती और सहायता न पाते। (२२) अल्लाह की आदत है जो चली आती है और तू अल्लाह की आदतों में तब्दीली न पावेगी। (२३) और वही ईश्वर है जिसने मक्के में तुमको काफिरों पर फतह दी पीछे उनके हाथों को तुमसे और तुम्हारे हाथों को उनसे रोक दिया और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह देखता है। (२४) यह मक्के वाले वही हैं, जिन्होंने इन्कार किया और तुमको सम्मान वाली मसजिद से रोका और कुरबानी को बन्द रखा कि अपनी जगह न पहुंचे और अगर कुछ मुसलमान मर्द और कुछ मुसलमान औरतें न होती जिन्हें तुम नहीं जानते और तुम उनको कुचल डालते तो अनजाने पाप उनकी तरफ से तुम्हें पहुंच जाता, तो ईश्वर जिसे चाहे अपनी कृपा में दाखिल करे। अगर वे मनुष्य एक तरह हो

जाते तो हम काफिरों को दुखदाई दण्ड देते। (२५) जब काफिरों ने अपने दिलों में नादानी की जिद की हठ ठान ली तो अल्लाह ने पैगम्बर और मुसलमानों को तसल्ली दी और उनको संयमी पर जमाये रखा और वह उसके योग्य और अधिकार थे और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (२६) (रुकू ३)

अल्लाह ने अपने पैगम्बर को स्वप्न की घटना सच्ची कर दिखाई कि अल्लाह ने चाहा तो तुम अपना सिर मुड़वाओगे और कतराओगे तुमको डर न होगा वह जानता था जो तुम नहीं जानते थे। फिर इसके अलावा उसने एक करीब की फतह दी। (२७) वही है जिसने अपने पैगम्बर को हिदायत और सच्चा दीन देकर भेजा है ताकि उसे तमाम दीनों पर जीत दे और अल्लाह साक्षी है। (२८) मुहम्मद ईश्वर के भेजे हुए हैं और जो लोग उनके हैं काफिरों के हक में बड़े कठोर हैं, आपस में कृपालु हैं। तू उन्हें रुकू और शीश नवाते देखेगा। ईश्वर की कृपा और खुशी चाहते हैं। उनकी पहचान यह है कि शीश नवाने के निशान उनके माथों पर हैं। यही गुण उनके तौरात में और इञ्जील में लिखे हैं, जैसे खेती। उसने अपना कल्ला निकला फिर उसे मजबूत किया फिर मोटी हुई, आखिरकार अपनी नाल पर सीधी खड़ी हो गई और किसानों को खुशी करने लगी ताकि काफिरों को उनसे ईर्षा हो। जो ईमान लाये और भले काम किये उनसे ईश्वर ने क्षमा का और बड़े फल का प्रण किया। (२९) (रुकू ४)

सूरे हुजरात

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। मुसलमानों ! अल्लाह और उसके पैगम्बर से आगे न बढ़ो और अल्लाह से डरो। अल्लाह सुनाता-जानता है। (१) मुसलमानों ! अपनी आवाजों को पैगम्बर की आवाज से ऊंचा न होने दो और न उनके साथ बहुत जोर से बात न करो जैसे तुम आपस में बोला करते हो। ऐसा न हो कि तुम्हारा किया-धरा सब अकारथ हो जावे और तुम्हें खबर भी न हो। (२) जो मनुष्य ईश्वर के पैंगम्बर के सामगे आवाजें नीची कर लिया करते हैं जिनके दिलों को ईश्वर ने संयमियों के लिए जाँच लिया है। उनके लिए क्षमा और बड़ा फल है। (३) जो मनुष्य तुमको कमरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से बहुत से अज्ञानी हैं। (४) और अगर यह सब्र करते यहाँ तक कि तू उनकी तरफ निकल आता उउके लिए बहुत अच्छा होता है और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (५) मुसलमानों ! अगर कोई पापी तुम्हारे पास कोई खबर लावे तो अच्छी तरह से जाँच लिया करो ताकि ऐसा न हो कि तुम नादानी से किसी कौम पर जा पड़ो फिर अपने किये से हैरान हो। (३) और जाने रहो कि तुम में ईश्वर का पैगम्बर है। अगर वह बहुत सी बातों में तुम्हारा कहना माना करे तो तुम्हीं पर मुश्किल जा पड़े। मगर ईश्वर ने तुमको ईमान की मुहब्बत दे दी है और उसको तुम्हारे दिलों में अच्छा कर दिखाया है और कुफ्र और घमण्ड और बेहुक्मों से तुमको नफरत दिला दी है। यही मनुष्य हैं जो नेकचलन हैं। (७) अल्लाह की कृपा और एहसान से और अल्लाह जानकार चमत्कार वाला है। (८) और अगर मुसलमानों के दो फिर्के आपस में लड़ पड़ें तो उनमें मिलाप करा दो, फिर अगर उनमें का येक दूसरे पर जियादती करे तो जियादती करने वाले से लड़ो यहाँ तक कि वह ईश्वर की आज्ञा की तरफ

ध्यान दे फिर जब ध्यान दे तो उनमें बरबरी के साथ मिलाप करा दो और न्याय करो। अल्लाह न्याय करने वालों को पसन्द करता है। (९) मुसलमान आपस में भाई हैं, तुम अपने भाइयों में मेल-मिलाप रखो और ईश्वर से डरो। शायद तुम पर दया की जावे। (१०) (रुकू १)

मुसलमानों! मर्द मर्दों पर न हंसें, आश्चर्य नहीं कि उनसे भले हैं और न औरतें-औरतों पर, आश्चर्य नहीं कि वह उनसे भलीं हों और आपस में एक दूसरे को ताने न दो और न एक दूसरेका नाम धरो, ईमान लाये पीछे बुरी आदत ही बुरी है और जो न माने तो वह अन्यायी है। (११) मुसलमानों! बहुत अटकलें न बाँधा करो क्योंकि कोई-कोई अटकल पाप है, और किसी का भेद न टटोलो और पीठ पीछे कोई किसी को बुरा-भला न कहे। क्या तुममें से अपने मरे हुए भाई का माँस खाना पन्सद करता है? बस इससे नफरत करो और अल्लाह से डरते रहो। अल्लाह तौबा कबूल करने वाला कृपालु है। (१२) लोगों! हमने तुमको एक पुरुष और एक स्त्री से पैदा किया और तुम्हारी जातें और बिरादरियाँ ठहराई, ताकि एक एक दूसरे को पहचान सको। अल्लाह के नजदीक तुम में वही अधिक बड़ा है, जो तुममें बड़ा संयमी है। अल्लाह जानने वाला खबरदार है। (१३) अरब के देहाती कहते हैं कि हम ईमान लाये, ऐ पैगन्बर! इनसे कह दो कि तुम ईमान नहीं लाये। हाँ कहो कि हमने मान लिया और ईमान का तो* अब तक तुम्हारे दिलों में गुजर भी नहीं हुआ और अगर आप ईश्वर और उसके पैगम्वर की आज्ञा पर चलोगे तो वह तुम्हारे कामों का बदला कुछ कम न करेगा। अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१४) मुसलमान वह हैं जो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान

*** यानी तुम इस्लाम की कुछ ही शिक्षा मानते हो। इससे तुम्हारा ईमान लाना नहीं सिद्ध होता।**

लाये, संदेह नहीं किया और अल्लाह की राह में अपनी जानों और मालों से कोशिश की। यही सच्चे हैं। (१५) ऐ पैगम्बर! इन लोगों से कहो कि क्या तुम अल्लाह को अपनी दीनदारी जताते हो? हालाँकि जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह जानता है और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (१६) ऐ पैगम्बर! यह लोग तुम पर अपने इस्लाम लाने का एहसान रखते हैं। तू कह कि मुझ पर अपने इसलाम का एहसान न रखो बल्कि अल्लाह का एहसान तुम्हारे ऊपर है कि उसने तुमको ईमान की राह दिखाई, बशर्ते कि तुम सच्चे हो। (१७) अल्लाह आकाश और जमीन के भेद को जानता है और तुम मनुष्य जैसे-जैसे काम कर रहे हो, अल्लाह उनको देख रहा है। (१८) (रुकू २)

सूरे काफ

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४४ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। काफ—कुरान बुजुर्ग की कसम। (१) बल्कि इन काफिरों का अचम्भा हुआ कि इन्हीं में का एक डर सुनाने वाला इनके पास पैगम्बर बनकर आया। तो काफिर कहने लगे कि यह तो अदभुत बात है। (२) क्या जब हम मर जावेंगे और मिट्टी हो जायंगे तो फिर उठा खड़े किये जायंगे। यह फिर आना बहुत दूर है मुर्दों के जिन टुकड़ों को मिट्टी कम करती है हमको मालूम है और हमारे पास याद दिलाने वाली किताब है। (३) बल्कि इन मनुष्यों ने सच्ची बात पहुंचाने पर उसको झुठलाया तो वह ऐसी बात में उलझे पड़े हैं। (४) क्या इन मनुष्यों ने अपने ऊपर आकाश

की तरफ नहीं देखा कि हमने उसका जैसे बनाया और उसको सजाया और उसमें उसके कहीं लिखा नहीं। (५) और पृथ्वी को हमने फैलाया और उसके अन्दर बोझिल पहाड़ डाल दिये और सब तरह सुन्दर वस्तुए उसमें उगाईं। (६) हर ध्यान देने वाले बन्दे के लिये याद दिलाने को और सुलझाने को है। (७) और हमने आकाश से बरकत पानी उतारा और उस पानी के द्वारा बाग और खेती का अनाज उगाया (८) और लम्बी-लम्बी खजूरें जिनके गुच्छे खूब गुथे हुए होते हैं। (९) और बन्दों को रोजी देने के लिए हमने मेह द्वारा मुर्दो बस्ती को जिलाया। इसी तरह निकल खड़े होना है। (१०) इनसे नूह की कौम ने खन्दक वालों ने और समूद ने झुठलाया था। (११) और आद ने और फिरऔन ने और लूत ने। (१२) वनवासियों ने तुब्बा के मनुष्यों सभी ने अपने पैगम्बरों को झुठलाया था, तो हमारा प्रण पूरा हुआ। (१३) क्य हम पहली बार पैदा करके थक गये हैं बल्कि उन्हें फिर पैदा होने में संँदेह है। (१४) (रुकू १)

और हमने आदमी को पैदा किया और हम उसके विचारों को जानते है और हम धड़कती रग से उसके अधिक पास हैं। (१५) जब दो लेने वाले दाहिने और बायें बैठे हुए लेते जाते हैं*। (१६) जो बात आदमी बोलता है उसके पास निगहबान मौजूद हैं। (१७) और मृत्य की बेहोशी जरूर आकर रहेगी। यही तो वह है जिससे तू भागता था। (१८) और नरसिंहा सूर फूंका जायगा, यही वह दिन होगा जिससे डराया जाता है। (१९) और हर मनुष्य जो आया उसके पास एक हाजिर हाँकने वाला और एक साक्षी होगा। (२०) तू इससे भूला रहा। अब हमने तेरे पर्दे को तुझ पर से हटा दिया तो आज

---

* हर आदमी के साथ दो देवदूत रहते हैं। आदमी जो काम करता है या जो बात कहता हैं ये दोनों उसको लिखते जाते हैं। इस प्रकार हर एक का किया और कहा उसके सामने लाया जायगा।

तेरी निगाह तेज है। (२१) और उसका साथी बोला जो कुछ मेरे पास था कर्मलेखा यह मौजूद है। (२२) ऐ दोनों देवदूतो! हर काफिर शत्रु को नरक में डाल दो। (२३) नेकी से रोकने वाले, हद्द से बढ़ने वाले और संदेह पैदा करने वाले। (२४) जिसने अल्लाह के साथ दूसरे पूजित ठहराये, उन्हें कठोर दण्ड में डाल दो। (२५) उनका साथी राक्षस कहेगा कि ऐ मेरे पालनकर्ता! मैंने इसको सरकश नहीं बनाया बल्कि यह राह से दूर भूला हुआ था। (२६) अल्लाह कहेगा मेरे पास झगड़ा न कर। मैं तेरे पास पहले दण्ड का डर पहुंच चुका था। (२७) मेरे यहाँ बात नहीं बदली जाती और मैं बन्दों पर अत्याचार नहीं करता। (२८) (रुकू २)

उस दिन नरक में पूछेंगे कि तू भर चुका। वह कहेगा क्या कुछ और भी है? (२९) और स्वर्ग साँसारिक के पास लाया जायगा। दूर नहीं। (३०) यह है जिसका प्रण तुमको हरएक रुजू लाने वाले और याद रखने वाले को मिला था। (३१) जो मनुष्य बे देखे रहमान से डरता रहा और ध्यान देकर हाजिर हुआ। (३२) क्षेम कुशल के साथ इस स्वर्ग में दाखिल हो, यही हमेशा रहने का दिन है। (३३) जन्नत में इन मनुष्यों को जो चाहेंगे मिलेगा और हमारे पास और भी अधिक है। (३४) और इन मक्का के काफिरों से पहले हमने कितने गिरोह मार डाले जो बल-बूते में कहीं बढ़कर थे। उन्होंने तमाम शहरों को छान मारा कि कहीं भागने का ठिकाना भी है। (३५) जो दिल वाला है या लगा कर दिल से सुनता है उसके लिए इन बातों में शिक्षा है। (३६) और हमने आकाश और पृथ्वी को और जो कुछ उनके बीच में है ६ दिन में बनाया और हम नहीं थके। (३७) तो ऐ पैगम्बर जैसी-जैसी बातें यह इन्कारी कहते हैं उन पर संतोष करो और सूरज के निकलने और डूबने के पहले अपने पालनकर्ता की प्रशंसा के साथ दिल से याद करो। (३८) और रात में उसकी पवित्रता से याद करो और नमाजों के बाद। (३९) और सुन रखो कि जिस दिन पुकारने

वाला पास के जगह से आवाज देगा कि उठो*। (४०) जिस दिन चीखने को सुन लेंगे वह दिन निकलने का होगा। (४१) हम ही जिलाते और हम ही मारते हैं और हमारी तरफ फिर आना है। (४२) जिस दिन मुर्दों से जमीन फट जायगी वे दौड़ेंगे। यह जमा कर लेना हमको आसान है। (४३) यह लोग जो कहते हैं हम जानते हैं और तू इन पर अधिकता करने वाला नहीं। सो तू कुरान से उसको समझा दो हमारी दण्ड से डरता है। (४४) (रुकू ३)

सूरे जारियात

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ६० आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उड़ाकर बखेरनेवाली की सौगन्ध*। (१) फिर बोझ उठानेवालों की सौगन्ध। (२) फिर नर्मी से चलने वालों की सौगन्ध। (३) फिर आज्ञा से बाँटनेवालियों की सौगन्ध। (४) निस्संदेह जो प्रण तुमको मिला सच है। (५) और निस्सँदेह इन्साफ होनेवाला है। (६) आकाश की सौगन्ध जिसमें रहते हैं। (७) कि तुम लोग बे ठिकाने की बात में हो। (८) जो फेरा गया वही उससे फिर जाता है। (९) अटकल के तुक्के चलाने वालों

---

* हजरत इस्राफील प्रलय के दिन इस जोर से सूर फूंकेंगे कि हर आदमी अपनी जगह यही समझेगा कि सूर उसके सर ही पर फूंका गया है।

*इन आयतों में हवा और बादल की सौगन्ध खाई गई है। कुछ लोग कहते हैं इनसे देवदूत मुराद हैं।

का नाश जाय। (१०) जो गफलत में भूले हुए हैं। (११) तुझ से पूछते हैं कि न्याय का दिन कब होगा ? (१२) जब यह मनुष्य आग पर सेके जायंगे। (१३) कि अपनी शरारत के मजे चखो, यही तो है जिसकी जल्दी मचा रहे थे। (१४) संयमी स्वर्ग के बागों और चश्मों में होंगे। (१५) जो ईश्वर ने दिया उसे पाया। यह लोग इससे पहले भले काम करने वाले थे। (१६) रात को बहुत कम सोते थे। (१७) और सुबह के समय क्षमा माँगा करते थे। (१८) और उनके मालों में जो माँगे या न मांगे, उसका हिस्सा था। (१९) और यकीन लाने वालों के लिए पृथ्वी में निशानियां हैं। (२०) और खुद तुममें भी। तो क्या तुम्हें नहीं सूझ पड़ता ? (२१) और तुम्हारी रोजी और जो तुमसे प्रण किया जाता है, आकाश में है। (२२) आकाश और जमीन के पालनकर्ता की सौगन्ध, यह कुरान सच है, जैसा कि तुम बोलते हो। (२३) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर ! इब्राहीम के इज्जतदार मेहमानों की बात तुमको पहुंचती है या नहीं। (२४) जब उसके पास आये तो सलाम किया। इब्राहीम ने भी सलाम किया और कहा तुम ऊपरी मनुष्य हो। (२५) फिर अपने घर को दौड़ा और एक बछेड़ा घी में तला हुआ ले आया। (२६) फिर उसके सामने रखा और पूछा क्या तुम नहीं खाते ? (२७) फिर इब्राहीम उनसे जी में डरा और उन्होंने कहा मत डर, और उनको एक योग्य पुत्र इसहाक का शुभसँदेश दिया। (२८) यह सुनकर इब्राहीम की स्त्री बोलती हुई आगे आ खड़ी हुई और अपना मुंह पीट लिया और कहने लगी कि पहले तो बुढ़िया और दूसरे बाँझ जनेगी। (२९) देवदूत बोले, तेरे पालनकर्ता ने ऐसा ही कहा है, वह चमत्कार वाला खबरदार है। (३०)

सत्ताईसवाँ पारा (कालफमा खत्बुकुम)

इब्राहीम ने देवदूतों से पूछा कि ऐ भेजे हुओं। फिर तुम्हारा मतलब क्या है ? (३१) वे बोले कि हम अपराधी मनुष्यों की तरफ भेजे गये हैं। (३२) कि उन पर खंजर के पत्थर वरसावें। (३३) कि यह खंजर तेरे पालनकर्ता के यहाँ उन लोगों के लिए नाम पड़ गये हैं, जो हद से बढ़ गये हैं। (३४) फिर हमने वहाँ एक ही मुसलमान का घर पाया। (३६) और हमने उनमें उन लोगों के लिए जो दुख-दाई दण्ड से डरते हैं, निशानी बाकी रखी। (३७) और मूसा के हल में निशान है, जब हमने उसको प्रत्यक्ष निशानी देकर फिरऔन की तरफ भेजा। (३८) फिर उससे अपने बलबूते में आकर मुंह मोड़ा और मूसा की बाबत कहा कि यह जादूगर या दीवाना है ! (३९) फिर हमने उसको और उसके लश्करों को दण्ड में पकड़ा, फिर उनको दरिया में डाल दिया और वह बुराई थी। (४०) और कौम आद में भी निशानी है जब हमने उन पर मनहूस आँधी चलाई। (४१) जिस चीज पर से गुजरती वह उसको चूरा किये बगैर न छोड़ती। (४२) और कौम समूद में भी निशान है, जब उनसे कहा गया कि एक समय खास तक बर्त लो (४२) फिर अपने पालनकर्ता की आज्ञा से शरारत करने लगे तो उनको कड़क ने पकड़ा और वह देखते रह गये। (४४) फिर उठ न सके और न बदला ले सके। (४५) और इनसे पहले नूह की कौम थी, वह आज्ञाकारी थे। (४६) (रुकू २)

और हमने आकाश को अपने बाहुबल से बनाया और हम सामर्थ्य वाले हैं। (४७) और हमने पृथ्वी को बिछाया, सो हम क्या खूब बिछाने वाले है। (४८) और हमने हर चीज के जोड़े बनाये। शायद तुम ध्यान दो। (४९) सो अल्लाह की तरफ भागो, मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर डर सुनाता हूं। (५०) और ईश्वर के साथ कोई दूसरा पूजित न ठहराओ। मैं उसकी तरफ से तुमको साफ तौर पर

डराता हूं। (५१) इसी तरह पर अगलों के पास जो कोई पैंगम्बर आया उन्होंने उसको जादूगर या दीवाना ही बताया। (५२) क्या यह लोग एक दूसरे को वसीयत करते आये हैं। नहीं, बल्कि यह मनुष्य बड़े हैं। (५३) सो तू उनकी तरफ ध्यान न दे। तुझ पर उलाहना न होगा। (५४) और समझते रहो कि समझना ईमान वालों को लाभ देता है। (५५) और मैंने जिन्नों और आदमियों को इसी मतलब से पैदा किया है कि हमारी पूजा करें। (५६) मैं उनसे रोजी नहीं चाहता और न यह चाहता हूं कि मुझे खाना खिलावें। (५७) अल्लाह स्वयं बड़ी रोजी देनेवाला ताकत देने वाला बलवान हैं। (५८) सो उन पापियों का यही डौल है जैसे डौल पड़ा उनके साथियों का, सो चाहिए कि जल्दी न करें। (५९) सो काफिरों पर उनके उस रोज के एतबार से जिसका उनसे प्रण किया जाता है अफसोस है। (६०) रुकू (३)

सूरे तूर

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है तूर की सौगन्ध। (१) और लिखी किताब की। (२) कड़े पन्नों में। (३) और बैतुल मामूर देवदूत का आसमानी काबा की। (४) और ऊंची छत आकाश की। (५) और उमड़ते हुए समुद्र की। (६) निस्संदेह तेरे पालनकर्ता का दण्ड होने को है। (७) किसी को ताकत नहीं कि उसको टाल सके। (८) जिस दिन आकाश लहरें मारने लगे। (९) और पहाड़ चलने लगेंगे। (१०) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी है। (११) जो बातें बनाते खेलते हैं। (१२) जिस दिन नरक की आग की ओर धक्के दे देकर ले जायँगे। (१३) यही वह नरक है जिसे

तुम झुठलाते थे। (१४) तो क्या यह नजरबन्दी है या तुमको सूझ नहीं पड़ता। (१५) इसमें घुसो, सँतोष करो या न करो, तुम्हारे लिए समाज है। और जैसे कर्म तुम करते थे तुमको उन्हीं का बदला दिया जायगा। (१६) सँयमी स्वर्ग के बागों और निआमतों में होंगे। (१७) अपने पालनकर्ता की दी हुई निआमतों के मजे उड़ा रहे होंगे और उनके पालनकर्ता ने उनको नरक के दण्ड से बचा लिया। (१८) खाओ पिओ रुचि से, अपने कामों का बदला है। (१९) तख्तों पर जो बराबर बिछाये गये हैं तकिए लगा-लगाकर बैठें हैं और हमने बड़ी-बड़ी आंखोंवाली हूरें उनको व्याह दी हैं। (२०) और जो लोग ईमान लाये और उनकी औलाद ईमान में उनके पीछे चली, उनकी औलाद को हम उनसे मिला देंगे और उनके कर्मों से कुछ भी न घटायेंगे। हर आदमी अपनी कमाई में फसा है*। (२१) और जिस मेवे और माँस को उनका भी जी चाहेगा हम उनको देवेंगे। (२२) वह आपस में वहां शराब के प्यालों की छीनाझपटी करेंगे, उसमें न बकवाद लगेगी और न कोई अपराध होगा। (२३) और लड़के उनके पास आयंगे-जायंगे, गोया यत्न से रखे हुए मोती हैं। (२४) और एक दूसरे की तरफ ध्यान देकर आपस में बातें करेंगे। (२५) कहेंगे कि हम पहले अपने घरों में डरा करते थे। (२६) सो ईश्वर ने हम पर कृपा की और हमको तू नरक के दण्ड से बचा लिया। (२७) पहले हम उसे पुकारते, थे वह भलाई करने वाला और दयालु है। (२८) (रुकू १)

तो ऐ पैगम्बर ! इन लोगों को शिक्षा दो कि पालनकर्ता की कृपा से जादूगर और दीवाना नहीं। (२९) क्या काफिर कहते हैं कि शायर है ? हम उसके लिए संसार के दुख की राह देख रहे हैं। (३०) तू कह कि तुम राह देखो मैं भी तुम्हारे साथ राह देख रहा हूं। (३१) क्या इनकी अक्लें इनको ऐसा सिखाती हैं या यह लोग झगड़ालू हैं। (३२) या कहते हैं कि इसने कुरान अपने आप बना लिया है बल्कि वह ईमान नहीं लाते। (३३) सो अगर सच्चे हैं तो इसी तरह की

कोई बात ले आवें। (३४) क्या वे आप ही आप बन गये हैं या वही बनाने वाले हैं? (३५) क्या इन्होंने आकाश को और पृथ्वी को पैदा किया है? नहीं, बल्कि विश्वास नहीं करते। (३६) क्या तेरे पालनकर्ता के खजाने उनके पास हैं या वह हाकिम हैं? (३७) या इनके पास कोई सीढ़ी है कि उस पर चढ़कर आकाश की बातें सुन आया करते हैं? सो अगर इन में से कोई सुन आया हो तो वह प्रत्यक्ष प्रमाण पेश करे। (३८) क्या ईश्वर के लिए बेटियां और तुम लोगों के लिए बेटे हैं? (३९) क्या तू इनसे पहुंचाने की कुछ मजदूरी माँगता है? यह बोझ से दबे जाते हैं। (४०) क्या इनके पास गुप्त भेद जानने की विद्या है वे, वे लिख सकते हैं। (४१) या इनका इरादा कुछ धोखा देने का है, तो यह काफिर आप ही धोखे में हैं। (४२) या ईश्वर के सिवाय इनका कोई पूजित है, तो अल्लाह इनके शिर्क से पवित्र है। (४३) और अगर कोई आकाश का टुकड़ा गिरता हुआ देखें। कहने लगते है कि यह तो जमा हुआ बादल है।* (४४) तो ऐ पैगम्बर इनको रहने दो कि वह उस दिन का इन्तजार करें जब कि इनको बिजली की कड़क पकड़ेगी। (४५) जिस दिन उनका धोखा उनके कुछ काम न आवेगा और न इनको सहायता मिलेगी (४६) और जालिमों को प्रलय के दण्ड के सिवाय संसार में और भी दण्ड है। मगर इनमें से बहुतों को मालूम नहीं। (४७) और तू अपने पालनकर्ता की आज्ञा के इन्तजार में रह कि हमारी आँखों के सामने हैं। और जिस समय सोकर उठे अपने पालनकर्ता की खूबियों के बोल बोल। (४८) और कुछ रात गये भी उसकी याद किया करो और तारों के अस्त हुए पीछे भी (४९) (रुकू २)

---

* कहते हैं कि काफिर मुहम्मद साहब से कहते थे कि अगर तुम वास्तव में ईश्वर के भेजे हुए नबी हो तो आकाश का एक टुकड़ा हमारे ऊपर गिरा दो, जिससे हम नष्ट हो जायें। इस पर यह आयत उतारी।

सूरे नज्म

मक्के में अवतरित हुई इसमें ६२ आयतें और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। तारे नक्षत्र की सौगन्ध जब यह टूटता है। (१) तुम्हारा मित्र मुहम्मद बहका नहीं और न बेराह चला। (२) और वह अपनी चाह से नहीं बातें बनाता। (३) यह तो आज्ञा है जो उसे भेजा जाता है। (४) बड़े बलशाली ने उसे सिखलाया है। (५) जो बड़ा है। फिर सीधा बैठा। (६) और वह आकाश के ऊचे किनारे पर था। (७) फिर वह नजदीक हुआ और करीब आ गया। (८) फिर दो कमान के बराबर या उससे भी कम फर्क रह गया। (९) उस समय ईश्वर ने फिर अपने बन्दे मुहम्मद पर आज्ञा भेजी। जो भेजा। (१०) झूठ नहीं कहा दिल ने जो देखा। (११) अब क्या तुम झगड़ते हो उससे इस पर जो उसने देखा? (१२) हलाँकि उसने उसको दूसरी बार देखा। (१३) अन्तिम हद की बेरी के पास उस बेरी पर जो छा रहा था। (१४) उस बेरी के पास स्वर्ग रहने की जगह। (१५) जब छा रहा था (१६)निगाह न. बहकी न हद से बढ़ी। (१७) निस्संदेह उसने अपने पालनकर्ता की निशानियों में से बड़ी निशानी देखी। (१८) मुशरिकों! भला तुमने लात और लज्जा मूर्तियों के नाम (१९) और वह जो तीसरी देवी मनाते है, (२०) क्या तुम लोगों के लिए बेटे और उस ईश्वर के लिए बेटियाँ (२१) अगर ऐसा हो तो यह बड़ी अन्याय की बात है। (२२) यह तो निरे नाम ही हैं जो तुमने और तुम्हारे बाप दोनों ने अपनी तरफ से रख लिए हैं। ईश्वर ने तो इनकी कोई प्रमाण नहीं उतारे। यह लोग तो अटकल और दिली इच्छाओं पर चलते और इनके पालनकर्ता की तरफ से इनके पास आदेश भी आ चुका है। (२३) कहीं मनुष्य को मनमानी मुराद भी मिली है। (२४) सो परलोक और सँसार अल्लाह ही के काबू में है। (२५) (रुकू १)

और बहुत देवदूत आकाश में हैं। उनकी सिफारिश कुछ भी काम नहीं आती। मगर जब ईश्वर किसी के बारे में सिफारिश करना चाहे इजाजत दे और देवदूतों की सिफारिश को पसंद फर्मावे। (२६) जिन लोगों को परलोक का निश्चय नहीं है, वही तो देवदूतों के नाम औरतों जैसे रखते हैं। (२७) और उनको इसकी कुछ खबर नहीं, निरी अटकल पर चलते हैं और ठीक बात में अटकल कुछ काम नहीं आती। (२८) तो जो मनुष्य हमारी याद से मुंह फेरे और साँसारिक जीवन के सिवाय कुछ न चाहे, सो तू उस पर ध्यान न कर। (२९) यहाँ तक ही उनकी समझ पहुंची है। तेरा पालनकर्ता खूब जानता है कि कौन उसकी राह से भटका हुआ है और कौन सीधी राह पर है। (३०) और अल्लाह ही का है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है ताकि उन लोगों को जिन्होंने बुरे कर्म किये उनके किये का बदला दे। और जिन्होंने अच्छे कर्म किये हैं उनको अच्छे का बदला दे। (३१) जो बड़े पापों और बेशर्मी के कार्मों से बचते रहते हैं मगर छोटे पाप उनसे हो जाते हैं। तो तेरा पालनकर्ता बड़ा क्षमा करने वाला है। वह तुमको खूब जानता है। जब उसने तुमको मिट्टी से बनाया था और जब तुम अपनीं माँओं के गर्भ में बच्चे थे, सो अपनी सफाई न जताओ संयमियों को वही खूब जानता है। (३२) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर! भला तू ने मनुष्य को देखा जिसने मुँह फेरा। (३३) और थोड़ा माल देकर कठोर हो गया *। (३४) क्या उसके

* कहते हैं कि एक दिन वलीद-बिन सुपुत्र मुगीरा मुहम्मद साहब के पीछे-पीछे चला ताकि उनकी बातें सुने। एक दूसरे काफिर ने यह देखकर उससे कहा, "क्या तुमने अपने बाप-दादों को बुरा जाना जो इनके पीछे चल पड़े।" उसने कहा ईश्वर के डर से ऐसा कर रहा हूँ! उसने कहा तुम इतना धन मुझे दे दो तो तुम्हारे पाप कटकर मुझ पर आ जायेंगे मैं तुम्हारे पापों को उठा लूंगा। उसने यह बात मान ली परन्तु केवल थोड़ा ही दिया, बाकी न दिया। इस पर यह आयत उतरी

पास गुप्त बात जानने की विद्या है कि वह देखने लगा है। (३५) क्या उसको खबर नहीं जो कुछ मूसा के शहीफों में लिखा है। (३६) और इब्राहीम के सहीफों में जो वफादार था। (३७) कि कोई बोझ उठाने वाला दूसरे का बोझ नहीं उठाता। (३८) और यह कि मनुष्य को उतना ही मिलेगा जितना उसने कमाया है। (३९) और यह कि उसकी कमाई आगे चलकर देखी जायगी। (४०) फिर उसको पूरा बदला दिया जायगा। (४१) और यह कि ईश्वर तक पहुंचना है (४२) और यह कि वही हंसाता और वही रुलाता है। (४३) और यह कि वही मारता और जिलाता है (४४) और यह कि उसने स्त्री पुरुष का जोड़ा बनाया (४५) वीर्य से जब टपकाया गया। (४६) और यह कि दुबारा (जीवित करना उसके जिम्मे है। (४७) और यह कि वही मालदार और धनवान करता है। (४८) और यह कि वही शेरा एक तारे के नाम का मालिक है। (४९) और यह कि उसी ने आद की जाति के अगलों को मार डाला था। (५०) और समूद को भी फिर बाकी न छोड़ा। (५१) और पहले नूह की जाती को इसमें संदेह नहीं कि यह स्वयं ही बड़े अत्याचारी और बड़े उपद्रवी थे मार डाला। (५२) और उल्टी बस्तियों को जिन में लूत की जाति रहती थी दे पटका। (५३) फिर उन पर जो तबाही आई सो आई। (५४) ऐ आदमी ! तू अपने पालनकर्ता के कौन-कौन पदार्थों में संदेह किया करेगा ? (५५) यह अगले डराने वालों में से एक डराने वाला है (५६) नजदीक आनेवाली समीप आ पहुंची है। (५७) अल्लाह के सिवाय किसी की सामर्थ्य नहीं कि इसको दूर कर सकें। (५८) तो क्या तुम इस बात से अश्चर्य करते हो ? (५९) और हंसते हो और रोते नहीं ? (६०) और तुम भूल में हो। (६१) बस ईश्वर को सिर झुकाओ और पूजो। (६२) (रुकू ३)

सूरे कमर

मक्के में अवतरित हुई इसमें ५५ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। प्रलय की घड़ी पास आ लगी और चाँद फटगया। (१) अगर यह कोई निशानी भी देखें तो मुंह फेर लेते हैं और कहते हैं कि यह जादू चला आता है। (२) और इन लोगों ने पैगम्बर को झुठलाया और अपनी इच्छाओं पर चले मगर हर काम नियत समय पर होता है। (३) और उनके पास इतनी खबरें आ चुकी हैं जिन में काफी ताड़ना थी। (४) इसमें पूरा चमत्कार है, मगर डराना कुछ काम नहीं आता। (५) सो तू उनकी तरफ से हट जा। जिस दिन बुलाने वाला ऐसी चीज की तरफ बुलायेगा जिसको यह न पहचानेंगे। (६) नीची आँखें किये हुए कब्रों से निकलेंगे गोया फैली हुई टिड्डियां हैं। (७) बुलाने वाले की तरफ भागते होंगे और काफिर कहेंगे कि यह कठोर दिन हैं। (८) इन लोगों से पहले नूह की जाति ने झुठलाया। हमारे सेवक नूह को झुठलाया और कहा कि यह पागल उन्मत्त है और उसको धमकियां दीं। (९) फिर उसने अपने पालनकर्ता को पुकारा कि मैं दब गया हूं, तू ही बदला ले। (१०) तो हमने मूसलाधार पानी से आकाश के पट खोल दिये। (११) और पृथ्वी से सोते बहा दिये, तो पानी एक काम के लिए जो नियत हो चुका था, मिल गया। (१२) और नूह को हमने तख्तों और कीलों से बनाई हुई नाव पर सवार कर लिया। (१३) और वह हमारी निगरानी में पड़ी तैरती रही। यह उस नूह का बदला था जिस की कदर नहीं की गई थी। (१४) और हमने इसको एक निशानी बना कर छोड़ दिया, फिर कोई सोचने वाला है। (१५) फिर हमारा दण्ड और हमारा डराना कैसा हुआ। (१६) और हमने कुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है, सो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे ? (१७) आद की जाति ने पैगम्बरों को झुठलाया तो हमारे दण्ड और

हमारा डराना कैसा हुआ। (१८) हमने एक अशुभ दिन जिसकी अशुभता नही टलती थी उन पर एक कठोर जोरशोर की आँधी चलाई (१९) वह मनुष्यों को उखाड़ फेंकती थी कि गोया वह जड़ से उखड़े हुए खजूरों के तने हैं। (२०) तो हमारा दण्ड और हमारा डराना कैसा हुआ ! (२१) और हमने कुरान को समझने के लिए सुगम कर दिया है तो कोई है जो शिक्षा ग्रहण करे ? (२२) (रुकू १)

कौम समूह ने डर सुनाने वालों पैगम्बरों को झुठलाया। (२३) और कहने लगे क्या हम ही में के एक शख्स के कहे पर हम चलेंगे, तो हम गुमराह और पागलों में होंगे। (२४) क्या हममें से इसी पर वही ईश्वरी संदेशा है। नहीं, यह झूठी शेखी मारने वाला है। (२५) अब कल को मालूम हो जायगा कि कौन झूठा शेखीखोरा है। (२६) हम इनके जाँचने के लिए एक ऊंटनी भेजनेवाले हैं तो तुम इनकी राह देखो और संतोष से बैठे रहो। (२७) और इनको जता दो कि इनमें और ऊंटनीं में पानी बाँट दिया गया है, तो हर एक गरोह अपनी अपनी बारी पर पानी पीने के लिए हाजिर हो। (२८) तो उन्होंने अपने दोस्त को बुलाया तो उसने ऊंटनी पर हाथ डाला और कूचें काट दीं। (२९) तो हमारा दण्ड और डराना कैसा हुआ। (३०) फिर हमने उन पर एक चिंघार भेजी, तो वह ऐसी हो गई जैसी रौंदी हुई काँटों की बाढ़। (३१) फिर हमने कुरान के समझाने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि शिक्षा पकड़े ? (३२) लूत की कौम ने डर सुनाने वालों को झुठलाया। (३३) तो हमने उन पर पत्थर की वर्षा की, मगर लूत के घर के लोगों को हम अपनी कृपा से सुबह हौले-हौले निकाल ले गये। (३४) यह हमारी तरफ से कृपा थी। जो लोग कृतज्ञ होते शुक्र करते हैं, हम ऐसा ही बदला देते हैं। (३५) और लूत ने उन्हें हमारी पकड़ से डराया भी था मगर वह डराने में हुज्जतें निकालने लगे। (३६) और वह उनको उनके महमानों की बाबत फुसलाते थे, फिर हमने उनकी आँखें मेंट दीं। अब हमारा

दण्ड और हमारे डराने के मजे चखो। (३७) और प्रातःकाल उनको मौत ने आ घेरा जो टाले से न टल सकती थी। (३८) अब हमारा दण्ड और हमारे डराने के मजे चखो। (३९) और हमने कुरान को समझाने के लिए आसान कर दिया है, तो कोई है कि शिक्षा ग्रहण करे? (४०) (रुकू २)

और फिरऔन के लोगों के पास डराने वाले आये। (४१) सो ऐसा ही उन्होने हमारी तमाम निशानियों को झुठलाया, तो हमने उनको ऐसा पकड़ा जैसा बली बलवान पकड़ता है। (४२) ऐ मक्केवालों! क्या तुममें से इनकार करने वाले उन लोगों से बढ़कर है या तुम्हारे लिए क्षमा है? (४३) यह लोग कहते हैं कि हमारा गिरोह अपने आप सहायता कर सकता है। (४४) सो कोई दिन जाता है कि गरोह हार जायगा और पीठ फेर कर भागेंगे (४५) नहीं। बल्कि प्रण तो उनके साथ स्वर्ग का है और प्रलय बड़ी बला और कड़वी है। (४६) निस्संदेह पापी गुमराही में और पागलपन में है। (४७) जिस दिन उनको उनके मुंह के बल नरक की आग में घसीटा जायगा और उनसे कहा जायगा नरक की आग का दण्ड लो। (४८) हमने हर चीज को एक अन्दाजे के साथ पैदा किया है। (४९) और हमारी आज्ञा करना सिर्फ एक बात है जैसे आँख की झपक। (५०) और मक्का के काफिर लोग! हम तुम्हारे साथवालों को मार चुके हैं, तो कोई है कि शिक्षा पकड़े? (५१) और हर काम जो उन्होंने किये हैं किताब में लिखे हैं। (५२) और हर एक छोटा और बड़ा काम सब लिखा हुआ है। (५३) संयमों स्वर्ग के बागों में नहरें होंगी। (५४) सच्ची बैठक में बादशाह के पास जिसका सब पर कब्जा है, बैठेंगे। (५५) (रुकू ३)

सूरे रहमान

मक्के में अवतरित हूई इसमें ७८ आयत और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हे कृपालु (१) ईश्वर ने कुरान सिखाया। (२) उसी ने आदमी को पैदा किया। (३) फिर उसको बोलना सिखाया। (४) सूरज और चाँद का एक हिस्सा है। (५) और बूटियाँ और पेड़ उसी को सिर झुकाये हुए हैं। (६) और उसी ने आकाश को ऊंचा किया है और तराजू बना दी। (७) ताकि तुम लोग तौलने में कम ज्यादा न करो। (८) और न्याय के साथ सीधा तौल तौलो और कम न तौलो। (९) और उसी ने संसार के लिए पृथ्वी बना दी है। (१०) कि उस में मेवे हैं और खजूर के पेड़ हैं, जिन पर गिलाफ चढ़े होते हैं। (११) और अनाज जिसके साथ भुस है और खुशबूदार फूल हैं। (१२) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (१३) उसी ने मनुष्य को पपड़ी की तरह बजती हुई मिट्टी से पैदा किया। (१४) और जिन्नों को आग की लौ से। (१५) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (१६) और सूरज के निकलने और डूबने की जगहों के मालिक है। (१७) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (१८) उसी ने दो नदियों को मिला दिया है कि वह मिली हैं। (१९) इन दोनों के बीच एक आड़ है कि यह उससे बढ़ नहीं सकते। (२०) तो अपने पालनकर्ता की किस निआमत को तुम झुठलाओगे ? (२१) दोनों में से मोती और मूंगे निकलते हैं। (२२) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन निआमतों को झुठलाओगे (२३) और जहाज जो समुद्र में पहाड़ों की तरह ऊंचे खड़े रहते हैं उसी के हैं। (२४) तो तुम अपने पालनकर्ता के कौन-कौन से पदार्थों को झुठलाओगे ? (२५) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर! जितनी सृष्टि जमीन पर है सब मिटने वाली है। (२६) और केवल तुम्हारे पालनकर्ता की जात बाकी रह जायगी जो बड़प्पन वाली बड़ी है। (२७) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (२८) जो कोई आकाश में और पृथ्वी में हैं, उसी से सवाल करते हैं। वह हर रोज एक शान में है। (२९) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे? (३०) ऐ दो बोझिल काफिलों* ! हम जल्द तुम्हारी तरफ ध्यान देने वाले हैं। (३१) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन निआमतों को झुठलाओगे ? (३२) ऐ जिन्न और आदमियों के गुटों ! अगर तुमसे हो सके कि आकाश और पृथ्वी के किनारों से निकाल देखो। मगर तुम बगैर जोर के निकल ही नहीं सकते। (३३) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (३४) और तुम पर आग के शोले और धुआँ भेजा जावेगा और तुम सहायता भी न कर सकोगे। (३५) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआयतों को झुठलाओगे ? (३६) फिर जब आकाश फटे और नरी की मानिन्द लाल हो जाये। (३७) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (३८) तो उस दिन न तो आदमियों से उनके गुनाहों के लिए पूछा जायगा और न जिन्नों से। (३९) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी नियामतों को झुठलाओगे ? (४०) पापियों को उनकी सूरत से पहचान लिया जायगा फिर पुट्ठे और पैर पकड़े जायंगे और उनको खींचकर नरक में ले जायंगे। (४१) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी नियामतों को झुठलाओगे ? (४२) यही नरक है जिसको पापी मनुष्य झुठलाते हैं। (४३) नरक में और खौलते हुए पानी में फिरेंगे। (४४) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी नियामतों को झुठलाओगे ? (४५) (रुकू २)

*** यानी मनुष्य और वह जीव जो आँखों से नहीं दिखाई देते और इसीलिए जिन्न कहलाते हैं।**

और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता के सामने खड़े होने से डरता रहे उसको दो बाग मिलेंगे। (४६) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ?(४७) जिसमें बहुत-सी टहनियाँ हैं। (४८) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे ? (४९) दोनों में दो चश्में जारी होंगे। (५०) तो तुम पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों झुठलाओगे ? (५१) उनमें मेवे की दो किस्में होगी। (५२) फिर तुन अपने पालनकर्ता की कौन कौन-सी निआमतों को झृठलाओगे ? (५३) फरशों पर तकिए लगाये वैठे होंगे। ताफ्ते के उनके अस्तर होंगे और दोनों बागों के फल झुके होंगे। (५४) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे ? (५५) उनमें पाक हूरें होंगी जो आँख उठाकर भी नहीं देखेंगी और स्वर्गवासियों से पहले न तो किसी मनुष्य ने उन पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने।(५६)तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कोन सी नियामतों को झुठलाओगे। (५७) वे लाल और मूंगे जैसे हैं। (५८) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआ-मतों को झुठलाओगे। (५९) भला नेकी का बदला नेकी के सिवाय क्या हो सकता है। (६०) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६१) और इन दो बागों के सिवाय और दो बाग हैं। (६२) तो तुल अपने पालनकर्ता की कौ-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे। (६३) दोनों बाग खूब गहरे सब्ज हैं। (६४) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सीं निआमतों को झुठलाओगे। (६५) उनमें दो चश्में उछल रहे होंगे। (६६) तो तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे। (६७) उन दोनों बागों में मेवे और खजूरें और अनार होंगे। (६८) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (६९) उनमें अच्छी खूबसूरत औरतें होंगी। (७०) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन-सी निआमतों को झुठलाओगे। (७१) हूरें जो खीमों में बन्द हैं। (७२) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन

सी नियामतों को झुठलाओगे। (७३) वैकुण्ठवासियों से पहले न तो किसी इन्सान ने उन हूरों पर हाथ डाला होगा और न किसी जिन्न ने। (७४) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७५) बैकुण्ठवासी वहाँ सब्ज कालीनों और अच्छे-अच्छे फर्शो पर पर तकिये लगाये होंगे। (७६) फिर तुम अपने पालनकर्ता की कौन-कौन सी निआमतों को झुठलाओगे। (७७) ऐ पैगम्बर तुम्हारे पालनकर्ता का नाम बड़ा बड़प्पन वाला और भलाई करने वाला है। (७८) (रुकू ३)

सूरे वाकिया

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९६ आयत और ३ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। (१) जब होनेवाली होगी प्रलय। (२) उसके आने में कुछ भी झूठ नहीं। (३) किसी को को नीचा दिखायेगी और किसी के दर्जे ऊंचे करेगी। (४) जब पृथ्वी बड़े जोर से हिलने लगेगी। (५) और पहाड़ के टुकड़े टुकड़े हो जायंगे। (६) फिर उड़ती मिट्टी हो जावेंगे। (७) और फिर तुम्हारी तीन किस्में हो जावेंगी। (८) फिर दाहिने हाथ वाले से दाहिने हाथ वालों का कहना है। (९) और बायें हाथ वाले बायें हाथ वालों का क्या ही बुरा हाल है। (१०) और आगे वाले सा आगे ही हैं। (११) यही मनुष्य पास वाले हैं। (१२) नियामत के बागों में। (१३) अगलों में से एक जमात है। (१४) और पिछलों में से थोड़े। (१५) जड़ाऊ तख्तों के ऊपर। (१६) आमने सामने तकिये लयाये वैठें होंगे। (१७) उनके पास लौंडे हैं जो सदैव लड़के ही बने रहेंगे। (१८) उनकें पास किसी आबखोरे और लोटे और साफ शराब के प्याले लाते और ले जाते होंगे। (१९) जिससे न तो उनके सिर में दर्द होगा न बकवाद

लगेगी। (२०) और जो मेवे उनको अच्छे लगें। (२१) और जिस किस्म के पक्षी का मांस उनको अच्छा लगे। (२२) और हूरें बड़ी बड़ी आँखों वाली जैसे छिपे हुए मोती। (२३) बदला उसका जा करते थे। (२४) वहाँ बकना और पाप की बात सुनेंगे। (२५) मगर सलामती-सलामती की आवाजें आ रही होंगी। (२६) आर दाहिने तरफ वाले ! सो इन दाहिनी तरफ वालों का क्या कहना है। (२७) वे कांटे की बेरियों। (२८) और लदे हुए केलों में। (२९) और लम्बे साये में। (३०) और बहते पानी में। (३१) और मेवों में। (३२) जो न कभी खतम हों और न रोके जायें। (३३) और ऊंचे विछौने। (३४) हमने हूरों की एक खास सृष्टि बनाई है। (३५) फिर इनको क्वाँरी बनाया है। (३६) प्यारी प्यारी समान अवस्था वाली। (३७) यह सब दाहिनी तरफ वालों के लिए हैं। (३८)(रुकू १)

एक जमात पहिलों में से है। (३९) और एक जमात पिछलों में से है। (४०) और बांई ओर वाले क्या बुरे बांई ओर वाले होंगे। (४१) कि वह आंच की भाप में और गरम पानी में होंगे। (४२)और धुयें की छाओं में। (४३) जो न ठण्डी है और न इज्जत की। (४४) यह लोग इससे पहिले आराम में थे। (४५) और बड़े पाप पर हठ करते रहते थे। (४६) और कहते थे जब हम मर गये और मिट्टी और हड्डियाँ हो गये क्या फिर हम उठाये जायेंगे। (४७) और क्या हमारे अगले बाप दादा भी। (४८) हे पैगम्बर कहो कि अगले और पिछले सब। (४९) एक मालूम वक्त पर जमा किये जायेंगे। (५०) फिर ऐ झुठलाने वाले गुमराहों। (५१) तुमको नरक में सेहुंड़ का पेड़ खाना होगा। (५२) और उसी से पेट भरना पड़ेगा। (५३) फिर ऊपर से उबलता हुआ पानी पीना होगा। (५४) फिर ऐसे पीओगे जैसे प्यासे ऊंट पीते हैं। (५५) न्याय के दिन यही उनकी मेहमानी है। (५६) हमने तुमको पैदा किया है फिर भी तुम क्यों नहीं मानते। (५७)भला देखो तो जो वीर्य स्त्रियों की योनि में टपकाते हो। (५८) क्या तुम

उससे आदमी पैदा करते हो या हम पैदा करते हैं। (५९) हमने तुममें मरना ठहरा दिया और हम हारे नहीं रहे। (६०) कि तुम्हारी मानिन्द और कौम बदल लाये और तुम्हें उस जहाज में उठा खड़ा करें जिसे तुम नहीं जानते। (६१) और तुम पहिली पैदायश जान चुके हो फिर क्यों नहीं सोचते। (६२) भला देखो तो जो बोते हो। (६३) क्या तुम उसको उगाते हो या हम उगाते हैं। (६४) हम चाहें तो उसको चूरा-चूरा कर दें। और तुम बातें बनाते रह जाओ। (६५) हम टोटे में आ गये। (६६) बल्कि हमारा भाग्य फूट गया। (६७) भला देखो तो पानी जो तुम पीते हो। (६८) क्या तुमने इसको बादल से बरसाया या हम बरसाते हैं। (६९) अगर हम चाहें तो उसको खारी कर दें तो तुम क्यों नहीं धन्यवाद देते। (७०) भला देखो तो आग जो तुम सुलगाते हो। (७१) इस पेड़ को तुमने पैदा किया है या हम पैदा करते हैं। (७२) हमने वे याद दिलाने और मुसाफिरों के फायदे के लिए बनाये हैं। (७३) सो अपने पालनकर्ता के नाम की माला फेर जो सब से बड़ा। (७४) (रुकू २)

तारों के टूटने की सौगन्ध है। (७५) और समझो तो यह बड़ी सोगन्ध है। (७६) यह बड़ी कद्र की कुरान है। (७७) छिपी किताब में लिखा हुआ है। (७८) उसको वही छूते हैं जो पवित्र बने हैं (७९) संसार के पालनकर्ता से भेजा है। (८०) अब क्या इस वात से सुस्ती करते हो। (८१) और अपना हिस्सा यही लेते हो कि झुठलाते हो। (८२) फिर क्यों न हो जब जान गले में पहुंच जावे। (८३) और तुम उस समय देखा करो। (८४)और हम तुम्हारी निस्बत उससे अधिक तर पास हैं लेकिन तुम नहीं देखते*। (८५) फिर अगर तुम किसी

---

* एक नस ऐसी है जो शहरग कहलाती है। यदि यह न होती तो नाड़ीमें धमक न होती,यह आत्मा से सिली हुई है, ईश्वर आदमी से इससे भी अधिक समीप है। कुछ लोगों ने इस समय आयत का यह भी अर्थ

की आज्ञा में नहीं हो तो क्यों। (८६) तो तुम उसको फेर लाते अगर तुम सच्चे हो। (८७) सो अगर वह पास वालों में हुआ। (८८) तो आराम रोजी और नियामत के बाग हैं। (८९) और अगर वह दाहिनी ओर वालों मे से है। (९०) तो दाहिनी तरफ वालों की ओर से तेरे लिए सलाम है। (९१) और अगर झुठलाने वालों गुमराहों में से है। (९२) तो उबलते पानी से महमानी की जावेगी। (९३) नरक आग में ढकेला जावेगा। (९४) निस्संदेह यह बात सच विश्वास के लायक है। (९५) सो अपने पालनकर्ता के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर। (९६) (रुकू ३)

सूरे हदीद

मक्के में अवतरित हुई इसमें २९ आयतें और ४ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो दयावान व कृपालु है। जो कुछ आकाश और पृथ्वी में हैं अल्लाह को पवित्रता से याद करते हैं और वही जबर-दस्त चमत्कार वाला है। (१) आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी का है। वही जिलाता और मारता है और वह हर चीज पर शक्तिमान है। (२) वही आदि है और अन्त है और वही प्रत्यक्ष और गुप्त है और वह हर चीज से जानकार है। (३) वही है जिसने ६ दिन में आकाश और पृथ्वी को बनाया फिर तख्त जा बिराजा। जो चीज पृथ्वी में दाखिल होती और जो चीज पृथ्वी से बाहर आती है और जो चीज

बताया है कि जब आदमी मरने लगता है तो उसके करीबी रिश्तेदार उसके पास होते हैं। ईश्वर हर समय उसके पास होता है और उसके सम्बंधियों से ज्यादा नजदीक होता है।

आकाश से उतरती और जो चीज आकाश की तरफ चढ़ती है वह जानता है और तुम जहाँ कहीं हो वह तुम्हारे साथ हैं और जो कुछ तुम किया करते हो अल्लाह सबको देख रहा है। (४) आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी का है और सब काम अल्लाह ही तक पहुंचते हैं। (५) वही रात को दिन में दाखिल करता और दिन को रात में दाखिल करता है। दिली बात की उसको खबर है। (६) अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और उस माल में से जिसका उसे अधिकारी बनाया है खर्च करो। तो जा मनुष्य तुम में से ईमान लाये और खर्च करते हैं उनके लिये बड़ा फल है। (७) और तुमको क्या हो गया है कि ईश्वर पर ईमान नहीं लाते हालाँकि पैगम्बर तुमको तुम्हारे ही पालनकर्ता पर ईमान लाने के लिए बुला रहे है और अगर तुमको विश्वास आये तो ईश्वर तुमसे कौल करा चुका है। (८) वही जो अपने सेवक पर खुली आयतें उतारता है ताकि अन्धकार से निकालकर रोशनी में लाये और निस्सन्देह अल्लाह पर बड़ा दयावान व कृपालु है। (९) और तुमको क्या हो गया है कि ईश्वर की राह में खर्च नहीं करते हालाँकि आकाश और पृथ्वी का स्वामी ईश्वर ही है, तुममें से जिन लोगों ने मक्का से पहिले खर्च किया और लड़ाई की। वह दूसरों लोगों के बराबर नहीं। यह लोग दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने मक्का के फतह के पीछे माल खर्च किये और लड़े खर्च और ईश्वर ने सभी से से अच्छा प्रण किया है और जैसे-जैसे काम तुम लोग करते हो अल्लाह को उनकी खबर है। (१०) (रुकू १)

ऐसा कौन है जो अल्लाह को प्रसन्नता से उधार* दे फिर वह उसको उसके लिए दूना कर दे और उसके लिए इज्जत का फल है।

*** जो कोई अपना धन ईश्वर की राह में देता है उसको ईश्वर उसके दिये हुए धन का दूना बदला देता है। यानी दोनों लोकों में अच्छा फल पाता है।**

(११) जिस दिन दिन तू ईमान वाले मनुष्य और ईमान वाली स्त्रियाँ को देखेगा उसकी रोशनी उनके आगे और उनके दाहिनी तरफ दोड़ती है। आज तुम लोगों के लिये खुशी है। बैकुण्ठ के बाग हैं जिनके नीचे नहरें वह रही हैं। इन्हीं में सदा रहोगे यही बड़ी कामयाबी है। (१२) उस दिन कपटी मनुष्य और कपटी औरतें ईमान वालों से कहेंगे कि हमारा इन्तजार करो कि हम भी तुम्हारी रोशनी से कुछ ले लें। कहा जायगा अपने पीछे की ओर लौट आओ और रोशनी तलाश कर लो। इसके वाद इन दोनों फरीकों के बीच में एक दीवार खड़ी कर दी जायगी उसमें एक द्वार होगा उसमें भीतरी तरफ कृपा होगी और उसकी बाहरी तरफ दण्ड होगा। (१३) वह कपटी ईमान वालों को पुकारेंगे कि क्या हम तुम्हारे साथ न थे वह कहेंगे। सही मगर तुमको अपने आपको बला में डाला और तुम राह देखते थे और सन्देह करते थे और ख्यालों पर धोखे में रहे यहाँ तक कि ईश्वर की आज्ञा आ पहुंची और राक्षस धोखेबाज ने तुयको अल्लाह के विषय में धोखा दिया। (१४) सो आज न तो तुमसे छुड़ाई का बदला कबूल किया जायगा और न उन मनुष्यो से जो इन्कार करते रहे। तुम सबका ठिकाना नरक है वही तुम्हारा मित्र है और तुम्हारा बुरा ठिकाना है। (१५) क्या ईमान वालों के लिए समय नहीं आया कि ईश्वर का जिक्र और कुरान के पढ़ने के लिए जो सच्चे ईश्वर की तरह से उतरा है उनके दिल पिघले और यह उन मनुष्यों की तरह न हो जावें जिनको पहले किताब दी गई थी। फिर उन पर एक समय बीत गया और उनके दिल कठोर हो गये और उनमें बहुत अवज्ञाकारी हैं। (१६) जाने रहो कि अल्लाह पृथ्वी को उसको मरे पीछे जिलाता है हमने तुम्हारे लिए आयतें बयान की है ताकि तुम्हें समझ हो। (१७) निस्संदेह दान करने वाले और दान करने वालियों और जो लोग ईश्वर को खुशदिली से उधार देते है उन्हें दूना मिलेगा और उनको प्रतिष्ठा का फल मिलेगा। (१८) और जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाये यही लोग अपने पालनकर्ता के निकट सच्चे

श्रौर गवाह हैं उनको उनका फल श्रौर रोशनी दूर मिलेगी श्रौर जो लोग काफिर हुए श्रौर हमारी श्रायतों को झुठलाते हैं यही मनुष्य नरकवासी हैं। (१९) (रुकू २)

मनुष्यों जाने रहो कि इस साँसारिक जीवन का खेल श्रौर तमाशा श्रौर जाहिरी शोभा है श्रौर आपस में एक दूसरे पर घमण्ड करना श्रौर माल श्रौर सन्तान बढ़ाना है। यह मेह की तरह है कि काश्तकार खेती को देख कर खुशियाँ मनाने लगते हैं। फिर पक कर खुश्क हो जाती है तो उसको देखता है कि पीली पड़ गई। फिर मड़नी में श्रा जाती श्रौर पिछले घर में कठोर दण्ड है। श्रौर श्रल्लाह से रजामन्दी श्रौर क्षमा भी है श्रौर सांसारिक जीवन तो निरा धोखा की टट्टी है। (२०) मनुष्यों श्रपने पालनकर्ता के दान की तरफ लपको श्रौर बैकुण्ठ की श्रोर लपको जिसका फैलाव है जैसे श्राकाश श्रौर पृथ्वी का फैलाव श्रौर वह उन मनुष्यों के लिए तैयार कराई गई है जो ईश्वर श्रौर उसके पैगम्बरों पर ईमान लाते हैं। यह ईश्वर की कृपा है जिसको चाहे दे श्रौर श्रल्लाह की कृपा बहुत बड़ी है। (२१) लोगों जितनी मुसीबतें जमीन पर उतरती हैं श्रौर जो तुम पर उतरती हैं वह सब उनके पैदा करने से पहली हमने किताब में लिख रक्खी हैं। निस्सन्देह यह श्रल्लाह के पास सरल है। (२२) श्रौर हमने तुमको इसलिए जताया ताकि कोई वस्तु तुमसे जाती रहे तो उसको रंज न करो श्रौर चीज ईश्वर तुमको दे तो उस पर इतराश्रो मत श्रौर श्रल्लाह किसी इतराने वाले घमण्डी को पसन्द नहीं करता। (२३) जो मनुष्य कंजूसी करते हैं श्रौर मनुष्यों को कँजूसी सिखाते हैं श्रौर मनुष्य मुंह फेरेगा तो कुछ सन्देह नहीं श्रल्लाह बेनियाज तारीफ के योग्य है। (२४) हमने श्रपने पैगम्बरों को खुले-खुले चमत्कार देकर भेजा श्रौर उसकी मारफत किताबें उतारी श्रौर तराजू ताकि मनुष्य न्याय पर कायम रहें श्रौर लोहा पैदा किया उसमें बड़ा खटका है श्रौर उसमें मनुष्यों के लाभ हैं श्रौर एक मतलब यह भी है कि श्रल्लाह उन मनुष्यों का मालूम करले जिन्होंने श्रल्लाह को देखा

नहीं फिर भी अल्लाह और उसके पैगम्बरों की सहायता को खड़े हो जाते हैं। निस्सन्देह अल्लाह बड़ा बलवान है। (२५) (रुकू ३)

और हमने नूह और इब्राहीम को भेजा और उनकी संतान में पैगम्बरी और किताब को रक्खा। फिर उनमें से कोई राह पर है और बहुतेरे उनमें अवज्ञाकारी हैं। (२६) फिर पीछे उन्हीं के कदम व कदम हमने अपने पैगम्बर भेजे और पीछे मरियम के बेटे ईसा को भेजे और उनको इंजील दी और जो लोग उनके मुरीद हुए उनके दिलों में दया और तरस डाल दिया और संसार को छोड़ बैठना सन्यास जिनको उन्होंने अपने आप पैदा किया था* हमने वह उन पर फर्ज नहीं किया था। मगर उन्होंने ईश्वर की प्रसन्नता हासिल करने के लिए जैसा उनको निबाहना चाहिए था न निबाह सके तो जो लोग इन में से ईमान लाये हमने उनको उनका फल दिया और उनमें से बहुतेरे तो अवज्ञाकारी हैं। (२७) ईमानवालों ; अल्लाह से डरते रहो और उसके पैगम्बर मुहम्मद पर ईमान लाओ कि वह अपनी कृपा में से तुमको दोहरा हिस्सा दे और तुमको ऐसा नूर दे जिसकी रोशनी में चलो और तुम्हें क्षमा करेगा और अल्लाह क्षमा करनेवाला कृपालु है। (२८) किताब वाले ज न रखें कि वह ईश्वर की कृपा पर कुछ भी अधिकार नहीं रखते और इसलिए कि कृपा अल्लाह के हाथ हैं, जिसको चाहे दे। और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (२९) (रुकू ४)

---

* हजरत ईसा के मानने वाले बड़े नेक तपस्वी और बड़े दयालु होते थे, इंजील द्वारा सन्यास जरूरी न होने पर भी उन्होंने संन्यास अर्थात संसारी सुखों से अपने को अलग कर रखा था यह ईश्वर की प्रसन्नता के लिये था।

अट्ठाईसवा पारा (कद समिअल्लाह)

सूरे मुजादिला

मदीने में रवतरित हुई, इसमें २२ आयतें और ३ रुकू हैं

* अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। ऐ पैगम्बर! अल्लाह ने उस औरत की बात* सुन ली जो अपने पति के विषय में तुम से झगड़ती और ईश्वर से बुराई करती थी और अल्लाह तुम दोनों की बात चीत को सुन रहा था। निस्संदेह अल्लाह सुननेवाला देखने वाला है। जो लोग तुममें से अपनी बीबियों को माँ कह बैठते हैं वह तो उन की माँ नहीं हो जाती। उनकी मातायें तो वही हैं जिन्होंने उनको पैदा-किया है। और उन्होंने उनको जना है। और उन्होंने एक बेहूदा और झूठी बात कही अल्लाह क्षमा करनेवाला है। (२) और जो लोग अपनी बीबियों से माँ कह बैठते हैं फिर जो कहा था उससे फिरना चाहते हैं तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले एक गुलाम छोड़ना होगा। यह तुमको शिक्षा दी जाती है और ईश्वर तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (३) फिर जो यह न कर सके तो एक दूसरे को हाथ लगाने से पहले लगातार दो महीने के रोजे रखे और जो यह न कर सके तो साठ गरीबों को खाना खिला दे। यह इस लिए है कि तुम अल्ला और उसके पैगम्बर पर ईमान ले आओ यह अल्लाह की बाँधी हुई हदें हैं और काफिरों को दुखदाई दण्ड है। (४) जो मनुष्य अल्लाह और

---

*इस्लाम से पहले यदि कोई अपनी पत्नी को माँ या बहन कह देता था तो वह स्त्री उस पुरुष पर सदा के लिए हराम हो जाती थी इस्लाम के बाद एक आदमी से ऐसी ही भूल हो गई, औरत रोती-पीटती मुहम्मद साहब के पास आई। उस पर यह आयत उतरी।

उसके पैगम्बर के विरुद्ध आचरण करते हैं वह ख्वार हुए, जैसे इससे पहले मनुष्य ख्वार हुए थे। और हमने साफ आयतें उतारीं और काफिरों के लिए ख्वारी का दण्ड है। (५) जब अल्लाह उन सब को उठायेगा फिर जैसे,जैसे कर्म यह मनुष्य करते रहे हैं, इनको बता देगा। अल्लाह तो उनके कर्मों को गिनता गया और यह उनको भूल गये और अल्लाह सब चीजों की देख-रेख है (६) (रुकू १)

ऐ पैगम्बर ! क्या तूने नहीं देखा कि जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में हैं अल्लाह सब से जानकार है। जब तीन आदमी की सलाह होती है तो अवश्य उनका चौथा वह होता है और पाँच का सलाह मशविरा होता है तो जरूर उनका छटा वह होता है। और इससे कम हों या ज्यादा कहीं भी हों वह अवश्य उनके साथ होता है। फिर जैसे-जैसे कर्म यह करते रहे हैं प्रलय के दिन वह उनको जता देगा। अल्लाह हर चीज को जानता है। (७) ऐ पैगम्बर ! क्या तूने उन मनुष्यों को नहीं देखा जिन को कानाफूसी करने से मना कर दिया गया था ? फिर जिससे उनको मना कर दिया गया था लौट कर वही करते हैं। और वह पाप और अधिकता करने की और पैगम्बर से सरकशी करने की कानाफूसी करते हैं, और जब यह तेरे पास आते हैं तो ऐसी दुआ देते हैं जैसी अल्लाह ने तुझे दुआ नहीं दी। और यह अपने जी में कहते हैं कि हमारे कहने पर ईश्वर हम को दण्ड क्यों नहीं देता ? इनके लिये नरक काफी है। वह उसी में दाखिल होंगे और वह बुरी जगह है। (८) मुसलमानों ! जब तुम कानाफूसी करो तो पाप की और जियादती करने की और पैगम्बर की अवज्ञाकारी की बातें एक दूसरे के कान में न किया करो, हाँ, नेकी और संयमी की और अल्लाह से डरते रहो जिसके सामने इकट्ठा होना है। (९) ऐसी कानाफूसी तो एक शैतानी हरकत है ताकि जो ईमान लाये हैं उदास होवें। हालांकि ईश्वर की आज्ञा के बिना उनको कुछ भी हानि नहीं पहुंचा सकते और ईमान वालों को चाहिए कि अल्लाह ही पर भरोसा

रखें। (१०) ईमान वालों ! जब तुमसे कहा जावे कि मजलिस में खुल-खुलकर बैठो तो तुम जग़ह छोड़-छोड कर बैठो ईश्वर तुम्हारे लिए ज्यादा कर देगा और जब कहा जाय उठ खड़े हो तो उठ खड़े हुआ करो जो लोग तुम में से ईमान रखते हैं और ज्ञानी हैं, अल्लाह उनके दर्जे ऊंचे और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (११) ईमान वालों ! जब तुमको पैगम्बर के कान में कोई बात कहनी हो तो अपनी बात कहने से पहले कुछ पुण्य लाकर आगे रख दिया करो यह तुम्हारे लिए भलाई है और ज्यादा पवित्र है। फिर अगर तुम यह न कर सको तो अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (१२) क्या तुम पैगम्बर के कान में * कोई बात कहने से पहले कुछ पुण्य लाकर आगे रखने से डर गये ? तो जब तुम ऐसा न कर सको तो ईश्वर ने तुम्हारा यह अपराध क्षमा कर दिया, तो नमाजें पढ़ो और जकात दो और अल्लाह और उस पैगम्बर की आज्ञा मानो और जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१३))रुकू २)

क्या तूने उन्हें नहीं देखा जिन्होंने ऐसे मनुष्यों से मित्रता की जिन पर ईश्वर का क्रोध है ? यह लोग न तुममें हैं न उनही में और वह जान-बूझकर झूठी बातों पर सौगन्ध खाते हैं। (१४) उनके लिए ईश्वर ने कठोर दण्ड तैयार कर रखा है। इसमें संदेह नहीं कि यह मनुष्य बुरा करते हैं। (१५) उन्होंने अपनी सौगन्धों को ढाल बना रखा है और यह ईश्वर की राह से लोगों को रोकते हैं, तो उनके लिए ख्वारी का दण्ड है। (१६) अल्ला के यहाँ न इनके माल कुछ इनसे काम आवेंगे और न इनकी औलाद। यह नरकगामी मनुष्य हैं

* कुछ मुनाफिक अपनी शान जताते और यह दिखाने को कि ये मुहम्मद साहब के बड़े मुँह लगे हैं कान में बातें करते थे, उनका भंडाफोड़ करने के लिए ये आयते उतरीं। झूँठे भला क्यों पुण्य करते।

जो हमेशा नरक ही में रहेंगे। (१७) जिस दिन अल्लाह इन सबको उठायेगा तो यह उसके आगे कस्में खावेंगे जैसे यह मुसलमानों के आगे सोगन्ध खाया करते हैं और समझते हैं कि खूब कर रहे हैं निस्संदेह यही लोग झूठे हैं। (१८) शैतान ने इन पर काबू जमाया है और उसने इनको ईश्वर की याद भुला दी है। यह शैतानी गिरोह है और शैतानी गिरोह नाश होंगे। (१९) जो लोग अल्लाह और उसके पैगम्बर से विरोध करते हैं वही जलील होंगे। (२०) ईश्वर तो लिख चुका है कि हम और हमारे पैगम्बर जबर रहेंगे। निस्संदेह अल्लाह जोरावर जबर-दस्त है। (२१) ऐ पैगम्बर! जो लोग अल्लाह और प्रलय का विश्वास रखते हैं उनको न देखोगे कि ईश्वर और उसके पैगम्बर के शत्रुओं के साथ मित्रता रखें चाहे वह उनके बाप या उनके पुत्र या उनके भाई या उनके वंश ही के हों। यही हैं जिनके दिलों के अन्दर ईश्वर ने इमान लिख दिया है और अपनी गुप्त कृपा से उनकी सहायता की है और उनको बागों में ले जाकर दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उन्हीं में रहेंगे। खुदा उनमे खुश और वह ईश्वर से खुश। यह खुदाई गिरोह है। खुदाई गिरोह ही की जीत होगी (२२) (रुकू ३)

सूरे हशर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २४ आयतें और ३ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है सब अल्लाह की माला फेरते हैं और वह बली चमत्कार वाला हैं। (१) वही है जिसने किताब वालों में से

इन्कारियों को उनके घरों से जो मदीने में बसते थे पहले* हशर के लिए निकाल बाहर किया। मुसलमानों! तुम यह न विचार करते थे कि यह निकलेंगे और वह इस ख्याल में थे कि उनके किले उनको ईश्वर के मुकाबले में बचा लेंगे। तो जिधर से उनका विचार भी न था ईश्वर ने उनको घेर लिया और उनके दिलों में धाक बैठा दी कि उन्होंने अपने हाथों और मुसलमानों के हाथों से अपने घरों को खराब कर डाला। तो आँखों वालों! शिक्षा पकड़ो। (२) और अगर ईश्वर ने देश निकाले की लिख दी होती, तो वह उनको संसार में दण्ड देता और अन्त में उनको नरक की दण्ड है। (३) यह इस कारण से कि इन्होंने ईश्वर और उसके पैगम्बर की शत्रुता की और जो ईश्वर से शत्रुता करे तो ईश्वर की मार कठोर है: (४) मुसलमानों! इनके खजूरों के पेड़ जो तुमने काट डाले या इनको उनकी जड़ों पर खड़ा रहने दिया ठूंठ कर दिया तो यह ईश्वर ही की आज्ञा से था और इसलिए कि बदकारों को जलील कर। (५) और जो माल ईश्वर ने अपने पैगम्बर को मुफ्त में उनसे दिलवा दिया हालाँकि तुमने उसके लिए न तो घोड़े दौड़ाये और न ऊंट, मगर अल्लाह अपने पैगम्बरों में से जिसको चाहे जीत देता है, और अल्लाह हर चीज पर शक्तिमान है। (६) जो माल अल्लाह अपने पैगम्बर की बस्तियों के लोगों से दिला दें सो अल्लाह का और पैगम्बर का और रिश्तेदारों का और अनाथों का और गरीबों का और यात्रियों का है। यह इस-लिए कि जो तुममें से धनी हैं, यह माल उन्हीं के लेने देने में आता जाता न रहे। और जो चीज पैगम्बर तुम को दे दिया करे वह ले लिया करो और जिस चीज से मना करें उससे रुके रहो ईश्वर से डरो

* इन आयतों में बनी नुजैर का हाल है। यह लोग यहूदी थे। यह मुसलमानों के विरुद्ध कपटियों की सहायता करते थे। इनको लड़कर इस बात पर विवश किया गया कि यह अपना घर छोड़कर कहीं और चले जायें। यही पहला हशर था।

ईश्वर की मार बड़ा कठोर है। (७) यह लूट का माल तो गरीब देश त्यागियों के लिए है जो अपने घरों और माल से निकाल दिये गये कि वह ईश्वर की कृपा और उसकी रजामन्दी की चाहना में लगे हैं और ईश्वर और उसके पैगम्बर की सहायता करते हैं। यही लोग सच्चे हैं। (८) और वह माल उनके लिए है जिन्होंने इस घर यानी मदीने में और ईमान में जगह पकड़ रखी है। जो उनके पास हिजरत देश त्याग करके आता है उसको प्यार करते और जो कुछ उन देश त्यागियों को दिया जाय दूसरे दिल तंग नहीं करते और जो उनको अपनी जानों पर मुकद्दम* रखते हैं अगर्चे आप तँगी में हो। और जो अपने जी के लालच से बचाया गया वही मन चाहा पावेगा। (९) और वह माल उनके लिए है जो इन देश त्यागियों के बाद आये। कहते हैं कि हमारे पालनकर्ता ! हमको और हमारे उन भाइयों को भी जो हमसे पहले ईमान लाये क्षमा कर और हमारे दिलों में ईमानवालों की बुराई न डाल। ऐ हमारे पालनकर्ता ! तू ही कृपालु और दया करने वाला है। (१०) (रुकू २)

ऐ पैगम्बर ! क्या तूने उन लोगों को न देखा जो दगाबाज, कपटी है। किताब वालों में से काफिरों से कहते हैं कि अगर तुम निकाले जाओगे तो हम भी तुम्हारे साथ निकल जावेंगे और तुम्हारे सम्बन्ध में हम कभी किसी का कहना न मानेंगे। और अगर तुमसे लड़ाई होगी, तो हम तुम्हारी सहायता करेंगे और अल्लाह साक्षी देता है कि वह झूठे हैं। (११) अगर वह निकाले जावें यह उनके साथ न निकलेंगे और उनसे लड़ाई हुई तो यह कभी इनकी सहायता न करेंगे और जो सहायता देंगे तो पीठ देकर भागेंगे। फिर कहीं सहायता न पावेंगे। (१२) इनके दिलों में तुम्हारा डर ईश्वर से भी बढ़कर है। यह इस

*** पहली आयतों में उन लोगों का वर्णन था जो मक्के से मदीने चले आये थे। इन आयतों में उनकी प्रशंसा की गई जो मदीने रहते रहते थे और अंसार या सहायक कहलाते थे।**

कारण से है कि यह लोग ना समझ हैं। (१३) यह सब मिलकर भी तुम से नहीं लड़ सकते, मगर किलेवाली बस्तियों में या दीवारों की आड़ से। आपस में इनकी बड़ी धाक हैं। तू इनको एक समझता है हालाँकि इनके दिल फटे हुए है, यह इसलिए कि यह बेसमझ हैं। (१४) इनकी* उदाहरण उन जैसी उदाहरण है थोड़े ही दिनों पहले अपने किये का मजा चख चुके और इनको दुखदाई दण्ड हैं। (१५) इनका उदाहरण राक्षस जैसा उदाहरण है, जब वह आदमी से कहता हैं कि इन्कारी हो। फिर जब वह इन्कारी हुआ तो कहता है कि मुझको तुझसे कुछ मतलब नहीं। मैं अल्लाह से डरता हूं जो संसार का पालन-कर्ता है। (१६) तो इन दोनों का परिणाम यही होता है कि दोनों नरक में जावेंगे। उसी में हमेशा रहना होगा और सरकशों का यही दण्ड है। (१७) (रुकू २)

मुसलमानों! ईश्वर से डरते रहो और हर आदमी का ध्यान रखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या कर रखा है और ईश्वर से डरो। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह को उसकी खबर है। (१८) और उन लोगों की तरह न बनो जिन्होंने ईश्वर को भुला दिया, तो ईश्वर ने भी ऐसा किया कि यह अपने आप को भूल गये। यही अवज्ञा-कारी हैं। (१९) नरकवासी और स्वर्ग वासी बराबर नहीं, स्वर्गवासी ही कामयाब हैं। (२०) ऐ पैगम्बर! अगर हमने यह कुरान किसी पहाड़ पर उतारा होता तो तू देखता कि ईश्वर के डर के मारे वह झुकगया और फट गया होता और हम यह उदाहरण लोगों के लिए बयान फर्माते हैं ताकि वह सोचें। (२१) वही अल्लाह है जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। छिपे और सामने का जानने वाला बड़ा कृपालु है। (२२) वही अल्लाह जिसके सिवाय कोई पूजित नहीं। बादशाह है,

---

*यह बद्र के काफिरों की ओर संकेत है। बद्र की लड़ाई में उनकी बहुत बुरी हार हुई थी।

निर्दोष है, शान्तिदाता निरीक्षक है, शक्ति वाला है, बड़ा तेजस्वी है। यह लोग जैसे-जैसे शिर्क ईश्वर की जात व गुण में साझा करते हैं, अल्लाह उससे पवित्र है। (२३) वही अल्लाह पैदा करनेवाला, बनाने वाला, सूरतें देनेवाला है, उसके सब नाम अच्छे हैं जो कुछ पृथ्वी आकाश में है वह उसी की माला फेरा करते हैं और वह बड़ा चमत्कार वाला है। (२४) (रुकू ३)

सूरे मुम्तहना

मक्के में अवतरित इसमें १३ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु तथा दयावान है ईमान वालों अगर तुम हमारी राह में जेहाद करने और हमारी रजामन्दी ढूंढने के लिए निकले हो तो हमारे और अपने शत्रुओं को मित्र न बनाओ तुम तो उनकी तरफ प्रेम के संदेश भेजते हो हालाँकि तुम्हारे पास जो सच बात आई है वह उससे इन्कार करते हैं। पैगम्बर को और तुमको इस बात पर निकालते हैं कि तुम ईश्वर पर, जो तुम्हारा पालनकर्ता है, ईमान लाये हो। तुम छिपकर उनकी तरफ प्रेम के संदेश भेजते हो और जो कुछ तुम छिपाकर करते हो और जो कुछ जाहिरा करते हो हम खूब जानते हैं। और जो कोई तुममें से ऐसा करे सो वह सीधी राह से भटक गया। (१) और वह तुम्हें पावें तुम्हारे शत्रु हो जावें और तुम्हारी तरफ अपने हाथ चलायेंगे और बुराई के साथ अपनी जबान भी चलायेंगे कि तुम भी काफिर हो जाओ। (२) प्रलय के दिन न तुम्हारी रिश्तेदारी तुमको काम आवेगी और न तुम्हारी संतान। वह तुममें निर्णय कर देगा और ईश्वर तुम्हारे कामों को देखने वाला

है। (३) इब्राहीम में और उसके साथियों में तुम्हारे लिए अच्छा नमूना है जब उन्होंने अपनी जाति से कहा कि हम तुमसे और जिनको तुम अल्लाह के सिवाय पूजिते हो उनसे अलग हैं। हम तुमको नहीं मानते और हममें और तुममें शत्रुता और बैर हमेशा के लिए खुल पड़ा जब तक तुम अकेले ईश्वर पर ईमान न ले आओ, मगर इब्राहीम का कहना बाप के लिए यह था कि मैं तेरे लिए क्षमा माँगूगा हालांकि ईश्वर के आगे तेरे लिए मेरा कुछ जोर तो चलता नहीं। ऐ हमारे पालनकर्ता हम तुझी पर भरोसा करते हैं और तेरी ही तरफ ध्यान धरते हैं और तेरी ही तरफ लौट कर जाना है। (४) ऐ हमारे पालनकर्ता हम पर काफिरों को विजय न दे और ऐ हमारे पालनकर्ता हमको क्षमा कर; तू बली चमत्कार वाला है। (५) तुमको उनकी भली चाल चलनी है जो अल्लाह पर और प्रलय पर उम्मेद रखते हैं और जो कोई मुंह फेरे तो ईश्वर बेपरवाह और बड़ाई के योग्य है। (६) (रुकू १)

आश्चर्य नहीं कि अल्लाह तुममें और राक्षसों में जिनके साथ तुम्हारो शत्रुता है मित्रता पैदा कर दे और अल्लाह सब कर सकता है और अल्लाह क्षमा करने वाला कृपालु है। (७) जो लोग तुमसे दीन में नहीं लड़े न उन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकाला उनके साथ भलाई करने और न्याय का बर्ताव करने से ईश्वर तुमको मना नहीं करता। अल्लाह न्याय पर चलने वालों को चाहता है। (८) अल्लाह तुम्हें उनकी मित्रता से मना करता है जो तुमसे दीन के बारे में लड़े और जिन्होंने तुमको तुम्हारे घरों से निकला और तुम्हारे निकालने में दूसरों की सहायता की और जो कोई ऐसों की दोस्ती रखे तो लोग अत्याचारी हैं। (९) ईमान वालों! जब तुम्हारे पास ईमान वाली औरतें घर छोड़ कर आवें तो उनको जाँचों अल्लाह उनके ईमान को खूब जानता है अगर तुम्हें मालूम हो कि वह ईमान वाली हैं तो उनको राक्षसों के पास न फेरो। वह राक्षसों को हलाल नहीं और न राक्षस उन्हें हलाल हैं और जो उन राक्षसों ने खर्च किया है उनको दे दो तुम

पर पाप नहीं कि उन औरतों से व्याह करो जब कि तुम उनको उनके मिहर पति का करार स्त्री के लिये, दे दो और तुम काफिर औरतों का निकाह न थाम रखो* और जो तुमने खर्च किया है माँग लो और उन काफिरों ने खर्च किया है वे भी माँग लें। यह अल्लाह की आज्ञा है जो तुम्हारे बीच न्याय करता है अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (१०) और अगर तुम्हारी औरतों में से राक्षसों की तरफ कोई औरत निकल जावे फिर तुम राक्षसों को क्रोधी होकर मारो यानी लड़ाई कर के लूटो तो लूट के माल में से उनको जिसकी औरतें जाती रही हैं उतना माल दे दो जितना उन्होंने खर्च किया था और अल्लाह से डरो जिस पर ईमान लाये हो। (११) ऐ पैगम्बर जब तेरे पास मुसलमान औरतें आवें और इस पर तेरी चेली बनाना चाहें कि किसी चीज को अल्लाह का साझी नहीं ठहरावेंगी और न चोरी करेंगी और व्यभिचार करेंगी और न लड़कियों को मार डालेंगी और न अपने हाथ पाँव के आगे कोई लफंट बनाकर खड़ा करेंगी और न अच्छे कामों में तुम्हारी अवज्ञा करेंगी तो इन शर्तों पर तुम उनको चेली बना लिया करो और ईश्बर के सामने उनके लिये क्षमा की प्रार्थना करो और अल्लाह क्षमा करने वाला दयालु है। (१२) ऐ मुसलमानों ऐसे लोगों से मित्रता न करो जिन पर ईश्वर का क्रोध है। यह तो पिछले दिन से ऐसे आशा तोड़ बैठे हैं जैसे काफिर कब्र वालों के जी उठने से निराश हैं। (१३) (रुकू २)

---

* यानी जो औरतें मुसलमान नहीं उनको अपने अधिकार में न रक्खो इनको उनका मिहर अलग कर दो ताकि वह जिससे चाहें अपना ब्याह कर लें।

सूरे सफ्फ

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १४ आयतं, २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश में और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह की पवित्रता बोलने में लगे हैं और वही बड़े चमत्कार वाला है। (१) हे ईमान वालो क्यों मुंह से कहते हो जिसको तुम नहीं करते। (२) अल्लाह को कठोर ना पसन्द है कि कहो और करो नहीं (३) निस्सन्देह ईश्वर उन लोगों का प्यार करता है जो उसकी राह में कतार बाँधकर लड़ते हैं। वह गोया एक दीवार है जिसमें सीसा पिला दिया गया है। (४) और जब मूसा ने अपनी जाति से कहा कि भाइयों मझे क्यों सताते हो हालाँकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ ईश्वर का भेजा हुआ हूं तो जब यह टेढ़े कर दिये और अवज्ञाकारी मनुष्यों को आज्ञा नहीं दिया करता। (५) और जब मरियम के बेटे ईसा ने कहा कि ऐ इसराईल के बेटों मैं तुम्हारी तरफ अल्लाह का भेजा हुआ आया हूं। तौरात जो मुझसे पहले है उसकी सच्चाई करता हूं और एक पैगम्बर का शुभ सन्देश देता हूं जो मेरे बाद आयगा उसका नाम अहमद होगा। फिर जब वह खुली निशानियाँ लेकर आया वह बोले कि यह तो साफ जादू है। (६) और उससे बढ़कर कौन अत्याचारी है जिसने अल्लाह पर झूंठ बाँधा हालाँकि वह इस्लाम की तरफ बुलाया जाये और ईश्वर अत्याचारी मनुष्यों को आदेश नहीं करता। (७) अल्लाह की रोशनी मुंह से बुझा देना चाहते हैं और अल्लाह को अपनी रोशनी पूरी करनी है हालाँकि काफिरों को यह बुरा ही लगे। (८) (रुकू १)

वही है जिसने अपना पैगम्बर शिक्षा और सच्चा मत देकर भेजा ताकि उसको तमाम दीनों पर जय दे और शिर्क करने वाले को भले ही बुरा लगे। (९) ऐ ईमान वालों मैं तुमको ऐसा व्यापार बताऊं

जो तुमको दुःखदाई दण्ड से बचा दे। (१०) ईश्वर और उसके पैग-म्बर पर ईमान लाओ और ईश्वर की राह में अपने माल और अपनी जानों से कोशिश करो यह तुम्हारे लिये भला है अगर समझ हो (११) वह तुमको तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हें बागों में दाखिल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वहाँ के बागों में अच्छे मकान हैं यह ही बड़ी सफलता है। (१२) एक और चीज जिसे तुम पसन्द करोगे यानी ईश्वर की तरफ से सहायता और थोड़े ही दिनों में एक जीत और ईमान वालों को शुभ सन्देश सुना दे। (१३) और ईमान वालो ! ईश्वर की सहायता करने वाले हो जाओ जैसे मरीयम के लड़के ईसा ने हव्वारियों से कहा था कि अल्लाह की तरफ मेरा कौन सहायक है फिर इसराईल की संतान में से एक गुट ईमान लाये और एक ने इन्कारी की। तो जो मनुष्य ईमान लाये थे हमने उनको उनके शत्रुओं के मुकाबिले में सहायता दी और उनकी जीत हुई। (१४) (रुकू २)

—०—

सूरे जुमा

मदीने में अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और २ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश में है और जो कुछ पृथ्वी में है अल्लाह की पवित्रता बोलने में लगे हैं जो बादशाह बड़ा चमत्कार वाला है। (१) वही है जिसने मूर्खों में उनमें का एक पैगम्बर भेजा कि वह उनको उसकी आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाये और उनको पवित्र करे और उनको किताब और चमत्कार सिखायें हालाँकि इससे पहले वह प्रत्यक्ष कुमार्ग में थे। (२) और दूसरों में यानी अजम के मनुष्यों यानी यह पैगम्बर अजम के मनुष्यों में भी है। जो अभी उन अरब वालों में नहीं मिले और वह बड़ा चमत्कार वाला

है। (३) यह ईश्वर की कृपा है जिसे चाहे देवे और अल्लाह की कृपा बड़ी है। (४) यहूदियों ने जिन मनुष्यों पर तौरात लादी गई। फिर उन्होंने उसको नहीं उठाया तो उनकी मिसाल किताब लादे गये जैसी है। जो मनुष्य ईश्वर की आयतों को झुठलाते हैं उनके उदाहरण बड़े बुरे हैं और ईश्वर अत्याचारियों को आदेश नहीं दिया करता। (५) तो कह कि ऐ यहूद अगर तुमको दावा है कि तमाम मनुष्यों में से तुम्हीं ईश्वर के मित्र हो तो अगर तुम सच कहते हो तो मृत्यु को मनाओ। (६) उन कामों के कारण से जो अपने हाथों कर चुके हैं वह कभी मौत को न मनायेंगे और अल्लाह अन्यायियों को जानता है। (७) तो कह कि मौत जिससे तुम भागते हो वह जरूर तुम्हारे सामने आवेगी। फिर तुम गुप्त और प्रत्यक्ष जानने वाले ईश्वर की तरफ लौटाये जाओगे और वह तुमको जरूर काम बतायेगा। (८) (रुकू १)

ऐ ईमान वालो जब शुक्र के दिन नमाज के लिये अजाँ दी जावे तो तुम अल्लाह की याद को दौड़ो और बेचना छोड़ दो अगर आपको समझ है तो यह आपके लिये भला है। (९) फिर जब नमाज समाप्त हो हो जावे तो अपनी-अपनी राह लो और ईश्वर की याद में लग जाओ और अधिकता से ईश्वर की याद करते रहो ताकि तुम छुटकारा पाओ, (१०) और जब यह व्यापार या खेल देखते हैं तो उसकी तरफ दौड़ जाते हैं और तुमको खड़ा छोड़ देते हैं तो कह कि जो कुछ ईश्वर के यहाँ है वह खेल और व्यापार से भला है और अल्लाह रोजी देने वालों में सबसे अच्छा है। (११) (रुकू २)

सूरे मुनाफिकून

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ११ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। जब तेरे पास मुनाफिक आते हैं तो यह कहते हैं कि हम साक्षी देते हैं कि तू निस्सन्देह ईश्वर का पैगम्बर है। और ईश्वर जानता है कि तू उसका पैगम्बर है। मगर ईश्वर साक्षी देता है कि मुनाफिक निस्संदेह ईश्वर झूठे हैं। (१) यह अपनी सौगन्ध को डाल बनाते हैं और लोगों को ईश्वर की राह से रोकते हैं। ये लोग बुरे काम करते हैं। (२) यह इसलिए कि अब वह ईमान लाये पीछे काफिर हो गये हैं तो उनके दिलों पर मुहर कर दी गई है और वह समझते नहीं। (३) और जब तू उनको देखता है तो तुझको उनके शरीर अच्छे मालूम होते हैं और अगर यह बातें करते हैं तो उनकी बातों को सुनता है। वह गोया लकड़ी के कुन्दे हैं जो दीवार से लगे हुए हैं। जानते हैं कि हर एक बला उन्हीं पर आई। यह शत्रु हैं बस इनसे बच। ईश्वर उनको भेंट दे यह किधर को फिरे जा रहे हैं। (४) और जब उनसे कहा जाता है कि आओ ईश्वर के पैगम्बर तुम्हारे लिये माफी माँगें तो अपने सिर मरोरते हैं और तू उनको देखेगा कि रोकते और गरूर करते हैं। (५) उसके लिए बराबर हैं चाहे उनके लिये क्षमा माँग या न माँग ईश्वर उनको कदापि क्षमा न करेगा निस्सन्देह ईश्वर बुरे मनुष्यों को राह नहीं देता। (६) यही हैं जो कहते हैं कि जो लोग ईश्वर के रसूल के पास रहते हैं उन पर खर्च न करो यहाँ तक कि खण्ड-बण्ड हो जावे और आकाश और पृथ्वी के खजाने अल्लाह ही के हैं। मगर मुनाफिक नहीं समझते। (७) कहते हैं अगर हम मदीने फिर गये तो जिनका जोर है वहाँ से वह जलील मनुष्यों को जरूर निकाल देंगे और जोर अल्लाह का; पैगम्बर का और ईमान वालों का हैं। लेकिन मुनाफिक नहीं समझते। (८) (रुकू १)

ऐ ईमान वालों तुमको तुम्हारे माल तुम्हारी सन्तान अल्लाह का याद से गाफिल न करे और जो कोई करेगा तो वही टोटे में रहेगा। (९) और जो कुछ हमने तुमको दिया है उसमें से खर्च करो पहिले इससे कि तुममें से किसी की मौत आ जावे और वह कहे कि ऐ मेरे पालनकर्ता तू ने मुझको थोड़े दिन और क्यों न ढील दिया कि मैं दान करता और नेक मनुष्यों में होता। (१०) और जब किसी जीव का काल आ जावेगा तो ईश्वर उसको हरजिग न छोड़ेगा और तुम्हारे कामों की खबर रखता है। (११) (रुकू २)

सूरे तगाबुन

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। जो कुछ आकाश में है और पृथ्वी में है सब अल्लाह की पवित्रता बोलने में लगे हैं उसी का राज्य है और वह हर चीज पर शक्तिमान। (१) वही है जिसने तुमको पैदा किया। फिर कोई तुममें इन्कारी है और कोई ईमानदार और जो करते हो अल्लाह देखता है। (२) आकाश और पृथ्वी को तदबीर से बनाया और उसी ने तुम्हारी सूरतें बनाईं। और तुम्हारी अच्छी सूरतें खीचीं और उसी को और लौट कर जाना है। (३) वह जानता है जो कुछ आकाश और पृथ्वी में है और वह जानता है जो तुम छिपाते हो और जो तुम प्रत्यक्ष करते हो और ईश्वर दिलों की बातें जानता है। (४) क्या तुम्हारे पास इन मनुष्यों की सन्देश नहीं पहुंचा जिन्होंने इससे पहिले इन्कार किया था और अपने कामों के बवाल का आनन्द चक्खा और उनको दुःखदाई दण्ड होना है। (५) इसलिये कि उनके

पास पैगम्बर प्रत्यक्ष उदाहरण लेकर आये और बोले कि क्या मनुष्य हमें राह दिखायेंगे और उन्होंने पैगम्बर को न माना और मुंह फेरा और अल्लाह ने परवाह न की और ईश्वर असंख्य बड़ाई के योग्य है। (६) काफिर दावा करते हैं वे उठाये न जावेंगे। तू कह हाँ! मुझे अपने पालनकर्ता की सौगन्ध तुम उठाये जाओगे। फिर तुम्हें जताया जावेगा जो तुम करते थे और यह अल्लाह पर आसान है। (७) तो अल्लाह और उसके पैगम्बर पर ईमान लाओ और उस प्रकाश पर जो हमने उतारा है। और जो तुम करते हो अल्लाह को उसकी सूचना हैं। (८) इकट्ठा करने के दिन, जिस दिन वह तुम्हें इकट्ठा करेगा वह दिन हार जीत का है और जो कोई ईश्वर पर ईमान लाये और नेक काम करे तो वह उसकी बुराइयाँ दूर करेगा उसको बैकुण्ठ में प्रविष्ठ करेगा जिनके नीचे नहरें बहती हैं उसमें वह हमेशा रहेंगे यह बड़ी सफलता है। (९) और जो काफिर हुए और हमारी आयतों को झुठलाया वह नरकवासी हैं। उसमें हमेशा रहेंगे और वह बुरी जगह है। (१०) (रुकू १)

अल्लाह की आज्ञा के बिना कोई आफत नहीं आती और जो कोई अल्लाह पर विश्वास करे ईश्वर उसके दिल को ठिकाने से लगाये रखेगा और अल्लाह हर चीज से जानकार है। (११) और अल्लाह की और पैगम्बर की आज्ञा मानो, फिर अगर तुम मुंह माड़ों तो पैगम्बर की काम तो साफ-साफ पहुंचा देना है। (१२) अल्लाह है उसके कोई पूजित नहीं और ईमान वालों को चाहिये कि अल्लाह ही पर भरोसा रक्खें। (१३) ऐ ईमान वालों तुम्हारी कोई-कोई स्त्रियाँ और संतान तुम्हारे शत्रु हैं सो उनसे वचते रहो* और जो क्षमा करो और क्षमा

---

* हिजरत के बाद मुसलमानों का एक जत्था मदीना आना चाहता था उनके बेट और बीबियाँ रोने लगी और उनको रुक जाना पड़ा। यह आयतें उन्हीं के लिए उतरीं।

कर दो तो ईश्वर भी क्षमा करने वाला और कृपा करने वाला है। (१४) तुम्हारा धन तुम्हारी जाँच के लिए है और ईश्वर के यहाँ बड़ा फल है। (१५) तो अल्लाह से डरो जितना डर सको और सुनो और मानो अपने भले को व्यय करो जो कोई अपने जी के लालच से बचा वही मनुष्य मन इच्छा पावेंगे। (१६) अगर तुम अल्लाह को खुशदिली से उधार दो तो वह तुमको उसका दूना करेगा और तुम्हारे पाप क्षमा करेगा और अल्लाह कदर जानने वाला दयालु है। (१७) गुप्त और प्रत्यक्ष का जानने वाला बली चमत्कार वाला है। (१८) (रुकू २)

सूरे तलाक

मक्के में अवतरित हुई इसमें १२आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। पैगम्बर जब तुम स्त्रियों को तलाक देना चाहते हो तो उनको उनकी इद्दत * के शुरु में तलाक दो और अल्लाह तालाक के बाद ही से इद्दत गिनने लगो और ईश्वर से जो तुम्हारा पालनकर्ता है डरते रहो उन्हें उनके घरों से न निकालो और वह खुद न निकलें। हाँ प्रलय बेशर्मी का काम कर बैठें तो इनको घर से निकाल दो। यह अल्लाह की बांधी हद्दें हैं और जिस मनुष्य ने अल्लाह की हद्दों से कदम बाहर रक्खा उसने अपने ऊपर अत्याचार किया। कौन जाने शायद अल्लाह तलाक के बाद कोई

*इद्दत उस समय को कहते हैं जिसमें तलाक दी हुई औरत या जिसका पति मर गया है ब्याह नहीं कर सकती।

सूरत पैदा कर दे। (१) फिर जब वह अपनी इद्दत पूरी कर लें तो दस्तूर के कपटी उनको रक्खो या नियम के अनुसार उनको विदा कर दो और अपने में से दो विश्वसनीय आदमियों को साक्षी कर लो और ईश्वर को आगे साक्षी पर रहो। यह उसको की जाती है जो ईश्वर पर और प्रलय पर ईमान रक्खे और जो कोई ईश्वर से डरा तो वह उसके लिए राह निकाल देगा और उसे ऐसी जगह से रोजी देगा जहाँ से उनको विचार भी न हो। (२) और जो मनुष्य ईश्वर पर भरोसा रक्खेगा तो ईश्वर उसको काफी है। अल्लाह अपना काम पूरा कर लेता है। अल्लह ने हर चीज का अनुमान ठहरा रक्खा है (३) और तुम्हारी औरतों में से जिनकी रजस्वला होने की आशा नहीं अगर तुमको सन्देह हो तो उनकी इद्दत तीन महीने है और जिन औरतों को रजस्वला होने का समय नहीं आया यही तीन माह उनकी इद्दत और गर्भवती स्त्रियाँ उनकी इद्दत बच्चा जनने तक और जो ईश्वर से डरता रहेगा ईश्वर उसके काम आसान करेगा। (४) यह ईश्वर की आज्ञा है है जो उसने तुम पर उतारा है और जो कोई ईश्वर से डरे तो उसकी बुराइयों को उससे दूर कर देगा। और उसको बड़ा फल देगा। (५) तलाक दी हुई औरतों को अपनी सामर्थ्य के अनुसार वहीं रक्खो जहां तुम रहो और उन पर कठोरता करने के लिए दु;ख न दो और अगर गर्भवती हों तो बच्चा जनने तक उनका खर्च उठारते रहो और अगर वह तुम्हारे लिए दूध पिलायें तो उनको उनकी दूध पिलाई दो और आपस की सलाह से नियमानुसार काम करो और अगर आपस में जिद्द करोगे तो दूसरी औरत उसको दूध पिलावेगी। (६) सामर्थ्य वाला अपनी सामर्थ्य के अनुसार व्यय करे और जिसकी रोजी नपी तुली हो जैसा उसको ईश्वर ने दिया है उसी के अनुसार व्यय करे और अल्लाह किसी को कष्ट देना नहीं चाहता मगर जितना उसने उसे दिया। अल्लाह तंगी के बाद आसा न कर देगा। (७) (रुकू १)

और कितनी बस्तियाँ थीं कि उन्होंने अपने पालनकर्ता की आज्ञा से और उसके पैगम्बर की आज्ञा से सिर उठाया पर अनदेखी तो हमने

उनसे कठिन हिसाब लिया और उनको आफत डाली। (८) तो उन्होंने अपने किये का आनन्द लिया और उनको परिणाम में हानी हुई। (९) ईश्वर ने उनके लिए बुरी मार तैयार कर रक्खी है तो बुद्धिमानों! जो ईमान ला चुके हों ईश्वर से डरो। (१०) और अल्लाह ने तुम्हारी तरफ समझौता उतारा। पैगम्बर जो अल्लाह की खुली आयतें पढ़-पढ़ कर सुनाता हैं ताकि जो मनुष्य ईमान रखते और नेक काम करते हैं उनको अंधेरे से निकाल कर रोशनी में लावें और जो कोई ईश्वर पर ईमान लाये और भले काम करे तो वह उसको बैकुण्ठ में दाखिल करेगा जिसके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह हमेशा उन्ही में रहेंगे। अल्लाह ने उसको अच्छी रोजी दी है। (११) ईश्वर वह है जिसने सात आकाश को बनाया और उसी के अनुसार पृथ्वी भी। इन दोनों के बीच आदेश आते रहते हैं ताकि तुम जानो कि ईश्वर हर चीज़ कर सकता है और अल्लाह के ज्ञान जानकारी में हर चीज समाई है। (१२) (रुकू २)

सूरे तहरीम

मदीने में अवतरित हुई, इसमें १२ आयतें और २ रुकू हैं

ऐ पैगम्बर अपनी स्त्रियों को खुश करने के लिए तू अपने ऊपर उस* चीज को क्यों हराम करता हैं जो ईश्वर ने तेरे लिए हलाल की

* कहते हैं कि एक दिन मुहम्मद साहब ने अपनी बीबी जैनब के यहां शहद खा लिया था। दूसरी बीबियों ने जिनका नाम आइशा और हफ्सा था, आप से कहा कि आपके मुंह से दुर्गन्ध आती है इस पर आप ने कहा कि मैं अब भविष्य में कभी शहद न खाऊँगा कुछ लोग कहते हैं कि बीबी हफ्सा को खुश करने के लिए आपने बीबी मारिया को अपने ऊपर हराम कर लिया था। इस पर यह आयतें उतरीं।

है और ईश्वर दया करने वाला कृपालु है। (१) तुम लोगों के लिए ईश्वर ने तुम्हारी सौगन्धों के तोड़ने की भी आज्ञा है और अल्लाह ही तुम्हारा सहायक और वह जानकार चमत्कार वाला है। (२) और जब पैगम्बर ने अपनी स्त्रियों में से किसी से एक बात चुपके से कही और जब उसने उसकी खबर कर दी और ईश्वर ने उस पर इस बात को प्रकट कर दिया तो पैमम्बर ने कुछ कहा और कुछ टाल दिया। फिर जब वह उस स्त्री को बता दिया तो वह बोली तुझको यह किसने बताया। वह बोला मुझको उस खबरदार जानने वाले ने बताया है। (३) अगर तुम दोनों हिफसह और आयशा अल्लाह की तरफ तोबा करो क्योंकि तुम दोनों के दिल टेड़े हो गये हैं और जो तुम दोनों पैग-म्बरों पर चढ़ाई करोगी अल्लाह और जिब्राईल और नेक ईमान वाले उसके मित्र हैं और उसके बाद फिरिश्ते उसके सहायक हैं। (४) अगर पैगम्बर तुम सबको तलाक दें तो आश्चर्य नहीं कि उसका पालनकर्ता तुम्हारे बदले उसको तुमसे अच्छी स्त्रियाँ दे। जो ईमानवाली, अज्ञा-कारी, तोबा करने वाली, नमाज में खड़ी होने वाली, बन्दगी बजा लाने वाली, जहन रखने वालीं, बिवाहित और क्वारी हों।(५) हे ईमान वालों! अपने को और घर वालों को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन आदमी है और पत्थर हैं। जिस पर कठोर हृदय और बलवान फिरिश्ते नियत हैं कि जो कुछ ईश्वर उनकी आज्ञा मानता है उससे अवज्ञा नहीं करते और जो कुछ उनको आदेश दिया जाता है करते हैं। (६) ऐ काफिरो आज के दिन कुछ मना न करो वही बदला पाओगे जो तुम करते हो। (७) (रुकू १)

ऐ ईमानवालों! ईश्वर के सामने साफ दिल से तोबा करो शायद तुम्हारा पालनकर्ता तुमसे तुम्हारी बुराइयां दूर कर दे और तुमको बागों में प्रविष्ठ करे जिनके नीचे नहरें बह रही हैं। उस दिन ईश्वर नबी को और जो उसके साथ ईमान लाये उनको लज्जित न करेगा उनकी रोशनी उनके आगे और दाहिनी ओर दौड़ती होगी और वह

कहेंगे ऐ हमारे पालनकर्ता ! हमारी रोशनी को हमारे लिए पूरा करदे और हमको क्षमा कर। निस्संदेह तू हर चीज पर शक्तिमान है (८) ऐ पैगम्बर काफिरों से और कपटियों से जिहाद कर और उन पर कठोरता कर उनका ठिकाना तो नरक है और वह बुरी जगह है। ईश्वर ने काफिरों के लिए नूह* की बीबी और लूत के उदाहरण बयान किए है। (९) दोनों हमारे दो भले सेवकों के अधिकार में थीं। मगर उन दोनों ने उनको दण्ड दिया। बस वह दोनों सेवक उन औरतों से ईश्वर की दण्ड न उठा सके और उनसे कहा गया कि तुम दोनों दाखिल होने वाखों के साथ नरक की आग में दाखिल हो। (१०) और ईश्वर ने ईमान वालों के लिए फिरऔन की उदाहरण बताया है। जब उस स्त्री ने कहा कि ऐ मेरे* पालनकर्ता मेरे लिए बैकुण्ठ में अपने पास एक घर बना और मुझको फिरऔन और उसके काम से बचा निकाला और अत्याचारियों से बचा। (११) और इमरान की पुत्री जिसने अपनी शिहबत की जगह रोकी और हमने उसमें अपनी रूह फूंकदी और वह अपने पालनकर्ता की बातें और उसकी वस्तुओं को मानती थी और ईश्वर की आज्ञाकारिणी थी (१२) (रुकू २)।

---

* नूह और लूत की बीबियाँ काफिरों में से थीं इसलिए ईश्वर के कोप से न बच सकीं।

*फिरऔन की स्त्री इन्कारियों में से नहीं थी। फिरऔन ने उस बहुत दुख दिया फिर भीं वह ईमान पर जमीं रहीं।

उनतीसवाँ पारा (तावारकल्लजी)

सूरे मुल्क

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उसकी बड़ी दया है जिसके हाथ में राज्य है। और वह हर चीज पर शक्तिमान है।(१) जिसने मरना, जीता बनाया ताकि तुमको जाँचे कि तुममें कौन अच्छा काम करता है और वह वली क्षमा करने वाला है। (२) जिसने ऊपर सात आकाश बनाए। भला तुमको दयावान की कारीगरी में कोई कमी दिखाई देती है फिर एक निगाह दौड़ा कहीं कमी दिखाई देती है। (३) फिर दुबारा निगाह दौड़ा तेरे नजर खिसयानीं होकर थकी हारी तेरी तरफ उल्टी लौट आवेगी। (४) और हमने पहिले आकाश को दीपकों से सजा रक्खा है और हममे इन दीपकों को राक्षस के लिए मार की चीज बनाई है और हमने उनके लिए नरक का दण्ड तैयार कर रक्खा है। (५) और जो मनुष्य अपने पालनकर्ता को नहीं मानते उनके लिए नरक का दण्ड है और बुरी जगह है। (६) जब ये उसमें डाले जावेंगे तो वह उसका चिल्लाना सुनेंगे और वह भड़क रही होगी। (७) कोई समय में मारे जोश के फट पड़ेगी। जब-जब कोई गिरोह उसमें डाला जायगा तो जो उस पर तैनात हैं उनसे पूछेंगे क्या तुम्हारे पास डराने वाला नहीं आया। (८) वह कहेंगे हाँ डराने वाला तो हमारे पास आया था, मगर हमने झुठलाया और कहा ईश्वर ने कोई चीज नहीं उतारी। तुम बड़ी भटक में पड़े हो (९) और अगर हमने सुना और समझा होता तो नरकवासियों में न होते। (१०) तो उन्होंने अपना पाप मान लिया बस नरकबासियों पर धिक्कारता है। (११) जो लोग बे देखे अपने पालनकर्ता से डरते हैं उनके लिये दान

और बड़े फल हैं। (१२) और तुम अपनी बात चुपके से कहो या पुकार कर कहो वह दिलों के भेद को जानता है। (१३) भला वह न जाने जिसने बनाया और वही बारीक बात को देखने वाला खबरदार है। (१४) (रुकू १)

वही है जिसने तुम्हारे लिये पृथ्वी को नरम कर दिया। उसकी चलने की जगहों पर चलो और उसका दिया हुआ खाओ। और जी उठा कर उसी की तरफ चलाना है। (१५) जो आकाश में है क्या तुम उससे नहीं डरते कि पृथ्वी में तुमको धंसा दें और वह झकोरे मारा करें। (१६) क्या तुम उससे निडर हो गये जो आकाश में हैं कि तुम पर पत्थर बरसावें जो तुमको मालूम हो जायगा कि हमारा डराना कैसा हुआ। (१७) और जो मनुष्य इनसे पहिले हो गये हैं उन्होंने भी हमारे पैगम्बरों को झुठलाया था तो हमारी ना खुशी कैसी हुई (१८) क्या इन मनुष्यों ने पक्षियों को नहीं देखा जो उनके ऊपर पख खोले और समेटे हुये उड़ते हैं, दयावान ही उनको थामे रहना है वह हर चीज को देखता है। (१९) भला दयावान के सिवाय ऐसा कौन है, जो तुम्हारा लश्कर बनकर तुम्हारी सहायता करे निरे धोके में हैं। (२०) अगर ईश्वर अपनी रोजी रोक ले तो भला ऐसा कौन है जो तुम को रोजी पहुंचा दे, मगर काफिर तो सरकशी और भागने पर अड़े बैठे हैं। (२१) तो क्या जो मनुष्य अपना मुंह औंधाये हुए चले वह ज्यादा पर है या वह मनुष्य जो सीधी राह पर चलता है। (२२) ऐ पैगम्बर कहो कि वही है जिसने तुमको पैदा किया और तुम्हारे लिये कान और आँखें और दिल बनाये तुम थोड़ा ही धन्यवाद करते हो। (२३) ऐ पैगम्बर कहो कि वही है जिसने तुमको पृथ्वी में फैला रक्खा है और उसी के सामने जमा किये जावोगे। (२४) और कहते हैं कि अगर तुम सच्चे हो तो बताओ यह वादा कब होगा। (२५) ऐ पैगम्बर! उत्तर दो कि इसका ज्ञान तो ईश्वर ही को है और मैं तो साफ तौर से डराने वाला हूं। (२६) फिर जब देखेंगे कि वह प्रलय पास आ पहुंची तो काफिरों की शक्लें बिगड़ जायगी और कहा जायगा यही वह दण्ड

है जो तुम मांगा करते थे। (२७) ऐ पैगम्बर कहो अगर अल्लाह मुझ को और जो मनुष्य मेरे साथ हैं उनको मार डाले या हमारे हाल पर कृपा करे तो कोई है जो काफिरों को दुःखदाई दण्ड से शरण दे। (२८) ऐ पैगम्बर कहो कि वही ईश्वर कृपा करने वाला है हम उसी पर ईमान लाये हैं और उसी पर हमारा भरोसा है तुमको मालूम हो जायगा कि कौन प्रत्यक्ष गुमराही में था। (२९) कहो देखो तो तुम्हारा पानी सूख जावे तो कौन है जो तुमको बहता हुआ पानी ला देगा (३०) (रुकू २)

सूरे कलम

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। नून-कलम की और जो कुछ वह लिखते हैं उसकी सौगन्ध। (१) तू अपने पालनकर्ता की कृपा से पागल नहीं है*। (२) और तुझको अटूट फल है। (३) और तू बड़ी प्रकृति वाला है। (४) सो अब तू देखेगा और वे भी देख लेंगे। (५) कि तुम में से अब कौन बिचल रहा है। (६) ऐ पैगम्बर निस्सन्देह तुम्हारा पालनकर्ता उन मनुस्यों को खूब जानता है जो उसकी राह से भटके हुए हैं और वही उनको भी खूब जानता है जो सीधी राह पर हैं। (७) सो तू झुठलाने वालों का कहा न मान। (८) वे चाहते हैं किसी तरह तू ढील हो तो बे भी ढीले हों। (९) और किसी सौगंध खाने वाले नीच के कहे में मत आ जाना। (१०) और न किसी चुगुलखोर की जो चुगली खाता फिरे। (११) और अच्छे कामों से रोकता है ज्यादती करने वाला पापी है। (१२) इसके बाद बदनाम।

*** बलीद बिन मुगीरा मुहम्मद साहब को पागल कहता था। इन आयतों में उसको झूठा बताया गया है।**

(१३) इसलिए कि धन संतान रखता है। (१४) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं तो कहता है कि यह अगली कहानियाँ हैं। (१५) हम उसकी नाक पर दाग देंगे। (१६) हमने उनको जाँचा है जैसा हमने बागवालो को जाँचा था कि जब उन्होंने सौगन्ध खाई कि जरूर सुबह होते ही उसके कल तोड़ेंगे। (१७) अल्लाह ने चाहा इन्शा अल्लाह नहीं कहा था (१८) फिर तेरे पालनकर्ता की तरफ से एक घूमने वाला उस बाग पर घूमने गया और वह सो रहे थे। (१९) और सुबह होते-होते वह बाग ऐसा रह गया जैसे सारे फल तोड़ कर ले गया है। (२०) फिर सुबह होते ही आपस में बोले। (२१) अगर तुमको तोड़ना है तो सवेरे अपने खेत पर चलो। (२२) तो वह चले और चुपके-चुपके बातें करते जाते थे। (२३) कि आज के दिन वहाँ कोई फकीर तुम्हारे पास न आयगा। (२४) और सवेरे जोर से लपकते चले। (२५) मगर जब वहाँ देखा तो बोले हम हैं। (२६) नहीं हमारा भाग्य फूटा। (२७) उनमें से जो भला था कहने लगा क्या मैं तुमसे नहीं कहा करता था कि ईश्वर को पवित्रता से क्यों नहीं याद करते। (२८) वह वह बोले कि हमारा पालनकर्ता पवित्र है निस्संदेह हम ही अपराधी थे। (२९) तो आपस में एक दूसरे को दोष देने लगे। (३०) बोले हम पर शोक हम अज्ञानी थे। (३१) कुछ आश्चर्य नहीं कि हमारा पालनकर्ता उसके बदले हमको उससे अच्छा दे। हम अपने पालनकर्ता से प्रार्थना करते हैं। (३२) इस प्रकार कष्ट आते है और परलोक के कष्ट तो सब से बड़े है अगर उसको समझ होती। (३३) (रुकू १)

संयमियों के लिए उनके पालनकर्ता के यहाँ नियामतों के बाग हैं। (३४) तो क्या हम आज्ञाकारियों को पापियों के बराबर कर देंगे। (३५) तुमको क्या हुआ कैसी बात ठहराते हो। (३६) क्या तुम्हारे पास कोई पुस्तक है जिसको तुम पढ़ते हो। (३७) कि वहाँ तुमको मिलेगा जो तुमको लगेगा। (३८) क्या तुमने हमसे सौगंध ले रक्खी

हैं ज़ो प्रलय के दिन तक चली जावेंगी कि तुम्हारे लिए वही मिलेगा जो तुम ठहराओगे। (३६) उनसे पूछ कि तुममें से कौन इसका ज़िम्मा लेता है। (४०) या इन्होंने शरीक ठहरा रक्खे हैं बस अगर सच्चे हो तो अपने शरीकों को ला हाजिर करें। (४१) जिस दिन पर्दा उठा दिया जायगा और उनको दण्डवत करने के लिये बुलाया जायगा। वह सिजदह न कर सकेंगे। (४२) उनकी आँखें नीची होंगी जिल्लत उनके चेहरों पर छागई होगी और जब भले चँगे थे सिजदे के लिए बुलाये जाते थे। (४३) अब मुझे और इस कुरान के झुठलाने वाले को छोड़। हम उन्हें धीरे-धीरे ऐसे नीचे उतारेंगे कि यह न जानें। (४४) और उनको ढील देता चला जा रहा हूं निस्संदेह हमारा दाँव पक्का है। (४५) क्या तू उनसे नेक मजदूरी मांगता है जो वह दण्ड के बोझ से दबे जाते हैं। (४६) क्या यह गैब की गुप्त बात जानते हैं और उसको लिख सकते हैं। (४७) अपने पालनकर्ता की आज्ञा के लिए ठहरा रह और मछली वाले यूनिस की तरह न हो जिसने क्रोध में प्रार्थना की। (४८) अगर तेरे पालनकर्ता की कृपा उसको न सम्हालती तो वह चटियल मैदान में फेंक दिया गया होता। (४६) फिर उसको उसके पालनकर्ता ने आनन्दित किया और नेकों में कर दिया (५०) और करीब है कि काफिर अपनी निगाहों* से ऐ मोहम्मद तुझे डिगा दें जबकि वह कुरान सुनते और कहते हैं कि वह तो दीवाना है। (५१) और यह तो संसार के लिए शिक्षा है। (५२) (रुकू २)

---

* यानी ऐसा घूर-घूर कर देखते हैं कि तुम डर जाओ और बयान सुनाना बन्द कर दो।

सूरे हाक्का

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५२ आयतें २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। होनहार बात। (१) होनहार बात क्या चीज है। (२) और तूने क्या समझा होने वाली बात क्या चीज है। (३) समूद और आद ने प्रलय को झुठलाया (४) सो समूद तो कड़क से मार डाले गए। (५) और आद रहे सो कठोर हवा के सर्राटे से मार डाले गये। (६) उसने उस हवा को सात रात आठ दिन लगातार उन पर चला रक्खा था। फिर तू उन मनुष्यों को गिरा हुआ देखता जैसे कि वह खजूर की खोखली लकड़ियाँ हैं (७) तो क्या तू इनमें से किसी को भी बाकी देखता है। (८) और फिरऔन और जो मनुष्य उससे पहले थे। और उल्टी हुई बस्तियों के रहने वाले सब पापी थे। (९) फिर पालनकर्ता के पैगम्बर की आज्ञा न मानी फिर उनको बड़ी पकड़ ने पकड़ा। (१०) जब पानी का तूफान नूह के समय में आया तो हमहीं ने तुमको सवार कर लिया था। (११) ताकि हम उसको तुम्हारे लिए एक यादगार बनायें और याद रखने वाले कान उसको याद रक्खें। (१२) फिर जब सूर नर-सिंह एक बार फूंका जायगा। (१३) और पृथ्वी और पर्वत उठाये जाँयगे और एकदम तोड़े जायंगे। (१४) तो होने वाली उस दिन हो जायगी। (१५) और आकाश फट जायगा और वह उस दिन सुस्त हो जायगा। (१६) और देवदूत किनारों पर होंगे और उस दिन तुम्हारे पालनकर्ता के तख्त को आठ देवदूत अपने ऊपर उठाये होंगे। (१७) उस दिन तुम सामने लाये जाओगे और तुम्हारी बात छिपी न रहेगी। (१८) सो जिसकी किताब उसके दाहिने हाथ में दी जावेगी वह कहेगा लो मेरा कर्म लेखा पढ़ो। (१९) मुझको विश्वास था कि मेरा हिसाब मुझको मिलेगा। (२०) तो वह खुशी के जीवन में होगा। (२१) ऊंचे बागों में। (२२) जिसके फल झुके होंगे। (२३) खाओ

और पीओ उसके लिए जो तुमने गुजरे दिनों में किया है (२४) और वह मनुष्य जिसको उसकी किताब बायें हाथ में दी जावेगी वह कहेगा मुझको मेरा यह कर्म लेखा न मिला होता। (२५) और न मैं अपने इस हिसाब को जानता। (२६) अफसोस यहीं मेरी समाप्ती हुई होती। (२७) मेरा माल मेरे काम न आया। (२८) मेरी बादशाही मुझ से जाती रही। (२९) इसको पकड़ो और इसके गले में तौक डालो। (३०) फिर इसको नरक में ढकेल दो। (३१) और इस सत्तर हाथ लम्बी जंजीर से बाँध दो। (३२) वह अल्लाह पर जो सब से बड़ा है विश्वास नहीं लाता था। (३३) और न लोगों को गरीबों को खिलाने के लिए प्रोत्साहित करता था। (३४) तो आज के दिन यहाँ उसका कोई मित्र नहीं। (३५) और न खाना सिवाय जखमों के धोवन के। (३६) यह खाना सिर्फ पापी खावेंगे। (३७) (रुकू १)

जो कुछ तुम देखते हो मैं उसकी सौगन्ध खाता हूं। (३८) और जो तुम नहीं देखते उसकी भी। (३९) यह कुरान एक देवदूत द्वारा ज्ञान है। (४०) और यह कवि का कहा नहीं तुम बहुत ही कम मानते हो। (४१) और न परियों वाले का कहा हुआ है तुम बहुत ही कम ध्यान करते हो। (४२) यह संसार के पालनकर्ता का उतारा हुआ है। (४३) और अगर यह हम पर कोई बात बना लाता। (४४) तो हम उसका दाहिना हाथ पकड़ते। (४५) फिर उसकी गर्दन काट डालते। (४६) फिर तुम में इससे कोई रोकनेवाला नहीं। (४७) और यह डरने वालों के लिए शिक्षा है। (४८) और हमको मालूम है कि तुम में कोई-कोई झुठलाते हैं। (४९) और यह काफिरों के लिए पछतावा है। (५०) और यह सचमुच ठीक है। (५१) अब अपने पालनकर्ता के नाम की जो सबसे बड़ा है माला फेर। (५२)। (रुकू २)

सूरे मग्रारिज

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४४ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। एक पूछने वाले ने उस दण्ड के बारे में जो होने वाली है पूछा। (१) काफिर कोई उस को रोक नहीं सकता। (२) ईश्वर के मुकाबले में जो सीढ़ियों का आकाश मालिक है। (३) उनसे देवदूत और रूह उसकी तरफ एक दिन में चढ़ते हैं और उसका अन्दाज ५० वर्ष का है। (४) बस तू अच्छी तरह संतोष कर। (५) वह उसे दूर देखते हैं। (६) और हम उसे करीब से देखते हैं। (७) उस दिन आकाश पिघले तांबे की तरह हो जावेगा। (८) और पहाड़ जैसी रंगी हुई ऊन। (९) और कोई मित्र किसी मित्र को न पूछेगा। (१०) वह सब उन्हें दिखलाये जावेंगे पापी चाहेंगे उस दिन के दण्ड के बदले में अपने बेटे देदें। (११) और अपनी स्त्री अपने भाई को (१२) और अपने कुटुम्ब को जिस में रहता था। (१३) और जितने पृथ्वी पर हैं सारे दे डालें फिर आप को बचावे। (१४) सो तो टालना नहीं है वह तपती आग है। (१५) मुंह की खाल खींचने वाली। (१६) यह, जिसने पीठ फेरी और मुंह मोड़ा उसको पुकारती है। (१७) और जिसने माल जमा करके बरतन में रखा। (१८) आदमी बे सब्र पैदा किया गया है। (१९) जब उसको बुराई लगती है तो घबड़ाता है (२०) और जब भलाई पहुंचती है तो अपने तई अच्छे कामों से रोक लेता है। (२१) मगर निमाज पढ़ने वाले। (२२) जो अपनी निमाज पर कायम हैं। (२३) और जिनके माल में हिस्सा ठहर रहा है। (२४) माँगने वालों और बे मांगने-वालों के लिए। (२५) और जो न्याय के दिन का विश्वास करते हैं। (२६) और जो अपने पालनकर्ता की दण्ड से डरते हैं। (२७) उनके पालनकर्ता के दण्ड से निडर न होना चाहिए। (२८) और जो अपनी शहबत की जगह विषय इन्द्रियां थामते हैं। (२९) मगर अपनी

स्त्रियों और बाँदियों से सो उन पर उलाहना नहीं। (३०) मगर जो लोग इनके अलावा और की इच्छा करते हैं तो वह अधिकता करने वाले हैं। (३१) जो लोग अमानत और अपने अहद को निबाहते हैं। (३२) और जिनको अपनी साक्षियों पर विश्वास हैं। (३३) और जो लोग अपनी निमाज का ध्यान रखते हैं। (३४) तो यही लोग सम्मान के साथ बैकुण्ठ में होंगे। (३५) (रुकू १)

काफिरों को क्या हो गया जो तेरे सामने दौड़ते आते हैं। (३६) दाहिने और बायें से इकट्ठ होकर। (३७) क्या हर मनुष्य इनमें से चाहता है कि स्वर्ग के बाग में पहुंचेंगे। (३८) विल्कुल नहीं हमने उन्हें उस चीज से पैदा किया जो वह मानते हैं। (३९) तो मैं पूरब और पश्चिम के पालनकर्ता की सौगन्ध खाता हूं कि हम उस पर सामर्थ रखते हैं। (४०) इस बात पर कि उन से बिहतर उनके बदले औरों को ले आवें और हम आजिज नहीं होने के। (४१) सो तू उन्हें छोड़ कि बातें बनावें और खेलें यहां तक कि उस दिन से मिलें जिसका वादा दिया गया है। (४२) जिस दिन कब्रों से दौड़ते निकलेंगे जैसे किसी निशाने पर दौड़े जाते हैं। (४३) शर्म के मारे निगाह नीची किये होंगे। यह वह दिन है जिसका उनसे प्रण है। (४४) (रुकू २)

सूरे नूह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने नूह को उसकी जाति की तरफ भेजा कि दुखदाई दण्ड आने से पहिले अपनी जाति को डरावे। (१) उनसे कहा भाइयों में उसको डर सुनाने आया हूं। (२) कि ईश्वर की पूजा करो और उससे डरते रहो और मेरा कहा मानो

(३) तो वह तुम्हारे अपराध क्षमा करेगा और नियत समय तक तुमको मौका देगा। जब ईश्वर का नियत किया हुआ समय आवेगा तो वह टल नही सकता। शोक तुम समझते होते। (४) कहा ऐ पालनकर्ता मैंने अपनी जाति को रात दिन पुकारा (५) फिर मेरे बुलाने से और ज्यादा भागते ही रहे। (६) और जब मैंने उनको पुकारा कि तू उन्हें क्षमा करे उन्होंने अपने कानों में उंगलियाँ डालीं और अपने कपड़े लपेटे और जिद् की और अकड़ बैठे। (७) फिर मैंने उनको पुकार कर बुलाया। (८) फिर मैंने उनको जाहिरा समझाया और गुप्त भी समझाया (९) फिर मैंने कहा कि अपने पालनकर्ता से पापों की क्षमा मांगो। वह क्षमा करने वाला है। (१०) आकाश से तुम पर झड़ी लगाकर बरसायेगा। (११) और धन और संतान से तुम्हारी सहायता करेगा और तुम्हारे लिए बाग उगायेगा और नहरें जारी करेगा। (१२) तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह से बुजुर्गी की उम्मेद नहीं रखते (१३) उसने तुमको तरह तरह का बनाया। (१४) क्या तुमने न देखा कि अल्लाह ने कैसे नीचे ऊपर सात आकाश बनाये। (१५) और उनमें चन्द्रमा को उजेले के लिए और सूर्य को चिराग बनाया। (१६) और ईश्वर ने तुम्हें पृथ्वी से एक किस्म से उगाया। (१७) फिर तुम्हें पृथ्वी में मिला देगा और फिर तुमको निकाल खड़ा करेगा। (१८) और अल्लाह ने तुम्हारे लिए पृथ्वी को बिछौना बनाया है। (१९) कि उसमें खुले रास्तों से चलो। (२०) (रुकू १)

नूह ने कहा कि ऐ मेरे पालनकर्ता यह मुझ से नटखटी करते हैं और उनके कहे पर चलते हैं जिनको उनके धन और उनकी संतान ने टोटे में डाल रक्खा है। (२१) और उन्होंने बड़े-बड़े धोखे किये। (२२) और बोले कि अपने पूजितों को न छोड़ो बद* को और सोवा

***ये अरब की मूर्तियों के नाम हैं जो नूह के जमाने में पूजी जाती थीं।**

को और यगूस* और यूक और नस्त्र* को (२३) और यह बहुतेरों को गुमराह कर चुके हैं और ऐसा कर कि अत्याचारियों में गुमराही ही बढ़ती जावे। (२४) यो यह अपने ही पापों के कारण से डुबाये गये फिर नरक की आग में डाल दिये गये और उन्होंने ईश्वर के मुकाबिले में किसी को सहायक न पाया। (२५) और नूह ने कहा ऐ मेरे पालनकर्ता संसार में काफिरों का कोई घर न छोड़। (२६) अगर तू उन्हें रहने देगा तो ये तेरे बन्दों को गुमराह करेंगे और इनसे जो सँतान चलेगी वह भी कुकर्मी काफिर ही होगी। (२७) ऐ मेरे पालनकर्ता मुझको और मेरे मां बाप को और जो मनुष्य ईमान लाकर मेरे घर में आये उसको और ईमानदार मर्दो और ईमानदार औरतों को क्षमाकर और ऐसा कर कि अत्याचारियों की तबाही बढ़ती चली जावे। (२८ (रुकू २)

सूरे जिन्न

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २८ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। कह दे कि मुझ को आदेश आया है कि जिन्नों के कई लोग* कुरान सुन गये हैं और उन्होंने कहा हमने कुरान सुना है। (१) जो ठीक बात की शिक्षा देता हैं और हम उस पर ईमान लाये और हम किसी को भी अपने पालनकर्ता का शरीर न ठहरायेंगे (२) और हमारे पालनकर्ता की इज्जत बहुत बड़ी है उसने न किसी को स्त्री और न किसी को संतान बनाया

***कहा जाता है कि एक बार मुहम्मद सहाब खजूर के एक बाग में कुरान पढ़ रहे थे कि कई जिन्न वहां आये और ईमान लाये और अपनी जाति वालों से जाकर इसकी चर्चा की।**

(३) और हममें कुछ मूर्ख हैं जो ईश्वर पर बढ़-बढ़कर बातें बनाते हैं। (४) और हम विचार करते थे कि मनुष्य और जिन्न कोई ईश्वर पर झूंठ नहीं बोल सकता। (५) और मनुष्यों में से कुछ लोग ऐसे हैं जो जिन्नों में से कुछ लोगों की शरण लेते हैं और उन्होंने जिन्नों के घमण्ड को और भी बढ़ा दिया है। (६) और वह विचार करते थे जैसा तुम विचार करते थे कि ईश्वर कभी किसी को पैगम्बर बना कर नहीं भेजता। (७) और हमने आकाश को टटोला तो उसको कठोर चौकीदारों और अंगारों से भरा पाया। (८) और हम वहाँ बैठने की जगहों में बैठकर सुना करते थे फिर अब जो कोई सुनना चाहे अपने लिये आग का अंगारा पायेगा। (९) और हम नहीं जानते कि पृथ्वी के रहने वालों को कुछ नुकसान पहुंचना मंजूर है या उनके पालनकर्ता ने उनके लिए भलाई करना बिचारी है। (१०) और हममें कोई-कोई नेक हैं और कोई-कोई और तरह के हैं। हमारे अलग-अलग फिर्के होते आये हैं। (११) और हमने समझ लिया है कि न तो पृथ्वी में ईश्वर को हरा सकते हैं और न भाग कर उससे बच सकते हैं। (१२) और हमने जब राह की बात सुनी तो हम उसको मान गये बस जो मनुष्य अपने पालनकर्ता पर ईमान लायेगा उसको न किसी हानी का भय होगा न अत्याचार का। (१३) और हम में कोई आज्ञाकारी है और कोई अत्याचारी है सो जो कोई आज्ञा में आये उन्होंने सीधी राह ढूंढ़ निकाली। (१४) और जिन्होंने मुंह मोड़ा वह नरक के लट्ठे बन गये (१५) और यह कि अगर लोग सीधी राह पर रहते तो हम उन्हें पानी पिलाते। (१६) ताकि उनको उसमें जांचें और जो कोई अपने पालनकर्ता की याद से फिर गया तो उसको कठोर दण्ड में दाखिल करेगा। (१७) और मसजिदें सब ईश्वर की हैं तो ईश्वर के साथ किसी को न पुकारो। (१८) और जब ईश्वर का बन्दा मुहम्मद खड़ा होकर उसको पुकारता है तो पास आकर ये उसको घेर लेते हैं। (१९) (रुकू १)

कह कि मैं तो अपने पालनकर्ता को पुकारता हूं और किसी को उसका शरीक नहीं करता। (२०) ऐ पैगम्बर कहो कि तुम्हारा लाभ या हानि मेरे अधिकार में नहीं। (२१) ऐ पैगम्बर कहो मुझे अल्लाह के हाथ से कोई न बचावेगा। और मैं उसके सिवाय कोई रहने की जगह नहीं पाता। (२२) मगर मेरा काम ईश्वर के समाचारों का पहुंचा देना है और जो कोई अल्लाह का और उसके पैगम्बर की आज्ञा न माने सो उसके लिए नरक की आग है जिस में वह हमेशा रहेंगे। (२३) जब तक उसको न देख लेंगे जिनका उनसे वादा किया जाता है तो उस समय जान लेंगे कि किसके सहायक कमजोर और गिनती में थोड़े हैं। (२४) ऐ पैगम्बर कहो कि में नहीं जानता कि जिस चीज का तुमसे वादा हुआ वह नजदीक है या मेरा पालनकर्ता उसको देर में लायेगा। (२५) वह भेद का जानने वाला है और अपने भेद की खबर किसी को नहीं देता। (२६) मगर जिस पैगम्बर को पसन्द कर लिया उसके आगे और पीछे चौकीदार चला आता है। (२७) ताकि वह जाने उसने उसके समाचार पहुंचा दिये और यूं तो उसने सब मामलों को हर प्रकार अपने अधिकार में कर रखा है और एक-एक चीज को गिन रखा है। (२८) (रुकू २)

सूरे मुज्जम्मिल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु तथा दयावान है। ऐ चादर ओढ़े हुए मुहम्मद (१) रात को निमाज के लिए खड़े रहा करो मगर थोड़ी देर। (२) आधी रात या उसमें थोड़ी कम कर। (३) या आधी से कुछ बढ़ा दिया कर। और कुरान को ठहर-ठहर कर पढ़ा कर। (४) अब हम तेरे ऊपर भारी बात डालेंगे। (५) रात का उठना इन्द्रियों के रोकने में बहुत अच्छा होता है और ठीक-ठीक दुआ माँगने में भी (६) दिन को तुझे बहुत काम रहता है। (७) और अपने पालनकर्ता का नाम याद कर और सबको छोड़कर उसी की तरफ लग जा। (८) वही पूरब और पश्चिम का स्वामी है उसके सिवाय कोई पूजित नहीं बस उसको काम संभालने याला बना। (९) और ये लोग जो कुछ कहते हैं उसका संतोष कर और खूबसूरती के साथ उन्हें छोड़ दे। (१०) और मुझको और झुठलाने वालों को जो आराम में रहे हैं छोड़ दे और उन्हें थोड़ा समय दे। (११) हमारे पास बेड़ियाँ और आग का ढेर है। (१२) और खाना जो गले से न उतरे और दुखदाई दण्ड है। (१३) जिस दिन पृथ्वी और पर्वत कांपने लगेंगे और पहाड़ भुरभुरे टीले हो जावेंगे। (१४) हमने तुम्हारी तरफ पैगम्बर भेजा है वह तुम पर साक्षी देगा जैसा कि हमने फिरऔन के पास पैगम्बर भेजा था। (१५) मगर फिरऔन ने पैगम्बर से नटखटी की तो हमने उसको कठोर दण्ड में पकड़ा। (१६) फिर अगर उस दिन से इन्कारी रहे जो लड़कों को बूढ़ा कर देता तुम क्यों कर बचोगे। (१७) उससे आकाश फट जायगा और उस ईश्वर का वादा हो जायगा। (१८) यह तो एक समझौता है तो जो चाहे अपने पालनकर्ता की राह ले। (१९) (रुकू १)

तेरा पालनकर्ता जानता है कि तू दो तिहाई रात और आधी रात और तिहाई रात नमाज को उठता है और उनमें से जो तेरे साथ है

एक गिरोह उठता है और अल्लाह रात और दिन का अन्दाजा करता है वह जानता है कि तुम इसको निबाह न सकोगे। बस तुम पर कृपालु हुआ। अब कुरान में से जिस कदर आसान हो पढ़ो। ईश्वर जानता है कि तुममें कुछ बीमार होंगे और कुछ ऐसे जो संसार में कृपा ढूंढते फिरेंगे और कुछ ऐसे भी जो ईश्वर की राह में लड़ाई करेंगे तो जो उसमें से आसान पढ़ो और निमाज पर कायम रहो और दान दो और अल्लाह को प्रसन्नता से कर्ज दे दिया करो और जो नेकी अपने लिए पहले से भेज दोगे। उसको अल्लाह के यहाँ पाओगे। वह बहुत बढ़-कर हैं और उसका फल भी बहुत बड़ा है और अल्लाह से अपने पापों की क्षमा माँगते रहो—अल्लाह बड़ा क्षमा करने वाला कृपालु है। (२०) (रुकू २)

सूरे मुदस्सिर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर वही यानी आयत के भय से जो चादर ओढ़े हुए हो। (१) उठ और लोगों को डरा। (२) और अपने पालनकर्ता की बड़ाई कर। (३) और अपने कपड़ों को पवित्र रख। (४) और अपवित्रता से अलग रह (५) और ज्यादा करने के लिए किसी पर एहसान न रख। (६) और अपने पालनकर्ता की राह देख। (७) जब सूर नरसिंहा फूँका जायगा। (८) तो वह दिन काफिरों के लिए ऐसा कठिन होगा। (९) कि उसमें आसानी न होगी। (१०) मुझे उस मनुष्य को जिसे मैंने अकेला पैदा किया छोड़ दो। (११) और मैंने उसको बहुत माल दिया। (१२) और लड़के जो उसके सामने हाजिर रहते हैं। (१३) और हर तरह का सामान उसके लिये इकट्ठा कर दिया है। (१४) इस पर भी वह आशा

लगाये बैठा है कि हमें और भी कुछ दे। (१५) हरगिज नहीं वह हमारी आयतों का शत्रु था। (१६) हम जल्द उसे कठोर दण्ड में फसावेंगे। (१७) वह तदबीर में लगा है और तदबीर कर रहा है। (१८) नाश हो—वह कैसी तदबीरें कर रहा है। (१९) फिर भी वह नाश हो फिर कैसी तदबीरें कर रहा है। (२०) फिर उसने देखा। (२१) फिर-नाक चढ़ाई और मुंह सिकोड़ लिया। (२२) फिर पीठ फेर ली और घमण्ड किया। (२३) और कहने लगा कि ये जादू है जो चला आता है* (२४) ये तो बस किसी आदमी का कहा हुआ है। (२५) हम उसको जल्दी नरक में झोंक देंगे। (२६) और तू क्या जाने कि नरक की आग क्या चीज है। (२७) वह न बाकी रखती है। और न छोड़ती है। (२८) शरीर को झुलसा देती है। (२९) उस पर १९ चौकीदार हैं। (३०) और हमने देवदूतों ही को आग का चौकीदार बनाया है और इनकी गिनती हमने काफिरों की जाँच के लिए ठहराई है ताकि किताब वाले विश्वास कर लें और ईमान वालों का और भी ईमान हो और किताब वाले और ईमान वाले संदेह न करें और जिन लोगों के दिलों में रोग है और जो काफिर हैं बोल उठें कि ऐसी बातों के कहने से ईश्वर का क्या प्रयोजन है। इसी तरह ईश्वर जिसको चाहता है भटकाता है और जिनको चाहता है राह दिखाता है और तुम्हारे पालनकर्ता के लश्करों का हाल उसके सिवाय कोई नहीं जानता और यह लोगों के लिए शिक्षा है। (३१) (रुकू १)

नहीं-नहीं चाँद की सौगन्ध। (३२) और रात की जब वह गुजरने लगे। (३३) और सुबह को जब वह उदय हो। (३४) यह नरक एक

* ये आयतें बलीद बिन मुगीरा के विषय में उतरी। उनसे पहले तो कुरान सुन कर उसकी प्रशंसा की लेकिन बाद में अबू जिहल के भड़काने से उसको जादू बताने लगा। वह बड़ा धनी था और उसके कई लड़के थे। कुरैश में उसका बड़ा ऊँचा स्थान समझा जाता था।

बड़ी बात है। (३५) यह लोगों को डराना है। (३६) तुम में से उस मनुष्य को जो आगे बढ़ना चाहे और पीछे रहना चाहे। (३७) हर एक जो अपने किये में फंसा है। (३८) मगर दाहिनी ओर वाले (३९) कि वह बैकुण्ठ में पूछते होंगे। (४०) अपराधियों से (४१) कौन चीज तुमको नरक में ले आई। (४२) वह कहेंगे हम निमाज न पढ़ते थे। (४३) और न हम गरीबों को खाना खिलाते थे। (४४) और हम हुज्जत करने वालों के साथ हुज्जत किया करते थे। (४५) और हम न्याय के दिन को झुठलाते थे। (४६) यहाँ तक कि हमको विश्वास आया। (४७) फिर किसी शिफारिसी की शिफारिस उनके काम नहीं आयेगी। (४८) और उनको क्या हो गया है कि वह इस शिक्षा से मुँह फेरते हैं। (४९) गोया कि ये गधे हैं जो भागे जाते हैं। (५०) शेर के आगे से भाग जाते हैं। (५१) बल्कि इसमें का हर एक आदमी चाहता है कि उसको खुली किताबें मिल जावें। (५२) हरगिज नहीं ये प्रलय से नहीं डरते। (५३) हरगिज नहीं यह तो एक शिक्षा है। (५४) तो जो कोई चाहे इसको याद रक्खे। (५५) और जब तक ईश्वर न चाहे वह हरगिज याद न करेंगे वह डर के लायक और क्षमा करने के योग्य है। (५६) (रुकू २)

सूरे कयामत

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम नाम जो दया वाला व कृपालु है। मैं प्रलय के दिन की सौगन्ध खाता हूं। (१) और मैं जी की सौगन्ध खाता हूं जो बुरे कामों पर अपने आप मलामत करता है। (२) क्या आदमी विचार करता है कि हम उसकी हड्डियाँ जमा न करेंगे। (३) और हम इस बात पर शक्तिमान हैं कि उनके पोर-पोर ठिकाने से बैठा दें। (४)

बल्कि आदमी चाहता है कि उसके सामने ढिठाई करे। (५) वह पूछता है कि प्रलय का दिन कब होगा। (६) तो जब आँखे पथरा जायंगी। (७) और चन्द्रमा में ग्रहण लग जावेगा। (८) और सूर्य और चन्द्रमा जमा किये जावेंगे। (९) तो उस दिन आदमी कहेगा कि भागने की जगह कहा। (१०) हरगिज नहीं शरण की जगह नहीं है। (११) उस तेरे पालनकर्ता की तरह जाकर ठहरना होगा। (१२) उस दिन आदमी को बता दिया जायगा कि उसने पहिले कैसे काम किये हैं और पीछे क्या छोड़ा है। (१४) परन्तु वह अपने बहुत उज्र लावे। (१५) अपनी जबान न हिला कि उसके लिए जल्दी करने लगे। (१६) उसका जमा करना और पढ़ना हमारे जिम्मे है* ।(१७) जब हम उसको जिब्रील द्वारा पढ़ा लिया करें तो तू भी उसके पीछे-पीछे पढ़। (१८) फिर उसका बयान करना हमारे जिम्मे है। (१९) मगर तुम कुछ जल्दबाज ही हो। (२०) संसार को छोड़ बैठे और प्रलय को पसन्द करते हो। (२१) उस दिन कितने मुंह ताजे हैं। (२२) अपने पालनकर्ता को देख रहे होंगे। (२३) और कितने मुंह उस दिन उदास होंगे। (२४) समझ रहे होंगे कि उनके साथ ऐसी कठोरता होने को है जो कमर तोड़ देगी। (२५) नहीं जब जान हँसली तक आ पहुंचेगी। (२६) और कहा जायगा कौन झाड़ा फूंक करेगा (२७) और उसको विश्वास हो जायगा कि यह जुदाई है। (२८) और पिण्डली-पिण्डली से लिपट जायगी। (२९) (रुकू १)

तो उसने न विश्वास किया और न नमाज पढ़ी। (३१) बल्कि उसने उनको झुठलाया और पीठ फेर दी। (३२) फिर अपने घर को अकड़ता गया। (३३) खराबी तेरी फिर खराबी तेरी। (३४) फिर

---

* यानी कुरान को याद रखने के लिए जल्दी-जल्दी जबान चला इसका याद करना और उसका जमा करना हमारा काम है।

खराबी तेरी खरीबी पर खराबी तेरी। (३५) क्या आदमी विचार करता है। कि वह बेकार छोड़ दिया जायगा। (३६) क्या वह वीर्य की एक बूंद न था जो टपकी। (३७) फिर लोथड़ा हुआ फिर बनाया और ठीक किया। (३८) फिर उस वीर्य से स्त्री और पुरुष को जोड़ा बनाया। (३९) क्या ऐसा मनुष्य मृतक को नहीं जिला सकता। (४०) (रुकू २)

सूरे दहर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३१ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो दयावाला व कृपालु है। क्या आदमी के ऊपर से जमाने में एक ऐसा समय बीता जब वह कुछ भी चर्चा के योग्य न था। (१) हमने आदमी को मिले हुये वीर्य से पैदा किया कि उसको जाँचे इसलिए उसको सुनने वाला और देखने वाला बनाया। (२) हमने उसे राह दिखा दी है अब वह धन्यवान दे या कृतघ्नता। (३) हमने इन्कारियों के लिए जंजीरें और तौक और दहकती हुई आग तैयार कर रक्खी है। (४) निस्सन्देह सुकर्मी प्याले पीवेंगे जिसमें कपूर की मिलावट होगी। (५) सोता जिसका पानी अल्लाह के सेवक पीवेंगे। और उसको जहाँ चाहें वहाँ ले जावेंगे। (६) वह अपनी मन की कल्पना पूरी करते हैं और उस दिन प्रलय से डरते हैं, जिसकी बुराई फैली हुई होगी। (७) और उसके प्रेम के लिए गरीबों को और

अनाथों को और कैदियों को खाना खिलाते हैं। (८) हम तो तुमको ईश्वर की प्रसन्नता के लिए खिलाते हैं हम तुमसे बदला चाहते हैं और न धन्यवाद। (९) हमको अपने पालनकर्ता से उस दिन का डर लग रहा है जब लोग मुंह बनाये भौंहें चढ़ाये होंगे। (१०) तो ईश्वर ने उस दिन की विपदा से बचा लिया और उनको ताजगी और खुशहाली उन्हें पहुंची। (११) और जैसा उन्होंने सन्तोष किया था उसके बदले में बैकुण्ठ और रेशमी वस्त्र उन्हें दिये। (१२) बैकुण्ठ में तख्तों पर उन तकिये लगाये बैठे होंगे न वह वहाँ धूप ही देखेंगे न दण्ड। (१३) और उन पर वहाँ के वृक्षों की छाया होगी और उनके फल भी पास भी झुके होंगे। (१४) और उन पर चाँदी के बर्तनों और गिलासों का दौर चलता होगा कि वह शीशे की तरह होंगे। (१५) शीशे भी चाँदी के वह उन्हीं के लिए बने होंगे। (१६) और वहाँ उनको प्याले पिलाये जायगे जिसमें सोंठ मिली होगी। (१७) एक चश्मा होगा जिसका नाम सलसरील होगा। (१८) और उसके पास हमेशा नौजवान लड़के फिरते हैं। जब तू उन्हें देखे बिखरे मोती समझेगा! (१९) जब तू देखे यहाँ पदार्थ और बड़ा राज्य तुझको दिखाई देगा। (२०) उनके ऊपर बारीक हरे रेशमी और गाढ़े रेशम के कपड़े हैं और चाँदी के कड़े पहिने हैं और उनका पालनकर्ता उन्हें पवित्र मदिरा पिलावेगा। (२१) यह तुम्हारा बदला है और तुम्हारी कमाई सुकर्म में लगी। (२२) (रुकू १)

हमने तुझ पर धीरे-धीरे कुरान उतारा। (२३) तू पालनकर्ता की राह देख और उनमें से किसी पापी कृतघ्न की स मान। (२४) और अपने पालनकर्ता का नाम सुबह और शाम याद कर। (२५) और कुछ रात में उसका दण्डवत कर और बड़ी रात तक उसकी पवित्रता बताओ। (२६) यह लोग तो बस जल्दी होने वाली बात पसन्द करते हैं और इस भारी दिन को छोड़ देते हैं। (२७) हमने उनको पैदा किया और उनकी गिरहबन्दी मजबूत बाँधी और जब हम चाहेंगे उनके बदले उन्हीं जैसे लोग ला बसायेंगे। (२८) शिक्षा है फिर जो कोई

चाहे अपने पालनकर्ता की तरफ पहुंचने का रास्ता ले। (२९) और तुम न चाहोगे। जब तक अल्लाह न चाहे। निस्सन्देह अल्लाह जानने वाला चमत्कार वाला है। (३०) जिसको चाहे अपनी कृपा में ले लेता है और अन्यायियों मनुष्यों के लिये उसने दुःखदाई दण्ड तैयार कर रखा है। (३१) (रुकू २)

सूरे मुर्सलात

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५० आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। उन हवाओं की कसम जो मामूली चालों से चलाई जाती हैं। (१) फिर जोर पकड़कर तेज हो जाती हैं। (२) फिर बादलों को फ़ैला देती हैं। (३) फिर अलग कर देती है। (४) और दिलों में याद दिलाती हैं। (५) ताकि प्रमाण समाप्त हो और डराया जाय। (६) तुमसे जो वादा किया जरूर होकर रहेगा। (७) यानी जब नक्षत्र धीमे पड़ जायं। (८) और जब आकाश फट जावे। (९) और जब पहाड़ उड़ाये। (१०) और जब पैगम्बर नियत समय पर हाजिर किये जावें। (११) कौन-सा दिन इनके लिए नियत था। (१२) न्याय का दिन। (१३) और तू क्या जाने न्याय का दिन क्या चीज है। (१४) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (१५) क्या हमने अगलों को मार नहीं डाला ? (१६) फिर उनके पीछे हम पिछलों को कर देते हैं। (१७) पापियों के साथ हम ऐसा ही किया करते हैं। (१८) उस दिन झुठलाने वालों की मृत्यु है। (१९) क्या हमने तुमको तुच्छ पानी से नहीं पैदा किया ? (२०) फिर हमने उसको नियत समय तक एक रक्षित जगह में रखा। (२१) एक नियत समय तक रखा। (२२) फिर हमने अनुमान लगाया तो

कैसा अच्छा अनुमान लगाया। (२३) प्रलय के दिव झुठलाने वालों की मृत्यु है। (२४) क्या हमने पृथ्वी को समेट जाने वाली नहीं बनाया* (२५) जिन्दों और मुर्दों के लिए। (२६) और उसमें ऊंचे-ऊंचे बोझिल पहाड़ खड़े किये और तुम लोगों को मीठा पानी पिलाया। (२७) प्रलय के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (२८) जिस चीज को तुम झुठलाया करते थे, उसकी तरफ चलो। (२६) छाया में चलो जिसके तीन टुकड़े हैं। (३०) उसमें ठंडक नहीं और न गर्मी से बचाव है। (३१) वह महलों के बराबर लपटें सेकती होगी। (३२) गोया वह पीले ऊंट हैं। (३३) प्रलय के दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (३४) यही वह दिन है कि वह बात न कर सकेंगे। (३५) और न उनको आज्ञा दी जावेगी कि उज्र करें। (३६) प्रलय के दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (३७) यही तो न्याय का दिन है। हमने तुमको और अगलों को जमा किया है। (३८) तो अगर तुम्हारी कोई तदबीर चल सके तो चलाओ। (३९) उस दिन झुठलाने वालों की बर्बादी है। (४०) (रुकू १)

संयमी तो जरूर छाओं में और चश्मा होंगे। (४१) और मेवों में जो उनको भाते हों, होंगे। (४२) अपने किये का फल शौक से खाओ-पीयो। (४३) नेक लोगों को हम इस तरह बदला देते हैं। (४४) उस दिन झुठलाने वालों पर बर्बादी है। (४५) संसार में खाओ और कुछ लाभ उठाओ। निस्सन्देह तुम अपराधी हो। (४६) उस दिन झुठलाने वालों की खराबी हो। (४७) जब उन्हें नमाज के समय कहा जाय झुको, तो नहीं झुकते। (४८) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (४९) अब इसके बाद कौन-सी बात पर यह ईमान लावेंगे? (५०) (रुकू २)

*** पृथ्वी जीवित आदमी को अपनी पीठ पर समेटती है और मुर्दा को भी। जीवित को अपनी पीठ पर समेटे है और मुर्दे को अपने पेट में :**

तीसवाँ पारा (अम)

सूरे नबा

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४० आयत और २ रुकू हैं

अल्लाह के नाम जो बड़ा कृपालु व दयावान है। यह लोग आपस में क्या बात पूछ रहे हैं। (१) क्या बड़ी खबर प्रलय* की बात ? (२) जिसके बारे में यह अलग-अलग राय रखते हैं। (३) तो जल्द इनको मालूम हो जायगा। (४) फिर जल्द इनको मालूम हो जायगा। (५) क्या हमने जमीन को फर्श (६) और पहाड़ों को मेखें नहीं बनाया ? (७) और हमने तुमको जोड़ा जोड़ा मर्द औरत पैदा किया। (८) और हम ही ने तुम्हारी नींद को आराम बनाया। (९) और हम ही ने रात को को पर्दा बनाया। (११) हम ही ने तुम्हारे ऊपर सात पुस्ता आकाश बनाये। (१२) और हमने चमकता चिराग सूर्य को बनाया। (१३) और हमने बादलों से जोर का पानी बरसाया। (१४) ताकि उससे अनाज और सब्जियाँ निकालें। (१५) और घने-घने बाग निकालें। (१६) निस्सन्देह न्याय के दिन का एक नियत समय है। (१७) उस दिन सूर फूका जायगा और तुम लोग गिरोह के गिरोह चले आओगे (१८) और आकाश फट कर टुकड़े-टुकड़े हो जायंगे। (१९) और पहाड़ चलाये जायेंगे। वह धूल होकर रह जायंगे। (२०) निःसं-देह नरक की घात में है। (२१) सरकशों का वही ठिकाना है। (२२) उसी में वर्षों पड़े रहेंगे। (२३) वहाँ न ठंडक और न पीने का मज़ा चखेंगे। (२४) मगर गर्म पानी और पीब के सिवाय उनको कुछ पीने को भी नहीं मिलेगा। (२५) यह उनके आमाल का पूरा बदला है। (२६) यह लोग हिसाब की आशा न रखते थे। (२७) और हमारी आयतों को झुठलाते थे। (२८) और हमने हर चीज को लिख रखा है। (२९) तो अपने किये का मजा चखो और हम तो तुम्हारे लिए दण्ड ही बढ़ाते जायेंगे। (३०) (रुकू १)

संयमी निस्सन्देह सफल होंगे। (३१) यानी रहने को बाग और खाने को अंगूर (३२) और नौजवान औरतें हम उम्र। (३३) और छलकते हुए प्याले। (३४) वहाँ यह लोग न तो बुरी सुनेंगे और न करेंगे। (३५) यह तुम्हारे पालनकर्ता का हिसाब से दिया उनके कर्मों का बदला है। (३६) आकाश का और पृथ्वी का और जो कुछ पैदाइश इन दोनों के बीच है, सबका मालिक बड़ा कृपालु है। प्रलय के दिन उससे बात नहीं कर सकेंगे। (३७) जब कि जिब्रील और देवदूत पाँति में खड़े होंगे, किसी के मुंह बात तो निकलने की नहीं। मगर जिसको ईश्वर आज्ञा दे और वह बात भी ठीक कहे। (३८) यह दिन सच्चा है, बस जो चाहे अपने पालनकर्ता के साथ ठिकाना बना रखे। (३९) हमने तुमको निकट आने वाली प्रलय के दण्ड से डरा दिया है कि उस दिन आदमी उन कर्मों को देखेगा जो उसने अपने हाथों भेजे हैं और काफिर चिल्ला उठेगा कि उसने ऐ, काश! मिट्टी होता तो। (४०) (रुकू २)

सूरे नाजिआत

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४६ आयतें और २ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है।* और उन देवदूतों की सौगन्ध जो घुस कर कठोरता से रूह निकालते हैं। (१) और उन देवदूतों को जो आसानी से जान निकाल लेते हैं। (२) और उन देव-

*** इन आयतों में जिसकी सौगन्ध खाई गई उसके बारे में एक मत नहीं है। काई-कोई कहता है कि ये सब वायु है। कोई कहता है कि ये एक तरह के जीव है अधिकतर लोगों का विचार है कि ये देवदूत हैं।**

दूतों की जो आकाश और पृथ्वी के बीच तैरते फिरते हैं। (३) फिर दौड़कर आगे बढ़ते हैं। (४) कि जैसी आज्ञा होती है बन्दोबस्त करते हैं। (५) जिस दिन पृथ्वी काँप उठेगी। (६) और भूकम्प के बाद भूकम्प आयेंगे। (७) उस दिन लोगों के दिल धड़क रहे होंगे। (८) उनकी आँखें झुकी होंगी। (९) गुनहागार कहते हैं क्या हम उल्टे पाँव लौटाये जायंगे? (१०) क्या जब गल सड़कर हड्डियाँ होजायेंगे, (११) कहते हैं कि ऐसा हुआ, यह तो लौटना हानि की बात है। (१२) वह तो एक झिड़की है। (१३) और एकदम से लोग मैदान में आ मौजूद होंगे। (१४) ऐ पैगम्बर! मूसा का किस्सा भी तुमको पहुंचा है, (१५) जब कि उनको तोआ के पवित्र मैदान में उनके पालनकर्ता ने पुकारा था। (१६) कि फिरऔन* के पास जा, उसने सिर बहुत उठा रखा है। (१७) फिर कहा कि भला तुझको इसकी भी कुछ चिन्ता है कि तू पवित्र हो जाय। (१८) और मैं तुझको तेरे पालनकर्ता की ओर रास्ता दिखाऊं और तू डरे। (१९) फिर मूसा ने उसको बड़ा चमत्कार दिखाया। (२०) तो उसने झुठलाया और न माना। (२१) फिर लौट गया और तदबीर करने लगा। (२२) यानी लोगों को जमा किया और मुनादी करा दी। (२३) और कह दिया कि मैं तुम्हारा बड़ा पालनकर्ता हूं। (२४) तो ईश्वर ने उसको परलोक और सँसार में धर पकड़ा। (२५) जो मनुष्य ईश्वर से डरता है उसके लिए इसके शिक्षा है। (२६) (रुकू १)

क्या तुम्हारा पैदा करना कठिन है या आकाश का कि उसकी उस ईश्वर ने बनाया। (२७) उसकी छत को खूब ऊंचा रखा। फिर उसको बराबर किया। (२८) और उसकी रात का अंधेरा बनाया और दिन को उसकी धूप निकाली। (२९) और इसके बाद पृथ्वी को बिछाया।

*** फिरऔन व हजरत मूसा का हाल जानने के लिए पहला सिपारा देखिए।**

(३०) उसी में से उसका पानी और उसका चारा निकाला। (३१) और पहाड़ों को गाड़ दिया। (३२) यह सब तुम्हारे और तुम्हारे चार-पायों के लाभ के लिए किया। (३३) तो जब बड़ी आफत आ पड़ेगी। (३४) जो कुछ आदम ने किया हैं उस दिन उसकी याद आयेगी। (३५) और नरक सब देखने वालों के सामने प्रत्यक्ष किया जायगा। (३६) तो जिसने सरकशी की (३७) और सांसारिक जीवन को प्राथमिकता दी। (३८) तो ठिकाना नरक है। (३९) और जो अपने पालनकर्ता के सामने खड़े होने से डरा और इन्द्रियों को इच्छाओं से रोकता रहा। (४०) तो उसका ठिकाना स्वर्ग है। (४१) सो ऐ पैगम्बर ! तुम से प्रलय के बारे में पूछते हैं कि उसका समय कब है ? (४२) तुम उसका समय बताने की चर्चा में कहाँ पड़े हो। (४३) आखिरी थाह तेरे पालनकर्ता को ही है (४४) तू तो बस उसको डरा सकता है, जो उससे डरे। (४५) जो लोग जिस दिन प्रलय को देखेंगे तो मालूम होगा गोया वह बस दिन के अन्तिम पहर ठहरे या प्रथम पहर। (४६) (रुकू २)

सूरे अबस

मक्के में अवतरित हुई इसमें ४२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से कृपालु व दयावान है। मुहम्मद इतनी बात पर गुस्से में हुए और मुंह मोड़े बैठे*। (१) जब एक अन्धा* उनके पास

*** यह आयतें अब्दुल्ला के बारे में उतरीं। वह अन्धे थे। एक दिन मुहम्मद साहब अरब के बडे-बडे सरदारा को इस्लाम की बातें समझा**

आया। (२) और कहा ऐ पैगम्बर ! तू क्या जाने शायद वह पवित्र हो जाय। (३) या शिक्षा सुने वा उसको शिक्षा लाभदायक हो। (४) तो जो मनुष्य बेपरवाही करता है, (५) उसकी तरफ तू खूब ध्यान देता है। (६) हाँलाकि वह पवित्र न हो तो मुझ पर कुछ दोष नहीं। (७) और जो तेरे पास दौड़ता हुआ आये। (८) और जो डरा कर आये। (९) तो उससे बेपरवाहीं करता है। (१०) देखो कुरान तो शिक्षा है। (११) जो चाहे इसे याद रखे। (१२) और सम्मानित पन्नों में लिखा हुआ है। (१३) जो ऊंचे पर रखे और पवित्र हैं। (१४) ऐसे लिखने वालों के हाथों में। (१५) जो बुजुर्ग और भले हैं। (१६) आदमी पर मार। वह कैसा कृतघ्न है। (१७) ईश्वर ने उसको जिस चीज से पैदा किया ? (१८) वीर्य से उसको बनाया। फिर उसका एक अन्दाजा बाँध दिया। (१९) फिर उसके लिए राह आसान की। (२०) फिर उसको मार दिया। फिर उसको कब्र में दाखिल किया। (२१) फिर जब चाहेगा उसको उठा कर खड़ा करेगा। (२२) नहीं, ईश्वर ने जो कुछ आदमी को आज्ञा दी, उसने उसकी शिक्षा नहीं की। (२३) तो आदमी को चाहिए कि अपने खाने की तरफ देखे।

रहे थे कि वह आ गए और बीच में बोल उठे कि हमको बताइये। यह बात मुहम्मद साहब को बुरी लगी। इस पर उनको इस तरह समझाया गया।

* एक बार रसूलुलल्लाह मक्केके सरदारों में इस्लाम की चर्चाकर रहे थे। उसी समय एक अन्धे साथी ने आकर हजरत से कुरान के लिए पूछना शुरू किया। मक्के के रईस घमण्डी थे। रसूलुलल्लाह ने भी उसके बीच उस अन्धे को आया देख मुंह घुमा लिया। ईश्वर ने हजरत को चेतावनी दी कि अन्धा गरीब जो ईश्वर से डरता है उसकी परवाह न करके उन लोगों की फिक्र करते हो जो अपने घमण्ड में दीन की कोई परवाह नही करते।

(२४) कि हमने पानी बरसाया। (२५) फिर हमने पृथ्वी को फाड़ा। (२६) फिर हमने पृथ्वी में अनाज उगाया। (२७) और अंगूर और तरकारियाँ। (२८) और जैतून और खजूरें। (२९) और घने-घने बाग। (३०) और मेवे और चारा। (३१) तुम्हारे और चार-पायों के लिये। (३२) तो जिस समय शोर प्रलय होगी जिसके सुनाने में कान बहरे हो जायँ। (३३) जिस दिन आदमी अपने भाई। (३४) और अपनी माँ और अपने बाप। (३५) और अपनी पत्नी और अपने बेटों से भागेगा। (३६) इनमें से हर मनुष्य को उस दिन अपने-अपने छुटकारे की चिन्ता लगी होगी कि बस वही उसके लिये काफी होगी। (३७) कितने मुंह उस दिन चमकाते होंगे। (३८) हँसते खुशियाँ करते। (३९) और कितने मुंह ऐसे मैले होंगे कि उन पर गर्द पड़ी होगी। (४०) उन पर स्याही छाई होगी। (४१) यही काफिर बुरे हैं। (४२) (रुकू १)

सूरे तकबीर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २९ आयतें और १ रुकू हैं :

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जिस समय सूरज लपेट लिया जाय। (१) और जिस समय तारे झड़ पड़ें। (२) और जिस समय पर्वत चलाये जायं। (३) और जिस समय दस महीने की

गाभिन ऊँटनियाँ छुटी-छुटी फिरें। (४) और* जिस समय जंगली जानवर आ मरें। (५) और जिस समय दरिया पाट दिये जाँय। (६) और जिस समय रूहों जीवों को मिलाया जाय। (७) और जिस समय लड़की से जो जीवित कब्र में रख दी गई थी, पूछा जाय। (८) कि किस कसूर के बदले में मारी गई। (९) और जिस समय कर्मों का लेखा खोला जाय (१०) और जिस समय आकाश की खाल खींची जाय। (११) और जिस समय नरक की आग दहकाई जाय। (१२) और जिस समय स्वर्ग पास लाया जाय। (१३) उस समय हर मनुष्य जान लेगा जो कुछ वह परलोक में होगा। (१४) तो में उन सितारों की सौगन्ध खाता हूं जो चलते-चलते पीछे हटने लगते हैं। (१५) और जो सैर करते और गायब हो जाते हैं (१६) और रात की सौगन्ध जब उसका उठान हो। (१७) और सुबह की सौगन्ध जिस समय उसकी पौ फटती है। (१८) निस्संदेह यह कुरान एक प्रतिष्ठित देवदूत का संदेश है। (१९) अर्श के मालिक ईश्वर के पास उसका बड़ा रुतबा है। (२०) सरदार और अमानतदार है। (२१) और ऐ मक्का वालों तुम्हारे मित्र मुहम्मद कुछ बावले नहीं। (२२) निस्संदेह उन्होंने उस (जब्रील) को साफ आसमान में देखा। (२३) और यह गुप्त बातें छिपाने वाला नहीं। (२४) और कुरान शैतान मरदूद का कहा हुआ नहीं है। (२५) फिर तुम किधर बहके चले जा रहे हो। (२६) यह कुरान तो संसार के लिए शिक्षा हैं (२७) लेकिन उस मनुष्य के लिए जो तुममें से सीधी राह पर चले। (२८) और तुम कुछ नहीं चाह सकते मगर यह कि अल्लाह तमाम संसार का पालनकर्ता है, चाहे। (२९) (रुकू १)

---

* यह हाल प्रलय का है। उस दिन पृथ्वी आकाश सब का बुरा हाल होगा और कोई किसी की बात न पूछेगा।

सूरे इन्फितार

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब कि आकाश फट जाये। (१) और जब सितारे झड़ पड़ें। (२) और जब नदियाँ बह चलें। (३) और जब कब्रें उखाड़ दी जाँय। (४) तब हर मनुष्य जान लेगा जो कर्म उसने आगे भेजा और जो पीछे छोड़ा। (५) ऐ आदमी किस चीज ने तेरे पालनकर्ता बुजुर्ग के बारे में तुझ को धोखा दिया है। (६) जिसने तुझको बनाया और सही बनाया और तेरे जोड़ ठीक रक्खे। (७) जिस सूरत से चाहा तेरा जोड़ मिला दिया। (८) मगर बात यह है कि तुम दण्ड को नहीं मानते। (९) हालाँकि तुम पर चौकीदार हैं। (१०) आलीकदर लिखने वाले। (११) जो कुछ भी तुम करते हो उनको मालूम रहता है। (१२) निस्संदेह सुकर्मी मजे में होंगे। (१३) और वह कुकर्मी निस्संदेह नरक में होंगे। (१४) और प्रलय के दिन उसमें दाखिल होंगे। (१५) और वह उससे भाग नहीं सकते। (१६) और ऐ पैगम्बर तू क्या जाने प्रलय का दिन क्या चीज है। (१८) जिस दिन कोई मनुष्य किसी मनुष्य को कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकेगा और हुकूमत उस दिन अल्लाह ही की होगी। (१९) (रुकू १)

सूरे ततफीफ

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। कम देने तौलने वालों की तबाही हैं। (१) जब मनुष्यों से माप लें तो पूरा-पूरा लें। (२) और जब दूसरी को नापकर या तौल कर दें तो कम दें। (३) क्या इनको इस बात का विचार नहीं कि प्रलय को यह उठा खड़े किये जायंगे। (४) बड़े दिन को। (५) जिस दिन लोग संसार के पालनकर्ता के सामने खड़े होंगे। (६) कुकर्मी मनुष्यों के कर्म रोजनामचा और कैदियों के रजिस्टर क्या चीज हैं। (८) वह किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है। (९) उस दिन झुठलाने वालों की तबाही है। (१०) जो प्रलय के दिन को झुठलाते हैं (११) और उस दिन को वही झुठलाता है जो पापी हद से बढ़ जाता है। (१२) जब उसको हमारी आयतें पढ़कर सुनाई जाँय तो कहे कि अगले लोगों के ढकोसले हैं। (१३) बल्कि इनके दिलों पर इनके आमालों की कालिम बैठ है। (१४) यही अपने पालनकर्ता के सामने नहीं आने पायेंगे। (१५) फिर यह लोग अवश्य नरक में दाखिल होंगे। (१६) फिर कहा जायगा कि यही तो वह हैं जिसको तुम झुठलाते थे। (१७) अच्छे मनुष्यों का कर्म लेखा बड़े रुतबे वाले लोगों के रजिस्टर में है। (१८) और ऐ पैगम्बर तुम क्या समझो कि बड़े रुतबे वाले मनुष्यों का रजिस्टर क्या चीज है। (१९) एक किताब है जिसकी खानापूरी होती रहती है। (२०) देवदूत जो निकट हैं उस पर तैनात हैं। (२१) निस्संदेह अच्छे मनुष्य आराम में होंगे। (२२) तख्तों पर बैठे देख रहे होंगे। (२३) तू उनके चहरों पर स्वर्ग की ताजगी देखेगा। (२४) उनको खालिस खराब मुहर की हुई पिलाई जायगी। (१५) जिस बोतल की मुहर कस्तूरी की होगी और इच्छा करने वालों को चाहिए कि उसी पर इच्छा करे। (२६) और उस शराब में तसनीम के पानी की मिला-

वट होगी। (२७) तसनीम बैकुण्ठ का एक चश्मा है जिसमें से नजदीक के मनुष्य पीयेंगे। (२८) निस्संदेह अपराधी ईमानवालों के साथ हंसी किया करते थे। (२९) और जब लौटकर अपने घर जाते तो बातें बनाते थे। (३१) और जब इनको देखते तो बोल उठते कि यही गुमराह हैं (३२) हालांकि ईमान वालों पर निगहबान बनाकर तो इनको नहीं भेजा गया। (३३) तो आज प्रलय में ईमानवाले काफिरों पर हंसेंगे। (३४) तख्तों पर बैठे सैर देख रहे होंगे। (३५) अब तो काफिरों ने अपने किये का बदला पाया। (३६) (रुकू १)

सूरे इन्शिकाक

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। जब आकाश फट जायगा। (१) और अपने पालनकर्ता की बात सुनेगा और यह उसका फर्ज ही है। (२) और जब पृथ्वी तान दी जायगी। (३) और जो उस में है बाहर डाल देगी और खाली हो जायगी। (४) और अपने पालनकर्ता की बात सुनेगी और यह तो उसका फर्ज ही है। (५) ऐ आदमी तू प्रयत्न करके पालनकर्ता की ओर जाता है और तू उससे जरूर मिलेगा। (६) तो जिसको उसका कर्म लेखा दाहिने हाथ में दिया जायगा। (७) तो उससे आसानी के साथ हिसाब लिया जायगा

(८) और वह खुश-खुश अपने बाल बच्चों में वापिस जायगा। (९) और जिसको उसका कर्म लेखा उसकी पीठ के पीछे से दिया जायगा। (१०) वह मौत मनावेगा। (११) और नरक में जायगा। (१२) यह अपने बाल बच्चों के साथ मगन था। (१३) वह समझता था कि ईश्वर की ओर फिर न आयगा। (१४) हाँ उसका पालनकर्ता उसे देख रहा था। (१५) सो मैं शाम की लाली की सौगन्ध खाता हूं। (१६) और रात को जिन चीजों पर वह अन्धेरा करती हैं। (१७) और चाँद की सौगन्ध जब पूरा हो। (१८) कि तुम धीरे-धीरे दूसरी को तैं करोगे। (१९) तो इन काफिरों को क्या है कि ईमान नहीं लाते। (२०) और जब इनके सामने कुरान पढ़ा जाय तो शीश नहीं नवाते। (२१) बल्कि काफिर झुठलाते हैं। (२२) और ईश्वर खूब जानता है जो कुछ दिल में रखते हैं। (२३) तो ऐ पैगम्बर इनको दुखदाई दण्ड की शुभसंदेश सुना दो। (२४) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए अत्यन्त उत्तम फल है। (२५) (रुकू १)

सूरे बुरूज

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २२ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है आकाश की सौगन्ध जिसमें बुर्ज हैं। (१) और उस दिन की जिसका प्रण है। (२) और साक्षी* की और जिसके सामने साक्षी देता है उसकी सौगन्ध। (३)

और खाइयां खोदने वाले मारे गये । (४) आग खरे ईंधन से । (५) जब वह स्वयं उस पर बैठे हुए थे । (६) और ईमानवालों पर अपने किये के गवाह थे । (७) और वह ईमानवालों की इसी बात से चिढ़े कि वह अल्लाह पर ईमान लाये जो बलवान और प्रशंसनीय है । (८) आकाश और पृथ्वी का राज्य उसी का है और अल्लाह हर चीज से जानकार है । (९) जो लोग ईमानवाले मर्दों और ईमानवाली स्त्रियों को दुख देते हैं और तौबा नहीं करते तो उनको नरक का दण्ड है। (१०) जो मनुष्य ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए स्वर्ग के बाग हैं जिन के नीचे नहरें बह रही होंगी यही बड़ी सफलता है। (११) तेरे पालनकर्ता की पकड़ बहुत कठोर है। (१२) वही पहली बार पैदा करता हैं और दुबारा भी करेगा। (१३) और वह क्षमा करने वाला और प्रेम करने वाला है । (१४) तख्त का स्वामी बडी शान वाला है। (१५) जो चाहता है करता है। (१६) क्या तेरे पास लश्करों का संदेश पहुंचा है । (१७) फिरऔन की और समूद की । (१८) मगर काफिर झुठलाने में लगे हैं (१९) औरअल्लाह उनको उनके सब ओर से घेरे हुए है । (२०) बल्कि यह कुरान बड़ी शान का है । (२१) लौह मौहफूज* में लिखा हुआ है (२२) (रुकू १)

---

*यहाँ साक्षी का क्या अर्थ है ? यह एक ऐसा प्रश्न है जिसके विषय में मनुष्यों का मत अलग-अलग है। कोई कहता है शाहिद वह हैं जो प्रलय में जमा होंगे और कोई कहता हैं कि ईश्वर शाहिद हैं और बन्दे मशहूद । और कोई कहता है कि शाहिद आदमी के अंग हैं और वह आप मशहूद हैं।

*मक्के के बेदीन मनुष्य दीन वालों पर अत्याचार कर रहे थे उन्हें खाइयों से डालते व जीवित जला देते थे । उसी की तरफ यह इशारा है। व दीनदारों को दिलासा है कि अन्त में सच्चाई ही की जीत है। 'लोह महफूज' लोहे की एक तख्ती है जिसमें ईश्वर ने सब कुछ शुरू से अखीर तक लिख रक्खा है जो संसार में होने वाला है इसे जान लेना इन्सान की ताकत से बाहर है।

सूरे तारिक

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। आकाश की और रात को आने वाले की सौगन्ध। (१) और तू क्या समझे कि रात को आनेवाला क्या है। (२) वह चमकता हुआ तारा है। (३) कोई मनुष्य नहीं जिस पर चौकीदार न हो। (४) तो मनुष्य को चाहिए कि वह जिस चीज से पैदा किया गया है। (५) वह पानी से पैदा किया गया है जो वीर्यपात के समय उछल कर। (६) पीठ और जाती कीं हड्डियों के बीच से निकाला है। (७) निस्संदेह ईश्वर मरे पीछे उसके लौटाने पर शक्तिमान है। (८) जिस दिन भेद जाँचे जायँगे। (९) उस दिन न तो आदमी का कुछ बस चलेगा और न कोई सहायक होगा। (१०) पानी वाले आकाश की सौगन्ध। (११) और फट जाने वाली पृथ्वी की सौगन्ध। (१२) जरूर यह कथन बिल्कुल सही है। (१३) और यह कुछ हंसी की बात नहीं। (१४) यह काफिर दांव कर रहे हैं। (१५) और हम अपने दाँव कर रहे हैं। (१६) तो ऐ पैगम्बर इन काफिरों को समय दे इनको थोड़ा सा समय दे। (१७) (रुकू १)

सूरे आला

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर अपने आलीशान पालनकर्ता के नाम की माला फेर। (१) जिसने सृष्टि को बनाया और ठीक किया। (२) और जिसने अनुमान लगाया और राह लगा दी। (३) और जिसने चारा निकाला। (४) फिर उसको काला कूड़ा कर दिया। (५) ऐ पैगम्बर हम तुम को कुरान पढ़ा देंगे तुम भूलने न पाओगे। (६) मगर जो ईश्वर चाहे निस्संदेह ईश्वर पुकार कर पढ़ने को भी जानता हैं और आहिस्ता पढ़ने को भी। (७) और हम तेरे लिए और भी आसानी कर देंगे। (८) याद दिलाते रहो। जहाँ तक याद दिलाना लाभदायक हो। (९) जो डरता है वह समझ जायेगा। (१०) मगर भाग्यहीन तो उससे भागता ही रहेगा। (११) जो बड़ी आग में पड़ेगा। (१२) फिर न तो उसमें मरेगा ही और न जीवित ही रहेगा। (१३) जो पवित्र रहा वही सफल हुआ। (१४) और अपने पालनकर्ता का नाम लेता और नमाज पढ़ता रहा। (१५) मगर तुम मनुष्य साँसारिक जीवन को पकड़ते हो। (१६) हालांकि प्रलय कही बढ़कर और अधिक कठोर है। (१७) यही बात तो अगली किताबों में है। (१८) यानी इब्राहीम और मूसा की किताब में है। (१९) (रुकू १)

सूरे गाशियह

मक्के में अवतरित हुई इसमें २६ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। तुझको उस छिपा रखनेवाली प्रलय की कुछ बात पहुंची है। (१) कितने मुंह उस रोज उतरे हुए होंगे। (२) मेहनत उठा रहे होंगे। (३) थक रहे होंगे दहकती हुई आग में दाखिल होंगे। (४) इनको एक खौलते हुए चश्मे का पानी पिलाया जायगा। (५) काँटों के सिवाय और कोई खाना इनको मिला ही नहीं। (६) जिनसे न तो मोटा हो और न भूख ही जाय। (७) कितने मुंह उस रोज खुश होंगे। (८) अपनी कोशिश से खुश। (९) ऊपर वाले स्वर्ग में होंगे। (१०) वहाँ बेहूदी बातें न सुनेंगे (११) उसमें चश्मे बह रहे होंगे। (१२) उसमें ऊंचे तख्त होंगे। (१३) और आबखोरे रक्खे होंगे। (१४) और गाव तकिये एक पंक्ति में लगे होंगे। (१५) और मसनद बिछे हुए। (१६) तो क्या यह ऊंटों की तरफ नहीं देखते कि कैसे पैदा किये गये हैं। (१७) और आकाश की तरफ कि वह कैसा ऊँचा बनाया गया है। (१८) और पर्वतों की तरफ कि वह कैसे खड़े किये गये हैं। (१९) और पृथ्वी की तरफ कि कैसी बिछाई गई है। (२०) तो ऐ पैगम्बर याद दिलाये जा तू तो बस याद ही दिलाने वाला है। (२१) तू उन पर दरोगा तो नहीं है। (२२) मगर जो मुंह फेरे और इन्कार करे। (२३) तो ईश्वर उसको बड़ा दण्ड देगा। (२४) निस्संदेह इनको तो हमारी तरफ लौटकर आना है। (२५) फिर उनसे हिसाब लेना हमारा काम है। (२०) (रुकू १)

सूरे फजर

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३० आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपलु व दयावान है। सुबह की सौगन्ध (१) और दस* रातों की सौगन्ध। (२) जुफत और ताक की सौगन्ध। (३) रात जबकि गुजरने लगे। (४) बुद्धिमानों के लिए तो इनमें बड़ी भारी सौगन्ध है। (५) क्या तूने न देखा कि तेरे पालनकर्ता ने आद के साथ कैसा किया। (६) इरम के साथ कैसा किया। (७) जो ऐसे बड़े डील डौल के थे कि शहरों में कोई उन ऐसे पैदा नहीं हुए। (८) और समूद जिन्होंने घाटी में पत्थरों को काट कर बनाया था। (६) और फिरऔन तो मेखें रखता था। (१०) जो शहरों में सरकश हुए। (११) और उनमें बहुत झगड़े हुए। (१२) तो तेरे पालनकर्ता ने इस पर दण्ड का कोड़ा फटकारा (१३) तेरा पालनकर्ता अवज्ञा-कारियों की जरूर घात में है (१४) लेकिन मनुष्य है जब उसका पालन-कर्ता उसको जाँचता है और इज्जत और निआमत देता है तो कहता है कि मेरे पालनकर्ता ने मुझे प्रतिष्ठा दी है। (१५) और जब वह उसको दूसरी तरह जांचता है और उस पर उसकी रोजी तंग कर देता है तो वह कहता है कि मेरा पालनकर्ता मुझे तंग करता है। (१६) हरगिज नहीं बल्कि तुम अनाथ के लिए नहीं करते। (१७) और न एक दूसरे को गरीबों को खाना खिलाने का बढ़ावा देते हो। (१८) और मुर्दों तक का छोड़ा हुआ माल समेट समेट कर खाते हो। (१६) और माल को बहुत ही प्यारा समझते हो। (२०) हरगिज नहीं जब पृथ्वी मारे

---

* रातो से क्या मतलव है ? कोई कहता है इनसे १ से १० रमजान मुराद है और कोई कहता उनसे १ से दसवीं जिलहिज्ज (हज का महीना)।

धक्के के चकनाचूर हो जाय। (२१) और तेरा पालनकर्ता आ गया और देवदूत पाँति की पाँति। (२२) और उस दिन नरक समीप लाया जायेगा। उस दिन आदमी करेगा मगर उसके याद करने से क्या होगा। (२३) वह कहेगा हा शोक! मैंने अपनी इस जीवन के लिये पहले से कुछ किया होता। (२४) तो उस दिन उसकी जैसी कोई दण्ड न देगा (२५) और न कोई उसके जैसा जकड़ेगा। (२६) ऐ विश्वास पाने वाली आत्मा! (२७) अपने पालनकर्ता की ओर चली तू चली तू उससे राजी वह तुझसे राजी। (२८) फिर मेरे बन्दों में जा मिल। (२९) और मेरे स्वर्ग प्रवेश हो। (३०) (रुकू १)

सूरे बलद

मक्के में अवतरित इसमें २० आयतें और १ रुकू है

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। मैं इस शहर मक्का की सौगन्ध खाता हूं। (१) तू इसी शहर में उतरा हुआ है। (२) और सौगन्ध है पैदा करने वाले आदम की और उसका सन्तान की। (३) हमने आदमी की मेहनत के लिये बनाया (४) क्या वह इस विचार में है कि उस पर किसी का बस न चलेगा। (५) वह कहता है कि मैंने बहुत माल उड़ा दिये। (६) क्या वह यह समझता है कि उसे कोई नहीं देखता। (७) क्या हमने उसके दो आँखें नहीं बनाई। (८) और जीभ और दो होठ नहीं दिये। (९) और उसको दो राहें

नेकी बदी नहीं दिखाई। (१०) फिर वह घाटी से होकर नहीं निकला, (११) और ऐ पैगम्बर! तू क्या जाने घाटी क्या चीज है। (१२) गर्दन का छुड़ा देना। सेवक को स्वतन्त्र करना (१३) या भूख के दिनों में खाना खिलाना। (१४) नातेदार अनाथ को। (१५) या दीन मिट्टी पर बैठने वाले को खिलाना। (१६) फिर उन लोगों में होना जो ईमान लायें और एक दूसरे को सब्र और दया की शिक्षा देते रहे। (१७) यही लोग सौभाग्यशाली होंगे। (१८) और जिन लोगों ने हमारी आयतों से इन्कार किया वही अभागे होंगे। (१९) इनको आग में डालकर किवाड़ बन्द कर दिए जायंगे। (२०) (रुकू १)

सूरे शम्स

मक्के में अवतरित हुई इसमें १५ आयतें और १ रूकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। सूरज और उसकी धूप की सौगन्ध। (१) बाद में जब चाँद उदय होता है, उसकी सौगन्ध (२) और दिन की सौगन्ध, जब कि वह सूरज को उदय करे। (३) और रात की सौगन्ध, जब वह सूरज को छिपा ले। (४) और आकाश की और जिसने उसको बनाया। (५) और पृथ्वी की सौगन्ध, और जिसने उसे बिछाया। (६) और इन्सान की सौगन्ध, और जिसने उसे सही बनाया। (७) और उसके दिल में उसकी बदी और संयमता सुझा

दी। (८) जिसने अपने जीव को पवित्र किया, वह मराद को पहुंचा (९) और जिसने उसको दबा दिया, वह घाटे में रहा। (१०) समूद ने अपना सरकशी की वजह से पैगम्बर को झुठलाया। (११) जब कि उनमें से एक बड़ा कुकर्मी उठा। (१२) तो ईश्वर के पैगम्बर ने उनसे कहा कि यह ईश्वर की ऊंटनी है, इसे पानी पीने दो। (१३) इस पर भी उन लोगों ने सालेह को झुठलाया और ऊंटनी के पाँव काट डाले, तो उनके पालनकर्ता ने उनके पाप के बदले उन्हें मार डाला और सबों को बराबर कर दिया। (१४) और वह नहीं डरता कि बदला लेंगे। (१५) (रुकू १)

सूरे लैल

मक्के में अवतरित हुई, इसमें २१ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। रात की सौगन्ध कि ढाँक ले। (१) और दिन की सौगन्ध जब वह खूब रोशन हो। (२) और उसकी सौगन्ध, जिसने नर-मादा को बनाया। (३) तुम लोगों की कोशिश निस्संदेह अलग-अलग है। (४) तो जिसने दान दिया और बुराई से बचा। (५) और अच्छी बात को सच समझा। (६) तो हम आसानी की जगह कर देंगे। (७) और जो कंजूसी करे और बेपरवाही करे। (८) और अच्छी बात को झुठलाये। (९) तो हम उसको कठोरता की ओर पहुंचायेंगे। (१०) और जब गिरेगा तो उसका माल

उसके कुछ भी काम न आयेगा। (११) हमारा काम तो राह दिखा देना है। (१२) और प्रलय और संसार हमारे ही अधिकार में है। (१३) और हमने तो तुमको भड़कती हुई आग से डरा दिया है। (१४) इसमें वही भाग्यहीन प्रवेश करेगा। (१५) जो झुठलाता और मुंह फेरता रहा। (१६) और संयमी उससे दूर रखा जायगा। (१७) जिसने अपने को पवित्र करने के लिए अपना माल दिया। (१८) और उस पर किसी का एहसान नहीं जिसका बदला दे। (१९) वह तो सिर्फ ऊंचे पालनकर्ता की प्रसन्नता चाहता है। (२०) और वह अवश्य प्रसंन होगा। (२१) (रुकू १)

सूरे जुहा

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से कृपालु व दयावान है। दिन चढ़ें की सौगन्ध। (१) और रात की सौगन्ध, जब ढाँक ले। (२) पालनकर्ता ने तुझको छोड़ा नहीं* और न वह प्रसन्न हुआ। (३) और तेरी इस जीवन से

*** एक मौके पर रसूलुल्लाह के पास आयतो का आना रुक गया था। लोग ताना कसने व मजाक उड़ाने लगे थे। आँ हजरत भी उदास थे। उसी समय उनकी दिलाया देते हुए यह आयत उतरी कि ईश्वर ने ऐ पैगम्बर तुझको कभी नहीं छोड़ा और वह तुझको इतना कुछ देगा जिसके आगे सब मात है।**

परलोक अच्छा होगा। (४) और तेरा पालनकर्ता आगे तुमको इतना चलकर देगा कि तू प्रसन्न हो जायगा। (५) क्या तुमको उसने अनाथ नहीं पाया और फिर जगह दी। (६) और तुमको गुमराह देखा और राह दिखाई। (७) और तुमको गरीब पाया और मालदार बना दिया। (८) तो अनाथ पर अत्याचार न कर। (९) और माँगने वाले को मत धिड़क। (१०) और अपने पालनकर्ता के एहसानों का वर्णन कर दे। (११) (रुकू १)

सूरे इन्शिराह

मक्के में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर! क्या हमने तेरा हौसला नहीं खोल दिया। (१) और हमने तुझ पर से तेरा बोझ उतार दिया। (२) जिसने तुम्हारी कमर तोड़ रखी थी। (३) और तेरा जिक्र ऊंचा किया। (४) सख्ती के साथ आसानी भी है। (५) निस्संदेह कठिनता के साथ आसानी है। (६) तो अब तू फारिग हुआ तो प्रार्थना में मेहनत कर। (७) और अपन पालनकर्ता की ओर ध्यान दे। (८) (रुकू १)

सूरे तीन

मदीने में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अंजीर और जैतून मी सौगन्ध। (१) और तूरसीनन पहाड़ की (२) और इस शहर मक्का की सौगन्ध जिसमें चैन है (३) हमने मनुष्य को अच्छी से अच्छी सूरत में पैदा किया। (४) फिर हमने नीचे फेंक दिया। (५) मगर जो लोग ईमान लाये और उन्होंने सुकर्म किये उनके लिए बहुत फल है। (६) तो इसके बाद कौन चीज है जिससे तू न्याय के दिन को झुठलाता है। (७) क्या ईश्वर सब हाकिमों का हाकीम नहीं है। (८) (रुकू १)

सूरे अलक

मक्के में अवतरित हुई इसमें १९ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपाल व दयावान है। अपने पालनकर्ता का नाम लेकर जिसने पैदा, कुरान पढ़े चलो। (१) आदमी को जमे हुए* लोहू से बनाया। (२) पढ़ चलो तेरा पालनकर्ता बड़ा करीम है। (३) जिसने कलम के द्वारा विद्या सिखाई। (४) मनुष्य को वह बातें सिखाई जो उसे मालूम न थीं। (५) मगर नहीं आदमी तो बड़ा

सरकश है। (६) इसलिए कि अपने तईं गनी देखता है। (७) तुझे अपने पालनकर्ता की ओर लौट कर जाना है। (८) क्या तूने उस मनुष्य को देखा जो मना करता है। (९) जब एक बन्दा नमाज पढ़ने खड़ा होता है। (१०) भला देख तो अगर वह सच्ची राह पर हो। (११) या संयमता सिखाता है। (१२) क्या तूने देखा कि अगर वह झुठलाता और पीठ फेरता है। (१३) क्या वह नहीं जानता कि ईश्वर देख रहा है। (१४) नहीं अगर वह बाज न आया तो हम उसको पट्टे पकड़ कर जरूर घसीटेंगे। (१५) झूठे गुनागार के पट्टे। (१६) तो उसको चाहिये कि अपने साथ बैठने वालों को बुला ले। (१७) हम भी नरक के देवदूतों को बुलायेंगे। (१८) हरगिज नहीं। तू उसकी कही न मान शीश नवा और ईश्वर के करीब हो। (१९)(१)

सूरे कदर

मक्के में अवतरित हुई इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

* अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने यह कुरान कदर की रात से उतारना शुरू किया है। (१) और तू क्या जाने कदर की रात क्या है। (२) कदर की रात हजार महीनों से बढ़ कर है। (३) उसमें हर काम के लिए देवदूत और रूह अपने पालनकर्ता की आज्ञा से उतरते हैं। (४) वह रात सलामती की है। वह प्रातःकाल तक रहती है। (५) (रुकू १)

*** यह नहीं बताया जा सकता कि कौन-सी रात कदर की रात है। हाँ रमजान के अन्तिम सप्ताह में कोइ एक रात ज्यातर मुसलमान मानते हैं।**

सूरे बय्यिनह

मदीने में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान। जो लोग किताबवालों और शिर्क वालों में से इन्कारी हुए वे मानने वाले न थे। जब तक उनके पास कोई खुली हुई दलील न पहुंचे। (१) और वह दलील यह थी कि ईश्वर की ओर से कोई पैगम्बर आये और पवित्र किताब पढ़ कर सुनायें। (२) उनमें पक्की बातें लिखी हों। (३) दूसरी किताब वालों ने दलील आये पीछे भेद डाला है। (४) हालाँकि कुरान में भी पिछली किताबों की ही तरह उनको पैगम्बर के द्वारा वही आज्ञा दी गई कि पवित्र अल्लाह की ही बन्दगी की नियत से एक तरफ होकर उसकी पूजा करें और नमाज पढ़ें और यही सही दीन है। (५) किताब वालों और शिर्क वालों में से जो लोग इन्कार करते रहे नरक की आग में होंगे। हमेशा इसी में रहेंगे, यही लोग सबसे बुरे हैं। (६) जो लोग ईमान लाये और नेक काम किगे, यही लोग सबसे अच्छे हैं। (७) इनका बदला इनके पालनकर्ता के यहाँ रहने के बाग स्वर्ग हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। वह उनमें हमेशा रहेंगे। अल्लाह उनसे प्रसन्न और ये अल्लाह से प्रसन्न। यह उनके लिये है जो अपने पालनकर्ता से डरें। (८) (रुकू १)

सूरे जिलजाल

मदीने में अवतरित हुई इसमें ८ आयतें और १ रुकू है।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब पृथ्वी अपने भूचाल से हिलाई जाये। (१) और पृथ्वी अपना बोझ निकाल डाले। (२) और मनुष्य बोल उठे कि उसे क्या हो गया। (३) उसी दिन वह अपनी खबरें सुनायेगी। (४) इसलिए कि तेरा पालनकर्ता उसको आज्ञा भेजेगा (५) उस दिन लोग अलग-अलग हालतों में लौटेंगे ताकि उनको उनके कर्म दिखलाये जायं। (६) तो जिसने थोड़ी भी बुराई नेकी की वह उसको देखेगा (७) और जिसने थोड़ी भी की वह उसको भी देखेगा। (८) (रुकू १)

सूरे आदियात

मक्के में अवतरित हुई इसमें ११ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हांफकर दौड़नेवाले घोड़ों की सौगन्ध (१) जो फिर टाप मारकर आग निकालते हैं। (२) फिर सुबह के समय छापा जा मारते हैं। (३) फिर वह उस समय भी दौड़-धूप से गुब्बार उड़ाते हैं। (४) फिर उसी वक्त फौज में जा घुसते हैं। (५) मनुष्य अपने पालनकर्ता का बड़ा कृतघ्नी है। (६)

और वह इसको खूब जानता है। (७) और वह माल पर प्रेम करने में मजबूत है। (८) तो क्या इनको मालूम नहीं जब वह मनुष्य जो कब्रों में हैं उठा खड़े किये जायेंगे। (९) और दिलों में जो बातें हैं वह जाहिर कर दी जायंगी। (१०) उस दिन उनका पालनकर्ता ही उनसे बखूबी जानकार होगा। (११) (रुकू १)

सूरे कारिअह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें १७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। खड़खड़ाने वाली। (१) खड़खड़ाने वाली क्या चीज है। (२) और तू क्या जाने खड़-खड़ाने वाली क्या चीज है। (३) जिस दिन आदमी बिखरे हुए पतिंगों की तरह होंगे और पहाड़ धुनी हुई ऊन की तरह हो जायंगे। (५) तो जिसके कर्म भारी होंगे, (६) तो वह खुशी के जीवन में होगा। (७) और जिस किसी का वजन हल्का होगा। (८) तो ठिकाना उसका हावियह होगा। (९) और तू क्या जाने वह हावियह क्या चीज है। (१०) वह नरक की जलती हुई आग है। (११) (रुकू १)

सूरे तकासुर

मक्के में रवतरित हुई, इसमें ८ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। तुम्हारी बहुतायत इच्छाओं ने भूल में डाल रखा है। (१). यहां तक कि तुम कब्र में पहुंचो। (२) नहीं-नहीं, तुमको मालूम हो जायगा। (३) फिर नहीं-नहीं, तुम को मालूम हो जायगा। (४) बात यह है अगर तुम विश्वास करना जानो, (५) तो तुम अवश्य नरक को देख लोगे। (६). फिर जरूर उसे तुम विश्वासी आँखों से देखोगे। (७) फिर उस दिन निआमतों के विषय में तुमसे पूछ-ताछ अवश्य होगी। (८) (रुकू १)

सूरे असर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३ आयतं, १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। असर ढ़लते दिन कों सौगन्ध। (१) आदमी घाटे में है। (२) मगर वह नहीं जो ईमान लाये और जिन्होंने सुकर्म किये और एक दूसरे को हक की शिक्षा देते रहे, एक दूसरे को सब्र करने की शिक्षा देते रहे। (३))रुकू १)

सूरे हुमजह

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ९ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हर ताना देने वाले और ऐब चुनने वाले की खराबी है। (१) जो माल जमा करता और गिन-गिनकर रखता रहा। (२) वह समझता है कि उसका माल हमेशा उसके साथ रहेगा। (३) नहीं वह तो जरूर जलती हुई आग में क्या चीज है। (४) और तू क्या जाने जलती हुई आग क्या चीज है। (५) वह ईश्वर की भड़काई हुई आग है। (६) दिलों तक की खबर लेगी। (७) वह उनके ऊपर चारों तरफ से बन्द घिरी होगी। (८) आग के बड़े-बड़े खम्भों की तरह पर। (९) (रुकू १)

सूरे फील

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! क्या तूने नहीं देखा कि तेरे पालनकर्ता ने हाथी वालों के साथ कैसा बर्ताव किया*। (१) क्या उसने उनके दाँव बेकार नहीं कर दिये ? (२)

---

* रसूलुल्लाह की पैदायश से पहले, हबश के बादशाह के एक गवर्नर ने यमन में 'सुनआ' एक शानदार गिरजा बनवा कर यह ख्वा-

और उन पर झुण्ड के झुण्ड पक्षी भेजे। (३) जो उन पर कंकड़ की पथरियाँ फेंकते थे। (४) यहां तक कि उनको खाये हुए भूसे की तरह कर दिया। (५) (रुकू १)

सूरे कुरेश

मक्के मैं अवतरित हुई, इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। इस वास्ते कि कुरेश को मिला रखा चाव पैदा किया। (१) जाड़े और गर्मी के सफर में उन्हें चाव दिलाया। (२) तो उनको चाहिए इस घर काबा के मालिक की पूजा करें। (३) जिसते उनको भूक मे खिलाया और उनको सफर के डर से बचाया। (४) (रुकू १)

हिश की कि काबा की इज्जत घटकर 'सुनआ' की हो जाय। इसी सिलसिले में उसने काबा को मिटाने के लिए मक्के पर चढ़ाई की। उसकी फौज में वड़े-बड़े हाथी भी थे। किन्तु ईश्वर के फजल से रास्ते ही में चिड़ियों के गोल के गोल आये और उनकी कंकड़ियों की मार से लश्कर समाप्त हों गया।

सूरे माऊन

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ७ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम ने जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर ! क्या तूने उसको देखा जो प्रलय के न्याय को झुटलाता है ? (१) और यह ऐसा मनुष्य है जो अनाथ को धक्के दे देता है (२) और गरीब के खिलाने का बढ़ावा नहीं देता। (३) तो उन निमाजियों की खराबी है, (४) जो अपनी नमाज की तरफ से गाफिल रहते हैं। (५) जो मनुष्यों को अपने नेक काम दिखलाते हैं। (६) और नित्यप्रति की बर्तने की चीजों की भो देने में इन्कार करते हैं। (७) (रुकू १)

सूरे कौसर

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। हमने तुझे कौसर यानी बहुतायत से चीजें दीं। (१) बस अपने पालनकर्ता की नमाज पढ़ और बलि दे। (२) तेरे दुश्मन का नाम लेवा न रहेगा। (३) (रुकू १)

सूरे काफरून

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है तू कह कि ऐ काफिरों (१) मैं उस मूर्ति की पूजा नहीं करता जिनकी तुम पूजा करते हो। (२) और जिस ईश्वर की मैं पूजा करता हूं तुम भी उसकी पूजा नहीं करते। (३) और आगे भी न मैं उनकी पूजा करूँगा जिनकी तुम पूजा करते हो। (४) और न तुम उसकी पूजा करोगे जिस की मैं पूजा करता हूं। (५) तुमको तुम्हारा दीन और मुझ को मेरा दीन। (६) (रुकू १)

सूरे नस्र

मक्के में अवतरित हुई इसमें ३ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। जब कि ईश्वर की सहायता से फतह आई *। (१) और तूने मनुष्यों को देखा कि ईश्वर के दीन में गिरोह के गिरोह दाखिल हो रहे हैं। (२) तो अपने पालनकर्ता की प्रशंसा के साथ तस्बीह से याद करने में लग जा और उससे पापों की क्षमा माँग। निस्संदेह वह बड़ा तौबा कबूल करने वाला हैं। (३) (रुकू १)

***हजरत रसूलुल्लाह के चचा अबूलहब और उनकी बीबी जो इनके इस्लाम के दुश्मन थे, दुनिया में तबाह हो गये। उसी का जिक्र है**

सूरे लहब

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ५ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। अबूलहब* के दोनों हाथ टूट गये और वह नष्ट हुआ। (१) न तो उसका माल ही उसके कुछ काम आया और न उसकी कमाई। (२) वह जल्दी ही लौ उठती हुई आग में दाखिल होगा। (३) और उसकी बीबी भी जो ईंधन ढोती फिरती है (४) उसकी गर्दन में खजूर की रस्सी होगी। (५) (रुकू १)

सूरे इखलास

मक्के में अवतरित हुई, इसमें ४ आयतें और १ रुकू हैं

अल्लाह के नाम से जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर! कहो कि वह अल्लाह एक है। (१) बे परवाह है। (२) न कोई उससे पैदा हुआ, न वह किसी से पैदा हुआ। (३) और न कोई उसका समता का है। (४) (रुकू १)

*** मदीने में हिजरत के समय रहने पर, बाद में मक्के के सरदारों से जंग हुई या फतह हासिल हुई।**

सूरे लक

मदीने में अवतरित हुई, इसमें ५ आयतें १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है ऐ पैगम्बर! कहो कि सुबह के मालिक से शरण माँगता हूं। (१) तमाम सृष्टि की बुराइयों से। (२) और अंधेरी रात की बुराई से जब अंधियारी छा जाये (३) और गंडों पर फूंकनेवालों की बुराई से। (४) और ईर्षा करने वालों की बुराई से जब ईर्षा करने लगें। (५) (रुकू १)

सूरे नास

मदीने में अवतरित हुई इसमें ६ आयतें और १ रुकू हैं।

अल्लाह के नाम पर जो कृपालु व दयावान है। ऐ पैगम्बर! कहा कि मैं आदमियों के पालनकर्ता की शरण माँगता हूं। (१) मनुष्यों के मालिक की। (२)मनुष्यों के पूज्य की। (३) उसकी (शैतान) बुराई से जो सनकारे और छिप जावे। (४) वह जो मनुष्यों के दिलों में (बुरे) ख्याल डालता है। (५) जिन्नों या आदमियों से (इनकी बुराइयों से पनाह माँगता हूं) (६) (रुकू १)